भोट-भारतीय-ग्रन्थमाला - ४७

आचार्यकमलशीलप्रणीतः

मध्यमकालोकः

སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལས་མཛད་པའི་
དབུ་མ་སྣང་བ།



पुनरुद्धारकः सम्पादकश्च

डॉ० पेन्पा दोर्जे

पर्यवेक्षकः

प्रो० रामशङ्कर त्रिपाठी

केन्द्रीय-उच्च-तिब्बती-शिक्षासंस्थानम्, सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः २५४५ खैस्ताब्दः २००१

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - LXVII

MADHAYAMAKĀLOKA
of
Ācārya Kamalaśīla



Restored and critically edited by
Dr. Penpa Dorjee

Supervisor
Prof. Ram Shankar Tripathi

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2545 C.E. 2001

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - LXVII

Chief Editor: *Prof. Geshe Ngawang Samten*
Publication Incharge: *Samten Chhosphel*

First Editio: 550 copies, 2001

Price: Hardback: Rs. 330.00
Paperback: Rs. 230.00

Publisher:
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

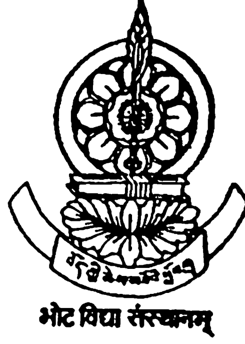
Printed at Sattnam Ptinting Press, Varanasi.

भोट-भारतीय-ग्रन्थमाला - ४७

आचार्यकमलशीलप्रणीतः

मध्यमकालोकः

སློབ་དཔོན་ཀ་མ་ལ་ཤཱི་ལས་མཛད་པའི་
དབུ་མ་སྣང་བ།



पुनरुद्धारकः सम्पादकश्च

डॉ० पेन्पा दोर्जे

पर्यवेक्षकः

प्रो० रामशङ्कर त्रिपाठी

केन्द्रीय-उच्च-तिब्बती-शिक्षासंस्थानम्, सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः २५४५ खैस्ताब्दः २००१

भोट-भारतीय-ग्रन्थमाला - ४७

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेशे नवङ समतेन

प्रकाशन प्रभारी : श्री समतेन छोस्फेल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २००१

मूल्य : सजिल्द : ३३०·००
अजिल्द : २३०·००

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक : सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस, पाण्डेयपुर, वाराणसी ।

प्रकाशकीय

आचार्य कमलशील द्वारा विरचित 'मध्यमकालोक' को जिज्ञासु विद्वत्समुदाय के कर-कमलों में अर्पित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आचार्य की जीवनी के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी का अभाव है। उनकी जन्मतिथि और स्थान के बारे में विद्वानों में ऐकमत्य नहीं है, फिर भी ईशवीय आठवीं शताब्दी में उनकी विद्यमानता असन्दिग्ध है। भोटदेश के महान् सम्राट् ठिसोंङ् देउचन के शासनकाल (७४२-७९८) में वे तिब्बत पहुँचे थे। आचार्य कमलशील नालन्दा महाविहार के अग्रणी विद्वानों में अन्यतम थे। उनकी अप्रतिम विद्वता का प्रमाण उनकी गम्भीर एवं विशाल कृतियाँ हैं। भारतीय बौद्ध आचार्यों की कृतियों के भोटदेशीय तन्ग्युर संग्रह में उनकी सत्रह कृतियों का संग्रह है। जिनमें भावनाक्रम, मध्यमकालोक एवं प्रज्ञापारमिता टीका आदि कुछ ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ मध्यमकालोक के अतिरिक्त वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिताटीका शालिस्तम्बसूत्रटीका एवं भावनाक्रम ग्रन्थ संस्थान द्वारा पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं।

भोट देश में आचार्य का पहुँचना (७९२ ई० के आसपास) तब होता है, जब भोट जनता, विशेषतः नवयुवक वर्ग चीनी भिक्षु ह्वशङ्ग के कुदर्शन से प्रभावित होकर दिग्भ्रान्त हो रहे थे। मन की विचारहीनता की स्थिति को ह्वशङ्ग बुद्धत्व प्राप्ति का उपाय बता रहे थे । उस समय आचार्य शान्तरक्षित दिवंगत हो चुके थे और आचार्य पद्मसम्भव अन्यत्र जा चुके थे। सम्राट् ठिसोङ् देउचन ह्वशङ्ग के अनुयायियों को समझा पाने में असमर्थ हो रहे थे और भारतीय बौद्धधर्म के लोप का खतरा उपस्थित हो गया था। तब आचार्य शान्तरक्षित के शिष्यों ने सम्राट् को आचार्य शान्तरक्षित की भविष्यवाणी का स्मरण कराया और इस संकट के निवारणार्थ भारत से आचार्य कमलशील को बुलाकर ह्वशङ्ग से शास्त्रार्थ कराने का परामर्श दिया। तदनुसार सम्राट् ने आचार्य कमलशील को निमन्त्रित कर तिब्बत आने का निवेदन किया। फलस्वरूप वे वहाँ पहुँचे। उन्होंने चीनी भिक्षु ह्वशङ्ग को शास्त्रार्थ में पराजित किया और विशुद्ध भारतीय बौद्ध शासन की वहाँ

पुनः प्रतिष्ठा की। भावनाक्रम में ह्वशङ्ग का नामोल्लेख किये बिना उनके मतों की सूक्ष्म समीक्षा की गई हैं।

आचार्य का कहना है कि मूढ पुरुष, जो भावाभिनिवेश रूपी महाग्रह के वशीभूत होकर नागार्जुन आदि महान् आचार्यों की आलोचना करते हैं, उनके महाग्रह के विनाश के लिए मैं मध्मकालोक नामक ग्रन्थ की रचना कर रहा हूँ। समस्त धर्मों की परमार्थतः निःस्वभावता (शून्यता) सिद्ध करना और अन्तिम एकयान की स्थापना करना इस ग्रन्थ का मुख्य प्रतिपाद्य है। इस तरह आचार्य ने सम्पूर्ण ग्रन्थ में पुष्कल युक्तियों एवं प्रामाणिक आगमों द्वारा उक्त दोनों प्रतिपाद्यों की सिद्धि की है।

इस ग्रन्थ के प्रतिपक्षियों में मुख्यतः विज्ञानवादी हैं, किन्तु उनके अतिरिक्त अन्य वस्तुवादी भी इसके प्रतिपक्ष हैं। ग्रन्थ के प्रथम भाग में सभी धर्मों की परमार्थतः स्वलक्षणसत्ता की सिद्धि के लिए पूर्वपक्ष द्वारा प्रयुक्त युक्तियों और आगमों को ७८ प्रश्नों के रूपमें प्रस्तुत किया गया है तथा द्वितीय क्रम में पूर्वपक्ष द्वारा अन्तिम त्रियान व्यवस्था की सिद्धि के लिए पाँच प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। इस तरह सम्पूर्ण ग्रन्थ में पूर्वपक्ष द्वारा ८३ आक्षेप प्रस्तुत किये गये हैं।

आचार्य ने पूर्वपक्ष द्वारा प्रस्तुत विवादों का युक्ति एवं आगम द्वारा निराकरण किया है। युक्तियों द्वारा निरास करते हुए उन्होंने यथायोग्य प्रतीत्यसमुत्पादयुक्ति, चतुष्कोटि-उत्पादानुपपत्तियुक्ति, एकानेक-वियुक्तत्वयुक्ति, वज्रकणयुक्ति, सदसदनुपपत्तियुक्ति आदि युक्तियों का प्रयोग करते हुए परमत का खण्डन और स्वमत का मण्डन किया है। पूर्वपक्ष ने अपने पक्ष की सिद्धि के लिए जिन आगमों को प्रस्तुत किया था, आचार्य ने उन आगमों को आभिप्रायिक या नेयार्थ प्रतिपादित करते हुए अपने मत की पुष्टि में प्रज्ञापारमितासूत्र, आर्य-अक्षयमतिसूत्र, लङ्कावतार एवं सद्धर्मपुण्डरीक आदि प्रामाणिक आगमों का उद्धरण किया है।

आचार्य की दृष्टि में संवृति भ्रान्तबुद्धि है। वह पदार्थों की यथार्थ स्थिति को जानने में बाधक होती है। बालपृथग्जनों को वस्तुएँ परमार्थसत् के रूप में भासित होती है। संवृति में जो अवभासित हैं वह, न तो सम्यक् स्वभाव है और न शशशृङ्ग की भान्ति अत्यन्त असत् है। इस अंश में आचार्य कमलशील ने

स्वातन्त्रिक माध्यमिकों के प्रतिषेध्य का स्वरूप स्पष्ट किया है— ऐसा आचार्य चोंखापा ने कहा है। उन्होंने यह भी कहा है कि इस ग्रन्थ के अतिरिक्त अन्य स्वातन्त्रिक ग्रन्थों में इस विषय का स्पष्ट प्रतिपादन उपलब्ध नहीं होता।

संस्थान के सहायक-सम्पादक डॉ० पेन्पा दोर्जे ने इसका भोट भाषा से संस्कृत में पुनरुद्धार किया है तथा विस्तृत भूमिका लिखकर उसे उपयोगी और सुगम बनाया है। संस्थान के शोध आचार्य एवं बौद्ध विद्या के विशिष्ट विद्वान् प्रो० रामशङ्कर त्रिपाठी ने इस कार्य में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। हम इन दोनों विद्वानों को हृदय से साधुवाद प्रदान करते हैं और भविष्य में उनके द्वारा इस तरह के अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों के निष्पादन की आशा करते हैं। आशा है इस ग्रन्थ के प्रकाशन से माध्यमिक दर्शन की जानकारी में वृद्धि होगी। प्रकाशन अनुभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन में श्रमपूर्वक उल्लेख्य योगदान किया है, एतदर्थ हम उन्हें भी साधुवाद देते हैं।

प्रो० गेशे ङ्वङ् समतेन
निदेशक

नागपञ्चमी,
दिनाङ्क २५ जुलाई २००१

དཔར་སྐྲུན་པའི་ཆེད་བརྗོད།

༄ སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལས་མཛད་པའི་བསྟན་བཅོས་དབུ་མ་སྣང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་དུ་བསྒྱུར་གསོ་དང་བོད་དཔེ་དཔར་མ་ཇི་ཡོད་ཞིབ་བསྡུར་བགྱིས་པ་དོན་གཉེར་ཅན་རྣམས་དང་མཁས་དབང་ཀུན་གྱི་མདུན་སར་སྤྱན་བསྟར་ཞུ་ཐུབ་པར་དགའ་སྤྲོབས་ཆེན་པོ་བྱུང་། སློབ་དཔོན་གྱི་རྣམ་ཐར་རྒྱས་པ་ཞིག་མཇལ་རྒྱུ་མེད་ཅིང་། ཁོང་གི་འབྲུངས་ཡུལ་སོགས་ལ་མཁས་དབང་རྣམས་བཞེད་པ་མི་མཐུན་པ་ཡོད། འོན་ཀྱང་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལ་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བརྒྱད་པའི་ནང་བཞུགས་པར་ཐེ་ཚོམ་མི་དགོས་པ་ཞིག་སྟེ། སློབ་དཔོན་བོད་ཀྱི་ཆོས་རྒྱལ་ཆེན་པོ་ཁྲི་སྲོང་ལྡེའུ་བཙན་གྱི་སྐུ་དུས་སུ་བོད་དུ་ཕེབས། སློབ་དཔོན་འདི་འཕགས་ཡུལ་ནཱལནྡ་གཙུག་ལག་ཁང་ཆེན་པོའི་མཁས་དབང་ཕུལ་དུ་བྱུང་བ་ཞིག་ཡིན་པ་ནི་ཁོང་གིས་མཛད་པའི་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བའི་བསྟན་བཅོས་རྣམས་ལས་དཔོགས་ནུས། བསྟན་འགྱུར་ནང་སློབ་དཔོན་འདིས་མཛད་པའི་བསྟན་བཅོས་བཅུ་བདུན་ཙམ་བཞུགས་པ་རྣམས་ལས་བསྒོམ་རིམ་ཐོག་ཐ་བར་གསུམ་དང་། དབུ་མ་སྣང་བ། རྡོ་རྗེ་གཅོད་པའི་འགྲེལ་པ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་གྲགས་ཆེ་ཞིང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་རྡོ་རྗེ་གཅོད་པའི་འགྲེལ་པ། ས་ལུ་ལྗངས་པའི་མདོའི་འགྲེལ་པ་དང་། བསྒོམ་རིམ་བཅས་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་འདི་ནས་དེ་སྔ་དཔར་བསྐྲུན་ཞུས་གྲུབ།

བོད་དུ་རྒྱའི་ཧྭ་ཤང་གིས་བསམ་གཏན་ཅིག་ཅར་བའི་ལྟ་བ་སྤེལ་ཏེ་ནང་པ་སངས་རྒྱས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ལྟ་བ་མི་མཐུན་པའི་རྩོད་པ་བྱུང་བའི་སྐབས་སློབ་དཔོན་འདི་བོད་དུ་ཕེབས། དེའི་ཚེ་ཧྭ་ཤང་གི་ལྟ་བ་འཛིན་པ་ཤས་ཆེར་དར་ཞིང་རྒྱ་གར་ནས་དར་

བའི་བསྟན་པ་ཉམས་དམད་དུ་འགྱུར་བ་ན། མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཚོས་སྔོན་ཇི་ལྟར་ལུང་བསྟན་པ་སློབ་མ་རྣམས་ཀྱིས་རྒྱལ་པོར་གསོལ་བ་བཞིན་རྒྱལ་པོས་ཀྱང་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལ་བོད་དུ་གདན་དྲངས་ཏེ་ཧྭ་ཤང་དང་རྩོད་དུ་བཅུག་པ་ན། སློབ་དཔོན་གྱིས་དྲི་མ་མེད་པའི་ལུང་རིགས་ཀྱིས་རྒྱའི་ཧྭ་ཤང་ཕམ་པར་མཛད་དེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ལ་དག་ཐེར་མཛད། བསྒོམ་རིམ་ནང་ཧྭ་ཤང་གི་མཚན་དངོས་སུ་མ་སྨོས་ཀྱང་གཅིག་ཅར་བའི་ལྟ་བ་ལ་ལུང་རིགས་ཀྱི་བརྟག་པ་རྒྱས་པར་མཛད་དེ་བཀག་ཡོད།

སློབ་དཔོན་གྱིས་སྐྱེ་བོ་བླུན་པོ་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དབང་གིས་ཆེ་བའི་ཆེ་བ་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་རྣམས་ལ་སྨོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་གི་མ་རིག་པའི་གདོན་ཞི་བའི་ཕྱིར་དབུ་མ་སྣང་བའི་བསྟན་བཅོས་འདི་བརྩམ་མོ་ཞེས་གསུངས་ཤིང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དང་། མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་བསྟན་བཅོས་འདིའི་བསྒྲུབ་བྱར་གསུངས་ཤིང་ལུང་དང་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་བསྒྲུབས་པར་མཛད།

བསྟན་བཅོས་འདིའི་ཕྱོགས་སྔ་གཙོ་བོ་ནི་སེམས་ཙམ་པ་ཡིན་ལ། དེ་བཞིན་དངོས་སྨྲ་བ་གཞན་རྣམས་ཀྱང་བསྟན་བཅོས་འདིའི་ཕྱོགས་སྔ་ཡིན། སློབ་དཔོན་གྱིས་བསྟན་བཅོས་འདི་ཚན་པ་བཞིར་ཕྱེ་སྟེ་བསྟན། གཞུང་ཚན་པ་དང་པོར་སེམས་ཙམ་པ་ལ་སོགས་པ་ཕྱོགས་སྔས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་འདོད་པ་ལ་ལུང་རིགས་གཉིས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཀླན་ཀ་བྱུང་བ་རྣམས་དོན་ཚན་བདུན་ཅུ་དོན་བརྒྱད་དུ་བསྡུས་ཏེ་བསྟན། དེ་བཞིན་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་འདོད་པ་ལ་ཀླན་ཀའི་གྲངས་ལྔ་

ཙམ་ཞིག་འཕངས་པ་བཅས་མཁྱེན་ཕྱོགས་སྡེའི་ཀླུན་ཀའི་གྲངས་གྲུ་གསུམ་ཙམ་ཞིག་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བསྡུན་པར་མཛད།

སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱོགས་སྡུས་འཕངས་པའི་ཀླུན་ཀ་རྣམས་རིགས་པའི་རྒྱལ་པོ་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཏན་ཚིགས། མུ་བཞི་སྐྱེ་དགག་གི་གཏན་ཚིགས། གཅིག་དུ་བྲལ་གྱི་གཏན་ཚིགས། རྡོ་རྗེ་ཟེག་མའི་གཏན་ཚིགས་དང་ཡོད་མེད་སྐྱེ་དགག་གི་གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པའི་གཏན་ཚིགས་རྣམས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བཀག་པར་མཛད། ཕྱོགས་སྡེའི་རང་ཉིད་ཀྱི་ཁས་བླངས་གཏན་ལ་དབབ་པ་ལ་རྒྱབ་བརྟེན་གྱི་ལུང་དྲངས་པ་རྣམས་དྲངས་དོན་དུ་བཀྲལ་ཏེ་ཡུམ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་མདོ། བློ་གྲོས་མི་ཟད་པའི་བསྟན་པའི་མདོ། ལངྐར་གཤེགས་པའི་མདོ་དང་དམ་པའི་ཆོས་པདྨ་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པའི་མདོ་སྡེ་རྣམས་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ་རང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་གཏན་ལ་ཕབས།

སློབ་གཉེར་ཁང་འདིའི་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་རྩོམ་སྒྲིག་ལས་རོགས་ཏཱ ༠ སྒྲོན་པ་རྡོ་རྗེས་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདི་བོད་སྐད་ནས་སཾསྐྲིཏའི་སྐད་དུ་བསྒྱུར་གསོ་དང་བོད་དཔེ་དཔར་མ་ཇི་ཡོད་ཞིབ་སྦྱར་ཉམས་ཞིབ་དང་དེ་བཞིན་གཞུང་དང་འབྲེལ་བའི་གླེང་བརྗོད་རྒྱས་པ་ཞིག་བྲིས་ཏེ་གཞུང་དོན་གོ་རྟོགས་ལ་སླན་པ་བྱུང་འདུག་པར་བསྟུགས་བརྗོད་བྱ་རྒྱུ་ཡིན། སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ཉམས་ཞིབ་སློབ་དཔོན་ནང་པའི་གཞུང་ལུགས་ལ་མཁས་དབང་པཎྜི་ཏ་རཱམ་ཤངྐར་ཏྲི་པཱ་ཋི་མཆོག་གིས་བསྒྱུར་གསོའི་ལས་དོན་ལ་ཕྱག་རོགས་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་དང་། མ་འོངས་པར་ཡང་འདི་ལྟ་བུའི་གལ་གནད་ཅན་གྱི་ལས་དོན་ལེགས་བསྒྲུབ་ཡོང་བའི་རེ་བ་ཞུ་གི་ཡོད།

སློབ་གཉེར་ཁང་འདིའི་དཔར་སྐྲུན་སྡེ་ཚན་གྱི་འགན་འཛིན་ལས་མི་རྣམས་ནས་གཞུང་འདིའི་དཔར་སྐྲུན་ལེགས་གྲུབ་བྱུང་བར་ལེགས་སོ་བྱ་རྒྱུ་ཡིན། ད་རེས་དབུ་མ་སྣང་བའི་བསྟན་བཅོས་ཉམས་ཞིབ་ཕབ་བསྒྱུར་དང་སྦྲགས་དཔར་བསྐྲུན་ཞུས་པ་འདིས་དབུ་མའི་ལྟ་བར་སློབ་གཉེར་གནང་མཁན་རྣམས་ལ་ཕན་ཐོགས་ཡོད་པའི་རེ་བ་ཞུ་རྒྱུ་བཅས་ཤཱ་ཀ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་གྱིས་བོད་ཟླ་དྲུག་པའི་ཚེས་བཞི་ཉིན་བྲིས་པ་དགེའོ།།



विषय-सूची
དཀར་ཆག

प्राक्कथन

१९५९ में तिब्बत में घटित घटनाक्रम को ध्यान में रखकर परम पावन दलाई लामा तथा भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भोट-बौद्ध संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सन् १९६७ में केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान की स्थापना की। इस संस्थान के उद्देश्यों के अनुरूप संस्थान के निदेशक प्रो० एस० रिनपोछे जी ने सन् १९८१ में संस्कृत का एक सघन पाठ्यक्रम आरम्भ किया, जिसका लक्ष्य संस्कृत भाषा में लुप्त बौद्ध ग्रन्थों का भोट भाषा से संस्कृत भाषा में पुनरुद्धार एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद करना था। निदेशक महोदय तथा कई विद्वानों ने विचार-विमर्श कर यह निर्णय लिया कि आरम्भ में पुनरुद्धार तथा अनुवाद के लिए उन भारतीय पण्डितों के ग्रन्थों को लिया जाए, जिन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए तिब्बत जाने की कृपा की। तदनुसार आचार्य शान्तरक्षित, आचार्य कमलशील तथा आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान (अतिश) के ग्रन्थों को प्राथमिकता दी गई। इसी क्रम में मुझे आचार्य कमलशील के मध्यमकालोक के पुनरुद्धार का कार्यभार दिया गया। मध्यमकालोक जैसे स्वातन्त्रिक माध्यमिकों के अति महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का पुनरुद्धार का कार्यभार सौंपकर मुझ पर जो विश्वास किया गया, उसके लिए मैं तत्कालीन निदेशक प्रो० एस० रिनपोछे जी का सदा आभारी रहूँगा। इस कार्य को पूर्ण करने में आवश्यकता से अधिक समय लग गया। कार्य आरम्भ करने के कुछ ही समय बाद मेरी नियुक्ति केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह में तिब्बती-अनुवादक के पद पर हो गई। जिसके कारण यह कार्य अधूरा रह गया। तत्पश्चात् पुनः तिब्बती संस्थान में आने के बाद इस कार्य को आरम्भ किया। परन्तु सन् १९९७ से ९९ तक दो वर्ष पुनः कई विघ्नों से सामना करना पड़ा, जिससे कार्य बाधित हुआ। सितम्बर १९९९ से यह कार्य निरन्तर चलने लगा। फलतः मध्यमकालोक के संस्कृत रूप और उसके भोट-पाठ को विद्वानों, बौद्ध साहित्य में रुचि रखने वालों एवं विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत कर सका हूँ। इसके लिए मैं अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

मध्यमकालोक के पुनरुद्धार कार्य की सम्पन्नता में मेरे गुरु प्रो० रामशंकर त्रिपाठी जी का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने सम्पूर्ण ग्रन्थ की शुद्धि एवं विषयगत बहुमूल्य सुझावों से निरन्तर सहयोग किया है।

संस्थान के वर्तमान निदेशक गेशे ङ्वङ् समतेन जी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिन्होंने हमें अपूर्व सहयोग प्रदान किया है।

मेरे सहकर्मी मित्र भिक्षु ज्ञलछेन नमडोल तथा भिक्षु लोसंग दोर्जे के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर ग्रन्थ में उद्धरित आगम एवं शास्त्रों के स्रोत खोजने में सहायता की है। संस्थान के मूलशास्त्र के प्राध्यापक भिक्षु फुन्छोक दोनडुप का सहयोग भी प्राप्त होता रहा, जिसके लिए मैं उनका भी हृदय से आभारी हूँ। शान्तरक्षित ग्रन्थालय के पूर्व एवं वर्तमान ग्रन्थाध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिन्होंने हर समय इस कार्य के लिए आवश्यक स्रोतों एवं सामग्रियों की उपलब्धता के लिए सहयोग प्रादन किया है। ग्रन्थालय के ऑडियो-विशुअल अनुभाग तथा तिब्बती अनुभाग के समस्त कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने तत्परता से हर समय सहयोग प्रदान किया है। मेरे मित्र श्री ठिनलेराम शाशनी का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिन्होंने समय-समय पर सहयोग प्रदान किया है।

प्रकाशन अनुभाग के प्रभारी श्री समतेन छोसफेल द्वारा ग्रन्थ के प्रकाशन में पूर्ण सहयोग प्रदान किया गया है। उनके प्रति भी मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। कम्प्यूटरीकरण में श्री एस० पी० सिंह तथा श्री तोपग्यल का विशेष सहयोग रहा है, वे मेरे साधुवाद के पात्र हैं। अन्त में मैं अपनी पत्नी श्रीमती टाशी डोलमा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरे इस कार्य के लिए समय उपलब्ध कराने में स्वयं अत्यधिक श्रम किया और इस कार्य की सम्पन्नता में अपेक्षित सहयोग दिया है।

मेरे इस कार्य द्वारा जो भी पुण्य संचित हुआ है, उसे मैं परम पावन दलाई लामा जी के दीर्घायुष्य के लिए परिणामित करता हूँ। मेरे गुरुजी सेरा मठ के भूतपूर्व उपाध्याय गेशे जम्पा थेगदोक तथा गेशे थुपतेन रिनछेन आदि गुरुओं के दीर्घायुष्य के लिए भी इस पुण्य को परिणामित करता हूँ। मैं अपने माता-पिता के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए प्रत्येक जन्म में उनको मनुष्य योनि प्राप्त हो—ऐसी कामना करता हूँ।

इस कार्य में त्रुटियों की सम्भावना स्वाभाविक है। अत; मैं परम्परागत गुरुजनों तथा विद्वद्जनों से क्षमा-याचना करते हुए प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से मुझे अनुगृहीत करें, जिससे अगले संस्करण में उन्हें समाहित किया जा सके।

डॉ० पेन्पा दोर्जे

སྔོན་གླེང་།

༄༅། །བོད་ཀྱི་སྤྱི་ཚོགས་རིགས་གནས་དང་བཅས་པར་དུས་ཀྱི་ཀུད་པའི་དབང་གིས་ཉམས་ཉེས་ཆེན་པོ་བྱུང་བ་དེ་ཉིད་ཉམས་པ་སོར་ཆུད་ཀྱི་སླད། ༸སྤྱི་ནོར་༸གོང་ས་སྐྱབས་མགོན་ཆེན་པོའི་ཐུགས་བསྐྱེད་དང་། སྐོས་སུ་རྒྱ་གར་གྱི་སྲིད་བློན་དམ་པ་ཛྭཧརལཱལནེཧྲུ་མཆོག་གི་མཐུན་འགྱུར་དགོངས་བཞེས་ལ་བརྟེན་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༥༨ ལོར་ལྷ་ཏ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་འདི་ཉིད་གསར་འཛུགས་བསྐྲུངས། སློབ་གྲྭའི་དམིགས་ཡུལ་དང་བསྟུན་སྡེ་ངེས་སྟོན་པ་ཆེན་པོ་༸སྐྱབས་རྗེ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་ནས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༦༡ ལོར་རྩོམ་བསྒྱུར་ཟབ་སྦྱོང་གི་དམིགས་བསལ་འཛིན་གྲྭ་ཞིག་བཙུགས། རྒྱ་གར་འཕགས་པའི་ཡུལ་དུ་དུས་འགྱུར་གྱི་དབང་གིས་ལེགས་སྦྱར་སཾསྐྲྀཏའི་སྐད་ཀྱི་ནང་བཞུགས་པའི་ནང་པའི་བཀའ་བསྟན་ལྷག་མེད་དུ་གྱུར་པ་རྣམས་བོད་ཀྱི་སྐད་ནས་སླར་ལེགས་སྦྱར་གྱི་སྐད་དུ་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་འགོ་བརྩམས། སྐབས་དེར་ངེས་སྟོན་པ་མཆོག་དང་། གཞན་ཡང་མཁས་དབང་ཁག་བཀའ་བསྟུར་གནང་སྟེ་ཐོག་མར་བོད་དུ་ཞབས་ཀྱིས་བཅགས་པའི་ནང་ཆོས་དར་སྤེལ་ལ་བཀྲིན་ཅན་གྱི་འཕགས་ཡུལ་གྱི་སློབ་དཔོན་ཞི་བ་འཚོ། ཀམལཤཱིལ། དེ་བཞིན་སློབ་དཔོན་ཨཏིཤ་སོགས་ཀྱི་གཞུང་ཁག་བོད་སྐད་ནས་སཾསྐྲྀཏའི་སྐད་ཀྱི་ནང་ཕབ་བསྒྱུར་བྱ་འགོ་རྩོམ་རྒྱུའི་ཐུགས་ཐག་བཅད་པ་བཞིན། ཟབ་སྦྱོང་པ་སོ་སོར་སློབ་དཔོན་དེ་དག་གི་གཞུང་ཁག་ཆ་བགོས་མཛད། ཕྲན་ལ་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལའི་དབུ་མ་སྣང་བ་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་འགན་གནང་།

རང་ཉིད་ལ་དབུ་མ་སྣང་བ་ལྟ་བུ་རང་རྒྱུད་པའི་ལྟ་བའི་གཞུང་ཁྲིད་དུ་འཕགས་པ།

བོད་ཀྱི་མཁས་དབང་ཀུན་གྱིས་མགྲིན་གཅིག་ཏུ་བསྔགས་ཤིང་། དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པའི་ལྟ་བའི་གནད་བརྗོད་པའི་ཁུངས་སུ་མཛད་པའི་གཞུང་འདི་ལྟ་བུའི་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་འགན་ཆེན་པོ་གནང་ཞིང་། ལས་དོན་བསྒྲུབ་རྒྱུའི་ཐད་ཕྲན་ལ་ཡིད་ཆེས་གནང་བར་དང་གུས་སྒོ་གསུམ་གྱིས་འགན་ལེན་ཞུས། རང་ཉིད་བསོད་ནམས་གསོག་པའི་ཆེད་དུ་དང་། བསྟན་པའི་ཞབས་འདེགས་དང་། སློན་གྱི་ལོ་པཎ་རྣམས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་རྗེས་སུ་དྲན་པ་དང་། ལྷག་པར་ཁྱབ་བདག་སྐྱབས་མགོན་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་བཀའ་དྲིན་རྗེས་དྲན་སོགས་ལ་དམིགས་ནས་གཞུང་འདི་བོད་སྐད་ནས་ལེགས་སྦྱར་ནང་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་འགོ་བཙམས། འོན་ཀྱང་ལ་དྭགས་ནང་པའི་མཐོ་རིམ་སློབ་གཉེར་ནང་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༨༦ ནས་ལོ་ལྔའི་རིང་ལས་འགན་ཞུས་པར་བརྟེན་གཞུང་འདིའི་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་མུ་འཐུད་ཞུ་མ་ཐུབ། སླར་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༩༧ ནས་ ༡༩༩༩ བར་ལོ་གཉིས་ཙམ་གྱི་རིང་ལས་དོན་འདིར་བར་ཆད་ཆེ་ཙམ་བྱུང་ཞིང་། མུ་འཐུད་ནས་ལས་དོན་ཞུ་མ་ཐུབ། ཕྱི་ལོ་ ༡༩༩༩ ནས་དབུ་མ་སྣང་བའི་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་ལ་འབད་བརྩོན་མུ་འཐུད་ཞུས་པའི་འབྲས་བུར་ད་ཆ་ལེགས་གྲུབ་ཟིན་ཏེ་མཁས་དབང་ཀུན་དང་། ཐུགས་སྣང་ཅན་ཀུན་གྱི་མདུན་སྙན་བསྟར་ཐུབ་པ་བྱུང་བར་རང་ཉིད་སྐལ་པ་དང་ལྡན་པ་ཡིན་སྙམ་པའི་དགའ་སྤྲོབས་དང་། ངེས་སྟོན་པ་མཆོག་ནས་ཐོག་མར་ཡིད་ཆེས་གནང་བ་དང་། མཐོ་སློབ་འདིའི་དམིགས་ཡུལ་དང་མཐུན་པའི་ཞབས་ཞུ་ཐུབ་པར་དགའ་སྤྲོ་གཏད། ལྷག་པར་དུ་ཁྱབ་བདག་སྐྱབས་མགོན་ཆེན་པོ་མཆོག་གིས་ངོས་བོད་ཕྲུག་རྣམས་ལ་མ་འོངས་བོད་ཀྱི་སོན་རྩར་དམིགས་པ་བཞིན་བོད་ཀྱི་རིག་གཞུང་ཐོག་སྲི་ཞུ་ཅུང་ཟད་ཅིག་བསྒྲུབས་ཐུབ་པར་རྒྱལ་བ་དགྱེས་པའི་མཆོད་སྤྲིན་གྱི་ཚུལ་དུ་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདི་འབུལ་ལམ་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན།

དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདི་ལེགས་སྦྱར་སཾསྐྲྀཏའི་ནང་ཕབ་བསྒྱུར་སྐབས་རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་དཔལ་ལྡན་རྣམ་ཤཱནྟར་ཧྲིདྡྷི་མཆོག་ནས་ཐོག་ཐ་བར་གསུམ་དུ་ཐུགས་མཐུར་ཆེ་བཞེས་ཀྱིས་ཞུ་དག་དང་། དཔར་རྩ་ཞུ་དག་ཀྱང་བཞེས་གནང་བར་སྙིང་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ། ད་ལྟའི་ངེས་སྟོན་པ་དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་ལགས་ནས་ཕབ་བསྒྱུར་དང་འབྲེལ་བའི་དོན་གནད་ཁག་ལ་སློབ་སྟོན་གནང་བར་སྙིང་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ། མཐོ་སློབ་ཁང་འདིའི་རྒྱ་གཞུང་སློབ་དཔོན་དགེ་ཕུན་ཚོགས་དོན་གྲུབ་ལགས་ནས་གཞུང་གི་གནད་དོན་སོགས་གོ་མ་བདེ་བ་རྣམས་ལ་གསལ་བཤད་རོགས་རམ་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེའི་གནས་སུ་མཆིས། གཞུང་འདིའི་ནང་དྲངས་པའི་བཀའ་དང་བསྟན་བཅོས་ཁག་གི་ལུང་ཁུངས་རྣམས་འཚོལ་ཞིབ་སྐབས་ཆོས་གྲོགས་རྒྱལ་མཚན་རྣམ་གྲོལ་ལགས་དང་། བློ་བཟང་རྡོ་རྗེ་ལགས་དང་འཕྲིན་ལས་རྣམ་ཤཱནྟི་བཅས་ནས་བར་བར་རོགས་རམ་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ། དེ་བཞིན་ཞི་འཚོ་དཔེ་མཛོད་ཁང་གི་དཔེ་མཛོད་དོ་དམ་པ་གསར་རྙིང་གཉིས་ཀ་དང་། དམིགས་བསལ་ཕྲ་གཟུགས་པར་མའི་སྤྱི་ཚན་གྱི་ལས་མི་རྣམས་དང་། བོད་དཔེ་སྤྱི་ཚན་གྱི་ལས་མི་རྣམས་ནས་ངལ་མེད་མཐུན་འགྱུར་རོགས་རམ་གནང་བར་སྙིང་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ། དཔར་སྐྲུན་སྤྱི་ཚན་གྱི་འགན་འཛིན་པ་སྐུ་ཞབས་བསམ་གཏན་ཆོས་འཕེལ་ལགས་ནས་རྒྱུན་མར་ཕྱག་རོགས་གནང་བ་དང་། ཐོག་མའི་བོད་དཔེ་དཔར་རྩ་ཀམ་པྱུ་ཊར་ནང་འདེབས་འཇུག་གནང་མཁན་སྟོབས་རྒྱལ་ལགས། ལེགས་སྦྱར་དཔར་རྩ་འདེབས་འཇུག་གནང་མཁན་སྐུ་ཞབས་ཨེས་པི་སིཾཧ་བཅས་ནས་དངོས་ཤུགས་རྒྱུད་གསུམ་དུ་ཕྱག་རོགས་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་ལགས། མཐར་བདག་གི་རྩོམ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་གྱི་

དབང་གིས་ཆ་མ་གཏོགས་པའི་དུས་ཚོད་ཀྱི་ནང་ལས་དོན་རྣམས་དུས་ཐོག་ཏུ་ལེགས་གྲུབ་ཡོང་སླད་བདག་གི་གཟའ་ཟླ་བཀྲིས་སྐྲོལ་མ་ལགས་ནས་ཕྱུར་བ་གྲུ་བསྐྱེགས་ཀྱི་ཕྱག་རོགས་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་བཅས།

བདག་གིས་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་འདི་ལས་ཐོབ་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཅི་མཆིས་པ་ཐམས་ཅད་ʋསྲི་ནོར་ʋགོང་ས་སྐྱབས་མགོན་ཆེན་པོ་སྐུ་ཚེ་ཞབས་པད་བརྟན་པ་དང་། བདག་ལ་བཀའ་དྲིན་ཅན་གྱི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་སེར་བྱེས་མཁན་ཟུར་རིན་པོ་ཆེ་དགེ་བྱམས་པ་ཐེག་མཆོག་ལགས་དང་། སེར་སྨད་དགེ་བཤེས་ཐུབ་བསྟན་རིན་ཆེན་གཙོས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་རྣམས་སྐུ་ཚེ་བརྟན་པ་དང་། བཀྲིན་ཅན་གྱི་ཕ་མ་གཉིས་དཔལ་འབྱོར་གྱི་གནས་རྒྱུན་མར་ཐོབ་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག།

རང་ཉིད་ནང་རིག་པའི་གནད་དོན་ལ་སྤྲོངས་པ་དམན་པའི་དབང་གིས་ཕབ་བསྒྱུར་ནང་ནོངས་པའི་ཕྱུང་པ་ཅི་མཆིས་པ་རྣམས་ལ་གཟུར་གནས་མཁས་དབང་ཀུན་ལ་བཟོད་གསོལ་ཞུ་བ་དང་ཆབས་ཅིག་ལེགས་བཅོས་ཀྱི་བཀའ་སློབ་གནང་སྐྱོང་ཡོང་བ་ཞུ་རྒྱུ་བཅས། སངས་རྒྱས་ཆོས་འཁོར་བསྐོར་བའི་གནས་མཆོག་ཝ་ར་ཎ་སཱི་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ནགས་ཀྱི་ལྗོངས་སུ་ཆགས་པ་ལྷ་ཆ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་རྩོམ་སྒྲིག་ལས་རོགས་པ་ཤཱཀྱ་བཛྲ་སྡེ་སྤྱིན་པ་རྡོ་རྗེས་ས་སྤྲུལ་ས་ག་ཟླ་བའི་ཚེས་ ༡༤ ཉིན་བྲིས་པ་འདིས་ཀྱང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ཕྱོགས་བཅུར་རྒྱས་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག། ༎

Preface

The restoration work of Ācārya Kamalśīla's '*Madhyamakāloka*' was initiated in 1983 with the aim of making this important text available to scholars, researchers and students in its original Sanskrit form. Due to my having to leave Sarnath the following year to work at the Central Institute of Buddhist Studies in Leh, and subsequent duties at the CIHTS, Sarnath, as well as travel abroad for further studies, much time lapsed before this work could be finished. I am therefore very happy to present the restored Sanskrit text along with its critically edited Tibetan version to the readers.

Ācārya Kamalaśīla went to Tibet at the invitation of the Tibetan king Trisong Detsen (*khri-srong-lde'u btsan)* in the second half of the 8th century C.E. At that time a philosophical controversy had arisen among the followers of Buddhism in Tibet. Many Tibetans started following Hva Shang Mahāyāna, a Chinese scholar who preached the doctrine of instantaneous enlightenment, which states that all karmic activities are obstacles to the attainment of supreme enlightenment. Hva Shang taught that any kind of action that is preceded by conceptual thought creates an obstacle to Buddhahood. Whether it is a golden chain or a chain made out of iron, both have the function to bind. Similarly, whether an action is virtuous or non-virtuous, if it is preceded by conceptual thought it is an obstacle to enlightenment. It is like the sun being covered either by a white or a black cloud. Therefore, the mind should abide in state of conscious without concentrating on anything. One should refrain from engaging in virtuous as well as non-virtuous actions. In this way one will

be able to stop all conceptual thoughts, purify the mind and, all of a sudden, achieve enlightenment.

Ācārya Kamalaśīla refuted Hva Shang's doctrine in his treatise *Bhāvanākrama*. His deliberations are widely accepted and mentioned by Tibetan historians. Ba shad (*sba-bzhed,* c.770s) was the foremost among contemporary narrators of the famous Samye debate between the two masters. Other historians such as Nyang ral pa (*ñyang ral pa nyi ma 'od zer,* 1124-1194 AD), Buston (*bu-ston,* 1290-1364 AD), Padma karpo (*padma dkar po,* 1527-1596 C.E.), and the great Vth Dalai Lama (1617-1682 AD) have also left detailed accounts of the Samye debate. Almost all Tibetan historians accept the defeat of Hva Shang in that debate with Ācārya Kamalaśīla. Padma Kathang (*padma bka' thang*) and Kathang Denga (*bka' thang sde lnga*), Guru Padma Sambhava's biographies also agree with other historians. Sakya Paṇḍita (1182-1251 AD) refuted Hva Shang's doctrine in his work Thub pa dgongs gsal (Illuminating the Buddha's Thought). In fourteenth century, Ācārya Tsongkhapa (*Tsong kha pa,* 1357-1419 AD) and Kedup Je (*mkhas grub rje,* 1385-1438) also refuted Hva shang's theories.

It is well known that Ācārya Kamalaśīla was the disciple of Ācārya *Śāntarakṣita,* (c.700s) founder of the Yogācārin Madhyamika school of Buddhism. The great Tibetan translator Ācārya *Ye śes sde* (Jñansena, c. 700s) in his work Darśana Bheda (Differences of the Tenets) says: "In the middle period, the master called *Śāntarakṣita* wrote *Mādhyamakālamkāra* (The Ornament of the Middle Way, Toh. 3884) on the basis of *Vijñānavada,* which differs from the doctrine of Ācārya Bhavya. Thus two different doctrines of Mādhyamika came into existence. The doctrine expounded by

Ācārya *Bhavya* was known as *Sautrantrika Svātāntrika Mādhyamika* and the doctrine expounded by Ācārya *Śāntarakṣita* was known as the *Yogācārin Svātāntrika Mādhyamika.*" (*lta ba'i khyad par, Darśana Bheda*; sna tshog, Jo. pp. 123 b, Toh: 4360).

Among the many works of Ācārya Kamalaśīla, the *Madhayamakāloka* is an important treatise on the fundamental doctrine of *Svātāntrika Mādhyamika.* Ācārya Tsongkhapa refers to it as containing the most lucid explanation of the object of negation (*pariṣedhya*) in the philosophical school of *Svātāntrika Mādhyamika.* No other *Svātāntrika* masters have explained this subject in such an explicit manner as Ācārya Kamalaśīla did in this text.

Madhyamakāloka is presented in four sections: (1) Displaying the arguments of opponents expressing doubt over the concept of Ultimate Non-Existence of phenomena, (2) Refuting the arguments of the opponents by reasoning corroborated by scriptural citations, (3) Refuting the view of the three Ultimate Vehicles (*Triyāna*) being asserted by the opponents, and (4) Establishing the doctrine of Ultimately Non-Inherent Existence of phenomena and One Ultimate Vehicle (*Ekayāna*).

According to Tandar Ngagrampa (*bstan dar snags ram pa bśad sgrub bstan dar*, late 19th century.), the main opponents of this text are the *Vijñānavādis* and other proponents of true existence. Ācārya Kamalaśīla presents seventy-five arguments of the opponents related to the philosophical proposition of Ultimately Non-Inherent Existence as well as five arguments related to the One Ultimate Vehicle, and categorically refutes all these arguments.

Acknowledgements

I must express my deep gratitude for the guidance given by Prof. Ram Shankar Tripathi at all stages of the restoration of Madhyamakāloka and thank him for his painstaking effort in correcting the restored Sanskrit text. My heartfelt thanks go to Most Venerable Prof. Samdhong Rinpoche (former Director, CIHTS) for his support and encouragement to me in the task of accomplishing this project. I also thank the Director, CIHTS, Sarnath, Ven. Geshe Nawang Samten, for the valuable guidance given by him at the various stages of this work.

I express my thanks to my colleagues and friends at CIHTS for their assistance in this project, and especially to Ven. Gyaltsen Namdol and Ven. Losang Dorjee for their help in tracing the various sources of quotations cited in this text; Ven. Phuntsog Dhondup, Lecturer in Mool Shastra, for clarification of difficult points of the text; and to both former and present Librarians of the Shantarakhita Library for extending access to the various resources needed for the editing of the text. I also record my appreciation for the unstinting help given by all the staff members of the Audio-Visual Section and Tibetan Section of the Shantarakhita Library at various stages of the work, and especially to Mr. Samten Chhosphel, Incharge, Publication Unit, for his support in getting the manuscript ready for publication. I thank Mr. Thinly Ram Shashni, colleague and friend, for his timely help and Mr. S.P. Singh and Mr. Topgyal for their patience in the work of data entry for the text. Finally, I must thank

my wife Mrs. Tashi Dolma who always stood beside me for the accomplishment of this work.

I dedicate all the merit accumulated from this work for the long life of His Holiness the Dalai Lama, and of my teachers Ven. Geshe Jampa Theckchog (former Abbot, Sera Je Monastery), and Ven. Geshe Thupten Rinchen. I also dedicate this work to my parents.

I apologise to the learned scholars for any mistakes left in the restored text, and invite their valuable suggestions for further improvement and refining of the text in its next edition.

Penpa Dorjee

Saka Dawa, 2001



भूमिका

नवीं शताब्दी में भोटदेश में बौद्ध-धर्म का चरम प्रचार-प्रसार हुआ था, जिसमें भारतीय महापण्डित आचार्य शान्तरक्षित और आचार्य कमलशील का बहुत बड़ा योगदान रहा है। भोट-देश में बौद्ध संस्कृति की स्थिरता के लिए इन दोनों आचार्यों की देन का सदा स्मरण किया जाएगा।

आचार्य कमलशील का भोटदेश में आगमन अतिसंवेदनशील काल में हुआ था। उस समय तिब्बत के बौद्ध अनुयायियों में आन्तरिक मतभेद के कारण विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। चीनी विद्वान् ह्वशंग ने इस परिस्थिति को उत्पन्न किया था। महाराज ख्रिसोङ् ल्दे ब्चन ने आचार्य शान्तरक्षित की पूर्व भविष्यवाणी या परामर्श के अनुसार आचार्य कमलशील को भोटदेश में आमन्त्रित किया। आचार्य ने उस विकट परिस्थिति का धर्मानुसार निवारण करके बौद्ध-धर्म का पुनरुद्धार किया।

आचार्य कमलशील ने कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की, जिनमें मध्यमकालोक एक मौलिक सिद्धान्त ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के विषय पर विचार करने से पूर्व आचार्य कमलशील की जीवनी पर विचार करना अनुपयुक्त नहीं होगा, क्योंकि इसके बारे में अनेक मत-मतान्तर हैं।

आचार्य कमलशील की जीवनी

आचार्य कमलशील के जन्म एवं बाल्यावस्था का विवरण प्राय: उपलब्ध नहीं है। परन्तु यह सभी विद्वानों को मान्य है कि वे आचार्य शान्तरक्षित के शिष्य थे। आचार्य कमलशील के भोट-आगमन के फलस्वरूप, उनके जीवन के उत्तरार्ध की घटनाओं का उल्लेख अनेक भोट इतिहास-ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। इन उल्लेखों में भी अनेक मतभेद हैं, जिनपर शोध आवश्यक है।

भोट विद्वानों ने आचार्य कमलशील के बारे में अनेक मत प्रस्तुत किये हैं। भोटदेश के साक्या सम्प्रदाय के महाविद्वान् शाक्य-छोगदेन का (शाक्य-छोग-लदन्) कहना है—"निर्विवाद महापण्डित, जिनका यश सूर्य और चन्द्र की भाँति दिग्-दिगन्त में व्याप्त है, को महाराज ठिसोङ्-देचन (ख्रि-स्रोङ्-ल्दे-ब्चन्) ने भोट-देश में आमन्त्रित किया। मिथ्यादृष्टियों का प्रहाण कर उन्होंने माध्यमिक

दर्शन के अनेक शास्त्रों की रचना की। बाद में आर्यदेश लौटते समय रास्ते में वे महासिद्ध दमपा-ग्यगर से मिले। उस समय रास्ते में एक बहुत बड़ा शव पड़ा हुआ था। उस शव में भूत ने प्रवेश कर लिया था और वह आस-पास के निवासियों को बहुत तंग कर रहा था। आचार्य कमलशील ने उस शव को हटाने के उद्देश्य से परकायविधि के द्वारा उसमें प्रवेश किया और उसे कहीं दूर ले गये। परम सिद्ध दम-पा-ग्यागर ने रास्ते में पड़े आचार्य कमलशील के अत्यन्त सुन्दर एवं युवा शरीर को देखा तो अपने शरीर को त्यागकर उन्होंने आचार्य कमलशील के काय में प्रवेश कर लिया। जब आचार्य वापस लौटे तो देखा कि उनका शरीर वहाँ नहीं था। फलतः जो भोट देश में आचार्य कमलशील के रूप में विद्यमान थे, वे वस्तुतः दम-पा-त्यागर ही थे।'' पुनः शाक्य छोगदेन कहते हैं कि—''भट्टारक दमपा-ग्यागर ने इस जम्बूद्वीप में सात बार निरन्तर मनुष्य के रूप में जन्म लिया। अन्तिम जन्म ब्राह्मण जाति में हुआ। उनके वादिसिंह (स्म्र-व्ही-सेङ्गे—), अजितनाथ और कर्मवज्र ये तीन नाम प्रसिद्ध हैं। विक्रमशील से भी अधिक प्रसिद्ध श्री नालन्दा महाविहार में आचार्य धर्मशील और कमलशीलरक्षित के सम्मुख उनकी प्रव्रज्या हुई। फलस्वरूप इनका नाम कमलशील रखा गया। वे पाँच महाविद्याओं में निष्णात महापण्डित हुए, आर्यदेश में उन्होंने बौद्ध-धर्म की महत्त्वपूर्ण सेवा की। तत्पश्चात् भोट-देश के महाराजा के निमन्त्रण पर वे तिब्बत गये। वहाँ उन्होंने चीन के उपाध्याय ह्वशंग के मत का खण्डन किया और पारमितायान के अनेक शास्त्रों की रचना की। वहाँ (भोटदेश में) आचार्य ने तन्त्रयान का प्रवचन नहीं किया।''

कुन-ख्येन पदमा-करपो ने दमपा-ग्यागर को आचार्य कमलशील के पुर्नजन्म के रूप में माना है। उन्होंने कहा है—तिब्बत में आचार्य कमलशील के निधन के बाद दक्षिण भारत के चरसिंह नामक नगर में एक वणिक के पुत्र के रूप में उनका जन्म हुआ, जिनका नाम दम-पा-सङ्-ग्ये (दम-पा-सङस्-र्ग्यस) रखा गया। विक्रमशील महाविहार में आचार्य पुण्यदेव से उन्होंने प्रव्रज्या ग्रहण की। इस तरह यह मत शाक्य छोगदेन के मत से भिन्न है।

प्रायः सभी भोट इतिहासकारों ने माना है कि आचार्य कमलशील ने चीनी विद्वान् ह्वशङ् को शास्त्रार्थ में पराजित किया। परिणामस्वरूप ह्वशङ् द्वारा भेजे गये चार व्यक्तियों ने उनकी हत्या कर दी। इस प्रकार ये सारे मत एक-दूसरे से भिन्न हैं। नील पुराण (देव-थेर-स्ङोन-पो) में गोस्-लो-च्-वा ने दमपा-ग्यागर

के विषय में लिखा है कि "उन्होंने दक्षिण भारत के चरसिंह नामक नगर में (दरमा-सेङ्गे) जन्म लिया। विक्रमशील के उपाध्याय पुण्यदेव से प्रव्रज्या ग्रहण की। गुरु स्वर्णद्वीपीय से बोधिचित्तोत्पाद की दीक्षा ली और उपाध्याय पुण्यदेव तथा ब्राह्मण आर्यदेव आदि विद्वानों से उन्होंने पाँच महाविद्याओं की शिक्षा ग्रहण की। नारोपा और मैत्रीपा आदि चौवन (५४) गुरुओं की सेवा की।"[१]

इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य कमलशील और दमपा-ग्यागर अलग व्यक्ति थे और दमपा-ग्यागर लगभग ग्यारहवीं शताब्दी में आचार्य दीपंकरश्रीज्ञान के समय विद्यमान थे। क्योंकि आचार्य स्वर्णद्वीपीय आचार्य दीपंकरश्रीज्ञान के गुरु थे।

प्राय: सभी भोट इतिहासकारों का मानना है कि आचार्य कमलशील का देहान्त भोटदेश में ही हुआ था। अत: उनके गमन का जो मत है, वह युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता। इसलिए भी उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि भोटदेश के महाराज के निमन्त्रण पर आये किसी प्रकाण्ड विद्वान् का सेवकों के साथ के बिना प्रस्थान कैसे सम्भव है? उस युग की संस्कृति इस तरह की घटनाओं को अनुमति नहीं देती। शाक्य छोगदेन द्वारा परकायप्रवेश आदि से सम्बद्ध जो मत प्रस्तुत किये गये हैं, उनका स्पष्ट शब्दों में खण्डन करते हुए कुन-ख्येन पद्मा-करपो ने कहा है कि "आचार्य कमलशील द्वारा परकायप्रवेश की जो बात कही गई है, वह प्रामाणिक नहीं है।"[२]

भोट विद्वान् लोङ्-छेन रब-जम् का मत अन्य मतों से भिन्न है। उन्होंने अपने इतिहास ग्रन्थों में आचार्य कमलशील को चीनी विद्वान् कहा है। वे कहते हैं—"महाराज ठिसोङ् (ख्रि-स्रोङ्) के समय उज्जैन से आचार्य पद्मसंभव, बंगाल से बोधिसत्त्व (शान्तरक्षित) और चीन से आचार्य कमलशील आदि पाँच प्रकाण्ड पण्डित तिब्बत आये थे।" वे पुन: कहते हैं कि "चीनी आचार्य कमलशील और म-रिनछेन-छोग् (र्म-रिनछेन-म्छोग) ने साक्षीपूर्ण सहस्रभुज नामक सूत्र आदि अनेक सूत्रों को चीनी भाषा से भोट भाषा में अनुवाद किया था।"[३]

---

१. द्र०-नील-पुराण, पृ० १०१७, तिब्बत प्रकाशन, १९८४ ।
२. द्र०-सुङ्-बुम्-'ख', पृ० ३०४ ।
३. द्र०-लोङ्-छेन छोस्-जुङ्, पृ० ३०३ ।

लोङ्-छेन रबजम् के मतानुसार कमलशील नाम के कोई चीनी आचार्य महाराज ठिसोङ् के समय हुए थे, परन्तु उन्होंने (लोङ्छेन रबजम् ने) भारत से आमन्त्रित आचार्य कमलशील के बारे में कोई उल्लेख नहीं किया है। सक्षीपूर्णसहस्रभुज नामक सूत्र वर्तमान कग्युर में उपलब्ध नहीं है। अत: यह मत कितना प्रामाणिक है, यह विचारणीय है।

गोस लोचवा ने नील पुराण में दम-पा-ग्या-गर के पाँच बार तिब्बत में जाने की बात कही है। वे कहते हैं, "वे पाँच बार तिब्बत गये। पहली बार वे डिन थङ् (ह्ब्रिन-थङ्) से च्-रि गये। फिर कोङ् और सुभपा प्रान्त होते हुए खम (पूर्वी तिब्बत) गये। दूसरी बार वे कश्मीर से चलकर ङरिस (पश्चिमी तिब्बत) गये। उन्होंने ज़ङ्-जुङ् के 'लिङ्-खब' (ग्लीङ्-ख-व) और बोन-पो ठ-छ़ङ्-युग (बोन-पो-ख्र-छ़ङ्-ह्ब्रुग) को प्रवचन दिया। तीसरी बार वे नेपाल के किसी व्यापारी के साथ गये और यर्-लुङ् (मध्य तिब्बत) के मङ्-र-सेर-पो नामक व्यक्ति से उनकी मुलाकात हुई। दमपा ने उसको शमन विधि का उपदेश दिया। चौथी बार वे शलुग तगडो (श-लुग-स्तग-स्ग्रो) से प्रवेश कर ञन् नामक स्थान में रहे। माता के लिए पिण्डदान देकर पुन: मध्यदेश गये। पाँचवीं बार वे चीन गये और वहाँ बारह वर्ष तक रहे। वहाँ से वे पुन: तिब्बत में दिङ्-रि (दिङ्-रि) गये।"[१] इन बातों से यह बात उजागर हो जाती है कि दमपा-ग्यगर महाराज ठिसोङ् के समय तिब्बत नहीं गये थे और न ही आचार्य कमलशील से उनकी मुलाकात हुई थी। वे दोनों एक व्यक्ति भी नहीं थे और वे भिन्न-भिन्न काल में हुए थे। इस बात की पुष्टि सुमपा-खनपो के इस कथन से होती है कि "दमपा-ग्यगर का निधन सन् ११११७ ई० में हुआ था। जब वे ११७ वर्ष की उम्र के थे। तदनुसार उनका जन्म सन् १००० ई० में हुआ था, जो महाराज ठिसोङ् के कई वर्ष बाद का समय है। भोट विद्वान् छेतेन जब् डुङ् का मत है कि दमपा-ग्यागर सन् १०५४ ई० में तिब्बत गये थे, जिस वर्ष आचार्य अतिश का देहावसान हुआ था।

आचार्य कमलशील की रचनाएँ

आचार्य कमलशील ने ह्वशङ् से शास्त्रार्थ के पश्चात् "तीन भावनाक्रम" की रचना की। परन्तु मध्यमकालोक की रचना कहाँ की, इसका स्पष्ट उल्लेख

१. द्र०-नील पुराण, पृ० १०१९, तिब्बत प्रकाशन, १९८४ ।

उपलब्ध नहीं है। इन दो ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार्य ने विनय, प्रज्ञापारमिता, प्रमाण तथा सूत्र की टीका आदि अनेक ग्रन्थों की रनचा की। ये सारे ग्रन्थ भोटभाषा में अनूदित हैं और तंग्युर में संगृहीत हैं। परन्तु जिन ग्रन्थों को आचार्य कमलशील की रचना कही गयी है, वे सब आचार्य की रचना हैं कि नहीं? इस विषय में विद्वानों में परस्पर मतभेद हैं। आचार्य चोंखापा ने मध्यमकालंकार पञ्जिका (तो० ३८८६) के आचार्य कमलशील की रचना होने में सन्देह व्यक्त किया है। उन्होंने (चोंखापा जी) मध्यमकालंकार स्मृतिलेख में कहा है कि ''पञ्जिका में जो कहा है, वह मध्यमकालोक के विरुद्ध है। परन्तु आचार्य धर्ममित्र ने पञ्जिका को आचार्य कमलशील की रचना माना है। अत: हो सकता है कि आचार्य ने इस ग्रन्थ की रचना अपनी युवास्था (पूर्वार्ध) में की हो।''[१] परन्तु खेडुब-जे (म्खस-ग्रुप-र्जे) ने मध्यमकालंकार पञ्जिका की रचना को आचार्य कमलशील की रचना नहीं मानी है। उन्होंने पञ्जिका को कमलशील की रचना होने की बात को मिथ्या कहा है। (द्र०-सर्वतन्त्रव्याख्या, सुङ्-बुम-ञ, पृ० ४९३) भोट विद्वान् चङ् क्या ने भी इस बात का समर्थन किया है।[२]

देगे तनग्युर संग्रह में लगभग पन्द्रह ऐसी तन्त्र टीकाएँ हैं, जिनको आचार्य कमलशील की रचना कहा गया है। परन्तु ये सारे ग्रन्थ आचार्य कमलशील के हैं, इनमें सन्देह है। क्योंकि कुछ ग्रन्थों को छोड़कर अन्य सभी ग्रन्थों के अन्त में लेखक के नाम का उल्लेख नहीं है। पेकिंग कंग्युर-तंग्युर केटलॉग में उक्त ग्रन्थों में से जिन ग्रन्थों के अन्त में लेखक के नाम का उल्लेख नहीं है, उन्हें कमलश्री नामक विद्वान् की रचना कहा गया है। बुस्-तोन् ने नरथंग (स्नर-थङ्) संस्करण के केटलॉग में इन सभी पन्द्र ग्रन्थों को भट्टारक कमलश्री की रचना कहा गया है। अत: सम्भवत: यहाँ कमलशील और कमलश्री दोनों नामों में भ्रम हुआ है। कंग्युर-तंग्युर के विभिन्न संस्करणों के केटलॉगों में भिन्न-भिन्न उल्लेख होने से उक्त सन्देह को और बल मिलता है।

महामुद्रातत्त्वानक्षरोपदेश जो आचार्य कमलशील की रचना कही गई है, उसमें कहा गया है—''जगत् जो दु:ख रूपी संसार में फंसा है, उसके अविद्या

---

१. द्र०-सुङ्-बुम, 'ब' पृ० ४२८ ।
२. द्र०-चङ्-क्या-ग्रुव-म्थह, 'ङ'-पृ० ३११ ।

रूपी नेत्रों को खोलने के लिए मैं इस शमक की रचना से''[१] इत्यादि में जो शमक शब्द का प्रयोग हुआ है, इससे यह प्रतीत होता है कि इस ग्रन्थ की रचना शमक विद्या के प्रवर्तक दम-पा-ग्या-गर ने ही की थी। इसी तरह भोट-इतिहासकारों ने दमपा-ग्या-गर द्वारा अपने जीवनकाल में लगभग ५४ गुरुओं के सेवन की बात कही है, यह बात तथाकथित आचार्य कमलशील की रचना 'गुह्यचित्तप्रदीप' में मिलती है। इस ग्रन्थ में कहा गया है—''५५ उत्तम गुरुओं के पादपद्म की सेवा करके, दु:ख के शमन के लिए पाँच विशेषताओं से युक्त उपदेश करता हूँ।''[२]। इसी तरह नील पुराण में भी दम-पा-ग्या-गर ने ५४ गुरुओं से उपदेश ग्रहण करने की बात कही है।[३] मङ्-थोस्-लुडुब्-ज्ञाछ़ो (मङ्-थोस्-क्लु-स्ग्रुब-र्ग्या-म्छ़ो) का भी मत है कि दमपा-ग्या-गर शमक विधि के प्रवर्तक थे। उन्होंने अपने इतिहास ग्रन्थ स्तग् लुङ् छोस्-ह्ब्युङ् में लिखा है, ''कश्मीरी पण्डित ज्ञानगुह्य को (दम्पा-ग्यगर ने) त्रिचक्र तारा शमक विधि का उपदेश दिया था और दम-पा और कश्मीरी (ज्ञानगुह्य) दोनों ने ओङ-पो-लोच़्-वा को उपदेश दिया था।''[४] तदनुसार छेतन-ज़ब्-डुङ् (छे़-तन-ज़बस्-द्रुङ) ने सुमपा को उदृत करते हुए दमपा-ग्या-गर का भोट-देश में आगमन सन् १०४४ ई० कहा है।[५] कश्मीरी ज्ञानगुह्य और ओङ्पो-लो-च़्-वा ने उन सारे लघु ग्रन्थों का अनुवाद किया था और वे दोनों दमपा-ग्या-गर के शिष्य थे। गङ्-चन-खस-पे-मिङ्-ज़ोद (भोट-विद्वानों की नामावली, पृ० १९२२) में ओङ-पो लोचावा को १२वीं शताब्दी का अनुवादक कहा गया है। अत: यह प्राय: स्पष्ट हो जाता है कि ये लघु ग्रन्थ जो शमक-विधि का प्रतिपादन करते हैं, दमपा-ग्या-गर की रचना हैं, न कि आचार्य कमलशील की।

बुस्तोन ने भी कहा है कि, शमक के ताराचक्र नामक नव ग्रन्थों के लेखक जो कमलश्री हैं, वे दमपा-ग्या-गर ही हैं। कोङ्-टुल (कोङ्-स्प्रुल) ने भी इसकी पुष्टि की है। अत: इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि आचार्य कमलशील और दम-पा-ग्या-गर भिन्न व्यक्ति थे। कमलशील और कमलश्री इन

---

१. दे० ग्युद-'ज़ि', पृ० २६६ ।
२. द्र०-दे० ग्युद-'जि', पृ० २६५ ।
३. द्र०-नील-पुराण, पृ० १०१७ ।
४. द्र०-स्तग्-लुङ्-होस्-ह्ब्युङ्, पृ० १९२३ ।
५. द्र०-स्तन-रचिस्-कुन-बतुस्, पृ० १५९ ।

दो नामों में समानता के कारण इन दोनों व्यक्तियों को एक व्यक्ति मानने का भ्रम उत्पन्न हुआ है, ऐसा प्रतीत होता है।

आचार्य कमलशील की रचनाओं पर टीका

आचार्य कमलशील की रचनाओं पर यद्यपि भारतीय विद्वानों की टीका नहीं मिलती है, किन्तु आचार्य के भावनाक्रम तथा मध्यमकालोक पर भोट विद्वानों द्वारा रचित एक या दो टीकाएं मिलती हैं। भावनाक्रम पर भोट विद्वान् रोङ्-तोन (रोङ्-स्तोन-शेस-ब्य-कुन-रिग) ने एक विस्तृत टीका[१] लिखी है। इसके अतिरिक्त तनदर-ङगरमपा (ब्स्तन्-दर-स्ङगस्-रम-पा) ने मध्यमकालोक पर एक स्मृतिलेख लिखा है। १२वीं शताब्दी के प्रमाणशास्त्र के भोट पण्डित छ-पा-छोस-सेङ् (छ-पा-छोस्-क्यी-सेङ्-गे) ने भी मध्यमकालोक पर टीका लिखी है—ऐसा उल्लेख मिलता है। परन्तु यह ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। इन टीका-ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार्य की रचनाओं पर अन्य टीका-ग्रन्थों का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

आचार्य द्वारा अनूदित ग्रन्थ

भोट-देश में प्रवास के समय आचार्य कमलशील ने भोट अनुवादकों के साथ अनुवाद का कार्य किया था। उन्होंने भोट-अनुवादक धर्मताशील के साथ आर्यरत्नचूडपरिपृच्छा नाम महायानसूत्र[२] तथा ज़-म-सेङ्-गे-ज्ञलपो (ज़-म-सेङ्-गे-र्ग्यल-पो) के साथ महामुद्रोपदेश वज्रगुह्यगीति[३] नामक दो ग्रन्तों का अनुवाद किया था।

आचार्य कमलशील के भोट-देश आगमन का प्रयोजन

आचार्य शान्तरक्षित के परिनिर्वाण के कुछ ही समय पूर्व भोट-देश में ह्वशङ् नामक चीनी भिक्षु ने ध्यान पर केन्द्रित एक नये सम्प्रदाय का प्रचार किया। इस सम्प्रदाय के मतानुसार काय और वाक् द्वारा किये गये कुशल कर्मों के बुद्धत्व

१. (१) प्रथम भावनाक्रम टीका शमथ-विपश्यना स्फुटार्थ-अलंकार, (२) द्वितीय भावनाक्रम टीका मर्म-चन्द्रीका, (३) तृतीय भावनाक्रम टीका देव-दुन्दुभि।

२. मध्यमकालोक स्मृतिलेख, Works of Bstam-Dar-Snags-Rams-pa, reproduced by Lokesh Chandra, From the collection of Prof. Raghuvira, New Delhi-1982.

३. द्र० दे० त०, ज्रुद (र्ग्युद) ज़ि, पृ० ६२-६४, तो० २४४० ।

प्राप्ति में सहायक होने का निषेध किया है। वह कहते हैं कि किसी भी धर्म का मनस्कार नहीं करना चाहिए तथा मन में किसी भी प्रकार की कल्पना को उत्पन्न होने से रोकना चाहिए। अच्छी या बुरी जो भी कल्पना हो, वे सब बुद्धत्व प्राप्ति में बाधक होती हैं, क्योंकि वे आवरण हैं। जैसे सूर्य को ढकने में सफेद या काले दोनों तरह के बादलों में कोई अन्तर नहीं होता है तथा लोहे और सोने की जंजीर द्वारा बाँधने में कोई अन्तर नहीं होता है, उसी तरह कल्पनापूर्वक किये गये कुशल या अकुशल कर्मों द्वारा समान रूप से बुद्धत्व प्राप्ति में बाधा होती है। अत: कुशल या अकुशल कोई कार्य नहीं करना चाहिए। उस समय ह्वशङ् के इस उपदेश का अनुसरण कतिपय विवेकशील लोगों को छोड़कर प्राय: सभी तिब्बती करने लगे। फलत: बौद्ध अध्ययन-अध्यापन तथा काय और वाक् द्वारा किये जाने वाले पूजा-पाठ आदि सभी अनुष्ठान अवरुद्ध हो गये। ब-रत्न आदि कुछ लोगों ने आचार्य शान्तरक्षित द्वारा दिखाये गये मार्ग का ही अनुसरण किया और उनके पक्ष पर अटल रहे। फलत: दोनों पक्षों में विवाद उत्पन्न हुआ।

महाराज ठिसोङ् देचन को इस विकट परिस्थिति में कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था। उन्होंने आचार्य शान्तरक्षित के शिष्य भन्दे ज्ञानेन्द्र (ये-शेस्-द्बङ्-पो) को ल्हो-डक् (ल्हो-ब्रग) से आमन्त्रित किया। महाराज ने जब उन्हें परिस्थिति से अवगत कराया तो उन्होंने महाराज को आचार्य शान्तरक्षित द्वारा अपनी मृत्यु के समय जो बात उन्हें कही थी, उसे बताया। उन्होंने (शान्तरक्षित ने) कहा था कि—"जहाँ-जहाँ बौद्धधर्म का प्रचार-प्रसार होगा, वहाँ-वहाँ तैर्थिकों द्वारा विरोध भी होगा। परन्तु तिब्बत में इस तरह की बात नहीं होगी, लेकिन बौद्ध अनुयायियों में ही मतभेद और विवाद उत्पन्न हो सकते हैं। जब ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो तब नेपाल में रह रहे मेरे शिष्य कमलशील को भोट-देश में आमन्त्रित करना और शास्त्रार्थ कराना। इस शास्त्रार्थ की मध्यस्थता स्वयं महाराज करें। शास्त्रार्थ का निष्कर्ष धर्मानुसार ही होगा।"[१] आचार्य शान्तरक्षित की इस भविष्यवाणी के आधार पर महाराज ने आचार्य कमलशील को आमन्त्रित करने के लिए अपने दूत नेपाल भेजे। महाराज के निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए आचार्य कमलशील भोट-देश गये और चीनी भिक्षु ह्वाशङ् के साथ शास्त्रार्थ किया, जिसमें उन्हें (कमलशील को) विजेता घोषित किया गया।

---

१. ब-शेद, पृ० ६४ ।

ह्वाशङ् के मत के उद्भव का स्रोत

ऐसा माना जाता है कि चीन में सर्वप्रथम एकक्षणावबोध अथवा ध्यान परम्परा का प्रचार आचार्य बोधिधर्म ने किया था। परन्तु इस परम्परा के स्रोत को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। इस परम्परा के प्रवर्तक आचार्य बोधिधर्म के बारे में अनेक कथाएं मिलती हैं। नुबछेन सगंझे येशेस् (स्नुबस्-छेन-सङस्-र्ग्यस-ये-शेस्)[१] ने बोधिधर्म को दक्षिण भारत के कोई राजकुमार थे—ऐसा कहा है। वे बाल्यावस्था से ही अध्ययन में निपुण एवं महायान के अनुयायी थे। वे किसी समय समुद्रमार्ग से चीन गये। वहाँ वे चीनी राजा सेहुयन से मिले और उनको उपदेश दिया। बोधिधर्म ने देखा कि चीनी महाराज परमार्थ को नहीं समझ सकेंगे। अत: वे किसी अन्य स्थान में चले गये। वहाँ उनको खाशि आदि अनेक चीनी भिक्षु मिले। उन भिक्षुओं ने द्वेषवश आचार्य बोधिधर्म को छह बार विष पिलाया। परन्तु उन्हें कुछ भी नहीं हुआ। भाषागत समस्या के कारण उनको समझने वाले बहुत कम मिले। यही कथा तुन-हंग[२] पाण्डुलिपि में भी उल्लिखित है। कथङ् दे-ङ्[३] में भी पूर्वोक्त कथा को विस्तार से कहा गया है। ऐसी किंवदन्ती भी है कि बोधिधर्म की मृत्यु के पश्चात् भारत से चीन लौटने वाले एक श्रेष्ठी को रास्ते में उनका दर्शन हुआ। उस श्रेष्ठी ने देखा कि आचार्य के हाथ में एक पादुका थी। जब उस श्रेष्ठी ने इन सारी बातों को बताया तो बोधिधर्म के अनुयायियों ने उनकी समाधि खोदी। उन्होंने एक पादुका गायब पाई।

विद्वानों ने आचार्य बोधिधर्म को ध्यान (ज़ेन) परम्परा का २८वाँ **उपाध्याय** माना है। थोऊ-कन ने कहा, ''हृदयार्थ (ध्यान परम्परा) परम्परा (१) शास्ता शाक्यमुनि, (२) आर्य काश्यप, (३) आर्य आनन्द, (४) अर्हत् शाणवासी, (५) अर्हत् उपगुप्त, (६) आर्य घितिक और सूर्यगर्भ, (७) आर्यकृष्ण, (८) सुदर्शन और विभाग, (९) बुद्धानन्द, (१०) बुद्धमित्र, (११) भिक्षु, (१२) सुनशत, (१३) अश्वमक, (१४) शिव, (१५) नागार्जुन, (१६) आर्यदेव, (१७) राहुल, (१८) संघानन्द, (१९) घलश, (२०) कुमारभूत, (२१) शयत, (२२)

---

१. द्र०-समतेन-मिगडोन -
२. Stien-Collection. IOL, 262, Shantarakshita Library.
३. कथंग दे-ङ (पृ० ४५५)।

वसुबन्धु, (२३) मनोत, (२४) तकलिकश, (२५) सिंह, (२६) मश्यसिद्ध, (२७) प्रज्ञाधर, (२८) बोधिधर्म।''[१]

इस बात को चीनी-धर्म इतिहास ग्रन्थों में भी कहा गया है।[२] लेकिन नामों में कुछ भेद पाया जाता है।

एक तिब्बती विद्वान् क-थोग-पा-छे-वंग-नोरबु ने कहा है—''बोधिधर्म भारत में द्वितीय विश्वामित्र को शासन का भार सौंपकर दक्षिण चीन चले गये। वहाँ कियंग नेन के राजा से मिले। राजा और मन्त्रियों को सद्धर्म का उपदेश दिया, परन्तु आचार्य ने देखा कि वे गम्भीर धर्म के पात्र नहीं हैं। अत: वे उत्तर चीन चले गये। रास्ते में कियङ् नदी पड़ती थी, जिसकी धारा बहुत तेज थी। आचार्य ने पाँच पत्तों वाले एक तृण पर बैठकर नदी पार की। एक सेनापति जदो नाव से नदी पार कर रहे थे, उन्होंने इस दृश्य को देखा तो उनमें उनके प्रति अथाह श्रद्धा उत्पन्न हुई। तत्पश्चात् आचार्य कुछ समय के लिए शवलिन मठ में गुप्त रूप से रहने लगे। अन्तत: ह्वशङ्, हुएखे आदि तीन चीनी भिक्षु आचार्य के शिष्य बने। उन्होंने मात्र हुएखे को परम्परा का भार सौंपा। आचार्य ने कहा कि मैंने नदी पार करते समय पाँच पत्तों वाले तृण का सहारा लिया था, उसका आशय यह है कि तुम (हुएखे) से आरम्भ कर इस परम्परा के पाँचवें आचार्य द्वारा इस परम्परा का अत्यन्त प्रचार-प्रसार होगा। इसके बाद आचार्य का देहान्त हो गया।[३]''

खसपई-गतोन[४] (मखस्-पा-ही-द्गह-स्तोन) और पद्म-कथंग में आचार्य को द्वेषवश कुछ चीनी भिक्षुओं के द्वारा विष पिलाने का उल्लेख मिलता है। तुन-ह्वांग पाण्डुलिपि[५] में और अन्य ग्रन्थों में कहा गया है कि आचार्य बोधिधर्म प्राय: लङ्कावतारसूत्र का उपदेश देते रहते थे।

ध्यान परम्परा के छठवें आचार्य हुई-नेङ् के समय में इसका अत्यधिक प्रचार-प्रसार हुआ। इसी आचार्य के समय में ध्यान परम्परा दो भागों में विभाजित

---

१. थुऊ-कन-ग्रुब-म्थह, पृ० ४३६, लोसल लिङ् प्रकाशन।
२. चीनी धर्म-इतिहास।
३. सुङ्-बुम, माइक्रोफिश, पृ० ४२७, शान्तरक्षित ग्रन्थालय।
४. खस-पई-गतोन, पृ० ४५४, (वर्तमान-तिब्बत प्रकाशन)।
५. तुन-ह्वांग पाण्डुलिपि, Stein Collection, IOL-262.

हो गई, जिन्हें दक्षिणी और उत्तरी परम्परा कहते हैं। इन सारी बातों का हेनरिक दुमौलिन ने अपने ग्रन्थ "हिस्ट्री ऑफ जेन बुद्धिज्म[१]" में विस्तार से वर्णन किया। आगे चलकर इस सम्प्रदाय का प्रचार तिब्बत, कोरिया, जापान आदि देशों में भी हुआ। परन्तु तिब्बत में यह परम्परा (सम्प्रदाय) दीर्घकाल तक स्थिर नहीं रह पाई।

आचार्य कमलशील और ह्वशङ् के बीच शास्त्रार्थ

प्राय: सभी भोट-इतिहासकार एक मत हैं कि आचार्य कमलशील और ह्वशंग के बीच शास्त्रार्थ हुआ था और यह भी प्राय सभी मानते है कि उस शास्त्रार्थ में आचार्य कमलशील की विजय हुई थी। अत: यह विचारनीय विषय है कि आचार्य कमलशील ने ह्वशङ् के जिस मत का खण्डन किया था, वह मत क्या है?

ह्वशङ् का मत

भोट इतिहासकारों ने समयस्-परिसंवाद का उल्लेख अपनी रचनाओं में किया है। ब-शे़द (स्ब-ब्शे़द्, ९वाँ शताब्दी), ञङ-छोस-ह्ब्युङ (धार्मिक इतिहास, १२वीं शताब्दी), पञ्चवर्गीय पद्म-कथंग, छोस-जुङ-खस-पई-गतोन (विद्वान् के उत्सव नामक इतिहास ग्रन्थ, १६वीं शताब्दी), बुस्तोन तथा पद्मा-करपो आदि के इतिहास ग्रन्थों में समयस्-परिसंवाद का विस्तार से विवरण दिया गया है।

ब-शे़द् (स्ब-ब्शे़द्) में ह्वशङ् का मत

ह्वशंग के समकालिक भोट-इतिहासकार ब्-सल-नङ् (स्व-गसल-स्नङ्) ने कहा है, "ह्वशङ् कहते हैं कि सभी धर्म मन की कल्पना से उत्पन्न होते हैं। कुशल या अकुशल कर्मों के कारण प्राणी सुगति या दुर्गति के फल भोगते हुए संसार में संसरित होते हैं। जो कुछ भी नहीं सोचते हैं, या कुछ भी मनस्कार नहीं करते हैं, वही संसार से मुक्त होते हैं। अत: कुछ भी नहीं सोचना (कल्पना) चाहिए। दान आदि दस कुशल कर्मों का उपदेश मन्दबुद्धि वालों के लिए किया

---

१. History of Zen Buddhism : Henrich Dumoulin.

गया है। काले या सफेद रंग के बादलों द्वारा सूर्य को ढकने में कोई अन्तर नहीं होता है, वैसे ही कुशल या अकुशल दोनों ही कर्म बुद्धत्व को ढकते हैं। इसलिए तीक्ष्णबुद्धि वालों को कुछ भी नहीं सोचना चाहिए या कुछ भी कल्पना नहीं करनी चाहिए। कोई भी (कुशल या अकुशल) आचरण न करने से अनुपलम्भ धातु में प्रवेश हो सकता है, जो दसवीं भूमि के समान है''[१]। श्रीघोष[२] (द्पल-द्व्यङस) ने भी इस तरह ह्वशङ् के मत का प्रतिपादन किया है[३]।

ञङ्-रल-पा द्वारा ह्वशङ् मत का प्रतिपादन

१२वीं शताब्दी के भोट-इतिहासकार ञङ्-रल-पा ने अपने इतिहास ग्रन्थ में लिखा है कि चीनी आचार्य 'महायान' (ह्वशङ्) के अनुयायी तिब्बत में बड़ी संख्या में फैल गये थे। वे कहते थे कि संसार में जन्म लेने का कारण स्वयं अपने को नहीं पहचानना है। यदि स्वयं को पहचान लेगा तो व्यक्ति मुक्त हो जायेगा। इसलिए चित्त के स्वभाव को जानना मुक्ति के लिए आवश्यक है। इस मत की स्थापना के लिए उन्होंने (ह्वशङ् ने) तीन शास्त्रों की रचना की। यदि चित्त के स्वभाव को पहचान लिया गया है तो सोते हुए भी व्यक्ति मुक्त हो सकता है। इस बात का प्रतिपादन करने के लिए उन्होंने 'निद्रा ध्यानचक्र' नामक ग्रन्थ की रचना की। उस बात के मर्म को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने 'ध्यानचक्र' तथा उस मत के मण्डन के लिए 'ध्यानोत्तर' नामक ग्रन्थों की रचना की। अपने मत को युक्ति द्वारा सिद्ध करने के लिए 'दृष्टि आवरण' नामक ग्रन्थ की रचना की तथा आगम द्वारा अपने मत की सिद्धि के लिए अस्सी सूत्रों का उद्धरण देकर अपने ग्रन्थ की रचना की है।

प्राय: तत्त्व की अनुभूति के लिए सीधे ऊर्ध्वपतन तथा नीचे से क्रमश: आरोहण, ये दो प्रकार होते हैं। अत: ह्वशङ् के इस धर्म की भावना अतितीक्ष्णेन्द्रिय विनेय जनों के लिए है, जो गरुड़ की भाँति ऊपर से सीधे नीचे उतरने की तरह है। अत: यह युगपत् (तत्क्षण) सिद्धि की परम्परा है। यदि चित्त

---

१. ब-शे़द, पृ० ६८-७३ ।
२. समयस परिसंवाद में उपस्थित भोट विद्वान्।
३. द्र०-ब्-शे़द, पृ० ६८-७३ ।

को नहीं जान पाए तो काय अथवा वाक् द्वारा धर्माचरण या पुण्याचरण से मात्र सुगति की प्राप्ति हो सकती है, बुद्धत्व की नहीं। अत: सभी कर्मों का त्याग कर, कुछ भी मनस्कर न करके, साधक आत्मस्वरूप (स्वयं) के साक्षात्कार से मुक्त होता है और तब उसे बुद्ध कहा जाता है। इस तरह ह्वशङ् ने ध्यान का उपदेश दिया।[१] शरण-गमन, चित्तोत्पाद तथा दान आदि कुशल कर्मों का आचरण तो बन्दर की तरह नीचे से ऊपर की ओर क्रमश: आरोहण की प्रक्रिया होती है। इसे क्रमिक सिद्धि की परम्परा कहते हैं। अत: किसी भी प्रकार की कल्पना न करके सभी तरह के आचरणों से निष्क्रिय रहते हुए अनालम्ब स्थिति में रहना चाहिए। यह मत कथंग-दे-ङ[२], विद्वद्-उत्सव[३] नामक बौद्ध धर्म के इतिहास ग्रन्थों तथा बुस्तोन[४] और पद्मा-करपो[५] के बौद्ध इतिहास ग्रन्थों में भी उल्लिखित है। समतेन-मिगडोन[६] में ह्वशङ् के मत पर एक पूरा परिच्छेद लिखा हुआ है, जिसमें ध्यान परम्परा के अनेक आचार्यों का विवरण भी दिया गया है। नुब-छेन (स्नुब-छेन-सङस्-र्ग्यस-ये-शेस) ने क्रमिक एवं युगपद दोनों साधना-पद्धतियों का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि ज़ोग-छेन (महासम्पन्न) और ध्यान परम्परा निश्चय ही सर्वथा भिन्न है। भोट-विद्वानों में सक्या-पण्डित[७] ने ह्वशङ् मत का खण्डन करते समय इस मत की व्यवस्था का वर्णन किया है। आचार्य चोंखापा[८] तथा उनके शिष्यों[९] ने भी ह्वशङ् मत का उल्लेख किया है।

तुनहंग गुफा से प्राप्त पाण्डुलिपियों[१०] में ह्वशङ् मत का प्रतिपादन करने वाले अनेक छोटे-छोटे ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इन पाण्डुलिपियों में उल्लिखित ह्वशङ् मत भोट-विद्वानों द्वारा वर्णित मत से भिन्न नहीं हैं।

---

१. बौद्ध-धर्म का इतिहास—पुष्प-मधुसार (ཆོས་འབྱུང་མེ་ཏོག་སྙིང་པོ་སྦྲང་རྩིའི་བཅུད།), पृ० ३९७ ।
२. पृ० ४५९, तिब्बत-प्रकाशन।
३. पृ० १५६, बक्सा संस्करण।
४. पृ० १८८, छो-डेन-संस्करण, तिब्बत।
५. पृ० १३०, दिल्ली।
६. पृ० ६०, लद्दाख।
७. थुप-ए-र्गोङ-ग्सल, पृ० ४८ ।
८. द्बु-म-द्गोङ्स-प-रब-गसल्-पृ० १२३, वाराणसी।
९. द्बु-म-स्तोङ-थुन-छेन-मो, म्खस्-ग्रुव-दगे-लेगस्-द्पल-ब्ज़ङ, पृ० २५५ ।
१०. P.T. 121 Recto, CIHTS.

भावनाक्रम में ह्वशङ् मत का प्रतिपादन

आचार्य कमलशील ने तृतीय भावनाक्रम में ह्वशङ्-मत का खण्डन किया है। ब्-शेद् में भी इसकी पुष्टि की है। उसका कहना है—"फल (बुद्धत्व) के निरूपण के लिए आचार्य ने तृतीय भावनाक्रम की रचना की है। फल के प्रतिपादन के साथ उन्होंने ह्वशङ् की मिथ्यादृष्टि का भी निराकरण किया है[१]। आचार्य (कमलशील) ने ह्वशङ् को लक्ष्य करके कहा है, "जो लोग यह मानते हैं कि—चित्त-विकल्प से उत्पन्न होने वाले शुभ तथा अशुभ कर्मों के वशीभूत होने से सत्त्व स्वर्ग आदि फल को भोगते हुए संसार में संसरित होते रहते हैं और जो लोग कुछ भी नहीं सोचते हैं, कुछ भी मनस्कार नहीं करते हैं और कुछ भी कर्म नहीं करते हैं, वे लोग संसार से मुक्त हो जाते हैं। इसलिए कुछ भी नहीं सोचना चाहिए। दान आदि कुशलचर्या भी नहीं करनी चाहिए, (क्योंकि) दान आदि कुशलचर्या तो मूढ पुरुषों को लक्ष्य करके कही गयी है। आचार्य कमलशील के अनुसार उनके द्वारा समस्त महायान का प्रतिक्षेप होता है[२]। पुनः आचार्य ने कहा है—"यह जो कहा गया है कि कुशल आदि कुछ भी कर्म नहीं करना चाहिए, कर्म के क्षय से मुक्ति होती है, उनके ऐसा कहने से 'आजीवकवाद' की स्थापना हो जायेगी।"[३] आचार्य का यह आशय तथा ब्-शेद् आदि ग्रन्थों में वर्णित ह्वशङ् का मत समानरूप से एक ही प्रकार का कथन करते हैं, जैसे—ह्वशङ् के अनुसार कल्पनापूर्वक कुशल या अकुशल कर्म एवं दान आदि धार्मिक आचरण बुद्धत्व-प्राप्ति के लिए बाधक हैं। अतः ह्वशङ् कुछ भी न सोचना, कुछ भी न करना अथवा कल्पना को उत्पन्न होने से रोकना आदि को ही बुद्धत्व प्राप्ति का एक मात्र उपाय मानते हैं।

आचार्य कमलशील द्वारा ह्वशङ् के मत का खण्डन

आचार्य कमलशील ने तृतीय भावनाक्रम में ह्वशङ् के मत का खण्डन किया है। आचार्य ने कुछ भी नहीं सोचना, दान आदि कुशलचर्या भी नहीं करना तथा कल्पना से उत्पन्न होने वाले सभी शुभ एवं अशुभ कर्मों को भवबन्धन का हेतु मानना—इन सबको महायान के नाशकर्ता के समान कहा है। उन्होंने कहा

---

१. ब्-शेद्, पृ० ७७।
२. तृतीय भावनाक्रम, पृ० ३०३, ति० सं०।
३. भावनाक्रम, पृ० ३०७, ति० सं०।

है, ''ऐसा जो बोलते हैं, वे समस्त महायान का प्रहाण करते हैं। समस्त दानों का मूल महायान ही होने के कारण उसका प्रतिक्षेप करने पर समस्त यानों का प्रतिक्षेप हो जायेगा। इस प्रकार ''कुछ भी नहीं सोचना चाहिए'', ऐसा कहने से तो भूतप्रत्यवेक्षा लक्षण प्रज्ञा का प्रतिक्षेप हो जायेगा, क्योंकि सम्यग्ज्ञान का मूल तो भूतप्रत्यवेक्षा है। उसका प्रतिक्षेप होने पर मूल कट जाने के कारण लोकोत्तर-प्रज्ञा भी प्रतिक्षिप्त हो जायेगी। उसके प्रतिक्षिप्त हो जाने से सर्वाकारज्ञता प्रतिक्षिप्त हो जायेगी। दान आदि कुशलचर्या भी नहीं करनी चाहिए—ऐसा कहने से भी दान आदि उपायों का प्रतिक्षेप हो जायेगा।''[१] बुद्धत्व प्राप्ति में प्रज्ञा और उपाय दोनों की युगनद्ध भावना अविनाभूत सम्बन्ध की तरह है। भावनाक्रम में कहा है, ''संक्षेप में उपाय तथा प्रज्ञा ही महायान है। जैसा कि आर्यगयाशीर्ष में कहा गया है—''बोधिसत्त्वों के मार्ग संक्षेप में दो हैं। कौन से दो हैं? वह इस प्रकार हैं—उपाय तथा प्रज्ञा।''[२] वे आगे कहते हैं—''महायान का प्रतिक्षेप करने वाले, अल्पश्रवण, आत्मदृष्टि-परामर्श वाले, विद्वज्जनों की सेवा न करने वाले, तथागत के प्रवचन की नीति को धारण न करने वाले हैं, जो स्वयं विनष्ट होकर दूसरों को भी नष्ट कर रहे हैं। इसलिए युक्ति तथा आगमों से विरुद्ध होने के कारण उनके वचनों का विष से मिले हुए सविष-भोजन की तरह परित्याग कर देना चाहिए।''[३]

सभी धर्मों का स्मृति और मनस्कार के बिना प्रवेश मानना युक्तिसंगत नहीं है। क्योंकि मैं 'इसका स्मरण नहीं करूँगा और इसका मनस्कार नहीं करूँगा' ऐसा सोचना भी स्पष्ट रूप से स्मरण एवं मनस्कार ही है। यदि मात्र स्मरण और मनस्कार नहीं करने की बात है, तो अस्मृति एवं अमनस्कार में विषय का अभाव होता है? इस पर विचार करना चाहिए तथा अभाव तो हेतु होता नहीं। तो फिर किस कारण से अस्मृति एवं अमनस्कार से निर्विकल्पता होती है। यदि अस्मृति एवं अमनस्कार मात्र से निर्विकल्पता होती है, तो मूर्छित पुरुष में भी स्मृति और मनस्कार नहीं होता है। अतः वह भी निर्विकल्प पुरुष हो जायेंगे[४]। इस तरह आचार्य ने युक्ति एवं आगम के द्वारा ह्वशङ् मत का खण्डन

---

१. भावनाक्रम, पृ० ३०३, ति० सं० ।
२. भावनाक्रम, पृ० ३०३, ति० सं० ।
३. भावनाक्रम, पृ० ३०४, ति० सं० ।
४. भावनाक्रम, पृ० ३०४, ति० सं० ।

करके कहा है—"इसलिए बोधिसत्त्व अवश्य ही भूतप्रत्यवेक्षा करके दानादि समस्त पुण्यसम्भारों का अर्जन करे—"ऐसा युक्ति तथा आगमों में प्रतिपादित किया गया है। इसलिए प्रेक्षावानों को अल्पश्रुत एवं अभिमनियों के वचनों को विष की भाँति त्याग करके आचार्य नागार्जुन आदि विद्वज्जनों के अमृतवचनों के अनुसार चलकर समस्त सत्त्वों पर महाकरुणा उत्पन्न करके मायाकार की भाँति अविपर्यस्त होकर अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में परिणामित किये गये दानादि सभी कुशल चर्याओं में तथा अशेष जगत् का उद्धार करने में योग करना चाहिए।"[१]—ऐसा कहा है।

अन्य भोट विद्वानों द्वारा ह्वशङ् के मत का खण्डन

भोट-विद्वानों ने अपनी-अपनी रचनाओं में यत्र-तत्र समयस् परिसंवाद का उल्लेख किया है। समयस् परिसंवाद, जिसमें ह्वशङ् और आचार्य कमलशील के बीच शास्त्रार्थ हुआ था, उसमें आचार्य ने किस प्रकार ह्वशङ् के मत का खण्डन किया था, उसका विस्तार से वर्णन किया है। ब्-शे़द[२] में आचार्य ने जो युक्ति प्रस्तुत की थी, उसका उल्लेख करते हुए कहा है—ह्वशङ् की प्रतिज्ञा का निषेध करते हुए आचार्य ने कहा, 'यदि कुछ भी मनस्कार नहीं करेंगे तो प्रत्यवेक्षा ज्ञान का प्रहाण होता है।'

सभी धर्मों के स्वभाव का ज्ञान प्रत्यवेक्षा ज्ञान द्वारा होता है। यदि उसका प्रहाण करते है तो लोकोत्तरज्ञान अथवा प्रज्ञा का भी प्रहाण हो जाता है। फलतः किस आधार पर योगी निर्विकल्प अवस्था में स्थित होगा। यदि कुछ भी मनस्कार नहीं करते हैं तो अनुभव आदि किसी का भी मनस्कार नहीं होगा। यदि "मैं किसी भी धर्म का मनस्कार नहीं करूँगा"—ऐसा सोचा जाता है तो यह मनस्कार ही होता है। यदि मात्र अमनस्कार निर्विकल्प होता है तो गहरी नींद, मूर्च्छितावस्था तथा मदमत्त की अवस्था में मनस्कार नहीं होता है। अतः ऐसे लोगों को निर्विकल्प होने के कारण विमुक्त होना चाहिए। इस प्रकार सभी (सत्त्वों) के विमुक्त होने का प्रसंग हो जाता है[३]। विमुक्ति के लिए सभी धर्मों की निःस्वभावता एवं शून्यता का ज्ञान अनिवार्य है। शून्यताज्ञान के बिना स्मृति की

---

१. भावनाक्रम, पृ० ३१२, ति० सं० ।
२. ब्-शे़द, पृ० ६९, तिब्बत।
३. ब्-शे़द, पृ० ६६, तिब्बत ।

रहितता मात्र से विमुक्ति होती है तो असंज्ञीभूमि के आसंज्ञिक देवताओं के बिना प्रयत्न मुक्त होने का प्रसंग हो जाएगा। जो स्मृति-रहित हैं, वे गहरी नींद में सोये हुए के समान होते हैं। इससे सम्यक्-मार्ग कैसे प्राप्त हो सकता है। अतः (आपका मत) इन सारे दोषों से लिप्त है, इस कारण उससे संसार से मुक्ति का अवकाश ही नहीं है। विमुक्ति के लिए शून्यता-ज्ञान और महाकरुणा रूपी उपाय की युगपद् भावना अनिवार्य है। इससे आवरणों से मुक्त प्रकृष्ट प्रहाण और प्रकृष्ट अधिगम (ज्ञान) की प्राप्ति से सर्वज्ञता प्राप्त होती है।''[१] इत्यादि युक्ति द्वारा ह्वशङ् के मत के निषेध किया है।

जङ्-रल-पा ने ह्वशङ् की प्रतिज्ञा एवं दृष्टान्त दोनों का खण्डन किया है। उन्होंने कहा है, ''पुनः आचार्य कमलशील ने कहा, आपके दृष्टान्त और प्रतिज्ञा दोनों उचित नहीं है। दृष्टान्त इसलिए उचित नहीं है कि गरुड़ आकस्मिक रूप से अपने पंखों की वृद्धि होने से वृक्ष के ऊपर बैठते हैं, या चट्टान आदि पर जन्म लेकर क्रमशः पंखों की वृद्धि से वृक्ष पर बैठते हैं। पहला पक्ष सम्भव नहीं हो सकता। दूसरा पक्ष तो क्रमवादी के पक्ष में ही उचित दृष्टान्त होगा। इस पर ह्वशङ् कोई उत्तर नहीं दे सके। पुनः आचार्य ने कहा, आपने गलत दृष्टान्त दिया है और आपकी प्रतिज्ञा भी गलत है। यह निर्विकल्प की भावना क्या है? इस अवस्था में क्या कल्पना के एक पक्ष को रोका जाता है या सभी कल्पनाओं को रोका जाता है? यदि एक पक्ष को रोका जाता है तो उसमें नींद एवं मूर्च्छा अवस्था के भी निर्विकल्प होने का प्रसंग होगा, क्योंकि उस अवस्था में कल्पना का एक-पक्ष विद्यमान रहता है। यदि सभी कल्पनाओं को रोका जाता है तो जब आपके द्वारा निर्विकल्प की भावना की जाती है, उस समय 'मैं भावना करूँगा' ऐसी पूर्व कल्पना की आवश्यकता होती है या नहीं? यदि नहीं होती है तो तीनों लोकों के समस्त प्राणियों में भावना की उत्पत्ति हो जायेगी। क्योंकि भावना के लिए पूर्व कल्पना अथवा इच्छा की आवश्यकता नहीं होती है। यदि निर्विकल्प की भावना आप कल्पनापूर्वक अथवा इच्छापूर्वक करते हैं तो आपकी प्रतिज्ञा की हानि हो जाती है। यह तो ऐसा हुआ जैसे मौन व्रत धारण करते समय मौन-व्रत धारण कर रहा हूँ—ऐसा कहना और चिल्लाने को रोकने के लिए 'चिल्लाओ मत' कहकर रोकना—इसी के समान है। आपकी प्रतिज्ञा भी वैसी ही हो जाती है। इत्यादि

---

१. ब्-शे़द, पृ० ६९, तिब्बत ।

युक्ति एवं आगम द्वारा (आचार्य ने) उत्तर दिया तो चीनी उपाध्याय के पास कोई उत्तर नहीं था।[१] इस प्रकार ह्वशङ् और आचार्य के बीच हुए शास्त्रार्थ का स्पष्ट विवरण ञङ्-रल-पा जैसे प्राचीन भोट-इतिहासकारों द्वारा दिया जाना विश्वसनीय ही नहीं, अपितु प्रामाणिक भी है।

बारहवीं शताब्दी के भोट-विद्वान् साक्य-पण्डित (११८२-१२५१ ई०) ने भी ह्वशङ् के मत का खण्डन किया है। उन्होंने उस समय प्रचलित 'करपो-चिक-थुब' (आकस्मिक (अक्रम) वादी) नामक मत का खण्डन करते हुए कहा है कि यह मत चीनी-ह्वशङ् द्वारा कहे गये मत से कोई भिन्न नहीं है। इन दोनों मतों के नाममात्र में अन्तर दिखाई देता है, अर्थ में नहीं[२]। इसी तरह आचार्य चोंखापा (१३५७-१४१९) ने भी ह्वशङ् के मत का खण्डन किया है। उन्होंने महाबोधिमार्गक्रम[३] में कहा है कि किसी की भी कल्पना न करते हुए गम्भीर विपश्यना की भावना करना चीनी उपाध्याय ह्वशङ् के मत से इतर नहीं है, यह बात तीन भावनाक्रमों का सूक्ष्म-अध्ययन करने पर ज्ञात होगी। चोंखापा पुन: कहते हैं, ''इन (ह्वशङ्) के अनुसार समस्त उपायपक्ष बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए सही मार्ग नहीं है, ऐसा कहकर वे संवृति का अपवाद करते हैं और शास्ता के शासन के मर्म नैरात्म्य का प्रतिवेक्षणज्ञान द्वारा परीक्षा करने का निषेध करने के कारण वे परमार्थनय का दूर-दूर तक त्याग कर देते हैं और उस (मार्ग) की जो भी विशेषता हो, किन्तु वह शमथ के एक-पक्ष मात्र से तुलनीय एक चित्तवृत्ति मात्र है, उसको परम (सर्वोत्तम और सम्पूर्ण) मार्ग समझने वाली इस मिथ्यादृष्टि का बोधिसत्त्व कमलशील ने निर्मल युक्ति एवं आगम बल से निषेध करके शास्ता को आह्लादित करने वाले सुमार्ग का विस्तार किया है[४]। खसडुब-जे (मखस-ग्रुब-र्जे १३८४-१४१५) ने भी ह्वशङ् के मत को उच्छेदवाद कहा है[५]। किसी आलम्बन पर मन को स्थापित किये बिना भावना नहीं की जा सकती। बोधिपथप्रदीप में आचार्य दीपङ्कर ने भी कहा है—

---

१. धार्मिक इतिहास, पृ० ४०३, ञङ्-रल-पा।
२. द्र०-थुब-प-द्गोङ्स-ग्सल, साक्य-पण्डित, पृ० ५० ।
३. महाबोधिमार्गक्रम, (लम-रिम-छेन-मो)।
४. लम-रिम-छेन-मो, महाबोधिमार्गक्रम, पृ० ३४३ ।
५. द्र०-स्तोङ्-थुन-स्कल-बजङ्-मिग-ह्ब्रजेद, पृ० १०७ ।

आलम्ब्येऽन्यतरे वाऽपि कुशले स्थापयेन्मनः[१]।

अर्थात् (भावना के समय) किसी भी एक कुशल आलम्बन पर मन को स्थापित करना चाहिए''। अतः प्रायः सभी भोट-विद्वानों ने कहा है कि बुद्धत्व प्राप्ति के लिए एक व्यक्ति को प्रज्ञा और उपाय दोनों के युगनद्ध मार्ग की भावना करना आवश्यक है। इन दोनों की युगनद्ध भावना के बिना बुद्धत्व लक्ष्य की प्राप्ति असम्भव है। इसलिए ह्वशङ् द्वारा कथित 'कुछ भी न सोचना' या ''सभी कल्पनाओं को रोककर चित्त को अमनस्कार अवस्था में लाकर 'दान आदि कुशल कर्मों को भी न करना' बुद्धत्व प्राप्ति का श्रेष्ठ मार्ग है''—यह मत उच्छेदवादी एवं प्रज्ञा-उपाय के युगनद्धमार्ग से परे है। इसलिए आचार्य कमलशील ने कहा है—''इस प्रकार बोधिसत्त्व अवश्य ही भूतप्रत्यवेक्षा करके दानादि समस्त पुण्यसम्भारों को अर्जित करे। ऐसा उन्होंने युक्ति तथा आगमों द्वारा प्रतिपादित किया है। इसलिए प्रेक्षावानों को अल्पश्रुत, अभिमानियों के वचनों को विष की भाँति त्याग करके आचार्य नागार्जुन आदि विद्वज्जनों के अमृतवचनों के अनुसार चलकर समस्त सत्त्वों पर महाकरुणा उत्पन्न करके मायाकार की भाँति अविपर्यस्त होकर अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में परिणामित की गई दानादि सभी कुशल चर्याओं में तथा अशेष जगत् का उद्धार करने में योग करना चाहिए[२]। आचार्य कमलशील द्वारा किस प्रकार ह्वशङ् मत का खण्डन किया है, इसका विस्तृत ज्ञान तृतीय भावनाक्रम तथा उपर्युक्त भोट-विद्वानों की रचनाओं से किया जा सकता है।

भोट-भाषा में विद्यमान (ह्वशङ् की) ध्यान परम्परा के ग्रन्थ

भोट-भाषा में इस परम्परा के अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। उनमें से प्राचीनतम तुन-ह्वाङ् गुफा से प्राप्त पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की हैं। इन पाण्डुलिपियों में कुछ ऐसे ग्रन्थों के अंश प्राप्त हैं, जिनमें इस ध्यान परम्परा के मतों का उल्लेख है। पिल्येट (Pilliot) तथा स्टेन (Stien) द्वारा संगृहीत एवं माइक्रोफिश में सुरक्षित तुन-ह्वाङ् पाण्डुलिपियों में ''संक्षिप्त-दर्शन-अर्थ'', ''योगियों के लिए रचित निर्विकल्प भावनानय'', ''अक्रम प्रवृत्ति के उत्तर'' आदि प्रकीर्ण ग्रन्थों में ह्वशङ् के मत का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इन ग्रन्थों में सूत्रों को

---

१. बोधिपथप्रदीप, पृ० ४०, ति० सं०, १९९४ ।
२. तृतीय भावनाक्रम, पृ० ३१२, ति० सं०, १९८५ ।

इस अक्रमिकवाद का स्रोत माना है। स्टेन संग्रह में "योगियों के लिए रचित निर्विकल्प भावना नय" नामक ग्रन्थ तनग्युर में उपलब्ध आचार्य विमलमित्र द्वारा रचित 'सकृत्प्रवेशिका-निर्विकल्प-भावनार्थ[१]' नामक ग्रन्थ से बहुत मिलता है। इन ग्रन्थों में आरम्भ के कुछ वाक्यों के अलावा शेष ग्रन्थ में बहुत समानता है। इन दोनों ग्रन्थों में अनेक सूत्रों के उद्धरण दिये गये हैं। परन्तु "योगियों के लिए रचित निर्विकल्प भावनानय" नामक ग्रन्थ में ध्यान परम्परा के अनेक आचार्यों के मतों को उद्धृत किया है, जो 'सकृत्प्रवेशिका-निर्विकल्प-भावनार्थ' में नहीं है। इसके अतिरिक्त आचार्य नागार्जुन, आर्यदेव तथा आचार्य हरिभद्र के वचनों के भी उद्धरण हैं, जो ध्यान-परम्परा के अन्य उपलब्ध ग्रन्थों से भिन्न है। स्टेन संग्रह में उपलब्ध प्रकीर्ण ग्रन्थों में ह्वशङ् के द्वारा चर्चित सफेद और काले बादल के दृष्टान्त का उल्लेख मिलता है। इस ग्रन्थ में लिखा है—"ध्यान में रहते समय मत्सर और दान चित्त दोनों ही समान रूप से कल्पना से उत्पन्न होते हैं। छह पारमिताओं का आचरण एवं ध्यान का मनस्कार भी नहीं करना चाहिए। जैसे सूर्य को ढकने के लिए सफेद और काले बादल समान होते हैं।"[२] भोट-विद्वान् नुबछेन संझे येशे (ग्नुबस-छेन-सङस्-र्ग्यस-ये-शेस) ने ह्वशङ् के मत का प्रतिपादन करने वाले 'ध्यान-आलम्बन-आलोक' (ब्सम्-ग्तन-द्मिगस्-स्ग्रोन) नामक ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ में उन्होंने ध्यान-परम्परा के चीनी आचार्यों के वचनों को संगृहीत किया है। इस ग्रन्थ की रचना-शैली तुन-ह्वङ् पाण्डुलिपि से मिलती है। नुब्-छेन ने ह्वशङ् और बोधिधर्म के वचनों को उद्धृत किया है और इस मत का अनुमोदन भी किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि महासम्पन्न और अक्रमिक ध्यान नय ये दोनों भिन्न-भिन्न हैं। उन्होंने कहा—इस 'योगिचक्षुर्ध्यान' के समय तोन-मुन (अक्रमवाद) को इसलिए विस्तारपूर्वक कहा है, क्योंकि इसकी महासम्पन्न से एक होने की भ्रान्ति आशंकित है[३]। इसी तरह "पंचवर्गीय कथङ्[४]" आदि में भी ध्यान मत का प्रतिपादन किया गया है। इस ग्रन्थ में कमलशील के मत को नेयार्थ और ह्वशङ् के मत को नीतार्थ माना गया है। इन दोनों मतों में अक्रमवादी-सम्मत उपाय आदि दस विशेषताओं को

---

१. दे० तेन०, उमा 'कि', पृ० ६-१३ ।

२. Stien collection, Microfilm, 709 IOL 363 p. 6 - शान्तरक्षितग्रन्थालय, तिब्बती संस्थान, सारनाथ।

३. ध्यानालम्बनालोक, पृ० ९३ ।

४. कथङ्-स्दे-ल्ङ, पृ० ४५६, तिब्बत ।

क्रमवादियों से विशिष्ट कहा है[१]। परन्तु इसी ग्रन्थ में ह्वशङ् तथा आचार्य कमलशील के बीच शास्त्रार्थ का उल्लेख करते हुए आचार्य कमलशील को विजयी माना गया है[२]। १३वीं शताब्दी के भोट विद्वान् लोङ्-छेन-रबजमपा (१२९६-१३६३) ने ह्वशङ् मत को सही (ठीक) कहा है। उन्होंने नसलुग-ज़ोद (ग्नस-लुगस-म्ज़ोद्) की स्ववृत्ति में कहा है—उस समय महान् आचार्य ह्वशङ् के वचनों को मन्दबुद्धि लोग ठीक-ठीक ग्रहण नहीं कर पाये, किन्तु वस्तुत: वहीं सत्य अर्थ है''[३]। नसलुग-ज़ोद कारिका में भी कहा है, ''प्रकर्षपर्यन्त तत्त्वार्थ के ग्रहण में स्वर्णशृंखला और या रज्जु दोनों ही समान रूप से बन्धनकारक होते हैं। धर्म और अधर्म दोनों समान रूप से चित्त के बन्धन होते हैं। सफेद और काले बादल दोनों द्वारा सूर्य को ढकना समान रूप से होता है और कुशल-अकुशल दोनों बुद्धि को ढकने में समान होते हैं। अत: तत्व ज्ञाता योगियों को कुशल और अकुशल सभी कर्मों से दूर रहना चाहिए[४]।'' इस बात को उन्होंने अनेकों बार कहा है।

इसी प्रकार भोट-विद्वान् क-थोग-छेवङ् नोरबू (क: थोग-छे़-द्वङ-नारे-बु) ने भी ह्वशङ् के मत को दोषपूर्ण नहीं माना है। वे कहते हैं कि भोट-देश के महाराज ठिसोंग ने ह्वशङ् का आचार्य कमलशील के साथ शास्त्रार्थ इसलिए करवाया था कि आगे चलकर भोट-देश में सम्प्रदायों के बीच अनावश्यक विवाद न हो। वे कहते हैं कि दोनों के मध्य विवाद के उत्पन्न होने मात्र से यह निर्णय नहीं लिया जा सकता कि अमुक मत सद्धर्म के अनुकूल नहीं है। क्योंकि श्रावकयानियों और माध्यमिकों के बीच मतभेद एवं विवाद होते हुए भी बुद्ध शासन निर्दोष ही रहता है। अत: ह्वशङ् के दर्शन एवं उसकी भावनाविधि को हम पूर्णरूप से अस्वीकार नहीं कर सकते[५]। उन्होंने ह्वशङ् के द्वारा प्रतिपादित दर्शन (ध्यानमत) और महासम्पन्न नय को समान (एक जैसा) माना है, जो आचार्य नुबछेन के मत से भिन्न है।

---

१. द्र०-कथङ-स्दे-ल्ङ, पृ० ४६० ।
२. द्र०-पद्म-कथङ्, पृ० ४५० ।
३. ग्नस-लुगस्-म्ज़ोद-स्वाकृति, पृ० ३१ ।
४. ग्नस-लुगस्-मज़ोद कारिका, पृ० ३२ ।
५. द्र०-माइक्रोफिश, पृ० १२, शान्तरक्षित ग्रन्थालय संग्रह।

इस प्रकार भोट-विद्वानों में ह्वशङ् मत को सही मानकर उसे स्वीकार करने वाले लोग भी हैं। अत: यह कहना अत्यन्त कठिन है कि ह्वशङ् का मत बौद्धेतर है। परन्तु वह आचार्य नागार्जुन आदि महारथियों के मत के अनुकूल भी है, यह कहना अत्यन्त कठिन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मध्यमकालोक

ग्रन्थ रचना का प्रयोजन

आचार्य कमलशील ने मध्यमकालोक की रचना उन विनेयजनों के लिए की है, जो भावाभिनिवेश वश दिग्भ्रमित होकर आचार्य नागार्जुन आदि आप्तपुरुषों के उपदेशों का त्याग करते हैं और उनके प्रति अपशब्दों का प्रयोग करते हैं। उन सत्त्वों के चित्त में स्थित वासनासहित आवरणों का निराकरण इस ग्रन्थ की रचना का प्रयोजन है। आचार्य ने स्वयं ग्रन्थ के आरम्भ कहा है—''मूर्ख पुरुष जो भावाभिनिवेश महाग्रह के वशीभूत होकर महामान्य नागार्जुन आदि महापुरुषों की आलोचना करते हैं, उनके क्लेश रूपी महाग्रह के क्षय के लिए करुणार्द्र हृदय से मैं इस ग्रन्थ की रचना करता हूँ''[१]।

ग्रन्थ का अभिधेय

आचार्य कमलशील ने सभी धर्मों की नि:स्वभावता सिद्ध करने एवं एक यान की व्यवस्था करने को इस ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय माना है। आचार्य स्वयं कहते हैं—''अत: एक यान और सभी धर्म परमार्थत: नि:स्वभाव सिद्ध होते हैं''[२]। इस तरह आचार्य ने सम्पूर्ण ग्रन्थ में युक्ति एवं आगमों के द्वारा सभी धर्मों को नि:स्वभावता में सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।

विषय प्रतिपादन का प्रकार

आचार्य ने ग्रन्थ के विषय का प्रतिपादन चार भागों में किया है। प्रथम भाग में पूर्वपक्ष के मतों को रखा है, जिनमें मुख्यत: विज्ञानवादी है, किन्तु इसके

---

१. द्र०-मध्यमकालोक, पृ० १।

२. अतश्च एकमेव यानम्, सर्वे च धर्मा: परमार्थतो नि:स्वभावा इति सिध्यति।
(मध्यमकालोक, पृ० १५१)

अतिरिक्त अन्य वस्तुवादी सम्प्रदाय भी इस ग्रन्थ के पूर्वपक्ष हैं। इस भाग में आचार्य ने पूर्वपक्ष की त्रियानव्यवस्था एवं सभी धर्मों की स्वलक्षणतः सिद्धि के मत का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया है। पूर्वपक्षी अपने मत की स्थापना के लिए जिस युक्ति एवं आगम का प्रयोग करते हैं, उन सब की भी स्पष्ट उल्लेख किया है।

दूसरे भाग में आचार्य ने ''इसका उत्तर दिया जाएगा'', ऐसा कहकर पूर्वपक्षियों के मत का खण्डन करते हुए स्वमत की स्थापना की है। उन्होंने अनेक आगम तथा युक्तियों द्वारा सभी धर्मों को निःस्वभावता में सिद्ध किया है, जो अभ्युदय एवं निःश्रेयस् की सिद्धि के लिए अनिवार्य हैं।

तीसरे भाग में आचार्य ने पूर्वपक्ष की त्रियान व्यवस्था का खण्डन करते हुए प्रबल युक्तियों एवं आगमों द्वारा एक ही यान की स्थापना की है।

चौथे भाग में आचार्य ने ''अतश्च एकमेव यानम्, सर्वे च धर्माः परमार्थतो निःस्वभावा इति सिध्यति'' कहकर पूरे ग्रन्थ का उपसंहार किया है। अनेक युक्ति एवं आगमों के आधार पर आचार्य कमलशील ने यह सुस्पष्ट किया है कि स्वातन्त्रिक माध्यमिक एक ही यान को मानते हैं और वस्तुवादियों के मत से भिन्न सभी धर्मों को निःस्वभाव मानते हैं। इस प्रकार पूरे ग्रन्थ को चार भागों में विभक्त कर अभीष्ट विषय की स्थापना की है।

पूर्वपक्ष का परिचय

जैसे पहले कहा जा चुका है कि युक्ति-अनुयायी एवं आगम-अनुयायी विज्ञानवादी मध्यमकालोक के मुख्य पूर्वपक्ष हैं। इनके अतिरिक्त अन्य वस्तुवादी भी इस ग्रन्थ के पूर्वपक्ष हैं, जो धर्मों को परमार्थतः निःस्वभाव नहीं मानते हैं। उनके मतानुसार युक्ति अथवा आगम के द्वारा धर्मों को निःस्वभावता में सिद्ध नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह (निःस्वभावता) किसी (युक्ति एवं आगम) के द्वारा स्वीकार्य नहीं है। आचार्य ने पूर्वपक्ष के मत को इस प्रकार प्रस्तुत किया है—''कोई मतवादी परमार्थ के गम्भीर अर्थ को ठीक-ठीक न समझकर कहता है कि आगम और युक्ति द्वारा सभी धर्म निःस्वभावता में सिद्ध नहीं किये जा सकते, क्योंकि यह किसी (युक्ति और आगम) के द्वारा स्वीकार्य नहीं है।''[१]

---

१. मध्यमकालोक, पृ० १ ।

इसी तरह "तथागत ने कुछ सूत्रों में सभी धर्मों को निःस्वभाव, अनुत्पन्न, आदिशान्त, प्रकृति-परिनिर्वृत्त कहा गया है, किन्तु वह नेयार्थ है। तथागत ने जो ऐसा कहा है, वह आभिप्रायिक है। उन्होंने परिकल्पित, परतन्त्र तथा परिनिष्पन्न धर्मों में क्रमशः लक्षण निःस्वभावता उत्पत्ति निःस्वभावता तथा परमार्थ निः-स्वभावता के अभिप्राय से सर्व-धर्म निःस्वभावता की देशना की है[१]। निः-स्वभावता के कारण धर्म वस्तुतः अनुत्पन्न है, अतः आदिशान्त तथा प्रकृति परिनिर्वृत्त हैं। इस प्रकार तथागत ने आर्यसन्धिनिर्मोचन आदि सूत्रों में अभिप्रायवश कहा है"[२]। इन वचनों द्वारा ग्रन्थ में पूर्वपक्ष प्रस्तुत किया गया है, जिसे विज्ञानवादी स्वीकारते हैं। इसी तरह "(धर्म) स्वतः उभयतः, विनष्ट हेतुतः, अहेतुतः तथा नित्य-हेतु से उत्पन्न नहीं होते हैं, ऐसा मानना तो उचित है। परन्तु पर (अन्य) अनित्य हेतु से फल उत्पत्ति में क्या दोष है? क्योंकि उससे फल की उत्पत्ति होती ही है। अतः इसका कोई भी प्रमाणतः दूषण नहीं हो सकता[३]", इत्यादि पूर्वपक्ष के प्रतिपादन से भी यह सुस्पष्ट है कि मध्यमकालोक के पूर्वपक्ष में मुख्यरूप से विज्ञानवादी आदि ही हैं। भोट-विद्वान् तेनदर-ङगरमपा द्वारा रचित मध्यमकालोक की एक-मात्र उपलब्ध टीका में भी कहा गया है—यह 'कुछ लोग' का तात्पर्य परमार्थ के गम्भीर अर्थ को न जानने वाले आगम एवं युक्ति अनुयायी विज्ञानवादी ही हैं।"[४] इस प्रकार उन्होंने मध्यमकालोक के पूर्वपक्ष का स्पष्ट परिचय दिया है।

पूर्वपक्ष के आक्षेपों की संख्या

आचार्य ने पूर्वपक्ष को दो भागों में प्रस्तुत किया है। प्रथम भाग में पूर्वपक्ष द्वारा स्वीकृत स्वलक्षणसत्ता का प्रतिपादन किया है। सभी धर्मों की स्वलक्षणसत्ता की सिद्धि के लिए पूर्वपक्ष द्वारा प्रयुक्त युक्तियों एवं आगमों को ७८ प्रश्नों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त द्वितीय भाग में त्रियानव्यवस्था में पूर्वपक्ष के ५ पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में आचार्य ने पूर्वपक्ष के ८३ आक्षेप प्रस्तुत किये हैं।

---

१. मध्यमकालोक, पृ० १ ।
२. द्र०- त्रिविधस्य स्वभावस्य त्रिविधां निःस्वताम्।
सन्धाय सर्वधर्माणां देशिता निःस्वभावता ।। त्रिंशिका विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि, का० २३ ।
३. मध्यमकालोक, पृ० १३७ ।
४. द्बु-म-स्नङ-ब्ही-ब्रजेद्-म्थो-मध्यमकालोक स्मृति लेख, पृ० १२ ।

आचार्य द्वारा पूर्वपक्ष के खण्डन के लिए प्रयुक्त युक्तियाँ

सामान्यतया आचार्य शान्तरक्षित तथा उनके शिष्य अपने मत की स्थापना तथा पूर्वपक्ष के खण्डन के लिए मुख्यरूप से एकानेकस्वभाववियुक्त युक्ति का प्रयोग करते हैं। किन्तु आचार्य कमलशील ने मध्यमकालोक में खण्डन-मण्डन की प्रक्रिया में अनेक हेतुओं का प्रयोग किया है, यथा—हेतुराज कही जाने वाली प्रतीत्यसमुत्पाद युक्ति, चतुष्कोटि-उत्पादानुपपत्तियुक्ति, एकानेकवियुक्तत्वयुक्ति, वज्रकणयुक्ति, सदसदनुपपत्तियुक्ति आदि। इन युक्तियों के द्वारा उन्होंने परमत का खण्डन एवं स्वमत की स्थापना की है। प्रयोग—जो प्रतीत्यसमुत्पाद है, वह परमार्थतः निःस्वभाव है, क्योंकि वह माया के समान है। आचार्य चोङ्खापा ने नेय-नीतार्थविभङ्गशास्त्रसुभाषितसार में कहा है कि आचार्य कमलशील ने मध्यमकालोक में वज्रकणयुक्ति, सदसदनुपपत्तियुक्ति, चतुष्कोटि-उपादानुपपत्तियुक्ति, एकानेकवियुक्तत्वयुक्ति आदि का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त प्रतीत्यसमुत्पाद हेतुराज का भी प्रयोग किया है।''[१]

पूर्वपक्ष :—

आगम द्वारा सर्वधर्म निःस्वभावता का निषेध

पूर्वपक्ष का मानना है कि सभी धर्मों को आगम तथा युक्ति द्वारा निः-स्वभावता में सिद्ध नहीं किया जा सकता। क्योंकि आगम को यह (निः-स्वभावता) स्वीकार्य नहीं है। युक्ति द्वारा भी उसे सिद्ध नहीं किया जा सकता, क्योंकि आपके द्वारा सर्वधर्म निःस्वभावता मानने के कारण त्रिरूपात्मक लिङ्ग के लिए आवश्यक धर्मी और दृष्टान्त आपके मत में स्वभावतः उपलब्ध नहीं हैं। शब्द (प्रतिज्ञा) मात्र से निःस्वभावता सिद्ध नहीं की जा सकती। क्योंकि शब्द अपने अभिधेय अर्थ को प्राप्त कराने में विसंवादक भी हो सकते हैं। शब्द वक्ता की इच्छा पर निर्भर करता है और साधारण पुरुष शब्द मात्र से निःस्वभावता की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं। निःस्वभाववादी भी बुद्धवचन मानने वाले किसी व्यक्ति को स्पष्टरूप से निःस्वभावता का निर्देश नहीं कर सकते हैं। आगमों में जो सभी धर्मों को निःस्वभाव कहा गया है, वह आभिप्रायिक (नेयार्थ) वचन है। जैसे कहा भी है—

---

१. नेयार्थ-नीतार्थविभङ्गशास्त्रसुभाषितसार, पृ० १४४, ति० सं०, १९९८ ।

त्रिविधस्य स्वभावस्य त्रिविधां निःस्वभावताम् ।
सन्धाय सर्वधर्माणां देशिता निःस्वभावता ।। (का० २३)

युक्ति द्वारा सर्वधर्म निःस्वभावता की सिद्धि का निषेध

प्रत्यक्ष द्वारा सिद्धि का निषेध

वस्तुधर्म पृथग्जनों के प्रत्यक्ष का विषय है। जो प्रत्यक्ष का विषय है, वह निःस्वभाव नहीं हो सकता। जो निःस्वभाव है, उससे विज्ञान की उत्पत्ति उचित नहीं है। यदि वस्तु सत्ता को विज्ञान का उत्पादक मानते हैं तो 'सर्वधर्म निः-स्वभावता' इस प्रतिज्ञा की हानि होगी। अतः योगिप्रत्यक्ष द्वारा भी धर्मों की निः-स्वभावता को सिद्ध नहीं किया जा सकता।

अनुमान द्वारा सिद्धि का निषेध

अनुमान द्वारा भी धर्मों की निःस्वभावता सिद्ध नहीं की जा सकती। क्योंकि अनुमान द्वारा साध्य की सिद्धि के लिए पक्षसत्त्व, सपक्षसत्त्व और विपक्ष में असत्त्व नामक लिङ्ग के तीन-रूपों की अविकलता आवश्यक होती है। यदि आप सभी धर्मों को निःस्वभाव मानते हैं तो आपके मत में हेतु के ये तीन-रूप उपलब्ध नहीं हो सकते। अतः अनुमान का प्रयोग ही नहीं हो सकता है, ऐसी स्थिति में उसे सिद्ध कैसे किया जा सकता है।

इसी तरह, स्वभाव, कार्य तथा अनुपलब्धि हेतुओं द्वारा भी सभी धर्म निःस्वभावता में सिद्ध नहीं किये जा सकते, क्योंकि आप सभी धर्मों को असत् मानते हैं। कार्य हेतु द्वारा साध्य को सिद्ध करने के लिए धर्मों को उत्पाद्यस्वभाव या उत्पत्तिस्वभाव मानना चाहिए। स्वभाव हेतु के प्रयोग के लिए साध्य धर्मों को स्वभाव युक्त होना चाहिए, जो आपके मत में नहीं है।

अनुपलब्धि हेतु द्वारा भी धर्मों की निःस्वभावता सिद्ध नहीं की जा सकती। दृश्यानुपलब्धि हेतु का प्रयोग ही नहीं दे सकता। उदाहरणार्थ व्यक्ति दृश्यानुपलब्धि के स्थान (भूतल) में प्रत्यक्षतः यह जान लेता है कि 'वहाँ कलश नहीं है'। परन्तु कलशविविक्त स्थान में कलश के अभाव की सिद्धि के लिए दृश्यानुपलब्धि हेतु का प्रयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि कलश परमार्थ निः-स्वभाव है। जो निःस्वभाव है, उसका दृश्यत्व कैसे सिद्ध किया जा सकता है।

इसी प्रकार कारणानुपलब्धि हेतु से भी नि:स्वभावत्व सिद्ध नहीं किया जा सकता। क्योंकि जब रात में धूम विविक्त जलह्रद की सिद्धि के लिए अग्नि का हेतु दिया जाता है, तब निश्चय ही कार्य-कारण भाव की सत्ता होनी चाहिए। परन्तु आपके द्वारा कार्य और कारण को नि:स्वभाव मानने के कारण कारणानुपलब्धि हेतु का प्रयोग भी कैसे किया जा सकता है। अत: प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण द्वारा भी सभी-धर्मों को नि:स्वभावता में सिद्ध नहीं किया जा सकता।

ईश्वर आदि को नि:स्वभावता में सिद्ध न कर पाने का दोष

सभी बौद्ध सम्प्रदायों में ईश्वर को जगत् के कर्ता के रूप में स्वीकार न करने में कोई भेद नहीं है। क्योंकि सभी धर्म अपने-अपने कारण से उत्पन्न होते हैं और जो हेतु से उत्पन्न होते हैं, वे स्वलक्षण वस्तु होते हैं। अत: वे परमार्थत: नि:स्वभाव नहीं हो सकते। इसी तरह ईश्वर भी यदि अपने हेतु से उत्पन्न होता है, तो वह नि:स्वभाव कैसे हो सकता है?

नि:स्वभावता की सिद्धि के लिए प्रतिबिम्ब आदि दृष्टान्त की अनुपपन्नता

धर्मों की नि:स्वभावता की सिद्धि के लिए प्रतिबिम्ब आदि दृष्टान्त युक्त नहीं है। क्योंकि सौत्रान्तिक आदि इन्हें बाह्यवस्तु मानते हैं और विज्ञानवादी इन्हें चित्तमात्रात्मक मानते हैं। अत: वे वस्तु हैं। परन्तु माध्यमिक उन्हें वस्तु ही नहीं मानते। अत: जिस दृष्टान्त वस्तु की सत्ता ही नहीं है, उसके द्वारा धर्मों की नि:-स्वभावता कैसे सिद्ध की जा सकती है?

संवृतित: धर्मों का सस्वभावत्व

यदि आप धर्मों का परमार्थत: स्वभाव नहीं मानेंगे तो संवृति में भी वे सस्वभाव नहीं हो सकते। क्योंकि जो परमार्थत: असत् हैं, उन्हें वन्ध्या पुत्र की तरह संवृति में भी स्वभावत: अनुत्पन्न ही मानना पड़ेगा। इसलिए बन्ध्यापुत्र और रूप आदि वस्तु परमार्थत: समानरूप से अनुत्पन्न हैं। फलत: रूप की तरह बन्ध्यापुत्र को भी दृश्य होना चाहिए।

परत: उत्पत्ति के निषेध का खण्डन

विज्ञानवादी आदि वस्तुवादी बौद्ध परत: उत्पत्ति मानते हैं। वे मानते हैं कि धर्मों का स्वत:, उभयत:, विनष्ट हेतुत:, अहेतुत: तथा नित्य-हेतुत: उत्पाद

नहीं हो सकता, परन्तु परतः अनित्य-हेतु से कार्य की उत्पत्ति होने में क्या दोष हो सकता है? जब हेतु के बल से कार्य की उत्पत्ति हो तो उसे ही परतः उत्पत्ति कहते हैं। कार्य सिद्धि के क्षण में कारण का निरोध हो जाता है। अतः कार्य और कारण युगपद् नहीं होते इसलिए तुलादण्ड की तरह युगपद् उत्पाद का प्रसंग भी नहीं है। अतः परतः अनित्य-हेतु द्वारा कार्य की उत्पत्ति मानने में कोई दोष नहीं है।

यदि सत् कार्य की उत्पत्ति नहीं मानते हैं अर्थात् असत् कार्य की उत्पत्ति मानते हैं तो दोनों पक्षों को मान्य हेतु और दृष्टान्त उपलब्ध नहीं हो सकते। अतः दोनों पक्षों को मान्य हेतु और दृष्टान्त की अनुपलब्धता के कारण दोनों के असत् होने का प्रसंग आयेगा। यदि दोनों पक्षों में मात्र हेतु और दृष्टान्त उपलब्ध हैं तो निःस्वभावता को मानने की प्रतिज्ञा की हानि होगी।

सभी धर्मों को निःस्वभाव मानने पर अतिप्रसंग होने का दोष

विज्ञान भी क्या अन्य धर्मों की तरह निःस्वभाव है? यदि है तो यह भी अन्य धर्मों की तरह मिथ्या है। अतः योगी इसका प्रहाण करेंगे। इस तरह योगी भी असत् हो जाएगा और योगिज्ञान भी असत् हो जाएगा। इसके द्वारा तत्त्वज्ञान भी नहीं होगा और सर्वज्ञता भी प्राप्त नहीं होगी। अतः कोई भी व्यवस्था ही नहीं रह पाएगी। यदि आप योगिज्ञान को संवृति-स्वभाव मानते हैं, तो बुद्धों का ज्ञान विपरीत का ज्ञान हो जाएगा, क्योंकि वे योगिज्ञान को परमार्थतः असत् देखेंगे। अतः अतिप्रसंग दोष होगा।

प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम प्रमाण द्वारा बाधा

सभी धर्मों को स्वभाव से रहित मानने पर प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम प्रमाण द्वारा बाधा होती है। धर्मों के स्वभाव प्रत्यक्षतः देश, काल तथा प्रकृति से भिन्न-भिन्न दिखलाई देते हैं। इसलिए ये स्वभाव से असत् कैसे हो सकते हैं? अतः प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा उनकी निःस्वभावता बाधित होती है।

इसी तरह धूम आदि द्वारा अग्नि आदि धर्मों के स्वभाव अनुमान प्रमाण द्वारा ज्ञात होते हैं। यदि अग्नि-धर्म स्वभावतः असत् होता तो अनुमान प्रमाण द्वारा उसके स्वभाव का अविसंवादी ज्ञान कैसे हो सकता है? अतः अनुमान प्रमाण द्वारा भी आप का मत बाधित होता है।

सामान्य जनों के लिए त्रायस्त्रिंश आदि अतिपरोक्ष विषयों की सिद्धि आगम प्रमाण द्वारा की जाती है। तदनुसार तथागत ने उन अतिपरोक्ष विषयों का स्वयं साक्षात्कार करके देशना भी की। यदि वे खपुष्प के समान असत् हैं तो इनकी सत्ता की देशना भी अनुचित होगी। अत: आपकी नि:स्वभावता की जो प्रतिज्ञा है, वह प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम प्रमाण द्वारा बाधित होती है।

संक्लेश एवं व्यवदान पक्ष के अपवाद का दोष

यदि सभी धर्म नि:स्वभाव हैं तो कुशल तथा अकुशल कर्मों के कारण इष्ट और अनिष्ट फल की प्राप्ति की व्यवस्था नहीं हो सकती। यह तो अत्यन्त असत् कूर्मरोम से वस्त्र बनाने की भाँति होगा। अत: कर्म-फल के अपवाद करने के कारण संक्लेश पक्ष का अपवाद हो जायेगा। इसी तरह तथागत द्वारा मार्ग-भावना से लोकोत्तर मार्ग की प्राप्ति की देशना भी निरार्थक हो जायेगी। क्योंकि अधिगम, अधिगम्य एवं अधिगमक का अभाव हो जाता है। यह तो अश्व-शृंग के स्तम्भ पर बने विशाल प्रासाद में शशशृंग की सीढ़ी बनाकर बन्ध्यापुत्र द्वारा इस पर आरोहण की भाँति है। अत: व्यवदान पक्ष का भी अपवाद होगा। इसी तरह चार आर्यसत्यों की भी अनुपपत्ति हो जायेगी।

लोक प्रसिद्धि द्वारा वाधा

लोक में यह प्रसिद्ध है कि बीज और अङ्कुर उत्पादक एवं उत्पाद्य वस्तु हैं और वे सस्वभाव हैं। यह बात गोपालाङ्गना तक प्रसिद्ध है। इसलिए भावों का स्वभाव नहीं मानेंगे तो वह इस लोक प्रसिद्धि द्वारा बाधित हो जायेगा। अत: सभी धर्मों का अपना-अपना निश्चित स्वभाव होता है और वे अपने स्वभाव से उत्पन्न होकर अपने स्वभाव में स्थित रहते हैं।

अभिधर्म से विरोध का दोष

अभिधर्मकोश में छह हेतु एवं चार प्रत्ययों का प्रतिपादन किया गया है। जैसे आचार्य वसुबन्धु ने कहा है—

कारणं सहभूश्चैव सभागः संप्रयुक्तकः ।
सर्वत्रगो विपाकाख्यः षड्विधो हेतुरिष्यते ।। (अ० क० २:४९)

अपि च—

चत्वारः प्रत्यया उक्ता हेत्वाख्यः पञ्च हेतवः ।
चित्तचैत्ता अपरमा उत्पन्नाः समनन्तरः ।।
आलम्बनं सर्वधर्माः कारणाख्योऽधिपः स्मृतः ।।

(अ० क० २:६१-६२)

यदि आप सभी धर्मों को अनुत्पन्न मानते हैं तो अभिधर्म में उक्त यह मत अनुपपन्न हो जायेगा। तथागत ने स्कन्ध और आयतन में संगृहीत सभी धर्मों को कार्य-कारणात्मक ही कहा है। अतः आपके मत के अभिधर्म से विरुद्ध होने का दोष होगा।

संवृति में सत् मानना तो वस्तुसत् ही स्वीकार करना है

जब आप संवृति में प्रमाण स्वीकार करते हैं तो वह एक प्रकार से भाव को स्वीकार करना ही है। क्योंकि प्रमाण आदि जो संवृति सत् हैं, वे अत्यन्त असत् शशशृंग आदि से विपरीत भावरूप (वस्तुभूत) ही हैं। अतः संवृति में सत् मानना वस्तु को स्वीकार करना हो जायेगा। आचार्य कमलशील ने पूर्वपक्ष द्वारा संवृति के अर्थ का जिस तरह निरूपण किया जाता है, उसका विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया है। पूर्वपक्षी कहते हैं कि दोनों पक्षों द्वारा स्वीकृत संवृति का अर्थ क्या है? क्या इसका अर्थ है अत्यन्त अभाव है, या अत्यन्ताभाव नहीं है? क्या संवृति सामर्थ्ययुक्त है या नहीं है? यदि संवृति का अर्थ अत्यन्त अभाव है, तो वह सामर्थ्य युक्त नहीं हो सकती। यदि उसे उत्पत्ति आदि में सामर्थ्य युक्त मानते हैं तो वह वस्तु हो जाएगी। अतः एक धर्म में सामर्थ्य तथा असामर्थ्य दोनों कैसे युक्त हो सकते हैं? क्या लोक प्रसिद्धि को संवृति कहते हैं? यदि हाँ तो सर्वप्रथम इस लोक की पहचान करना आवश्यक है। क्या आप शास्त्र रचना करने वाले विद्वानों को 'लोक' मानते हैं, या सामन्य पुरुषों को 'लोक' मानते हैं? यदि आप पहले पक्ष को लोक मानते हैं तो भावों का स्वभाव अनेक हो जाएगा, क्योंकि वे भावों को विभिन्न स्वभाव में निरूपित करते हैं। यदि आप दूसरे पक्ष को 'लोक' मानते हैं तो उनमें नैरात्म्य तथा निःस्वभावता आदि शब्द प्रसिद्ध न होने के कारण वे उन्हें स्वीकार नहीं करेंगे। अतः संवृति का अर्थ लोक प्रसिद्धि से मानना भी उचित नहीं होगा।

पूर्वपक्ष का खण्डन

आचार्य ने पूर्वपक्ष द्वारा प्रस्तुत विवादों का विस्तार से उल्लेख करने के पश्चाद् "इसलिए इसका उत्तर दिया जाएगा"[१] इत्यादि कहकर युक्ति एवं आगम द्वारा पूर्वपक्ष का खण्डन किया है। पूर्वपक्ष का मानना है कि आगम द्वारा सभी धर्मों को नि:स्वभावता में सिद्ध नहीं किया जा सकता। क्योंकि कोई आगम को स्वीकार नहीं करते। इस मन्तव्य की आचार्य ने दो प्रकार से परीक्षा की है। उन्होंने कहा है कि क्या आगमों को पूर्णत: स्वीकार नहीं किया जाता है, या अंशत: स्वीकार नहीं किया जाता है? पहला पक्ष युक्त नहीं है। क्योंकि कोई भी ऐसा व्यक्ति उपलब्ध नहीं हो सकेगा, जो आगम का आश्रय नहीं लेता है। ऐसा अवश्य हो सकता है कि कोई व्यक्ति अभिमान, अरुचि, पापमित्र के सम्पर्क, मोह, कल्याणमित्र के असंसर्ग, अश्रद्धा तथा विवेचन बुद्धि के अभाव में तथागत के आगमों का आश्रय न लेने वाला हो। परन्तु जो धर्मप्रविचय स्वभाव वाली प्रज्ञा से युक्त विद्वान् हैं, वे एक कुशल श्रेष्ठी की तरह तथागत के मणि रूपी वचनों को अपनाते हैं। तथागत ने भी कहा है—

तापाच्छेदाच्च निकषात् सुवर्णमिव पण्डितैः ।
परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद्वचो न तु गौरवात् ।।

इस वचन के आधार पर आप यदि उनके वचनों की परीक्षा करके ही स्वीकार करना चाहते हैं तो तथागत द्वारा प्रज्ञापारमिता आदि सूत्रों में उपदिष्ट मध्यममार्ग को क्यों स्वीकार नहीं करते हैं? यदि आप अपने सामर्थ्य से उसको स्वीकार नहीं कर सकते हैं, तो तथागत द्वारा स्वयं लङ्कावतारसूत्र में व्याकृत महात्मा नागार्जुन ने जिसका अनेक युक्तियों द्वारा प्रतिपादन किया है, उसे क्यों स्वीकार नहीं करते हो? अत: प्रथम भूमि में स्थित आप्त पुरुष आचार्य नागार्जुन के वचनों को त्यागकर भूमि में अस्थित सामान्य पुरुषों के वचनों को स्वीकार करना आपके लिए युक्त नहीं है।

माध्यमिक लोग शब्दों का अर्थ के साथ परमार्थत: कोई सम्बन्ध नहीं मानते हैं। परन्तु अर्थ और शब्द में अभ्रान्त पुरुष द्वारा कहे गये शब्दों को

---

१. तत्र तावद् नागमत: सर्वे धर्मा नि:स्वभावत्वेन साधयितुं शाक्या:, केनापि तथाभ्युपगमाभावाद् इत्याद्युक्तं तन्निरुच्यते। मध्यमकालोक, पृ० २० ।

विवक्षित अर्थ से असम्बद्ध भी नहीं मानते हैं। यदि ऐसा नहीं होगा तो सभी व्यवहारों का उच्छेद हो जाएगा। तथागत के वचन त्रिरूप लिङ्ग द्वारा परीक्षा करने पर विशुद्ध तथा अविसंवादक होते हैं। अतः विद्वानों का उस पर निर्भर रहना उचित होगा। इसलिए सभी धर्मों को निःस्वभावता में सिद्ध करने वाले शब्द उपलब्ध नहीं है—ऐसा कहना उचित नहीं है।

युक्ति द्वारा सभी धर्मों की निःस्वभावतासिद्धि

युक्ति द्वारा सभी धर्म निःस्वभावता में सिद्ध नहीं किये जा सकते, क्योंकि वस्तुविषयक प्रत्यक्ष द्वारा सभी धर्म स्वभावविविक्त के रूप में ज्ञात नहीं किये जा सकते—ऐसा (आपका) कहना भी उचित नहीं है। आपके अनुसार क्या सभी पुरुषों के प्रत्यक्ष द्वारा सभी धर्मों की निःस्वभावता नहीं जानी जा सकती है, या आपकी तरह तिमिर से आच्छादित पुरुषों के प्रत्यक्ष द्वारा निःस्वभावता नहीं जानी जा सकती है? पहला पक्ष युक्त नहीं है, क्योंकि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि सभी पुरुषों के प्रत्यक्ष द्वारा धर्मों की निःस्वभावता नहीं जानी जाती है। आप जैसे अर्वाग्दर्शी सभी पुरुषों की मनःशक्ति का बोध नहीं कर सकते हैं। अतः सभी पुरुषों के प्रत्यक्ष द्वारा धर्मों की निःस्वभावता नहीं जानी जा सकती—ऐसा कहना उचित नहीं है।

इसी तरह प्रत्यक्ष का विषय 'वस्तु' है—ऐसा कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि अर्वाग्दर्शियों का प्रत्यक्ष तैमिरिक पुरुषों के प्रत्यक्ष की भाँति यथाभूत का दर्शन नहीं कर सकता। यदि ऐसा नहीं होता (अन्यथा) तो सभी के तत्त्वदर्शी होने का प्रसङ्ग होगा। तथागत तथा बोधिसत्त्वों के ज्ञान द्वारा परमार्थतः सत्स्वभाव वस्तु का दर्शन नहीं किया जाता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष द्वारा सभी धर्मों की निः-स्वभावता सिद्ध न कर पाना, कोई दोष नहीं होता है।

अनुमान द्वारा सभी धर्मों की निःस्वभावतासिद्धि

अनुमान प्रमाण द्वारा भी सभी धर्मों को निःस्वभावता में सिद्ध नहीं किया जा सकता, क्योंकि धर्मी तथा दृष्टान्त आदि अनुत्पन्न हैं? आपका ऐसा कहना भी युक्त नहीं है। क्योंकि यदि आप हमारी प्रतिज्ञा 'सर्व-धर्म निःस्वभावता' पर प्रसङ्ग का आपादन करते हैं तो यह उचित नहीं है, क्योंकि हम परमार्थतः सभी धर्मों को निःस्वभाव मानते हैं। परमार्थतः लिङ्ग, दृष्टान्त तथा धर्मी आदि असत् हैं,

इसलिए अनुमान का व्यवहार नहीं हो सकता। हमने तो कभी भी अनुमान आदि के व्यवहार को परमार्थ-सत् नहीं माना है। अतः किस कारण से आप इस (अनुमान) के अभाव का प्रसङ्ग आरोपित कर सकते हैं।

कार्य तथा स्वभावहेतु द्वारा निःस्वभावता की सिद्धि

पूर्वपक्ष का कहना है कि कार्य तथा स्वभाव हेतु द्वारा सभी धर्मों को निःस्वभावता में सिद्ध नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये हेतु वस्तु साधक हेतु हैं? ऐसा कहना भी युक्त नहीं है। ऐसा कहीं भी सिद्ध नहीं है कि ये हेतु परमार्थसत् वस्तु का साधक हेतु है। सभी धर्म परमार्थतः अनुत्पन्न और निःस्वभाव होते हुए भी व्यवहार में सत् है। अतः हम वस्तुसत् को सिद्ध करने वाले किसी भी परमार्थ-सत् हेतु को नहीं मानते हैं।

परतः उत्पत्ति आदि मतों का खण्डन

वस्तु स्वतः, उभयतः तथा अहेतुतः उत्पन्न नहीं होती हैं, परन्तु वस्तुओं की परतः उत्पत्ति होती है, ऐसे आपके मत को स्वीकार करना भी उचित नहीं है। सांख्य मतवादी मानते हैं कि उत्पन्न होने से पूर्व कार्य अपने हेतु में अव्यक्त रूप में विद्यमान रहता है। वे वस्तु को अपने से (स्वतः) एवं स्वभावतः उत्पन्न मानते हैं। यह मत सर्वथा युक्त नहीं है। क्योंकि यदि वस्तु स्वतः उत्पन्न होती हैं तो यहाँ दो विकल्प उपस्थित होते हैं, यथा—(१) असत् वस्तु की उत्पत्ति होती है या (२) सत् वस्तु की उत्पत्ति होती है? प्रथम पक्ष के अनुसार कोई भी किसी भी वस्तु की उत्पत्ति का कारण नहीं हो सकेगा, क्योंकि वह असत् है। वह तो बन्ध्यापुत्र की भाँति स्वभावतः असत् है, इस कारण स्वतः उत्पत्ति उपपन्न नहीं है। द्वितीय पक्ष के अनुसार भी एक सत् (सिद्ध) वस्तु के पुनः उत्पन्न होने से कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है। अर्थात् पुनरुत्पाद निष्प्रयोजन है। अतः वस्तुओं की स्वतः उत्पत्ति कथमपि नहीं हो सकती।

वस्तु का परतः उत्पाद स्वीकार करना भी युक्त नहीं है। क्योंकि यदि वस्तु उत्पन्न होती है, तो उसके उत्पादक हेतु को या तो नित्य होना चाहिए या अनित्य होना चाहिए। नित्य से उत्पत्ति युक्त नहीं है, क्योंकि नित्य किसी भी तरह क्रमशः या युगपद् अर्थक्रिया करने में असमर्थ होता है। अनित्य से भी उत्पाद नहीं हो सकता, क्योंकि वह क्षणिक है। अतः प्रश्न है कि वस्तु अतीत, वर्तमान तथा

भविष्य के किस क्षण में उत्पन्न होती है? यदि आप कहें कि अतीत से उत्पन्न होती है, तो यह उचित नहीं है, क्योंकि अतीत असत् है। यदि आप अतीत से उत्पत्ति मानेंगे तो आपको अहेतु से कार्योत्पत्ति मानने का दोष होगा। अनागत से भी वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती। वह भी अतीत के समान असत् ही है। वह तो स्वरूपतः ही असिद्ध है, अतः आकाश पुष्प की भाँति होने के कारण उससे कार्य की उत्पत्ति युक्त नहीं है।

वर्तमान से भी उत्पत्ति युक्त नहीं है। उससे या तो समकाल में उत्पन्न होना चाहिए या तो भिन्नकाल में उत्पन्न होना चाहिए? समकालिक उत्पत्ति युक्त नहीं है। क्योंकि हेतु सर्वदा कार्य की उत्पत्ति से पहले विद्यमान होते हैं। यदि हेतु और कार्य समकाल में होते हैं, तो हेतु के उत्पन्न होते ही कार्य का स्वरूप भी सिद्ध हो जाना चाहिए। इस तरह हो जाने पर हेतु अपने कार्य की उत्पत्ति में कोई भी उपकार (योगदान) नहीं कर सकेगा। ऐसी स्थिति में हेतु तथा कार्य का व्यवहार भी सम्भव नहीं हो सकेगा।

भिन्न काल में उत्पत्ति होती है, यह भी स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि पूर्वोक्त दोष यहाँ पर भी लागू होते हैं। अतः वस्तुओं की उत्पत्ति माया के समान कही गई है। जैसे आचार्य नागार्जुन ने लोकातीतस्तव में कहा है—

निरुद्धाद्वाऽनिरुद्धाद्वा बीजादङ्कुरसंभवः ।
मायोत्पादवदुत्पादः सर्व एव त्वयोच्यते[१] ।।

अर्थात् निरुद्ध (अतीत) अथवा अनिरुद्ध (वर्तमान) बीज से अङ्कुर का उत्पाद सम्भव नहीं है। इसलिए भगवान् आपने सभी उत्पाद को माया के समान उत्पाद कहा है।

इस तरह आचार्य ने कहा है कि वस्तु सर्वथा परमार्थः स्वतः, परतः, उभयतः तथा अहेतुतः उत्पन्न नहीं होती है। वस्तुओं की उत्पत्ति आदि जो दिखाई देती है, वह सब माया की तरह है। जैसे आचार्य नागार्जुन ने पुनः कहा है—

न स्वतो नापि परतो
न द्वाभ्यां नाप्यहेतुतः ।

---

१. द्र०-लोकातीतस्तवः, का०-१८ ।

उत्पन्ना जातु विद्यन्ते
भावाः क्वचन केचन ।। (मूलमाध्यमिककारिका १:३)

अर्थात् कोई भी वस्तु कहीं भी स्वतः, परतः, उभयतः या अहेतुतः उत्पन्न नहीं होती। इसी तरह आचार्य चन्द्रकीर्ति ने भी मध्यमकावतार में इस विषय का विस्तार से प्रतिपादन किया है।

आचार्य ज्ञानगर्भ के "अनेक हेतु द्वारा एक वस्तु की उत्पत्ति न होना, अनेक हेतु द्वारा अनेक कार्य की उत्पत्ति नहीं होना, एक हेतु द्वारा अनेक वस्तु की उत्पत्ति न होना तथा एक से एक की उत्पत्ति न होना आदि मतों का निषेध करते हुए पूर्वपक्षी कहते हैं कि मात्र एक हेतु से मात्र एक कार्य की उत्पत्ति न मानना तो ठीक है। परन्तु लोक में एक हेतु द्वारा अनेक कार्यों की उत्पत्ति, अनेक हेतुओं से अनेक कार्यों की उत्पत्ति तथा अनेक हेतुओं से एक कार्य की उत्पत्ति दिखलाई पड़ती है, अतः उसे हम कैसे नकार सकते हैं? उनका ऐसा कहना युक्त नहीं है। क्योंकि हम अदृश्य की सिद्धि नहीं करते हैं। दर्शन मात्र को भी प्रामाणिक नहीं मान सकते हैं। जैसे स्वप्न में अनेक हेतुओं से उत्पन्न चक्षुर्ज्ञान आदि कोई एक कार्य परमार्थतः वस्तुसत् नहीं है। क्योंकि इसमें विभिन्न कालों में विभिन्न दृश्य दिखलाई देती हैं। यदि आप विचित्रस्वभाव वस्तु को 'एक है'—ऐसा मानते हैं, तो विश्व के एक द्रव्य होने का प्रसङ्ग हो जायेगा। अतः एक से अनेक, अनेक से एक की उत्पत्ति होने के जो मत हैं, उन्हें त्यागना ही उचित होगा। इसलिए आचार्य शान्तरक्षित ने भी सर्वधर्मनिःस्वभावता की सिद्धि के लिए कहा है—

निःस्वभावा अमी भावास्तत्त्वतः स्वपरोदिताः ।
एकानेकस्वभावेन वियोगात्प्रतिबिम्बवत् ।।

(मध्यमकालंकार १)

सभी धर्मों को परमार्थतः असत् मानने पर अति प्रसङ्ग का खण्डन

पूर्वपक्षी कहते हैं कि यदि विज्ञान भी अन्य धर्मों की तरह निःस्वभाव है, तो योगी उसे अन्य धर्मों की तरह त्याग देगा। फलतः योगी भी नहीं रह जाएगा और योगिज्ञान भी नहीं रहेगा। वह तत्त्वज्ञान भी नहीं कर सकेगा और तथागत को भी उसका ज्ञान नहीं हो सकेगा। इस तरह सभी व्यवस्थाएँ ध्वस्त हो जाएंगी?

पूर्वपक्ष का यह कहना भी युक्त नहीं है। आप इस प्रसङ्ग के द्वारा यदि योगियों के द्वारा भावाभिनिवेश के त्याग को विज्ञान को त्यागना कहते हैं तो ऐसा कह सकते हैं। परन्तु यदि सभी का त्याग कहते हैं तो उचित नहीं है, क्योंकि साध्य के विपरीत कोई भी बाधक प्रमाण नहीं है। योगियों ने तो मायाकार की तरह सभी धर्मों को मायावत् ज्ञात कर लिया है। फिर भी परहित का उपाय होने के कारण उसका त्याग नहीं करते हैं। जैसे आर्यधर्मसङ्गीति में कहा है—

मायाकारो यथा कश्चिन्निर्मितो मोक्षमुद्यतः ।
न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ।।
त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा सम्बोधिपारगः ।
संनह्यते जगद्धेतोर्ज्ञातपूर्वं जगत् तथा ।।

(भावनाक्रमः १:१९२, उद्धृतम्, तिब्बती संस्थान)

प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम प्रमाण द्वारा बाधित न होना

सर्वधर्मनिःस्वभावता की प्रतिज्ञा प्रत्यक्ष द्वारा बाधित है—ऐसा कहना उचित नहीं है, क्योंकि दैशिक, कालिक आदि भिन्न अवभास मात्र को हम सम्यक् प्रत्यक्ष नहीं मान सकते हैं। क्योंकि स्वप्न में भी वैसे अवभास होते हैं। इसलिए हम सभी धर्मों को निःस्वभाव सिद्ध करते हैं। अतः कोई परमार्थसत् वस्तु प्रत्यक्ष द्वारा सिद्ध नहीं है।

यदि आप तैमिरिक आदि के भ्रान्तावभासी प्रत्यक्ष द्वारा (सर्वधर्मनिः-स्वभावता को) बाधित होना मानते हैं तो यह ठीक नहीं है। जैसे उस प्रत्यक्ष के आलम्बन एक चन्द्र आदि तो अबाधित ही होते हैं। यदि अभ्रान्त प्रत्यक्ष द्वारा बाधित मानते हैं तो अर्वाग्दर्शी के प्रत्यक्ष में तो तथता का अवभास होता ही नहीं है। जैसे समाधिराजसूत्र में कहा गया है—

न चक्षुः प्रमाणं न श्रोत्र घ्राणं न जिह्व प्रमाणं न कायचित्तम् ।
प्रमाण यद्येत भवेयुरिन्द्रिया कस्यार्यमार्गेण भवेत कार्यम् ।।

यस्मादिमे इन्द्रिय प्रमाणा जडाः स्वभावेन अव्याकृताश्च ।
तस्माद् य निर्वाणपथैव अर्थिकः स आर्यमार्गेण करोतु कार्यम् ।।

(९:२३-२४)

अत: मात्र तथागत का प्रत्यक्ष ही अभ्रान्त है और अविसंवादक है।

अनुमानप्रमाण द्वारा बाधित कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि अनुमान द्वारा कोई भी परमार्थसत् वस्तु सिद्ध नहीं की जा सकती। धूम आदि लिङ्ग द्वारा अग्नि आदि का निश्चय होता है। परन्तु परमार्थसत् अग्नि का निश्चय नहीं होता है। यद्यपि वस्तुएं हेतु तथा प्रत्यय पर आश्रित होती हैं, फिर भी वे परमार्थत: उत्पन्न नहीं होती हैं।

पुन: तथागत ने त्रायस्त्रिंश आदि की सत्ता कही है, यदि सभी धर्म नि:-स्वभाव हैं तो वह आगम प्रमाण द्वारा बाधित है, आपका ऐसा कहना भी युक्त नहीं है। क्योंकि व्यवहार में सभी धर्म होते हैं। हम भावों का कूर्मरोम की तरह अत्यन्त अभाव नहीं मानते हैं। परन्तु उन्हें माया और स्वप्न आदि की तरह मानते हैं।

संक्लेश और व्यवदान पक्ष के अपवाद का निषेध

सर्वधर्मनि:स्वभाव मानने पर भी कुशल और अकुशल कर्मों द्वारा इष्ट एवं अनिष्ट फलों की प्राप्ति न होने का दोष नहीं होता, क्योंकि तथागत ने परमार्थत: सत् का निषेध किया है। परमार्थत: संक्लेश और व्यवदान का भी निषेध किया है, परन्तु व्यवहार में उन्हें स्वीकार किया है। इसलिए इस प्रतिज्ञा में कोई दोष नहीं है।

लोक-प्रसिद्धि द्वारा बाधित होने का निषेध

यदि आप सर्वधर्मनि:स्वभाव मानते हैं तो उत्पाद्य एवं उत्पाद स्वभाव तो आगोपाङ्गना प्रसिद्ध हैं। अत: आपके मत में लोक प्रसिद्धि द्वारा बाधा होती है, ऐसा आपका कहना भी युक्त नहीं है। क्योंकि परमार्थत: नि:स्वभावता जैसी तथता गोपालाङ्गना जैसे सामान्य जनों में प्रसिद्ध ही नहीं है। यदि प्रसिद्ध होता तो वे सामान्य जन ही कैसे हो सकते हैं। अत: सर्वधर्मनि:स्वभाव मानने में लोक प्रसिद्धि द्वारा कोई बाधा नहीं हो सकती है।

अभिधर्म से विरोध का दोष नहीं

हमारी प्रतिज्ञा का अभिधर्म में कहे गये छ: हेतु तथा चार प्रत्ययों से विरोध नहीं होता, क्योंकि वहाँ कहे गये हेतु एवं प्रत्यय संवृतिसत् है, परमार्थत:

नहीं। उत्पत्ति भी परमार्थतः सत् नहीं है। हेतु का अभाव भी नहीं है। क्योंकि वह व्यवहार में सत् है।

संवृति के अर्थ की परीक्षा

पूर्वपक्ष द्वारा संवृति के अर्थ की परीक्षा करके जो दोष दिये जाते है, वे युक्त नहीं है। संवृति का शशशृंग की तरह अत्यन्त अभाव नहीं है। जो वस्तु की यथार्थ स्थिति है, उससे विपरीत का आरोप करनी वाली जो भ्रान्तबुद्धि है, वह 'संवृति' है। क्योंकि वह तथता (यथार्थस्थिति) को आवृत करने का काम करती है। सूत्र में भी कहा है—

भावा विद्यन्ति संवृत्या परमार्थे न भावकाः ।
निःस्वभावेषु या भ्रान्तिस्तत्सत्यं संवृतिर्भवेत् ।।

(लङ्कावतारसूत्र, १०:४२९)

इस प्रकार संवृति भ्रान्तबुद्धि है। यह भावों की यथा स्थिति जानने में बाधा डालती है। बालपृथग्जनों को वस्तुओं की स्थिति परमार्थ-सत् जैसे अवभासित होती है। संवृति में जो भी अवभासित होते हैं, वह न तो सम्यग्-स्वभाव है और न ही शशशृङ्ग की तरह अत्यन्त असत् है। परीक्षा न करें तो वस्तु-सत् के रूप में अवभासित होते हैं।

मध्यमकालोक के इस अंश में आचार्य कमलशील ने स्वातन्त्रिक माध्यमिकों के प्रतिषेध्य का स्वरूप स्पष्ट किया है—ऐसा आचार्य चोंखापा ने कहा है[१]। उन्होंने यह भी कहा है कि इस ग्रन्थ के अतिरिक्त अन्य स्वातन्त्रिक ग्रन्थों में इस विषय का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है।

क्या लोकप्रसिद्धि को 'संवृति' कहते हैं? लोकप्रसिद्धि द्वारा भी दोष देना युक्त नहीं, क्योंकि लोक में प्रसिद्ध सभी धर्म संवृति में ही सत् माने जाते हैं। सभी विषय सभी इन्द्रिय के विषय भी नहीं हैं, क्योंकि इन्द्रियाँ अपने नियत विषय के अतिरिक्त का ग्रहण नहीं करती हैं। कर्म-फल आदि अतिपरोक्ष विषय सर्वथा तथागत के ही विषय हैं, सामान्य पुरुषों के नहीं है।

---

१. द्र०-द्बु-म-द्गोङ्स्-प-रब-हसल् (मध्यमकावतार की टीका), पृ० २३०, वाराणसी सं०।

कुछ शास्त्र-कर्ता वस्तुओं में नित्यता का आरोप करते हैं और कुछ अनित्यता का। इस तरह वे वस्तुओं में अनेक स्वभावता का आरोप करते हैं, परन्तु वस्तुओं के स्वभाव में परिवर्तन नहीं होता है। उनका जैसा स्वभाव है, वे उसी में स्थित रहते हैं। इसलिए प्रसिद्धि आदि का दोष भी नहीं है।

सर्व-धर्म नि:स्वभावता का अर्थ

आचार्य ने सर्व-धर्मनि:स्वभावता के अर्थ का प्रतिपादन इस प्रकार किया है। यदि धर्मों का स्वभाव परमार्थत: सत् है तो उसका दूसरों पर आश्रित होकर निष्पन्न होना या अपूर्व उत्पन्न होना युक्त नहीं हो सकता। एक धर्म में सत् और असत् दोनों होना परस्पर विरुद्ध होता है। इसलिए ये सभी धर्म माया की भाँति दूसरों पर आश्रित होने के कारण नि:स्वभाव हैं। अत: नि:स्वभावता का अर्थ परनिर्भरता, सापेक्षता अथवा प्रतीत्यसमुत्पाद है। इस प्रकार आचार्य ने मध्यामिकों द्वारा स्वीकृत 'सर्वधर्मनि:स्वभावता' पर किये जाने वाले पूर्वपक्ष के अक्षेपों का आगम तथा युक्ति द्वारा समुचित ढंग से निषेध किया है।

एक यान व्यवस्था

विज्ञानवादी तीन यान मानते हैं, यथा—(१) श्रावकयान, (२) प्रत्येकबुद्धयान तथा (३) महायान। परन्तु माध्यमिक अन्तिम रूप से एक ही यान (महायान) मानते हैं। बौद्ध सम्प्रदायों में इस विषय पर काफी वाद-विवाद है। विज्ञानवादी कहते हैं कि विभिन्न आशयों के कारण अन्तिम तीन यानों की व्यवस्था उचित है। इस मत का तथागत ने आर्य-अक्षयमतिसूत्र आदि में स्पष्ट उल्लेख किया है। इसलिए एक यान की व्यवस्था उचित नहीं है। इस पर आचार्य ने माध्यमिकों के मत को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि सत्त्वों के विभिन्न आशयों के कारण तीन यान ही माने नहीं जा सकते। सत्त्वों के आशय एवं अधिमुक्ति अनेक प्रकार की होती है। अत: तीन से भी अधिक यान होने का प्रसङ्ग होगा।

आर्य-अक्षयमतिसूत्र आदि आगमों में तीन यानों का प्रतिपादन आभिप्रायिक हैं। तथागत ने विचित्र जगत् में विभिन्न-आशय एवं अधिमुक्ति वाले सत्त्वों पर अनुग्रह करने के अभिप्राय से धर्मोपदेश किया है, मात्र-तीन यान के प्रतिपादन के लिए नहीं। आर्यलङ्कावतारसूत्र में भी अन्तिम एक यान की व्यवस्था की गई है।

यानव्यवस्थानं नैवास्ति यानभेदं वदाम्यहम् ।
परिकर्षणार्थं बालानां यानभेदं वदाम्यहम् ।।

आर्यसद्धर्मपुण्डरीकसूत्र में भी कहा है—''शारिपुत्र, पञ्चकषाय से युक्त युग में जब सत्त्व मलों से युक्त होकर अल्प कुशल कर्म करने वाले हो जायेंगे, उस समय तथागत अर्हत् सम्यक्सम्बुद्ध उपायकुशलता से एक-यान को तीन यानों में निर्देश करेंगे।''[१] इत्यादि कहा है। पुनः तथागत ने सद्धर्मपुण्डरीक में कहा है—

एकं हि यान द्वितियं न विद्यते
तृतियं हि नैवास्ति कदाचि लोके ।
अन्यत्रुपाया पुरुषोत्तमानां
यद्याननानात्वुपदर्शयन्ति ।। (२:५४)

आर्यसर्वबोधिसत्त्वगोचरोपायविषयविकुर्वणनिर्देश नामक महायानसूत्र में भी कहा है—''मञ्जुश्री, वे बुद्धक्षेत्र में एकयान से निर्याण करते हैं। अतः वे गानसार से युक्त है। हम (परमार्थतः) श्रावक तथा प्रत्येकबुद्ध के यानों की व्यवस्था नहीं करते हैं।''[२]। आर्यलङ्कावतारसूत्र में निर्मित-श्रावक के अधिकार से श्रावकयान का जो निर्देश किया गया है, वह भी निम्न उद्देश्य में अधिमुक्त सत्त्वों के लिए ही है। तीन यान का निर्देश उपायमात्र के लिए किया गया है। अतः तीन-यान व्यवस्था अभिप्रायिक एवं सत्त्वों को मार्ग में प्रवेश कराने का एक उपायमात्र है।

तीन तथा एक निष्ठायान का विस्तारपूर्वक अवबोध अभिसमयालङ्कार की टीकाओं में किया जा सकता है। आचार्य ज्ञल-छब जे ने इस विषय पर अभिसमयालङ्कार की टीका नमशेद-ञिङ्-पो-ज्ञन (र्नम-ब्शद्-ञिङ्-पो-र्ग्यन)[३] में विस्तार से व्याख्या की है।

---

१. एवंरूपेषु शारिपुत्र कल्पसंक्षोभकषाययेषु बहुसत्त्वेषु लुब्धेष्वल्पकुशलमूलेषु तदा शारिपुत्र तथागता अर्हन्तः सम्यक्सम्बुद्धा उपायकौशल्येन तदेवैकं त्रियाननिर्देशेन निर्दिशन्ति, पृ० ४७, बिहारराष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, १९६६ ।
२. द्र०-दे० क०, 'छ' पृ० २७० ख ।
३. द्र०-र्नम्-ब्शद-स्ञिङ-पो-र्ग्यन, दग्ल-छ़ब-र्जे (ज्ञल-छब-जे)।

पूर्वपक्ष के निषेध से प्रतिफलित अर्थ

इस प्रकार आचार्य ने पूर्वपक्ष द्वारा आक्षिप्त आरोपों का आगम एवं युक्ति द्वारा विस्तार से निषेध किया है। उसके निष्कर्ष के रूप में आचार्य ने कहा है कि नि:श्रेयस नगर में प्रवेश सर्वधर्मशून्यता की भावना से ही हो सकता है। इसलिए स्वहित चाहने वालों को कुमार्गों का त्याग कर, महात्मा नागार्जुन आदि मनीषियों द्वारा निर्दिष्ट मार्गों का अनुसरण करना चाहिए। तथागत के वचनों (आगम) तथा युक्तियों द्वारा यह सिद्ध होता है कि सर्वधर्मनि:स्वभावता है और परिनिष्ठित यान एक ही है।

मध्यमकालोक के सिद्धान्त

यह विद्वानों में सर्वविदित है कि आचार्य शान्तरक्षित तथा उनके परम शिष्य आचार्य कमलशील योगाचार स्वातन्त्रिक माध्यमिक हैं। नवीं शताब्दी के महान् अनुवादक पण्डित ज्ञानसेन ने कहा है कि आचार्य शान्तरक्षित ने माध्यमिक सिद्धान्त के एक पृथक् नय का प्रवर्तन किया है, जो विज्ञानवादियों की तरह बाह्यार्थ को व्यवहार में भी नहीं मानते हैं, परन्तु उनसे भिन्न चित्त को परमार्थत: सत् भी नहीं मानते हैं। आचार्य ज्ञानसेन ने अपने ग्रन्थ 'दर्शनभेद'[१] में कहा है—''मध्यकाल के आचार्य शान्तरक्षित ने आचार्य भव्य से विपरीत चित्तमात्रता सिद्ध करने वाले ग्रन्थ पर आधारित होकर, संवृति में यद्यपि सर्वधर्मचित्तमात्रता स्वीकार की है, परन्तु परमार्थत: विज्ञान को भी नि:स्वभाव सिद्ध करने वाले माध्यमिक शास्त्र मध्यमकालंकार की रचना की है। इस तरह माध्यमिक में दो प्रकार के नयों का प्रादुर्भाव हुआ। जिस मत का प्रादुर्भाव आचार्य भव्य के द्वारा हुआ, उसे सूत्राचार माध्यमिक कहा जाता है तथा आचार्य शान्तरक्षित द्वारा प्रवर्तित माध्यमिक मत को योगाचार माध्यमिक कहा जाता है।''[२] इस प्रकार आचार्य शान्तरक्षित को योगाचारमाध्यमिक मत का प्रवर्तक माना गया है। आचार्य चोङ्खापा जी ने भी आचार्य शान्तरक्षित को योगाचार माध्यमिक मत का प्रवर्तक माना है। उन्होंने नेयार्थ-नीतार्थविभङ्गशास्त्र सुभाषितसार में कहा है—''अत: इस प्रकार के (योगाचार माध्यमिक) मत को मानने वाले भी यद्यपि एकाध आचार्य

---

१. द्र०-दर्शनभेद-दे० त० स्न-छोगस् - जो०, तो० ४३६० ।
२. द्र०-दर्शनभेद, ज्ञानसेन, दे० त०, स्न - छोगस्-जो०, पृ० २ ।

हुए हैं, किन्तु विस्तृत शास्त्र की रचना कर व्यवहारतया भी बाह्यार्थ की असत्ता का नय, जो माध्यमिकों का सिद्धान्त है, वह आचार्य शान्तरक्षित द्वारा उद्घाटित हुआ है—ऐसा आचार्य ज्ञानसेन का जो मत है, तदनुसार यही उत्तम है''[1]। मध्यमकालंकार में आचार्य शान्तरक्षित कहते हैं—

जो दो नयों के रथ पर आरूढ होकर,
युक्ति रूपी लगाम को पकड़ने वाले हैं।
अतः वे ही यथार्थतः
महायान को प्राप्त होते हैं[2] ।।

इस प्रकार बाह्यार्थ रहितता, अथ च व्यवहारतया चित्तमात्रता तथा परमार्थतः सर्वधर्मनिःस्वभावता इन दो नयों के द्वारा महायान की प्राप्ति सम्भव है। ''इसलिए व्यवहार में (शान्तरक्षित और कमलशील) सत्याकार विज्ञानवाद मानने वाले माध्यमिक हैं।''[3]

मध्यमकालोक में आचार्य सामान्यतया स्वातन्त्रिक-योगाचार माध्यमिक मत का प्रतिपादन करते हैं—ऐसा आचार्य चोङ्खापा ने स्पष्टतया कहा है। विशेषतः इस ग्रन्थ में विज्ञानवाद की तरह चित्तमात्रता का निरूपण किया गया है। परन्तु विज्ञानवादियों की तरह चित्त को परमार्थतः सत् नहीं माना गया है। बाह्यार्थसत्ता का विरोध करने के कारण यह ग्रन्थ योगाचार माध्यमिक दर्शन का प्रतिपादन करता है।

विज्ञानवादी प्रायः आर्यदशभूमकसूत्र, आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्र, आर्य-लङ्कावतारसूत्र तथा गण्डव्यूहसूत्र आदि सूत्रों का अनुसरण कर उनके आधार पर सर्वधर्म चित्तमात्रता, बाह्यार्थरहितता एवं विज्ञान को परमार्थतः सत् मानते हैं। परन्तु आचार्य कमलशील ने उन-उन सूत्रों में उद्धृत वचनों को आभिप्रायिक माना है। उन सूत्रों में जो सर्व-धर्म चित्तमात्रता कही गई है, वह विज्ञान या चित्त को परमार्थसत् मानने के लिए नहीं कही गई है। अपितु सत्त्वों को परमार्थरूपी सागर में क्रमशः प्रवेश कराने के अभिप्राय से कही गई है। आर्यलङ्कावतारसूत्र में भी कहा है—

१. नेयार्थनीतार्थविभङ्गशास्त्रसुभाषितसार, आचार्य चोङ्खापा, पृ० १२६, ति० सं०, १९९८ ।
२. द्र०-दे० त०, उ-मा, 'स' पृ० ५६ क।
३. नेयार्थनीतार्थविभङ्गशास्त्रसुभाषितसार, आचार्य चोङ्खापा, पृ० १३१, ति० सं० १९९८ ।

चित्तमात्रं समारुह्य बाह्यमर्थं न कल्पयेत् ।
तथतालम्बने स्थित्वा चित्तमात्रमतिक्रमेत् ।।

(लङ्कावतारसूत्र, १०:२५६)

इत्यादि के आधार पर आचार्य ने इस ग्रन्थ में[१] योगाचार माध्यमिक मत का प्रतिपादन किया है।

सर्वधर्म-निःस्वभावता की सिद्धि का प्रयोजन

विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों के द्वारा स्वमत की स्थापना करने का लक्ष्य अपनी विद्वत्ता प्रकट करना नहीं, अपितु सत्त्वों को दुःखरूपी भवसागर से मुक्त करना प्रकट किया गया है। इस प्रकार माध्यमिकों ने बार-बार सर्व-धर्म निःस्वभावता, परमार्थतः असत्ता, शून्यता, प्रतीत्यसमुत्पाद तथा नैरात्म्य सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। धर्मों की निःस्वभावता की सिद्धि का सत्त्वों की भवसागर से मुक्ति का क्या सम्बन्ध है? ऐसी शंका हो सकती है। यह आशंका आचार्य चन्द्रकीर्ति के मध्यमकावतार में उल्लिखित निम्न वचन से साक्षात् सम्बद्ध है, यथा---आचार्य चन्द्रकीर्ति ने कहा है—'मेरा' कहकर (लोग उसके प्रति) राग उत्पन्न करते हैं तथा पर के प्रति द्वेष उत्पन्न करते हैं। इस तरह (सत्त्व) अरघट्ट की तरह परतन्त्रतया (परवश) संसार में संसरित होते रहते हैं।[२] ऐसे सत्त्वों के प्रति जो करुणाभाव रखते हैं, उन (बुद्ध को) मैं प्रणाम करता हूँ। क्योंकि सत्त्व अपनी इन्द्रियों में जो भी अवभासित होता है, उसे यथार्थ अथवा सत्य मान लेते हैं। उसी के कारण 'मैं' और 'मम' (आत्मा एवं आत्मीय) का भाव उत्पन्न होता है तथा उसी से द्वेष तथा मोह की उत्पत्ति भी होती है। इसके कारण वे अकुशलकर्म करते हैं और भवाग्र से अवीचि नरक तक अविच्छिन्न रूप से संसरित होते रहते हैं। उनके भाग्य में मुक्ति का अवकाश नहीं के बराबर होता है। अतः इस प्रकार से पीड़ित सत्त्वों को वस्तुओं की यथास्थिति (तथता) या निःस्वभावता, शून्यता, प्रतीत्यसमुत्पाद आदि का ज्ञान उत्पन्न हो सकता है, जिससे उनके राग, द्वेष तथा मोह के कम होने की सम्भावना रहती है। आचार्य शान्तिदेव

---

१. द्र०-भोट-दे० त० उ-मा 'स', पृ० १५५-ख से।
२. द्र०-मध्यमकावतार, दे० त० उमा - 'ह', पृ० २०१ क ।

ने बोधिचर्यावतार में एक योगी और एक सामान्यजन का भेद स्पष्ट करते हुए वस्तुस्थिति का निरूपण किया है। वे कहते हैं—

लोकेन भावा दृश्यन्ते कल्प्यन्ते चापि तत्त्वतः ।
न तु मायावदित्यत्र विवादो योगि-लोकयोः ।। ९:५ ।।

अर्थात् साधारण जन रूप आदि पदार्थों को जिस प्रकार अर्थात् सत्-स्वरूप (परमार्थतः सत्तावान् के रूप में) देखते हैं, उन्हें वे वैसे ही परमार्थतः सत्स्वरूप निश्चित करते हैं। अर्थात् जैसे वे दिखलाई पड़ते हैं, वैसा ही परमार्थतः उनका स्वरूप सत् है—ऐसा वे अध्यवसाय (निश्चय-अभिनिवेश) भी करते हैं।

जबकि योगी उन रूप आदि पदार्थों को देखते हैं, तब ऐसा समझते हैं कि ये हेतु-प्रत्यय की अपेक्षा से उत्पन्न हैं, इनका अपना पारमार्थिक निजी स्वरूप कुछ भी नहीं है। ये पदार्थ माया की तरह हैं, स्वप्न में दिखलाई पड़ने वाले पदार्थों की तरह ही निःस्वभाव हैं। परमार्थतः इनकी सत्ता नहीं है और इसी स्थल में योगियों का साधारणजन के साथ विवाद है[१]।''

उदाहरणार्थ यदि किसी एक व्यक्ति को अपनी सबसे अधिक प्रिय वस्तु की यथार्थ स्थिति का अर्थात् मायावत् स्थिति का या परमार्थतः असत्ता का, या कदलीस्तम्भ की भाँति सारहीनता का किञ्चित् भी बोध हो जाय तो उस वस्तु के प्रति उसकी पूर्व की तरह आसक्ति नहीं रहेगी। इसके कारण उसमें आत्मीयता का बल कम हो जाएगा और उस वस्तु को दूसरों द्वारा हरण करने या हानि पहुँचाने के भय से उनके प्रति उत्पन्न होने वाले द्वेष का बल भी कम हो जाएगा। इसी तरह क्रमशः उस व्यक्ति के द्वारा किये जाने वाले अकुशल कर्मों में भी कमी आएगी और धीरे-धीरे उसका चित्त विशुद्ध हो जाएगा। इसलिए आचार्यों ने सत्त्वों के प्रति करुणा के वश से अपनी रचनाओं में बार-बार युक्ति एवं आगम द्वारा धर्मों की यथास्थिति (तथता) का प्रतिपादन किया है। आचार्य शान्तिदेव ने कहा है—

एवं स्वप्नोपमे रूपे को रज्येत विचारकः ।
कायश्चैवं यदा नास्ति तदा का स्त्री पुमांश्च कः ।।

(बोधिचर्यावतार, ९:८८)

---

१. द्र०-बोधिचर्यावतार, पृ० ३५३, प्रो० रामशङ्कर त्रिपाठी द्वारा अनूदित एवं सम्पादित, लेह संस्थान, १९८९ ।

अर्थात् स्वप्न के समान रूपी पदार्थों में कौन विद्वान् राग उत्पन्न करेगा। इस प्रकार जब काय की ही कोई सत्ता ही नहीं है, तब कौन पुरुष है और कौन स्त्री? इन वचनों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि बौद्ध वाङ्मय में आचार्यों की रचनाओं में सर्व-धर्म निःस्वभावता, नैरात्म्य-व्यवस्था, वस्तुस्थिति के प्रतिपादनार्थ प्रतिषेध्य का परिचय आदि अनेक विषयों का युक्तियों एवं आगमों द्वारा प्रतिपादन करना अपने स्वयं की विद्वत्ता का प्रदर्शन करने के लिए नहीं है, अपितु सत्त्वों में विद्यमान राग, द्वेष और मोह के परिहार के लिए और सत्त्वों को सर्वज्ञतामार्ग में प्रवेश कराने के लिए ही है। आचार्य चन्द्रकीर्ति ने भी कहा है—

यह नैरात्म्य जगत् से विमुक्ति के लिए (कहा गया) है। यह पुद्गल तथा धर्म के भेद से दो प्रकार का कहा गया है[१]।" आचार्य कमलशील ने भी अपने मध्यमकालोक की रचना मूढजन जो भावाभिनिवेश के कारण संसार में संसरित हो रहे हैं, उनके उद्धार के लिए की है। अतः इन सभी वचनों से यह स्पष्ट है कि आचार्यों ने सर्व-धर्म-निःस्वभावता की सिद्धि के लिए जो प्रयत्न किये हैं, वे सब जगत् के कल्याण के लिए ही हैं।

मध्यमकालोक पर भोट विद्वानों की टीकाएँ

भोट देश में बौद्ध-धर्म के प्रचार में प्रमुख योगदान करने वाले आचार्य शान्तरक्षित के शिष्य आचार्य कमलशील के ग्रन्थ मध्यमकालोक पर मध्यमकावतार की तरह व्यापक विचार-मन्थन नहीं हुआ—ऐसा प्रतीत होता है। परन्तु भोट विद्वान् यह ग्रन्थ स्वातन्त्रिक माध्यमिक दर्शन का प्रतिपादक आधारभूत एक प्रमुख ग्रन्थ है—ऐसा मानते हैं। उनमें से मुख्यरूप से आचार्य चोङ्खापा ने इस ग्रन्थ को स्वातन्त्रिक माध्यमिकों के मत में शून्यता के प्रतिषेध्य का स्पष्ट परिचय देने वाला एक मात्र ग्रन्थ माना है[२]।

मध्यमकालोक पर भोट विद्वानों की टीका प्रायः उपलब्ध नहीं है। इस ग्रन्थ पर उपलब्ध एक मात्र टीका तेनदर डगरमपा (ब्स्तन-दर-र्-स्डगस्-रम-पा)[३] की रचना है। भोट विद्वान् शेरब ज्ञाछो (शेस-रब-र्ग्या-म्छो) ने भोट-

१. द्र०-मध्यमकावतार-दे० त० उ-मा 'ह', पृ० २१३ क ।
२. द्र०-द्बु-म-द्गेङस्-प-रब-ग्सल, पृ० १६२, वाराणसी।
३. द्बु-म-स्नङ-ब्ही-ब्रजेद-थो,

विद्वानों की दुर्लभ रचनाओं की एक सूची तैयार की थी।[१] उसमें उन्होंने १२वीं शताब्दी के भोट-विद्वान् छ-पा-छेसेङ् (छ-प-छोस्-क्यी-सेङ्गे) द्वारा मध्यमकालोक पर रचित टीका का उल्लेख किया है। परन्तु यह ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

इन दो टीकाओं के अतिरिक्त मध्यमकालोक पर रचित टीकाएं उपलब्ध नहीं हो सकीं। परन्तु आचार्य चोङ्खापा, खेडुब-जे, (मखस्-ग्रुब-र्जे), जङ्यङ् ज़दपा, चङ-क्या आदि अनेक विद्वानों ने मध्यमकालोक को बहुलतया उद्धृत किया है। उन-उन ग्रन्थों में मध्यमकालोक को स्वातन्त्रिक माध्यमिक दर्शन का आधारभूत प्रमुख शास्त्र माना है।

।। भवतु सर्वमङ्गलम् ।।

•

Work of Bstan-Dar-Sngs-Ram-pa, reproduced by Lokesh Chandra, from the collection of Prof. Raghuvira, New Delhi, 1982.

१. Matends for a History of Tibetan Litraturer, Part 2, Lokhesh Chandra, New Delhi, 1963.

༄༅། །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

དཀར་ནག་སྤྲིན་གྱིས་ཉི་མ་སྒྲིབ་པ་དང་། །
དགེ་སྡིག་ལས་ཀྱིས་སངས་རྒྱས་ལམ་སྒྲིབ་པར། །
ཁྲིད་མེད་ལམ་ལུགས་བཀྲལ་བར་ལུང་རིགས་ཀྱི། །
མཚོན་གྱིས་བཀག་མཛད་པད་མའི་ངང་ཚུལ་རྒྱལ། །
རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་གདམས་པ་བསྒོམ་གྱི་རིམ། །
ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་མཛད་ནས་དངོས་པོའི་གཤིས། །
ངོ་བོ་ཉིད་མེད་བསྒྲུབ་ཕྱིར་དབུ་མ་ཡི། །
སྣང་བ་སྤེལ་མཛད་པད་མའི་ངང་ཚུལ་འདུད། །

ཅེས་མཆོད་པ་བརྗོད་པས་མདུན་བསུས་ཏེ་གང་གླེང་བར་བྱ་བ་ནི་བོད་ལ་བཀའ་དྲིན་ལྷག་པར་ཆེ་བ་ཞི་ཚོ་ཡབ་སྲས་ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་ལས། སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཀམལཤཱིལ་ཏེ་པདྨའི་ངང་ཚུལ་གྱིས་མཛད་པའི་དབུ་མ་སྣང་བ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ཐོག་མར་གཞུང་དངོས་ཀྱི་དོན་ལ་གླེང་བར་བྱ་བའི་སྔོན་དུ་གཞུང་མཛད་པ་པོ་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལའི་རྣམ་པར་ཐར་པ་རྒྱ་མཚོ་ལྟ་བུ་ལས་ཆུ་ཐིག་གི་རྡུལ་ཙམ་ཞིག་སྨྲོས་པར་བྱ་དགོས་པར་སེམས་ཤིང་། སློབ་དཔོན་གྱི་རྣམ་ཐར་ལ་མཁས་པའི་བཞེད་ཚུལ་མི་མཐུན་པ་དུ་མ་ཞིག་བྱུང་བ་ལ་ཅུང་ཟད་དཔྱད་པ་སྔོན་དུ་བཏང་སྟེ་བཤད་པ་ལ་བརྩོན་པར་བྱའོ།།

སློབ་དཔོན་གྱི་རྣམ་ཐར་ལ་དཔྱད་པ།

སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱི་ལ་རིགས་ཅུས་གང་ལས་ཆས་པ་སོགས་གཞོན་ནུའི་དུས་ཀྱི་རྣམ་ཐར་ཁུངས་མཐའ་རྒྱུ་མེད་པར་བརྟེན། གསལ་དག་གཅིག་འབྲི་བར་དཀའ། འོན་ཀྱང་ཆོས་རྒྱལ་ཆེན་པོ་ཁྲི་སྲོང་ལྡེ་བཙན་གྱི་སྐུ་རིང་ལ་བོད་དུ་གདན་དྲངས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་དེབ་ཐེར་རྣམས་སུ་སློབ་དཔོན་འདིའི་རྣམ་ཐར་གསུངས་པ་རྣམས་ལས་བཏུས་ཏེ། འདིར་ཚུ་ཐིག་གི་ཟེག་མ་ཙམ་ཞིག་བཀོད་པ་ལ་བརྗོན་པར་བྱའོ།།

སློབ་དཔོན་དེའི་རྣམ་ཐར་ལ་མི་མཐུན་པའི་བཞེད་པ་དུ་མ་ཞིག་བྱུང་བ་རྣམས་ལ་དཔྱད་པ་ཞིག་ངེས་པར་དགོས་པར་སྣང་བས། དེ་ལྟར་འབད་པ་ལ་ཞུགས་པའི་ཐོག་མར་དཔལ་ས་སྐྱའི་མཁས་གྲུབ་ཆེན་པོ་པཎ་ཆེན་ཤཱཀྱ་མཆོག་ལྡན་གྱིས་་།[1] "རྟོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ཀམལཤཱིལ་མཚན་ཉི་ཟླ་ལྟར་གྲགས་པ་དེ་ལྷ་ཁྲི་སྲོང་ལྡེ་བཙན་གྱིས་བོད་ཡུལ་དུ་སྤྱན་དྲངས། ལྟ་བ་ངན་པ་སུན་ཕྱུང་་། དབུ་མའི་བསྟན་བཅོས་མང་དུ་མཛད། ཕྱིས་འཕགས་ཡུལ་དུ་གཤེགས་པའི་ལམ་ཁར་གྲུབ་ཆེན་དམ་པ་རྒྱ་གར་དང་མཇལ། དུས་དེར་སྲིན་པོའི་རོ་ཆེན་པོ་ཞིག་གིས་ལམ་པོ་ཆེ་བཅད་ནས། རོ་དེ་ལ་རེས་འགའ་འབྱུང་པོ་དག་ཞུགས་ནས་ཕྱོགས་ཀྱི་འགྲོན་པོ་རྣམས་ལ་ཉེ་བར་འཚེ་བར་གཟིགས་ནས་སློབ་དཔོན་དེར་རོ་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་ནས་ཐག་རིང་པོར་བསྐྱལ་བ་ལ་གཤེགས་སོ། །དེའི་ཤུལ་དུ་སློབ་དཔོན་དེའི་སྐུ་ལུས་ཤིན་ཏུ་མཛེས་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བར་གཟིགས་ནས་སྐུ་ལུས་དེ་ལ་དམ་པ་རྒྱ་གར་གྱིས་ཞུགས་ནས་རང་གི་ལུས་མི་

1 གསུང་འབུམ། པོད། མ་ ཤོག ༣༠༣ དིལླི་པར་མ། དེབ་གཉུགས།

མཛེས་པ་དེ་ཤུལ་དུ་བཞག་གོ །སློབ་དཔོན་ཕྱིར་འཁོར་བ་ན་རང་གི་སྐུ་ལུས་གཞན་གྱིས་འཁྱེར་བར་གཟིགས་ནས་ཇོ་བཙུན་དམ་པ་རྒྱ་གར་ཞེས་མཚན་ཉེ་མ་ལྷར་གྲགས་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཐུགས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ནི་མཁས་པའི་དབང་པོ་ཀམལཤཱིལ་ཡིན་ནོ་”ཞེས་དང་། ཡང་པཎ་ཆེན་ཤཱཀྱ་མཆོག་ལྡན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་རོང་སྟོན་གྱི་གསང་བའི་རྣམ་ཐར་དུ།[1] “ཇོ་བཙུན་དམ་པ་རྒྱ་གར་གྱིས་འཛམ་བུའི་གླིང་འདིར་མིའི་སྐྱེ་བ་བདུན་བར་མ་ཆད་པར་བཞེས་པའི་ཐ་མ་ལ་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ཤིག་ཏུ་འཁྲུངས་ཏེ། དེའི་མིང་ལ་སླ་བའི་སེང་གེ་དང་། མི་ཕམ་མགོན་པོ་དང་། ལས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་གསུམ་བཏགས་སོ། །དེ་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཚེ་ཤྲཱི་ནཱལེནྡྲའི་གཙུག་ལག་ཁང་ཆེན་པོ་ཤིཀྲམ་ཤཱིལ་[2]ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་དེར་ཀྨཤཱིལ་དང་། སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལརཀྵི་ཏ་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་ཀྱི་དྲུང་དུ་རབ་ཏུ་བྱུང་བར་མཛད་པའི་མཚན་ནི་ཀམལཤཱིལ་ཞེས་བཏགས་སོ། །དེ་ནས་རིམ་གྱིས་རིགས་པའི་གནས་ལྔ་ལ་མཁས་པའི་པཎྜི་ཏ་ཆེན་པོར་གྱུར་ཏེ་འཕགས་ཡུལ་དུ་བསྟན་པ་ལ་བྱ་བ་མང་དུ་མཛད། བསམ་ཡས་ཀྱི་རྒྱལ་པོའི་དུས་སུ་བོད་དུ་བྱོན། རྒྱ་ནག་མཁན་པོའི་ཆོས་ལུགས་སུན་ཕྱུང་། ཕར་ཕྱིན་ཐེག་པའི་བསྟན་བཅོས་མང་དུ་བརྩམས། དུས་དེར་སློབ་དཔོན་དེས་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཆོས་མ་བསྟན།” ཞེས་སོགས་གསུངས་པས་རང་ཉིད་ཀྱི་གསུང་གོང་འོག་གཉིས་མི་མཐུན་པར་སྣང་།

---

1 གསུང་འབུམ། པོད། མ་ ཤོག ༣༦༦ དིལླི་དཔར་མ། དེབ་གཟུགས།

2 ནཱལནྡྲ་དང་ཤིཀྲམཤཱིལ་གཉིས་གཙུག་ལག་ཁང་སོ་སོ་བ་ཡིན་རུང་འདིར་གཅིག་གི་ཁྲོངས་སུ་གཅིག་གདོགས་པར་གསུངས་འདུག་གོ

གཞན་ཡང་ཀུན་མཁྱེན་བད་དཀར་གྱིས།[1] “དམ་པ་སངས་རྒྱས་ནི་སློབ་དཔོན་ཀམལཤྲཱིལ་བོད་དུ་སྐུ་གཤེགས་ནས་སྐྱེ་བ་རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་བྲེ་བྲག་ཙརསིངྷ་ཞེས་བྱ་བར་ཚོང་དཔོན་གྱི་རིགས་སུ་འཁྲུངས། ཤཱཀྱམཤྲཱིལར་མཁན་པོ་དགེ་བའི་ལྷ་ལས་རབ་ཏུ་བྱུང་།” ཞེས་གསུངས་པས། སྤྲུལ་པའི་ཆེན་ཤཱཀྱ་མཆོག་ལྡན་ལྟར་ན། དམ་པ་རྒྱ་གར་དང་སློབ་དཔོན་ཀམལཤྲཱིལ་གཉིས་གང་ཟག་རྒྱུད་ཐ་དད་པ་གཉིས་ཡིན་པ་དང་ ཕྱི་མ་དེའི་སྐྱེ་བ་འཕགས་ཡུལ་ནས་བོད་དུ་བྱོན་ཏེ་རྒྱ་ནག་མཁན་པོའི་ལྟ་སྤྱོད་སུན་ཕྱུང་བར་བཤད་པ་དང་། བད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་དུ། སློབ་དཔོན་ཀམལཤྲཱིལ་བོད་དུ་གཤེགས་ནས་སྐྱེ་བ་རྒྱ་གར་དུ་བཞེས་པ་དེ་དམ་པ་རྒྱ་གར་རམ་ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཡིན་པར་གསུངས་པས་གོང་གི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ཕན་ཚུན་མ་མཐུན་པར་སྣང་ངོ་།།

ཡང་ཆོས་འབྱུང་མཁས་པའི་དགའ་སྟོན། བུ་སྟོན་ཆོས་འབྱུང་དང་། རྒྱལ་རབས་སྤྲ་བཞེད། བད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་། ངོར་ཆོས་འབྱུང་། སུམ་པ་ཆོས་འབྱུང་། སྟག་ལུང་ཆོས་འབྱུང་། བདུད་འཇོམས་རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱལ་རབས་དྭངས་ཤེལ་འཕྲུལ་གྱི་མེ་ལོང་སོ་ཊ་རྒྱལ་རབས་ཆོས་འབྱུང་ཕལ་ཆེ་བའི་ནང་སློབ་དཔོན་ཀམལཤྲཱིལས་རྒྱ་ནག་ཧྭ་ཤང་ཚར་བཅད་པའི་རྗེས་ཧྭ་ཤང་གིས་བཏང་བའི་རྒྱའི་བཤན་པ་མི་བཞིས་སྒྲ་སྒྱུར་ཁང་གི་གཟིམ་མལ་དུ་མཁལ་མ་མཉེས་ནས་བཀྲོངས་པར་གསུངས་པ་དང་ཡང་མི་མཐུན་པར་སྣང་།།

ཡང་དེབ་ཐེར་སྔོན་པོ་ལས་ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ནི་“རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་ཙརསིངྷ་ཞེས་བྱ་བར་སྐུ་འཁྲུངས། ཤཱཀྱམཤྲཱིལའི་མཁན་པོ་དགེ་བའི་ལྷ་ལས་རབ་ཏུ་བྱུང་། བླ་མ་གསེར་གླིང་པ་ལས་སེམས་བསྐྱེད། མཁན་པོ་དགེ་བའི་ལྷ་དང་། བྲམ་ཟེ་ཨཱརྻ་དེབ་

1 བད་དཀར་གསུང་འབུམ། ཁ་ཤོག ༣༠༩ དིལླི་– དེབ་གཟུགས།

སོགས་ལ་བསྟེན་ནས་རིག་པའི་གནས་ལྔ་ལ་མཁས་པར་སྦྱངས། ནཱ་རོ་དང་མཻ་ཏྲི་ལ་སོགས་པའི་བླ་མ་ལྔ་ཙུ་རྩ་བཞི་བསྟེན་པ་"[1]ཞེས་སོགས་གསུང་ཚུལ་རྣམས་ལ་གཞིག་ན། ཕ་དམ་པ་དང་ཇོ་བོ་རྗེ་གཉིས་དུས་མཉམ་པར་ངེས་དགོས་པ་ཞིག་ཏུ་སྣང་ ཏེ།

བླ་མ་སེར་གླིང་པ་ཇོ་བོ་རྗེའི་བླ་མ་ཡིན་པ་ཐམས་ཅད་བཞེད་དོ།།

དེ་ལྟར་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལ་དང་ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་གཉིས་གང་ཟག་གཅིག་ཡིན་མིན་གྱི་དཔྱད་པ་ལ་ཞུགས་ན་དམིགས་བསལ་དགོས་པ་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་མ་མཐོང་ཡང་། འདིར་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་འབྲེལ་དང་མཐུན་དགོས་པས་ཅུང་ཟད་དཔྱད་དགོས་པར་སྣང་། བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ཁུངས་མ་རྣམས་ལས་ཧྭ་ཤང་དང་རྩོད་པའི་རྗེས་སུ་སློབ་དཔོན་བོད་དུ་བཞུགས་ཤིང་། ཕྱིས་རྒྱའི་གཤེན་པས་བསྐྲོངས་པར་འདོད། སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལ་བསྐྲོང་པ་པོ་སུ་ཡིན་རུང་། སློབ་དཔོན་བོད་དུ་སྐུ་ངན་ལས་འདས་པར་ཁས་བླངས་པ་ཡིན་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་རྒྱ་གར་དུ་ཕེབས་པའི་ལམ་ཤུལ་དུ་ཕུང་པོ་ཞིག་ཐག་རིང་དུ་བསྐྱུལ་བའི་ཕྱིར་གྲོང་འཇུག་མཛད་པའི་ཤུལ་ལ་ཕ་དམ་པས་སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཀྱིས། སློབ་དཔོན་ལ་གྲོང་འཇུག་གི་ཡོན་ཏན་མངའ་བའི་བསྟོད་པ་མཛད་པ་ཙམ་ལས། ངེས་པ་ཅན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་སུ་ཁས་བླངས་ནུས་པར་དཀའ་སྟེ། སློབ་དཔོན་གྱིས་གྲོང་འཇུག་མཛད་པའི་ལོ་རྒྱུས་འདི་ལ་བལྟས་ན། སློབ་དཔོན་གྱིས་དམ་པ་རྒྱ་གར་གྱི་སྐུ་ལུས་ལ་ཞུགས་ནས་རྒྱ་གར་དུ་ཕེབས་པ་ལས་བོད་དུ་ཕེབས་མེད་པ་དང་། ཡང་དམ་པ་རྒྱ་གར་སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལུས་ལ་ཞུགས་ནས་བོད་དུ་ཕེབས་པ་ན་དེ་ལ་དམ་པ་རྒྱ་གར་དུ་ངོས་འཛིན་པར་མི་འོས་ཏེ། སྐུ་ལུས་སློབ་དཔོན་གྱི་ཡིན་པས་བོད་

1 དེབ་ཐེར་སྔོན་པོ། ལེའུ། ན། ཤོག ༡ ནས་ ༣ ལོ་ཀེ་ཤ་ཙནྡྲ། ༡༩༧༦ དིལླི།

རྣམས་ཀྱིས་འདི་ནི་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱི་ལ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་ངོས་འཛིན་རང་ཤུགས་ཀྱི་བྱ་དགོས་པ་ཞིག་ཡིན་དུ་ཟད་དོ། །དེ་ཙམ་དུ་མ་ཟད་སློབ་དཔོན་བོད་ནས་ཕྱིར་རྒྱ་གར་དུ་ཕེབས་པ་ན་བོད་རྣམས་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་གཅིག་པུ་རྒྱ་གར་དུ་བརྫངས་ག་ལ་རུང་། འདི་ནི་ཧ་བསུ་མཇུབ་སྐྱིལ་དུ་གྱུར་བ་མ་ཡིན་ནམ། དེས་ན་བོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོས་སློབ་དཔོན་ལ་ཞབས་འདྲིང་བ་ངེས་པར་དུ་བཏང་ཡོད་པ་ནི་བརྗོད་མི་དགོས་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ལ། དེ་ལྟར་ན་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱི་ལའི་སྐུ་ལུས་དེར་ལུས་ཡོད་ཀྱང་ཞབས་འདྲིང་བས་བསྲུང་དགོས་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ཞིང་། དེས་ན་ཕ་དམ་པས་རང་གི་སྐུ་ལུས་དོར་ནས་སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལུས་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་མི་ཐེས་པ་ཞིག་ནི་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་འགྲོས་ལས་མངོན་ནོ།། ཡུད་ཙམ་རིང་སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལུས་ལ་དམ་པ་རྒྱ་གར་བས་གྲོང་འཇུག་མཛད་པར་ཁས་བླངས་ཀྱང་། སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལུས་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་པའི་དམ་པ་རྒྱ་གར་བ་དང་། སློབ་དཔོན་གཉིས་གང་ཟག་གཅིག་ཏུ་ངོས་འཛིན་དུ་ག་ལ་རུང་སྟེ། ལུས་རྟེན་དེའི་ནང་གང་ཟག་གཞན་ཞིག་གི་རྣམ་ཤེས་གནས་པས་སོ། དེ་ལྟར་མིན་ན་དམ་པ་རྒྱ་གར་བའི་སྐུ་ལུས་ལ་ཞུགས་པའི་སློབ་དཔོན་མེད་པར་འདོད་དགོས་པས་རིགས་པ་དང་། དངོས་པོའི་གནས་ཚུལ་གཉིས་ཐད་ནས་མི་རན་པ་ཆེན་པོར་སྣང་བས་དམ་པ་རྒྱ་གར་དང་། སློབ་དཔོན་གཉིས་གཅིག་ཏུ་བཞེད་པའི་བཞེད་པ་འདི་ནི་ཕྱོགས་ག་ནས་བལྟས་ཀྱང་ཁས་བླངས་འོས་པ་ཞིག་ནི་མ་མཐོང་ངོ་།།

ཀུན་མཁྱེན་པད་དཀར་གྱིས་ཆོས་འབྱུང་བསྟན་པའི་པདྨ་རྒྱས་པའི་ཉིན་བྱེད་ལས་ཀྱང་།[1] "འདི་ལ་གཞན་གྱིས་དགུང་ལོ་མང་པོ་བར་བྱས་པ་དང་། ཀམལཤཱིལས་གྲོང་

1 པད་དཀར་གསུང་འབུམ། ཁ ཤོག ༣༠༨ དཔེ་སྐྲུན་པར་མ། དེབ་གཟུགས།

འཇུག་བྱས་པར་བཤད་པ་རྣམས་ལ་གཏམ་ཚད་མ་གནོད་བྱེད་དུ་སྣང་ངོ༑༑" ཞེས་གསུངས་པ་ལས་ར་འཕྲོད་རྩང་ད་དུང་དཔྱད་དགོས་པར་སྣང་ངོ༑༑

ཡང་ཀློང་ཆེན་ཆོས་འབྱུང་ནང་[1]གསུང་ཚུལ་དེ་དག་དང་མི་མཐུན་པར་ཆོས

རྒྱལ་ཁྲི་སྲོང་གི་སྐུ་དུས་སུ་མཁས་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་རྣམ་ལྔ་ཞེས་འབོད་པ་ན་ཨུ་རྒྱན་གྱི་སློབ་དཔོན་པདྨ་འབྱུང་གནས་དང་། ཟ་ཧོར་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཤནྟིསཏྭ་དང་རྒྱ་ནག་གི་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱི་ལ་དང་ཞེས་སོགས་དང་། ཡང་དེ་ཉིད་ལས། "རྒྱའི་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལ་དང་ཟླ་རིན་ཆེན་མཆོག་གིས་སྤྱང་ཀོང་ཕྱག་སྟོང་པ་ལ་སོགས་པ་མདོ་སྡེ་རྒྱ་ནག་ལུགས་མང་པོ་བསྒྱུར་རོ༑༑" ཞེས་གསུངས་པས་རྒྱ་ནག་གི་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱི་ལ་དེ་དང་རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལ་གཉིས་གང་ཟག་རྒྱུད་གཅིག་པར་བཞེད་མ་བཞེད་དང་། དེ་ཉིད་ཀྱིས་བསྒྱུར་བའི་"མདོ་སྡེ་སྤྱང་ཀོང་ཕྱག་སྟོང་པ"ཞེས་པ་དེ་ད་ལྟ་བཀའ་བསྟན་ནང་མི་སྣང་བས་དཔྱད་པའི་གཞི་ཁོ་ནའོ༑༑

ཡང་ཕ་དམ་པ་རྒྱ་གར་བོད་དུ་ལན་ལྔ་བྱོན་པའི་སྐོར་དེབ་སྔོན་ལས་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། "སྤྱིར་བོད་དུ་ལན་ལྔ་བྱོན་པ་ལ་དང་པོ་ནི་འབྲིན་ཐང་ལས་སྒོ་ནས་ཙ་རིར་བྱོན། ཀོང་ཡུལ་དང་སུམ་ཡུལ་གྱི་བར་བཅད་དེ་སྨད་ཁམས་གསུམ་ཞབས་ཀྱིས་ཐེར་མེར་བཙགས། གཉིས་པ་ནི་ཁ་ཆེ་ནས་འཐོན་ཏེ་མངའ་རིས་སུ་བྱོན་ནས་ཞང་ཞུང་གླིང་ཁ་བ་དང་བོན་པོ་ཁྲ་ཚང་འབྲུག་ལ་གདམས་པ་འགའ་རེ་གནང་། གསུམ་པ་བལ་པོ་ནས་ཚོང་པ་དང་འགྲོགས་ཏེ་བྱོན་པ་ན་ཡར་ཀླུང་གི་རྨང་ར་སེར་པོ་དང་མཇལ་ཏེ། དེ་དང་འགྲོགས་ཀྱང་གཙང་དུ་སྐྱེ་བསོད་ནམས་བླ་མ་དང་རྨང་ར་སེར་པོ་ལ་གཅོད་ཀྱི་གདམས་པ་མང་དུ་

1 ཀློང་ཆེན་ཆོས་འབྱུང་། ཤོག ༣༠༣ བོད་ལྗོངས་བོད་ཡིག་དཔེ་རྙིང་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་།

གནང་། བཞི་པ་ནི་ཤ་ལུག་སྟག་སྒྲོ་ལ་བྱོན་ནས་གཉལ་དུ་བཞུགས། ཡུམ་གྱི་སྒྲིབ་པ་སྦྱངས་ནས་ཕྱིས་དབུས་སུ་ཕེབས་ནས་རྨ་སོ་ལ་སོགས་པའི་དོན་མཛད། ལྔ་པ་ནི་དེ་ནས་རྒྱ་ནག་ཏུ་བྱོན་ནས་དེར་ལོ་བཅུ་གཉིས་བཞུགས་ནས་སླད་ཀྱིས་དིང་རིར་ཕེབས་པའོ།།"[1] ཞེས་གསུངས་པ་ལས་ཕ་དམ་པ་ཆོས་རྒྱལ་ཁྲི་སྲོང་གི་སྐུ་དུས་སུ་བསམ་ཡས་སུ་ཕེབས་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤཱིལ་མ་ཡིན་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་ལོ །དེར་མ་ཟད་སུམ་པ་མཁན་པོ་ཡེ་ཤེས་དཔལ་འབྱོར་གྱིས་ཀུང་ཕ་དམ་པ་མི་བྱ་སྤྱི་ལོ་ ༡༡༡༨ ལོར་དགུང་ལོ་བརྒྱ་དང་བཅུ་བདུན་བཞུགས་ནས་སྐུ་ངན་ལས་འདས་པར་གསུངས་པས་ཁོང་སྤྱི་ལོ་ ༡༠༡༠ ལ་འཁྲུངས་དགོས་པར་བརྟེན་ཏྭ་ཤང་དང་རྩོད་པ་པོ་དེ་མིན་པ་སྨོན་མེད་ཀྱིས་གྲུབ་པ་ཁོ་ནར་གསལ་ལོ། །དེས་ན་གྲོང་འཇུག་གི་ཚུལ་འདི་ནི་གནས་སྐབས་གང་གི་ཆ་ནས་ཀྱང་མི་བདེ་བ་ཞིག་ཏུ་སྣང་ལ། རྒྱལ་རབས་ཆོས་འབྱུང་རྣམས་ལས་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལ་རྒྱ་གར་དུ་ཕེབས་པའི་ལོ་རྒྱུས་མ་གསུངས་ཤིང་། དེ་ལས་ལྡོག་སྟེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་རྒྱའི་ཏྭ་ཤང་ཕམ་པར་མཛད་པའི་སྡང་ཟུག་གིས་རྒྱའི་བཤན་པ་མི་བཞིས་སྙྲ་བསྙུར་གླིང་དུ་དགོང་མོ་གཟིམ་མལ་དུ་བཀྲོངས་པར་གསུངས་སོ།།

རོང་སྟོན་པའི་གསང་རྣམ་དུ་དམ་པ་རྒྱ་གར་མིའི་སྐྱེ་བ་བདུན་བར་མ་ཆད་དུ་བཞེས་པའི་ཐ་མ་ཀམལཤཱིལ་བོད་དུ་བྱོན་པར་གསུངས་པ་དེ། བོད་ལ་ལན་ལྔ་བྱོན་པར་བཤད་པའི་བྱོན་ཐེངས་གང་ཡིན་གྱི་གསལ་ཁ་མེད་པ་མ་ཟད། ཚེ་ཏན་ཞབས་དྲུང་པས།[2] རབ་བྱུང་དང་པོའི་ཤིང་རྟ་ལོ། སྤྱི་ལོ་ ༡༠༧༨ མཉམ་མེད་ཇོ་བོ་རྗེ་དཔལ་ལྡན་ཨ་ཏི་ཤ་སྐུ་སྲུ་

1 དེབ་ཐེར་སྔོན་པོ། ཤོག ༡༠༡༩ སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༤༨

2 བསྟན་རྩིས་ཀུན་བཏུས། ཤོག ༡༥༩ དེབ་གཟུགས།

ངན་ལས་འདས་པའི་ལོ་དེར་དམ་པ་རྒྱ་གར་བོད་དུ་བྱོན་པར་གསུངས་པས་དུས་མི་འགྲིག་གོ།

དེས་ན་ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཚན་ལ་ཀམལཤྲཱིལ་དང་། ཀམལཤྲཱི་ཞེས་འབོད་པ། དེ་བཞིན་དུ་སློབ་དཔོན་ཀམལཤྲཱིལ་བོད་དུ་གཤེགས་ཏེ་སྐྱེ་བ་རྒྱ་གར་དུ་བཞེས་པ་ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཡིན་པར་གསུངས་པ་དང་། ཡང་“འདི་[1]རྒྱ་གར་དུ་པཎྜིཏ་ཀམལཤྲཱིལ་དུ་གྲགས། བོད་དུ་དམ་པ་རྒྱ་གར་ཟེར་”ཞེས་སོགས་དང་། འོན་ཀྱང་ཀརྨ་པས་དམ་པའི་མཚན་ལ་རྒྱ་གར་ན་ཀམལཤྲཱིལ་ཟེར་ཞེས་པ་ཡང་སྣང་ངོ་ཞེས་གསུངས་པ་དང་།[2] ཡང་སློབ་དཔོན་ཀམལཤྲཱིལ་བོད་ནས་རྒྱ་གར་ལ་ཕྱིར་ཕེབས་སྐབས་ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ་ལུས་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་དགོས་བྱུང་བ་སོགས་གསུངས་ཚུལ་མི་འདྲ་བ་སྣ་ཚོགས་པ་ཞིག་བྱུང་བ་འདི་དག་ལ་འབྲེལ་བ་ཞིག་ཡོད་མིན་ཡང་ཐེ་ཚོམ་ཡིན་ལ། འོན་ཀྱང་དངོས་པོའི་གནས་ཚུལ་ལ་མཐའ་གཅིག་ཏུ་འདི་འཐད་དང་འདི་མི་འཐད་ཅེས་པའི་ངེས་ཅན་གྱི་ཐག་གཅོད་པར་ནུས་དཀའ་འོ།། དེས་ན་འདིར་གཟུར་གནས་ཀྱི་དཔྱད་གཞིའི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པས་རྣམ་དཔྱོད་ཀྱི་རིགས་པའི་རྣོས་བཏོལ་རིགས་པ་ཁོ་ནའོ།།

---

1 གཅོད་ཡུལ་ཉོན་མོངས་ཞི་བྱེད་ཀྱི་བཀའ་གཞིར་བླ་མ་རྒྱུད་པའི་རྣམ་ཐར། ཤོག ༡༩ དིལླི་པར་མ། དེབ་གཟུགས། ཞི་བྱེད་དང་གཅོད་ཡུལ་གྱི་ཆོས་འབྱུང་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་ཐར་པའི་རྒྱན། ཤོག ༨༣༨ དིལླི།

2 ཕ་དམ་པ་དང་མ་ཅིག་ལབ་སྒྲོན་གྱི་རྣམ་ཐར། ཤོག ༣༥ མཚོ་སྔོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་།

དེ་ལྟར་གོང་གི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ལ་དཔྱད་པའི་ཁུང་སྒྲིག་པའི་འབྲས་བུར་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལ་ཞེས་པའི་གང་ཟག་དང་ཀ་མལ་ཤྲཱི་ཞེས་པའི་གང་ཟག་ཐ་དད་པ་གཉིས་བྱུང་བར་མངོན་ཏེ། གཅིག་ཆོས་རྒྱལ་ཁྲི་སྲོང་གི་སྐུ་དུས་བོད་ལ་ཕེབས་པ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཞི་བ་འཚོའི་སློབ་མ་དེ་ཡིན་ལ། གཉིས་པ་ནི་རྫོ་བོ་རྗེའི་བླ་མ་གསེར་གླིང་པའི་སློབ་མ་ཡིན་པ་དམ་པ་རྒྱ་གར་བ་མཚན་གཞན་ནས་སློས་ན་ཀམལ་ཤྲཱི་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ཡིན་པ་ཁས་ལེན་དུ་རུང་བར་སྣང་ཡང་ད་དུང་དཔྱད་རིགས་པ་ཁོ་ནའོ།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་བརྩམས་པའི་གཞུང་ངོས་གཟུང་བ་དང་དེ་དག་ལ་ཅུང་ཟད་དཔྱད་པ།

སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལས་བསྒོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་བོད་དུ་བཞུགས་སྐབས་མཛད་པ་ལོ་རྒྱུས་ལས་གསལ། འོན་ཀྱང་དབུ་མ་སྣང་བ་རྒྱ་བོད་གང་དུ་བརྩམས་པའི་གསལ་ཁ་མེད་པས་གཅིག་ཏུ་བརྗོད་པར་དཀའ།

བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་ནང་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལའི་མཚན་བཀོད་པའི་བསྟན་བཅོས་ཕལ་ཆེ་བ་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པར་ཁས་ལེན་དུ་དཀའ་སྟེ། དབུ་མ་རྒྱན་གྱི་དཀའ་འགྲེལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པ་ཨེ་ཡིན་སྙམ་པའི་དོགས་པ་མཆིས་ཏེ། མཁས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པས་གཞུང་དེ་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལས་མཛད་པ་མིན་ཞེས་གསལ་བར་གསུངས་ཏེ། རྒྱུད་སྡེ་སྤྱི་རྣམ་ལས།[1] "སློབ་དཔོན་ཞི་བ་འཚོས་དབུ་མ་རྒྱན་

1 མཁས་གྲུབ་རྗེ་གསུང་འབུམ། པོད། ༡ ཤོག ༥༧༣ དིལླི་པར་མ།

རང་འགྲེལ་དང་བཅས་པ་མཛད་ཅིང་དེའི་འགྲེལ་བཤད་སློབ་དཔོན་ཀ་མ་ལ་ཤཱི་ལས་མཛད་ཟེར་བ་ནི་ཇུན་མ་ཡིན་ནོ།།” ཞེས་དང་། ལྕང་སྐྱ་གྲུབ་མཐར་[1]ཡང་དེ་བཞིན་དུ་གསུངས་སོ། །འོན་ཀྱང་ཁམས་གསུམ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཤར་རྒྱལ་བ་ཙོང་ཁ་པ་ཆེན་པོས་དབུ་མ་རྒྱན་གྱི་ཟིན་བྲིས་ལས།[2] “དེས་ན་དཀའ་འགྲེལ་ལས་སྔར་ལྟར་བཤད་པ་འདི་དབུ་མ་སྣང་བ་དང་མི་མཐུན་ནོ། །དཀའ་འགྲེལ་འདི་ཀ་མ་ལ་ཤཱི་ལའི་ཡིན་པར་ཆོས་ཀྱི་བཤེས་གཉེན་ཡང་བཞེད་པས། འདི་ནི་སློབ་དཔོན་ཐུགས་མ་རྫོགས་པའི་སྐབས་གཅིག་ཏུ་མཛད་དམ་བརྟག་གོ།” ཞེས་གསུངས་པས་སོ།

ཡང་འདིར་དཔྱད་ཞིབ་བྱེད་དགོས་པ་ཞིག་ལ་སྡེ་དགེ་བསྟན་འགྱུར་རྒྱུད་འགྲེལ་ ཞི་ཤོག་གྲངས་ ༢༦༠–༢༧༠ ནང་གསལ་གཞམ་གསལ་བསྟན་བཅོས་རྣམས་སློབ་དཔོན་ཀ་མ་ལ་ཤཱི་ལས་མཛད་པར་བཞེད་དེ།

༡ མན་ངག་སྐྱུའི་སྒྲོལ་མ། ༢ ཐེག་པ་གསུང་གི་སྒྲོལ་མ། ༣ ཡང་དག་ལྟ་བའི་སྒྲོལ་མ། ༤ རིན་པོ་ཆེའི་སྒྲོལ་མ། ༥ མཉམ་ཉིད་གཞིའི་སྒྲོལ་མ། ༦ མཐར་ཐུག་འབྲས་བུའི་སྒྲོལ་མ། ༧ བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པའི་སྒྲོལ་མ། ༨ རྣལ་འབྱོར་ལམ་གྱི་སྒྲོལ་མ། ༩ གསང་བ་ཐུགས་ཀྱི་སྒྲོལ་མ། ༡༠ མཇལ་གྱི་ཚིག ༡༡ དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡི་གེ་མེད་པའི་མན་ངག་བཅས་ཞི་བྱེད་ཀྱི་མན་ངག་སྒྲོལ་མ་དགུ་སྐོར་། ༡༢ ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྒྲུབ་ཐབས། ༡༣ རྗེ་བཙུན་མ་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མའི་སྒྲུབ་ཐབས། ༡༤ རྡོ་རྗེ་འཕགས་མོའི་སྒྲུབ་ཐབས། ༡༥ འཇམ་དཔལ་ཁྲོ་བོར་སྒྲུབ་པ་བཅས་བསྐྱེད་རིམ་གྱི་

---

1 ལྕང་སྐྱ་གྲུབ་མཐའ། ང- ཤོག ༣༡༡ རྣ་ས་པར་མ།
2 རྗེའི་གསུང་འབུམ། པོད་ བ སྨད་ཆ་ ཤོག ༤༣༨

ཆོས་སྐོར་བཅས་གོང་གི་བསྟན་བཅོས་རྣམས་ཀྱི་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་བ་རྣམས་ཕུད། གཞན་རྣམས་ཉི་ཧོང་ནས་པར་དུ་བསྐྲུན་པའི་སྡེ་དགེ་བཀའ་བསྟན་དཀར་ཆག་ནང་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལས་མཛད་ཅེས་བཀོད་འདུག

འོན་ཀྱང་སྡེ་དགེ་བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་ནང་། གཞུང་གི་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་མིན་ལ་མ་ལྟོས་པར། དང་པོ་བཅུ་གཅིག་རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ཀམལཤཱིལས་མཛད་ཅེས་དང་། ཕྱི་མ་བཞི་ཇོ་བཙུན་ཀམལཤཱིལས་མཛད་ཅེས་གསལ་ལ་གཞུང་དངོས་ནང་དང་པོ་ལྔ་ལ་མཛད་བྱང་མེད། དགུ་པ་དང་བཅུ་གཅིག་པ་གཉིས་རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ཀམལཤཱིལས་མཛད་ཅེས་དང་། ལྷག་མ་རྣམས་ཇོ་བཙུན་ཀམལཤཱིལས་མཛད་ཅེས་གསལ།

པེ་ཅིན་དཔར་མའི་དཀར་ཆག་དང་གཞུང་དངོས་གཉིས་ཀར་མཛད་བྱང་མ་གསལ་བ་རྣམས་ཀམལཤཱིལས་མཛད་ཅེས་གསལ་བས། "ཀམལཤྲཱི་" དང་" ཀམལཤཱིལ་" གཉིས་མཚན་མི་འདྲ་ལ། བུ་སྟོན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པས་མཛད་པའི་སྟར་ཐང་བསྟན་འགྱུར་གྱི་དཀར་ཆག་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་དབང་གི་རྒྱལ་པོའི་ཕྲེང་བའི་ནང་།[1] "དེ་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཇོ་བཙུན་ཀམལཤྲཱིས་མཛད་"ཅེས་གསལ།

དེས་ན་ཀམལཤཱིལ་དང་ཀམལཤྲཱི་གཉིས་གང་ཟག་སོ་སོ་ཡིན་པར་མངོན་ཞིང་། བསྒོམ་རིམ་དང་དབུ་མ་སྣང་བ་ལ་སོགས་པའི་བསྟན་བཅོས་མཛད་པ་པོ་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལ་ནི། རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ཀམལཤཱིལ་དང་། ཇོ་བཙུན་ཀམལཤཱིལ་ཞེས་པའི་མཚན་ཅན་གྱི་གང་ཟག་དང་གཅིག་ཡིན་མིན་དང་། །དེ་དག་ལས་གཞན་པའི་

1 བུ་སྟོན་གསུང་འབུམ། ལ ཤོག ༥༩༩ དིལླི་པར་མ། དེབ་གཟུགས།

ཀམལཤཱི་རྣམས་གང་ཟག་གཅིག་ཡིན་མིན་གྱི་དོགས་པ་སོ་ན་གནས་ཤིང་། དཔར་མ་མི་འདྲ་བའི་དཀར་ཆག་ནང་ཕན་ཚུན་མི་མཐུན་པ་དང་། དཀར་ཆག་དང་གཞུང་དངོས་གཉིས་མ་མཐུན་པ་སོགས་མང་ཞིང་། ཡིད་བརྟན་འཕེར་པའི་གནས་སུ་མི་སྣང་ལ་འདི་ཡིན་གྱི་ཐག་གཅོད་པར་དཀའ་ཡང་། ཀམལ་ཤཱིལ་ལས་བརྩམས་པར་གྲགས་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་ཡི་གེ་མེད་པའི་མན་ངག་ལས།[1]

འགྲོ་བ་སྡུག་བསྔལ་འཁོར་བར་བྱིང་བ་ལ།།
མ་རིག་མིག་འབྱེད་ཞི་བྱེད་འདི་བཀོད་པས།།

ཞེས་གསུངས་པས་ཞི་བྱེད་ཀྱི་གདམས་པ་བཀོད་པར་དམ་བཅའ་བ་ལྟ་བུར་གསལ་བ་དང་། ཡང་གསང་བ་ཐུགས་ཀྱི་སྒྲོན་མ་ལས།[2]

དམ་པ་ལྷ་བཙུ་ཙ་ལྷ་ཡི།། ཞབས་ཀྱི་པདྨ་རབ་བཏུད་ནས།།
སྡུག་བསྔལ་ཞི་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར།། ཁྱད་པར་ལྷ་ཡིས་གདམས་པ་བསྟན།།

ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་ལས་གཞུང་འདི་དག་ཞི་བྱེད་པའི་སྐྱོལ་གཏོད་པ་པོ་ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཡིན་པར་མངོན་ལ། དེབ་སྔོན་ལས་ཀྱང་།[3] དེ་ནས་གྲུབ་ཐོབ་ཕོ་མོ་ལྷ་བཅུ་ཙ་བཞི་ལས་གདམས་པ་ཟབ་མོ་མཐའ་དག་གསོན་དེ་ཞེས་དང་། སྟག་ལུང་ངག་དབང་རྣམ་རྒྱལ་གྱིས་དེང་རིང་བཞུགས་ནས་སྐལ་ལྡན་གྲངས་ལས་འདས་པའི་དོན་མཛད། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་བསྒོམ་རིམ་ལ་སྡུག་བསྔལ་ཞི་བྱེད་ཀྱི་མཚན་

---

1 སྡེ་བསྟན། རྒྱུད། ཞི། ཤོག ༣༦༦ བ ༦

2 སྡེ་བསྟན། རྒྱུད། ཞི། ཤོག ༣༦༥ ན

3 དེབ་སྔོན། ཤོག ༡༠༡༧ མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༨༩

གསོལ་བ་བསྟན།[1] ཞེས་དང་ཡང་མང་ཐོས་ཀླུ་སྒྲུབ་རྒྱ་མཚོས།[2] ཁ་ཆེ་རྡོ་ན་གཙྭ་ལ་གསུངས་པའི་ཞི་བྱེད་སྒྲོལ་མ་སྐོར་གསུམ་ལ་སོགས་པ་སྔ་དམ་པ་དང་ཁ་ཆེ་གཉིས་ཀས་ཨོང་པོ་ལོ་ཙྪ་བ་ལ་བཤད་པ་དང་ཞེས་དང་། ཆོ་ཧན་ཞབས་དྲུང་པས་སུམ་པ་ཡེ་ཤེས་དཔལ་འབྱོར་ཁུངས་སུ་དྲངས་ཏེ་ཕ་དམ་པ་བོད་དུ་སྤྱི་ལོ་ ༡༠༤༨ ལོར་ཕེབས་པར་གསུངས་པ་སོགས་གང་ནས་བལྟས་ཀྱང་ཕ་དམ་པའི་གཞུང་རྣམས་ལ་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤྲཱིལའི་མཚན་ཁ་གཡར་པའམ། ཡང་ན་དེའི་ཚེ་ཕ་དམ་པར་ཀམལ་ཤྲཱིལ་ཞེས་མཚན་ནས་སློས་ཀྱི་ཡོད་པ་ལས་མ་འདས་ཤིང་། མང་ཐོས་ཀླུ་སྒྲུབ་རྒྱ་མཚོས་དམ་པ་དང་ཁ་ཆེ་གཉིས་ཀས་ཨོང་པོ་ལོ་ཙྪ་བ་ལ་བཤད་པར་གསུངས་པ་བཞིན། གོང་གི་གཞུང་ཚན་ཆུང་དུ་རྣམས་ཕལ་ཆེ་བ་ཁ་ཆེ་རྡོ་ན་གཙྭ་དང་ཨོང་པོ་ལོ་ཙྪ་བས་བསྒྱུར་བ་ལས་ཀྱང་དཔོགས་ནུས་ཤིང་། ཨོང་པོ་ལོ་ཙྪ་བ་ནི་སྤྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་གཅིག་པའི་དུས་སྨད་ཀྱི་ལོ་ཙྪ་བ་ཞིག་ཡིན་པ་གངས་ཅན་མཁས་གྲུབ་རིམ་བྱོན་གྱི་མཛོད་ལས་ཀྱང་བཤད་དོ།།[3]

བུ་སྟོན་ཆོས་འབྱུང་གསུང་རབ་རིན་པོ་ཆེའི་མཛོད་[4]ལས། ཞི་བྱེད་སྒྲོལ་མ་དགུ་སྐོར་མཛད་པ་པོའི་ཀམལ་ཤྲཱི་ཞེས་པ་དམ་པ་རྒྱ་གར་བ་སྟེ། ཕ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཚན་ཡིན་པར་གསུངས་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ཀོང་སྤྲུལ་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོས་མཛད་པའི་ཤེས་བྱ་ཀུན་ཁྱབ་རྩ་འགྲེལ་ལས།[5]

---

1 སྟག་ལུང་ཆོས་འབྱུང་། ཤོག ༧༡༨ བོད་ལྗོངས་བོད་ཡིག་དཔེ་རྙིང་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་།

2 སྟག་ལུང་ཆོས་འབྱུང་། ཤོག ༡༩༣༣ ཀན་སུའུ་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༩༣

3 གངས་ཅན་མཁས་གྲུབ་རིམ་བྱོན་གྱི་མིང་མཛོད། ཀན་སུའུ་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༩༣

4 བུ་སྟོན་གསུང་འབུམ། ཡ ཤོག ༡༠༣༩ དིལླི། དེབ་གཟུགས།

5 ཀོང་སྤྲུལ་གསུང་། པོད། ཨེ ཤོག ༥༣༨

གྲུབ་ཐོབ་ང་བཞི་མཁའ་སྤྱོད་སོ་དྲུག་གི |
བཅུད་བརྙེས་དམ་པ་བོད་དུ་ལན་ལྔ་ཕེབས། |
རྣམ་ཐར་ཚུལ་མཐུན་འགྲོ་མང་བསྒྲལ་མཛད་པའི། |
དམ་ཆོས་སྡུག་བསྔལ་ཞི་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ། |

ཞེས་པ་སྟེ། རྗེ་བཙུན་ཀམལཤྲཱིལས་གྲུབ་ཐོབ་ཕོ་མོ་ལྔ་བཅུ་རྩ་བཞི་བསྟེན། བཅུད་ལེན་སོགས་ཐུན་མོང་གི་གྲུབ་པ་བརྒྱད་བརྙེས་པས་དགུང་ལོ་ལྔ་བརྒྱ་དང་བདུན་ཅུ་བཞུགས་ ཞེས་ཕ་དམ་པའི་མཚན་ལ་རྗེ་བཙུན་ཀམལཤྲཱིལ་ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཡང་འགོས་ལོ་རྩྭ་བ་གཞོན་ནུ་དཔལ་གྱིས་མཛད་པའི་དེབ་ཐེར་སྔོན་པོ་ལས།[1] རིགས་ཀྱི་བུ་རྗེ་བཙུན་ཀམལཤྲཱི་ནི་སྡོམ་པ་གསུམ་ལྡན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིན་ཏེ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་དགོངས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་མཁྱེན་པ་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཡབ་སྲས་ནས་བརྒྱུད་པའི་སྒྲུབ་བརྒྱུད་ཀྱི་གདམས་པ་བར་མ་ཆད་པ་ཡིན་པས། རྗེ་བཙུན་དེ་ལ་ཆོས་ཞུས་ཤིག" ཅེས་བྱ་བའི་ལུང་བསྟན་བྱུང་བར་གསུངས་སོ། །དེ་ལྟར་ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱུས་ཕལ་ཆེ་བའི་གསུང་ཚུལ་གོང་འོག་རྣམས་བསྡུར་ནས་བལྟས་ཚེ་མན་ངག་སྐྱའི་སྒྲོན་མ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་དེ་དག་གི་མཛད་པ་པོ་བསྒོམ་རིམ་དང་དབུ་མ་སྣང་བ་མཛད་པ་པོ་ཀམལཤྲཱིལ་མིན་པར་མངོན་ནོ།།

1 དེབ་སྔོན། ཤོག་ ༨༠༥

སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་བསྟན་བཅོས་ཁག་གི་འགྲེལ་པ།

སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་ལ་འགྲེལ་པ་དང་འགྲེལ་བཤད་མཛད་པ་ཇི་ལྟར་ཞེ་ན། བསྒོམ་རིམ་གསུམ་ལ་རོང་སྟོན་ཤེས་བྱ་ཀུན་རིག་གིས་མཛད་པའི་འགྲེལ་པ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་པཎ་ཆེན་ཤཱཀྱ་མཆོག་ལྡན་གྱིས་རོང་སྟོན་གྱི་རྣམ་ཐར་དད་པའི་རོལ་མཚོ་ལས་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་ལས།[1] "སྤྱིར་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་དང་། ཁྱད་པར་ཀམལཤཱིལའི་གསུང་རབ་ལ་ལྟ་བའི་རྒྱབ་རྟེན་མཛད། བསྒོམ་པ་ཉམས་སུ་ལེན་པའི་རིམ་པ་ཡང་བསྒོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་གྱི་ལུགས་དང་མཐུན་པར་ཉམས་སུ་བཞེས་ཤིང་གཞན་ལ་འདོམས་པར་མཛད། དེ་གསུམ་གྱི་རྣམ་བཤད་རྒྱས་པ་[2]མཛད་པ་པོ་སྔོན་མ་བྱུང་ཡང་། རྗེ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་ཅིང་། དེ་ལྟ་བུའི་རྣམ་བཤད་ངོ་མཚར་ཅན་དེ་ནི་རྗེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་གསུང་རབ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཞིག་ཡིན་ནོ།" ཞེས་གསལ་བར་གསུངས་པ་ལྟར་ད་ཆ་ས་སྐྱ་མཐོ་སློབ་ཁང་ནས་དཔར་བསྐྲུན་ཞུས་ཏེ་ལག་ཏུ་སོན་པ་ཡོད།

བསྟན་དར་སྔགས་རམ་པའམ་བཤད་སྒྲུབ་བསྟན་དར་བ་དཔལ་བཟང་པོས་དབུ་མ་སྣང་བ་ལ་འགྲེལ་པ་དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་ཐོ་ཞེས་པ་མཛད་པ་ད་ལྟ་མཇལ་རྒྱུ་ཡོད།[3]

---

1 གསུང་འབུམ། པོད། མ། ཤོག ༣༠༩ དིལླི་པར་མ།

2 བསྒོམ་རིམ་ཐོག་མའི་འགྲེལ་པ་ཞི་ལྷག་གསལ་བར་བྱེད་པ། བསྒོམ་རིམ་བར་པའི་འགྲེལ་པ་གནད་ཀྱི་ཟླ་ཟེར། བསྒོམ་རིམ་ཐ་མའི་འགྲེལ་པ་ལྷའི་རྔ་སྒྲ། རོང་སྟོན་ཤཱཀྱ་རྒྱལ་མཚན། གསུང་འབུམ། པོད་ཁ་པར་བཞུགས། ས་སྐྱ་མཐོ་སློབ་ཁང་། རྡེ་པུར།

3 དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་ཐོ། རྗེ་བཙུན་བཤད་སྒྲུབ་བསྟན་དར་དཔལ་བཟང་པོ། ལོ་ཀེ་ཤ་ཙནྡྲས་

འཇམ་དབྱངས་མཁྱེན་བརྩེའི་གསུང་འབུམ་ཆ་པར་བསྒོམ་རིམ་བར་པའི་ས་བཅད་ཞིག་ཀྱང་མཆིས་སོ། །ཡང་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་པ་ལོ་ཀེཤ་ཙནྡྲས་བསྒྲིགས་པའི་བོད་ཀྱི་མཁས་དབང་རྣམས་ཀྱི་གསུང་འབུམ་དཀར་ཆག་ནང་ཕྱ་པ་ཆོས་ཀྱི་སེང་གེས་དབུ་མ་སྣང་བ་ལ་འགྲེལ་པ་མཛད་ཡོད་པ་འཁོད་ཀྱང་། གཞུང་དེ་ད་ལྟ་བཞུགས་ཡོད་མེད་ཀྱང་ཐེ་ཚོམ་གྱི་གནས་སོ།།

སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལ་བོད་དུ་གདན་དྲངས་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན།

མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཚོ་དགོངས་པ་ཆོས་དབྱིངས་སུ་ཐིམ་ཚུལ་བསྟན་པའི་རྗེས་རྒྱ་ནག་གི་ཧྭ་ཤང་མ་ཧཱ་ཡཱ་ནའི་སློབ་མ་དར་ཏེ་ལུས་ངག་གི་དགེ་སྦྱོར་བྱས་པས་འཚང་མི་རྒྱ། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་འཚང་རྒྱ་ཟེར་ནས་སྒོམ་བསླབ་པས། སློབ་གཉེར་དང་། ལུས་ངག་གི་དགེ་སྦྱོར་ལ་སོགས་རྒྱུན་ཆད། བོད་ཕལ་ཆེར་དེའི་རྗེས་སུ་འབྲངས། སྦ་རཏྣ་དང་། བཻརོཙན་སོགས་པ་ཉུང་ཤས་ཤིག་མཁན་པོའི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ཏེ། ལྟ་བ་མ་མཐུན་པར་རྩོད་པ་བྱུང་སྟེ། བཙན་པོ་ཡང་བཀས་བཅད་དཀའ་བར་གྱུར་ཏེ། ལྷོ་བྲག་ཁ་ཆུ་ནས་ཡེ་ཤེས་དབང་པོ་གདན་འདྲེན་དུ་བཏང་། ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ཞུས་པས། ཡེ་ཤེས་དབང་པོས་མཁན་པོ་འདའ་ཁར་ཞལ་ཆེམས་སུ་“སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་གང་དུ་བྱུང་སར་མུ་སྟེགས་ཀྱི་རྩོལ་བ་རེ་འགྱུན་ལྷར་འོང་བ་ཡིན་ན་ཡང་། བོད་ཡུལ་དུ་བསྟན་པ་ལྷ་བརྒྱའི་ཐ་མ་ལ་བྱུང་སྟེ། ཅུང་ཟད་རྒྱས་པར་འགྱུར་བ་ལ་མུ་སྟེགས་དངོས་ཀྱི་རྩོལ་བ་ནི་

དཔར་དུ་བསྐྲུན། དིལླི།

མི་འབྱུང་ཡོད། སངས་རྒྱས་པ་ཉིད་ལྟ་བ་མ་མཐུན་ཏེ་རྩོད་པར་འགྱུར་གྱི། དེ་ཙ་ན་ངའི་སློབ་མ་ཀམལཤཱིལ་བྱ་བ་ཞིག་བལ་ཡུལ་ན་ཡོད་པ་དེ་སྤྱན་དྲོངས་ལ། དེ་དང་རྩོད་པ་བྱེད་དུ་བཅུག་ལ། རྒྱལ་པོས་བསྡུམ་པར་གྱིས་ཤིག །རྩོད་པ་ཆོས་ཕྱོགས་སུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ།།"[1]ཞེས་གསུངས་པས་དེ་ལྟར་མཛད་དགོས་པར་གསུངས་པ་བཞིན་རྒྱལ་པོས་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལ་བལ་ཡུལ་ནས་གདན་དྲངས་ཏེ་ཧྭ་ཤང་དང་རྩོད་དུ་བཅུག་ས།

དེ་ཡང་བསམ་ཡས་ཅིག་ཅར་བའི་ལྟ་བ་ནི་རྒྱ་ནག་ཏུ་ཐོག་མར་སློབ་དཔོན་བོ་དྷི་དྷརྨས་སྤེལ་བར་བཞེད་པ་ཕལ་ཆེར་གཅིག་ཏུ་མཐུན། འོན་ཀྱང་ལྟ་བ་དེའི་བརྒྱུད་པ་གང་ལས་བྱུང་བ་དང་། ལྟ་བའི་སྤྲོལ་འབྱེད་སློབ་དཔོན་བོ་དྷི་དྷརྨའི་ལོ་རྒྱུས་ལ་མི་མཐུན་པ་དུ་མ་ཞིག་སྣང་། མཁན་པོ་གྲུར་ཞུགས་ཏེ་ཤར་ཕྱོགས་རྒྱ་ནག་ཏུ་ཕེབས་པ་དང་། རྩའི་ཉག་མ་ལ་བརྟེན་ཏེ་ཆུ་བརྒལ་བ་དང་། སློབ་རྒྱུད་འཕེལ་བ་དང་། སྐུ་གཤེགས་པའི་རྗེས་ལྷམ་ཡ་གཅིག་ཕྱག་ཏུ་བསྣམས་ཏེ་ཕེབས་པ་དང་མཇལ་བ་སོགས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ནི་རྒྱ་ནག་དང་བོད་ཀྱི་མཁས་པ་ཚང་མས་གཅིག་མཐུན་དུ་གསུངས་པ་མ་ཟད། ཆེས་རྙིང་པའི་ཏུན་ཧྭང་གི་ཡི་གེ་ལས་ཀྱང་གསལ་ལོ། །འོན་ཀྱང་འགའ་ཞིག་གིས་སློབ་དཔོན་ལ་དད་པའི་སྐྱེ་བོ་མ་བྱུང་བས་དུབ་སྟེ་ཡུལ་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་ཕེབས་པ་སོགས་ལོ་རྒྱུས་མི་མཐུན་པ་འགའ་རེ་སྣང་། ལྷམ་ཡ་གཅིག་ལུས་པའི་ལོ་རྒྱུས་འདི་ཕྱིས་སུ་མཁས་པ་འགས་བོད་དུ་ཕེབས་པའི་ཧྭ་ཤང་གི་ལོ་རྒྱུས་དང་སྦྱར་བ་སྣང་བ་དེ་དག་ཁུངས་ལྡན་དུ་བཞེད་དུ་མི་རུང་ངོ་།།

1 སྔ་བཞེད། ཤོག ༧༦ མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༨༠

སློབ་དཔོན་གྱིས་ཏྭ་ཤང་བཀག་ཚུལ།

བསམ་ཡས་སུ་ཏྭ་ཤང་དང་རྩོད་པ་བྱུང་རྗེས་རྒྱལ་པོས་ཇི་ལྟར་གསོལ་བ་བཏབ་པ་བཞིན་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱིལས་བསྒོམ་རིམ་ཐོག་མ་བར་གསུམ་མཛད་དེ། གང་ཟག་གཅིག་གིས་ལྷ་སྤྱོད་ཟུང་དུ་འབྲེལ་བའི་སྒོ་ནས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་གོ་འཕང་བསྒྲུབ་པའི་ཚུལ་གསུངས། སྒོམ་གྱི་ཚུལ་དང་སྒོམ་གྱི་དབྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གསལ་བར་མཛད།

བསྒོམ་རིམ་བར་པར་སློབ་དཔོན་གྱིས་མྱུར་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་འཐོབ་པར་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཐོབ་བྱེད་ཀྱི་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་བརྩོན་དགོས་པར་གསུངས། གལ་ཏེ་རྒྱུ་མེད་པ་ལ་བྱུང་བ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བའི་ཐལ་བ་འཕང་པའི་སྒོ་ནས་རྒྱུ་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་དགོས་པ་སྒྲུབ། དེས་ན་དེ་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དེའི་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་གྱི་ཚོགས་པ་ཚང་ལ་མ་ནོར་བ་ལ་བསྟེན་དགོས་པས། དེ་ལྟ་བུའི་རྒྱུ་རྐྱེན་དེ་ཡང་ཅི་ཡིན་སྙམ་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཆེན་པོ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་པར་སྤྲུལ་པ་བྱིན་གྱིས་རློབ་པ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པ་མདོ་སྡེའི་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ལས། "གསང་བའི་བདག་པོ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྙིང་རྗེའི་རྩ་བ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ།"[1] །ཞེས་གསུངས་པ་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་

1 སྡེ་བཀའ། རྒྱུད། ཐ། ཤོག་ ༡༥༣

འཐོབ་པར་འདོད་པས་སྙིང་རྗེ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། ཐབས་དང་གསུམ་པོ་འདི་དག་ལ་བསླབ་པར་བྱའོ། །ཞེས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་གོ་འཕང་ཤེས་རབ་རྐྱང་པ་མ་གཏོགས་ཐབས་ཀྱི་ཆ་ལ་མ་བརྟེན་ན་བསྒྲུབས་མི་ནུས་པ་གསུངས་པས། ཧྭ་ཤང་ལྟར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཆ་རྐྱང་པ་ལ་བརྟེན་པ་ནི་ལམ་ཡ་བྲལ་བར་འགྱུར་བ་ཤུགས་ཀྱིས་བསྟན།

བསྒོམ་རིམ་དང་པོ་གཉིས་སུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཧྭ་ཤང་གི་ལྟ་སྤྱོད་ལ་དངོས་སུ་དགག་པ་མཛད་པ་མི་སྣང་ཡང་། ཤུགས་ཀྱིས་དེའི་ཁས་བླངས་ལ་དགག་པ་མཛད་པ་ནི་དོན་གྱི་གྲུབ་བོ།།

བསྒོམ་རིམ་མཐའ་མའི་སྐབས་སུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཞུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཟུང་དུ་འབྲེལ་ཏེ་འཇུག་པའི་ལམ་བསྟན་པར་མཛད་ཅིང་། ཞི་ལྷག་ཟུང་འབྲེལ་གྱི་སྒོ་ནས་མཚན་མའི་འཆིང་བ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འགྱུར་བར་གསུངས་ལ། ཞི་ལྷག་ཟུང་འབྲེལ་གྱི་རྣལ་འབྱོར་ཇི་ལྟར་སྒོམ་པའི་རིམ་པ་རྣམས་ལེགས་པར་ཕྱེ་བའི་ངང་ནས་ཧྭ་ཤང་གིས་ཁས་ལེན་པའི་ལྟ་སྤྱོད་ལ་རིམ་བཞིན་དགག་པ་རྒྱས་པར་མཛད། འདིའི་སྐབས་མཚན་དངོས་སུ་མ་སྨོས་ཀྱང་ཁས་ལེན་རྣམས་དངོས་སུ་བཀོད་པའི་སྒོ་ནས་དགག་སྒྲུབ་མཛད་ཅིང་། ཅི་ཡང་མེད། ཅི་ཡང་བྱར་མེད་ཀྱི་ལྟ་བ་རྣམས་ལ་ལུང་རིགས་གཉིས་ཀྱིས་དགག་པ་མཛད་པས་ཅི་ཡང་མེད་པའི་ལྟ་བ་ལ་དགག་པ་མཛད་པ་ནི་མངོན་སུམ་དུ་གྲུབ་པས། འདི་ལ་མཚན་དངོས་སུ་མ་སྨོས་པས་ཧྭ་ཤང་གི་ལྟ་བ་ལ་དགག་པ་མིན་ཞེས་པའི་འདོད་པའང་རྒྱུ་མཚན་ཅན་དུ་མ་མཐོང་ངོ་། །དེ་ལྟར་སྦ་བཞེད་ལས་ཀྱང་།[1] "བསྒོམ་རིམ་ཐ་མ་འབྲས་བུ་བསྟན་པ་

1 སྦ་བཞེད། ཤོག ༧༧ མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་།

བརྩམས་ནས་གནང་། འབྲས་བུ་བསྟན་པའི་ཞར་ལ་ཧྭ་ཤང་གི་ལྟ་བ་ནོར་བ་དེ་སུན་ཕྱུང་ནས་གནང་”ཞེས་གསུངས་པ་ལས་ཀྱང་གསལ་བར་ར་ཕྲོད་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཧྭ་ཤང་ཕྱོགས་སྔ་དངོས་སུ་མ་བཀོད་དོ་ཞེས་པའི་ཕྱོགས་འདི་ནི་བཏང་རིགས་པ་ཁོ་ནའོ།།

བསྒོམ་རིམ་ཐ་མ་ལས་བསམ་གཏན་ཅིག་ཅར་བའི་ལྟ་སྤྱོད་གཉིས་ཀ་ལ་དངོས་སུ་དགག་པ་མཛད་དེ། དེ་ཉིད་ལས“གང་དག་ཅི་ཡང་མི་བསམ་མོ། །སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་དགེ་བ་སྤྱད་པར་ཡང་མི་བྱའོ། །སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་པ་ནི་སྐྱེ་བོ་བླུན་པོའི་དབང་དུ་མཛད་ནས་བསྟན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ”སྙམ་དུ་སེམས་ཤིང་།[1] ཞེས་ཕྱོགས་སྔ་བཀོད་དེ་བཀག་ཙ་ན། དེ་ཉིད་ལས“དེ་སྐད་ཀྱང་སྨྲ་བ་དེ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མཐའ་དག་སྤངས་པ་ཡིན་ནོ། །ཐེག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྩ་བ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་པས་དེ་སྤངས་ན་ཐེག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །འདི་ལྟར་ཅི་ཡང་མི་བསམ་མོ་ཞེས་སྨྲ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྩ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡིན་པས་ན། དེ་སྤངས་ན་རྩ་བ་བཅད་པའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་དགེ་བ་སྤྱད་པར་མི་བྱའོ། །ཞེས་སྨྲས་པས་ཀྱང་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐབས་ཤིན་ཏུ་ཟུར་ཕྱིན་པར་སྤངས་པ་ཡིན་ནོ།།”[2] ཞེས་ཐབས་ཀྱི་ཆ་སྤངས་པར་མི་རིགས་ཤིང་དེ་སྤངས་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤངས་པར་གསུངས་སོ།།

---

1 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༣༨ ཕྱུ་ཚ་པར་མ།

2 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༣༨ ཕྱུ་ཚ་པར་མ།

ཅི་ཡང་མི་བསམ་པར་གནས་པ་ནི་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་སྤང་ས་པར་འགྱུར་ལ། དེ་སྤངས་ན་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་བས་ཅི་ཡང་མི་བསམ་པར་གནས་པ་ནི་མི་རིགས་སོ། ཤིང་རྟའི་འཁོར་ལོ་ལྟར་གཉིས་ཀ་མེད་ན་གཅིག་ཤོས་ཀྱིས་མི་ཕན་པ་ལྟར་ཐབས་ཤེས་གཉིས་ཀུང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་གོ་འཕང་དུ་བགྲོད་པ་ལ་མེད་དུ་མི་རུང་བ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར། འཕགས་པ་ག་ཡཱ་མགོའི་རི་ལས་གསུངས་པ་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ།[1] དེ་ཉིད་ལས་"བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ལམ་ནི་མདོར་བསྡུ་ན་གཉིས་ཏེ། གཉིས་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་བོ། །འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྩལ་ཏེ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་འདི་གཉིས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ལམ་ཐམས་ཅད་བསྡུས་པར་འགྱུར་རོ།" །ཞེས་སོགས་ཀྱིས་སྒྲུབ་ཅིང་། དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་པ་ནི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཆེན་པོ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་པ། ཐོས་པ་ཉུང་བ། བདག་གི་ལྟ་བ་མཆོག་ཏུ་འཛིན་པ། སྐྱེ་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྙེན་བཀུར་མ་བྱས་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་མ་རྟོགས་པ། བདག་ཕུང་བར་བྱས་ནས་གཞན་ཡང་ཕུང་བར་བྱེད་པ་རིགས་པ་དང་ལུང་དང་འགལ་བའི་དུག་འདི་བཏབ་པའི་ཚིག་ནི་མཁས་པ་བདག་ལ་ལེགས་སུ་འདོད་པས་ཟས་དུག་ཅན་བཞིན་དུ་རྒྱང་རིང་དུ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པར་བྱའོ།།[2] ཞེས་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཐབས་ཤེས་ཡ་བྲལ་དུ་འཛིན་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤངས་པར་གསུངས་ལ། དེ་ལྟ་བུའི་ལྟ་བ་དེ་ནི་ཟས་དུག་ཅན་བཞིན་དུ་རང་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༣༨༨ བ

2 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༣༠ ལྷ་ཊ་པར་མ། ༡༠༨༥

གཞན་གཉིས་ཕུང་གི་རྒྱུ་ཡིན་པས་ལེགས་སུ་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་སྤོངས་དགོས་པར་གསུངས་སོ།།

དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་འདོད་ན་ནི། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་འགྱུར་བས་མི་རིགས་པར་གསུངས་ཏེ། བསྒོམ་རིམ་ལས།[1] "གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་དྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་འཇུག་གོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་ནི་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་དྲན་པར་བྱ་བ་དང་། ཡིད་ལ་མི་བྱ་བ་བྱེད་མི་ནུས་སོ། །གལ་ཏེ་བདག་གིས་ཆོས་འདི་དྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་བསྒོམ་པ་ནི་དེའི་ཚེ་དེས་དེ་དག་ཤིན་ཏུ་དྲན་པ་དང་། ཤིན་ཏུ་ཡིད་ལ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ།།" ཞེས་སོགས་གསུངས་ཤིང་དགག་པ་མཛད་དོ།།

ཡང་གལ་ཏེ་མཚན་མ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་ཙམ་གྱིས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འགྱུར་བར་འདོད་ན་ནི། བརྒྱལ་བའི་གནས་སྐབས་སུའང་དྲན་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་དེ་ཡང་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བར་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་ལས།[2] "གང་གིས་མཚན་མ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་ལས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར། དེ་ཙམ་གྱི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འགྱུར་དུ་ཟིན་ན་ནི་བརྒྱལ་བ་ཡང་དྲན་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་དུ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ།། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་རྣམ་པ་གཞན་གྱིས་དྲན་པ་མེད་ཅིང་

1 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༥༨ ལྷ་ཚ་པར་མ། ༡༩༩༧

2 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༥༥ ལྷ་ཚ་པར་མ། ༡༩༩༧

ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་བྱ་བའི་ཐབས་གཞན་མེད་དོ།།" ཞེས་སོགས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

ཅི་ཡང་མ་བསམ་མོ། །ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་པ་ཡིན་པས། དེ་མེད་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པར་གནས་པ་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་། དེའི་སྟོང་པ་ཉིད་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །སྟོང་པ་ཉིད་རྟོགས་པ་མེད་ན་སྒྲིབ་པ་སྤོང་བར་མི་འགྱུར། གལ་ཏེ་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་མེད་པར་སྟོང་པ་ཉིད་རྟོགས་པར་འགྱུར་ན་ནི། ཐམས་ཅད་དུས་ཐམས་ཅད་ཐར་པར་གྱུར་བའི་ཉེས་པ་ཡང་སོ་ན་གནས་པར་གསུངས་སོ།།

ཡང་སློབ་དཔོན་གྱིས་བསྒོམ་རིམ་ཐ་མ་ལས། རྣལ་འབྱོར་བས་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམ་པར་ཞུགས་པ་ན་དམིགས་པ་གང་ཅི་ཡང་རུང་བ་ཞིག་ལ་དམིགས་དགོས་ཀྱི། དེ་མེད་ན་མི་རུང་བར་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་ལས།[1] "ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་པ་ལ། གལ་ཏེ་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡོད་ན་དེའི་ཚེ་དེས་གདོན་མི་ཟ་བར་ཅི་ཞིག་ལ་དམིགས་དགོས་ཏེ། སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ཤེས་པ་ནི་བློ་བུར་དུ་དམིགས་པ་མེད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །ཅི་སྟེ་མེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར། གཉེན་པོ་གང་གིས་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ་སྤོང་བར་འགྱུར། བསམ་གཏན་བཞི་པ་མ་ཐོབ་པའི་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོའི་སེམས་ནི་འགོག་པར་འགྱུར་མི་སྲིད་དོ།།" ཞེས་སོགས་གསུངས་པས་སོ། །དེས་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་གང་ཞིག་གིས་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་པ་ན་ཡུལ་གང་ཡང་རུང་བ་ལ་དམིགས་

1 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༧༨ ཕྱ་ཆ་པར་མ། ༡༩༩༧

དགོས་ཀྱི་དམིགས་པའི་ཡུལ་མེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཡུལ་ལ་མ་དམིགས་པར་ནི་དེའི་ངོ་བོ་ཡང་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་ཐབས་དང་ལྡན་པའི་ཤེས་རབ་བསྟེན་པས་བདེན་པ་གཉིས་ཀྱི་དོན་ལ་མཁས་པར་གསུངས་ཀྱི། ཐབས་ཤེས་ཡ་བྲལ་ན་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་མི་ཐོབ་ལ། ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་བར་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་རྣམ་པར་རོལ་བའི་མདོ་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ། "རྣལ་འབྱོར་པས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མིག་ཕྱེ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚོན་གྱིས་ཉོན་མོངས་པའི་དགྲ་རྣམས་ཕམ་པར་བྱ་སྟེ། འཇིགས་པ་མེད་པར་གནས་པར་བྱའི། མི་སྲུར་མ་བཞིན་དུ་མིག་འཛུམས་པར་མི་བྱའོ།།"[1] ཞེས་གསུངས།

ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།[2]

གལ་ཏེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་རྟོག །
སོ་སོར་དེ་བརྟགས་གལ་ཏེ་བསྒོམ་པ་ན། །
དེ་ཉིད་མྱ་ངན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བུའི་རྒྱུ། །
རྒྱུ་གཞན་གང་ཡིན་དེ་ནི་ཞི་མི་འགྱུར། །

ཞེས་སོགས་ཀྱིས་སྒྲུབ་པར་མཛད་དོ།།

ཡང་སློབ་དཔོན་གྱིས་ལྷག་མཐོང་ནི་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པ་གསུངས་ཤིང་། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་

---

1 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༨༣ ཞྭ་ཊ་པར་མ།
2 སྡེ་བཀའ། མདོ།ད། ཤོག ༣༧

སྦྱིན་ལ་སོགས་པ་མདོ་སྡེ་མང་པོར་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་རྣམ་པ་དུ་མ་བཀའ་སྩལ་བ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་བར་གསུངས། དེ་ལྟ་བས་ན་རང་ཉིད་ཤེས་རབ་ཆུང་ངུ་ ། བརྩོན་འགྲུས་ཆུང་ངུ་། མང་དུ་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་ཚོལ་མི་ནུས་པར་ཁས་བླངས་རིགས་པ་ལས། མང་དུ་ཐོས་པ་སྐྱོན་དུ་འཛིན་པ་ནི་མི་རིགས་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མང་དུ་ཐོས་པ་བསྔགས་པས་དེ་སྤངས་པ་མི་རིགས་པར་གསུངས་སོ།། དེས་ན་བསམ་གཏན་པས་མང་དུ་ཐོས་པ་མི་བྱར་མི་རུང་ངོ་ཟེར་ན་དེ་ལ་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ་[1]ཞེས་སོགས་བརྗོད་པའི་སྐབས་ཀྱི་དགག་པ་ཡང་འདིར་མཛད་པར་མངོན་ནོ།།[2]

སྤྱོད་པའི་ཕྱོགས་ལ་དགག་པ་མཛད་ཚུལ།

བསམ་གཏན་པ་རྣམས་ཀྱིས་ལས་དགེ་སྡིག་གང་བྱེད་ཀྱང་འཁོར་བར་འཆིང་བའི་རྒྱུ་ཡིན་པ་མཚུངས་ཏེ། དཔེར་ན་གསེར་སྒྲོག་དང་ལྕགས་སྒྲོག་གང་གིས་བཅིངས་ཀྱང་འཆིང་བ་ཡིན་པ་མཚུངས་པ་དང་། སྤྲིན་དཀར་ནག་གང་གིས་བར་དུ་བཅད་ཀྱང་ཉི་མ་སྒྲིབ་པ་མཚུངས་སོ། །ཞེས་སྤྱོད་པ་ཐབས་ཀྱི་ཕྱོགས་སྤང་བའི་བཞེད་པ་འདི་ལ སློབ་དཔོན་གྱིས“དགེ་བ་སོགས་པའི་ལས་ཅི་ཡང་མི་བྱའོ། །ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ནི་དེ་སྐད་སྨྲ་བས་ལས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཞེས་མུ་སྟེགས་པ་ཅན་ཀུན་ཏུ་འཚོ་བའི་སྨྲ་བ་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་རོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ལ་ཉོན་མོངས་པ་ཟད་ནས་

1 ཏུན་ཧོང་ཡིག་རྙིང་། PT 116 ལྷ་ཚ་ཞི་འཚོ་དཔེ་མཛོད་ཁང་།

2 འདིའི་སྐོར་རྒྱས་པ་བསྒོམ་རིམ་ཤོག་གྲངས་ ༡༨༨ ལ་གཟིགས། ལྷ་ཚ་དཔར་མ། ༡༩༨༥

གྲོལ་བར་འགྱུར་གྱི། ལས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར་བ་མེད་དོ།།"[1] ཞེས་དགེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཅི་ཡང་མི་བྱ་བ་ནི་མུ་སྟེགས་པ་དང་མཚུངས་པ་དང་། འཁོར་བ་ལས་གྲོལ་བ་ལ་ཉོན་མོངས་པ་ཟད་དགོས་པ་ལས། ལས་ཟད་པ་ཙམ་གྱིས་གྲོལ་བ་མེད་དེ། མཐའ་ཡས་པའི་ཕྱིར་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་བསགས་པའི་ལས་ཟད་པར་མི་ནུས་པར་གསུངས། དེ་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་ཟད་པའི་ཕྱིར་ལྷག་མཐོང་ལ་བརྟེན་དགོས་ཤིང་། དེ་ལ་བརྟེན་ནས་ཉོན་མོངས་ཟད་དེ་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། །མི་དགེ་བ་དགག་པར་རིགས་ཀྱང་། དགེ་བ་དགག་པ་དོན་མེད་དེ། དེ་ཉིད་ལས་"མི་དགེ་བའི་ལས་མི་བྱའོ། །ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ནི་རིགས་ན། དགེ་བ་ཅི་སྟེ་དགག གལ་ཏེ་འཁོར་བར་བྱེད་ལས་དགག་པ་སྐད་དུ་བྱས་ན་ཡང་དེ་ནི་མི་རུང་སྟེ། བདག་ལ་སོགས་པ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་ཀུན་ནས་བསླང་བའི་དགེ་བའི་ལས་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་འཁོར་བར་བྱེད་པ་ཡིན་གྱི། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ལས་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ནས་བསླང་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོས་པས་ཡང་འཁོར་བར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ཏེ།" དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ས་བཅུ་པ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྩལ་ཏེ།[2] "དགེ་བ་བཅུའི་ལས་ཀྱི་ལམ་དེ་དག་ཉིད་བསྔོ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་སྦྱང་བ་བྱས་པའི་བྱེ་བྲག་འདིས་ནི་ཉན་ཐོས་དང་། རང་སངས་རྒྱས། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་། སངས་རྒྱས་ཉིད་སྒྲུབ་པར་བྱེད་དོ།"[3] ཞེས་སོགས་ཀྱིས་ལས་དགེ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱུར་གྱུར་ལ། ལས་དགེ་བ་

---

1 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༤༩ ལྷ་ས་པར་མ། ༡༩༨༥

2 སྡེ་བཀའ། ཕལ་ཆེན། ཁ ཤོག ༡༨༩

3 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༤༩ ལྷ་ས་པར་མ། ༡༩༨༥

ལ་སོགས་པ་མ་སྤྱད་ན་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་དང་ཡང་འགལ་བར་གསུངས་ལ། དགེ་བའི་སྤྱོད་པ་བཀག་ན་སོ་སོར་ཐར་པའི་སྡོམ་པ་ལ་སོགས་པ་བཀག་པར་འགྱུར་བ་དང་། འཁོར་བ་ལས་ཡིད་འབྱུང་སྙིང་རྗེ་ཁྲིམས་ནས་ཁྲིམས་མེད་པར་རབ་ཏུ་བྱུང་བའང་དོན་མེད་པར་འགྱུར་བས། བྱང་ཆུབ་ཀྱང་ཐག་རིང་བར་འགྱུར་བར་གསུངས་སྟེ། དེ་ཉིད་ལས།[1] "སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱི་སྐུ་དང་། ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། འོད་དང་། འཁོར་དང་། ལོངས་སྤྱོད་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཉིད་ཡིན་པར་མདོ་སྡེ་དང་། དེ་དག་ཏུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ། དགེ་བ་སྤྱོད་པ་བཀག་པས་ནི་སོ་སོར་ཐར་པའི་སྡོམ་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བཀག་པར་འགྱུར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེའི་མགོ་བོ་དང་ཁ་སྤུ་བྲེགས་པ་དང་ཆོས་གོས་ངུར་སྨྲིག་བཅང་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དགེ་བའི་ལས་མངོན་པར་འདུ་བྱ་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་པ་གྱུར་ན་འཁོར་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱ་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་པ་ཀུན་ཏུ་བསྟེན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱང་རྒྱང་བསྲིངས་པར་འགྱུར་རོ།" །ཞེས་སོགས་དགེ་བ་ལ་སོགས་པའི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་མ་སྤྱད་ན་གྲོལ་བ་མེད་པར་གསུངས་ཤིང་། དོན་དེ་ཉིད་ལུང་གིས་སྒྲུབ་པ་ལ་མདོ་སྡེ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ། མདོ་དེ་ཉིད་ལས།[2] "སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱ་བ་ལ་ཤིན་ཏུ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་། འདུ་བྱེད་པ་མངོན་པར་

1 བསྒོམ་རིམ། ཐ་མ། ཤོག ༡༥༠ ཕྭ་ཆ་པར་མ། ༡༩༨༥

2 སྡེ་དཀའ། མདོ་ ཙ། ཤོག ༡༩

འདུ་བྱ་བ་ལ་ཤིན་ཏུ་མི་ཕྱོགས་པ་ནི་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ངས་ལུང་མ་བསྟན་ཏོ།" ཡང་འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "ཐབས་ཀྱི་ཟིན་པའི་འཁོར་བར་འགྲོ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཐར་པའོ། །ཐབས་དང་བྲལ་བའི་ཤེས་རབ་ནི་འཆིང་བའོ། །ཤེས་རབ་དང་བྲལ་བའི་ཐབས་ཀྱང་འཆིང་བའོ། །ཤེས་རབ་དང་བཅས་པའི་ཐབས་ནི་ཐར་པའོ། །ཐབས་དང་བཅས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱང་ཐར་པའོ།།" ཞེས་སོགས་འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་མདོ་དང་། མདོ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་སོགས་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ། ཐབས་ཀྱི་ཆ་དགེ་བ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་བཀག་ནས། ཐབས་ཤེས་ཡ་བྲལ་དུ་འཛིན་ན་དེ་ལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་མེད་པར་གསུངས་སོ།།

ཡང་གལ་ཏེ་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྤྱོད་པ་དབང་པོ་བརྟུལ་པོ་ཁོ་ནས་བྱའི་

དབང་པོ་རྣོན་པོས་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་པའི་བཞེད་པ་སློབ་དཔོན་གྱིས་མི་རིགས་པར་གསུངས་ཏེ། དབང་པོ་རྟུལ་པོ་ཁོ་ནས་སྤྱོད་པར་བྱའི། དབང་པོ་རྣོན་པོས་མི་བྱའོ། །ཞེས་བརྗོད་པར་མི་རུང་སྟེ། འདི་ལྟར་ས་དང་པོ་ནས་བཟུང་སྟེ་ས་བཅུ་པའི་བར་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་སྤྱོད་པ་རྣམས་འབྱུང་ཞིང་ལྷག་མ་རྣམས་ཀྱང་ཀུན་ཏུ་མི་སྤྱོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ས་དང་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་མ་གཏོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་ཅིག་ཅར་འཇུག་པའི་སྒོ་གཞན་ནི་མེད་དོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་མདོ་སྡེ་ལ་སོགས་པ་གང་ལས་ཀྱང་དེ་ལྟར་ཡོད་པར་བཀའ་མ་སྩལ་ཏེ། ཞེས་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཅིག་ཅར་འཇུག་པ་ཞེས་པའི་ཚིག་གིས་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ཤོག ༣༠༡

དངོས་སུ་སྨོས་ཏེ། ཅིག་ཅར་འཇུག་པས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་ཡོད་པ་བཀག་གོ འདིས་ནི་གཞུང་འགའ་ཞིག་དང་མཁས་པ་འགའ་ཞིག་གིས་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཧྭ་ཤང་ཞེས་ཚིག་གིས་དངོས་སུ་མ་ཟིན་པས་ཕྱོགས་སྔ་ཧྭ་ཤང་ཡིན་པ་མཐའ་གཅིག་ཏུ་ངེས་པ་མེད་དོ་ཞེས་པའི་འདོད་པའང་སེལ་བ་ཉིད་དོ།།

ཡང་སློབ་དཔོན་གྱིས་བསམ་གཏན་པ་རྣམས་ཀྱིས་བསམ་གཏན་གྱི་ནང་དུ་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་འདུས་པས་ན་དེ་བསྟེན་པས་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་བསྟེན་པར་གྱུར་རོ། དེའི་ཕྱིར་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་སོ་སོར་བསྟེན་མི་དགོས་པ་སྙད་དུ་བྱས་ན་ཡང་།[1] ཞེས་བསམ་གཏན་པའི་འདོད་པ་དངོས་སུ་བཀོད་དེ། བསམ་གཏན་པའི་ལྟ་སྤྱོད་གཉིས་ཀར་དགག་པ་མཛད་པ་དངོས་སུ་གསལ་ལོ། །དེའི་ཕྱིར་དགག་པ་མཛད་པ་ནི་ཐེ་ཚོམ་མི་དགོས་པ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དེ། ཏན་ཏང་ཡིག་ཆིང་ལས་སྨྲད་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་ཅེས་པའི་གཞུང་ལས་ཀྱང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བསླབས་པར་བྱས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་འདིར་ནི་འདུས་པར་འགྱུར་ཞེས་འབྱུང་། ཞེས་དང་། ཡང་མི་རྟོག་པ་ལ་ཞུགས་པའི་ཚེ་སྒོ་གསུམ་གྱི་ཉེས་པ་མི་འབྱུང་བས་ན། ཚུལ་ཁྲིམས་ཆེན་པོ་རྫོགས་སོ། མི་རྟོག་པ་ལ་ཞུགས་པའི་ཚེ་སེམས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་མི་འབྱུང་བར་བཟོད་པས་ན་བཟོད་པ་ཆེན་པོ་རྫོགས་སོ། །མི་རྟོག་པ་ལ་རྒྱུ་བོ་རྒྱུན་བཞིན་བར་མ་ཆད་པས་ན་བརྩོན་འགྲུས་ཆེན་པོ་རྫོགས་སོ། །མི་རྟོག་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཡིན་པས་ན་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཆེན་པོ་རྫོགས་སོ། །མི་རྟོག་པ་ཉིད་ཤེས་རབ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་

---

1 བསྒྲིམ་རིམ། ཐ་མ། ཤོག ༡༥༦ ལྷ་ཆ་པར་མ། ༡༩༨༥

ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་སུ་གྱུར་པས་ན་ཤེས་རབ་ཆེན་པོ་ཡང་རྫོགས་སོ།[1] །ཞེས་མི་རྟོག་པ་ལ་ཞུགས་པ་ན་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་ཀ་རྫོགས་པས་གཞན་སྦྱིན་སོགས་ཕར་ཕྱིན་སོ་སོ་བསླབ་མི་དགོས་པར་བཞེད་པ་འདི་ནི་མི་རུང་ངོ་། །དེ་ལྟར་གྱུར་དུ་ཟིན་ན་སངས་རྒྱས་ལ་བ་ལང་གི་སྤྱི་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བྱས་པའི་ནང་དུ་ཡང་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་འདུས་པས་ནང་དཀྱིལ་འཁོར་འབའ་ཞིག་བྱའི། བསམ་གཏན་ལ་སོགས་པ་མི་བྱ་བར་འགྱུར་རོ།།[2] ཞེས་གསུངས་ལ། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་གཅིག་གི་ནང་དུ་ཕར་ཕྱིན་དྲུག་ག་འདུས་ཏེ་ཉམས་སུ་ལེན་དགོས་པ་ཡང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་ཕར་ཕྱིན་དྲུག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་རེ་རེའི་ནང་དུ་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་པོ་ཐམས་ཅད་འདུས་པར་བཀའ་སྩལ་གྱི། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་གཅིག་ཁོ་ན་བསྟེན་པ་ནི་གསུངས་པ་མ་ཡིན་ནོ། འདི་ནི་མདོན་རྟོགས་རྒྱན་གྱི་སྐབས་སུ་གོ་སྒྲུབ་བཤད་པ་དང་མཚུངས་པར་མངོན་ནོ། །དོན་དེ་ཉིད་སྒྲུབ་པ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པའི་མདོ་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ། བསྒོམ་རིམ་ལས།[3] "བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབས་པ་འདི་ནི་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱིར་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཡང་མི་བླུན་པོ་དག་འདི་སྐད་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཁོ་ན་ལ་བསླབ་པར་བྱའི། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྷག་མ་རྣམས་ཀྱིས་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེས་ཟེར་གྱི། དེ་དག

---

1 པིལྱིཊ་ཕྱོགས་བསྡུས། ཞི་འཚོ་དཔེ་མཛོད་ཁང་། Pilliot Tibetan no 116

2 བསྒོམ་རིམ། ཐ་མ། ཤོག ༡༨༦ ཕྭ་ན་པར་མ། ༡༩༩༧

3 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༨༧ མདོ་ཁུངས་མ་རྙེད། ༡༩༩༧

ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་གཞན་དག་ལ་སྲུན་འབྱིན་པར་སེམས་སོ།།" ཞེས་སོགས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ།།

དེ་བས་ན་སྟོང་པ་ཉིད་འབའ་ཞིག་བསྟེན་ན་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསང་བའི་མདོ་ལས།[1] "གཅིག་ཏུ་སེམས་དམིགས་པ་མེད་པ་མི་བྱ་ཡི། ཐབས་ལ་མཁས་པ་ལ་ཡང་བརྟེན་པར་བྱའོ།།" ཞེས་གསུངས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་རང་ཉིད་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་ལ་བརྩོན་མི་ནུས་ན། གཞན་ལ་དེ་སྐད་སྟོན་མི་རིགས་ཏེ། དེ་ལྟར་བྱས་ན་བདག་གཞན་ཕུང་བའི་རྒྱུར་གསུངས་སོ། །མདོ་སྡེ་མཐའ་ཡས་པ་ལས་ཀྱང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཚུལ་སྒྲུབ་པ་བསྟན་པས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕར་ཕྱིན་རྐྱང་པ་ཉམས་སུ་ལེན་པ་རྣམས་ལ་འཚང་རྒྱ་བའི་སྐབས་མེད་པར་གསུངས་ནས་བསམ་གཏན་པས་མི་རྟོག་པ་ལ་ཤེས་རབ་ཏུ་བརྟགས་ནས་བསྒོམ་པར་འདོད་པ་ལ་དགག་པ་མཛད་དེ། "བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཅི་ནས་ཀྱང་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་བརྟག་པར་བྱ་ཞིང་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་མཐའ་དག་བསྒྲུབ་པར་བྱ། ཞེས་རིགས་པ་དང་ལུང་གིས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པས་ཐོས་པ་ཉུང་བ། མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཚིག་དུག་ཅན་དེ་སྤངས་ལ། སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བོ་མཁས་པའི་ཚིག་བདུད་རྩིའི་རྗེས་སུ་འཇུག་པས་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ལ་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་ནས། སྒྱུ་མ་མཁན་བཞིན་དུ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་མ་གྱུར་བས་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བའི་སྦྱིན་པ་ལ་

1 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༨༩ ༡༩༩༧ ནང་དྲངས་པའི་ལུང་།

སོགས་པའི་དགེ་བའི་སྤྱོད་པ་མཐའ་དག་དང་། འགྲོ་བ་མ་ལུས་པ་གདོན་པ་ལ་མངོན་པར་བརྩོན་པར་བྱ་སྟེ།"[1] ཞེས་སོགས་གསུངས་ཤིང་། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཡ་མ་བྲལ་བར་གོམས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ས་གོང་མ་གོང་མ་ཡོངས་སུ་སྦྱངས་ཏེ། རིམ་གྱིས་གསེར་བཞིན་དུ་དག་པར་བྱེད་དེ་ཆགས་ཐོབ་མེད་པའི་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པའི་གཞི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་ཐོབ་པར་འགྱུར་གྱི། དེ་ལས་གཞན་པའི་ཅི་ཡང་མི་སེམས། ཅི་ཡང་བྱར་མེད་པ། དྲན་པ་མེད་པ། རྟོག་མེད་ཤེས་རབ་རྐྱང་པ་ལ་གོམས་པ་ལས་འབྲས་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་སྐབས་མེད་པར་གསུངས་པའི་སྒོ་ནས་ཧྭ་ཤང་གི་འདོད་པ་དགག་པར་མཛད་དོ།།

གོང་དུ་བཤད་ཟིན་པ་ལྟར་འདི་ལ་སྔ་ཕྱིའི་མཁས་པ་ཁ་ཅིག་གིས་བསྒོམ་རིམ་ནང་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལས་གང་གསུངས་པ་རྣམས་ཐ་གཅིག་ཏུ་ཧྭ་ཤང་གི་འདོད་པ་དགག་པ་ཡིན་མིན་མ་ངེས་ཏེ། ཧྭ་ཤང་གི་མཚན་དངོས་སུ་མ་སྨོས་སོ། །ཞེས་བསྒོམ་རིམ་སོགས་ཀྱི་ཕྱོགས་སྔ་ཧྭ་ཤང་ཡིན་མིན་ལ་ཐེ་ཚོམ་མཛད་པ་ཡོད་ཀྱང་། དེ་ནི་གཞུང་ལུགས་ལ་རྟོག་ཞིབ་ཚུལ་གྱི་རིགས་པ་ཙུང་ཟད་ཙིང་བར་མངོན་ཏེ། གོང་དུ་བཤད་ཟིན་པ་ལྟར་སྤྱིར་བསྒོམ་རིམ་འདིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ལམ་རྣལ་འབྱོར་པས་ཉམས་སུ་ལེན་ཚུལ་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་ཡིན་པས། འདིར་བསྟན་ཚིག་དོན་མ་ལུས་པ་ཧྭ་ཤང་གི་དགག་པར་འགྲོ་དགོས་པའི་ངེས་པ་མེད་ལ། རང་ལུགས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་སྒོམ་པའི་འགལ་ཟླར་གྱུར་པའི་ཧྭ་ཤང་གིས་བཞེད་པ་རྣམས་མ་བཀག་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། བསྒོམ་རིམ་ཐ་མར་"ཡང་དགེ་བ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཅི་ཡང་མི་བྱའོ། །ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ནི།"[2]

1 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༩༡ ཝཱ་ཎ་པར་མ། ༡༩༩༧ ནང་དྲངས་པའི་ལུང་།

2 བསྒོམ་རིམ། ༡༢༨ ཝཱ་ཎ་པར་མ། ༡༩༨༥

ཞེས་དང་། ཡང་"གང་དག་ཅི་ཡང་མི་སེམས་ཤིང་ལས་ཅི་ཡང་མི་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་འཁོར་བ་ལས་ཡོངས་སུ་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཅི་ཡང་མི་བསམ་མོ། །སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་དགེ་བ་སྤྱད་པར་ཡང་མི་བྱའོ། །སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་པ་ནི་སྐྱེ་བོ་བླུན་པོའི་དབང་དུ་མཛད་ནས་བསྟན་པ་ཁོ་ནའོ།།" ཞེས་དང་། "བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མང་དུ་ཐོས་པ་བསྔགས་པའི་ཕྱིར་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་དེ་སྤྱད་པར་ནི་མི་རིགས་སོ་"ཞེས་བསམ་གཏན་པས་མང་དུ་ཐོས་པ་མི་བྱར་མི་རུང་ཟེར་བ་དེ་ལ་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། ཞེས་པའི་འདོད་པ་བརྗོད་པ་བཀག་པ་དང་། ཡང་བསམ་གཏན་དམིགས་སྒྲོན་ལས།[1] ལུས་སེམས་འདུག་ཐམས་ཀྱི་སྐབས་སུ་"མ་ཧཱ་ཡན་གྱི་སློམ་ལུང་ལས། བདག་གི་སེམས་ལ་བལྟས་ན་ཅི་ཡང་མི་སེམས་པ་མེད་དེ། མི་བསམ་མོ།།" ཞེས་སོགས་འདོད་པ་བརྗོད་པ་རྣམས་དངོས་སུ་སྨོས་ཏེ་དགག་པ་མཛད་པ་ལས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཧྭ་ཤང་ལ་དགག་པ་མཛད་མིན་གྱི་དོགས་པ་མཛད་པ་དོན་མེད་པར་སེམས་སོ།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་བསྒོམ་རིམ་ཐ་མའི་སྐབས་ཧྭ་ཤང་གི་འདོད་པ་རྣམས་དངོས་སུ་སྨོས་ཏེ། ལུང་རིགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་དགག་པ་རྒྱས་པར་མཛད་དེ། བོད་དུ་ནང་པའི་ལྟ་སྤྱོད་འདི་ལྟ་བུ་ཞིག་དགོས་ཞེས་པའི་དོན་དུ་བསྒོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དང་། དབུ་མ་སྣང་བ་ལ་སོགས་པ་མཛད། དེ་ལ་རྒྱལ་པོས་ཀྱང་གནང་བ་སྦྱིན་ཏེ། བོད་དུ་ལྟ་བ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ལྟ་བ་དང་། སྤྱོད་པ་ཕྱིན་དྲུག་གི་ཉམས་ལེན་དང་ལྡན་པ་ཞིག་དགོས། ཞེས་བསྒོམ་རིམ་ལས་གསལ་བར་གསུངས་པ་ལྟར་ཡིན་ཏེ། དེ་ཉིད་ལས།[2] "དེའི་ཕྱིར་རྟོག་

---

1 བསམ་གཏན་དམིགས་སྒྲོན། ཤོག ༡༥༦

2 བསྒོམ་རིམ། ཤོག ༡༦༡ ལྡབ་པར་མ།

པ་དང་ལྡན་པས་ཐོས་པ་ཉུང་བ་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཚིག་དུག་བཞིན་དུ་སྤངས་ལ། སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བོ་མཁས་པའི་ཚིག་བདུད་རྩིའི་རྗེས་སུ་འཇུག་པས་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ལ་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་ནས།" ཞེས་དང་། ཡང་ "དེ་ལྟ་བ་ལས་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པར་འདོད་པས་དབུ་མའི་ལམ་ལ་མངོན་པར་བརྩོན་པར་བྱའོ།།" ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་བཞིན་རྒྱལ་རབས་དེབ་ཐེར་རྣམས་ལས་དེ་ལྟར་ལྟ་བ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་སུ་འཛིན་དགོས་པར་གསལ་བ་བཞིན་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་གསལ་བར་གསུངས་པས་དོགས་པའི་གནས་ཙམ་ཟད་ཀྱང་ལུས་པར་མི་སེམས་སོ། །དབུ་མ་སྣང་བ་ལས་ཀྱང་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་རྗེས་སུ་དྲང་ས་དགོས་པར་གསུངས་སོ།།

དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗོད་བྱ་སྙིང་བསྡུས།

སློབ་དཔོན་གྱིས་དབུ་མ་སྣང་བ་བརྩམས་པའི་དགོས་པ།

དེ་ཡང་བསྟན་བཅོས་དབུ་མ་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་བར་མཛད་པས་ན་དབུ་མ་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་སྟེ། བསྟན་དང་སྟགས་རམ་པས་དེ་ལྟར་གཞུང་འདིར་སྟར་ཇི་སྐད་བརྗོད་པ་དེ་ལྟ་བུའི་ཟབ་མོ་དབུ་མའི་ལམ་གསལ་བར་ཁོ་ནར་བསྟན་ན་དབུ་མའི་སྣང་བ་ཞེས་བྱའོ།[1] ཞེས་གསུངས་སོ། །སློབ་

1 དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་བོ། ཤོག ༢༢ ན

དཔོན་གྱིས་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདི་བརྩམས་པའི་དགོས་པ་བསྟན་པ་ནི་གཞུང་གི་མཆོད་བརྗོད་ཀྱི་སྐབས་སུ།

འདི་ན་མི་མཁས་གང་དག་དངོས་ལ་ཞེན་པའི་ལྟ་བ་ཉམས་པས་དངོས་ལ་ཞེན་པའི་
གདོན་ཆེན་གྱིས།།
ཟིན་པའི་དབང་གིས་བློ་གྲོས་ཉམས་པས་ཆེ་བའི་ཆེ་བ་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་ལ།།
སྐྱོད་པར་བྱེད་ཀྱང་བདག་ཉིད་ཕུང་བ་འབའ་ཞིག་བྱེད་དུ་ཟད་པ་དེ་དག་གི།
འབྱུང་པོའི་གདོན་རྣམས་ཞི་བར་བྱ་ཕྱིར་སྙིང་རྗེས་གསོ་བའི་ཐབས་ནི་བརྩམ་པར་བྱ།།[1]

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པའི་བློ་ཆུང་བའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་རྣམས་ཀྱིས་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཤིང་རྟའི་སྲོལ་འབྱེད་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་པར་སྐྱོད་པར་བྱེད་པའི་ལས་ངན་པོ་ཆེ་བསགས་པ་འདི་དག་གི་འབྱུང་པོའི་གདོན་སེལ་བའི་ཕྱིར་སྙིང་རྗེའི་དབང་གིས་དབུ་མ་སྣང་བའི་བསྟན་བཅོས་འདི་བརྩམ་པར་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །ཡང་དེ་ཉིད་ལས།[2] ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་དྲ་བ་མཐའ་དག་འབྱུང་བའི་རྩ་བ་ནི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡིན་པས་དེ་ཡོངས་སུ་སྤང་སྟེ། ལེགས་པའི་གོ་འཕང་འདོད་པ་རྣམས་ལ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་འདི་རྩོམ་མོ། །ཞེས་གསུངས་པ་ལས་ཀྱང་གོ་ནུས་སོ།།

དེ་ལྟར་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདིས་ནི་དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དངོས་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱི་ལོག་པར་རྟོག་པ་ཞི་བར་བྱ་ཕྱིར་ལུང་དམ་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༣ བ ༥
2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༣ བ

ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྟན་པའི་སླད་དང་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་སྒྲུབ་པའི་སླད་ཁོ་ནས་བརྩམས་པ་སློབ་དཔོན་རང་ཉིད་ཀྱིས་གསུངས་སོ།།

དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗོད་བྱ།

བསྟན་བཅོས་འདིའི་བསྟན་བྱའི་གཙོ་བོ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་པ་དང་། མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་གྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ། དབུ་མ་སྣང་བའི་དོན་བསྡུའི་སྐབས། " དེ་བས་ན་ཐེག་པ་གཅིག་ཉིད་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ "[1]ཞེས་པ་ལས་གོ་ནུས་སོ།།

དབུ་མ་སྣང་བས་བརྗོད་བྱ་ཇི་ལྟར་བཤད་པའི་ཚུལ།

སློབ་དཔོན་གྱིས་གཞུང་འདི་ཚན་པ་བཞིར་ཕྱེ་སྟེ་གཏན་ལ་ཕབ་པར་མཛད་དེ། གཞུང་ཚན་པ་དང་པོའི་སྐབས་སེམས་ཙམ་པ་གཙོས་དངོས་སྨྲ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པའི་ལུང་རིགས་དང་། མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་འདོད་པའི་ལུང་རིགས་རྣམས་བཀོད་དེ་ཕྱོགས་སྔ་མ་གསལ་བར་མཛད་དེ། དེ་ཉིད་ལས་ཀྱང་། "འདི་ན་ཁ་ཅིག་དོན་དམ་པ་ཟབ་མོའི་ཚུལ་གྱི་རྒྱ་མཚོའི་གཏིང་མ་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༥༥

དཔོགས་ནས་སླ་བ་ལུང་དང་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་འགྱུར་གྲང་ན། ཞེས་པ་ནས། ཕྱོགས་སྔ་མ་ཡིན་ནོ།"[1] །ཞེས་པའི་བར་གྱིས་གཏན་ཕབ།

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་གྱིས་"དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལ་ལན་གདབ་པར་བྱ་སྟེ་"[2]ཞེས་པ་ནས་རང་ལུགས་བཀོད་ཅིང་། ལུང་དང་རིགས་པའི་ཚོད་དུ་མའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་གཏན་ལ་ཕབ་པར་མཛད་དེ་གཞུང་ཚན་གཉིས་པ་བསྟན།

དེ་ནས་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་འདོད་པའི་འདོད་པ་རྣམས་ལུང་རིགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བཀག་སྟེ་མཐར་ཐུག་ཐེག་པར་གཅིག་ཏུ་གྲུབ་པའི་ཕྱོགས་ལེགས་པར་གཏན་ལ་ཕབ་པར་མཛད་དེ་གཞུང་ཚན་གསུམ་པ་བསྟན་པར་མཛད།[3]

དེའི་རྗེས་སློབ་དཔོན་གྱིས་"དེ་བས་ན་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་"[4]ཞེས་པས་གཞུང་གི་དོན་བསྡུ་དང་རང་ཉིད་ཀྱི་ལུགས་གསལ་བར་མཛད་དེ་རག་པར་གཞུང་ཚན་ས་དཔྱད་བཞིར་ཕྱེ་ནས་བསྟན་པར་མཛད་དོ།།

དབུ་མ་སྣང་བའི་ཕྱོགས་སྔ་ངོས་གཟུང་བ།

གཞུང་འདིའི་ཕྱོགས་སྔ་ངོས་གཟུང་བ་ལ། འདི་ན་མི་མཁས་པ་གང་དག་ལྟ་བ་ཉམས་པས་དངོས་ལ་ཞེན་པའི་གདོན་ཆེན་གྱིས། ཞེས་དང་། དེ་ཡང་གཞུང་འདིའི་ནང་

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༥ བ ནས་ ༡༥༧ བ་བར།

2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༥༧ ནས་གཟིགས།

3 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༧ ན་ནས་གཟིགས།

4 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༥༥ ལ་གཟིགས།

སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་ཚུལ་རྣམས་ཇི་ལྟར་བཀོད་ཅེ་ན་གཞུང་ཉིད་ལས། དེ་ཡང་གང་གིས་རྩོད་པ་ནི། "འདི་ན་ཁ་ཅིག་དོན་དམ་པའི་ཟབ་མོའི་དོན་ཚུལ་གྱི་རྒྱ་མཚོའི་གཏིང་མ་དཔོགས་ནས་སྨྲ་བ། ལུང་དམ་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་གྲང་ན། རེ་ཞིག་བཀའ་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ།།"[1] ཞེས་སོགས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་འདོད་པ་ལ་ཀླན་ཀ་འཚོལ་བ་ཡིན་ཞིང་། དེ་ལྟ་བུའི་ཀླན་ཀ་བྱེད་པ་ནི་དངོས་སྨྲ་བ་རྣམས་ཡིན་ལ། དེ་དག་ལས་ཀྱང་ལུང་དམ་རིགས་པའི་རྗེས་འབྲང་གི་སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ཡིན་ཏེ། གཞུང་ཉིད་ལས་ཕྱོགས་སྔ་འགོད་པ་ན། "མདོ་ཁ་ཅིག་ལས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ། མ་སྐྱེས་པ། གཟོད་མ་ནས་ཞི་བ། རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དྲང་བའི་དོན་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བསྟན་པ་ནི་དགོངས་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་གསུམ་པོ་ཀུན་བརྟགས་པ་དང་། གཞན་གྱི་དབང་དང་། ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་རྣམས་ནི་གོ་རིམ་བཞིན་དུ་མཚན་ཉིད་དང་། སྐྱེ་བ་དང་། དོན་དམ་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལས་དགོངས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་ཏེ། དེ་བས་ན་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་གཟོད་མ་ནས་ཞི་བའོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་སྟེ། དེ་བཞིན་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་ལས་མདོའི་དོན་གྱི་དགོངས་པ་སྦྱར་བ་བསྟན་པ་ཡིན་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༣ བ་ནས་གཟིགས།

སོ།།"[1] ཞེས་དང་། ཡང་དེ་ཉིད་ལས། "གཞན་ཡང་གཉིས་སུ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཁོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱེ་བྲག་འབྱེད་ཀྱི། རང་རིག་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གཉིས་སུ་སྣང་བ་ཡང་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་དེས་རྣམ་པར་གཞག་པའི་ངོ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀུང་བརྟེན་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པར་གསུངས་ཀྱི་དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་རེ་ཞིག་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།"[2] ཞེས་དང་། "ཡང་གཞན་ཡང་ཤེས་བྱ་ནང་གི་ཡིན་པར་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱི་ལྟར་ན་ཤེས་པ་གཉིས་མེད་པ་ལ་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་པ་རྒྱ་མཚོ་དང་། རི་དང་། ས་དང་ཆུ་བོ་ལ་སོགས་པ་དེའི་ཆ་ཡིན་པ་ཉིད་ཉེ་བར་བརྗོད་ན་ཇི་ལྟར་གཅིག་ལ་འགལ་བ་དག་སྣང་བ་རྗེས་སུ་བྱེད་པར་འགྱུར།"[3] ཞེས་དང་། ཡང་། "དངོས་པོ་རྣམས་གཞན་ལས་ཀུང་མི་སྐྱེ་ཏེ། གཞན་ཉིད་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་པ་ནས། རེས་འགའ་བ་ཉིད་དུ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ།"[4] ཞེས་གཞན་སྐྱེ་དགག་པ་མི་རིགས་པར་རྩོད་པ་དང་། ཡང་། "ཁྱོད་ཀྱིས་དོན་དམ་པར་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཐེག་པ་ནི་གཅིག་ཁོ་ནས་ཟད་དེ། ལྷག་མ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་དང་། ལུང་དང་འགལ་ཏེ།"[5] ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་ལས་གཞུང་འདིའི་ཕྱོགས་སྔའི་གཙོ་བོ

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྡུན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༨ ན་ནས་གཟིགས།
2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྡུན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༨ ན་ལ་གཟིགས།
3 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྡུན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༠༧ ན
4 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྡུན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༧ ན
5 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྡུན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༨༦ ན

ཉི་ལུང་ངམ་རིགས་པའི་རྗེས་འབྲང་གི་སེམས་ཙམ་པ་ཡིན་ལ། དེའི་ཞར་ལ་རང་སྡེ་བྱེ་མདོ་གཉིས་དང་། གྲངས་ཅན་པ་དང་། རྒྱང་འཕེན་པ་ལ་སོགས་པའི་བདག་དང་རྒྱུ་མེད་ལས་སྐྱེ་བ་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱང་བཀག་པས་དེ་རྣམས་ཀྱང་གཞུང་འདིའི་ཕྱོགས་སྔར་དྲངས་རིགས་པ་ཁོ་ནའོ།།

བསྟན་དར་སྟག་རམ་པས་ཀྱང་དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་བྱང་ལས། དེ་ཡང་གང་གིས་རྩོད་པ་ནི། འདི་ན་ཁ་ཅིག་དོན་དམ་པ་ཟབ་མོའི་ཚུལ་གྱི་རྒྱ་མཚོའི་གཏིང་མི་དཔོགས་ནས་སླུ་བ་ཞེས་ཏེ། ལུང་དང་རིགས་པའི་རྗེས་འབྲང་གི་སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་སོ།།[1] ཞེས་གསུངས་སོ།།

ཕྱོགས་སྔའི་ཀླན་ཀའི་གྲངས་ཇི་ཙམ་ཡོད་བཤད་པ།

སྔར་བཤད་པ་ལྟར་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་པའང་ཚན་པ་གཉིས་སུ་ཕྱེ་སྟེ་གསུངས་ཏེ། དང་པོས་ཆོས་རྣམས་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པར་འདོད་པའི་ཚུལ་རྣམས་དང་། གཉིས་པས་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་གྲུབ་པར་འདོད་པའི་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་པ་རྣམས་སོ། །དེ་ཡང་ཐོག་མར་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་མ་ཡིན་པར་འདོད་པའི་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་པ་འགོད་པ་ན། ལུང་རིགས་དང་འགལ་བའི་རྩོད་པ་བདུན་བཅུ་དོན་བརྒྱད་གསུངས་ཤིང་། བསྟན་དར་སྟག་རམ་པས་དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་བྱང་ལས། "ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་རྟག་པ་རང་བྱུང་གི་དབང་ཕྱུག་ལ་

---

1 དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་བྱང་། ཤོག ༧༣ བ

སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྱེད་རྒྱུ་གཅིག་པར་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་ཟེར་བ་དང་དོན་བརྒྱད་ཡོད་དོ། །དེ་ལྟར་སྟོང་པ་ཞེ་ལྔ་ནས་འདིའི་བར་སོ་བཞི་ནི་ལུང་རིགས་དང་འགལ་བའི་སྟོང་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཐུན་མོང་གི་ལུང་དང་འགལ་བའི་སྟོང་པ་བརྒྱད་ཡོད་ལ་རིགས་པ་དང་འགལ་བའི་སྟོང་པ་ཉེར་དྲུག་ཡོད་དོ།།"[1] ཞེས་གསུངས་པ་ལས་གྲུབ་ཡང་དེ་ཉིད་ལས། དེ་ལྟར་ན་མཐར་ཐུག་གི་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ལ་སྟོང་པ་ནི་ལྔ་སྟེ། ལུང་རིགས་དང་འགལ་བར་སྟོང་པ་གཉིས། ལུང་གིས་སྒྲུབ་མི་ནུས་པར་སྟོང་པ་གཉིས། རིགས་པས་སྒྲུབ་མི་ནུས་པ་གཅིག་གོ །དེ་བས་ན་ཀུན་ཀའི་གྲངས་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་གསུམ་མོ། །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་ཚུལ་མི་འདྲ་བ་གཉིས་ལ་འདོད་ཚུལ་གྱི་ཀུན་ཀ་བརྒྱད་ཅུ་རྩ་གསུམ་ཡོད་པར་གསུངས་སོ།།

གཞུང་འདིས་ཕྱོགས་སྔ་འགོག་པའི་གཏན་ཚིགས་གང་ལ་བྱེད་པ།

སྤྱིར་ཞི་འཚོ་ཡབ་སྲས་ཀྱིས་རང་གི་ལྟ་བ་གཏན་ལ་འབེབས་པ་དང་ཕྱོགས་སྔའི་ལུགས་སུན་འབྱིན་པ་ལ་གཅིག་དུ་བྲལ་གྱི་གཏན་ཚིགས་གཙོ་བོར་མཛད་པ་ཡིན་ཡང་། བསྟན་བཅོས་འདིར་ནི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤཱི་ལས་རིགས་པའི་རྒྱལ་པོ་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཏན་ཚིཿལ་སོགས་པ་རིགས་པའི་རྣམ་གྲངས་དུ་མ་ཞིག་གི་སྒོ་ནས་གཞན་ལུགས་དགག་པ་དང་རང་ལུགས་བཞག་པར་མཛད་དེ། དེ་ཉིད་ལས། "དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདི་ནི་གང་ཞིག་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དེ་ནི་དོན་དམ་པར་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་ཡིན་

1 དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་པོ། ཤོག ༣༩ ན

ཏེ། དཔེར་ན་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ།”[1] ཞེས་སོགས་དང་། ཡང་དངོས་པོ་རྣམས་བདག་དང་གཞན་དང་གཉིས་ཀ་དང་རྒྱུ་མེད་ལས་མི་སྐྱེ་བའི་ཚུལ་རྣམས་བསྟན་པས་མུ་བཞི་སྐྱེ་འགོག་གི་གཏན་ཚིགས་གསུངས་ཏེ། “གང་དག་དོན་དམ་པར་མུ་བཞི་པའི་སྐྱེ་བ་དང་བྲལ་བ་དེ་ནི དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་ནམ་མཁའི་པད་མ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ།།”[2] ཡང་དངོས་པོ་རྣམས་བདེན་པའི་གཅིག་དང་དུ་མ་གང་རུང་མ་གྲུབ་པའི་དངོས་འགལ་དུ་བསྟན་པས་གཅིག་དུ་བྲལ་གྱི་གཏན་ཚིགས་གསུངས་ཏེ། “རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་སྔ་ཚོགས་ཀྱི་རྣམ་པ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཐམས་ཅད་དུ་གཅིག་པ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་གྲུབ་ན་དུ་མ་ཉིད་དག་གིས་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་སྟེ། དེ་ནི་དེའི་ཚོགས་འདི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། གཅིག་དང་དུ་མ་ཉིད་དག་གིས་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་སྟེ། དེ་དག་ནི་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།”[3] ཞེས་སོགས་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་པ་རྣམས་བཀག་པར་མཛད།

ཁམས་གསུམ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་རྒྱལ་བ་ཙོང་ཁ་པ་བློ་བཟང་གྲགས་པས་དྲང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ་ལས་ཀྱང་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པས་དགག་བྱ་འགོག་པའི་རིགས་པའི་གཙོ་བོ་ནི་དབུ་མ་རྒྱན་དུ་གཅིག་དུ་བྲལ་གྱི་རྟགས་ལ་བརྟེན་ནས་བྱས་ཀྱང་དབུ་མ་སྣང་བར་རིགས་པའི་རྣམ་གྲངས་དུ་མ་ཞིག་ལ་བརྟེན་པར་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་ཀྱིས་

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༠༥ ལ་གཟིགས།

2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ༣༡༠ བ ༣

3 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ༣༡༨ བ ༥

མཛད་པའི་དྲང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ་ལས།   དབུ་མ་སྣང་བ་ལས་ནི་ངོ་ཧེ་གཟིགས་མ་དང་། ཡོད་མེད་སྐྱེ་འགོག་དང་། མུ་བཞི་སྐྱེ་འགོག་དང་། གཅིག་དང་དུ་བྲལ་ཡང་གསུངས་ལ། རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཀྱང་གསུངས་ཏེ།[1] ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།།

གཞུང་འདིར་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་པ་ཇི་ལྟར་བཀོད་པའི་ཚུལ།

དེ་ལ་ཐོག་མར་སློབ་དཔོན་གྱིས་སེམས་ཙམ་པ་ལ་སོགས་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྨྲ་བའི་དབུ་མ་པ་རྣམས་ལ་ཀླན་ཀ་ཇི་ལྟར་འཕངས་པ་དང་། དེ་དག་གི་དམ་བཅའ་དང་། དེ་ལྟར་ཡིན་པའི་རྒྱུ་མཚན་རྣམས་བསྟན་པར་མཛད།

དེ་ཡང་སེམས་ཙམ་པ་གཙོ་བོར་གྱུར་པའི་དངོས་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱིས་དབུ་མ་པས་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་དེ་རིགས་པ་དང་ལུང་གང་གི་སྒོ་ནས་སྒྲུབ་མི་ནུས་པར་བཤད་དེ།   དབུ་མ་སྣང་བར་"ལུང་ངམ་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་གྲང་ན། རེ་ཞིག་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ།།"[2] ཞེས་སོགས་དང་"ཡང་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ།   འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་མངོན་སུམ་གྱིས་ནི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་དབེན་པར་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ།   དེའི་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།"[3]   ཞེས་སོགས་གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་

---

1 དྲང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ། ཤོག ༡༨༥ ལྷ་ཁ་མཐོ་སློབ་དཔར་མ། ༡༩༩༧

2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༣ བ

3 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༨ ན

ཡིན་ན་མིག་གི་མངོན་སུམ་དུ་འགྱུར་བའི་དངོས་པོ་སྔ་གཅིག་ཀྱང་མེད་པར་འདོད་དགོས་ཀྱང་། དེ་ལྟར་མངོན་སུམ་གྱི་ཡུལ་དུ་གྱུར་པས་ཆོས་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཞེས་ཟེར་ཅིང་། གོང་དུ་བཤད་ཟིན་པ་ལྟར་སྐྱོན་ཀའི་གྲངས་བརྒྱད་བཅུ་ལྷག་ཙམ་ཞིག་བཀོད་དེ་བསྟན་པ་ལྟར་རོ།།

ལུང་གི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་སྐྱོན་ཀ།

དེ་ཡང་སྐྱོན་ཀ་རྣམས་ཅུང་ཟད་སྤྲོས་ཏེ་བཤད་ན། ཐོག་མར་སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབུ་མ་པ་ལ་ལུང་གིས་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་སྐྱོན་ཀ་གསུམ་འཕངས་པར་གསུངས་ཏེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ལུང་གི་སྒོ་ནས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པར་བཤད་པ་དེ་ཡང་། སུས་ཀྱང་ཁས་མི་ལེན་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་ཡིན་ལ། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཅེས་པའི་ཚིག་ཙམ་གྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ཚིག་ཙམ་ནི་བརྗོད་བྱའི་དོན་ལ་བསླུ་བ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་དོན་སྒྲུབ་པར་མི་རུང་ངོ་། །ཚིག་ནི་སྨྲ་བ་པོའི་བརྗོད་འདོད་ཙམ་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་པ་ཡིན་གྱི་ཞེན་པའི་བརྗོད་བྱའི་དངོས་པོ་དང་མ་འབྲེལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གཞན་ཡང་། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཅེས་པའི་བཀའི་ཚིག་དེ་བརྗོད་བྱ་དང་འབྲེལ་དུ་ཆུག་ན་ཡང་ཕལ་པ་རྣམས་ཀྱིས་གཏན་ལ་དབབ་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྨྲ་བ་ཁྲིད་ཀྱིས་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ལུགས་ཁས་ལེན་པ་དག་ལ་ཡང་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བའི་ཚིག་ནི་ཅུང་ཟད་

ཀྱང་བསྟན་པར་མི་ནུས་ཏེ། དེ་ལྟར་སྟོན་པའི་ཚིག་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་འཇེར་ཏོ་[1]ཞེས་སོགས་གསུངས་སོ།།

ཡང་ཤེར་ཕྱིན་གྱི་མདོ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་གྲུབ་པར་གསུངས་པ་རྣམས་དགོངས་གཞི་ཅན་ཡིན་གྱི། ངེས་དོན་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟར་གསུངས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་རྣམ་པ་གསུམ་ལ་དགོངས་ནས་གསུངས་པའི་ཕྱིར། དགོངས་འགྲེལ་ལས། "དོན་དམ་ཡང་དག་འཕགས། ངས་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་རྣམ་པ་གསུམ་པོ་ལྟ་སྟེ། མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དང་། སྐྱེ་བ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དང་། དོན་དམ་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ལ་དགོངས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའོ།།"[2] ཞེས་བསྟན་ཏོ། །ཞེས་ངོ་བོ་ཉིད་རྣམ་པ་གསུམ་ལ་དགོངས་ནས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གསུངས་པ་ཡིན་གྱི། སྒྲ་ཇི་བཞིན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། སུམ་ཅུ་པ་ལས་ཀྱང་།

ངོ་བོ་ཉིད་ནི་རྣམ་གསུམ་གྱིས།། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་རྣམ་གསུམ་ལ།།
དགོངས་ནས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི།། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་བསྟན་པ་ཡིན།།[3]

ཞེས་སོགས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གསུངས་པ་རྣམས་དྲང་དོན་དུ་ཞལ་གྱི་བཞེས་ཤིང་། ངེས་དོན་དུ་དྲང་དུ་མི་ནུས་པའི་སྐྱོན་ཀ་འཕངས་སོ།།

1 གཟིགས་དཔུ་མ་སྣང་བ…། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༣ བ་ནས་གཟིགས།
2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༨
3 སུམ་ཅུ་པ། སྡེ་བསྟན། སེམས་ཙམ། ཤི། ཤོག ༣ བ

ལྐུང་སྐྱ་རོལ་པའི་རྡོ་རྗེས་གྲུབ་མཐའ་ལས། "ཡུམ་གྱི་མདོ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པར་གསུངས་པ་རྣམས་སྒྲ་ཇི་བཞིན་པར་བཟུང་ན་མཚན་ཉིད་གསུམ་ཀ་ལ་བཀུར་བ་འདེབས་པར་འགྱུར་རོ། །གཟུགས་ལ་སོགས་པ་མེད་ན་ངོ་བོ་དང་ཁྱད་པར་དུ་འདོགས་པའི་གཞི་མེད་པར་འགྱུར་ལ། དེ་ལྟར་ན་གདགས་གཞི་མེད་པའི་མིང་གི་འདོགས་པ་ཡང་མེད་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་དང་། དེ་ལྟར་གཞན་དབང་དང་ཀུན་བཏགས་གཉིས་ལ་བཀུར་བ་བཏབ་པས་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ཡོངས་གྲུབ་ལ་ཡང་བཀུར་བ་བཏབ་པར་འགྱུར་རོ། །རྟེན་ཆོས་ཅན་གཞི་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།" ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།།[1]

ཡང་རིགས་པའི་རྗེས་འབྲང་གི་སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཤེར་ཕྱིན་གྱི་མདོ་ལས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གསུངས་པ་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་ནུས་པར་མི་འདོད་དེ། གང་གསུངས་པ་དེ་དག་དགོངས་པ་ཅན་དྲང་བའི་དོན་ཡིན་པར་འདོད་དེ། གཉིས་སྣང་གི་ཤེས་པས་གཟུང་འཛིན་རྫས་གཞན་དུ་སྣང་བ་ལྟར་དུ་མ་གྲུབ་པ་ལ་དགོངས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་ཞེས་དབུ་མ་པ་ལ་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ཁས་ལེན་དུ་མི་ནུས་པའི་སྐྱོན་ཀ་འཕངས་པར་བྱེད་དོ།།

1 ལྐུང་སྐྱ་གྲུབ་མཐའ། ཤོག ༡༡༩ ཀྲུང་གོ་བོད་ཀྱི་ཤེས་རིག་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༨༩

རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ།

རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་མི་ནུས་པར་བཤད་པ་ལ། སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ན་རེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ལུང་གི་ཙམ་མ་ཟད་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་ཏེ། མངོན་སུམ་དང་རྗེས་དཔག་དེ་བཞིན་འབྲས་རང་མ་དམིགས་པའི་རྟགས་གང་གི་སྒོ་ནས་ཀྱང་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་སོ། །ཞེས་བཤད་དོ།།

མངོན་སུམ་གྱིས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ།

དེ་ལ་མངོན་སུམ་གྱིས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་ཏེ། ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སོ་སྐྱེའི་མངོན་སུམ་གྱིས་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། སོ་སྐྱེའི་མངོན་སུམ་གྱི་སྣང་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ལ། ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་ན་དེ་མེད་པས་འདིའོ་སྙམ་པའི་ཤེས་པ་སྐྱེད་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གལ་ཏེ་ཤེས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ན་ནི་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བས་དེ་ངོ་བོ་དང་བཅས་པར་འགྱུར་ལ། དེ་ལྟར་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་དམ་བཅས་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །རྣལ་འབྱོར་མངོན་སུམ་གྱིས་ཀྱང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་པར་འདོད་དོ།།

རྗེས་དཔག་གིས་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ།

རྗེས་སུ་དཔག་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་ཏེ། དེ་ལྟར་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའི་རྟགས་ཆོས་དོན་གསུམ་གྲུབ་དགོས་པ་ལས་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ཁྱེད་ཀྱིས་དེ་སྒྲུབ་པའི་རྟགས་ཡང་དག་དོན་དམ་པར་མེད་པར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ཞེས་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་གྲུབ་ན་རྗེས་དཔག་གི་རྟེན་དུ་གྱུར་པའི་རྟགས་ཡང་དག་ཀྱང་མེད་པར་འདོད་པར་བཞེད་ཅིང་། དེ་ལྟར་མེད་ན་དེ་སྒྲུབ་པའི་རྗེས་དཔག་ཚད་མ་ཡང་མེད་པར་ཁས་བླངས་དགོས་པར་བཞེད་དོ།།

རང་བཞིན་དང་འབྲས་བུའི་རྟགས་ཀྱིས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ།

ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རང་བཞིན་དང་འབྲས་རྟགས་ཡང་དག་གིས་ཀྱང་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པར་འདོད་དེ། དེ་གཉིས་ནི་དངོས་པོ་སྒྲུབ་པའི་རྟགས་ཡང་དག་ཡིན་ལ། ཆོས་ཐམས་ཅད་དབེན་པར་འདོད་ན། དེས་དེ་སྒྲུབ་པར་ག་ལ་ནུས་ཏེ། འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིག་ལ་ནི་ཆོས་རྣམས་སྐྱེ་བྱ་སྐྱེ་བྱེད་ཀྱི་ངོ་བོར་གནས་དགོས་པ་ལས། དབེན་པར་འདོད་པས་དེ་མི་སྲིད་ལ། རང་བཞིན་གྱིས་དེ་བས་མི་ནུས་ཏེ། རང་གི་ངོ་བོ་མེད་པས་རང་བཞིན་ཅན་ཞིག་ཡོད་པར་འདོད་མི་ནུས་པས། དེས་ན་འབྲས་རང་གི་གཏན་ཚིགས་གང་གིས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པར་འདོད་དོ།།

མ་དམིགས་པའི་རྟགས་ཀྱིས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ།

མ་དམིགས་པས་ཀྱང་གྲུབ་པར་མི་ནུས་ཏེ། དཔེར་ན་བུམ་པ་ཚད་མས་མ་དམིགས་པའི་ས་ཕྱོགས་ན། བུམ་པ་མེད་པར་སྒྲུབ་པ་ལ་སྣང་རུང་མ་དམིགས་པའི་རྟགས་བཀོད་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བུམ་པ་སྣང་རུང་ཡིན་པ་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། བུམ་པ་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཞེས་སོགས་ཀླན་ཀ་རྣམས་བཀོད་པར་བྱེད་དོ།།

རྒྱུ་མ་དམིགས་པའི་རྟགས་ཀྱིས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ།

དེ་བཞིན་དུ་རྒྱུ་མ་དམིགས་པའི་རྟགས་ཀྱིས་ཀྱང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་ཏེ། དེ་སྒྲུབ་པ་ལ་དཔེར་ན། མེ་མེད་མཚན་མོའི་རྒྱ་མཚོར་དུ་བ་མེད་པར་སྒྲུབ་པ་ལ་མེ་རྟགས་སུ་བཀོད་དགོས་ཀྱང་། ཁྱེད་ཀྱི་ལུགས་ལྟར་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དངོས་པོར་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རྟགས་བཀོད་མི་ནུས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་རྟགས་དེས་ཆོས་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པའང་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

དེས་ན་དངོས་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱིས་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་རམ་རང་ངོས་ནས་སམ་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་ཡོད་དགོས་ཀྱིས། དོན་དམ་པར་མེད་ན་རི་བོང་གི་རྭ་བཞིན་དུ་མེད་པར་འདོད་དགོས་པར་བཤད་དོ།།

ཡང་ཕྱོགས་སྔའི་རིགས་པ་གཞན་ནི། ཕྱི་རོལ་དབང་ཕྱུག་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབང་ཕྱུག་འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱེད་པོ་ཁས་བླངས་པ་རྣམས་བཀག་པར་ཁོ་བོ་ཅག་དང་མཚུངས་

ཀྱང་། དབང་ཕྱུག་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཆོས་རྣམས་རང་རང་གི་རྒྱུ་ལས་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར། རང་གི་རྒྱུ་ལས་སྐྱེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དངོས་པོར་གྲུབ་པས་དེ་དོན་དམ་པར་མེད་པར་འདོད་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །

ཡང་གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པའི་དཔེས་ཆོས་རྣམས་བདག་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པར་འདོད་པ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། མདོ་སྡེ་པ་ལ་སོགས་པས་གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དངོས་པོར་འདོད་ལ། སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ནི་སེམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཙམ་དུ་འདོད་པས་དེ་དག་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་འདོད་པ་ཁོ་ནའོ། །དེས་ན་གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པའི་དཔེ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཁྱེད་ཀྱི་འདོད་པ་དེ་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་སོ། །ཡང་གལ་ཏེ་བདག་མེད་ཉེ་ཚེ་བ་ཕྱི་རོལ་གྲངས་ཅན་པས་འདོད་པའི་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་འགོག་པར་འདོད་ན་ནི་དེ་ཁོ་བོ་ཅག་དང་འདྲ་བས་སྒྲུབ་མི་དགོས་ཏེ། བསྒྲུབས་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ། ཞེས་སོགས་ཀྱི་ཀླན་ཀ་རྣམས་འཕངས་པར་མཛད་དོ། །

ཡང་གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པར་མི་

འདོད་ན་དེ་དག་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན་གང་དོན་དམ་པར་མེད་པ་དེ་དག་ནི་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མི་སྐྱེ་བར་འདོད་དགོས་སོ། །མོ་གཤམ་གྱི་བུ་དང་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་མེད་པ་ཉིད་དུ་མཚུངས་པ་ཡིན་ཕྱིན་ཆད་གཟུགས་སོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་སྣང་བ་དེ་བཞིན་དུ་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་མི་སྣང་སྙམ། སྣང་རིགས་པ་ཁོ་ནའོ། །ཞེས་རིགས་པའི་ཕུལ་མཚམས་མཛད་པ་འདིས་སེམས་ཙམ་པས་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཆོས་རྣམས་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པ་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་གསལ་བ་ཉིད་དོ། །

ཡང་གཞན་སྐྱེ་མི་འདོད་པ་ལ་ཀླུན་ཀ་འཕངས་པ་ནི“འདི་ལྟར་རང་ལས་མ་ཡིན། གཉིས་ཀ་ལས་མ་ཡིན། རྒྱུ་ཞིག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན། རྒྱུ་མེད་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན། རྒྱུ་རྟག་པར་འདོད་པ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་མི་སྐྱེའོ། །ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་རིགས་ན། རྒྱུ་གཞན་མི་རྟག་པར་འདོད་པ་མ་ཞིག་པ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་གོ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ན་གང་གི་ཕྱིར་དེ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་ཡང་། འདི་ལ་ནི་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ།”[1] ཞེས་གསུངས་པ་ལས་གོ་ནུས་ཤིང་། “གཞན་སྐྱེ་དེ་ཡང་གང་གི་མཇུག་ཐོགས་སུ་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བ་དེ་ཉིད་གཞན་ཞེས་བྱའོ།།”[2] ཞེས་རྒྱུ་ཞིག་པའི་སྐད་ཅིག་གཉིས་པར་འབྲས་བུ་འབྱུང་ཞིང་། འབྲས་བུ་གྲུབ་ཙམ་ཉིད་ནས་རྒྱུ་དགག་པས་དེ་གཉིས་དུས་མཉམ་པའང་མ་ཡིན་ལ། སྲང་མདའི་མཐོན་དམན་བཞིན་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། “སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་ཀྱིས་འབྲས་བུ་ཡོད་པའི་དུས་ན་རྒྱུ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཚེ་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་གྱུར་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་རྒྱུ་འགག་པར་འགྱུར་ཏེ། སྲང་མདའི་མཐོན་དམན་བཞིན་པས་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་ག་ལ་འགྱུར།”[3] ཡང་སློབ་དཔོན་སྐལ་ལྡན་གྱིས་དོན་དམ་པར་གཞན་སྐྱེ་མེད་པར་སྒྲུབ་པའི་དོན་དུ་གཞན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་རྟགས་བཀོད་པ་ཡང་མ་ངེས་པ་ཡིན་ཏེ། དོན་དམ་པར་གཞན་ཉིད་དང་སྐྱེད་བྱེད་རྒྱུ་གཉིས་ལ་འགལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཞེས་

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། དཔེ་བསྡུར། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༧ ན

2 དབུ་མ་སྣང་བ། དཔེ་བསྡུར། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༧ ན

3 དབུ་མ་སྣང་བ། དཔེ་བསྡུར། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༣༧ བ

འབྲས་བུ་གྲུབ་པ་དང་རྒྱུ་དགག་པར་འདོད་ཀྱང་རྒྱུ་འབྲས་དུས་མཉམ་པ་ནི་མིན་པར་འདོད་ཅིང་། གཞན་སྐྱེ་མི་འདོད་པའི་བཞེད་པ་ཟད་ལྡན་མིན་པར་འདོད་དོ།།

ཡང་སློབ་དཔོན་ཡེ་ཤེས་སྙིང་པོས་བདེན་གཉིས་རྣམ་འབྱེད་ལས།

དུ་མས་གཅིག་གི་དངོས་མི་སྐྱེ།།
དུ་མས་དུ་མ་བྱེད་མ་ཡིན།།
གཅིག་གིས་དུ་མའི་དངོས་མི་བྱེད།།
གཅིག་གིས་གཅིག་བྱེད་པར་ཡང་མིན།།[1]

ཞེས་བཤད་པ་དེ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། རྒྱུ་གཅིག་པོ་ནས་འབྲས་བུ་གཅིག་པོ་ན་སྐྱེ་བ་མི་རིགས་ཀྱང་། རྒྱུ་གཅིག་གིས་འབྲས་བུ་དུ་མ་སྐྱེ་བ་དང་། རྒྱུ་དུ་མས་འབྲས་བུ་དུ་མ་སྐྱེ་བ་དང་། རྒྱུ་དུ་མ་ལས་འབྲས་བུ་གཅིག་སྐྱེ་བ་ལ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད་དེ། མར་མེ་ལ་སོགས་པ་རང་གི་ངོ་བོ་དུ་མ་ཅན་ལས་འབྲས་བུ་རང་གི་ངོ་བོ་དུ་མ་ཅན་སྐྱེ་བ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

གལ་ཏེ་རྒྱུ་ཡོད་པ་ཞིག་སྐྱེ་བར་མི་འདོད་ན་དབུ་མ་པ་ཁྱེད་ལ་རྒོལ་སྔ་ཕྱི་གཉིས་ཀ་ལ་གྲུབ་པའི་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་མེད་པར་འགྱུར་ལ། གཉིས་ཀ་ལ་གྲུབ་པའི་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་ཡོད་ན་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་དམ་བཅས་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་ཞིང་། དེས་ན་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་ཞིག་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་དགོས་པར་འགྱུར། འབྲས་བུ་མེད་པ་ཞིག་སྐྱེ་བར་འདོད་པ་ལ་གནོད་པ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ། འབྲས་བུ་མེད་པ་ཞིག་སྐྱེ་ན་རི་བོང་གི་རྭ་ཡང་སྐྱེ་བར་འདོད་དགོས་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་སྐྱེ་བའི་རྒྱུ་མེད་

1 བདེན་གཉིས་རྣམ་འབྱེད། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༠ ན

པའི་ཕྱིར་མི་སྐྱེ་བ་ཡིན་གྱི། མེད་པའི་དབང་གིས་མི་སྐྱེ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། འོན་ཀྱང་གྲངས་ཅན་པ་ལྟར་རྒྱུ་དུས་སུ་མངོན་པར་མི་གསལ་བའི་ཚུལ་གྱིས་ཡོད་པའི་འབྲས་བུ་ཞིག་སྐྱེ་བ་ནི་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་མི་འདོད་དོ། །ཞེས་སོ།།

ཡང་ཕྱོགས་སྔ་མ་རྣམས་ཀྱིས་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དང་། དོན་དམ་པར་གྲུབ་པ་གཉིས་ལ་འགལ་བ་མེད་པར་འདོད་ལ། ནམ་མཁའི་པདྨ་ལ་སོགས་པ་ནི་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པའང་མ་ཡིན་ལ། དངོས་པོ་སྐྱེ་བ་དང་བཅས་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་ཤིང་། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའང་ཡིན་ནོ། །གལ་ཏེ་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་མ་གྲུབ་ན་ནི་དེ་དག་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ངོ་བོ་དང་བཅས་པར་མ་གྲུབ་ཏེ། མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལྟར་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་དང་བཅས་པ་མ་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ཞེས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པར་བཞེད་དོ།།

ཆོས་རྣམས་བདེན་པའི་གཅིག་དང་དུ་མ་གང་རུང་དང་བྲལ་བར་འདོད་པ་ལ་ཀླན་ཀ།

ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པར་སྒྲུབ་པ་ལ།
བདག་དང་གཞན་སྨྲས་དངོས་འདི་དག།
ཡང་དག་དུ་ན་གཅིག་པུ་དང་།
དུ་མའི་རང་བཞིན་བྲལ་བའི་ཕྱིར།།

རང་བཞིན་མེད་དེ་གཟུགས་བརྙན་བཞིན།།[1]

ཞེས་ཆོས་རྣམས་བདེན་པར་མེད་དེ། བདེན་པའི་གཅིག་དང་དུ་མ་གང་རུང་དུ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར། དཔེར་ན་གཟུགས་བརྙན་བཞིན་ཞེས་རྒྱུ་མཚན་དྲངས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱེད་ལ་ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཏེ། གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་དངོས་པོ་ནི་འོ་ཅག་ཙམ་དུ་མ་ཡིན་པ་གཞན་སུས་ཀྱང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར། ཞེས་ཆོས་རྣམས་དོན་དམ་པར་མེད་པར་རིགས་པས་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པའི་རྟོད་པ་རྣམས་བཀོད་དོ།།

ཆོས་ཐམས་ཅད་བདེན་མེད་དུ་འདོད་པ་ལ་ཧ་ཅང་ཐལ་བ་འཕངས་པ།

སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ན་རེ། གལ་ཏེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ཆོས་གཞན་བཞིན་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ན། དེ་རྫུན་པ་ཡིན་པས་རྣལ་འབྱོར་བ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཡང་སྤོང་བར་འགྱུར་ལ། དེ་ལྟར་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་མེད། རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ཡང་མེད། དེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པ་ཡང་མེད། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཡང་མེད་པར་འགྱུར་ཞིང་། རྣམ་གཞག་ཐམས་ཅད་ཞིག་པར་འགྱུར་རོ། །ཞེས་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པར་བཤད་ཅིང་། གལ་ཏེ་མ་གྲུབ་ན་གཏན་མེད་དུ་འགྱུར་ཅིང་། རྣམ་གཞག་ཐམས་ཅད་ཞིག་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སོགས་དང་། །ཡང་དབུ་མ་པ་ཁྱེད་ཀྱིས་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ངོ་བོར་ཁས་བླངས་པས་སངས་རྒྱས་རྣམས་

---

1 དབུ་མ་རྒྱན། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༥༣ ན

ཀུང་ཕྱིན་ཙི་ལོག་དང་ལྡན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེས་ན་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དོན་དམ་པར་མེད་པར་གཟིགས་པའི་ཕྱིར་ཞེས་ཏ་ཙང་ཐལ་བ་འཕངས་སོ།།

མངོན་སུམ་ཚད་མ། རྗེས་དཔག་ཚད་མ་དང་ལུང་ཚད་མས་གནོད་པ་འཇུག་ཚུལ།

ཡང་ཁྱེད་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་དམ་བཅས་པ་འདི་མངོན་སུམ་དང་རྗེས་དཔག་དང་ལུང་ཚད་མས་གནོད་པར་འགྱུར་ཏེ། གཟུགས་སོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཡུལ་དུས་རང་བཞིན་མ་འདྲེས་པར་གསལ་བར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རང་གི་ངོ་བོ་དང་བཅས་པ་མངོན་སུམ་ཉིད་ཡིན་པས་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་མེད་པ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དེ་བཞིན་དུ་བའི་རྟགས་ལས་མེ་ལ་སོགས་པ་རྟུང་ཟད་ཕྱོག་ཏུ་འགྱུར་ཡང་འཁྲུལ་པ་མེད་པར་ངོ་བོ་དང་བཅས་པ་རྗེས་དཔག་ཚད་མས་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་རྗེས་དཔག་ཚད་མས་ཀུང་གནོད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པ་ལ་ཡུལ་གྱི་སྒོ་ནས་སྐལ་དོན་དུ་སོང་བ་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་འགྱུར་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་གྱི་ལྷའི་གྲོང་ཁྱེར་ཡང་ཡིད་ཆེས་ཀྱི་ལུང་ལས་བསྒྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ། གང་སྟོན་པ་པོ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རང་ཉིད་ཀྱི་དེ་ཡོད་པར་མངོན་སུམ་དུ་གཟིགས་ཤིང་། གདུལ་བྱ་ལ་བསྟན་པ་ཡིན་གྱི། དེ་ལྟར་མེད་ན་བསྟན་དུའང་མི་རུང་ལ། ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལྟར་ཡིན་ན་ནི་གཟིགས་པའང་མེད་ལ་བསྟན་པའང་མི་འཐད་དོ།། དེས་ན་མངོན་སུམ་དང་རྗེས་དཔག་ལུང་ཚད་མ་གསུམ་ཀས་ཁྱེད་ཀྱི་དམ་བཅའ་ལ་གནོད་པ་འཇུག་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སོ།།

ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་ཕྱོགས་དང་རྣམ་བྱང་གི་ཕྱོགས་ལ་བཀུར་བ་བཏབ་པར་འགྱུར་ཚུལ།

ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་གྲུབ་པར་བཤད་ན། ལས་དགེ་མི་དགེ་བྱས་པ་ལས་འབྲས་བུ་ཡིད་དུ་འོང་མི་འོང་སྨིན་དགོས་པར་གསུངས་པ་དེ་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར་ཏེ། ཤིན་ཏུ་མེད་པའི་ཕྱིར། རུས་སྦལ་གྱི་སྤུ་མེད་པ་དེ་ཉིད་ལས་གོས་བྱས་པར་བསྟན་པ་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་བཞིན་ནོ། །དེས་ན་ལས་འབྲས་ལ་བཀུར་བ་བཏབ་པར་འགྱུར་ཞིང་། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་ཕྱོགས་ལ་བཀུར་བ་བཏབ་པར་འགྱུར་རོ།། དེ་བཞིན་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མདོ་ལས་འཕགས་པའི་སྐྱེ་བོ་ལ་སོགས་པས་ལམ་བསྒོམ་པ་ན་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་གོ་འཕང་མངོན་དུ་བྱས་པར་གསུངས་པའང་དོན་མེད་པར་འགྱུར་ཏེ། རྟོག་པ་དང་། རྟོགས་པར་བྱ་བ་དང་། རྟོགས་པར་བྱེད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནི་རྟའི་རྭ་བ་ལས་བྱས་པའི་ཀ་བ་བཙུགས་པའི་ཁང་བཟང་ཤིན་ཏུ་ཡངས་པ་ལ་རི་བོང་གི་རྭའི་ཐེམ་སྐས་བྱས་ཏེ། མོ་གཤམ་གྱི་བུས་འཛེགས་པ་དང་མཚུངས་པས། རྣམ་བྱང་གི་ཕྱོགས་ལ་བཀུར་བ་བཏབ་པར་འགྱུར་རོ། །དེས་ན་བདེན་པ་བཞི་འང་མི་འཐད་པར་འགྱུར་རོ།།

གྲགས་པའི་གནོད་པ་འབྱུང་ཚུལ།

གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པར་འདོད་ན་ནི། དེ་ལ་འཇིག་རྟེན་ན་གྲགས་པའི་གནོད་པ་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ། ས་བོན་དང་མྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་བསྐྱེད་པར་

བྱ་བ་དང་། སྒྲིབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གནས་པ་གནག་རྫིའི་ཚུང་མ་ཡན་ཆད་ལའང་གྲགས་པས། ཁྱེད་ཀྱི་དམ་བཅའ་ལ་གྲགས་པའི་གནོད་པ་འཇུག་པ་ཉིད་དོ།།

ཆོས་མངོན་པ་དང་འགལ་ཚུལ།

ཡང་གལ་ཏེ་ཁྱེད་ཀྱི་ལྟར་ཆོས་རྣམས་སྐྱེ་མེད་དུ་སྨྲ་ན། ཆོས་མངོན་པ་ལས།

བྱེད་རྒྱུ་ལྷན་ཅིག་འབྱུང་བ་དང་།། སྐལ་མཉམ་མཚུངས་པར་ལྡན་པ་དང་།།
ཀུན་ཏུ་འགྲོ་དང་རྣམ་སྨིན་དང་།། རྒྱུ་ནི་རྣམ་པ་དྲུག་ཏུ་འདོད།།[1]

ཞེས་རྒྱུ་དྲུག་ཏུ་གསུངས་པ་དང་། ཡང་།

རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བ་རྒྱུ་ལྔ་ཡི།།
སེམས་དང་སེམས་བྱུང་སྐྱེ་བ་རྣམས།།
ཐ་མ་མིན་མཚུངས་དེ་མ་ཐག།[2]

ཞེས་སོགས་རྐྱེན་བཞི་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མི་འཐད་པར་འགྱུར་ལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཕུང་ཁམས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་འབྲས་ཁོ་ནའི་ངོ་བོར་གསུངས་པས་ཇི་ལྟར་ཆོས་རྣམས་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་པར་འགྱུར་ཞེས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་གྲུབ་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུངས་པ་ལས་ཀྱང་འགལ་བར་འགྱུར་ལ། ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལས་གཞན་པའི་ཆོས་མི་སྐྱེ་བ་ནི་ཁོ་བོ་ཅག་

1 ཆོས་མངོན་པ་མཛོད། མངོན་པ། ཀུ ཤོག ༥ བ

2 ཆོས་མངོན་པ་མཛོད། མངོན་པ། ཀུ ཤོག ༦ ན

ཀྱང་འདོད་པས་རྩོད་པ་མེད་ལ། དེ་ལས་གཞན་པའི་ཆོས་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་ཁས་མི་ལེན་ནོ།། ཞེས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཕུང་ཁམས་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ནང་བསྡུས་པར་བཤད་དོ།།

ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་ན་དངོས་པོར་འདོད་དགོས་ཚུལ།

ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཚད་མ་ལ་སོགས་པ་ཁས་བླངས་པ་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཁས་བླང་བར་འགྱུར་ཏེ། ཚད་མ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་མེད་པའི་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལོག་པར་བརྗོད་དགོས་ཤིང་། དེ་ལས་ལོག་པ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པས་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པར་ཁས་བླངས་པ་དེ་ཉིད་དངོས་པོར་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་རོ།།

ཀུན་རྫོབ་ཅེས་པ་གང་ཡིན་པ་ལ་དཔྱད་པ་མཛད་ཚུལ།

སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱོགས་སྔའི་སྐབས་ཀ་བཀོད་པ་ན། "གཞན་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་འདི་གང་ཡིན་པ་བརྗོད་དགོས་སོ"[1]ཞེས་སོགས་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དོན་ལ་ཕྱོགས་སྔས་དཔྱད་པ་མཛད་ཚུལ་གསུངས་ཏེ། ཕྱོགས་སྔ་ཕྱི་གཉིས་ཀྱི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་ཚུལ་ལ་དཔྱད་པ་མཛད་ཡོད། ཕྱོགས་སྔས་"འོ་ན་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ཐམས་ཅད་མེད་པའི་དོན་ཡིན་ན་ནི། རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ།"[2] །ཞེས་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཀུན་རྫོབ་ནུས་པ་དང་ལྡན་པ་ཞིག་ཡིན་ནམ་མི་ལྡན་པ་ཞིག་ཡིན་ཞེས་བརྟག་པ་མཛད་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། ས། ཤོག ༡༥༡ ན

2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། ས། ཤོག ༡༥༡ ན

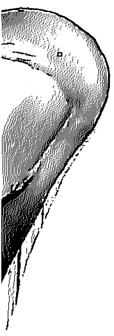
ཅིང་། གལ་ཏེ་ཀུན་རྫོབ་མེད་པའི་ངོ་བོར་སླ་ན་ནི་མེད་པའི་ཕྱིར་ནུས་པ་དང་ལྡན་པ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པར་འདོད་ན་ནི་ནུས་པ་དང་བཅས་པ་ཡིན་པས་གཅིག་ལ་ནུས་མི་ནུས་ཇི་ལྟར་ལྡན་པར་འགྱུར་ཏེ་མི་རིགས་སོ། །ཞེས་དང་།

ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་མི་རྟག་པ་ཡིན་པར་བཤད་དམ། དེ་ལྟར་ན་ནི་

མི་རྟག་པ་ཞེས་པ་དེ་རྟག་པ་མེད་པ་ཙམ་ཞིག་ལ་འཇོག་གམ། མི་རྟག་པ་ལས་གཞན་ཞིག་ལ་འཇོག་ཅེས་སོགས་ཀྱིས་རྩོད་དོ།།

ཡང་ཁྱེད་ཀྱིས་གལ་ཏེ་འཇིག་རྟེན་ན་གྲགས་པ་ལ་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བརྗོད་ན་ནི། ཐོག་མར་དེ་ལྟར་འདོད་པའི་འཇིག་རྟེན་དེ་གང་ཡིན་པར་ཤེས་དགོས། གལ་ཏེ་བསྟན་བཅོས་མཛད་པ་པོ་ལ་སོགས་པའི་མཁས་པར་བརྗོད་པ་རྣམས་ལ་འཇིག་རྟེན་ཞེས་བརྗོད་དམ། ཡང་ན་དེ་ལས་གཞན་པའི་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པ་རྣམས་ལ་བརྗོད་པ་ཡིན། དང་པོ་ལྟར་ན་ནི་དངོས་པོའི་རང་བཞིན་མི་འདྲ་བ་དུ་མར་འགྱུར་ཏེ། བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་དངོས་པོའི་རང་བཞིན་དུ་མར་སྒྲོ་འདོགས་པའི་ཕྱིར། གཉིས་པ་ལྟར་ན་ནི་བདག་མེད་ལ་སོགས་པའི་དོན་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པ་ལ་མ་གྲགས་པས་ཁས་བླངས་པར་དཀའ།

ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་པ་སྒྱུ་མའི་དོན་ཡིན་མིན་དང་། ཀུན་རྫོབ་སྒྲ་ཙམ་ཞིག་ཡིན་མིན་དང་། ཚད་མའམ་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་ཞེས་བརྟག་པ་མཛད།



ཡང་གལ་ཏེ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཁས་མི་ལེན་ན་ནི་བདེན་པ་གཉིས་སུ་དབྱེར་མི་རུང་བར་འདོད་དེ། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་ལ་སྒྲོ་བཏགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཀུན་རྫོབ་བདེན་པ་དང་། སྒྲོ་མ་བཏགས་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ཞེས་གཉིས་སུ་དབྱེར་རུང་ཡང་། གལ་ཏེ་དེ་ལྟར་ཁས་མ་བླངས་ན་ནི་བདེན་པ་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་

དབྱེ་འབྱེད་མི་རུང་བར་འགྱུར་ཏེ། རྣམ་པར་གཞག་པའི་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སོགས་ཀྱི་ལྷན་ཀ་བཀོད་ཡོད།

མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་འདོད་པའི་ཚུལ།

དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདིའི་སྤྱི་ཆོལ་གོང་དུ་བརྗོད་ཟིན་པ་ལྟར་སེམས་ཙམ་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་སྨྲ་བ་རྣམས་ཡིན་ལ། དེ་དག་གིས་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་གྲུབ་པར་འདོད་ཅིང་། དབུ་མ་པས་འདོད་པའི་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་གྲུབ་པའི་རྣམ་གཞག་ལ་དགག་པ་མཛད་དེ། དབུ་མ་སྣང་བ་ལས། "ཁྱེད་ཀྱིས་དོན་དམ་པར་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཐེག་པ་ནི་གཅིག་ཁོ་ནར་ཟད་དེ། ལྷག་མ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་དང་ལུང་དང་འགལ་ཏེ།"[1] ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་ལས་ཤེས་ནུས།

འོ་ན་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་འདོད་པའི་རྒྱུ་མཚན་ཅི་ཡོད་ཅེ་ན། ཡོད་དེ་སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་ཁམས་སྣ་ཚོགས་པ་ཡིན་པས་སོ། །ཞེས་རྒྱུ་མཚན་བྲངས་བར་སྣང་སྟེ། དབུ་མ་སྣང་བ་ལས། "ལ་ལ་ནི་འཁོར་བའི་བདེ་བ་ཙམ་འདོད་ཅིང་བསོད་ནམས་དག་བྱེད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཞན་དག་ནི་སྲིད་པའི་བདེ་བ་འདོད་པ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་གཞན་དག་ནི་སྲིད་པའི་བདེ་བ་འདོད་པ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་ཅིང་བདག་ཉིད་རྣམ་པར་ཐར་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བརྩོན་པར་བྱེད་དོ། །གཞན་དག་ནི་ཕ་

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྡུས། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༥༦ ན

རོལ་པོ་ཁོ་ན་གྲོལ་བར་བྱ་བར་སེམས་ཤིང་ཛོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་གོ་འཕང་གི་རྒྱུ་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དག་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་དམིགས་སོ།”[1]།ཞེས་སོགས་སེམས་ཅན་ཁམས་དང་མོས་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་དབང་གིས་དེ་བགྲོད་པའི་ལམ་ཡང་སྣ་ཚོགས་པར་རྣམ་པར་གཞག་གོ །དེ་བཞིན་དུ་ཁམས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་མདོ་ལ་[2] སོགས་པ་ལས་ཀྱང་སེམས་ཅན་རྣམས་ཁམས་སྣ་ཚོགས་པར་བསྟན་པས་སོ། །ཞེས་རྒྱུ་མཚན་དྲངས་པར་མཛད་དོ།།

ཡང་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་རྣམ་པར་གཞག་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་དུ་མདོའི་ལུང་ཁྲངས་སུ་མཛད་དེ་བཤད་པ་ལ། འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས“གསུམ་པོ་འདི་དག་ནི་ངེས་པར་འབྱིན་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོའོ”[3] ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ཐེག་པ་སྣ་ཚོགས་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ལ་བཤད་དོ།།

འཕགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་པདྨ་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པའི་མདོ་སྡེ་རྣམས་སུ་ཐེག་པ་གཅིག་ཁོ་ནར་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་དྲངས་བའི་དོན་དགོངས་གཞི་ཅན་ཁོ་ནར་འདོད་དོ། ཡང་འཕགས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལས།[4]

འདི་ན་སྡོད་མིན་སེམས་ཅན་འགའ་ཡང་མེད།།

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༥༦ བ

2 ཁམས་མང་པོའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཤ། ཤོག ༣༤༧ ནས་ ༣༠༡ བར་གཟིགས།

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ཤོག ༡༣༧ ན ༡

4 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ད། ཤོག ༣༣ བ

འགྲོ་བ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་འགྱུར།།

ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དགོངས་པ་ཅན་ཏེ། དེ་ནི་དུས་དེ་ན་ཉེ་བའི་འགྲོ་བ་རྣམས་ལས་དགོངས་ནས་གསུངས་པ་ཡིན་གྱི་ཐམས་ཅད་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། ཞེས་འདོད་དོ། །ཡང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ཅན་དུ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དགོངས་ནས་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དགོངས་གཞི་ཅན་ཡིན་པར་འདོད་དོ།།

དེ་ལྟར་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དང་། དོན་དམ་པར་ཐེག་པ་གསུམ་ཡོད་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་རང་སྡེ་དངོས་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱིས་དབུ་མ་པ་ལ་ཀླན་ཀ་ཇི་ལྟར་འཕངས་པ་རྣམས་གསལ་བར་བཀོད་པར་མཛད་དོ།།

བཀོད་པའི་ཀླན་ཀ་རྣམས་ཇི་ལྟར་བཀག་པའི་ཚུལ།

དེ་ལྟར་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱོགས་སྔའི་ཀླན་ཀ་རྣམས་རྒྱས་པར་བཀོད་ནས། “དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལ་ལན་གདབ་པར་བྱ་སྟེ་”[1] ཞེས་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཕྱོགས་སྔའི་འདོད་པ་རྣམས་ལུང་རིགས་ཀྱི་བཀག་པར་མཛད།

དེ་ཡང་གཞུང་ཉིད་ལས། “དེ་ལ་རེ་ཞིག་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ་ས། ཤོག ༡༥༧ བ

སོགས་པ་སླུས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་བརྗོད་པར་བྱའོ།"[1] །ཞེས་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཕྱོགས་སྔའི་ཀླུན་ཀ་ལ་ལན་བཏབ་པར་མཛད་དེ། སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་པའི་ཁས་བླངས་ལ་དོགས་པའི་ཁོང་གཉིས་ཀྱིས་བརྟག་པ་མཛད། སུས་ཀྱང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་པའི་དོན་ལུང་རྣམས་མཐའ་གཅིག་ཏུ་བླང་བྱ་མིན་པར་འདོད་དམ། ཡང་ན་བླང་བར་བྱ་འོས་པ་ཉིད་ཀྱང་ཡིན། དང་པོ་ལྟར་ན་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། སུ་ཡང་ལུང་གང་ལ་ཡང་མི་བརྟེན་པར་འགྱུར་རོ། །སྐྱེ་བོ་ཁ་ཅིག་ང་རྒྱལ་དང་། དོན་གཉེར་མེད་པ་དང་། སྡིག་པའི་གྲོགས་པོས་ཡོངས་སུ་བསླུས་པ་དང་། རྨོངས་པ་དང་། དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང་མ་ཕྲད་པ་དང་། དད་པ་དང་བྲལ་བ་དང་། རྣམ་འབྱེད་ཀྱི་ཤེས་རབ་དང་བྲལ་བའི་དབང་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ལ་མི་བརྟེན་པ་ནི་ཡོད་དུ་ཆུག་ཀྱང་། ཆོས་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་དང་ལྡན་པའི་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མི་བརྟེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ནི་ཚོང་པ་ངན་པའམ་ཡང་ན་དངོས་པོའི་རིན་ཐང་མི་ཤེས་པའི་ཚོང་པས་རིན་ཐང་དང་བྲལ་བའི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེའི་ཁྱད་ཆོས་ལ་སོགས་པ་མི་ཤེས་པའི་དབང་གི་མི་ལེན་པ་ཡོད་ཀྱང་། ལེགས་པར་ཤེས་པའི་ཚོང་པ་བཟང་པོས་དེ་མི་ལེན་པ་ནི་མ་ཡིན་པ་བཞིན་ནོ། །ཡང་གལ་ཏེ།

དགེ་སློང་དག་གམ་མཁས་རྣམས་ཀྱིས།།
བསྲེགས་བཅད་བདར་བའི་གསེར་བཞིན་དུ།།
ལེགས་པར་བརྟགས་ལ་ང་ཡི་བཀའ།།

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཤོག ༡༥༧ བ

ཟླང་བར་བྱ་ཡི་གུས་ཕྱིར་མིན།།[1]

ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་ཁྱེད་ཀྱི་གསུང་རབ་རྣམས་ལ་ལེགས་པར་བརྟགས་ཏེ་ཁས་ལེན་པར་བྱའོ་ཞེ་ན་ནི། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཤེར་ཕྱིན་གྱི་མདོ་སྡེ་རིན་པོ་ཆེ་སོགས་སུ་དབུ་མའི་ལམ་གསལ་བར་མཛད་པ་དེ་ཉིད་ཅིའི་ཕྱིར་མི་བརྟེན། འོ་ན་རང་ཉིད་ཀྱིས་དེ་བརྟེན་པའི་བློའི་ནུས་པ་བྲལ་བ་ཡིན་ན་ནི། ས་དང་པོ་ཐོབ་པའི་འཕགས་པའི་སྐྱེ་བོ་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱིས་མདོ་སྡེ་ལྷནྐར་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པར་ལུང་བསྟན་པའི་སྐྱེ་བུ་དམ་པ་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་རིགས་པའི་ཚོགས་དུ་མས་གསལ་བར་མཛད་པ་ཉིད་ཅིའི་ཕྱིར་ཁས་མི་ལེན། དེས་ན་སློབ་དཔོན་གྱི་ཚིག་བོར་ན་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཡང་སྤྱངས་པར་འགྱུར་ལ། ལུང་གིས་ཟིན་པའི་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་བསྟན་པའི་ལམ་བོར་ནས་འཕགས་པ་མ་ཡིན་པའི་གང་ཟག་ཕལ་པས་བསྟན་པའི་ལམ་བརྟེན་པ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་ལན་བཏབ་པར་མཛད་དོ།།

ཡང་དབུ་མ་པ་རྣམས་ནི་སྒྲ་དང་དོན་རྣམས་ལ་དོན་དམ་པའི་འབྲེལ་བ་འགའ་ཡང་མི་འདོད་ལ། དོན་དང་སྐབས་ལ་སོགས་པས་མ་འཁྲུལ་པའི་སྐྱེ་བོས་བརྗོད་པའི་སྒྲ་རྣམས་བརྗོད་འདོད་ཀྱི་དོན་དང་འབྲེལ་བ་མེད་པའང་མི་འདོད་དེ། དེ་མིན་ན་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་ཆད་པར་འགྱུར་བའི་སྐྱོན་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །ཚུལ་གསུམ་གྱི་བརྟག་པས་དག་ཅིང་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དུ་དགེ་བ་ནི་མི་བསླུ་བའི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བརྟེན་དུ་རུང་བ་ཁོ་ན་ཡིན་པས། དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་བསྟན་པར་ནུས་པའི་ཚིག་མེད་པར་སྨྲ་བ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའོ། །ཁོ་བོ་ཅག་ནི་བཅོམ་ལྡན་

---

1 དཔལ་སྤུངས་པོ་ཆེའི་རྒྱུད། སྡེ་བཀའ། རྒྱུད་འབུམ། ཤོག ༣༧༨

འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ཁས་མི་ལེན་པའི་སྐྱེ་བོ་མུ་སྟེགས་ཅན་རྣམས་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཚད་མར་སྒྲུབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་དེས་སྟོན་པའི་བཀའ་མེད་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་སྨྲ་བ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ངེས་པའི་དོན་གྱི་མདོ་སྡེ་ལ་བརྟེན་ལ། དྲང་བའི་དོན་ལ་བརྟེན་མི་རུང་བར་གསུངས་པའི་ཕྱིར།

ཡང་དགོངས་འགྲེལ་ལས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་རྣམ་པ་གསུམ་ལ་དགོངས་ནས་ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གསུངས་ཀྱིས། སྒྲ་ཇི་བཞིན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་དང་སུམ་ཅུ་པ་ལས་ཀྱང་།[1]

ངོ་བོ་ཉིད་མེད་རྣམ་གསུམ་གྱིས།། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་རྣམ་གསུམ་ལ།།
དགོངས་ནས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི།། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་བསྟན་པ་ཡིན།།

ཞེས་ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་པ་རྣམས་དྲང་བའི་དོན་ཉིད་དོ་ཞེས་ཟེར་བ་འདིའི་ཉེས་པ་མེད་དེ། འདི་ནི་ཀུན་རྫོབ་ལ་བཀུར་བ་འདེབས་པ་རྣམས་དང་། ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཡང་ཡོད་པར་སྒྲོ་བཏགས་ཤིང་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་ལྟར་དུ་འཛིན་ཞིང་སྒྲོ་འདོགས་དང་བཀུར་འདེབས་ཀྱི་མཐའ་གཉིས་སུ་ལྷུང་བའི་སྐྱེ་བོ་བློ་དམན་པ་རྣམས་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་མཐའ་གཉིས་དང་བྲལ་བའི་དབུ་མའི་ལམ་ལ་འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་རྣམ་པ་གསུམ་གྱི་དགོངས་པ་བསྟན་པ་ཡིན་ལ། དབུ་མ་པ་རྣམས་ཀྱང་ངོ་བོ་ཉིད་རྣམ་པ་གསུམ་གྱི་རྣམ་བཞག་ཁས་ལེན་ཏེ། དེ་ལྟར་མི་ལེན་ན་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་ཇི་ལྟར་སྤོང་བར་འགྱུར། ཞེས་སོགས་ལན་བཏབ་བོ།།

1 སྡེ་བསྟན། སེམས་ཙམ། ཤི། ཤོག ༣ བ

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས། “མི་སྐྱེ་བ་ནི་བདེན་ནོ། །སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་གཞན་ནི་མ་བདེན་ཏེ། བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་ཅན་ནོ།”[1] །ཞེས་དང་། “སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་མདོ་གཞན་དག་ལས་དགོངས་པ་གཞན་གྱི་ངེས་པའི་དོན་དུ་བཤད་དོ་ཞེས་བརྗོད་པར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་ནི་བདག་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ཡང་ངེས་པའི་དོན་དུ་འགྱུར་རོ།།”[2] ཞེས་སོགས་དང་། ཡང་འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན་ལས་ཀྱང་།[3] “ངེས་པའི་དོན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པའོ་”ཞེས་གསུངས་ལ། སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས་ངེས་པའི་དོན་ཏོ་ཞེས་བསྟན་ཏེ། དེ་ལྟ་བས་ན་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་དོན་དམ་པའོ་ཞེས་བྱ་བར་ངེས་སོ། །ཞེས་ལང་གཤེགས་ལ་སོགས་པ་མདོ་སྡེ་མང་པོ་ཁུངས་སུ་དྲངས་ཏེ་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ་རྣམས་རྒྱས་པར་བསལ་བར་མཛད་དོ།།

རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་མི་ནུས་པར་བསྟན་པའི་ཀླན་ཀའི་ལན།

མངོན་སུམ་གྱིས་བསྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཚུལ་ལ་ལན།

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ཤོག ༦ བ

2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། སཿ། ཤོག ༡༥༩ བ

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ག ཤོག ༣༩༡ བ

རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་རྩོད་པའི་ལན་བཏབ་པ་ལ། "དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་མངོན་སུམ་གྱིས་ནི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་དབེན་པར་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་"[1]ཞེས་བྱ་བ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཅི་སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་རྟོགས་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་ཞེས་སམ། ཡང་ན་ཁྱེད་ལྟ་བུའི་རབ་རིབ་ཀྱིས་སྒྲིབ་པའི་སྐྱེས་བུའི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡིན། ཕྱོགས་དང་པོ་ལྟར་ན་མི་རིགས་ཏེ། སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མངོན་སུམ་གྱིས་དེ་རྟོགས་པར་མི་ནུས་སོ་ཞེས་པའི་ཚད་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ཚུལ་རོལ་མཐོང་བ་ཁྱེད་ཀྱིས་སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱུད་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་འཇུག་པ་ནི་རིག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །དེས་ན་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པ་མེད་དོ་ཞེས་བརྗོད་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

མངོན་སུམ་གྱི་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་སྨྲ་བ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཚུར་མཐོང་རྣམས་ཀྱི་མངོན་སུམ་ནི་རབ་རིབ་ཅན་གྱི་མངོན་སུམ་བཞིན་པས་ཡུལ་གྱི་གནས་ལུགས་མངོན་སུམ་དུ་མཐོང་བ་མེད་ལ། དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ན་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་དེ་ལྟ་བུའི་དངོས་པོའི་ཡུལ་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་གིས་དོན་དམ་པར་སྒྲུབ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡང་གཟིགས་པ་མེད་དོ། །ཞེས་སོགས་མངོན་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ༡༦༨ ན

ལུང་གིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ་རྟོགས་པར་མི་ནུས་པའི་ཉེས་པ་མེད་པར་གསུངས་སོ།།

རྗེས་དཔག་གིས་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་རྩོལ་བ་ལ་ལན།

ཡང་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་དངོས་པོ་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་མི་ནུས་ཏེ། གཞི་ཆོས་ཅན་འགའ་ཡང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། དཔེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་ཐམས་ཅད་གཞི་དང་རང་གི་ངོ་བོ་མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་སྨྲས་པའང་འབྲེལ་བ་མེད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་གིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པ་ལ་ཐལ་བ་འཕངས་པ་ཡིན་ན་ནི་དེ་མི་རིགས་པ་ཁོ་ན་ཏེ། ཁོ་བོ་ཅག་གིས་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པས་སོ།། ཡང་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པར་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་དང་ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རྗེས་དཔག་གི་ཐ་སྙད་མི་འཇུག་གོ་ཞེས་ཐལ་བ་སྒྲུབ་པ་ཡིན་ན་ནི། ཁོ་བོ་ཅག་གིས་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་དོན་དམ་པར་འཇུག་པར་མི་འདོད་པས་རྒྱུ་མཚན་གང་གིས་དེ་མེད་པར་ཐལ་བར་སྒྲུབ་ནུས། ཞེས་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཀླན་ཀ་ལ་ལན་འདེབས་པར་མཛད་དོ།།

འབྲས་བུ་དང་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཀྱིས་བསྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཚུལ་ལ་ལན།

ཡང་འབྲས་བུ་དང་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་དག་གིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་གཉིས་དངོས་པོ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་དེ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། གཏན་ཚིགས་གཉིས་པོ་འདི་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པའི་དངོས་པོ་སྒྲུབ་པའི་གཏན་ཚིགས་ཡིན་པ་ནི་གང་དུའང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། རང་བཞིན་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ཡང་། ཐ་སྙད་དུ་འདི་གཉིས་གཞང་ཡོད་པ་ཡིན་པས་ཇི་ལྟར་མི་སྲིད་པ་ཡིན་ཏེ་སྲིད་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་སོགས་ལན་བཏབ་པར་མཛད།།

བདག་སྐྱེ་འགོག་ཚུལ།

གྲངས་ཅན་པ་ལ་སོགས་པས་མངོན་པར་མི་གསལ་བའི་ཚུལ་གྱིས་འབྲས་བུ་རྒྱུའི་བདག་ཉིད་དུ་གནས་པར་འདོད་ཅིང་། དངོས་པོ་རྣམས་བདག་ཉིད་ལས་སྐྱེ་བར་འདོད་པ་དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུར་མི་ཐད་པའི་ཕྱིར། ཅི་དངོས་པོས་བདག་ཉིད་སྐྱེད་པ་ཡིན་ན། མ་གྲུབ་པ་ཞིག་སྐྱེད་པར་བྱེད་དམ། གྲུབ་པ་ཞིག་སྐྱེད་པར་བྱེད། ཕྱོགས་དང་པོ་ལྟར་ན་ནི་དེ་མེད་པའི་ཕྱིར་གང་ཞིག་གང་གི་སྐྱེད་པ་པོར་འགྱུར། མོ་གཤམ་གྱི་བུ་བཞིན་དུ་རང་གི་ངོ་བོ་མ་གྲུབ་པས་རང་གི་

ངོ་བོ་སྐྱེད་པ་མི་ཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཉིས་པ་ལྟར་ན་གྲུབ་པ་ཞིག་སླར་སྐྱེ་བ་ལ་དགོས་པ་ལྷག་པོ་གང་ཡང་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སོགས་ལན་བཏབ་པར་མཛད་དོ།།

གཞན་སྐྱེ་འགོག་ཚུལ།

དངོས་པོ་རྣམས་གཞན་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་བ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལས་སྐྱེ་ན་དེ་སྐྱེ་བའི་རྒྱུ་རྟག་པའམ་མི་རྟག་པ་གང་ཡང་རུང་བ་ལས་སྐྱེ་བར་འདོད་དགོས་ཤིང་། རྟག་པ་ལས་སྐྱེ་བ་ནི་མི་རིགས་ཏེ། དེས་རིམ་དང་ཅིག་ཅར་གང་གི་ཀྱང་དོན་བྱེད་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

མི་རྟག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། མི་རྟག་པ་ནི་སྐད་ཅིག་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར། འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དང་ད་ལྟར་གྱི་གནས་སྐབས་གང་གིས་སྐྱེ་བར་འགྱུར། དེ་ལ་རེ་ཞིག་འདས་པ་ལས་དངོས་པོ་རྣམས་སྐྱེ་བ་འདོད་དོ་ཞེ་ན་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདས་པ་ནི་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ལས་སྐྱེ་བ་ཁས་ལེན་ན་ནི་རྒྱུ་མེད་པ་ལས་དངོས་པོ་སྐྱེ་བ་ཁས་ལེན་པའི་ཉེས་པར་འགྱུར་རོ།།

མ་འོངས་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་འདས་པ་བཞིན་དུ་མེད་པའི་ཕྱིར། དེ་ནི་ད་ལྟ་རང་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོར་མེད་པའི་ཕྱིར་ནམ་མཁའི་པདྨ་བཞིན་པས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའོ།།

ད་ལྟར་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་བ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལས་སྐྱེ་ན་ཡང་ན་དུས་མཉམ་པ་ཞིག་ཡིན་དགོས་ལ། དེ་ལས་གཞན་དུས་ཐ་དད་པ་ཞིག་ཏུ་སྐྱེ་བར་ཁས་ལེན་དགོས་སོ།

།གལ་ཏེ་དུས་མཉམ་པ་ལས་སྐྱེ་བར་འདོད་ན་ནི་མི་རིགས་ཏེ། རྒྱུ་གང་ཞིག་འབྲས་བུ་གྲུབ་པའི་སྔོན་རོལ་ནས་ཡོད་པ་ཞིག་ཡིན་དགོས་ཀྱི། དུས་མཉམ་དུ་བྱུང་བ་ཡིན་ན་ནི་རྒྱུའི་ངོ་བོ་གྲུབ་ཙམ་ནས་འབྲས་བུའི་ངོ་བོ་ཡང་གྲུབ་དགོས་པས་རྒྱུས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་དོན་བྱེད་པ་འགའ་ཡང་མེད་པར་འགྱུར་བས་རྒྱུ་འབྲས་ཀྱི་ཐ་སྙད་ཀུང་འདོགས་པར་མི་ནུས་སོ་ཞེས་སོ། །དུས་ཐ་དད་པ་ལས་ཀྱང་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། སྔར་བཤད་པའི་ཉེས་པ་དག་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འདི་ཡོད་ན་འདི་འབྱུང་ཞེས་རྒྱུ་འབྲས་བསྟན་པར་མཛད་པས་ཏེ། རྣམ་པར་རྟོག་པ་གསུམ་བོར་ནས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཞི་པ་ཞལ་གྱིས་བཞེས་སོ་ཞེས། འབྲས་བུ་རྒྱུའི་སྔོན་རོལ་ན་ཡོད་པར་འགྱུར་བའམ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ལྷན་ཅིག་ཡོད་པའམ། སྐད་ཅིག་མ་གཞན་གྱིས་ཆོད་པའམ། མ་ཆོད་པར་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་བཞི་འབྱུང་བ་ལས། དང་པོ་གསུམ་བོར་ནས་བཞི་པ་མ་ཆོད་པར་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ཡོད་པ་ཞལ་གྱིས་བཞེས་[1]ཞེས་བཤད་པ་དེ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ཡོད་ན་འདི་འབྱུང་ཞེས་པ་འདི་ནི་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་རྒྱུ་ལ་རག་ལས་པ་ཙམ་བསྟན་པ་ཡིན་གྱི། འབྲས་བུ་ཡོད་པའི་དུས་ན་རྒྱུ་མེད་ཅེས་བསྟན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེས་ན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གསུམ་མི་སྲིད་པ་དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཞི་པའང་དོན་དམ་པར་མི་སྲིད་དོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟར་ན་དོན་དམ་པར་གཞན་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༡༩༧ ན ནས་རྒྱས་པར་གསུངས་པར་གཟིགས་པར་འཚལ།

དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་ནི་སྒྱུ་མ་བྱུང་བ་བཞིན་པས་མ་བརྟགས་པ་བཙུན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་གསུངས་ཏེ། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསྟོད་པ་ལས།

རེ་ཞིག་ཞིག་པའི་རྒྱུ་ལས་ཀྱང་།། འབྲས་བུ་བྱུང་བ་མི་རིགས་པ།།
མ་ཞིག་པ་ལས་རྨི་ལམ་དང་།། འདྲ་བའི་སྐྱེ་བ་ཁྱོད་ཀྱིས་བཞེད།།
ཞིག་དང་མ་ཞིག་པ་དག་གིས།། རྒྱུ་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་དག།
སྒྱུ་མ་འབྱུང་བ་བཞིན་དུ་འབྱུང་།། ཀུན་ཀྱང་དེ་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།།[1]
ཞེས་པ་ལྟར་རོ།།

དེ་ལྟར་སློབ་དཔོན་གྱིས་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་རང་དང་གཞན་དང་གཉིས་ཀ་རྒྱུ་མེད་ལས་སྐྱེ་བར་མི་རིགས་ཤིང་། དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་མཐོང་བ་འདི་ཐམས་ཅད་ནི་སྒྱུ་མ་བཞིན་ཡིན་པར་གསུངས་སོ།།

དེ་ལྟར་རྩ་བ་ཤེས་རབ་ལས་ཀྱང་།[2]

བདག་ལས་མ་ཡིན་གཞན་ལས་མིན།། གཉིས་ལས་མ་ཡིན་རྒྱུ་མེད་མིན།།
དངོས་པོ་གང་དང་གང་ལ་ཡང་།། སྐྱེ་བ་ནམ་ཡང་ཡོད་མ་ཡིན།

ཞེས་དང་། འཇུག་པ་ལས།[3]

དེ་ཉིད་དེ་ལས་འབྱུང་མིན་གཞན་དག་ལས་ཀྱང་ག་ལ་ཞིག།
གཉིས་ཀ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་རྒྱུ་མེད་པ་ནི་ག་ལ་ཡོད།།

---

1 སྡེ་བསྟན། བསྟོད། ཀ ཤོག ༦༩ ན
2 སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༧ ན
3 སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། འ། ༣༠༨ ན

ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་ལྟར་ཡང་ཕྱོགས་སྔ་བ་རྣམས་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་ཡེ་ཤེས་སྙིང་པོས་བདེན་གཉིས་རྣམ་འབྱེད་ལས།

དུ་མས་གཅིག་གི་དངོས་མི་སྐྱེ།། དུ་མས་དུ་མ་བྱེད་མ་ཡིན།།
གཅིག་གིས་དུ་མའི་དངོས་མི་བྱེད།། གཅིག་གིས་གཅིག་བྱེད་པར་ཡང་མིན།།[1]

ཞེས་བཤད་པ་དེ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། རྒྱུ་གཅིག་ཁོ་ནས་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་སྐྱེ་བ་མི་རིགས་ཀྱང་། རྒྱུ་གཅིག་གིས་འབྲས་བུ་དུ་མ་སྐྱེ་བ་དང་། རྒྱུ་དུ་མས་འབྲས་བུ་དུ་མ་སྐྱེ་བ་དང་། རྒྱུ་དུ་མ་ལས་འབྲས་བུ་གཅིག་སྐྱེ་བ་མཐོང་བའི་ཕྱིར། དེ་ཇི་ལྟར་སྣང་བར་ནུས་ཤེ་ན། འདི་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁོ་བོ་ཅག་ནི་འདི་མ་མཐོང་བར་སྒྲུབ་པ་མ་ཡིན་ཏེ! མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་ཚད་མར་གཟུང་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་དུ་མ་ལས་སྐྱེ་བའི་དོན་དམ་པའི་དངོས་པོ་གཅིག་ནི་གྲུབ་པ་མེད་དེ། འདི་ནི་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་སྣ་ཚོགས་ཉིད་དུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་སྣ་ཚོགས་པའི་ངོ་བོ་ཡང་གཅིག་ཉིད་དོ་ཞེས་བརྗོད་ན་ནི། ཐམས་ཅད་ཐུས་གཅིག་ཏུ་ཐལ་བའི་ཉེས་པ་འབྱུང་ངོ་། །དེས་ན་གཅིག་ལས་དུ་མ་དང་། དུ་མ་ལས་གཅིག་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་འདི་བཏང་རིགས་པ་ཁོ་ནའོ།།

ཡང་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་ངོ་བོ་གཅིག་ཁོ་ནར་ཁས་བླངས་པ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་སྐྱེ་བ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ངོ་བོ་དུ་མའི་རང་བཞིན་གྱི་འགྲོ་བ་དེའི་འབྲས་བུར་འདོད་དོ། །རང་ལུགས་ལ་ནི་དབང་ཕྱུག་རྒྱུར་ཡང་མི་འདོད་དེ། ཕ་རོལ་པོས་དེ་ནི་རྟག་པར་འདོད་པས་རྟག་པ་ནི་ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཁོ་བོ་ཅག་འདོད་པ་ཁོ་ནའོ།།

1 བདེན་གཉིས་རྣམ་འབྱེད། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༠ ན

ཡང་གལ་ཏེ་དབང་ཕྱུག་དེ་མི་རྟག་པར་རྟོག་པར་བྱེད་ན་ཡང་དེས་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་སྐྱེ་བར་མི་རིགས་ཏེ། སྐད་ཅིག་མའི་རང་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེའི་སྐད་ཅིག་གཉིས་པར་ཆད་པར་འགྱུར་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པར་རང་དང་རིགས་མཐུན་པ་མཚམས་སྦྱོར་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་མི་རྟག་པའི་ངོ་བོའི་དབང་ཕྱུག་འགྲོ་བའི་རྒྱུར་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དེ་ཡང་མི་རིགས་པ་ཉིད་དོ་[1]ཞེས་སོགས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ།།

ཡང་གལ་ཏེ་མིག་ལ་སོགས་པ་ལས་འབྲས་བུ་གཅིག་ཉིད་སྐྱེ་བར་ཁས་ལེན་ན། ཐམས་ཅད་ལོང་བ་དང་འོན་པ་ལ་སོགས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་བཟློག་པར་དཀའ་སྟེ། མིག་ལ་སོགས་པའི་དབང་པོས་རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ན་རང་གི་རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་གཞན་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་ཐམས་ཅད་ལོང་བ་དང་འོན་པ་ལ་སོགས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར། གཅིག་ལས་གཅིག་ཁོ་ན་མི་སྐྱེ་ཡང་། མིག་དང་། རྣ་བ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དག་ལས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བ་མཐོང་བས་གཅིག་ལས་དུ་མ་སྐྱེ་བ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འདི་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུའི་ཐ་དད་པས་འབྲས་བུ་ཐ་དད་པ་མི་བྱེད་པར་འགྱུར་ཏེ། བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་སྣམ་བུ་ལ་སོགས་པ་ལས་རང་བཞིན་ཐ་དད་པ་འདི་ཡང་རྒྱུ་ཐ་དད་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་གྱིས། རྒྱུའི་རང་བཞིན་ལས་གཞན་པའི་འབྲས་བུ་ཞིག་སྐྱེ་ན་ནི་དངོས་པོ་རྣམས་རྒྱུ་མེད་པར་འགྱུར་བའི་ཉེས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སོགས་གསུངས་སོ།།

ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པར་སྒྲུབ་པ་ལ་ཕྱོགས་སྔས་།

བདག་དང་གཞན་སླས་དངོས་འདི་དག།

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༧༠ ནས་གཟིགས།

ཡང་དག་ཏུ་ནི་གཅིག་པ་དང་།།
དུ་མའི་རང་བཞིན་བྲལ་བའི་ཕྱིར།།
རང་བཞིན་མེད་དེ་གཟུགས་བརྙན་བཞིན།།[1]

ཞེས་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཆོས་རྣམས་བདེན་པར་མེད་པར་སྒྲུབ་མི་ནུས་ཏེ། ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པ་མ་གྲུབ་པས། གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་ བྲལ་བའི་དངོས་པོ་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་ཟེར་བ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་རྟག་པ་དང་གཅིག་པོའི་ངོ་བོ་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་ཁས་བླངས་པ་རྣམས་གཅིག་གི་ངོ་བོ་དང་བྲལ་བར་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་ཏེ། གཅིག་པ་ལ་ནི་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་གནས་སྐབས་དང་ཁྱད་པར་མེད་པར་དུས་ཕྱིས་ཀྱང་སྐྱེད་བྱེད་ཉིད་དུ་མི་རུང་བས། སྔ་ཕྱི་སོ་སོ་བར་འགྱུར་བས་གཅིག་པའི་ངོ་བོ་དང་བྲལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཞེས་སོགས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ།།

ཆོས་ཐམས་ཅད་བདེན་མེད་དུ་འདོད་པ་ལ་ཧ་ཅང་ཐལ་བ་འཕང་བ་ལ་ལན།

ཡང་གལ་ཏེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ཆོས་གཞན་བཞིན་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཡང་ཆོས་གཞན་བཞིན་དུ་སྤོང་བར་འགྱུར་ལ། དེ་ལྟར་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་མེད། རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ཡང་མེད། དེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པའང་མེད། སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱིས་དེ་རྟོགས་པའང་མེད། རྣམ་པ་

1 དབུ་མ་རྒྱན། རྩ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༥༣ ན

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱང་མེད་པར་འགྱུར་ཞིང་། རྣམ་གཞག་ཐམས་ཅད་ཞིག་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱེད་ཀྱི་ཐལ་བ་འདི་གལ་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པས་དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་སྤོང་བའི་བློ་ནས་དེ་སྤོང་བར་བརྗོད་ན་ནི། དགའ་མགུར་བརྗོད་རིགས་ལ། གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དོར་བར་བརྗོད་ན་ནི་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་དེ། བསྒྲུབ་བྱ་ལས་བཟློག་པའི་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་དག་གིས་སྒྱུ་མ་མཁན་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་བརྟན་པ་ཉིད་དུ་ཐུགས་སུ་ཆུད་ཀྱང་། གཞན་ལ་ཕན་པའི་ཐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདོར་བ་མ་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས།

དཔེར་ན་སྒྱུ་མའི་མཁན་པོ་འགའ།། སྒྱུ་མ་ཐར་པར་བྱ་ཕྱིར་བརྩོན།།
གང་ཕྱིར་དཔེ་འདི་སྔོན་ཤེས་པས།། སྒྱུ་མ་ལ་ནི་འདི་མི་ཆགས།།
དེ་བཞིན་སྲིད་གསུམ་སྒྱུ་མ་ལྟར།། རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་པས་མཁྱེན།།
འགྲོ་བའི་དོན་དུ་གོ་བགོས་ཏེ།། འགྲོ་བ་སྔ་ནས་མཁྱེན་པ་ཡིན།།[1]

ཞེས་རིགས་པ་དང་ལུང་གིས་ལན་རྒྱས་པར་བསྟན་ཏོ།།

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྒྱུར། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༣ ན ནས་གཟིགས།

མངོན་སུམ་ཚད་མ་དང་། རྗེས་དཔག་ཚད་མ་དང་ལུང་ཚད་མས་གནོད་པ་འཇུག་པར་བཤད་པ་ལ་ལན།

ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་གྲུབ་པར་དམ་བཅས་པ་ལ་མངོན་སུམ་གྱི་གནོད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡུལ་དང་དུས་ལ་སོགས་པ་ཐ་དད་པར་སྣང་བ་ཙམ་ལ་ནི་མངོན་སུམ་དུ་འདོད་མི་རིགས་ཏེ། རྨི་ལམ་ནའང་དེ་ལྟར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཁོ་བོ་ཅག་ནི་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་ཡིན་པས། སྔར་བཤད་པ་ལྟར་དོན་དམ་པའི་དངོས་པོ་ནི་མངོན་སུམ་དུ་གྲུབ་པ་མེད་དོ།།

ཡང་གལ་ཏེ་རབ་རིབ་ཅན་ལ་སོགས་པའི་འཁྲུལ་པའི་མངོན་སུམ་ལ་སྣང་བའི་ཕྱིར་མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་བརྗོད་ན་ནི། དེའི་དམིགས་པ་ཟླ་བ་གཉིས་ལ་སོགས་པ་ལ་གནོད་པ་ནི་གང་ཡང་མེད་དོ། །ཡང་མ་འཁྲུལ་པའི་མངོན་སུམ་སྣང་བའི་ཕྱིར་ཞེས་འདོད་ན་ནི་ཚུར་མཐོང་གི་མངོན་སུམ་ལ་དེ་ཁོ་ན་སྣང་བ་མེད་པ་སྟེ། དེ་ལ་མ་འཁྲུལ་པ་མེད་པས་གནོད་པ་འཇུག་པ་མ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་།

མིག་དང་རྣ་བ་སྣ་ཡང་ཚད་མ་མིན།།
ལྕེ་དང་ལུས་དང་སེམས་ཀྱང་ཚད་མ་མིན།།
གལ་ཏེ་དབང་པོ་འདི་དག་ཚད་ཡིན་ན།།
འཕགས་པའི་ལམ་གྱིས་སུ་ལ་ཅི་ཞིག་བྱ།།
འདི་ལྟར་དབང་པོ་འདི་དག་ཚད་མིན་ཏེ།།
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་བེམ་པོ་ལུང་མ་བསྟན།།

དེ་ཕྱིར་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ལམ་འདོད་གང་།།
དེས་ནི་འཕགས་པའི་ལམ་གྱིས་བྱ་བ་བྱོས།། [1]

ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མངོན་སུམ་ཉིད་ཁོ་ན་དོན་དམ་པ་མ་འཁྲུལ་བ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་སོགས་རྒྱས་པར་བསྟན་པར་མཛད་དོ།།

རྗེས་སུ་དཔག་པས་གནོད་པར་སླ་བ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། རྗེས་དཔག་ལས་དོན་དམ་པའི་དངོས་པོ་གང་ཡང་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་པས་སོ། །དུ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ལས་མེ་ལ་སོགས་པ་ངེས་པ་དེ་ཡང་དོན་དམ་པའི་མེ་ལ་སོགས་པ་ངེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། རྨི་ལམ་ན་ངེས་པ་བཞིན་དུ་དོན་དམ་པའི་མེ་ལ་སོགས་པ་འགའ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། འོན་ཀྱང་ཀུན་རྫོབ་པའི་དངོས་པོ་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་པ་ཡོད་ལ། དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་ནི་མེད་པ་ཁོ་ནའོ།།

ཡང་ལུང་ལས་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་གྱི་གྲོང་ཁྱེར་ཡོད་པར་གསུངས་པ་དག་དང་འགལ་བས་ལུང་ཚད་མས་གནོད་དོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། ཐ་སྙད་དུ་ཐམས་ཅད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཁོ་བོ་ཅག་ནི་དངོས་པོ་རྣམས་རྫུས་སྤྲུལ་གྱི་སྤྲུ་བཞིན་དུ་གཏན་མེད་པའི་ངོ་བོར་ཁས་བླངས་པ་མིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་འདི་དག་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་དང་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་བཞིན་དུ་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[2] བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ཐམས་

1 ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ད། ཤོག ༣༦ བ ༥
དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༨ ན ནས་གཟིགས།
2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༣༥༣ ན

ཅན་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའོ་ཞེས་དམ་བཅའ་བར་མི་བྱའོ། འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྣང་བ་དང་མི་སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་དང་རྨི་ལམ་ལྟ་བུར་བསྟན་པར་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་ལ། མདོ་འདིའི་དོན་ཡང་སྣང་བ་ཞེས་པའི་དོན་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡོད་པ་དང་། མི་སྣང་བ་ནི་དོན་དམ་པ་པོ་ནའོ་ཞེས་སོགས་མངོན་སུམ་དང་རྗེས་དཔག་དང་ལུང་ཚད་མས་གནོད་པར་འདོད་པ་ལ་ལན་རྒྱས་པར་བསྟན་ཏོ།།

ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་ཕྱོགས་དང་རྣམ་བྱང་གི་ཕྱོགས་ལ་བཀུར་བ་བཏབ་པར་འགྱུར་བའི་སྐྱོན་ཀ་ལ་ལན།

ཕྱོགས་སྔས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ་ཡིན་ན། ལས་དགེ་མི་དགེ་བྱས་པ་ལས་འབྲས་བུ་ཡིད་དུ་འོང་བ་དང་མི་འོང་བ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་ཏེ་གཏན་ནས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཇིག་རྟེན་གྱིས་བརྟགས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱ་བར་གསུངས་ཀྱིས། དོན་དམ་པར་ནི་བྱང་ཆུབ་པར་བྱ་བ་གང་ཡང་མེད་པར་བསྟན་ལ། དོན་དམ་པར་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་ལ་སོགས་པ་འདི་ཐམས་ཅད་བཀག་པའི་ཕྱིར་ལ་ཐ་སྙད་དུ་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པས་ཁས་བླངས་ལ་གནོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།[1]

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༥ བ ནས་གཟིགས།

བདེན་པ་བཞི་ལ་བཀུར་བ་བཏབ་པའི་ཉེས་པའང་མེད་དེ། འཕགས་པ་ཚངས་པས་ཞུས་པ་ལས།[1] "སྡུག་བསྔལ་བ་དང་། ཀུན་འབྱུང་བ་དང་། འགོག་པ་དང་། ལམ་ནི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཚངས་པ་འོན་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་སྐྱེ་བ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་པ་ཡིན་ནོ།།" ཞེས་སོགས་གསུངས་ཤིང་། དོན་དམ་པར་སྡུག་བསྔལ་ལ་སོགས་པའི་བདེན་པ་རྣམས་མེད་ལ། ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་འཁོར་བ་ལས་ཡིད་འབྱུང་བ་དང་། གང་ཟག་གི་བདག་མེད་པ་ལ་གཟུད་པར་བྱ་བའི་དོན་ཉིད་ལ་དགོངས་ནས་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ཡིན་གྱི། བདག་མེད་གཉིས་ག་བསྟན་པའི་དབང་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒོ་ནས་ཀླན་ཀ་འགོག་པར་མཛད།[2]

གྲགས་པའི་གནོད་པ་འབྱུང་བ་ལ་ལན་བཏབ་ཚུལ།

ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པར་འདོད་ན་བསྐྱེད་བྱ་སྐྱེད་བྱེད་ཀྱི་ངོ་བོ་ནི་གནག་རྫིའི་ཆུང་མ་ཡན་ཆད་ལ་གྲགས་པས་གྲགས་པའི་གནོད་པ་འབྱུང་ངོ་ཞེ་ན་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དེ། དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་གནག་རྫིའི་ཆུང་མ་ལྟ་བུ་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པ་ལ་མ་གྲགས་པ་ཡིན་ལ། གལ་ཏེ་དེ་ལྟར་གྲགས་ན་ནི་དེ་དག་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར། ཞེས་སོགས་ཀྱིས་ཕྱོགས་སྔའི་ཀླན་ཀ་བཀག་པར་མཛད་དོ།[3]

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣ཕ བ ནས་གཟིགས།

2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣ཕ བ ནས་གཟིགས།

ཆོས་མངོན་པ་དང་འགལ་བའི་སྐྱོན་ཀ་ལ་ལན།

ཆོས་མངོན་པ་ལས་རྒྱུ་དྲུག་དང་རྐྱེན་བཞི་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པས་དེ་དང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པས་ཀྱང་གནོད་པ་འཇུག་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེར་གང་བསྟན་པ་རྣམས་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི། དོན་དམ་པ་ནི་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་དམ་པར་འགའ་ཡང་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུ་མེད་པའང་མ་ཡིན་ཏེ་ཐ་སྙད་དུ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེས་ན་ཆོས་མངོན་པ་ལས་རྒྱུ་དྲུག་དང་རྐྱེན་བཞི་ལ་སོགས་པ་གང་བསྟན་པ་དེ་ལས་འགལ་བའང་མ་ཡིན་ནོ།།

ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དོན་ལ་བརྟག་པའི་སྐྱོན་ཀའི་ལན།

ཕྱོགས་སྔ་མས་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་འདི་གང་ཡིན་པར་བརྗོད་དགོས་སོ་ཞེས་སོགས་ཀྱི་སྐྱོན་ཀ་འཕངས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་ནི་རི་བོང་རྭ་བཞིན་དུ་མེད་པའི་ངོ་བོའང་མ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་གང་ཡིན་ཅེ་ན། དངོས་པོ་ཡང་དག་པ་ངོ་བོ་ཉིད་པ་དག་ལ་ཡང་དེ་ལས་བཟློག་པའི་རྣམ་པར་སྒྲོ་འདོགས་པར་འཁྲུལ་པའི་བློ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་སྟེ། འདིའམ་འདིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀུན་ཏུ་སྒྲིབ་པ་ལྟ་བུ་བྱེད་འགེགས་པ་ལྟ་བུ་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་ལྷང་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་། [1]

---

3 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༦ ན ནས་གཟིགས།

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༧༨ བ

དངོས་རྣམས་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ།། དམ་པའི་དོན་དུ་རང་བཞིན་མེད།།
རང་བཞིན་མེད་ལ་འཁྲུལ་པ་གང་།། དེ་ནི་ཡང་དག་ཀུན་རྫོབ་འདོད།།
ཅེས་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ་ཞེས་སོ།།

དེས་ན་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་འཁྲུལ་པའི་བློ་ཡིན་ལ། འདིས་དངོས་པོའི་གཤིས་སམ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བ་ལ་སྒྲིབ་པར་བྱེད་ཅིང་། བྱིས་པ་རྣམས་ལ་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་རྣམས་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པ་ལྟ་བུར་སྣང་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ལ་གང་སྣང་བ་ནི་དངོས་པོའི་གཤིས་སམ་ཡང་དག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ལ། ཡང་རི་བོང་གི་རྭ་བཞིན་དུ་གཏན་ནས་མེད་པའི་ངོ་བོའང་མ་ཡིན་ཏེ། མ་བརྟགས་མ་དཔྱད་པའི་ཚེ་ཡོད་པའི་རྣམ་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་ངོ་བོ་ལས་འདས་པ་ཡིན་པས་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་གཉི་གའི་ངོ་བོ་ལ་བརྟེན་པའི་ཀླན་ཀ་རྣམས་མེད་པ་ཉིད་དོ།།

འདིའི་ཐད་ཀྱི་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདིས་རང་རྒྱུད་པའི་དགག་བྱ་སྟོན་པའི་གཞུང་གསལ་ཤོས་ཡིན་པ་རྗེ་རིན་པོ་ཆེས་དབུ་མ་དགོངས་པ་རབ་གསལ་ལས་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་ལས། "དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པའི་ལུགས་ཀྱི་བདེན་འཛིན་ངོས་གཟུང་བ་ལ། རང་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་ཁུངས་ཐུབ་གཞན་ལས་དགག་བྱ་ངོས་འཛིན་པ་གསལ་བར་མི་འབྱུང་ལ། དབུ་མ་སྣང་བ་ལས་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་ཚུལ་བཤད་པའི་བཟློག་ཕྱོགས་ཀྱི་ཡོད་པ་ནི་དོན་དམ་པར་རམ་བདེན་ཡོད་དུ་ཤེས་པས་དེ་ལྟར་བཤད་ན།" ཞེས་རང་རྒྱུད་པ་དང་ཐལ་འགྱུར་བའི་བདེན་འཛིན་ངོས་གཟུང་བའི་སྐབས་སུ་གསུངས་སོ།།[1]

1 དབུ་མ་དགོངས་པ་རབ་གསལ། ཤོག་ ༡༣༠ ལྷ་ཆ་པར་མ། ༡༩༨༥

ཡང་གལ་ཏེ་འཇིག་རྟེན་ན་གྲགས་པ་ལ་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བརྗོད་ན་ཐོག་མར་དེ་ལྟར་འདོད་པའི་འཇིག་རྟེན་དེ་གང་ཡིན་པར་བརྗོད་དགོས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྐབས་ཀྱང་མི་འཇུག་སྟེ། འཇིག་རྟེན་ལ་གྲགས་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀུན་རྫོབ་ཉིད་དུ་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡུལ་ཡིན་དོ་ཅོག་ཐམས་ཅད་དབང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། ཁ་ཅིག་འགའ་ཁོ་ན་ལས་མ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ལས་འབྲས་ཀྱི་རྣམ་གཞག་ལ་སོགས་པ་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་འགྱུར་རྣམས་ནི་སངས་རྒྱས་ཁོ་ནའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་པས་ཐལ་པའི་ཤེས་པས་མཐོང་བ་ནི་མེད་དོ། །བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་ཁ་ཅིག་གིས་དངོས་པོ་རྟག་པ་ལ་སོགས་པར་སྒྲོ་བཏ྄་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལོག་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་ཅེས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་དངོས་པོ་རྣམས་ངོ་བོ་མི་འདྲ་བ་དུ་མར་སྒྲོ་འདོགས་པར་བྱེད་ཀྱང་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་མི་འགྱུར་བར་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་དུ་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་གྲགས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བའི་ཉེས་པ་ཡང་མེད་པ་ཉིད་དོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་བསྟན་པར་མཛད་དོ།།[1]

བདེན་པ་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་གཞག་ཀྱང་སྒྱུ་མའི་སྐྱེ་བུ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་རྣམ་ཤེས་འཁྲུལ་པའམ་མ་འཁྲུལ་པའི་སྒོ་ནས་འཇོག་པས་འགལ་བ་མེད་པར་བསྟན་ཏོ།།[2]

---

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༩ ན ནས་གཟིགས།

2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༩ ན ནས་གཟིགས།

མ་སྐྱེས་པ་ཞེས་པའི་དོན་ལ་བརྟག་པའི་ཚུལ་ལ་ལན།

ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེས་མ་སྐྱེས་པའི་དོན་གང་ཡིན་པར་འདོད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཀླན་ཀ་ནི་མི་འཇུག་སྟེ། ཡང་དག་པའི་ཐོས་པ་དང་། བསམ་པ་དང་། བསྒོམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་དབང་གིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པ་ཁོ་ནར་ཤེས་པས་སོ།། ཡང་དག་པའི་ཤེས་པས་ནི་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་རྟོགས་པ་མེད་དོ། །དེ་ལྟར་རྟོགས་ན་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་སོ་ཞེས་པའི་མདོའི་ཚིག་རྣམས་ཀྱིས་དོན་གང་བསྟན་པར་འགྱུར། ཞེས་སོགས་དགག་པ་མཛད་དོ།།

ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཅེས་པའི་དོན་ལ་བརྟག་ཚུལ།

ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའོ་ཞེས་པའི་དོན་གང་ཡིན་པར་འདོད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས།[1] " དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་གཞན་ལ་ལྟོས་ནས་ཡོད་པ་དང་སྔ་ན་མེད་པ་ཡང་མི་འཐད་དེ། ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དག་ནི་གཅིག་ལ་རིམ་གྱིས་ཀྱང་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་འདི་དག་ནི་ཡང་དག་པར་ན་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་གཞན་ལ་རག་ལས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །ངོ་བོ་ཉིད་ནི་བྱས་པ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ་"ཞེས་གསུངས་ཤིང་། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ནི་གཞན་ལ་རག་ལས་པའམ་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ༣༣༨ ན

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་སྟེ། ལྟོས་པ་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་ཞིག་ལ་འཇོག་ལ། ངོ་བོ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུ་རྐྱེན་གྱིས་བྱས་པ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསལ་བར་མཛད་དོ།།

དེ་ལྟར་ཕྱོགས་སྔ་མས་དབུ་མ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པའི་ཁས་ལེན་དེ་ལུང་དང་རིགས་པ་གཉིས་ཀས་སྒྲུབ་མི་ནུས་པའི་ཀླན་ཀ་འཕངས་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་དེ་དག་ལུང་རིགས་གཉིས་ཀྱིས་བཀག་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབས་པར་མཛད་དོ།།

མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་སྒྲུབ་ལ་རྟོད་པའི་ལན།

སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབུ་མ་པ་ལ་ཁྱེད་ཀྱིས་“དོན་དམ་པར་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཐེག་པ་ནི་གཅིག་ཁོ་ནར་ཟད་དེ། ལྷག་མ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་དང་ལུང་དང་འགལ་ཏེ།”[1] ཞེས་སོགས་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་འདོད་པ་ལ་ཀླན་ཀ་མཛད་ནས། མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་ཁོ་ནར་ངེས་པར་འདོད་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས། “གང་ཡང་ཐེག་པ་གསུམ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར།” [2] ཞེས་སོགས་གསུངས་པའི་སྒོ་ནས་བཀག་པར་མཛད།

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ༡༥༦ ན
2 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༧ ན

སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་དང་མོས་པ་སྣ་ཚོགས་པས་གདུལ་བྱའི་རིགས་དང་བསྒྲུབ་བྱ་ཡང་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་པས་ཐེག་པ་གསུམ་ཉིད་དུ་ངེས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་མ་ངེས་པ་ཡང་གཞན་ལ་མཐའ་གཅིག་ཏུ་ཕན་པར་བསམ་པའི་སེམས་ཅན་གང་དག་ནམ་ཞིག་སྡིག་པའི་གྲོགས་དང་ཕྲད་པའི་སྒོ་ནས་གཞན་ལ་མཐའ་གཅིག་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་བར་རྣམ་པར་དགའ་བ་དག་སྣང་བ་ཡོད་ལ། ཡང་སེམས་ཅན་གང་དག་རྒྱུ་མཚན་གང་ཡང་མེད་པར་གཞན་སྡུག་བསྔལ་བར་མཐོང་བ་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་དེ་དག་ཀྱང་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ལ་སོགས་པའི་གྲོགས་བཟང་པོ་དང་ཕྲད་པའི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་གཞན་ལ་གཅིག་ཏུ་ཕན་པར་འདོད་པའང་སྣང་ལ། ཡང་དགའ་ཞིག་རང་གི་བདེ་བ་ལ་ཆགས་ཤིང་། དེ་བསྒྲུབས་པའི་ཕྱིར་གཞན་ལ་ཁྲོ་བའི་སེམས་པ་ཅན་ཡང་སྣང་ངོ་། །རང་འབའ་ཞིག་གི་དོན་ལ་ཞུགས་པ་དེ་དག་ཀྱང་གཞན་དོན་ཁོ་ན་ལ་ཞུགས་པའང་སྣང་བའི་ཕྱིར། དེ་དག་གི་མོས་པའི་བྱེ་བྲག་མ་ངེས་ལ། རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཀྱང་མ་ངེས་པ་དུ་མ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གསུམ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་མི་རུང་ངོ་།། འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལ་སོགས་པར་ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ་དེ་ཡང་དྲང་བའི་དོན་ཉིད་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སྣ་ཚོགས་དག་ཏུ་ཐེག་པ་སྣ་ཚོགས་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་བསྟན་པ་ལ་འཇུག་གི། ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་སྒོ་ཁོ་ན་ནས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་ཀྱང་གསུངས་སོ།།[1]

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༣༣༧ བ ནས་གཟིགས།

འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་ངེས་པར་གསུངས་ཏེ།[1]

ལྷ་ཡི་ཐེག་དང་ཚངས་པའི་ཐེག། དེ་བཞིན་དུ་ནི་ཉན་ཐོས་དང་།།
དེ་བཞིན་གཤེགས་དང་རང་རྒྱལ་གྱི།། ཐེག་པ་འདི་དག་ངས་བཤད་དེ།།
ཇི་སྲིད་སེམས་ནི་འབྱུང་བའི་བར།། ཐེག་པ་རྣམས་ལ་ཐུག་པ་མེད།།
སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ན།། ཐེག་པ་རྣམས་ལ་ཐུག་པ་མེད།།
སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ན།། ཐེག་པ་མེད་ཅིང་འགྲོ་བ་མེད།།
ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་ང་སྨྲ་ཏེ།། ཐེག་པ་རྣམ་བཞག་ཡོད་མ་ཡིན།།
བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡོངས་དྲང་ཕྱིར།། ཐེག་པ་ཐ་དད་ངས་བཤད་དོ།།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

དེ་བཞིན་དུ་འཕགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་པད་མ་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཐེག་པ་གཅིག་ཉིད་དུ་བསྟན་ཏེ། དེ་ཉིད་ལས།[2] “ཤཱ་རིའི་བུ། གཞན་ཡང་གང་གི་ཚེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་སྙིགས་མ་ལྔའི་དུས་སེམས་ཅན་རྣམས་དྲི་མ་མང་ཞིང་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཆུང་བར་གྱུར་པ་ན། འབྱུང་བ་དེའི་ཚེ་ཐབས་མཁས་པས་ཐེག་པ་གཅིག་པོ་ཉིད་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་བསྟན་པས་སྟོན་ཏེ།” ཞེས་དང་། ཡང་“ཤཱ་རིའི་བུ་ང་ལ་དད་པ་གྱིས་ཤིག །ང་ལ་ཡིད་ཆེས་པར་གྱིས་ཤིག། ངེས་པར་ཟུང་ཤིག ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་ནི་བརྫུན་གསུངས་པ་མི་མངའོ།།

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༧༥ ན
2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཇ། ཤོག ༡༡༣

ཤ་རིའི་བུ་ཐེག་པ་ནི་གཅིག་པོ་ནར་ཟད་དེ། འདི་ལྟ་སྟེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པའོ།།"[1] ཞེས་གསུངས་སོ།།

ཡང་དམ་པའི་ཆོས་དཀར་ལས།[2]

ཐེག་པ་གཅིག་ཏེ་གཉིས་པ་ཡོད་མ་ཡིན།།
གསུམ་པའང་ནམ་ཡང་ཡོད་མིན་འཇིག་རྟེན་ན།།
སྐྱེས་བུ་མཆོག་རྣམས་ཐབས་ཀྱི་ཐེག་པ་གང་།།
སྣ་ཚོགས་ཉེ་བར་སྟོན་པར་མཛད་མ་གཏོགས།།

ཞེས་དང་།

འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན་ལས་ཀྱང་།[3] "འཇམ་དཔལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་ཐེག་པ་གཅིག་གིས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་ཐེག་པའི་སྙིང་པོ་དང་ལྡན་པར་འགྱུར། ང་ལ་ནི་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་མེད་དོ།།" ཞེས་སོགས་དང་། འཕགས་པ་དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེའི་ང་རོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།[4] "ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ཐེག་པ་གསུམ་པོ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐབས་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་གཅིག་རྟོགས་པས་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཛ། ཤོག ༡༡༩ བ
2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཛ། ཤོག ༡༡༩ བ
3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཕ། ཤོག ༩༨ བ
4 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༣༧༠ བ

ཚུལ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ།།" ཞེས་སོགས་ལུང་དང་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་སྒྲུབ་ཅིང་། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པར་སྤྲུལ་པའི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་ཉན་ཐོས་བསྟན་པར་མཛད་པ་དེ་དག་ཀྱང་སེམས་ཅན་དམན་པ་ལ་མོས་པ་སྒྲག་པ་སྤང་བའི་ཕྱིར་དང་། ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ་ཐབས་ཉིད་བསྟན་པའི་ཆེད་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །ཞེས་སོགས་རྒྱས་པར་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་ངེས་ཤིང་། ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ་ནི་དམན་པ་ལ་མོས་པ་རྣམས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་ལ་དཀྲི་བའི་ཐབས་ཡིན་པར་གསུངས་སོ།།

མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་སྒྲུབ་དང་གཅིག་སྒྲུབ་ཀྱི་དོན་ལ་དགག་བཞག་རྒྱས་པ་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རྒྱན་གྱི་འགྲེལ་བ་དག་དང་། རྒྱལ་ཚབ་དར་མ་རིན་ཆེན་གྱིས་མཛད་པའི་ཕར་ཕྱིན་རྣམ་བཤད་སྙིང་པོ་རྒྱན་ལས་རྒྱས་པར་ཚུབ་རིགས་པ་ཉིད་དོ།།

བཀག་པའི་གྲུབ་དོན།

དེ་ལྟར་སློབ་དཔོན་གྱིས་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདིར་དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་བློ་གྲོས་ཀྱི་འཇུག་པ་ཉམས་པའི་སྐྱེ་བོ་བླུན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་པའི་མཁས་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ལུགས་བོར་ཏེ་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པའི་ལམ་གཞན་ལ་བསྟེན་པར་བྱེད་ཅིང་། དབུ་མ་པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྟན་པ་དང་། མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་འདོད་པའི་ཁས་ལེན་ལ་ཀླན་

ཀ་འཐད་པ་རྣམས་ལུང་རིགས་ཀྱིས་དགག་པ་རྒྱས་པར་མཛད། དེ་ལྟར་བཀག་པའི་གྲུབ་དོན་གྱི་ཚུལ་དུ་སློབ་དཔོན་གྱིས "དེ་ལྟ་བས་ན་གང་ངེས་པར་ལེགས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་ནི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་སྒོམ་པ་འདི་ཁོ་ནར་ཟད་པས་དེའི་ཕྱིར་དེ་དོན་དུ་གཉེར་བ་བདག་ལེགས་སུ་དགའ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ལམ་ངན་པ་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐག་བསྲིངས་ཏེ་སྤངས་ནས་དེ་ཉིད་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་རིགས་པ་དང་། ལུང་གི་སྒྲོན་མའི་ཚོགས་ཀྱིས་གསལ་རབ་ཏུ་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་དང་། སྐྱེ་བོ་མཁས་པའི་འདྲེན་པ་མ་ལུས་པས་བརྗོད་ཅིང་རྗེས་སུ་བགྲོད་པའི་ཕྱིར་གུས་པར་རྟག་ཏུ་བསྟེན་པར་བྱའོ། །དེ་བས་ན་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།།"[1] ཞེས་རང་ཉིད་ཀྱི་བཞེད་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བ་མཛད་དོ།།

གཞུང་འདི་གྲུབ་མཐའ་གང་གི་ལུགས་སུ་དཀྲལ་བ།

སློབ་དཔོན་ཞི་བ་འཚོ་ཡབ་སྲས་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པའི་གྲུབ་མཐའ་འཛིན་པ་མཁས་པ་ཀུན་བཞེད་ལ། མཁས་གྲུབ་གཉིས་ལྡན་གྱི་ལོ་ཙཱ་བ་ཡེ་ཤེས་སྡེས་སློབ་དཔོན་འདིས་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་གཞུང་ལ་བརྟེན་ནས་ཐ་སྙད་དུ་ཕྱི་རོལ་མེད་པ་དང་། དོན་དམ་པར་སེམས་རང་བཞིན་གྱིས་མ་གྲུབ་པར་སྟོན་པའི་དབུ་མའི་ཚུལ་སི་འདྲ་བ་ཞིག་མཛད་པར་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ལྟ་བའི་ཁྱད་པར་

1 དབུ་མ་སྣང་བ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༢༧༧ ན

ལས།[1] "བར་གྱི་མཁན་པོ་ཤཱནྟརཀྵིཏ་ཞེས་བྱ་བས་ཨཱ་ཙརྻ་ཛྙབྱས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་བཤད་པའི་བསྟན་བཅོས་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་མཛད་པ་ལ་བརྟེན་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་ཏུ་དེའི་ལུགས་དང་མཐུན་པར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་བསྒྲུབ་ལ། དོན་དམ་པར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་རང་བཞིན་མེད་པར་བཤད་པའི་དབུ་མའི་བསྟན་བཅོས་དབུ་མ་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ་ཞིག་མཛད་དེ། དབུ་མའི་བསྟན་བཅོས་ལུགས་ཅུང་ཟད་མི་མཐུན་པ་གཉིས་བྱུང་བས། ཨཱ་ཙརྻ་ཛྙ་བྱས་མཛད་པ་ལ་ནི་མདོ་སྡེ་པའི་དབུ་མ་ཞེས་བཏགས། ཨཱ་ཙརྻ་ཤཱནྟརཀྵིཏས་མཛད་པ་ལ་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་པའི་དབུ་མ་ཞེས་བཏགས་སོ།།" ཞེས་སློབ་དཔོན་འདིས་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་དབུ་མ་པའི་ལུགས་མཛད་པར་གསུངས། དེ་བཞིན་དུ་རྗེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་ཀྱང་སློབ་དཔོན་ཞི་བ་འཚོ་ལུགས་འདིའི་ཤིང་རྟའི་སྲོལ་འབྱེད་དུ་གསུངས་ཏེ། དྲང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ་ལས།[2] "དེས་ན་འདི་འདྲ་བའི་ལུགས་ཀྱང་རེ་རེ་ཙམ་བྱུང་ཡོད་ཀྱང་གཞུང་རྒྱས་པར་བརྩམས་ནས་ཐ་སྙད་དུ་ཕྱི་རོལ་མེད་པའི་ཚུལ་གྱི་དབུ་མའི་གྲུབ་མཐའ་ནི་སློབ་དཔོན་ཞི་བ་འཚོས་སྲོལ་ཕྱེ་བར་སློབ་དཔོན་ཡེ་ཤེས་སྡེ་བཞེད་པ་ལྟར་ལེགས་སོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ལས་ཤེས་ནུས་སོ། །དབུ་མ་རྒྱན་ལས་ཀྱང་།

ཚུལ་གཉིས་ཤིང་རྟ་བཞོན་ནས་སུ།། རིགས་པའི་སྲབ་སྐྱོགས་འཛིན་བྱེད་པ།།
དེ་དག་དེ་ཕྱིར་ཇི་བཞིན་དོན།། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་པ་ཉིད་ཐོབ།།[3]

---

1 ལྷ་བའི་ཁྱད་པར། སྡེ་བསྟན། སྣ་ཚོགས། ཇོ། ༡༢༣ བ

2 དྲང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ། ཤོག ༡༦༣ ཞྭ་ཆ་དཔར་མ། ༡༩༩༨

3 སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ཤོག ༥༦ ན

ཅེས་ཐ་སྙད་དུ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་མེད་པ་རྣམ་པར་རིག་པ་ཙམ་དང་། དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཚུལ་གཉིས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འཐོབ་པར་བཞེད་དོ། །སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤཱི་ལ་ཡང་སློབ་དཔོན་ཞི་བ་འཚོའི་ལུགས་འཛིན་པ་ཀུན་གྱིས་ཁས་བླངས་སོ།།

དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདི་ཉིད་ཀྱང་སྤྱིར་རང་རྒྱུད་པའི་གྲུབ་མཐའ་སྟོན་པའི་གཞུང་ཡིན་པ་རྗེ་རིན་པོ་ཆེས་དགག་བྱ་ངོས་འཛིན་གྱི་སྐབས་སུ་གསལ་བར་གསུངས་པ་ལས་གོ་ནུས་ལ། བྱེ་བྲག་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་དབུ་མ་པའི་གཞུང་ཡིན་པ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་དུ་གསུངས་པ་དེ་ཡང་སེམས་ཙམ་པ་རྣམས་ཀྱིས་འདོད་པ་ལྟར་སེམས་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པར་མི་བཞེད་ལ། ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་མེད་པ་རྣམ་རིག་པའི་ཚུལ་ལྟར་དཀྲལ་བ་ལས་གཞུང་འདི་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པའི་གཞུང་དུ་འདོད་པ་ལ་འགལ་བ་མི་སྣང་ངོ་།།

སེམས་ཙམ་པས་འཕགས་པ་ས་བཅུ་པ་དང་། མདོ་སྡེ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་དང་། ལང་ཀར་གཤེགས་པ་དང་། སྟུག་པོ་བཀོད་པ་ལ་སོགས་པའི་མདོ་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཙམ་དང་། ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་མེད་པ་དང་། སེམས་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པར་འདོད་པ་རྣམས་སློབ་དཔོན་གྱིས་དགོངས་པ་ཅན་དུ་གསུངས་ལ། ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཙམ་དུ་གྲུབ་པར་གསུངས་པ་དེ་ཡང་སེམས་དོན་དམ་པར་ཡོད་པར་རྣམ་པར་བཞག་པའི་ཕྱིར་མ་ཡིན་གྱི། རིམ་གྱི་དོན་

དམ་པའི་ཚུལ་གྱི་རྒྱ་མཚོ་ལ་བཟུད་པའི་ཕྱིར་བསྟན་པ་དང་། དེ་ལ་བརྟེན་ནས་བདག་མེད་ལ་གཟུད་པའི་ཕྱིར་ཡིན་ནོ་ཞེས་སོགས་གསུངས་ཤིང་། ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[1]

སེམས་ཅམ་ལ་ནི་བརྟེན་ནས་སུ།། ཕྱིར་རོལ་དོན་མི་རྟོག་གོ།
དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དམིགས་ནས་ནི།། སེམས་ཙམ་ལས་ཀྱང་བཟླ་བར་བྱ།།

ཞེས་སོགས་ཁུངས་སུ་མཛད་དེ་གསུངས་པ་ལས་གཞུང་འདི་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའི་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པའི་གཞུང་དུ་མཛད་རིགས་པར་སེམས་སོ།།

ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པའི་དགོས་པ།

སྤྱིར་གྲུབ་མཐའ་སྨྲ་བ་ཀུན་གྱིས་རང་རང་གི་ལྟ་བ་གཏན་ལ་ཕབ་པ་ནི་རང་ཉིད་ཀྱི་མཁས་པའི་རྣམ་དཔྱོད་སྟོན་པའི་ཕྱིར་མ་ཡིན་གྱི། གང་ཟག་གཅིག་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་འཆིང་བ་ལས་གྲོལ་བའི་དོན་དུ་དམིགས་ནས་གསུངས་པ་ཤ་སྟག་ཡིན། དེས་ན་དབུ་མ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་བདེན་པར་མ་གྲུབ་པ་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མ་གྲུབ་པ་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ། ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ། བདག་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་སྒྲུབ་པ་འདིས་གང་ཟག་ཞིག་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་ལས་གྲོལ་བ་ལ་སོགས་པ་དང་ཇི་ལྟར་འབྲེལ་སྙམ་ན། དེ་ནི་ཐོག་མར་སློབ་དཔོན་ཟླ་བ་གྲགས་པས་དབུ་མ་འཇུག་པ་ལས།

དང་པོར་ང་ཞེས་བདག་ལ་ཞེན་གྱུར་ཞིང་།།

___

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༦༨ བ

བདག་གི་འདི་ཞེས་དངོས་ལ་ཆགས་བསྐྱེད་པ།།
ཐོ་ཆུན་འབྱུན་ལྟར་རང་དབང་མེད་པ་ཡི།།
འགྲོ་ལ་སྙིང་རྗེར་གྱུར་གང་དེ་ལ་འདུད།།[1]

ཅེས་གསུངས་པ་སོགས་ལས་འབྲེལ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་སྟེ། སྐྱེ་བོ་རྣམས་ང་དང་ང་ཡི་བའི་དབང་གིས་ཆགས་སྡང་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་ཞིང་། དེའི་དབང་གི་སྲིད་རྩེ་ནས་མནར་མེད་བར་འཁོར་ཞིང་། སྡུག་བསྔལ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་མྱོང་བར་བྱེད་དེ་ཐར་པའི་སྐབས་མེད་པ་ལྟ་བུར་གནས་པ་དེ་དག་ལ། ཆོས་ཀྱི་གནས་ལུགས་རང་བཞིན་མེད་པ། ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ། སྟོང་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པའི་དབང་གིས་དངོས་པོ་གནས་ལུགས་ལ་གོ་བ་ཙུང་ཟད་ཀྱང་ཆགས་པ་ན། དེ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཆགས་པ་དང་། སྡང་བ་དང་། གཏི་མུག་ལ་སོགས་པ་ཤུགས་ཆུང་དུ་འགྲོ་བའི་རྐྱེན་བྱེད་པས་སོ། །དེ་ལྟར་རྒྱལ་སྲས་ཆེན་པོ་ཞི་བ་ལྷས།

འཇིག་རྟེན་པ་ཡིས་དངོས་མཐོང་ཞིང་།། ཡང་དག་ཉིད་དུའང་རྟོག་བྱེད་ཀྱི།།
སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་མིན་པས་འདིར།། རྣལ་འབྱོར་པ་དང་འཇིག་རྟེན་རྩོད།།[2]

ཅེས་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ། དཔེར་ན་གང་ཟག་གང་ཞིག་གིས་རང་ལ་ཤིན་ཏུ་གཅེས་པའི་དངོས་པོ་ཞིག་གི་གནས་ལུགས་དེ་སྒྱུ་མའི་རང་བཞིན། རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པ་རྡུལ་ཙམ་ཡང་མིན་པ། དེའི་གནས་ལུགས་ངོ་མ་ཆུ་ཤིང་ལྟར་སྙིང་པོ་མེད་པ་ཞིག་ཏུ་མཐོང་

1 དབུ་མ་འཇུག་པ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། འ། ཤོག ༢༠༡ ན
2 བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ། ཤོག ༣༥༣ ལ་དྷ་རམ་ས་ལ་མཚན་ཉིད་སློབ་གྲྭ ༡༩༨༦

བ་ན། དེ་ལ་ཞེན་པའི་ཆགས་པ་ཆུང་བར་འགྱུར་བ་དང་། དེའི་རྐྱེན་གྱིས་བདག་འཛིན་ཤས་ཆུང་བ། དངོས་པོ་དེ་ལ་གཞན་གྱིས་དབང་བསྒྱུར་བར་དོགས་ཏེ། དོན་མེད་པར་གཞན་ལ་སྡང་བའི་སེམས་སྐྱེ་བ་ཉུང་བ་སོགས་ཀྱི་རྒྱུ་བྱེད་ཅིང་། མདོར་ན་དངོས་པོའི་གནས་ལུགས་ངོ་མ་ལ་བློ་ཁ་ཙུང་ཟད་ཅིག་ཀུང་ཕྱོགས་པ་ན་དེའི་དབང་གི་ཉོན་མོངས་དུག་གསུམ་ཤས་ཆུང་དུ་འགྲོ་བའི་རྐྱེན་བྱེད་པ་ཡིན་པས། ཆོས་རྣམས་རང་ངོས་ནས་མ་གྲུབ་པ། བདེན་པར་མ་གྲུབ་པ། རྟོགས་པས་བཏགས་ཙམ་པ་ཡིན་པ། བདག་མེད་པ་ཡིན་པ་སོགས་ལུང་དང་རིགས་པའི་རྣམ་གྲངས་མཐའ་ཡས་པས་སྒྲུབ་པའི་ངལ་བ་མཛད་པ་ནི། རང་ཉིད་མཁས་པར་རློམས་སྟེ་དངོས་པོ་གནས་ལུགས་ཀྱི་འགྲེལ་བརྗོད་བྱེད་ནུས་པ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་མ་ཡིན་གྱི། སྙིང་རྗེས་ཀུན་ནས་བསླངས་སྟེ་འགྲོ་བ་སྡུག་བསྔལ་ལས་གྲོལ་བའི་དོན་ཁོ་ནར་དམིགས་ཏེ་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། །སློབ་དཔོན་ཟླ་བས་འཇུག་པ་ལས།[1]

བསྟན་བཅོས་ལས་དཔྱད་རྩོད་ལ་ཆགས་པའི་ཕྱིར།།
མ་མཛད་རྣམ་གྲོལ་ཕྱིར་ནི་དེ་ཉིད་བསྟན།།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ། །དེ་ལྟར་ཡང་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཞི་བ་ལྷས་སྤྱོད་འཇུག་ལས།

དེ་ལྟར་སྒྱི་ལམ་ལྟ་བུ་ཡི།། གཟུགས་ལ་དཔྱོད་ལྡན་སུ་ཞིག་ཆགས།།
གང་ཚེ་དེ་ལྟར་ལུས་མེད་པ།། དེ་ཚེ་སྐྱེས་གང་བུད་མེད་གང་།།[2]

---

1 སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། འ། ཤོག ༣༡༠ ན

2 བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ། ཤོག་༨༦༡ ལ་དྭགས་མཚན་ཉིད་སློབ་གྲྭ ༡༩༨༩

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། ནང་པའི་གྲུབ་མཐའ་སྨྲ་བ་ཀུན་གྱི་ཁྱད་དུ་བདག་མེད་ཀྱི་འཇོག་ལུགས་དང་། དངོས་པོའི་གནས་ལུགས་ཤེས་པའི་ཕྱིར་དགག་བྱའི་ངོས་འཛིན་ཚུལ་སོགས་ལ་རིགས་པའི་རྣམ་གྲངས་མཐའ་ཡས་པའི་སྒོ་ནས་གླེང་བ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་མཛད་པ་འདི་ནི་འཆད་རྩོད་རྩོམ་གསུམ་གྱིས་མཁས་པར་བྱ་བ་ཁོ་ནར་དམིགས་ཏེ་རང་མཐོང་ལ་འབད་པ་ཡེ་ནས་མིན་པར། གང་ཟག་ཕལ་པ་རྣམས་ལ་དངོས་པོའི་གནས་ལུགས་ངོ་མ་ངོ་སྤྲོད་པའི་སྒོ་ནས་དེ་དག་གི་རྒྱུད་ཀྱི་འདོད་ཆགས། ཞེ་སྡང་། གཏི་མུག་གི་མགོ་གནོན་པའམ། ཉོན་མོངས་དུག་གསུམ་ཤུགས་ཆུང་དུ་བཏང་བའི་སྒོ་ནས་དེ་དག་སྡུག་བསྔལ་ལས་དྲངས་ཏེ་ཐར་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ལམ་ལ་འཛུད་པའི་དོན་ཁོ་ན་ཡིན་པར་སེམས་སོ། །སློབ་དཔོན་ཟླ་བ་གྲགས་པས་དབུ་མ་འཇུག་པ་ལས་ཀྱང་།[1]

བདག་མེད་འདི་ནི་འགྲོ་བ་རྣམས་དགྲོལ་ཕྱིར།།
ཆོས་དང་གང་ཟག་དབྱེ་བས་རྣམ་གཉིས་གསུངས།།

ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་ལས་ཀྱང་ཆེས་གསལ་བར་གོ་ནུས་སོ། །སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱི་ལས་ཀྱང་གཞུང་འདི་བརྩམས་པའི་དགོས་པ་བསྟན་པ་ན་མི་བླུན་པོ་གང་དག་དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དབང་གིས་འཁོར་བར་འཁོར་བས་སྙིང་རྗེའི་དབང་གིས་དེ་དག་དྲངས་པའི་ཕྱིར་བསྟན་བཅོས་དབུ་མ་སྣང་བ་རྩོམ་མོ་ཞེས་དམ་བཅས་པ་ལས་ཀྱང་གོ་བ་ཉིད་ཁོ་ནའོ།།

---

1 སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ཤོག ༣༧༣ ན

བོད་ཀྱི་མཁས་པས་དབུ་མ་སྣང་བ་ལ་འགྲེལ་པ་མཛད་པ་དང་། གཞུང་འདི་ཁུངས་སུ་མཛད་མིན་སྐོར།

རང་རྒྱུད་ཤར་གསུམ་གྱི་ནང་ནས་བོད་ལ་ཤིན་ཏུ་བཀའ་དྲིན་ཅན་གྱི་སློབ་དཔོན་ཤཱནྟརཀྵིཏ་སྐྱེ་མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཚོའི་སློབ་མ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཀམལཤཱིལས་མཛད་པ་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་འདི་ལ་དབུ་མ་འཇུག་པ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཡོངས་གྲགས་སུ་སློབ་གཉེར་བྱེད་པ་ཆེར་མེད་པ་ལྟ་བུར་མངོན་ཡང་། བོད་ཀྱི་མཁས་གྲུབ་ཀུན་གྱིས་འདི་ལ་ཐུགས་སྣང་མཛད་པ་ནི་དེ་དག་གིས་མཛད་པའི་གཞུང་རྣམས་སུ་བསྟན་བཅོས་ཁུངས་སུ་མཛད་པ་ལས་གོ་ནུས། དེ་དག་གི་ནང་ནས་རྗེ་ཙོང་ཁ་པ་ཆེན་པོ་རང་རྒྱུད་པའི་ལུགས་ཀྱི་བདེན་འཛིན་ངོས་གཟུང་བ་ལ་རང་རྒྱུད་པའི་གཞུང་ཁུངས་ཐུབ་གཞན་ལས་མ་རྙེད་ཀྱང་དབུ་མ་སྣང་བ་ལས་གསལ་བར་གསུངས་པ་འདིས་བསྟན་བཅོས་འདི་རང་རྒྱུད་པའི་གཞུང་ཤིན་ཏུ་གལ་ཆེ་བ་ཞིག་ཡིན་པ་ར་འགྲོད། དེ་བཞིན་དུ་རྗེའི་དྲང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོར་ཡང་ཡང་ཁུངས་སུ་མཛད་པ་ལས་ཀྱང་གཞུང་འདི་རང་རྒྱུད་པའི་ལྟ་བ་བསྟན་པའི་གཞུང་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་ཡིན་པར་ངེས་འཛིན་བྱས་ཆོག་པ་ཡིན།

བོད་ཀྱི་མཁས་པ་ཁག་གིས་དབུ་མ་སྣང་བའི་གཞུང་ལ་འགྲེལ་པ་དང་། མཆན་འགྲེལ་མཛད་པ་ཤིན་ཏུ་དཀོན། མཁས་དབང་ལོ་ཀེ་ཤ་ཙནྡྲས་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་མཛད་པའི་བོད་ཀྱི་མཁས་དབང་ཁག་གི་གསུང་འབུམ་དཀར་ཆག་ནང་ཕྱུ་པ་ཆོས་ཀྱི་སེང་གེས་[1] དབུ་མ་སྣང་བ་ལ་ཊཱི་ཀཱ་ཞིག་ཡོད་ཅེས་འཁོད་འདུག་ཀྱང་ཕྱག་དཔེ་དེ་ལག་ཏུ་གསོན་པ་

---

1 བོད་ཀྱི་མཁས་དབང་ཀུན་གྱི་གསུང་འབུམ་དཀར་ཆག ཤོག ༡༠༨ ལོ་ཀེ་ཤ་ཙནྡྲ།

མེད། བསྟན་དར་སྔགས་རམས་པས་མཛད་[1]པའི་དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗོད་བོ་ཞེས་པའི་ཕྱག་དཔེ་འདི་ཁོ་ན་ལས་གཞན་འགྲེལ་པ་མཇལ་རྒྱུ་མི་སྣང་ངོ་།།

གཞན་ཡང་རྗེ་རིན་པོ་ཆེའི་དབུ་མ་དགོངས་པ་རབ་གསལ། ལམ་རིམ་ཆེན་མོ། མཁས་གྲུབ་དགེ་ལེགས་དཔལ་བཟང་གི་དབུ་མ་སྟོང་ཐུན་ཆེན་མོ། ཀུན་མཁྱེན་འཇམ་དབྱངས་བཞད་པའི་གྲུབ་མཐའ་ཆེན་མོ། ལྕང་སྐྱ་གྲུབ་མཐའ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ནང་དབུ་མ་སྣང་བ་ཁུངས་སུ་མཛད་འདུག་ཅིང་། གཞུང་དེ་དང་དེ་དག་ཏུ་དབུ་མ་སྣང་བ་དབུ་མ་རང་རྒྱུད་པའི་ལྟ་བའི་སྟོན་པའི་གཞུང་ཁུངས་ལྡན་ཞིག་དང་། རང་རྒྱུད་པའི་སྐོར་ལ་དཔྱད་པ་དང་། བཤད་པ་ལ་སོགས་བྱ་བའི་ཚོ་རྒྱབ་རྟེན་གྱི་ཁུངས་ཀྱི་གཞུང་གལ་ཆེ་ཞིག་ཏུ་ངོས་འཛིན་མཛད་པ་ཡིན་ནོ།། །།

དགེ་བའི་བཤེས་ཀྱི་དྲིན་ལས་ནི། །གཞུང་ལ་འཇུག་པའི་སྐལ་པ་ཐོབ།།
དལ་འབྱོར་མི་ལུས་རིན་ཆེན་འདི། །ཐོབ་པའི་སྙི་ཞུ་ཙུང་ཟད་སྒྲུབ།།

སརྦམངྒལཾ།།

---

1 དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗོད་བོ། བསྟན་དར་སྔགས་རམས་པ། དེ་ལྷི་དཔར་མ། ༡༩༨༢ Works of Bstan-dar-snags-rams-pa, reproduced by Lokesh Chandra from the collection of Prof. Raghuvira, New Delhi, 1982



आचार्यकमलशीलविरचितो मध्यमकालोकः

अज्ञानिनो येऽत्र विपन्नदृष्ट्या भावेषु चासक्तिमहाग्रहाणां
वशेन ग्रस्ता हि प्रणष्टप्रज्ञा नागार्जुनादींश्च महामहिम्नः ।
क्षिपन्ति तेनात्मविनाश एव तेषां महाभूतग्रहोपशान्त्यै
प्रारभ्यते पोषकरोऽभ्युपायः कारुण्यमाश्रित्य मयाऽधुनाऽत्र ।।

भावाभिनिवेश एव तावत् समस्तसङ्क्लेशजालमूलम्, अतस्तत्परिहृत्य निःश्रेयसपदाभिलाषिणां सर्वधर्मनिःस्वभावताव्युत्पादनार्थमिदमारभ्यते ।

परमार्थगम्भीरोदधिनयमनवगाह्य अत्र केचिदाहुः—युक्त्यागमाभ्यां सर्वधर्म-निःस्वभावता सिध्यतीति चेत् ?

(१) नागमस्तावच्छक्तः, केनापि तथाभ्युपगमाभावाद्, विवक्षाधीनत्वाद् वचनानां तद्वस्तुसम्बन्धाभावाच्च न प्रामाण्यम् । स्यादपि सम्बन्धस्तथाप्य-र्वाग्दर्शिभिरवधारयितुं न शक्यते प्रेक्षकास्तत्प्रवचनमत-मभ्युपगम्यमानेभ्योऽपि निः-संशयं सर्वभावानां निःस्वभावताप्रतिपादकं किमपि वचनमुपदर्शयितुं न शक्नुवन्ति ।

(२) सूत्रेषु केषुचित्—'निःस्वभावाः सर्वधर्माः, अनुत्पन्नाः, आदिशान्ताः प्रकृतिपरिनिर्वृता इत्यादीनि (वचनानि) आगच्छन्ति, तान्यपि नेयार्थान्येव वेदितव्यानि, नानाभिसन्धिद्वारेण भगवतो देशनया अवतारणात् । त्रयाणां स्वभावानां परिकल्पितपरतन्त्रपरिनिष्पन्नानां क्रमशः लक्षणत उत्पत्तितः परमार्थतः निः-स्वभावतां सन्धाय सर्वधर्मा निःस्वभावा उक्ताः, तेन निःस्वभावत्वादनुत्पन्ना, तत आदिशान्ताः, तेन प्रकृतिपरिनिर्वृताः । तथैव भगवता आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्रादौ सूत्रार्थाभिप्राययोगो देशितः ।

(३) द्वैताभासिविज्ञानमात्रेण सर्वधर्माणामुत्पत्त्यादयो विभज्यन्ते, न तु स्व-संवेदनमात्रेण । द्वैताभासोऽपि मिथ्या, तेन सर्वभावा अपि मृषा एव व्यवस्थाप्यन्ते । परिकल्पितस्य लक्षणनिःस्वभावत्वात् सर्वधर्मानुत्पादादयो देशिताः, न तु परमार्थतः। अतो नागमद्वारा (सर्वधर्मनिःस्वभावता) साधयितुं शक्यते ।

(४) नापि युक्तिद्वारा । न खलु सर्वे भावाः प्रत्यक्षत एवं विविक्ताः (शून्याः) अनुभूयन्ते । वस्तुत्वात्तस्य विषयाणाम् । अभावस्य तावद् नीरूपतया न कथमपि स्वरूपोपदर्शनेन विज्ञानजनकत्वं युज्यते, जनकत्वे सति वस्तुत्वप्रसङ्गः, अर्थक्रियासमर्थत्वाद् वस्तुलक्षणस्य । यत् प्रत्यक्षं तदपि यदि सस्वभावम्, तदा सर्वधर्मानिःस्वभावताप्रतिज्ञाया हानिप्रसङ्गः। यदि तन्निःस्वभावम्, कथं तेन सर्वधर्माणां विविक्तताऽनुभूयते । अथ कैश्चिद् अर्थान्तरा विविक्ततेति पक्षो गृह्यते, तदा इतरेण तावत् प्रत्यक्षेण शून्यता ग्राह्या स्यात् ।

सर्वधर्मनिःस्वभाववादिषु ये केचन (धर्माः) प्रत्यक्षेण उपलभ्यन्ते (ते) सर्वे धर्मा विविक्ताः प्रतीयेरन् । सर्वधर्माणां स्वभावविविक्तता तावन्नास्ति किमपि वस्तु, तस्या अपि सर्वधर्मान्तर्गतत्वात् । न चेदन्तर्भावः, स्वप्रतिज्ञाहानिः ।

(५) अयं तावद् (विषयः) सर्वज्ञादीनां योगिनां प्रत्यक्षेण सुगम्य इत्युच्यमानेऽपि न खलु विद्वद्भ्यस्तृप्तिमासादयति, युक्त्यभावात्तत्र । यदि तद् योगिज्ञानमप्यसदिति चेद् ? तदा कथं तस्य प्रामाण्यम् । यदि तत् सत्, तदा प्रतिज्ञाहानिः ।

(६) नाप्यनुमानेनापि 'सर्वे भावाः शून्याः' इति साधयितुं शक्यते, कस्याप्याधारस्य धर्मिण एवाभावात्, हेतुदृष्टान्तादीनामप्यनुपपन्नत्वात् । स्वभावाश्रयरहितैः सर्वहेतुभिः कथं सर्वधर्मनिःस्वभावता साधयितुं शक्यते ।

(७) परैः सिद्धत्वात् पराभ्युपगतहेत्वादिभिः स्वपक्षः प्रसिध्येदिति चेत् तदपि न युज्यते, साधनदूषणयोरुभयप्रसिद्धत्वेनाभिमतत्वात् । इत्थं यदा पराभ्युपगत-हेत्वादयो यदि न वास्तविकाः, मोहेन कल्पितमात्रसत्ताकाः, तदा कथं तैः स्वपक्षः प्रसिध्येत् । यदि ते भावरूपेण सन्मात्राः, तदा न केवलं ते परप्रसिद्धमात्राः, तवापि तत्प्रसिद्धत्वात् । भावानां सिद्ध्यसिद्धयो न पुरुषविवक्षाधीनाः । पराभ्युपगत-साधनादयो यदि सन्मात्रा एवाभ्युपेयन्ते तदा भावा अपि सस्वभावाः कथं नाभ्युपेयन्ते?

(८) सर्वधर्मशून्यता कुत्रापि केनापि हेतुना न सम्बद्धा, अत्यन्त-परोक्षत्वात् । यदि (सम्बन्धः) सिद्धः स्यात् तदा सर्वे तत्त्वदर्शिनः स्युरिति प्रसङ्गः । पूर्वत एव सिद्धत्वाद् युक्त्यनुसरणमपि निरर्थकं स्यात् ।

(९) अपि च, न तावत् कार्य-स्वभावलिङ्गाभ्यां शक्यते साधयितुं सर्वधर्मनिःस्वभावता । तेषां खलु भावसाधनत्वात् । त्वन्मते तु एतौ (कार्य-स्वभावौ) न सम्भवतः । तथा हि—सर्वेषां धर्माणामनुत्पन्नत्वेन कस्यापि केनापि सह कार्यकारणभावस्यानभ्युपेतत्वात् कार्यहेतुस्तावन्न सम्भवति ।

सर्वधर्माणां निःस्वभावत्वेन कस्यापि आत्मनः स्वभावस्यासत्त्वात् कुतस्तावत् स्वभावहेतुः ।

(१०) अनुपलब्धिरपि तां साधयितुं न शक्ता । स्वभावानुपलब्धिर्या खलु असद्व्यवहारं साधयति, सा तदितरविविक्तस्य वस्तुनः प्रत्यक्षतः प्रतीतौ सत्यामपि असच्छास्त्रश्रवणविमूढमनसा केनचित् तदितरविवेकव्यवहारेऽप्रवृत्तानां तद्-व्यवहारप्रसाधनाय प्रयुज्यत इति । तव तु साध्यमानसर्वधर्माभावव्यवहारस्य प्रत्यक्षतः ज्ञानार्थं किञ्चिदपि नास्त्येव, स्वपक्षहानिप्रसङ्गादित्युक्तपूर्वम् ।

(११) विरुद्धोपलब्ध्यादयोऽपि (तव मते अभावसाधनार्थं) न सम्भवन्त्येव। अत्यन्तपरोक्षात् सर्वधर्मविवेकात् सहानवस्थानविरोधेनापि न किञ्चिदपि सिध्यति । यदि सिध्येत् तदा तद्विरुद्धादयो भावत्वेनैव सिध्येयुरित्यनभ्युपेता न स्युः । भावानां विरोधो द्विधा व्यवस्थाप्यते, तद्यथा—सहानवस्थानलक्षणः परस्परपरिहारलक्षणश्च। ये तत्राविकल-कारणानि तेभ्यो नियतं यस्मिन्न भवति, तयोः प्रथमो विरोधो व्यवस्थाप्यते, शीतोष्णस्पर्शवत् । यद् यस्मिन् परिह्रियते यन्न विच्छिद्यते तयोरुभयोरभावयोर्द्वितीयो विरोधो व्यवस्थाप्यते, एकस्मिन् धर्मिणि युगपत् सदसत्त्ववत् । तथाविधौ द्वावपि विरोधौ सर्वधर्मनिःस्वभाववादिषु नैव सम्भवतः । गगनारविन्दादिषु न सन्ति अविकलकारणान्यपि तथा नास्ति अतद्व्यावृत्त्या परिच्छेदोऽपि भावपर्यन्तत्वात् । सत्ताव्यवच्छेन यद्यपि परिच्छेदो व्यवस्थाप्यते तथापि कुत्रचित् काचित् सत्ता व्यवच्छिन्ना सिध्येत्, किन्तु भवन्तस्तावत् कुत्रापि कस्यापि व्यवच्छेदं कथमपि नैवाभ्युपगच्छन्ति ।

यदि सर्वे धर्मा निःस्वभावताप्रत्यासन्नास्तदा युष्मासु किमप्यविकल-कारणसत्त्वं न सिध्येत् । यदि सिध्येत्तदा तान्यविकलकारणान्येव भावाः सिध्येयुः । यदि सर्वधर्मनिःस्वभावताव्यवच्छेदन केचन भावाः परिच्छिद्यन्ते, तदा त एवास्मासु वस्तुसन्तः सिध्येयुः, तद्विरुद्धोपलब्ध्यसम्भवात् ।

(१२) यद्यसम्भवस्तदा व्यापकविरुद्धोपलब्ध्यादयोऽपि न सम्भवेयुः । विरुद्धोपलब्ध्यसिद्धेस्ता अपि न सम्भवन्ति, विरुद्धोपलब्धिप्रभावितत्वात्तासाम् ।

(१३) व्यापकानुपलब्धिरपि व्याप्यव्यापकभावसिद्धौ व्याप्यनिषेधाय यदि प्रयुज्यते तदा सर्वधर्मस्वभावशून्यत्वं तु तावन्न कस्यापि व्याप्यं सिध्यतीति । यदि सिध्यतीति चेत् तद् व्याप्यमेव हि वस्तुतया सिद्धं स्यात् ।

(१४) कारणानुपलब्धिरपि कार्यकारणभावसिद्धौ कार्यत्वनिषेधाय यदि प्रयुज्यते तदा सर्वधर्मनिःस्वभावतायां तु कार्यकारणभाव एव सिद्धो न भवति । यदि सिद्धस्तदा यत् कारणं यच्चापि वा कार्यं तदेव वस्तु स्यात् ।

(१५) सर्वधर्मेषु कस्याप्येकस्य निषेधाद् एतेषां निःस्वभावतासिद्ध्यर्थं नास्ति किमप्येकं कारणम् ।

(१६) केनापि ईश्वराद्येकनिमित्ताभ्युपगमनिषेधेऽपि नेमे निःस्वभावत्वे सिध्यन्ति, सर्वेषां स्वंनिमित्तोत्पन्नत्वात् । एतेषां प्रतिस्वं निमित्तान्यपि निषेद्धुं न शक्यन्ते, तेषां प्रसिद्धत्वात् ।

(१७) अपि च, नैरात्म्यं यदि सर्वधर्मगोचरतायां साध्यते, तदा न दृष्टान्तः प्रसिद्ध्यति । प्रतिबिम्बादयो येऽपि दृष्टान्तास्तेष्वपि केचित् बाह्यवस्तुस्वभावाः, अन्ये तावज्ज्ञानस्वभावा अभ्युपगम्यन्ते, अतस्ते वस्तुस्वभावा एव स्वीकृताः ।

(१८) यदि प्रादेशिकं नैरात्म्यं साधयितुमिष्येत, तत्र यदि तैर्थिक-परिकल्पिताः प्रधानादयः निषिध्यन्ते, तदा सिद्धसाधनमात्रमेव ।

(१९) यदि लोकप्रसिद्धा रूपादयस्तदा दृष्टान्त एव तावन्नोपलभ्यते, प्रतिज्ञायाश्चापि प्रत्यक्षविरोधः ।

(२०) यद्यनुमानस्य प्रतिबन्धसाधनार्थं प्रत्यक्षप्रमाणमभ्युपगम्यते, तदा सिद्ध एव तावद् भावः । तद्यथा—कल्पनापोढमभ्रान्तमिति प्रत्यक्षलक्षणम् । अभ्रान्तज्ञानेन निरूपितोऽपि भावस्वभावः कथमनुमानेनापह्नोतुं शक्यते । यदि स निराक्रियते तदा प्रत्यक्षस्यैव बाधप्रसङ्गः । यदि स बाध्यते तदा नानुमानस्यापि सौस्थित्यम्। प्रत्यक्षसम्बन्धादनुप्राप्तानुमानेनापि स एव कथं बाधयितुं शक्यते । यदि प्रत्यक्षसिद्धोऽर्थो न बाध्यते तदा वस्तुवादिनामेव सौस्थित्यम्, प्राप्यस्य प्राप्तत्वात् ।

(२१) अपि च, सर्वधर्मनिःस्वभावत्वं साधयितु यदि कश्चिद् भावस्वभावो हेतुः प्रदर्श्यते, तदा विपरीतसाध्यसाधको हेतुर्विरुद्धो भवति।

(२२) यदि अभावस्वभावस्तदा असदभावयोः परस्परसम्बन्धाभावात् कथं साधयिष्यति ?

(२३) यद्युभयस्वभावः, सोऽप्यनियत एव, विपक्षेऽपि सत्त्वात् । यतो हि तत् साधयितुं नान्यत् किमपि प्रमाणमिति ।

(२४) शब्दमात्रतोऽपि न तत् सिध्यति, सर्वतः सर्वसिद्धिप्रसङ्गात्। शब्दोऽपि विरुद्धः, यतो हि यदि निःस्वभावस्तदा कथं स सिद्धः ।

(२५) प्रसङ्गत्वेन सिद्धेऽपि नेष्टार्थसिद्धिः, तथाविधप्रसङ्गस्यैवासिद्धत्वात् । प्रसङ्गेन तावत् परपक्षो बाधयितुं शक्यते, तथापि स्वपक्षस्तु न सिध्यति, उभयसिद्ध-हेत्वन्तरापेक्षत्वात्तस्य ।

(२६) स्वतो नोत्पद्यते भावः, यश्चानुत्पन्नस्तस्यासत्त्वेन कुत्रापि हेतु-त्वेनानुपपत्तेः । उत्पन्नानां पुनरुत्पादे नैरर्थक्यम्, विद्यमानत्वात् । यद्यविशिष्टस्तदा कार्यकारणभावोऽपि न युज्यते, विशिष्टस्यैव हेतुत्वात् ।

परतोऽपि नोत्पद्यते भावः, परस्यैवासिद्धत्वात् । अपि च, नित्यभूतादपि तावत् परान्नोत्पद्यते, नित्यस्य क्रमयौगपद्याभ्यामर्थक्रियाविरोधात् । अनित्यादपि तावद् विनष्टान्न, तस्याविद्यमानत्वात् । अविनष्टादपि न, कार्य-कारणयोस्तुल्यत्वप्रसङ्गात् । समकालिकयोस्तावत् कार्यकारणभावो न युज्यते, निष्पन्नावस्थायां द्वयोर्विद्यमानस्वभावत्वेन परस्परोपकारकत्वाभावात् । अनिष्पन्नावस्थायां तु द्वयोरसत्त्वाद् उपकारकत्वात्यन्ताभावः ।

उभयतोऽपि नोत्पद्यते, यथोक्तोभयदोषप्रसङ्गात्, एकस्मिन् द्वित्वविरोधाच्च।

अहेतुतोऽपि नोत्पद्यते भावः, कादाचित्कत्वात्, नैवं कथनं युज्यते। यन्न स्वतो नोभयतो नापि विनष्टाद्धेतोर्नाप्यहेतुतो नाभीष्टान्नित्याद्धेतोः कार्योत्पत्तिर्भवतीति तथावादिनस्तत् (सर्वं) युज्यते, किन्त्वनित्यत्वेनाभीष्टात्तदितरादविनष्टाद्धेतोः कार्योत्पत्तौ कस्तावद् विरोधः, केन हेतुना ततः कार्योत्पत्तिर्निषिध्यते, नास्ति तद्बाधकं किमपि प्रमाणम् ।

परभूतस्य भावमात्रस्याप्यसिद्धिरिति न, यतो हि यदनन्तरं कार्यमुत्पद्यते तदेव 'परः' इत्यभिधीयते । कार्योत्पादात् प्राक् परेति नाम्नोऽसिद्धत्वेऽपि भावस्य तु नैव हानिः ।

(२७) केचित् परत्वादिति बाधकं प्रमाणं वदन्ति, तदप्यनैकान्तिकमेव, परत्वजनकत्वयोरविरोधात् । स तावदविरोधनयोऽपि निषेद्धुं न शक्यते, अति-प्रसङ्गात् ।

यद्येवमस्ति तदा कस्मिंश्चिदपरस्मिन् द्रारिद्र्यमूढत्वादिधर्माणां दृश्यत्वेन परत्वहेतोः सर्वजगद्दारिद्र्यादिधर्मोपादानं स्यात् ।

(२८) अव्यवहितादविनष्टात् परात् कार्योत्पत्तौ कार्यकारणसम-कालिकत्वप्रसङ्गो बाधकप्रमाणमिति यदि कश्चिदेवं मन्यते, तदप्ययुक्तमेव। अव्यवहिकार्योत्पादेनापि कार्यकारणसमकालिकत्वं न प्रसज्यते, क्षणिकत्वेन कार्यसत्त्वे कारणस्यासत्त्वात् ।

यदा कार्यमुत्पद्यते तदैव कारणं निरुध्यते, तुलादण्डोन्नामावनामवदिति कुतः समकालिकत्वप्रसङ्गः । कारणावस्थायामपि कार्यस्य विद्यमानत्वाद् नैरर्थक्यमेव । यथा अव्यवहितविनष्टो भाव उत्तरक्षणभाविना भावेन सह युगपद् व्यवस्थाप्यो न भवति, एवमेव कार्यस्यापि तत्सदृशत्वादविरुद्धतैव, छायाऽऽतपवत् । यथा च पूर्वापराव्यवधानेन प्रवहमानजलधारायां विषयैकत्वं न भवति, तथैव अस्यापि तत्सदृशत्वात् समकालिकत्वं न भविष्यति ।

(२९) विद्यमानस्यापि कार्यस्य नैवोत्पादः, उत्पादवैयर्थ्यात्, नाप्य-विद्यमानस्य, शशशृङ्गादीनामप्युत्पत्तिप्रसङ्गाद् इत्यपि कथनं नैव युज्यते । यदि विद्यमानकार्यस्योत्पत्तिर्निषिध्यते तदा तव (पक्षे) उभयसिद्धो हेतुर्दृष्टान्तश्च न स्याताम्। यद्यस्ति तदा निःस्वभावत्वप्रतिज्ञाया हानिः ।

(३०) सांख्यादिपरिकल्पितसत्कार्यवादो यद्यप्ययुक्तस्तथाप्यसत्कार्योत्पादे किं नाम विरुद्धत्वम्, किमर्थं च तन्निषिध्यते । नैव च स्यात् शशशृङ्गाद्युत्पत्ति-प्रसङ्गः, तत्तथाविधहेतूनामभावादनुत्पत्तेः, न त्वभावाद्धेतोः ।

सर्वतः सर्वोत्पत्तिप्रसङ्गोऽपि नैव; कारणप्रतिनियतसामर्थ्यस्य व्यवस्थित-त्वात्। प्रतिनियतकारणसामर्थ्यमप्यवश्यमभ्युपेयम्, अन्यथा सांवृतिकेऽपि कार्य-कारणभावे कथं न सर्वतः सर्वोत्पत्तिर्भवतीति ।

(३१) अपि च, यदि विनष्टाविनष्टादयो विकल्पाः पारमार्थिकीमुत्पत्तिं बाधन्ते, तदा कथं न सांवृतिकीमपि बाधन्ते ? वस्तुबलप्रवृत्तस्य हेतोर्विषस्य

पुरुषेच्छावशेन विभागो न युक्तरूपः । यदि प्रत्यक्षबाधितत्वाशङ्कया तस्मिन् हेतुत्वं न प्रवर्तत इत्युच्येत तर्हि स हेतुरेव नास्ति, बाधयोग्यत्वात् ।

(३२) न ह्येकेन हेतुना अनेककार्योत्पत्तिर्युज्यते, न चानेकेनाप्येकोत्पत्तिर्युज्यते, अन्यथा हेतुभेदेन भेदो न स्यात् । अत एव नानेकेभ्योऽप्यनेककार्योत्पत्तिर्भवतीति । यद्येकं कार्यं सर्वे हेतवोऽभिनिर्वर्तयन्ति, तदा भिन्नानां हेतूनामभेदः स्यात्, अनेकेभ्य एकैकस्योत्पत्तेः । यद्येकैकं नाभिनिर्वर्तयन्ति तदा कथं नामानेकेभ्योऽनेकोत्पत्तिरपि ।

न ह्येकेनापि एकस्योत्पत्तिः, चक्षुरादीन्द्रियेभ्यस्तद्विज्ञानस्योत्पत्तेः । तदनन्तरं यदि सजातीयक्षणोत्पत्तिर्न भवेत्तदा सर्वेषामन्धबधिरत्वादिप्रसङ्ग इत्यपि कथनं तावन्नैव युज्यते । एवं यस्तावदन्धबधिरत्वादिप्रसङ्गोऽभिहित स नैव सम्भवति, अनभ्युपगतत्वात्, सामग्र्या उत्पत्तेः, न हि काचिदेकेन एकस्योत्पत्तिरिति ।

येनैकस्मादनेकोत्पत्तिः, अनेकस्माद् वा एकस्योत्पत्तिः (ततः स) विरुद्धो हेतुस्वभावातिक्रान्तो जनकत्वेनानभ्युपगतो भवति, तथापि विद्यमानमात्रादनेकस्वभावात् प्रदीपादेः अनेकस्वभावं कार्यमुत्पद्यमानं दृश्यते ।

हेतुभेदो भेदको न भविष्यतीति प्रसङ्गोऽपि न स्यात्, हेतुविशेषेण कार्यविशेषस्योत्पत्तेः । हेतुविशेषेण कार्यविशेषोत्पाद इति यदेव कथनं तदेव हेतुभेदस्य भेदकत्वप्रतिपादकमिति ।

(३३) यः प्रतीत्यसमुत्पन्नः, स प्रकृत्या शान्त इत्येतदनैकान्तिकत्वम्, प्रतीत्यसमुत्पन्नस्य सस्वभावत्वेन विरोधाभावात्, प्रतीत्यसमुत्पादस्य सस्वभावत्वे प्रसिद्धत्वाद्। हेतोर्विरुद्धत्वमपि, अजातानां खपुष्पादीनां सस्वभावत्वेनाननुभूयमानत्वात् ।

(३४) यो हि परमार्थतोऽसन् स संवृतावपि स्वभावतोऽनुत्पन्नो दृश्यते, यथा—वन्ध्यापुत्रः । तुल्येऽपि निःस्वभावत्वे यथा रूपादयोऽवभासन्ते, तथा शशशृङ्गादयः कथं नावभासन्ते ? अवभासविशेषस्यास्य नास्ति किमपि कारणम् ।

(३५) 'सर्वे धर्मा निःस्वभावाः, एकानेकस्वभावरहितत्वात्' इत्येवमभिदधाना ये प्रसङ्गं साधयन्ति तेषामपि तथा परैरनङ्गीकाराद् हेतुरसिद्ध एव,

एकानेकस्वभावरहितत्वस्य न केनाप्यभ्युपगतत्वात् । अतः स्वतः सिद्धावपि हेतुरयं परतोऽसिद्धः ।

(३६) अन्यच्च, साध्यसाधने पर्युदासात्मके प्रसज्यात्मके वा ? यदि पर्युदासात्मके तदा एकानेकस्वभावरहितत्वस्य भावस्वभावत्वेनाभ्युपेतत्वात्त-दप्यनभ्युपगतं न भवेत् । यदि प्रसज्यात्मके तदा नास्ति गम्यगमकभावः, तयोर्निः-स्वभावत्वाद् अन्योऽन्यासम्बद्धत्वाद् अभिन्नत्वाच्च ।

(३७) यच्च सर्वाभिलापविरहलक्षणं तन्न किञ्चिद् गम्यं गमकं वा, यथा—अश्वशृङ्गम्। यथोक्तसाध्यसाधने अपि सर्वाभिलापविरहलक्षणे ।

(३८) यौ ह्यन्योऽन्यासम्बद्धौ तयोर्नास्ति गम्यगमकभावः, यथा विन्ध्य-हिमालयौ । साध्यसाधने चाप्यन्योऽन्यासम्बद्धे ।

(३९) यद्युभे अभावस्वभावत्वेन तादात्म्यलक्षणापन्ने एवेति मन्यसे चेत्, तदप्ययुक्तम्, तदात्मनो भावे व्यवस्थितत्वात् ।

(४०) यो यस्मान्न भिन्नस्वभावस्तयोर्नास्ति गम्यगमकभावः, वृक्षद्रुमवत्। यथोक्तसाध्यसाधने अपि न भिन्नस्वभावे । नायं कृतकत्वानित्यत्वाभ्यामनैकान्ति-कोऽपि, व्यावृत्त्या भिन्नत्वात्तयोः ।

(४१) अत्रापि व्यावृत्त्या भेद इति मन्यसे चेत् ? तदप्ययुक्तम् । यद्येवं स्याद् भाव एव ते स्याताम्, नीलपीतवत् ।

(४२) अपि च, यथा केनापि एकानेकस्वभाववियुक्तत्वहेतुना भावानां निःस्वभावता साध्यते, तथा धर्मिणोऽप्यभावः साध्यते तदा धर्मिव्यावृत्तत्वसिद्धेः हेतुर्विरुद्धः स्यात्, तथा निःस्वभावत्वसिद्धौ नास्ति किमपि प्रमाणम् ।

(४३) अपि च, यदि विज्ञानमप्यन्यधर्मवत् परमार्थतो निःस्वभावं स्यात्तदा तदनुपादेयं स्याद् वितथत्वादन्यधर्मवत् । यद्येवं स्यात्तदा न स्युर्योगिनोऽपि, नैव योगिज्ञानमपि स्यान्न च तैस्तत्त्वप्रतिबोधः स्यात् । नैव तेषां भगवतां बुद्धानामप्रतिष्ठितनिर्वाणं स्यान्न च सर्वाकारं ज्ञानं स्यात्। फलतः सर्वव्यवस्था-विलोपः स्यादिति ।

(४४) संवृतौ योगिज्ञानादीनामभ्युपगमाद् बुद्धा अपि विपर्यस्ता भवेयुरिति प्रसङ्गः ।

(४५) अपि चास्ति भवतां सर्वधर्मनिःस्वभावत्वप्रतिज्ञायां युक्त्यागमाभ्यां विरोधोऽपि । यथा रूपादयस्तावत् सस्वभावत्वे एव नियताः, देशकालावस्थाभेदेन स्फुटमवभासमानत्वात् । अत आदौ तावत् प्रत्यक्षविरोधः सुस्पष्टः ।

(४६) अग्न्यादयो ये भावाः परोक्षत्वेनाभ्युपगतास्तेऽपि अभ्रान्तेन नियतधूमादिहेतुना अनुमानप्रमाणेन सत्स्वभावात्मका एव । भावानामुत्पादोऽपि खलु हेतुप्रत्ययसापेक्ष एव सिद्धः, कादाचित्कत्वात् । अहेतुकस्य तु कादाचित्कत्वमपि न युज्यते, निरपेक्षत्वात् । अतः प्रतिज्ञायामनुमानबाधाऽपि ।

(४७) यानि त्रायस्त्रिंशानां नगरादीन्यत्यन्तपरोक्षाणि, तान्यपि समस्तलोकैकचक्षुर्भूतेन तायिना स्वकीयेनानावृतेन ज्ञानचक्षुषा प्रत्यक्षीकृत्य अन्येभ्योऽपि सम्प्रकाशितानि, अतो विश्वस्तागमेन सत्तायाः सिद्धेरागमविरोधोऽपि, असतामाकाशपुष्पादीनां तथा दर्शनसम्प्रकाशनयोरयुक्त्वात् ।

(४८) भगवता खलु ये आन्तरबाह्यवस्तूनामनेकविधाः प्रतीत्यसमुत्पादाः समुपदिष्टास्तेऽपि स्वभावविरहिताः कथं युज्यन्ते, अत्यन्ताभावानामाकाशपुष्पादीनां नैवात्यन्तिकी उत्पत्तिरिति ।

(४९) कुशलाकुशलकर्मणां फलभूता देवनरकादिगतयो भवन्तीति स्वयम्भुव उपदेशात् कथं न विरोधः, नैव युज्यते अत्यन्तासद्भूतकूर्मरोमादिभिर्वस्त्रनिर्माणोपदेशः ।

(५०) अतः कर्मणामिष्टानिष्टफलापवादात् संक्लेशपक्षापवादः ।

(५१) सूत्रादिषु आर्याणां मार्गाभ्यासबलेन या उत्तरोत्तरलोकोत्तरज्ञानफलव्यवस्था साऽपि न स्यात्, गतिगम्यगमकाद्यभावात् । शशशृङ्गकृतसोपानमार्गे पादौ निधाय वन्ध्यापुत्रस्य अश्वशृङ्गसमुच्छ्रितोत्तुङ्गविशालप्रासादारोहणं न सम्भवतीत्यतो व्यवदानपक्षापवादोऽपि स्यात् ।

(५२) इत्येवमुभयपक्षापवादमनुतिष्ठन्तश्चत्वार्यार्यसत्यान्यपि निषेधन्ति भवन्तः ।

(५३) बीजादिषु जन्यजनकभावस्तावद् आगोपाङ्गनाप्रसिद्धः, अतः प्रतिज्ञायाः प्रसिद्धिविरोधोऽपि ।

(५४) हेतुप्रयोगेण परेषु निश्चयोत्पादाभ्युपगमात् स्ववचनविरोधोऽपि ।

(५५) यश्च भगवता प्रत्यक्षादिप्रमाणैर्भावानां सत्तानिर्देशः कृतः, तस्यापि बाधा स्यात् । यतो हि :

"चक्षुर्विज्ञानसमङ्गी नीलं विजानाति, नो तु नीलम्" इत्यादिना तावन्नीलादयो भावाः कल्पानापोढलक्षणेन प्रत्यक्षप्रमाणेन ज्ञायन्त इति प्रतिपादितम्, नैव हि गगनोत्पलवर्तीनि नीलादीनि चक्षुर्विज्ञानेनानुभूयन्त इति ।

(५६) "यत्किञ्चित् समुदयधर्मकम्, तत् सर्वत्र निरोधधर्मकम्" अनेन साध्यव्याप्तहेतुनाऽनुमानप्रमाणेनोपदर्शिताः क्षणस्थितधर्मिणो भावाः प्रसिद्धा इति स्पष्टमुपदर्शितम् । अनेन तावदुपदर्शनेन ते (भावाः) सस्वभावतायां निरुच्यन्ते, अत्यन्तासद्भूताकाशपुष्पादीनामुत्पादव्ययधर्मायोगात् ।

(५७) "धूमेन ज्ञायते वह्निः सलिलं च बलाकया"[१] इति। अग्न्यादयो भावाः कार्यलिङ्गेन नियतं ज्ञायमानत्वान्नियतं स्वभावमवधारयन्तीति सुस्पष्टं निर्दिश्यते। बलाकादिहेतूनां दर्शनान्मरीचिकाद्यभावानुमानस्योत्पत्तेरभावात्।

(५८) अभिधर्मादौ ये षड् हेतवश्चत्वारश्च प्रत्यया अभिहितास्तेऽपि सर्वधर्मानुत्पादवादे तावत्कथं युज्यन्ते, उत्पाद्यस्य कस्यचिदभावेन हेत्वादीनामयुक्तत्वात् ।

(५९) सूत्रेषु सर्वे धर्माः स्कन्धधात्वायतनेषु सङ्गृहीताः समुपदिष्टाः । स्कन्धादीनां भगवता कार्यकारणस्वभावत्वसम्प्रकाशनात् कथं ते सर्वधर्मानुत्पादतायां सङ्गृहीताः स्युः ।

(६०) यदि स्कन्धादिव्यतिरिक्तस्य कस्यचिद् धर्मस्य अनुत्पादः साध्यते तदा नास्ति (कश्चित्) विवादः, वयमपि तद्व्यतिरिक्तं धर्मं नाङ्गीकुर्महे ।

(६१) यद्येवं मन्यसे यत्संवृतौ प्रमाणादीनामभ्युपगमान्नैव एषां सर्वेषां दूषणानामवकाशो युज्यत इति चेत् ? तदा (संवृतौ) भावाभ्युगम एवाङ्गीकृतः स्यात्, यतो हि यानि प्रमाणादीनि संवृतावभ्युपेतानि तानि निश्चयेन सर्वाभिलाप-

---

१. आर्यदशधर्मसूत्र, दे० क०, (रत्नकूट-ख), पृ० १६७-ख।

विधुरलक्षणशशशृङ्गादिभ्यो व्यावृत्तस्वभावान्येव व्याहतानि स्युः । यद्येवं न स्यात्तदा लोकविरोध आगमविरोधश्च कथं परिहृतः स्यात् । वयं तु यत् सर्वसामर्थ्यविरहलक्षणशशशृङ्गादिविपरीतं तदेव 'वस्तु' इत्यभिदध्महे । यदि भवन्तस्तानपि संवृतिसदिति नाममात्रमुपचारमात्रं व्यवहारमात्रमिति प्रव्याहरन्ति, तदा कामं तथाऽभिलपन्त्विति । न हि नाममात्रेण भावस्तथाविधं स्वभावमनुसरतीत्यतिप्रसङ्गात् ।

(६२) अपि च, का नाम संवृतिरित्यपि वक्तव्यम् । यदि सर्वमसदिति कथ्यते, तदपि न युक्तम्, परस्परविरोधात् । तथाविधा संवृतिस्तावदसमर्थैवोच्येत । यदि उत्पादयतीति तदा सामर्थ्यमेवैतत् । तदा कथमेकस्मिन् परस्परविरुद्धयोः सामर्थ्यासामर्थ्ययोर्योग इति । कथमसता सन्निष्पादयितुं शक्यते ।

(६३) न हि सर्वमसदिति। तत्कथमिति चेत्? भावस्वभावैव संवृतिरिति। तदा नास्ति विवादः, भवतः प्रतिज्ञाया एव हानिः । भवोऽप्युत्पद्यत एव, अतः संवृत्या तदुत्पद्यत इति कथमेवमुच्येत ? तदा त्वनुत्पन्न उत्पद्यत इत्युक्तं स्यात् । संवृतिविपरीतस्यानुत्पादस्य परमार्थत्वात् तदा परमार्थतोऽनुत्पाद एव स्यादित्यसम्बद्धाभिधानं स्यात् । उपयतोऽनुभयत इत्येषाऽपि कल्पना नैव सम्भवति, परस्परविरुद्धत्वात् ।

(६४) यद्यनित्यार्थः संवृत्यर्थ इत्येवं चेत् ? तदा किं तावदनित्यम्? यदि नित्याभावमात्रम् ? तदा कथं तल्लोके प्रतीतं स्यात् । यदि नित्यादितरं किमप्यनित्यमिति निगद्येत ? तदा नित्यस्य विकल्पात्मकत्वात्तत् (इतरं) तावत् सामर्थ्यान्निर्विकल्पं ज्ञानमित्यतस्तदवस्थायां 'संवृतिसत्'-इति कथनं तु निर्विकल्पकज्ञानेन तत्प्रतीयत इत्यभिहितं स्यात् ।

यद्येवं स्यात्तदा किमिव भावस्वभावो नाभ्युपेयते । (तथात्वे च) अनुमानकल्पनाया अपि तावत् परिहारः स्यात् सविकल्पकत्वात्तस्याः ।

(६५) अथ लोकप्रतीत्यर्थः संवृत्यर्थ इत्येवं चेत् ? कस्तावल्लोक इति ? शास्त्रकारा वा प्राकृता वा जनाः। प्रथमे विकल्पे भावो ह्यनेकपरस्परविरुद्धस्वभावः स्यात्, शास्त्रकारैरेकस्यापि भावस्य नानाकारेणाध्यारोपणात् । द्वितीये विकल्पे नैरात्म्य-कर्म-फलादीनि नाभ्यु-पेतानि स्युः, प्राकृतकैरप्रतीतत्वात् ।

(६६) अथ मायार्थः संवृत्यर्थ इति चेत् तदा को हि नाम मायार्थ इति वक्तव्यम् । यदि सर्वमसदिति, तदा पूर्वदोष एव समापद्येत, संक्लेशव्यवदानानि च कथं स्युरिति च । अथ भ्रान्तिज्ञानेन मायेति चेत् तदा आभ्यन्तरिकज्ञेयनयेन को हि विशेषः स्यात् ।

(६७) अथ संवृतिर्नाममात्रमिति तदा सुभाषितदुर्भाषितयोर्भेदोऽशक्यः स्यात्, असत्यभिधेये शब्दमात्रे भेदाभावात् ।

(६८) अथ शब्दार्थ इति चेत्तदा कथमभेदः स्यात्, प्रत्यात्माधिगम्या ये सुखादयस्ते कुत्र संगृहीताः स्युः ? न हि तावत् संवृतौ, तेषामनिर्वचनीयत्वात्, संवृतिसतां व्यवहारप्रज्ञप्यमानत्वाच्च । सूत्रेऽप्येवमुक्तम् : "किं नाम संवृतिसत्यम् ? यावन्तो लोकव्यवहाराः, येऽक्षरपदनिरुक्तिभिर्निर्दिश्यन्त इति" । अनेन हि संक्षेपतः संवृतिशब्दार्थोऽभिहितः ।

अथैवं मन्यते यदाभासपरिकल्प्यौ व्यामिश्र्य सामान्याकारेण गृह्यन्त इति ? तदा परमार्थेऽप्येष प्रसङ्गः स्यात्, तस्यापि वचनीयस्वाभाव्ये व्यवस्थितत्वेन अभिधेयत्वात् । न च परमार्थसत्येऽपि सङ्गृह्यन्ते, तद्वस्तुसत्तायाः सत्त्वात् । सत्यान्तरविशेषपूरकाकारा अपि ते न भवन्ति । यदि प्रतीत्योत्पन्ना रूपादयः, प्रत्यात्माधिगम्याः सुखादयश्चापि 'संवृतिसत्यम्' इति नाम्ना प्रज्ञप्यन्ते, तदा मुदा तथा कुर्युरिति, कुल्माषमपि दातव्यमिति, कतिपयेनाविपर्ययेणाविवादश्चेति ।

(६९) अथ क्षणमात्रानन्तरानवस्थानेन अस्थिरार्थः संवृत्यर्थस्तद्-विपरीतश्च नित्यार्थः परमार्थ इति सिद्धसाधनमेवैतत्, भवद्भिरेवं वस्तुनः क्षणिकत्वस्वीकारात्, वयमप्येवमभ्युपगच्छामः । अतो नास्ति विवादः । तथा सांवृतिकानां वस्तुसामान्यलक्षणानां या नैरात्म्यरूपा धर्मता साऽस्ति परमार्थतः । साऽपि उत्पादाद् वा तथागतानामनुत्पादाद् वा सर्वकालमविकारतया नित्या-ऽभ्युपेयते।

(७०) अथ असत्यार्थः संवृत्यर्थ इति तदा कथं सा सत्यमिति, परस्पर-विरुद्धयोः सत्यासत्ययोरैकात्म्यानुपपत्तेः । भावस्वभावैव काचन संवृतिरभ्युपगन्तव्या, अन्यथा कथं जगत् तया सत्यं सिध्येत्, यदि तदभ्युपगम्यते, तदा (भवतः) प्रतिज्ञातार्थहानिः स्यात् ।

(७१) अन्यच्च संवृतिः प्रमाणमप्रमाणं वा ? यदि प्रमाणं कथं सा संवृतिः? अथाप्रमाणं तदा कथं तया नैरात्म्यं साधयितुं शक्येत ?

(७२) अवश्यमतः संवृतिबीजानि विज्ञानादीनि परमार्थतः सन्तीत्यङ्गीकर्तव्यानि, ऋते बीजं संवृत्यनुत्पत्तेः, यद् बीजं तदेव वस्तुतः सदिति ।

(७३) अपि च, यदि भावस्वभावा अभ्युपगम्यन्ते तदा तेष्वारोपितो मिथ्यास्वभावः संवृतिसत्यम्, अनारोपितस्तु भावस्वभावः परमार्थसत्यम् । ततश्च सत्यद्वयविभाजनं तावद् युज्यते । यदि नाभ्युपगम्यन्ते, तदा संवृतिरपि वितथा स्यात् परमार्थोऽप्यशक्यव्यवस्थानः स्यात्, व्यवस्थाकारणानामसत्त्वात् ।

(७४) यदि यथाकथञ्चन कश्चिदेकः परमार्थः स्यात्तदा किमर्थं स साध्यते ? स नैव परमार्थः, कथं स ज्ञानेनावधारयितुं शक्यते, न च परमार्थशब्देनाप्यभिधातुमर्हः । एवं तावन्नायं परमार्थः, न चार्थोऽपि परमः, नापि परमस्य ज्ञानस्यायमर्थः, साधारणत्वात् । यदि यथाकथञ्चन कश्चिदेकः परमार्थः स्यात् तदा परमार्थतोऽसद्भावस्यैकस्य यथाकथञ्चन निराकरणाद् भावसत्ताया एवाभ्युपगमः स्यात् ।

(७५) अपि च, यदि संवृतिपरमार्थावभिन्नाविति मन्यते, तदा सत्यद्वयव्यवस्थानं कथं स्यात्, द्वयोरेकतरस्य परित्यागात् । अथ भिन्नौ तदोभयोः पृथक्सिद्धत्वाद् भावप्रसङ्गः । अथ भिन्नाभिन्नौ, तदा कथमेकस्मिन् परस्परविरुद्धत्वम् । अतः पक्षोऽयम् 'न भिन्नो नाप्यभिन्नः' इति न युज्यते, विरुद्धत्वात् । एवं भिन्नाभिन्नत्वस्य अन्योऽन्यपरिहारस्थितलक्षणत्वेन एकस्य प्रतिषेधेऽपरस्य विधानं न भवेत्तदा असत्त्वमेव । स तदा प्रतिषेद्धुमपि कथं शक्तः, एकस्मिन् युगपत्पर्युदासप्रसज्ययोर्विरोधात् ।

(७६) अन्यच्च, भवतामनुसारेण तु पुण्यज्ञानसम्भारौ दुष्परिपूरणौ स्याताम्, तदभावे च बुद्धत्वमपि दुष्प्रापं स्यात् । पूजाऽनुग्रहकाम्यया यद् दीयते तद् दानं त्वत्यन्तं प्रसादमभिनिर्वर्तयति, तच्च नास्ति देयदायकप्रतिग्राहकानुपलम्भाश्रितत्वात् । स चानुपलम्भः किं देयाभावाद् वा विषयाभावाद् वा भवति ? प्रथमे तावत् पक्षे न कोऽपि किमपि ददातीति पुण्यस्यैवाभावः प्रसज्यते, सत्त्वाभावाच्च यो हि बोधिसत्त्वानां सत्त्वार्थपरिश्रमः, स निरर्थक एव स्यात्, अतोऽसत्त्वं तु नास्त्येव । विषयाभावोऽपि तावन्नास्ति, भगवता देयादिवस्तूनां परिदृष्टत्वात् । यद्येवं न स्यात्तदा

भगवता बोधिसत्त्वावस्थायां कथमर्थिभ्यः पुत्रादिदानं कृतम् ? भवन्तस्त्वालम्बनाश्रितं दानादिकं 'विशुद्धम्' इति नाभ्युपगच्छन्ति, अतः सम्भारपारिपूरिस्तावदसम्भवैव । तदभावे हेत्वभावाद् बुद्धत्वमपि दूरेऽपास्तं स्यात् ।

(७७) अपि च, 'सर्वे धर्मा निःस्वभावाः' इत्येतस्य तावत् को ह्यर्थः ? यदि स्वयम्भावस्य अभावान्निःस्वभावा इत्यभिधीयन्ते तदा सिद्धसाधनमेव, हेतुप्रत्ययाधीनवृत्तित्वात् सर्ववस्तूनाम्, न तान्यहेतुकानीति वयमप्यभ्युपगच्छामः । यद्येवं न स्यात्तदा निरपेक्षत्वान्नित्यं सत्त्वमसत्त्वं वा स्यात् । यद्युच्येत—विनष्टा भावाः स्वस्वभावेनानुत्पन्नत्वात् स्वस्वभावेन न सन्तीति निःस्वभावाः ? इत्येतदपि सिद्धसाधनमेव, अस्माकमपि विनष्टोत्पत्तेरनभ्युपेतत्वात् । यदि चाभिधीयेत—तत्स्वभावेनैव सर्वकालानवस्थानान्निःस्वभावा मन्यन्ते, तदपि सिद्धसाधनमेव, यस्मादुत्पत्तिसमनन्तरविनाशसद्भावात् क्षणिका एव । क्षणिकस्य खलु वस्तुनो द्वितीये क्षणेऽवस्थानं नाभ्युपेयते ।

यद्युच्येत यथा बालपृथग्जनैः परिकल्पितस्य ग्राह्यग्राहकभावस्य परमार्थेन स्वभावतोऽसत्त्वाद् असत्त्वं तथा निःस्वभावत्वमिति तदपि सिद्धसाधनम्, अस्माभिरपि परिकल्पितात्मनो निःस्वभावत्वस्याभ्युपगमात्। यद्येवं न स्यात्तदा सर्वेऽपि तत्त्वदर्शिनः स्युः ।

परमार्थतः सर्वे भावा बालपृथग्जनैः परिकल्पितेन ग्राह्यग्राहकारेण विरहिता अपि आर्यज्ञानस्य अद्वैतात्मना गोचरत्वेन स्थिता एव। यद्येवं न स्थिताः, तथाप्यसत्त्वेन निःस्वभावास्तदा सङ्क्लेशव्यवदानौ न स्याताम् ।

(७८) तथैव सर्वधर्मानुत्पादोऽप्यभिहितः । किं तदनुत्पादतायास्तावदर्थं मन्यसे ? यद्युच्येत आदितोऽनुत्पन्नत्वात् सर्वे भावा अनुत्पन्ना इति तदपि सिद्धसाधनमेव, वयमपि संसारमनादिं मन्यामहे । अथ पूर्वमुत्पन्नस्य वस्तुनः पुनरनुत्पत्त्या सर्वे धर्मा अनुत्पन्ना इति तदपि सिद्धसाधनमेव, वयमपि पूर्वमुत्पन्नस्य पुनरुत्पत्तिं नाभ्युपगच्छामः, तस्य विनष्टत्वात् । अथ अपूर्वोत्पादाभावादनुत्पादोऽभिधीयते, तदपि नानिष्टसाधकम्, संसारेऽपूर्वसत्त्वानभ्युपगमात्, सर्वदा च पूर्वविनष्टानां सजातीयोत्पत्तेः । अथ बालपृथग्जनपरिकल्पितस्य स्वलक्षणतोऽनुत्पादादनुत्पाद उच्यते, तदापि नास्ति विरोधः, कल्पितस्य स्वभावत उत्पत्तेरनभ्युपगमात् ।

अथ स्वतोऽनुत्पादाद् अनुत्पाद इत्युच्येत तदापि नास्ति विरोधः, हेतुप्रत्ययाधीनत्वात् सर्ववस्तूनाम्, यथा पूर्वमुक्तम् । यदि सर्वशः सर्वानुत्पादाद् अनुत्पाद उच्यते तदा दर्शनादिविरोधो दुर्निवारः स्यात् । यदि परस्पर-विशेषानुत्पादाद् अनुत्पादोऽभिधीयते तदा (यदि) तथतास्वभावतामुपादायोच्यते तदा नास्ति दोषः, (किन्तु) यदि लोकप्रसिद्धस्वभावतामुपादायोच्यते तदा केन दर्शनादिविरोधो निवारयितुं शक्यते । यदि स्वभावेतरक्रियालक्षणवियोगाद् अनुत्पाद इति ? तदापि नास्ति दोषः, सर्वभावेषु क्रियाया अभावात् । अथेश्वरादिभि-रितरैरनुत्पादाद् (अनुत्पादः) उच्यते, तदापि नानिष्टम्, (अस्माभिरपि) ईश्वरादेरन-भ्युपगमात् । एवमादिभिराकारैः 'आदिशान्ताः, प्रकृतिपरिनिर्वृत्ताः' इत्यादिशब्दा-नामप्यर्था विचारणीयाः ।

अपि च, अन्यैरनेकसूत्रैश्चापि विरोधः संल्लक्ष्यते, तथा हि आर्यसन्धि-निर्मोचनसूत्रे ह्युक्तम् :

''अतो लक्षणनिःस्वभावतामभिसन्धाय मया सर्वधर्माणामनुत्पादः परिकीर्तितः ।[१]''

परिकल्पितस्वभावे हि लक्षणनिःस्वभावता व्यवस्थाप्यते ।

महायानप्रसादप्रभावने (नाम महायानसूत्रे) चोक्तम् :

''कुलपुत्र, बोधिसत्त्वः धर्ममयोनिशः शब्दशः प्रविचय्य महायान-प्रसादायतनो न भवति । शब्दशोऽनभिप्रेत्य योनिशो मनसि कृत्वा महायान-प्रसादायतनो भवति । एवं कुलपुत्र, बोधिसत्त्वोऽयोनिशः शब्दशो धर्मान् प्रविचय्य अष्टाविंशतिमसद्दृष्टीरुत्पादयति, तद्यथा—निमित्तदृष्टिः, अदृष्टिदर्शनदृष्टिः, व्यव-हारापवाददृष्टिः, संक्लेशापवाददृष्टिः, तत्त्वापवाददृष्टिश्चेति'' इत्येवमादिकं विस्तरेणाभिधाय :

''कुलपुत्र, का हि तावन्निमित्तदृष्टिः ? सांयोगिकस्य स्वभावमभिसन्धाय मया सर्वधर्माणां यदसत्त्वं सम्प्रकाशितं तच्छब्दशोऽभिनिविश्य(ये) सांक्लेशिक-धर्माणां वैयवदानिकधर्माणां चाप्यसत्त्वेऽभिनिविशन्ते, असन्निमित्तोपादानेन (तेषु)

---

१. आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्र, दे० क०, पृ० १७ क।

असद्दृष्टिरुपजायते, अतः (सैव) निमित्तदृष्टिरुक्ता । (अतः) बोधिसत्त्वस्य शब्दशोऽभिनिविष्टायामसद्दृष्टिः सैव तस्य महती दृष्टिरिति, अत एव सा अदृष्टिदर्शनदृष्टिरित्युच्यते । ततो व्यवहारापवाददृष्टिसंक्लेशापवाददृष्टितत्त्वापवाद-दृष्टयस्तावज्जायन्ते यदा निमित्तदृष्ट्या सर्वापवादः (यदा) क्रियते तदा व्यवहारापवाददृष्टेरप्यभिनिवेशो जायते, संक्लेशापवाददृष्टेरप्यभिनिवेशो जायते, तत्त्वापवाददृष्टेरप्यभिनिवेशो जायते" इत्येवमुक्तम् ।

लङ्कावतारसूत्रेऽप्युक्तम् :

नास्ति वैकल्पितो भावः परतन्त्रश्च विद्यते ।
समारोपापवादं हि विकल्पन्तो विनश्यति ।।

(लङ्कावतारसूत्र, २ : १८९)

परिकल्पितं स्वभावेन सर्वधर्मा अजानकाः।
परतन्त्रं समाश्रित्य विकल्पो भ्रमते नृणाम् ।।

(लङ्कावतारसूत्र, १० : ५०)

अतः प्रतीत्यसमुत्पन्नः परतन्त्रस्वभावः परमार्थतः सन्, तत्र परिकल्पित-स्वभावोऽनुत्पादादिनाऽभिहित इत्येवं तावन्निर्देक्ष्यते । पुनस्तत्रोक्तम् :

न ह्यात्मा विद्यते स्कन्धे स्कन्धाश्चैव हि नात्मनि।
न ते यथा विकल्प्यन्ते न च ते वै न सन्ति च ।।

(लङ्कावतारसूत्र, १० : १३५, ३ : ३५)

आभ्यां द्वाभ्यां प्रतिषेधाभ्यां स्कन्धानां सत्तैव तावन्निर्दिष्टा । महा-शून्यतासूत्रेऽपि यदुक्तम् :

"अस्ति कर्म अस्ति विपाकः कारकस्तु नोपलभ्यते" अनेन तावद् वचनेन विरोधोऽपि समुपजायते । एवं यदि परमार्थतः कर्माप्यस्ति विपाकोऽप्यस्ति तदा सर्वे धर्मा निःस्वभावा भवितुं नार्हन्ति । यदि संवृतौ सन्तीति चेत् तदा कर्तुरपि संवृतौ सद्भावात् "कारकस्तु नोपलभ्यते" इत्येवं न वक्तव्यम् । आर्यलङ्कावतार-सूत्रे चोक्तम् :

अस्तित्वं सर्वभावानां यथा बालैर्विकल्प्यते ।
यदि ते भवेद् यथा दृष्टाः सर्वे स्युस्तत्त्वदर्शिनः ।।

अभावात्सर्वधर्माणां संश्लेषो नास्ति बुद्धितः ।
न ते तथा यथा दृष्टा न च ते वै न सन्ति च ।।

(लङ्कावतारसूत्र, ३ : ३६-३७)

अनेन यदि सर्वधर्माणामसत्त्वं तदा संक्लेशव्यवदानयोरपवाददोषः प्रसज्यत इति निर्दिष्टम् । पुनस्तत्रैवोक्तम् :

बाह्यार्थदर्शनं मिथ्या नास्त्यर्थं चित्तमेव तु ।
युक्त्या विपश्यमानानां ग्राहग्राह्यं निरुध्यते ।।

बाह्यो न विद्यते ह्यर्थो यथा बालैर्विकल्प्यते ।
वासनैर्लुलितं चित्तमर्थाभासं प्रवर्वते ।।

(लङ्कावतारसूत्रम्, १० : १५३-१५४)

आर्यदशभूमकसूत्रेऽप्युक्तम् "चित्तमात्रं यदुत त्रैधातुकम्" इति । तथैव आर्यसन्धिनिर्मोचनलङ्कावतारघनव्यूहादिष्वपि सर्वधर्माणां चित्तमात्रशरीरत्वं निर्देष्टुं 'चित्तमात्रमेव परमार्थसत्, नेतरथा' इति सम्प्रदर्शितम्। अतः सर्वे धर्मा निः-स्वभावत्वेन न सिध्यन्ति । आर्यरत्नकूटेऽप्युल्लिखितम् :

"अस्तीति काश्यप, अयमेकोऽन्त, नास्तीति काश्यप, अयमेकोऽन्तः, यदेनयोरन्तयोर्मध्यम्, तदरूप्यनिदर्शनमप्रतिष्ठमनाभासमनिकेतमविज्ञप्तिकम्, इयमुच्यते काश्यप, मध्यमा प्रतिपद् भूतप्रत्यवेक्षा" इति । (प्रसन्नपदायामुद्धृतम्, पृ० ११७)

अनेन तावद् विज्ञानमेव परमार्थसत्त्वानिदर्शनत्वादिगुणोपेतं शाश्वतोच्छे-दान्तद्वयविनिर्मुक्तमिति निर्दिष्टम् । एतदधिकृत्यैवार्यरत्नमेघेऽप्युक्तम् :

"कुलपुत्र, यदि (विज्ञानं) परमार्थतो नास्ति, तदा ब्रह्मचर्यादीनि निरर्थकानि स्युः" इति । आर्यरत्नकूटे ह्युक्तम् :

"ये परमार्थसतोऽपि विज्ञानस्यापवादं कृत्वा सर्वधर्मशून्यतायाम-भिनिविश्य शून्यतादृष्टिकास्तेऽचिकित्स्याः"[१] इति ।

तथा चोक्तम् :

"वरं खलु काश्यप, सुमेरुमात्रा पुद्गलदृष्टिर्न त्वेवाभिमानिकस्य शून्यता-दृष्टिरिति"।

---

१. द्र०-दे० क०, रत्नकूटे, 'छ'-पृ० १३२ ख ।

आर्यसन्धिनिर्मोचने चापि शून्यतालक्षणमुद्भावितम् :

"परतन्त्रलक्षणं मैत्रेय, परिनिष्पन्नलक्षणं च संक्लेशो व्यवदानं च । सर्वथात्यन्तवियुक्तं परिकल्पितलक्षणं यत्तन्न तेनोपलभ्यत इदं शून्यतालक्षणमुक्तं भवति"[१] ।

आर्याणां प्रत्यात्मवेद्यमवश्यमेव परमार्थतो वस्तुसत्, अन्यथा आर्यसन्धिनिर्मोचनोक्तानि वचनानि तावदसदर्थकानीति नैव । यद्युच्येत किं खलु वस्तु ? यदार्यज्ञानेन आर्यदर्शनेन वाऽनिर्वचनीयत्वेन परिज्ञातम् । अनिर्वचनीयधर्मताऽवबोधेन संस्कारासंस्काराभ्यां प्रज्ञप्तमिति यदुक्तं तेन विरोधः स्यादिति ।

एकमेव यानं परमार्थतो महायानलक्षणं, नावशिष्टमिति यद् भवताऽभिहितं तदपि युक्त्यागमाभ्यां विरुद्धम्, विप्रतिपत्तीनां सन्दर्शनात् । सत्त्वेषु तावद् विविधाधिमुक्तिका उपलभ्यन्ते । तथा हि केचन परहिताशया एव प्रवर्तन्ते । अथापरे निष्कारणं परदुःखेषु स्पृहन्ते । केचित्त्वल्पमात्र एवात्मनो हितसुखे आसज्यान्येषु द्रुह्यन्ति । तथैवान्ये स्वसुखसम्पत्तिसाधनतत्परा अन्यव्याघातं कृत्वा तद्दुःखविनिवृत्तितो विरज्यन्ते । केचन संसारसुखमात्रस्यैवाभिलाषेण पुण्यादीनि सम्पादयन्ति। तथैवेतरे तावद् भवान्तरसुखेच्छातो विरम्य स्वमुक्त्यर्थं प्रयतन्ते । अन्ये तु केवलं परविमुक्तिमेवानुचिन्तयन्ति संबोधिनिदानां च दानादिपारमिताप्रवृत्तिमालम्बन्ते । इत्येवमप्रमेयप्रतिपत्त्यालम्बनात् सत्त्वानां छन्दलक्षणो हेतुविशेषोऽनुमीयते, फलविशेषोऽपि हेतुविशेषाक्षिप्तत्वात्तस्य । स्वाभिलाषद्वारेणैव प्रवृत्तिदर्शनाद् श्रद्धैव हि प्रवृत्तिहेतुरिति निश्चितम् । सत्त्वानामयं श्रद्धाविशेषोऽपि गोत्रविशेषेणाविनाभूतः, अतो नानागोत्रत्वात् सत्त्वानां तुल्यजातीयगोत्रकैर्विधीयमानप्रतिपत्तिविशेषानुरूपं फललक्षणयानमपि नाना भवतीति युक्तिभिर्नानायानतैव निश्चीयते ।

बहुधातुकसूत्रेऽपि[२] बहुधातुकाः सत्त्वा विनिर्दिष्टाः । भगवता यत्खलु धातुज्ञानबलानां नानात्वमभिहितम्, तदपि नानाधातुत्वं किमिव असत् स्यात् । आर्यलङ्कावतारसूत्रेऽपि पञ्च अभिसमयगोत्राण्यभिहितानि। आर्याक्षयमतिनिर्देशसूत्रेऽप्युक्तम्—त्रीणि तावन्नैर्याणिकयानानि, यदुत—श्रावकयानं प्रत्येकबुद्धयानं

१. द्र०-दे० क०, 'च'-पृ० १४ ख।
२. द्र०-दे० क० 'श'-पृ० २९७-३०१ ।

महायानं चेति । एवमेवानेकेषु सूत्रेष्वपि श्रावकादियानत्रयनिर्देशाद् आगमतोऽपि तावन्नाना यानानि सिध्यन्तीति।

आर्यसद्धर्मपुण्डरीकादिषु[1] यद्धि एकं हि यानमिति व्यपदिष्टम्, तदाभि-प्रायिकमिति द्रष्टव्यम् समताभिप्रायादिप्रदर्शनात् । धर्मधातुलक्षणतया यानानां भेदाभावाद् एकमेव यानमिति तदभिप्रायः । अथवा यानीकृतं यानमिति यानीकुर्वतां श्रावकादिपुद्गलानां नैरात्म्येऽतुल्यत्वाभावाद् एकमेव यानम् । अथवा ये विमुक्तास्तेषामभिन्नत्वाद् एकमेव यानम् । अथवा अनियतगोत्रकाणां श्रावकाणां महायानेनैव निर्याणाद् एकमेव यानं देशितम् । अथवा सर्वसत्त्वेष्वात्माध्याशयेन महाकरुणामया भगवन्तः, पूर्वं समुदानीतबोधिसम्भाराः श्रावकगोत्रीयाश्चापि बुद्धत्वप्राप्त्यध्याशयाः, अतोऽभिन्नाध्याशयाद् एकमेव यानम् । अथवा भगवता स्वयमनेकधा श्रावकयानादिभिर्निर्याणद्वारैः परिनिर्वाणसन्दर्शनाद् एकमेव यानम् । अथवा नास्ति महायानाद् विशिष्टतरं यानान्तरमिति तदधिकाराद् एकमेव यानमिति, तदेवंविधाभिप्रायेण एकमेव यानमिति देशितम् । अथवा अनियतानां श्रावकगोत्रीयाणामाकर्षणार्थं बोधिसत्त्वगोत्रीयाणां च सन्धारणार्थमित्यभिप्रायो भगवतैव आर्यदशधर्मकसन्धिनिर्मोचनलङ्कावतारादिषु सूत्रेषु स्पष्टीकृतः ।

अन्यच्च, नैकभवपरम्परायां सम्भारान् परिपूर्य बोधिसत्त्वा बुद्धत्वपदमधि-गमिष्यन्ति । श्रावका अशेषभवसंयोजनं प्रजहन्तीति तेषां नैकजन्मसाध्यं बुद्धत्वमधिगन्तुं कोऽपि भवप्रतिसन्धिर्नैव सम्भवति, तथा हि—मूलं भवस्यानुशयाः[2] यदुक्तं सोऽप्यात्मग्रहप्रभव एवेति नियतम् अभीष्टं च । आर्यैरात्मदृष्टिविपरीतया नैरात्म्यमार्गभावनया सर्वानुशयाः समूलमुच्छिन्नाः, तत्समुच्छेदेन तेषां जन्मनोऽप्या-धारस्याभावात् तद् (जन्म) अपि समुच्छिद्यते । फलतः कुतस्तेषामनेक-भवपरम्परासाध्यो बुद्धत्वलाभो भविष्यतीति । आर्यसद्धर्मपुण्डरीके भगवता यच्छ्रावकेभ्यो बुद्धत्वाधिगतेर्व्याकरणं कृतं तत्तु निर्मितश्रावकाणां निर्माणस्य, यैर्बोधौ परिणामना कृता, तेषां वाऽभिप्रायेण कृतमिति द्रष्टव्यम् । इदं तावद् भगवता आर्यलङ्कावतारसूत्रादिषु निर्दिष्टमेव । आर्यसमाधिराजसूत्रे यत्तावदुक्तम् :

अत्र नास्ति कोऽपि सत्त्वोऽभव्यः ।
सम्पूर्णोऽयं सत्त्वलोको बुद्धो भविष्यति ।।

---

१. द्र०-दे० क, 'ज'-पृ० १-१८० ।
२. अभिधर्मकोश, ५:१ ।

तदप्युच्यमानमुपगतानभिप्रेत्याभिहितमिति ज्ञातव्यम् । कतिपयेषु (सूत्रेषु)— "तथागतगर्भाः सर्वे सत्त्वाः" इति यदुक्तं तदपि तथतालक्षणायास्तथताया अभिप्रायेण व्यपदिष्टम् । अतः परमार्थ-तस्त्रीण्येव यानानि, सर्वे धर्माश्च सस्वभावा इत्यभिधीयते। इत्ययं पूर्वपक्षः।

(१) ततश्चायं प्रत्यवस्थीयते । तत्र तावद् 'नागमतः सर्वे धर्मा निःस्वभावत्वेन साधयितुं शक्याः, केनापि तथाभ्युपगमाभावाद्' इत्याद्युक्तं तन्निरुच्यते । किं केनाप्यनभ्युपेतत्वादागम एकान्तेनानुपादेय एव भवत्युत उपादेयोऽपीति ? प्रथमस्तावत् पक्षो न युक्तः । तथा सति न कोऽपि कमप्यागममाश्रयिष्यति, केनचिदपि तदनभ्युपेतत्वात् । तत्र कश्चिद् अभिमानितया वा, अनर्थितया वा, पापमित्रसंसर्गेण वा, विमूढचित्ततया वा, सुकल्यामित्रानुपलम्भेन वा, परप्रत्ययनेयतया वा, श्रद्धेन्द्रियादिवैकल्येन वा ? तद्विदां सुधियां विरहेण भगवत आदिमध्यपर्यवसानकल्याणं प्रवचनरत्नमनाश्रिता अपि किं तावदधिगतस्वपरहित-सम्पादनोपायं तर्कनिपुणं विद्वांसमपि नाश्रयिष्यन्ते ?

अथवा, अज्ञा वणिजो यथा विमुग्धतयाऽनर्घं रत्नमपि परित्यजन्ति तथा सुविज्ञास्तर्कनिपुणा अपि वणिजस्तन्न परिगृह्णन्तीति न । तापाच्छेदाच्च निकषात् सुवर्णमिव प्रत्यक्षानुमानपूर्वपराविरुद्धागमैरविरुद्धत्वात् परेषाञ्चागमानां तद्विपरीत-त्वाद् आभ्युदयिकनैःश्रेयसिकफलमाप्तुकामा अशेषसम्पदमधिगन्तुकामा विपश्चितस्तं (विपरीतागमं) परित्यज्य यदेकान्तकुशलं तत्प्रवचनरत्नमेवाश्रयन्तीति यः पक्षः, स चेत् सम्यगिति तदा भवन्तोऽपि यदि भगवत्प्रवचनं सुपरीक्ष्यैवाभ्युपयन्तीत्यतो भगवता प्रज्ञापारमितादिषु यो हि मध्यमो मार्गः सुस्पष्टमादिष्टस्तं किन्नाश्रयिष्यन्तीति ?

यदि स्वयं तमाश्रयितुं न शक्तास्तथाप्यार्यनागार्जुनपादैर्यो ह्यनेक-युक्तिप्रदीपप्रकारैः सुस्पष्टं निर्दिष्टस्तद्बलेनापि किमिव नाभ्युपगच्छन्ति? यतो हि स आचार्यस्तावद् भगवद्वचननिर्दिष्टत्वेन प्रथमां भूमिमासादितत्वेन चार्य-लङ्कावतारादौ व्याकृतः । तस्यापि यदि निर्देशो विपर्यस्तः स्यात्तदा नैव तावद् भगवता तथा व्याकृतः स्यात् । अतो यद्याचार्यवचनं त्यज्यते तदा भगवद्वचनमपि नूनं परित्यक्तं भवेत् । फलत आर्यनागार्जुनपादप्रतिपादितं मार्गं परित्यज्य अनार्यपुद्गलप्रदर्शितपथाश्रयणं तावन्नैव युज्यते ।

न वयं शब्दानां भाविकः कश्चन सम्बन्ध इति मन्यामहे । अतस्तन्निषेधतो न (ते) अनभ्युपगता भविष्यन्तीति । ते तावत् (शब्दाः) सङ्केताभिज्ञानेन व्यवहारे

वक्तुरिच्छां द्योतयन्ते । अर्थावस्थादिभिरभ्रान्तपुरुषैरभिहिताः शब्दाः विवक्षितार्था-सम्बद्धा इति न सर्वथा निश्चेतुं शक्यते, अन्यथा सर्वव्यवहारोच्छेद एव स्यादिति ।

क्षीणरागद्वेषमोहानां शब्दा अविपरीतार्था इति प्रतिपादनेन सर्वेषां शब्दा विपरीतार्था एवेति न, स्वसन्ततौ विनियतत्वात्तेषाम् । अतस्त्रिरूपलिङ्गानि परीक्षणपरिशुद्धानि· आदिमध्यान्तकल्याणनियतानि तावद् वचनानि अविसंवाद-कत्वाद् विद्वद्भिः समाश्रयणीयान्येव ।

(२) न वयं तथागतवचनप्रतिहतेभ्यस्तीर्थिकेभ्यस्तत्सिद्धये भगवद्-वचनप्रामाण्यं प्रतिपादयामस्तथापि यदा आगमार्थं विचिन्तयामस्तदा व्याकरण-प्रमाणत्वेन सम्प्रदर्शयामः। तत्प्रतिपादकं भगवद्वचनं नास्तीत्येतदपि कथनं नोचितम् । भगवताऽप्येवमेव नीतार्थसूत्रसमाश्रयणमेवाभिहितम्, न नेयार्थसूत्र-समाश्रयणमिति ।

यद्युच्येत कोऽयं परमार्थो नामेति चेत् ? प्रमाणोपपन्नः परमार्थाधिकृतश्चेति। अथवा यदर्थो नान्यत्र नेतुं शक्यत इति । सर्वधर्मा-नुत्पादस्तावत् प्रमाणोपपन्नार्थः, अतो युक्त्यन्वितत्वात् स परमार्थ इत्युच्यते। आर्यधर्मसंगीतावुक्तम्[१]—अनुत्पादः सत्यम्, उत्पादादयोऽन्ये धर्मा असत्याः, मृषा मोषधर्मकत्वात् । आर्यसत्यद्वय-निर्देशेऽप्युक्तम्[२] ''देवपुत्र, अर्थो हि परमार्थतोऽनुत्पादः, अयं तावत् सर्वसंक्लेश-व्यवदानधर्मेषु व्यवस्थाप्यते, न कतिपयेषु'' । एवमेव पुनस्तत्रैवोक्तम्—''तद्यथापि नाम देवपुत्र, यच्च मृद्भाजनस्याभ्यन्तरमाकाशम्, यच्च रत्नभाजनस्याकाशम् आकाशधातुरेव एषः । तत्र परमार्थतो न किञ्चिन्नानाकरणम् । एवमेव देवपुत्र, यः संक्लेशः, स परमार्थतोऽत्यन्तानुत्पादता । यदपि व्यवदानं तदपि परमार्थतो-ऽत्यन्तानुत्पादता । संसारोऽपि परमार्थतोऽनुत्पादता । यावन्निर्वाणमपि परमार्थतो-ऽत्यन्तानुत्पादता । नात्र किञ्चित् परमार्थतो नानाकरणम् । तत् कस्माद्धेतोः ? परमार्थतोऽत्यन्तानुत्पादत्वात् सर्वधर्माणामिति''[३] । एवमयमनुत्पादोऽपि परमार्था-नुकूलत्वात् परमार्थ उच्यते, न वस्तुतः, सर्वप्रपञ्चातीतत्वाद्धि वस्तुतः परमार्थस्य । अतो यानि च यावन्ति च परमार्थमधिकृत्य अनुत्पादीनि लक्षणानि निर्दिष्टानि तानि

---

१. आर्यधर्मसंगीतिनाममहायानसूत्रम्, दे० क०-'ज़', पृ० ६ ।
२. आर्य-संवृतिपरमार्थसत्यनिर्देशनाम महायानसूत्रम्, दे० क०, पृ० २४७ ।
३. द्र०- प्रसन्नपदा, पृ० १५९-६० (दरभंगा-संस्करणम्, १९६०) ।

सर्वाणि नीतार्थत्वेन ग्रहीतव्यानि, अतो विपरीतानि नेयार्थानीति । आर्याक्षयमतिनिर्देशसूत्रे[1] तावन्नेयनीतार्थलक्षणं निर्दिष्टम्, तथाहि—

के सूत्रान्ता नेयार्थाः ?

यावद् ये सूत्रान्ता संवृतिप्रतिपत्तये निर्दिष्टास्त उच्यन्ते नेयार्थाः, यावद् ये सूत्रान्ताः परमार्थप्रतिपत्तये निर्दिष्टास्त उच्यन्ते नीतार्थाः ।

यावद् ये सूत्रान्ता नानापदव्यञ्जनानि निर्दिशन्ति, त उच्यन्ते नेयार्थाः, यावद् ये सूत्रान्ता गम्भीरदुर्दर्शदुर्ज्ञेयानि निर्दिशन्ति, त उच्यन्ते नीतार्थाः ।

यावद् ये सूत्रान्ता आत्मसत्त्वजीवपुरुषपुद्गलमनुजमानवकारकवेदकान् अनेकरुतैरस्वामिकान् स्वामिन इव निर्दिशन्ति, त उच्यन्ते नेयार्थाः । यावद् ये सूत्रान्ताः शून्यताऽनिमित्ताप्रणिहितानभिसंस्काराजातानुत्पादाभावनिरात्मनिःसत्त्वनिर्जीवनिःपुद्गलास्वामिकविमोक्षमुखा निर्दिष्टास्त उच्यन्ते नीतार्थाः—इति विस्तरः।

सूत्रान्तरेषु 'तावदनुत्पादादिनिर्देशा अभिप्रायान्तरेण नीतार्था इत्यभिहिताः'—इति यदुक्तम्, तदपि न सम्यक् । एवं हि स्थितौ आत्मादिनिर्देशा अपि नीतार्थाः स्युः । अतः परमार्थाभिधायको नीतार्थस्तद्विपरीतो नेयार्थ इत्यवबोद्धव्यम्। आर्यसर्वबुद्धविषयावतारज्ञानालोकालङ्कारेऽप्युक्तम्—'यो हि नीतार्थः, स परमार्थ इति''[2] । आर्याक्षयमतिनिर्देशसूत्रे च अनुत्पादादयो नीतार्था उक्ताः । अतश्चैवमनुत्पादादय एव परमार्था इति नियतम् ।

यद्येवं तदा कथं भगवता आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्रे त्रिविधस्य स्वभावस्य त्रिविधां निःस्वभावतामभिप्रेत्य सर्वे धर्मा निःस्वभावाः, प्रोक्ता इति चेद् ?

नास्ति दोषः । ये तावत् केचित् संवृतिस्वभावमप्यपवदन्ति, अथ चासच्छास्त्रश्रवणाभिनिवेशवशाद् विपर्यस्तमतयः संवृतौ असन्तमनृतमपि नित्यादिवस्तुरूपतया समारोप्य यथा रूपप्रतिभासं तथैव परिगृह्णन्ति, ते आरोपापवादान्तद्वयपतिततमतितया अन्तद्वयरहिते परमगम्भीरे परमार्थनयसागरे नानुप्रविशन्ति । अतएव तावद् भगवान् 'अनुत्पादादिनिर्देशः परमार्थाधिकृतः' इति

१. आर्यक्षयमतिनिर्देशसूत्रम्, दे० क०-'म०', पृ० १५९ ।
२. द्र०-दे० क०, 'ग', पृ० २९१-ख ।

निरुच्य त्रिविधनिःस्वभावताभिप्रायप्रतिपादकमन्तद्वयरहितं मध्यमपथं प्रकाशयितुं नीतार्थमेव मतं प्रतिष्ठापितवान् । न च माध्यमिकास्त्रिविधनिःस्वभावताव्यवस्थानं नाभ्युगच्छन्तीति, अन्यथा दर्शनादिविपरीतं कथं परिहरेयुरिति ।

तत्राविचारितं तावद् वस्तु यथाप्रतिभासं मायावत् प्रतीत्यसमुत्पन्नम्, तच्च परतन्त्रस्वभावम् । तत्रापि संवृतौ मायावत् परप्रत्ययेन तस्योत्पादः, न तु स्वयंभावः। अत एव उत्पत्तिनिःस्वभावतायां तद् व्यवस्थाप्यते । 'यः प्रतीत्यसमुत्पन्नः स स्वभावतः शून्य इति विद्वांसो निर्धारयन्ति । न हि स्वभावो नाम कृत्रिमः । अभूत्वा भावः, भूत्वा चाभावोऽपि तावन्नास्ति, क्रमेणाप्येकस्य सदसत्त्वाम्यां विरुद्धत्वात् ।

यदुत—

न सम्भवः स्वभावस्य युक्तः प्रत्ययहेतुभिः ।
हेतुप्रत्ययसम्भूतः स्वभावः कृतको भवेत् ।
स्वभावः कृतको नाम भविष्यति पुनः कथम् ।।

अकृत्रिमः स्वभावो हि निरपेक्षः परत्र च ।
कुतः स्वभावस्याभावे परभावो भविष्यति ।

(मूलमाध्यमिककारिका १५ : १-२)

भगवताऽपि आर्यानवतप्तनागराजपरिपृच्छासूत्रे निर्दिष्टम्[१]—

यः प्रत्ययैर्जायति स ह्यजातो
न तस्य उत्पादु स्वभावतोऽस्ति ।
यः प्रत्ययाधीनु स शून्य उक्तो
यः शून्यतां जानति सोऽप्रमत्तः ।।

आर्यसागरराजपरिपृच्छासूत्रेऽप्युक्तम्[२]—

यत् प्रतीत्यसमुत्पन्नं तच्च शून्यं स्वभावतः ।
यच्च शून्यं स्वभावेन न हि तच्चास्ति कुत्रचित् ।।

---

१. द्र०-दे० क०, 'फ'-पृ० २३० ख ।
२. द्र०-दे० क०, 'फ'-पृ० ४८ क ।

एतदर्थमेव आर्यपितापुत्रसमागमसूत्रेऽपि प्रतीत्यसमुत्पादप्रवृत्त्या धर्मधातुप्रवृत्तिर्निर्दिष्टा, यदुत—"तत्र भगवन्, अविद्या तु अविद्यात्वेनैवासती । तत्कथमित्युच्येत तर्ह्येवमविद्या तु स्वभावेन विरहिता । यस्मिन् धर्मे नास्ति स्वभावः, स न तावद् वस्तु । यच्च नास्ति वस्तु तदपरिनिष्पन्नम्, यदपरिनिष्पन्नं तदनुत्पन्नमनिरुद्धं च । यदनुत्पन्नमनिरुद्धं तद् 'अतीतम्' इति प्रज्ञप्तुं नैव शक्यते, न च तदनागतं प्रत्युत्पन्नमित्यपि वा प्रज्ञप्तुं शक्यते । यच्च कालत्रयेऽप्यनुपपन्नं तन्नाम लक्षणं निमित्तं प्रज्ञप्तमिति वा न भवति, यतो हि तत् सत्त्वानां ग्रहणार्थं नाममात्रसंकेतमात्र-व्यवहारमात्रसंवृतिमात्राभिधेयमात्रप्रज्ञप्तिमात्रेभ्योऽतिरिक्तं नास्ति। अविद्या तावत् परमार्थतोऽनुपलब्धा । यश्च धर्मः परमार्थतोऽनुपलब्धः, न तत् प्रज्ञप्यः, न व्यवहार्यः, नाभिधेयश्च । अतो हि भगवन् यच्च नाममात्रं संकेतमात्रं न तत्तथ्यमिति"[1] विस्तरेणाभिहितम् । अत एव परतन्त्रस्वभावो न तथ्यत्वे युज्यते, अन्यथा मायादीनामपि वस्तुत्वप्रसङ्गः, तान्यपि प्रत्ययसापेक्षतायां न सन्ति भिन्नानि । अत एव मायाऽभिन्नत्वेन परतन्त्रस्वभावस्तावदुत्पत्तिनिःस्वभावतायां व्यवस्थाप्यते ।

आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्रे[2] चाभिहितम्—यथा मायाकृतं तथैवोत्पत्तिनिःस्वभावतायामुपलक्षणीयम् । मायादितोऽभिन्नो यो हि परतन्त्रस्वभावः, स एव नित्यानित्यादिभिः परमार्थत उपचरितः स एव च परिकल्पितस्वभावः । सोऽपि यथा परिकल्प्यते तथा लक्षणेनासिद्धत्वाल्लक्षणनिःस्वभावतायां व्यवस्थाप्यते । साऽपि निःस्वभावता वस्तुतः परतन्त्रस्वभावे एव स्थिता । यतो हि तस्मिन्नेव (परिकल्पितः) स लक्षणैरुपचर्यते । अत एव यथा अनित्यादिभिः परिकल्पिताः सर्वे धर्माः परमार्थतो लक्षणशून्यत्वेन अनुत्पन्नाः, अत एव चानिरुद्धाः, अत एव आदिशान्ताः, अत एव हि प्रकृतिपरिनिर्वृताः । आर्यसन्धिनिर्मोचनेऽपि यथोक्तम्[3]—

ये तावत् स्वलक्षणेनासन्तस्तेऽनुत्पन्नाः, ये ह्यनुत्पन्नास्तेऽनिरुद्धाः, ये चानिरुद्धास्त आदिशान्ता, ये ह्यादिशान्तास्ते प्रकृतिपरिनिर्वृता इति ।

अत एवाहं लक्षणनिःस्वभावतामभिसन्धाय 'सर्वे धर्मा अनुत्पन्नाः' इति यदुपदिशामि, तदपि यथाशब्दमर्थपरिकल्पनं निराकरोति। परतन्त्रस्वभावश्च यथा

---

१. द्र०-दे० क०, 'रत्नकूट' 'न'-पृ० ८९ ख ।
२. द्र०-दे० क०, 'च'-पृ० १७ ख ।
३. द्र०-दे० क०, 'च'-पृ० १७ ख ।

संवृतौ ह्युक्तस्तथा परिकल्पितात्मना विरहितत्वेन प्रसिध्य संवृतिस्वभावस्यानपवादमपि निर्दिशति, न तु परमार्थत्वेन । अलक्षणस्वभावस्तु न कश्चन युज्यते । यथोक्तम् :

अलक्षणो न कश्चिच्च भावः संविद्यते क्वचित् ।

(मूलमाध्यमिककारिका ५:२)

सर्वे धर्माः परमार्थतः सदा भावनिःस्वभावतायामेव प्रतिष्ठिता भवन्ति । अयमेव तावत् परिनिष्पन्नः स्वभावः, नित्यं तस्यानारोपितत्वेन स्थितत्वात् । स हि प्रमाणैः सम्यगुपपन्नस्वभावतया परमार्थ इत्युच्यते, निःस्वभावताप्रभावितत्वाच्च निःस्वभावोऽपि । अतोऽयं (परिनिष्पन्नः) परमार्थनिःस्वभाव इति ।

अर्यसन्धिनिर्मोचनेऽप्युक्तम्[1]—

"स च परमार्थोऽपि धर्मनिःस्वभावताप्रभावितोऽपीत्यतः परमार्थनिःस्वभावः" इति ।

यन्निदानमनेन निःस्वभावेन सर्वे धर्मा निःस्वभावाः, तन्निदानमनुत्पादादिदेशना नीतार्था । परमार्थाभिप्रायनिर्देशात् स न तावद् दर्शनादिविरुद्धः, न च यथाशब्दं परिकल्पितश्च । अत एव नाभिप्रायनिर्देशोऽपि निहितार्थविरुद्धः परिग्रहीतव्यः ।

अतश्च अभिप्रायनिर्देशोऽपि न नीतार्थविरुद्धो भवतीति । फलतः अनुत्पादिदेशनां नीतार्थां साधयितुं दर्शनादिविरोधं परिहर्तुं यथाशब्दपरिकल्पनं च निराकर्तुम् आर्यसन्धिनिर्मोचने[2] तावदभिहितम्—

अपि च, परमार्थसमुद्गत, परमार्थनिःस्वभावं धर्मनैरात्म्यप्रभावितमित्यभिप्रेत्य मया सर्वे धर्मा अनुत्पन्नाः, सर्वे धर्मा अनिरुद्धाः, आदिशान्ताः, प्रकृतिपरिनिवृत्ताश्च देशिताः ।

यद्येवं महाश्रद्दधानसूत्रे[3] "प्रयोगजं स्वभावमभिप्रेत्य यन्मया 'सर्वे धर्मा असन्तः' इति यदुक्तं तत्र यथाशब्दमभिनिविश्य संक्लेशव्यवदानधर्माणामप्य-

---

१. द्र०-दे० क०, 'च'-पृ० १७ क ।
२. द्र०-दे० क०, 'च'-पृ० १७ ख ।
३. द्र०-दे० क०, प्रज्ञापारमितासूत्रम्-'क' ।

भावमात्रमभिनिविश्य असन्निमित्तग्रहणाद् असद्दर्शनं तद् भवेदित्यतो निमित्तदर्शनं तदुच्यते । एवं विस्तरेण यदभिहितं तत्कथं ग्राह्यमिति ?

अयमपि यथोक्तः परतन्त्रस्वभाव एव, यो हि संवृतौ हेतुप्रत्यय-बलसम्भूतत्वेन मायावन्निस्वभावत्वेन च 'प्रयोगजः' इत्युक्तः ।

प्रज्ञापारमितायामप्युक्तम्—

"प्रयोगजः स्वभावस्तावदसत् प्रतीत्यसमुत्पन्नत्वाद्" इति ।

एतदर्थं यो हि परिकल्पितस्वभाव उक्तः सोऽप्यागन्तुक एव कल्पनाभिनिर्हृतत्वात् । अत एव सः (परतन्त्रः) प्रयोगज इत्युक्तः । स्वभावोऽयं द्विधाऽपि परमार्थतो नैव युज्यते । अतः सर्वे धर्माः स्वभावेनानेन परमार्थतो निःस्वभावाः । न ह्यभावात् संवृतिस्वभावो भवति । यदि स तावदसत् स्यात्तदा संक्लेशव्यवदानधर्मा नैव व्यवस्थापयितुं शक्येरन्, यतो हि तत्प्रभाविता हि ते, न तु परमार्थेन (प्रभाविताः) । एवं हि सूत्रान्तेष्वपि प्रतिपादितमिति । अतो ये परमार्थाभिप्रायं नैव जानन्ति, ते पूर्वस्वभावमपि वस्तुरूपेण परिगृह्य पश्चात्तस्याप्यभावं मत्वा अनुत्पन्नादिदेशनानां शब्दशोऽर्थाभिनिवेशं कुर्वन्ति । ते चाभावादिनिमित्तग्रहणेन निमित्तादिदृष्टयो भवन्ति । अतस्तन्निषेधायैव एतदुक्तम्, न तु माध्यमिकेभ्य एतदुक्तमिति । ते तु तथतां सर्वनिमित्तग्राहप्रतिपक्षां प्रचक्षते । अतस्तेष्वभावादिनिमित्तग्राहो नैव सम्भवति । तथा हि:

अपरप्रत्ययं शान्तं प्रपञ्चैरप्रपञ्चितम् ।
निर्विकल्पमनानार्थमेतत्तत्त्वस्य लक्षणम् ।।

(मूलमाध्यमिककारिका ९ : १८)

अपि च,

अस्तीति शाश्वतग्राहो नास्तीत्युच्छेददर्शनम् ।
तस्मादस्तित्वनास्तित्वे नाश्रीयेत विचक्षणः ।।

(मूलमाध्यमिककारिका १० : १५)

येषु भावाभावादयो निमित्तग्राहा भवन्ति, तेषु नैव सम्भवति तत्त्व-दर्शनावकाशोऽपि, तथा चोक्तम्—

स्वभावं परभावं च भावं चाभावमेव च ।
ये पश्यन्ति न पश्यन्ति ते तत्त्वं बुद्धशासने ।।

(मूलमाध्यमिककारिका १५ : ६)

योऽयं भावाभावाभिनिवेशः, स तावद् भावाभिनिवेशपूर्वक इति सूत्रेषु प्रतिपादितम् । तथा हि लङ्कावतारसूत्रे प्रोक्तम्—

अस्तित्वपूर्वकं नास्ति अस्ति नास्तित्वपूर्वकम् ।
अतो नास्ति न गन्तव्यमस्तित्वं न च कल्पयेत् ।।

(लङ्कावतारसूत्रं ३ : ७७)

अतो ये खलु भावाभिनिवेशपरवशास्ते तावत् परतन्त्रं सनिमित्तं पश्यन्ति । ये तु व्यपगतभावग्राहास्ते तथा न कुर्वन्ति, कुत्राप्यनवस्थिततत्वात् । तथा ह्युक्तम्—

सिद्धिमाश्रितभावानामिच्छन्ति तत्त्वतस्तु ये ।
तत्र नित्यादयो दोषाः सम्भवन्ति न वा कथम् ।। (युक्ति० ४४)

भावानामाश्रितानां तु ह्यसत्त्वं सत्त्वमेव वा ।
जलेन्दुवन्न चेच्छन्ति ते दृष्ट्या नापहारिताः ।। (युक्ति० ४५)

रागद्वेषोद्भवस्तीव्रदुष्टदृष्टिपरिग्रहः ।
विवादास्तत्समुत्थाश्च भावाभ्युपगमे सति ।। (युक्ति० ४६)

अतो येऽनुत्पाददिदेशनासु शब्दशोऽभिनिविशन्ते, तान् प्रतिषेद्धुं निमित्तादि-दृष्टयो विगर्हणीयाः । माध्यमिकाभिधास्तु अनुत्पाददिदेशनासु नाभिनिविशन्ते, परमार्थतोऽनुत्पादादीनामभ्युपगमात् संवृत्योत्पादादीनामपि व्याहरणात् । तथा हि—

तत्त्वमन्वेष्टुमारम्भे सर्वमस्तीति कथ्यताम् ।
ज्ञात्वाऽर्थान् खलु वैराग्ये पश्चान्नूनं विविच्यते ।।

अनाज्ञाय विविक्तार्थं श्रुतिमात्रे प्रविश्य च ।
ये पुण्यानि न कुर्वन्ति नरास्ते कुत्सिता हताः ।।

फलयुक्तानि कर्माणि गतयश्च सुदेशिताः ।
तत्स्वभावपरिज्ञानमनुत्पादोऽपि देशितः ।।

ममेत्यहमिति प्रोक्तं यथा कार्यवशाज्जिनैः ।
तथा कार्यवशात् प्रोक्ताः स्कन्धायतनधातवः ।।

(युक्तिषष्टिका ३०, ३१, ३२, ३३)

यद्येवं चेत् ? आर्यलङ्कावतारसूत्रे—

नास्ति वैकल्पितो भावः परतन्त्रश्च विद्यते ।
समारोपापवादं हि विकल्पन्तो विनश्यति ।।

(लङ्कावतारसूत्रं १० : १८९)

यद्धि प्रोक्तं तत्कथमिति चिन्तायामत्रापि यथा कथितस्य परिकल्पितस्वभावस्य समारोपो भवति, तस्य परिहारार्थं "नास्ति वैकल्पितो भावः" इत्युक्तम् । यथोक्तः परतन्त्रस्वभावस्तु संवृतिनिषेधकरणात् परायत्तवृत्ति-तया 'सन्' इत्येवमुक्तः । उच्यमानमिदं द्वयं ये अन्तद्वयरूपेण परिकल्पियन्ति, ते नैव मध्यममार्गे प्रवृत्ता भविष्यन्ति, प्रपातस्थानस्थितस्कन्धसदृशत्वात् । अतः—

"समारोपापवादं हि विकल्पन्तो विनश्यति[१]" इत्युक्तम् । अत एव च—

परिकल्पितं स्वभावेन सर्वधर्मा अजानकाः ।
परतन्त्रं समाश्रित्य विकल्पो भ्रमते नृणाम् ।।

(लङ्कावतारसूत्रं १० : १५०)

यदुक्तं तेनापि तन्निराकरणं भवति ।

अनेनापि चोक्तयोः समारोपापवादान्तयोः निराकरणं क्रियते । तथा हि— यथा विकल्प्यते तथा परमार्थतः परतन्त्रस्यानुत्पन्नत्वात् परिकल्पितात्मना अनुत्पन्न एव । तदनेन समारोपान्तस्तावन्निराक्रियते । संवृत्या परतन्त्रतया समुत्पन्नत्वात् तदाश्रिता अन्ये विकल्पा निर्माणनिर्मितसदृशा समुत्पद्यन्ते । अत एव—

परतन्त्रं समाश्रित्य विकल्पो भ्रमते नृणाम् । इत्येवमुक्तं । अनेन तावदपवादान्तो निराक्रियते, संवृत्योत्पादस्यानपवादात् । अतस्तत्र तत्र या परतन्त्रस्वभावास्तित्वदेशना याश्च भावोत्पत्त्यादिदेशनास्ताः सर्वाः देशनाः बालपृथग्जनानां भयहेतुपरिवर्जनार्थं संवृत्योत्पादाशयेन अभिप्रायतः प्रवृत्ता इत्यवगमाय, न तु परमार्थतः । तन्निषेधस्तु सूत्रे एव कृतः । यथोक्तं लङ्कावतारसूत्रे—

---

१. लङ्कावतारसूत्रं १० : १८९ ।

बुद्ध्या विवेच्यमानं हि न तन्त्रं नापि कल्पितम् ।
निष्पन्नो नास्ति वै भावः कथं बुद्ध्या प्रकल्प्यते ॥

(लङ्कावतारसूत्रं १० : ३७४)

न स्वभावो न विज्ञप्तिर्न वस्तु न च आलयः ।
बालैर्विकल्पिता ह्येते वशभूतैः कुतार्किकैः ॥

(लङ्कावतारसूत्रं १० : ९१)

आर्यधर्मसङ्गीतौ चाप्युक्तम्[१]—

कुलपुत्र, लोकोऽयं जातिनिरोधयोरध्यवसायेन तिष्ठति, अतो महाकरुणामयेन तथागतेन लोकभयविषयपरिवर्जनार्थं व्यवहारवशेन तस्य उत्पत्तिनिरोधौ भवत इत्युपदिष्टम् । कुलपुत्र, नात्र कश्चिद् धर्म उत्पद्यत इति ।

आर्यप्रज्ञापारमितासूत्रेऽपि—

''आयुष्मन् शारद्वतीपुत्र, एवं रूपं स्वभावेन शून्यम्, यच्च स्वभावेन शून्यं तन्नोत्पद्यते, न च निरुध्यते । यस्य नोत्पत्तिनिरोधौ तन्नान्यथा भवतीति । एवं यावद् वेदनातो विज्ञानपर्यन्तम्''— इति विस्तरः ।

नात्र परिकल्पितस्य स्वभावो युक्ततरः, आगन्तुकत्वाद् भावबहिर्भूतत्वाच्च तस्य, एवं शब्दार्थोऽपि नोपपद्यते । यद्यपि रूपादयः परमार्थतोऽनुत्पन्नास्तथापि बालपृथग्जनैस्ते उत्पादादिस्वभावे परिकल्प्यन्ते । इत्येवं तैर्यदि तत्स्वभावे परिकल्पितत्वात् स्वभावशब्देनोच्यन्ते, तदा न दोषः, इष्टार्थाविरुद्धत्वात् । सूत्रान्तरेऽपि[२]—

''कुलपुत्र, यो बोधिसत्त्वः धर्मान् अयोनिशो मनसिकृत्य शब्दशः प्रविचिनोति, स महायानश्रद्धायतनो न भवति । यश्च अशब्दशोऽभिसन्ध्यर्थं योनिशो मनसिकरोति, स महायानश्रद्धायतनो भवति''। यदुक्तं तत्तु ये परमार्थाभिप्रायानभिज्ञाः संवृतिस्वभावमप्यपवदन्ते तेऽयोनिशो धर्मान् प्रविचिन्वन्तीतिहेतोर्महायानश्रद्धायतना न भवन्तीत्यतस्तन्निषेधार्थ-मिदमित्युक्तम् ।

---

१. दे० क० - सू० 'श'० - ४३ क ।
२. द्र०-आर्यमहायानप्रसादप्रभावननाममहायानसूत्रम्, दे० क०, 'प'-पृ० १७ ख ।

निखिलेष्वपि सूत्रेषु शब्दशोऽर्थाभिनिवेशपरिहाराय अभिप्रेतार्थावबोधाय च सम्यग् यत्नोत्पादार्थं सर्वेषु चाधिमुक्त्युपादार्थमेवाभिहितम्, न तु माध्यमिकमत-निषेधार्थम्, न हि माध्यमिकाः शब्दशोऽर्थं परिकल्पयन्तीति पूर्वमेवोक्तत्वात् । आर्यरत्नमेघसूत्रेऽप्युक्तम्, यथा—

"कथमिव बोधिसत्त्वः परमार्थनिपुणो न भवति ? कुलपुत्र, बोधिसत्त्वः सम्यक् प्रज्ञया रूपप्रत्यवेक्षणं यावद् विज्ञानप्रत्यवेक्षणं प्रत्यवेक्षते । यदा स रूपं प्रत्यवेक्षते, तदा न रूपोत्पादमुपलभते, न समुदयमुपलभते, न च निरोधमुपलभते यावद् विज्ञानपर्यन्तं यथावदुत्पादं नोपलभते, यतो हि सोऽपि तावद् (अनुपलम्भः) परमार्थतोऽनुत्पाद-प्रवृत्तया प्रज्ञया भवति, न तु सांव्यावहारिकस्वभावेन[१]" इत्येवं निर्दिष्टम् ।

आर्यलङ्कावतारेऽपि—

सर्वं विद्यति संवृत्यां परमार्थे न विद्यते ।
धर्माणां निःस्वभावत्वं परमार्थेऽपि दृश्यते ॥

(लङ्कावतारसूत्रम् १० : १२०)

इत्युक्तम् ।

ये तावदनुत्पादादिनिर्देशान् 'सर्वे धर्माः परमार्थत उत्पद्यन्ते, संवृति-स्वभावतश्च नोत्पद्यन्ते' इत्येतस्मिन् मते स्थापयन्ति, ते सर्वे आर्यरत्नमेघादिनिर्दिष्टैः समस्तवचनैर्विरुध्यन्ते, विप्रतिपन्नत्वात् तेषाम् । तेषु (सूत्रेषु) तु रूपादयः सर्वे (धर्माः) परमार्थतोऽनुत्पन्नाः, संवृतितश्चोत्पन्ना इति निर्दिष्टाः । सत्यद्वयनिर्देशादिषु तावद्—देवपुत्र, सर्वे धर्माः शान्ताः, परमार्थतोऽनुत्पन्नत्वाद्

इत्येवमादिकं यदुक्तं तेनापि (सह) विरुध्यन्ते । पुनश्च आर्यलङ्कावतरेऽभिहितम्—

भावा विद्यन्ति संवृत्या परमार्थे न भावकाः ।
निःस्वभावेषु या भ्रान्तिस्तत्सत्यं संवृतिर्भवेत् ॥

(लङ्कावतारसूत्रं १० : ४२९)

---

१. दे० क०, सू० 'व', पृ० २५ ख ।

आर्यप्रज्ञापारमितायामपि—

"सुभूते, विपर्ययमतिरिच्य बालपृथग्जनाः कुत्रावतिष्ठन्ते ? कर्माभिसंस्कारवस्तु तावत् केशाग्रतुल्यमपि न विद्यते"

इत्यादिका या देशना, तयापि विरुध्यन्ते, वस्तुतः आत्मनोऽतिसूक्ष्मस्वभावस्यापि निषिद्धत्वात् ।

यदि विपर्ययस्याप्रतिषेधाद् अस्ति विपर्ययं वस्तु, तत्रैव तथा प्रोक्तत्वादिति चेत् ? तथा हि :

निःस्वभावेषु या भ्रन्तिस्तत्सत्यं संवृतिर्भवेत् । इति । तदपि नैवोपपद्यते । विपर्यस्तं वस्तु यदि विद्येत, तदा अतिसूक्ष्मभावस्वभावनिषेधवचनं कथं नामोपपद्येत ।

असतीष्वपि समस्तभाववासनासु बालपृथग्जनाः असद्विपर्ययोपकल्पितानां भावस्वभावानामभिनिवेशेन कमाण्यभिसंस्कुर्वन्तीति यदेवं सूत्रार्थो विवेच्येत तदा एवंविधेन तावद् विवेचनेन (भवदभ्युपगतं) अभ्युपगन्तुं शक्येत ।

आर्यसमाधिराजसूत्रे—

स्वभावशून्याः सद सर्वधर्माः
वस्तुं विभावेन्ति जिनानपुत्राः ।
सर्वेण सर्वं भवसर्वशून्यं
प्रादेशिकी शून्यता तीर्थिकानाम् ।।

इति यदुक्तम् तदपि अभ्युद्धर्तुं शक्यते । अन्यत्रापि सूत्रेषु तावद्—

प्रज्ञप्तिमात्रं त्रिभवं नास्ति वस्तु स्वभावतः ।
प्रज्ञप्तिवस्तुभावेन कल्पयिष्यन्ति तार्किकाः ।।

(लङ्कावतारसूत्र, पृ० १० : ८६)

इति यदुच्यते तदप्युद्धरिष्यते । विपर्ययादयो हि वस्तुत्वेन तावन्नैव युज्यन्ते ।

इत्येवं भवद्भिश्चित्तचैत्तात्मकस्य त्रैधातुकस्य यदसम्यक्त्वं परिकल्प्यते तदपि असम्यगाकारोपग्रहणावभासत्वेन विपर्ययादितया प्रोच्यते । मिथ्या-

स्वभावेनोपग्रहणाद् यस्तस्यात्मत्वेनावभासः स कथं सम्यग् भाव इति भवेत्, तत्त्वान्यत्वयोः परस्परपरिहारस्थितलक्षणत्वात् । तत्त्वस्य तावदन्यात्मकत्वं हि विरुद्धम् ।

यद्येवं नास्ति तदा सांख्यादिपरिकल्पितेषु प्रधानादिविकारेषु भवतां को द्वेषः स्याद्, भवद्भिस्तेषामनभ्युपगमात् । अत एव :

कस्य स्यादन्यथाभावः स्वभावो यदि विद्यते।

(मूलमध्यमककारिका १३ : ४)

इत्येवमुक्तम् । आर्यसत्यद्वयनिर्देशेऽपि[१] :

"देवपुत्र, यथा आत्मा, नास्ति परमार्थत आत्मा, तथैव देवपुत्र, क्लेशा अपि, परमार्थतो न सन्ति क्लेशाः । देवपुत्र, यद्यात्मा परमार्थतस्तत्त्वं स्यात्तदा देवपुत्र, अनेनैव हेतुना क्लेशा अपि परमार्थतस्तत्त्वानि स्युः ।"

इत्येवं कथितम् । अनेन तावद् आत्मादीनां मिथ्याकारोपग्रहणेन प्रवृत्तत्वाद् आत्मादिवत् क्लेशा अपि सर्वे मिथ्यास्वभावा एवेत्येवं तावन्निर्दिश्यते ।

इत्येवं त्रैधातुकाः खलु चित्तचैतसिका मिथ्याकारग्रहणप्रवृत्तत्वात् स्वाकार इव तदभिन्नत्वाच्च मिथ्यास्वभावा एवेति निर्दिष्टाः ।

बोधिसत्त्वेभ्यस्तु विशेषतः क्लिष्टत्वात् सर्वपरिकल्पानां ते मिथ्या एवातः "मिथ्या सर्वविकल्पाः" इत्येवं तावत् प्रतिपादितम् ।

यदि नास्ति परमार्थतो वस्तूनां स्वकीयः कश्चन स्वभावस्तदा—

न ह्यात्मा विद्यते स्कन्धे स्कन्धाश्चैव हि नात्मनि ।
न ते यथा विकल्प्यन्ते न च ते वै न सन्ति च ।।

(लंकावतारसूत्रम् १०-१३५)

यदि यदुक्तं तद् यद्येवमुद्ध्रियते यदनेन निषेधमुखेन स्कन्धादीनां तावत् सत्तैव निर्दिश्यत इति चेत् ? तन्न प्रमाणयोग्यमिति । यतो ह्यत्र "न ते यथा विकल्प्यन्ते" इति यदुक्तं तेन सत्ताया निषेधो विधीयते । "न च ते वै न सन्ति च"

---

१. दे० क०, पृ० २४४ ख ।

इत्यमुना च ये यथा संवृतावभासन्ते, ते तथैव सदिति निर्दिश्यन्ते । फलतश्च तैर्थिकपरिकल्पितस्यात्मनः संवृतावप्यसत्त्वम् । स्कन्धादीनां तावद् व्यवहारे सत्त्वम्, न तु तथतायामिति विस्पष्टमादिष्टम्। यद्येवं न भवेत्तदैकस्मिन्नसत्त्वमभिधाय पुनः सत्त्वेन निर्देशः कथं खलु सम्बध्येत । आर्यब्रह्मपरिवर्तसूत्रे चोक्तं यदुत—

येन स्कन्धस्य नोत्पत्तिरनुत्पत्तिश्च ज्ञायते ।
समुदाचरति तल्लोके न च लोके स्थितश्च सः ।।[१] इति।।

आर्यरत्नमेघेऽपि[२] न स्कन्धाः परमार्थतः सन्ति, संवृत्यैव ते सन्तीति स्पष्टतया निर्दिष्टम् :

''कुलपुत्र, दशधर्मसमन्वागतो बोधिसत्त्वः संवृतिसत्ये कुशलो भवति, के च दशेति ? तद्यथा-रूपप्रज्ञप्तिं करोति, न च परमार्थतो रूपमुपलभते, नाभिनिवेशं करोति । वेदना-संज्ञा-संस्कार-विज्ञानान्यपि तद्वदिति विस्तरः ।''

आर्यरत्नाकरेऽपि[३] :

''सूर्यदत्त, एवमस्ति, यथा व्योम्नि चित्राङ्कनं न भवति, न भविष्यति, यतो हि तदभूतमनिरुद्धमनागममनिर्गममनुत्पन्नमच्युतमनभिनिष्पन्नम् अनिर्वचनीयत्वाद् व्यवहारमात्रं संवृतिमात्रं भवति । सूर्यदत्त, तथैव रूपादिविज्ञानपर्यन्तं न भूतं न भविष्यति, इत आरभ्य..... संवृतिमात्रं भवति'' इत्येतत्पर्यन्तं यद् विस्तरेणाभिहितं तदर्थसम्बद्धं करणीयमिति ।

ननु महापरमार्थशून्यतायां[४] 'अस्ति कर्म, अस्ति विपाकः कर्ता तु नोपलभ्यते' यदेवमुक्तं तत्तावद् एतद्विरुद्धं स्यात्, यतो हि यदा कर्मादयः परमार्थतः सन्ति, तदा न भवन्ति सर्वे धर्मा निःस्वभावाः, यदि संवृतितस्ते सन्ति तदा कर्तुरपि संवृतितः सत्त्वात् 'कर्ता तु नोपलभ्यते' इत्येतत्कथनं न युक्तिसङ्गतं स्यादिति चेत् ?

यद्येवमुच्येत तदाऽत्रापि नास्ति विरोधः पूर्ववदेव, कर्म-फलयोः संवृतावेव सत्त्वात्, तैर्थिकपरिकल्पितस्य च कर्तुः संवृतावप्यसत्त्वात् । इत्येवंविधनिर्देशतः कुतस्तावद् विरोधावसरः ।

---

१. दे० क०, सूत्र, 'ब', पृ० ३७ क ।
२. दे० क०, सूत्र, 'व', पृ० ९८ क।
३. दे० क०, सूत्र, 'थ', पृ० २७८ ख।
४. दे० क०, सूत्र, 'श', अयं अनुपलब्धः सूत्रे।

यद्येवं चेद् अन्येषु सूत्रेषु :

अस्तित्वं सर्वभावानां यथा बालैर्विकल्प्यते ।
यदि ते भवेद् यथादृष्टाः सर्वे स्युस्तत्त्वदर्शिनः ।।

अभावात् सर्वधर्माणां संक्लेशो नास्ति शुद्धितः ।
न ते तथा यथा दृष्टा न च ते वै न सन्ति च ।।

(लङ्कावतारसूत्रं ३:३६-६७ पृ० ६४)

यदुक्तं तत्कथमिति चेत् ?

इदमपि पूर्वमुक्तमेव । अत्रापि 'यदि सर्वाणि वस्तूनि यथावभासन्ते तथैव परमार्थतो विद्यन्ते' इति तदा 'सर्वेऽपि तत्त्वदर्शिनः स्युः' इति स्यात् । अतोऽनेनापि तावत् परमार्थतः सर्वधर्मानुत्पादमतमेव संस्थाप्यते । यद्धि 'अभावात् सर्वधर्माणाम्' इत्युक्तं तेन वस्तूनां संवृतिसत्त्वं प्रतिपादितम् 'न ते तथा यथा दृष्टाः' इति वचनात् । प्रज्ञापारमितायामपि संक्लेशव्यवदानव्यवस्था खलु व्यवहारसत्यमाश्रित्यैव कृतेति, तद्यथा :

"सुभूते, प्राप्तिरभिसमयो जातिर्निरोधः संक्लेशो व्यवदानमिति व्यवहारत एव संविद्यन्ते, न तु परमार्थतः इति ।"

यद्येवं तर्हि तत्रैव :

"बाह्यार्थदर्शनं मिथ्या नास्त्यर्थं चित्तमेव तु।"
युक्त्या विपश्यमानानां ग्राहग्राह्यं विरुध्यते ।

"बाह्यो न विद्यते ह्यर्थो यथा बालैर्विकल्प्यते ।"

"वासनैर्लुलितं चित्तमर्थाभासं प्रवर्तते ।"

(लङ्कावतारसूत्र, १० : १५३-१५५)

"चित्तमात्रं भो जिनपुत्र, यदुत त्रैधातुकम्"[१] इति यदुक्तं तत्कथं नीयते ?

एवमेव आर्यसन्धिनिर्मोचने आर्यघनव्यूहादिष्वापि सर्वधर्माणां चित्तमात्र-कायत्वेन निर्दिष्टत्वाच्चित्तमेव हि तावत् परमार्थतःसत्, नान्यदिति साध्यते । अतश्च

---

१. द्र०-दे० क०, आर्यलोकोत्तरपरिवर्त, अवतंसक, 'ग'-पृ० १७८ ख ।

सर्वे धर्माः निःस्वभावत्वेन न साधयितुं शक्यन्ते । यद्येवमुच्येत, तदपि न समुचितं कारणम्, यतो हि यथा चित्तसत्ता निर्दिष्टा तथैव रूपस्यापि सत्ताया निर्देशस्तत्तत्सूत्रेष्वनेकधा कृतो विद्यते ।

अथ प्रमाणबाधितत्वात् सूत्रान्तरेषु च निषिद्धत्वात् परमार्थतः सत्त्वेन व्यवस्थापयितुं न शक्यते, तदा पुद्गलनैरात्म्यमात्रप्रवेशाभिसन्धिना तथाविधविनेय-जनाशयापेक्षया कथनमात्रमेवैतदिति ?

यद्येवमुच्येत तदा चित्तमपि वक्ष्यमाणप्रमाणैर्बाधितं भवति । सूत्रान्तरेष्वपि निःस्वभावत्वेन निर्दिष्टत्वात् परमार्थतोऽगृहीताऽपि सा चित्तमात्रता क्रमशः परमार्थनयसमुद्रावगाहनहेतुमात्रतया निर्दिष्टेत्येवं ग्रहणनीयमिति ।

इत्येवं ये तावत् सर्वधर्मान् निःस्वभावतया युगपज्ज्ञातुमक्षमास्ते कदाचन चित्तमात्रतामाश्रित्य क्रमशो बाह्यार्थनिःस्वभावतायां प्रविशन्ति । अत एव

युक्त्या निरीक्षमाणानां ग्राह्यग्राहो निरुध्यते ।

(लङ्कावतारसूत्र, १० : १५०)

इत्युक्तम् ।

तदनन्तरं यदि क्रमेण चित्तस्वभावः प्रत्यवेक्ष्यते, तदा तमपि निः-स्वभावत्वेनावबुध्य नितरां गम्भीरनये प्रविशन्ति । यथोक्तं भगवता—

चित्तमात्रं समारुह्य बाह्यमर्थं न कल्पयेत् ।
तथतालम्बने स्थित्वा चित्तमात्रमतिक्रमेत् ।।

चित्तमात्रमतिक्रम्य निराभासमतिक्रमेत् ।
निराभासस्थितो योगी महायानं स पश्यति ।।

अनाभोगगतिः शान्ता प्रणिधानैर्विशोधिता ।
ज्ञानमनात्मकं श्रेष्ठं निराभासे न पश्यति ।।

(लङ्कावतारसूत्रं १०:२५६-२५८)

अन्ये तु ब्रुवते— चित्तमात्रता हि तावत् स्वप्रसिद्धस्वभावा, अतः संवृत्यैव स्थिता । बाह्यार्थास्तु न खलु संवृत्याऽपि, चित्ताकारमतिरिच्य न सिध्यन्ति । अत एव भगवता तत्प्रदर्शनार्थं वस्तूनि चित्तमात्रतायां निर्दिष्टानि, साऽपि न परमार्थतः

सिध्यति, सूत्रान्तरेष्वपि निःस्वभावतायामेव निर्दिष्टत्वाद्, यथोक्तम् आर्यसर्वबुद्ध-विषयावतारज्ञानालोकालङ्कारे—

सर्वे बुद्धाः सदा सर्वान् धर्मान् जानन्ति सर्वथा ।
नोपलभ्य क्वचिच्चित्तं नोपलम्भकरं नुमः ।।[१]

आर्यरत्नकूटसूत्रेऽपि[२]—

चित्तं हि काश्यप, परिगवेष्यमाणं न लभ्यते । यन्न लभ्यते तन्नोपलभ्यते । यन्नोपलभ्यते तन्नैव अतीतं न अनागतं न प्रत्युत्पन्नम् । यन्नैवातीतं नानागतं न प्रत्युत्पन्नं तत् त्रिकालातीतम् । यत् त्रिकालातीतं तस्य सदसत्त्वमपि नास्ति । यस्य नास्ति सदसत्त्वं तस्य नास्त्युत्पादः । यस्य नास्त्युत्पादस्तस्य नास्ति स्वभावः । यस्य नास्ति स्वभावस्तस्य नास्त्युत्पादः, यस्य नास्त्युत्पादस्तस्य नास्ति निरोधः । यस्य नास्ति निरोधस्तस्य नास्ति वियोगः । यस्य नास्ति वियोगस्तस्य नास्त्यागमः, निर्गमः, च्युतिः, जातिः । यस्य नास्त्यागमो निर्गमश्च्युतिर्जातिस्तस्य न सन्ति संस्काराः । यस्य न सन्ति संस्काराः तदसंस्कृताः । यदसंस्कृतं तदार्यैर्विदितमिति विस्तरः ।

पुनश्च तत्रैव[३]—

"नित्य इति काश्यप, अयमेकोऽन्तः, अनित्य इति काश्यप, अयमेकोऽन्तः। तथा अस्तीति काश्यप, अयमेकोऽन्तः, नास्तीति काश्यप, अयमेकोऽन्तः । यदनयोरन्तयोर्मध्यम्, तदरूप्यमनिदर्शनमप्रतिष्ठमना-भासमनिकेतमविज्ञप्तिकम् । इयमुच्यते काश्यप, मध्यमा प्रतिपद् भूतप्रत्य-वेक्षा"—इति ।

यदेवमुक्तं तन्मध्यभूतम्, न तस्य वस्तुसता विज्ञानस्वभावेन सत्त्वसिद्धिः । धर्मधातुर्हि द्वाभ्यामन्ताभ्यां विनिर्मुक्तः सर्वधर्मनिस्वभावलक्षणः निष्प्रपञ्च इति वचनीयः । स चापि धर्मधातुः 'अयं सः'— इत्याकारेण निरूपयितुमशक्यत्वाद् अरूप्यः, परेभ्यो निदर्शयितुमसमर्थत्वाद् अनिदर्शनः, आध्यात्मिके धातौ आयतने वाऽनवस्थितत्वाद् अप्रतिष्ठः, बाह्यानां धातूनामायतनानामिव अनवभासितत्वाद्

१. दे० क०, सूत्र, 'ग', पृ० ३०० ख।
२. दे० क०, रत्नकूट, 'छ', पृ० १३९ ख।
३. कश्यप परिपृच्छ : दे० क०, रत्नकूट, 'छ', पृ० १३२ क. २ ।

अनाभासः, चक्षुर्विज्ञानादिधातुस्वभावातिक्रान्तत्वाद् अविज्ञप्तिकः, रागादिसमस्त-क्लेशानामाश्रयाभावाद् अनिकेतः - इत्येवमुक्तम् ।

यदि मध्ये चित्तस्वभावतायाः कोऽप्यंशः परमार्थसन् स्यात्तदा तत्सत्तया नित्यानित्याभिनिवेशः खलु कथङ्कारमेकोऽन्तः स्याद्, यतो हि यथा वस्तुतत्त्वं तथा यथावदनुगम्य मनस्करणं पतनस्थानमिति नैव युज्यते ।

नित्यादिस्वरूपमतिरिच्य वस्तुभूतः कश्चिदन्यो वस्त्वाकारोऽसम्भवी मध्ये हि वस्तु खलु स्वस्वभावस्यासत्त्वाद् अभूतमिति ग्रहणं नास्ति तावद् अन्त इत्येवं यदि चिन्त्येत, तदपि न युक्तम् । असदिति ग्रहणं सत्ताग्रहणाभावेऽभाव एव । विषयाभावनिषेधस्तु न तावत् सन् भवति, अतः यस्याभावग्रहणं सत्, नियतं तस्य सत्ताग्रहणमपि सदेव । ततो द्वावप्यन्तौ भवतः ।

यदि मध्ये वस्तुनः सत्त्वं तदा तत्सत्त्वग्रहणं केन निषिद्धं स्यात् ? आर्यसमाधिराजसूत्रे मध्ये सतः परमार्थस्थितस्य वस्तुनो निषेधाय यदुक्तम्, तेनापि सह विरोधः स्यात्—

अस्तीति नास्तीति उभेऽपि अन्ता ।
शुद्धी अशुद्धीति इमेऽपि अन्ता ।।

तस्मादुभे अन्त विवर्जयित्वा ।
मध्येऽपि स्थानं न करोति पण्डितः ।। (समाधिराजसूत्रं ९:२७)

इत्येवमुक्तम् ।

अयं तावत् सूत्रार्थः—आश्रयणीये मध्ये यदि वस्तुसतां नास्ति किमपि स्वरूपं तदैव 'मध्येऽपि स्थानं न करोति पण्डितः' इति यदुक्तं तद् युक्तं स्यादित्युच्यते। यद्यस्ति किमपि वस्तु तदा कथं न पण्डितस्तस्मिन् स्थानं न ग्रहीष्यतीति । आर्यलोकोत्तरपरिवर्ते तावदुक्तम्[१]—

अपि च, हे जिनपुत्राः, त्रयः खलु धातवो विज्ञप्तिमात्रतायां प्रचरन्ति, यतो हि अध्वत्रयं चित्तवत् प्रतिबुध्यते, तदपि तावच्चित्तं मध्यान्तरहितमेव प्रवर्तते । इदं

१. दे० क०, फलछेन 'ग', पृ० २६८ ख।

तावत् सूत्रस्य तात्पर्यम्–उत्पादभङ्गयोः स्थितिलक्षणे च मध्ये परमार्थतोऽसत्त्वाच्चित्तं तावन्मध्यान्तररहितं सत् प्रवर्तते प्रतिबुध्यते चेत्युच्यते ।

अपरे खल्वभिदधते—संवृतौ हि विज्ञानवद् बाह्यार्था अपि संविद्यन्त इति । अन्यथा दशभूमकसूत्रे—अष्टम्यां हि भूमौ संस्थिता बोधिसत्त्वा लोकधात्वन्तर्गतानां परमाण्वादीनां संख्यां परिजानन्ति— इति यदुक्तम्, तेन सह विरोधःस्यादिति । तथा हि—

"स परमाणुरजःसूक्ष्मतां च प्रजानाति, महद्गततां च अप्रमाणतां च विभक्तिं च प्रजानाति । अप्रमाणपरमाणुरजोविभक्तिकौशल्यं च प्रजानाति । अस्यां च लोकधातौ यावन्ति पृथिवीधातोः परमाणुरजांसि तानि प्रजानाति । यावन्ति अब्धातोः, तेजोधातोः, वायुधातोः प्रजानाति"[१] । इति विस्तरः । विज्ञानवद् बाह्यार्थानामपि प्रसिद्धत्वात् प्रतीतिविरोधः, यतो हि युक्तिभिर्विचारणायां सत्यामुभावपि नैव परीक्षां सहेते, अतस्तौ वस्तुस्थितिमपि न क्षमेते । व्यवहारसत्ये (संवृतौ) त्वागोपालाङ्गनां यावत् प्रसिद्धौ । विज्ञप्तिमात्रताकथनस्य तावत् फलं तु परपरिकल्पितानां कर्तृभोक्त्रादीनां निषेध एव, व्यवहारेऽपि चित्तातिरिक्तानां तेषां कर्त्रादीनां संसिद्धेरभावात् ।

अथवा—सर्वधर्मेषु पूर्वङ्गमत्वाच्चित्तं सर्वधर्मापेक्षया प्रधानं सिध्यते । यावद् यथा "नास्त्यर्थं चित्तमेव तु"[२] इति यदुक्तम्, यथा वा "वासनैर्लुलितं चित्तमार्थाभासं प्रवर्तते"[३] इत्यादि यदुक्तम्, तदपि निराकारेण चित्तेन विषयग्रहणं कथमपि न युज्यत इत्यवश्यं तत् साकारमेव मन्तव्यम्। अतश्चित्ताकारं व्यतिरिच्य अर्थाकारावभासाभावात् तन्निषेधेन साकार-चित्तमेव तावन्निर्दिश्यते, न तु तेन बाह्यार्थाभावोऽवबोध्यते।

अथवा आत्मादिसत्तानिर्देश इव तद्विनेयजनापेक्षया यथा सद्वैद्य आतुरान् पुष्णाति तथा भगवन्तो नानविधा देशनाः प्रवर्तयन्ति । यथोक्तं लङ्कावतारसूत्रे—

---

१. दशभूमकसूत्रं, पृ० ४४, दरभङ्गासंस्करणम् ।
२. लङ्कावतार १०:१५३ ।
३. लङ्कावतार १०:१५५ ।

आतुरे आतुरे यद्वद् भिषग् द्रव्यं प्रयच्छति ।
बुद्धा हि तद्वत् सत्त्वानां चित्तमात्रं वदन्ति वै ।।

(लङ्कावतारसूत्रे २:१२१)

नान्यान् विसंवादयतीति विनेयजनानां हितसुखकरत्वात् सार्थकं वचनम् । परहितं तावदेकान्ततया सत्यमिति हेतोर्भगवत्सु तावन्नास्ति मृषावादोऽपि । अत उक्तम्—

असत्यं यद् विसंवादि नासच्चाप्यर्थसंहितम् ।[१]
ध्रुवं परहितं युक्तं हिताभावान्न चापरम् ।।

इत्येवं किं संवृतावस्ति बाह्यार्थसत्त्वम् । वरं तावच्चित्तमात्रता, किन्तु निःसन्दिग्धं सूक्ष्मवस्तुस्वभावं सम्यक् साधयितुं नास्ति सर्वथा कोऽपि आप्तागमः । आर्यरत्नमेघसूत्रे तावत्[२]—

"कुलपुत्र, यदि भवेत् परमार्थतोऽसत्त्वम्, तदा निरर्थकं ब्रह्मचर्यम्"

इति यदुक्तं तत्किं नास्ति सत् ?

यद्येवमुच्येत तन्नैव युज्यते, यतो हि तत्प्रमाणभूतं परमार्थं को हि नाम त्यजेत् । अयं तावत् सूत्रार्थः—इयं हि पुद्गलधर्मनैरात्म्यलक्षणा तथतैव परमार्थशब्दवाच्या परमस्य ज्ञानस्य गोचरत्वात्, युक्तिमत्त्वाच्च सैव स्वयं परमेति । यदि तदप्यसत् स्यात्तदा यथा पुद्गलो धर्माश्च बालपृथग्जनेषु प्रसिद्धास्तथैव स्युः, तथा सति सर्वे जना अनायासेन आदित एव तत्त्वदर्शिनः स्युः, तत्त्वदर्शनार्थं च प्रयत्नोऽपि निरर्थकः स्यादिति सुस्पष्टमेव । अतो नास्तीदं प्रमाणोपपन्नमिति ।

आर्यरत्नकूटसूत्रे तावत्[३] :

"काश्यप, वरं खलु सुमेरुमात्रा पुद्गलदृष्टिः, नाभिमानिकस्य शून्यतादृष्टिः"

इति यदुक्तं तेन कथं न विरोधः स्यादिति चेत् ?

तर्हि नास्ति विरोधः । ये खलु परमार्थसत् वस्त्वभ्युपगम्य पुनस्तस्यासत्त्वं परिकल्पयन्ति, एवञ्च येषां विनाशार्थं शून्यतादेशना, तेषां रागादीनां सम्यक्

---

१. रत्नावली २:३५ ।
२. दे० क०, सूत्र, 'व', पृ० ९९ क ।
३. दे० क०, रत्नकूट, 'छ', १३१ ख।

सत्त्वमेवेति परिकल्पयन्ति, ते पूर्वं सत्त्वं परिकल्प्य पश्चात् तदसत्त्वं परिगृह्णन्ति । अतः सदसदन्तयोः पतितत्वात् ते अन्तद्वयरहितं सर्वप्रपञ्चोपशमं शून्यतार्थं नैवाधिगच्छन्तीति "अभि-मानिनः" उच्यन्ते । अत एव भगवन्तस्तथाविधाया दृष्टेर्निषेधेन परमार्थतः सदसत्सर्वप्रपञ्चजालविरहितस्य ज्ञानार्थं नियोजयन्तीति । अन्यैरपि सूत्रैः स्वयं भगवता एतन्निर्धार्यते । लङ्कावतारसूत्रेऽपि :

"द्वयनिश्रितोऽयं महामते, लोको यदुत अस्तित्वनिश्रितश्च नास्तित्व-निश्रितश्च । भावाभावच्छन्ददृष्टिपतितश्च अनिःशरणे निःशरणबुद्धिः । तत्र महामते, कथमस्तित्वनिश्रितो लोकः ? यदुत विद्यमानैर्हेतुप्रत्ययैर्लोक उत्पद्यते नाविद्यमानैः, विद्यमानं चोत्पद्यमानमुत्पद्यते नाविद्यमानम् । स चैवं ब्रुवन् महामते, भावानामस्तित्वहेतुप्रत्यानां लोकस्य च हेत्वस्तिवादी भवति । तत्र महामते, कथं नास्तित्वनिश्रितो भवति ? यदुत रागद्वेषमोहाभ्युपगमं कृत्वा पुनरपि रागद्वेषमोहभावाभावं विकल्पयति । यश्च महामते, भावानामस्तित्वं नाभ्युपैति भावलक्षणविविक्तत्वाद्, यश्च बुद्धश्रावकप्रत्येकबुद्धानां रागद्वेषमोहान्नाभ्युपैति भावलक्षणविनिर्मुक्तत्वाद् विद्यन्ते नेति । कतमोऽत्र महामते, वैनाशिको भवति ? महामतिराह—य एष भगवन् अभ्युपगम्य रागद्वेषमोहान् न पुनरभ्युपैति । भगवानाह—साधु, साधु महामते, साधु साधु पुनस्त्वं महामते, यस्त्वमेवं प्रभाषितः। केवलं महामते, न रागद्वेषमोहभावाभावाद् वैनाशिको भवति, बुद्धश्रावक-प्रत्येकबुद्धवैनाशिकोऽपि भवति । इदं च महामते, सन्धायोक्तं मया—'वरं खलु सुमेरुमात्रा पुद्गलदृष्टिर्न त्वेव नास्त्यस्तित्वाभिमानिकस्य शून्यतादृष्टिः' इति ।

अत एव भगवता 'वस्तुवादिन एवाभिमानिनः' इत्युक्ताः । अतस्त-त्रैवोक्तम्—

अभूत्वा यस्य उत्पादो भूत्वा वापि विनश्यति ।
प्रत्ययैः सदसच्चापि न ते मे शासने स्थिताः ।। (लङ्का०-३:११)

यस्य नोत्पद्यते किञ्चिन्न च किञ्चिन्निरुध्यते ।
तस्यास्ति नास्ति नोपैति विविक्तं पश्यतो जगत् ।। (लङ्का०-३:१४)

द्वितीयपद्यार्थद्वारेण स्वमतं संस्थाप्य 'परिकल्पितस्वभावविविक्तत्वाद् विविक्तं जगदित्येव तावत् सूत्रार्थः, अतश्च नास्ति विरोधः' इत्यभिदधद्भिः कः परिकल्पितः स्वभावः इत्यभिधातव्यम् । अथ प्रमाणविरुद्धमपि यद् बालैः सत्यमिति

गृह्यते तदिति चेत् ? तदाऽशेषं जगत् परमार्थतोऽनुत्पन्नमपि बालैर्यदुत्पत्त्यादिकं परमार्थतः सदित्यारोप्यते तद् वक्ष्यमाणप्रमाणैर्निषिद्धत्वात् संवृतिस्वभावमिति कस्मान्न गृह्यते । यद्येवं नास्ति ? तदा यद्धि भगवता—'बाह्यार्थाः परिकल्पित-स्वभावत्वाच्छून्याः' इति यदुक्तं तस्य परमार्थतो न सन्तीति व्याख्यानं कस्मान्न क्रियते? प्रमाणविरुद्धत्वात्तथा व्याख्यानं न कर्त्तव्यमिति चेत् ? तदा विज्ञानस्यापि तथा व्याख्यानं न कर्त्तव्यम्, बाह्यार्थवत् तस्यापि प्रमाणविरुद्धत्वात् ।

प्रमाणैः कतिपयैर्यदि विज्ञानं वस्तुसत् सिध्यति तदा द्विविधमेव परिकल्पितम्, नान्यदिति सम्यग् व्याख्यातं भवेत्, किन्तु तदपि नैव सिध्यतीति निर्देष्टव्यम् । अतश्च जगदिदं यथोक्तपरिकल्पितस्वभावविविक्तमित्यस्माभि-रप्यभ्युपेयत इति नास्ति सर्वथा दुरूहम् । अत एव आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्रे[१]—

''मैत्रेय, परतन्त्रपरिनिष्पन्नलक्षणयोः परिकल्पितसंक्लेशव्यवदानलक्षणं यच्चात्यन्तविविक्तं तन्नालम्बनीक्रियते, सर्वशून्यतालक्षणत्वात्तस्य'' इति यदुक्तं तदप्यनेन निराकृतं भवति'' इत्युक्तम् ।

तत्रापि रागादयो ये संक्लेशात्मकसंवृतिस्वभावानां परतन्त्रलक्षणानां सम्यक्तया संक्लिष्टकरणेन संसारे नियोजनेन प्रतिपक्षे विपक्षे च यथाक्रमं विघ्नभूताभूतत्वादिना चारोप्यन्ते, ते तेषां कृते परिकल्पितलक्षणान्येव । योगिसंवृतौ अविपर्यस्तपरिनिष्पत्त्या तावत् परिनिष्पन्नलक्षणम् । अतः परिनिष्पन्नलक्षणयुक्तानि बोधिपक्षानुकूलव्यवदानान्यपि विपक्षात्यन्तप्रतिघातरूपेण परिनिर्वाणे च नियोजनादिना सम्यक्तया वस्तुधर्मतायामारोपितानि, तान्यपि तेषां परिकल्पित-लक्षणमेव । यश्च धर्मधातुः प्रकृतिप्रभास्वरस्तस्मिन्नसम्भवः परमार्थतः संक्लेशादीनाम् । अतः परिकल्पितधर्मत्वात् तयोः स्वभावयोः संक्लेशव्यवदान-धर्मत्वमसम्भवमेव । संक्लेशव्यवदानपक्षसर्वधर्माणां परमार्थतोऽनुत्पादे हि एकरसीभूतत्वेन नानाकरणमयुक्तम् । अतो द्वावपि सम्यग्-रूपेण शून्यावेव । तथ्यसंवृतौ तु द्वयोरपि भावात् संक्लेशव्यवदानपक्षयोरभावदोषोऽपि न खलु प्रसज्यते ।

---

१. दे० क०, सूत्र, 'च', पृ० १४ ख ।

आर्यसार्धद्विसाहस्रिकासूत्रे—

"न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् रूपं रागधर्मि वा विरागधर्मि वा, एवं वेदना संज्ञा संस्काराः । न विज्ञानं रागधर्मि वा विरागधर्मि वा । या च रूप-वेदना-संज्ञा-संस्कार-विज्ञानानां न रागधर्मता नापि विरागधर्मता इयं प्रज्ञापारमिता। न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् एवं द्वेषधर्मि वा अद्वेषधर्मि वा, एवं वेदना संज्ञा संस्काराः। न विज्ञानं द्वेषधर्मि वा अद्वेषधर्मि वा। या च रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानानां न द्वेषधर्मता नापि विगतद्वेषधर्मता इयं प्रज्ञापारमिता । न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् रूपं मोहधर्मि वा विगतमोहधर्मि वा, एवं वेदना संज्ञा संस्काराः । न विज्ञानं मोहधर्मि वा विगतमोहधर्मि वा । या च रूप-वेदना-संज्ञा-संस्कार-विज्ञानानां न मोहधर्मता नापि विगतमोहधर्मता इयं प्रज्ञापारमिता । न हि सुविक्रान्तविक्रामिन् रूपं संक्लिश्यते वा व्यवदायते वा, एवं वेदना संज्ञा संस्काराः । न विज्ञानं संक्लिश्यते वा व्यवदायते वा । या च रूप-वेदना-संज्ञा-संस्कार-विज्ञानानाम् असंक्लेशता अव्यवदानता इयमुच्यते प्रज्ञापारमिता"[१] । इत्युक्तम् ।

आर्यसत्यद्वयनिर्देशसूत्रेऽपि[२]—

"कतमया पुनर्मञ्जुश्रीः समतया यावत् परमार्थतो यत्समं व्यवदानं तत्समाः सर्वधर्माः परमार्थत इति ?

मञ्जुश्रीराह—देवपुत्र, परमार्थतः सर्वधर्मानुत्पादसमतया परमार्थतः सर्वधर्मात्यन्ताजातिसमतया परमार्थतः सर्वधर्माभावसमतया परमार्थतः समाः सर्वधर्माः[३]"। इत्युक्तम् ।

आर्यसर्वबुद्धविषयावतारज्ञानालोकालङ्कारसूत्रे च[४]—

"संक्षेपतो हि सर्वेऽकुशलमनस्कारास्तावत् संक्लेशहेतवो भवन्ति, सर्वे च कुशलमनस्कारा व्यवदानहेतव इति । तत्र ये चापि संक्लेशहेतवो वा व्यवदानहेतवो वा धर्मास्ते सर्वे स्वभावतः शून्याः, निःसत्त्व-निर्जीव-निःपुद्गल-

---

१. महायानसूत्रसंग्रहः प्रथमो भाग १:१८ पृ० १७ ।
२. दे० क०, सूत्र, 'म', पृ० २४८ ख।
३. उद्धृतं प्रसन्नपदायां पृ० १५९ पृ० २३ ।
४. दे० क०, सूत्र, 'ग', पृ० २९२ ख।

निरात्मक-मायावन्निःस्वलक्षणत्वेभ्यः । अतस्ते अन्तःशान्ताः, ये अन्तःशान्तास्ते प्रशान्ताः, ये प्रशान्तास्ते तावत्तत्प्रकृतिकाः, ये खलु तत्प्रकृतिकास्ते नोपलभ्यन्ते, ये नोपलभ्यन्ते ते नैवोपतिष्ठन्ते, ये नोपतिष्ठन्ते त एव तावदाकाशम्, आकाशं चाभ्यवकाशः। सर्वधर्मान् आकाशसमान् विज्ञायापि संक्लेशः व्यवदानं चेति व्यवह्रियेते आकाशधर्मता चापि नापनीयते । कथमिदमिति चेत् ? मञ्जुश्रीः, जातिनिरोधधर्मवान् न कोऽपि धर्मो भवति'' इत्युक्तम् ।

यदि पुनः परिकल्पितलक्षणशून्यः कोऽपि धर्मः स्यात् तदाऽस्मिन्नेव सूत्रे—

''मञ्जुश्रीः, अद्वयाः सर्वे धर्माः, अर्थान्निःस्वलक्षणा अद्वैधीकारा अनामिका अनिमित्ता अमनश्चित्तविज्ञप्तिका अनुत्पन्ना अनिरुद्धा अहेतुका असञ्चारा असमुदाचारा अनक्षरा अनिर्घोषस्वराः सन्ति[१]''।

इति यदुक्तम्, अपि च—

''मञ्जुश्रीः, यच्छून्यं तदभिनिवेशग्रहणाभावस्यैवैतदधिवचनम्, मञ्जुश्रीः, नोपलभ्यते परमार्थतः कश्चन शून्यताख्यो धर्मः'' ।

इति च यदुक्तम्, तद् विरुध्यते ।

यद्येवं तदा आर्यसन्धिनिर्मोचनसूत्रे[२]—

''अभिलापस्तावन्नास्ति असद्भूतो भावः । तत्र को हि नाम भाव इति चेत् ? यः खल्यवार्यज्ञानेन आर्यदर्शनेन चानिर्वचनीयतायामवबुध्यते, स एव तदनिर्वचनीयतायामवबुद्धत्वाद् असंस्कृतनाम्ना केवलं व्यवह्रियते'' ।

इत्यादिकं यदुक्तम्, तथा भगवत्प्रवचनेषु च यदार्यज्ञानगोचरं प्रत्यात्मवेदनीयं तद् भावस्वभावेन सदिति निर्दिष्टम्, तत्कथं सम्भवेदिति चेत् ? न विरोधः । अत्रार्यज्ञानगोचराणां सर्वधर्माणां यो हि नैरात्म्यलक्षणो धर्मधातुः स एव भावशब्देन विवक्षया वस्त्वभिनिवेशशालिनां भयस्थानं परिहर्तुकामेन तथा देशितम् । अथवा आर्यज्ञानानि सर्वे च धर्माः तथतापन्नाः, अतो वस्तुशब्दाश्रयप्रतिपिपादयिषया

---

१. आर्यसर्वबुद्धविषयावतारज्ञानालोकालङ्कारसूत्रम्, दे० क०, सूत्र, 'ग', पृ० २९४ क ।
२. दे० क०, सूत्र, 'च', पृ० ३ ख ।

धर्मधातुरेवाभिहितः स्यादिति । भगवद्भिरपि विनेयजनाशयानुरोधेन तावत् सा धर्मतैव विविधैरुपायैरुपदिष्टा ।

आर्यलङ्कावतारसूत्रे—

''महामते, पदार्थानां तथागतगर्भोपदेशं कृत्वा तथागता अर्हन्तः सम्यक्सम्बुद्धा बालानां नैरात्म्यसन्त्रासपदविवर्जनार्थं निर्विकल्पनिराभासगोचरं तथागतगर्भमुखोपदेशेन देशयन्ति । तद्यथा महामते, कुम्भकार एकस्मान्मृत्परमाणुराशेर्विविधानि भाण्डानि करोति हस्तशिल्पदण्डोदकसूत्रप्रयत्नप्रयोगाद्, एवमेव महामते, तथागतास्तदेव धर्मनैरात्म्यं सर्वविकल्पलक्षणविनिवृत्तं विविधैः प्रज्ञोपायकौशल्ययोगैर्गर्भोपदेशेन वा नैरात्म्योपदेशेन वा कुम्भकारवच्चित्रैः पदव्यञ्जनपर्यायैर्देशयन्ते''[१] ।

तथताऽपीयं सर्वथाऽवाच्याऽपि व्यवहारवशेन अशेषसंस्कृतधर्मता, अतः संस्कृतेति नाम्ना व्यवह्रियते । उत्पादाद् वा तथागतानामनुत्पादाद् वा तथागतानां सर्वकालेषु स्थितत्वाद् असंस्कृतेति नाम्नाऽपि व्यपदिष्टा । तथता तावत् सर्वस्वभावातीतलक्षणा, अतो नास्त्युभयस्वभावाऽपीत्थमेवावबुध्यते । अन्यथा भवत्सम्मतम् असंस्कृतवस्त्वपि तत् कथं भवेत् । यतो हि (भवता) तदसंस्कृतं वस्त्वित्यप्यभिधीयते, संस्कृतमेव वस्त्वित्यपि चाभिधीयते ।

आर्यरत्नाकरसूत्रेऽप्युक्तम्[२]—

वदन्ति ये वै तथतामसंस्कृतां
तथैव चान्ये कृतकां यतस्ताम् ।
नोत्साहवन्तो ह्युभये भवन्ति
धर्मस्य ज्ञाने सुगतोपदिष्टे ॥

अतस्तदित्थं संस्कृतासंस्कृतयोर्वस्तुत्वग्राहस्तावद् अन्तग्राह इति अथवा श्रावक-प्रत्येकबुद्धानां यद् गोचरं तत्स्वलक्षणं वस्त्वित्यभ्युपगच्छतां बालानां केवलं सन्त्रासपदविवर्जनार्थमेव आर्यज्ञानगोचरं वस्तुसदित्यभिहितम् । बुद्ध-बोधिसत्त्वा-

१. पृ० ३३, दरभंगा संस्करण ।
२. दे० क०, सूत्र, 'थ', पृ० २७ क ।

नाम् अत्यन्तलोकोत्तरज्ञानस्य विषयस्तु पारमार्थिकं वस्तुस्वलक्षणं सर्वथाऽसत्, सर्वधर्मानुत्पादानिरोधविषयकत्वात् सदसत्पक्षविरहितमेव तदिति । सूत्रेऽप्युक्तम्—

"किं लोकोत्तरज्ञानम् ? श्रावक-प्रत्येकबुद्धानां स्वसामान्यलक्षण-पतिताशयानां यो ह्यभिनिवेशः । किमत्यन्तलोकोत्तरज्ञानम् ? बुद्ध-बोधिसत्त्वानां निराभासधर्मप्रविचयेन अनुत्पादानिरोधदर्शनात् सदसत्पक्षविवर्जितं तदिति ।"

श्रावकादयस्तावत् तथ्यसंवृतिसंगृहीतं स्कन्धमात्रं स्वसामान्यलक्षणाकारेण भावयन्ति, अतः पुद्गलनैरात्म्यमात्रगृहीतत्वात्तेषां तज्ज्ञानं वस्तुविषयकमिति व्यवह्रियते, न तु परमार्थतया ।

यदि बुद्ध-बोधिसत्त्वानां ज्ञानस्य विषयः परमार्थलक्षणेन सहैकीभूतं तदा कथं तज्ज्ञानं सत्पक्षविवर्जितं स्यात् ? अत एव हि बालानां सन्त्रासपदविवर्जनार्थम् आर्यज्ञानगोचरं वस्तुसदित्युपदिष्टम्, न तु परमार्थतो वस्तु स्वलक्षणसदिति कथनार्थम् । यद्येवं नास्ति, तदा बुद्धा बोधिसत्त्वाश्च सद्विकल्पसम्बद्धा न भवन्तीति? यथा बालानां सन्त्रासपदविवर्जनार्थमित्युक्तम्, न तु परमार्थतो वस्तुसदिति प्रतिपादनार्थम्, तथा भगवताऽपि सूत्रान्तरेषु देशितम्, तथा हि—आर्यलङ्कावतारसूत्रे[१]—

"किमिदं भगवन् सत्त्वानां त्वया नास्त्यस्तिदृष्टिं विनिवार्य वस्तु-स्वभावाभिनिवेशेन आर्यज्ञानगोचरविषयाभिनिवेशान्नास्तित्वदृष्टिः पुनर्नास्तित्वदृष्टिः पुनर्निपात्यते, विविक्तधर्मोपदेशाभावश्च क्रियते आर्यज्ञानस्वभाववस्तुदेशनया ? भगवानाह—न मया महामते, विविक्तधर्मोपदेशाभावः क्रियते, न च न चास्तित्वदृष्टिर्निपात्यते आर्यवस्तुस्वभावनिर्देशेन; किन्तु उत्त्रासपदविवर्जनार्थं सत्त्वानां महामते, मया अनादिकालभावस्वभावलक्षणाभिनिविष्टानामार्यज्ञान-वस्तुस्वभावाभिनिवेशालक्षणदृष्ट्या विविक्तधर्मोपदेशः क्रियते, न मया महामते, भावस्वभावोपदेशः क्रियते । किं तु महामते स्वयमेवाधिगतयाथातथ्यविविक्तधर्म-विहारिणो भविष्यन्ति"— इति विस्तरः ।

अतो यदार्यज्ञानगोचरविषयो वस्तुस्वलक्षणत्वेन निर्दिष्टः स तावद् भगवत उपायेनैव देशनामात्रम् । अतो भगवतोऽसन्दिग्धं प्रवचननयमनुपादाय ते मिथ्या

---

१. लङ्कावतारसूत्रम्, पृ० ६७, दरभंगा संस्करण ।

(मोषधर्मकं) वस्तुस्वभावत्वेन विकल्पयन्ति । ते तावदभिमानिनो भगवन्तमपि अपवाद्य स्वयं विनश्यन्ति परांश्चापि नाशयन्ति । एवमित्थमस्मिन्नेव सूत्रे वस्तुस्वभावाभिनिवेशिनः आत्मग्राहगृहीतत्वान्न मुक्ता भविष्यन्तीत्येवं समुपदिष्टम्—

"पुनरपरं महामते, प्रमाणत्रयावयवप्रत्यवस्थानं कृत्वा आर्यज्ञान-प्रत्यात्माधिगम्यं स्वभावद्वयविनिर्मुक्तं वस्तु स्वभावतो विद्यत इति विकल्पयिष्यन्ति । न च महामते, चित्त-मनो-मनोविज्ञानचित्तपरावृत्त्याश्रयाणां स्वचित्तदृश्यग्राह्य-ग्राहकविकल्पप्रहीणानां तथागतभूमिप्रत्यात्मार्यज्ञानगतानां योगिनां भावाभावसंज्ञा प्रवर्तते, स एवैषामात्मग्राहः पोषग्राहः पुरुषग्राहः पुद्गलग्राहः स्यात्"[१] ।

अपि च, यदि परमार्थतः स्यात् किमपि वस्तुसत् तदा तदवश्यं नित्यं वा अनित्यं वा स्याद्, अपरायाः कोटेरभावात् । तस्मिन् वस्तुनि नित्यानित्यत्वचिन्तया प्रवृत्ता या प्रज्ञा, सा वस्तुनो यथास्वभावज्ञानानुकूलतया सम्यक् प्रज्ञैव, न तु प्रज्ञापारमितेव प्रतिवर्णिका । अत एव तथागतेन प्रज्ञापारमितायां यदुक्तं तेनापि विरोधः स्यात् । तथा हि—

"कौशिक, ये कुलपुत्राः कुलदुहितारो वा यदा प्रज्ञापारमितामुपदिशन्ति तदा प्रज्ञापारमितावदेवोपदिशन्ति। तत्र ते प्रज्ञापारमितेव कुर्वन्ति। यतो हि रूपमनित्यमित्युपदिशन्ति, तथैव दुःखतां निरात्मतामशुचितां चोपदिशन्ति। एवमेव वेदना संज्ञा संस्कारा विज्ञानं स्कन्धा धातव आयतनानि ध्यानाप्रमाणारूपानुस्मृति-सम्यक्प्रहाणर्द्धिपादेन्द्रियबलबोध्यङ्गानि तथागतस्य दशबलवैशारद्यप्रतिसंविदावेणिका बुद्धधर्माः सर्वाकारज्ञता चेति सर्वं दुःखमनात्मकमशुचीत्युपदिशन्ति। एवमेव यदाचरन्ति तदपि प्रज्ञापारमितायामेवाचरन्ति। कौशिक, तत् प्रज्ञापारमितावदेव कुर्वन्ति।

तत्र ये प्रज्ञापारमितावन्न कुर्वन्ति तत्कथमिति चेत् ? ते इत्थमुपदिशन्ति— कुलपुत्राः, अत्रागच्छथ, प्रज्ञापारमिताभावनायां रूपमनित्यमिति माऽनुपश्यथ, सर्वाकारज्ञतापर्यन्तं दुःखतां निरात्मकतामशुचितां च माऽनुपपश्यथ। यतो हि रूपमितिस्वभावतः शून्यम्, रूपस्य योऽपि स्वभावः, स (सर्वथा) असन्। यच्चासत् सैव प्रज्ञापारमिता। तस्यां नित्यमनित्यमिति नोपलभ्यते। यतश्च यत्ररूपमेव नास्ति तत्र

१. लङ्कावतारसूत्रम्, पृ० ३९, दरभंगा संस्करण ।

कुतो नित्यमनित्यं वा? सर्वाकारज्ञतापर्यन्तमित्थमेव। एवं ये ह्युपदिशन्ति ते प्रज्ञापारमितावन्नोपदिशन्ति।

अपित्वेवमुपदेष्टव्यम्—कुलपुत्राः, अत्रागच्छथ, प्रज्ञापारमितां भावयथ मा च कमपि धर्मं समतिक्रमथ, मा च कस्मिन्नपि धर्मे तिष्ठथ। तत् किमर्थमिति चेत्? प्रज्ञापारमितायां नास्ति कोऽपि धर्मः, यः समतिक्रमितव्यः, यत्र वा स्थातव्यमिति। यतो हि सर्वे धर्मा स्वभावतः शून्याः। ये स्वभावतः शून्यता तेऽसन्तः, सैव प्रज्ञापारमिता। या च प्रज्ञापारमिता, तस्यां न कोऽपि ग्राह्यो हेय उत्पाद्यो निरोध्यश्चेति। यद्येवमुपदिशन्ति तदा प्रज्ञापारमितावदेवोपदिशन्ति।

अतः सर्वे वस्तुवादिनस्तावद् धर्मतथतां विपरीततया निर्दिशन्त्यतः (तन्निर्देशः) प्रज्ञापारमितोपदेश इव प्रतिवर्णिक एव । सर्वधर्मनिःस्वभावतावादिनस्त्वविपरीततया निर्दिशन्त्यतः सोपत्तिका एव त इति भगवता सुस्पष्टं निर्दिष्टम्। इत्येवं भगवान् तत्तत्सूत्रेऽनेकशोऽशेषधर्मान् निःस्वभावत्वेनैवोपदिष्टवान् । विस्तरभिया (अस्माभिः) न बहून्यपितु कतपयान्येवात्रोद्धृतानि । अत एव भगवता तावदसन्दिग्धं सम्यक्प्रवचननयमवधारयितुमशक्नुवतां 'नैव तावदागमद्वारा सर्वे धर्मा निःस्वभावत्वेन साधयितुं शक्याः' इत्यभिदधतां प्रतिविधानमनुष्ठितम् ।

तत्र यद्यल्पमतितया एवंविधां गम्भीरधर्मतां नाधिमोक्तुं पारयन्ति तथापि सविकल्पमात्मनो मन्दप्रज्ञत्वदोषमवलोकयद्भिस्तत्परित्यागो नैव युज्यते । आत्मानं विनाश्य परेषामपि महार्थविरहं कृत्वा प्रणाशो नैव समीचीनः । एवं हि सति स्व-पर-द्रोह एव स स्यात् । अतः प्रज्ञावन्तः श्रद्धावन्तश्च गम्भीरधर्मपरित्यागदृष्टिं परिवर्ज्य भगवन्तं प्रमाणीकृत्य आत्मनोऽज्ञानदोषकारणात् तदपरिज्ञानं सम्भाव्यत इति विचार्य गम्भीरसूत्रेषु श्रद्धामुत्पाद्य श्रवण-चिन्ता-भावनादिषु योगं कुर्युः, परांश्चापि सम्यक् तदधिगन्तुमवतारयेयुः, स्वयं च तदधिमोक्तुं प्रणिदध्युरिति । अत एव आर्यरत्नकूटसूत्रे प्रोक्तम्—

''येऽस्य गम्भीरधर्मस्य गाम्भीर्यं प्रज्ञया अवबोद्धुमशक्नुवानास्ते तथागतमेव प्रमाणं कुर्वन्ति, अनन्ता बुद्धबोधिरिति कृत्वा । यतश्च विविधाधिमोक्षानुसारं तथागता एव धर्मोपदेशे प्रवर्तन्ते, अतस्तथागता एव जानन्ति । नास्मादृशैर्ज्ञातुं शक्यत इति विचार्य तत्परित्यागो नैव युक्तरूपः'' ।

इत्येवमागममुखेन सर्वे धर्मा निःस्वभावा एवेति सिद्धा भवन्ति ।

(३) येऽपि तावदुत्पत्त्यादिविभागं द्वयाभासिना ज्ञानेनैव कुर्वन्ति, न तु स्वसंवित्तिमात्रेण, ते द्वयाभासस्य मिथ्यात्वेन तद्व्यवस्थापितः स्वभावोऽपि मिथ्यैवेत्यभिदधते । तानधिकृत्येदानीमुच्यते—

यदि सर्वधर्माणामुत्पादादिधर्मता मिथ्याज्ञानावभासितत्वेन व्यवस्थाप्यते, तदा कथं सा परमार्थसती भवेत् ? द्वयाभासोऽपि यदि मिथ्यैव तदा कतरज्ज्ञानरूपमवशिष्यते यत् खलु परमार्थसद् भवेत् ? अन्यत्तद् विज्ञानं ग्राह्य-ग्राहकाकाररहितं तदर्वाग्दर्शिभिः नानुभवितुं युज्यते, सर्वेषां सर्वदर्शित्वप्रसङ्गात् । नानुमानेनापि निश्चेतुं शक्यम्, तथाविधहेतोरेवाभावात् । तत्र न तावत् स्वभावहेतुकमनुमानं सम्भाव्यते, तत्स्वभावस्यैव साध्यत्वात् । न च कार्यहेतुरपि, यतो हि कामं स्यात्तदद्वयविरुद्धं तथापि तेन कार्यकारणभाव एव न सिद्धः, इन्द्रियानुभवातीतत्वात् । न चैतद्व्यतिरिक्तमन्यत् कार्यं विद्यते, तथा सति भवन्मतेनाद्वयमेव कार्यं स्यात्, किन्तु साध्यावस्थापन्नत्वान्नैव तत् प्रमाणैः प्रसिध्यति । यो हि द्वयाभासः, स तावद् शशशृङ्गवन्नैव कार्यम् । अतश्च प्रत्यक्षानुपलम्भाभ्यां साध्यभूतस्य कार्यकारणभावस्य सिद्धये परमार्थेऽद्वयज्ञानेन गृह्यमाणं किमपि नास्ति । अनुपलब्धेरपि प्रतिषेधसाधनत्वान्न भवति सा सत्त्वसिद्धिसाधिका । यथोच्यते कैश्चित्—यो हि यत्स्वभावविरुद्धः स तत्स्वभावविविक्तः, यथा शीतस्वभाव-विरुद्धमुष्णत्वं शीतस्वभावविविक्तम्, तथा च प्रतीतिस्वभावो धर्मी, द्वयस्वभाव-विरुद्धत्वात्, व्यापकविरुद्धोपलब्धेः । न चापि हेतोराश्रयासिद्धिः सामान्यसुखदुःखा-कारवेदकस्य धर्मिणो ज्ञानाख्यप्रतीतिस्वभावेन सिद्धत्वात् । न च स्वभावोऽप्यसिद्धः, ग्राह्याकारस्य एकानेकस्वभाववियोगेन असत्त्वे तदाश्रितः परिकल्पितो ग्राहकाकारोऽपि निःस्वभाव एव । न चापि सर्वाभावप्रसङ्गः, केवलेन कर्तृकर्मस्वभावेन कल्पितत्वान्मिथ्यैव । नैवात्मना आत्मत्वमित्यपि युज्यते। यदि सामान्येन परमार्थतो द्वय-विविक्तत्वं साधयितुमिष्यते तदा सिद्धसाधनमेव, यतो हि वयमपि परमार्थतो द्वयस्य मिथ्यात्वाद् विविक्तत्वमेवाभ्युपगच्छामः । यदि ह्यभाव-स्वभावः खलु परमार्थत आकारविरहितविज्ञानत्वेन साधयितुमिष्यते, तदाऽपि सिद्धसाधनमेव, यतो हि वयमपि परमार्थतः सर्वधर्माणामनुत्पन्नत्वात् सर्वविज्ञानानि तावत् परमार्थतोऽसिद्धानि द्वयाकारसुवियुक्तानीत्यभ्युपगच्छामः ।

यदि विज्ञानाख्यं धर्मिणं द्वयवियुक्तत्वेन वस्तुसत्त्वेन च साधयितुमिष्यते तदा दृष्टान्तान्वयासिद्धत्वादनैकान्तिकत्वं हेतोः, बाह्यार्थस्वभावानां शीतोष्णीदीनां सम्यगसिद्धत्वात् । एकस्मिन्नेव ज्ञाने ज्ञानतदवभासयोरवभासितत्वेन अविरोधोऽपि

स्यादतः साध्यविकलं दृष्टान्तमपि स्यादिति । यदि विज्ञानं द्वयवियुक्तं सिध्यति तदा तद्बलेन स्वभावसत्त्वमपि सिध्यतीति चेत् ? दुर्मतिरेषा, सम्बन्धाभावात् । यद्धि द्वयवियुक्तं तदवश्यं सम्यग् वस्तुसदिति को ह्यत्र सम्बन्धः ? यतो हि यदि तन्निवर्तते तदाऽनर्थोपसंहितं प्रमाणमपि निवर्तते । अपि च, तथाविधदृष्टान्तोऽप्यसिद्धः । वन्ध्यापुत्रादिभिस्तेन द्वयेन चाप्यनैकान्तिकः । तस्मिन् द्वये नान्यद् द्वयमपि सम्भाव्यते, अनवस्थाप्रसङ्गात् । शीतादिस्पर्शवियुक्तानामूष्मादीनां स्वभाववत् द्वयस्वभावातिरिक्तः तद्वियुक्तस्वभावत्वेन सिद्धः प्रतीतिस्वभावभिन्नस्तत्समानस्वभावः कश्चिदपि धर्मी नास्त्येव, द्वयात्मकस्यैव प्रतीतिस्वभावत्वात् । एवं हि अन्यव्यक्तिनिरपेक्षः सन् यश्च स्वयमेवात्मनाऽभिव्यज्यते, स प्रतीतिलक्षणः। काय-भूमि-पर्वत-नदी-सागरादयो विविधाकारा ये पुरतोऽवभासमाना बाह्यार्थास्ते स्वयमेवात्मना अभिव्यज्यमानत्वात् प्रतीतिस्वभावातिक्रान्ता एव प्रवर्तन्ते ।

एवमपि ये मिथ्यात्मना कुलेषु गृहेषु च प्रवृत्तिमाचरन्ति, तेषां स्वकायोपगूढदयितया प्रतीतिस्वभावालिङ्गनमिव आचरणाद् असद्द्वयसमायोगोऽयं दूषितत्वान्न विश्वासयोग्यः । तथा च द्वयस्वभावात्मकात् प्रियतमाद् वियोगे सति किमिव नान्येन सह समायोगः स्यादतः केवलमस्यैव धर्मित्वावस्था नैवोपपद्यते । फलतश्च आश्रयासिद्ध एवायं हेतुः ।

सौत्रान्तिकादयोऽपि ज्ञानं परमार्थतो द्वयस्वभावं नाङ्गीकुर्वन्ति, अंशाभावेन विरोधात् । अतस्तस्याद्वयस्वभावसिद्ध्या कस्य सिद्धिः, बाह्यार्थानामपि तद-विरुद्धत्वात् ।

येऽन्यैः प्रमाणैर्बाह्यार्था निराक्रियन्त इति ब्रुवते, तेषां ज्ञानमपि किन्न तथा । ये तावत् कर्तृकर्मभावापेक्षया प्रज्ञप्तत्वान्मिथ्यैवेति कथयन्ति, तदप्यनुभवविपरीत-मिति।

भवन्तोऽपि विज्ञानं परमार्थतोऽद्वयाकारमेवाभ्युपगच्छन्ति । तथा सति ये नीलादिविविधचित्ताकारा बाह्यार्थत्वेन विज्ञानेऽवभासन्ते ते कर्म-कर्तृ-व्यवहारानभिज्ञैः कल्पनादोषविनिर्मुक्ते चित्ते स्पष्टतोऽनुभूता भविष्यन्तीति । विविधवस्तुविशेषापेक्षया त उपलक्ष्यन्त इति चेत् ? तस्य तावद् विशेषस्य बालपर्यन्तं नास्ति सुस्पष्टावबोधः । यदि नियतदेशकालावस्थितस्य तस्याकारराशेः तथाविधस्पष्टावभासतो भिन्नानुभवो मिथ्यैवेति भवन्तः स्वीकुर्वन्ति तदा विमुक्ति-कांक्षिणो भवन्तः तिरोभूतद्वयस्वभावरहितात्मकं प्रतीतिस्वभावं विविक्त-

स्वभावत्वेनाभिनिविश्य आसक्ता एवेति किमन्यत् । तदेतदल्पीयसश्छिद्रान्निर्गतेऽपि विपुलकाये हस्तिनि तत्पुच्छावरोधवच्चिरकालं विदुषामाश्चर्याद्भुतमेवेति । अतश्च स्वतीक्ष्णप्रज्ञाखड्गेन तामासक्तिं छित्त्वा प्रक्षिपत । तेषु विज्ञप्त्यात्मकसत्स्वभावेषु तदवभासिषु च मिथ्याकारेषु नास्ति कश्चन तादात्म्यलक्षणो वा तदुत्पत्तिक्षणो वा सम्बन्धः सत्यासत्ययोरन्योऽन्यपरिहारस्थितलक्षणत्वात् तादात्म्यविरोधः । असतोऽपि न कुतश्चिदप्युत्पत्तिरभ्युपेयते । उत्पत्तौ सत्यामपि न युगपत्तादात्म्येनावभासो युज्यते, कार्यकारणयोः कालस्वभावाभ्यां भिन्नत्वात् । असम्बद्धो नियतावभासोऽपि न युज्यते, अतिप्रसङ्गात् । इत्येवमवश्यं कल्पनाऽभिन्नस्य असत्स्वभावाकारावभासस्य स्वीकारणात् तल्लक्षणान्वित एवाभ्युपगन्तव्यः । अत उभावपि मिथ्यैव भवतः । यद्येवं न स्यात् कथं नाम मिथ्याकारकल्पनास्वभावयोस्तादात्म्येनानुभवो जायेत । अतश्च सत्याभिनिवेशपाशमुत्खातमूलं कुरुत। भगवताऽपि तावदुक्तम्—"यो हि धर्मस्तथागतेनाभिसम्बुद्धः, स न सत्यं नापि मृषा" इति ।

(४) तदपि युक्तिभिरपि (साधयितुं) नैव शक्यते । एवं कतिपयैः प्रत्यक्षैः 'सर्वे धर्मा विविक्ताः' इति ज्ञातुमशक्यत्वात् । वस्त्वेव तेषां विषय इत्यभिद-धानास्तावत् प्रष्टव्याः—किं सर्वेषां पुरुषाणां यानि प्रत्यक्षाणि तानि सर्वधर्मनैरात्म्यं नावबोद्धुं समर्थानि उताहो घनाज्ञानतिमिरोपहतमतिनयनानां भवादृशानां प्रत्यक्षाणि नावबोद्धुमिति । तत्र प्रथमस्तावत् पक्षो नैव युज्यते, प्रमाणाभावात् । सर्वेषां पुरुषाणां प्रत्यक्षाणि न प्रवर्तन्त इति निश्चायकस्य प्रमाणस्याभावात् ।

स्वालम्बननिवृत्तिमात्रं तावद् भ्रान्तमेव । यदि तदुपलब्धिलक्षण-प्राप्तस्यानुपलब्धिरेवासत्त्वेन साध्यते । तदा यतो हि कारणात् स्वेनानुपलम्भः, तस्मिन् अप्रवृत्तिज्ञानां सर्वेषां स्त्रीपुरुषाणां चित्तसन्ततौ प्रवर्तमाना या चित्तप्रवृत्तिः सा तावन्नैव अर्वाग्दर्शिनामुपलब्धिलक्षणप्राप्ता; अपरेषां हि निवृत्त्युपलब्धिरप्य-नियता। अतः प्रेक्षावतां प्रत्यक्षेण तज्ज्ञानं नैव भवतीति यदुक्तं तन्न युक्तमिति ।

अथ द्वितीयः पक्षस्तदा सिद्धसाधनमेव । वयमपि हि अर्वाग्दर्शि-भिस्तथाविधस्य तावद् गम्भीरधर्मतत्त्वस्य प्रत्यक्षतो दर्शनं नैव मन्यामहे । यद्यपि भवादृशाः खलु तथाविधतत्त्वावबोधेऽसमर्थास्तथापि परमयोगिनः, ये कल्पैरनेकैर-प्रमेयपुण्यज्ञानसम्भारार्जनं कृत्वा अनुरूपकृत्स्नोपायसमन्विताः भूतार्थभावनाप्रकर्ष-पर्यन्तजसम्यग्ज्ञानप्रभाभिर्निरस्तसमस्तावरणान्धकारास्तेषां प्रत्यक्षेण तावत् सर्वधर्म-

नैरात्म्यबोधो भवत्येवेति कस्मान्न सम्भवति । (विषयम्) अमुमधिकृत्य पश्चाद् युक्तिरपि प्रदर्शयिष्यते ।

वस्तुविषयकाणि प्रत्यक्षाणीति यदुच्यते तदपि नैव सिध्यति । एवमर्वाग्दर्शिनां यानि प्रत्यक्षाणि तानि तिमिरोपहतप्रत्यक्षवद् रूपादि-मिथ्याविषयकत्वाद् वस्तुस्वभावविषयत्वेन सम्यग्विषयत्वेन वा तावन्नैव युज्यन्ते, अन्यथा सर्वेषां खलु तत्त्वदर्शित्वप्रसङ्गः । बुद्धानां बोधिसत्त्वानां महायोगिनां चापि ज्ञानानि नैव तावद् वस्तुविषयकत्वेन प्रसिध्यन्ति, यस्मान्न तैः कश्चनापि अविपरीतो वस्तुस्वभावः परिदृष्टः । आर्य-बोधिसत्त्वसूत्रपिटकेऽप्युक्तम्[१]—

यदुत सर्वे तैर्धर्मा निस्वभावाः अनिरुद्धाः प्रकृत्योपशान्ताः अत्यन्तमजाताः अत्यन्तमभूताः अत्यन्तपरिनिर्वृता एव दृष्टाः । तैस्तावद् येन दृष्टं तदप्यनिदर्शनम-विदर्शनं च, यतो हि तत् सम्यग्दर्शनं यथावद् दर्शनं चेति । किं पुनः सर्वधर्माणां यथावद् दर्शनमिति चेत् ? तदेव यदनिदर्शनमिति ।

आर्यधर्मसङ्गीतौ नाम सूत्रेऽप्युक्तम्[२]—

"सर्वधर्माणामदर्शनमेव परमं दर्शनम्" ।

इति । अतः प्रत्यक्षविषयाणां सम्यग्वस्तुत्वं न सिध्यति ।

यद्धि असद् भवति वस्तु, तन्न कथमपि विज्ञानमुत्पादयितुं क्षममिति यदुच्यते, तदपि नैव युज्यते । अस्माभिरपि तावद् शशशृङ्गसमेभ्योऽवस्तुभ्यः प्रत्यक्षज्ञानोत्पादो नैवाभ्युपगम्यते। तथापि महायोगिनः, ये मरीचिप्रतिशब्दनिभान् सर्वधर्मान् यथावद् भावयन्ति, तेषु सम्यगर्थभावनाबलेन प्रान्तकोटिकध्याना-वाप्तितोऽनुत्तराचिन्त्यप्रभावसम्पन्नतया तत्प्रत्यक्षेषु सर्वधर्मनैरात्म्यज्ञानं भवत्येव, अशेषधर्मनैरात्म्यसाक्षात्कारि सुस्पष्टं तावज्ज्ञानमुदेत्येव । अत एव तत् तत्त्वादर्शन-मित्यभिधीयते, न तु निषेध्यस्वभावस्यासत्त्वमिति ।

अथ यत्तावत् प्रत्यक्षं तत् सस्वभावमिति यदुक्तं तत् सर्वेषां धर्माणामनुत्पादैकरसत्वात् प्रत्यक्षमपि परमार्थतो निःस्वभावमेव, तथापि या

---

१. दे० क०, रत्नकूट ख ।
२. दे० क०, सूत्र, 'ज', पृ० ६८ ख ।

संवृतिसत्याश्रिता प्रत्यक्षव्यवस्था सा सर्वा तावदव्याहतैव । सर्वेषां धर्माणां परमार्थतो निःस्वभावत्वेऽपि माध्यकिाः सर्वव्यवहाराणां व्यावहारिकाणां योगिज्ञानानामपरेषां पृथग्जनज्ञानानाम् आर्यपुद्गलादीनां ये हेतवस्तान्नैव नाभ्युपगच्छन्ति, किन्तु ये तावत् संवृतितोऽप्यहेतुकास्ते खलु व्यवहारतोऽप्यनुत्पन्ना एव, शशशृङ्गवत् । यत् सत् तत् परमार्थतो निःस्वभावमपि तावदुत्पद्यते, मायाप्रतिबिम्बादिवत् । मायादीनां सर्वेषां प्रतीत्यसमुत्पन्नत्वेऽपि नास्ति वस्तुताप्रसङ्गः, साधकबाधकप्रमाणबाधितत्वात् ।

तथैव प्रतीत्यसमुत्पन्नत्वेऽपि सर्वधर्माणां नास्ति वस्तुताप्रसङ्गः प्रमाण-बाधितत्वात् । यथैव हि मन्त्रौषधादिप्रभावेण गजादिविविधमायाप्रादुर्भावस्तथैव कर्मक्लेशादिप्रभावेण सत्त्वानामुत्पादादयः प्रादुर्भवन्ति । योगिनां तावत् स्वकीयपुण्यज्ञानसम्भारसञ्चयवशेन योगिज्ञानादिमाया-प्रादुर्भावः, यतो हि विविधैर्हि प्रत्ययैः सा मायाऽपि विविधैवावभासते ।

आर्यप्रज्ञापारमितासूत्रेऽप्युक्तम्[१] :

''कश्चिच्छ्रावकनिर्मितः (कश्चित् प्रत्येकबुद्धनिर्मितः) कश्चिद् बोधिसत्त्व-निर्मितः कश्चित् तथागतनिर्मितः कश्चित् कर्मनिर्मितः । अनेन सुभूते, पर्यायेण सर्वधर्मा निर्मितोत्पन्ना इति'' ।

बाल-पृथग्जनेभ्यस्तावद् योगिनामेतदेव वैशिष्ट्यं यत्ते मायाकार इव यथावन्मायां परिजानन्ति, न च तथैव तस्यामभिनिविशन्ते ।

आर्यधर्मसङ्गीतावप्युक्तम्[२] :

मायाकारो यथा कश्चिन्निर्मितो मोक्षमुद्यतः ।
न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ।।

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा सम्बोधिपारगः ।
संनह्यते जगद्धेतोर्ज्ञातपूर्वं जगत् तथा ।।

यथा बालपृथग्जनजातीयदर्शकेषु उत्पत्त्यादिमायाभासो भवति, तथैव ये तस्मिन् सत्यतोऽभिनिविशन्ते, ते विपरीताभिनिवेशवशाद् ''बालाः'' इत्यभिधीयन्ते।

---

१. भावनाक्रमः १:१९२ उद्धृतम्, ति० सं० ।
२. द्र०-दे० क० 'ज़', पृ० ४३ ख, भावनाक्रमः १:१९२ उद्धृतम्, ति० सं० ।

अतः संवृतियोगवाहिनि योगिप्रत्यक्षे तथा स्थितत्वात्तेषां शशशृङ्ग इवात्यन्ताभावो नैव भवति । अत एव प्रत्यक्षतोऽशेषधर्मनैरात्म्यज्ञानं तावत् सदेव । अविरोधोऽपि तत एवेति । परमार्थतो निःस्वभावत्वेऽपि योगिनः पृथग्जन इव व्यवहारतया व्यवस्थापयन्ति ।

आर्यपरमार्थसंवृतिसत्यनिर्देशसूत्रे तावदुक्तम्[1] :

"परमार्थतोऽत्यन्ताभावश्च संवृत्या च मार्गं भावयतीति कथनवत्"

'यदर्थान्तरविविक्तपाक्षिकेण प्रत्यक्षेण परिगृह्य तदितरशून्यप्रत्यक्षेण तावदवबुध्यते'— इत्यादिकं यदुक्तं तदपि नैव युज्यते, इतरेतरशून्यत्वादस्य नयस्य, न तु लक्षणशून्यत्वादिति । लक्षणशून्यत्वे तु सर्वे धर्मास्तावत् परमार्थतो निःस्वभाव-त्वेनैवाभ्युपगम्यन्ते, यतस्तेषां स्वसामान्यलक्षणानि परमार्थतो यथा व्यवस्थितानि, तेभ्यस्तच्छून्यत्वात् ।

या हि वस्तूनामितरेतरशून्यता सा नैव परमार्थः, व्यवहारसत्यमाश्रिता खलु सा । इत्येवमनुत्पादरसैकत्वेऽपि सर्वधर्माणां नैव भेदाभावः, तथापि स्वप्नाद्य-वस्थादिवद् बालेषु परस्परभिन्नान्यवभासन्ते । अत एवात्र यथाप्रसिद्धिमर्थान्तर-विविक्तग्रहणमुखेन तावदितरेतरशून्यता व्यवस्थाप्यते, न तु परमार्थतया । यतो हि स्वप्नमायादिसदृशवस्तूनां स्वभावः परमार्थतः परस्परमभिन्नः । अत एव भगवताऽभिहितम्—

परमार्थमनाश्रितत्वेनेयं सर्वतः प्रतिक्रुष्टेति परिवर्जनीयैव । आर्य-लङ्कावतारसूत्रे तावदुक्तम्[2] :

"एवं महामते, इतरेतरशून्यता सर्वजघन्या, सा च त्वया परिवर्जयितव्या"।

या खलु सर्वधर्मलक्षणशून्यता, या च तस्याः स्वसामान्यलक्षणव्यवस्था, सा उपलब्धिलक्षणप्राप्ताऽपि सती योगिभिः परमार्थतया अनुपलब्धाकारैव । अतः सर्वे धर्मा निराभासज्ञानोत्पत्त्या ज्ञाता भवन्तीति व्यवस्थाप्यते। अत एव च इतरेतरशून्यता बालपृथग्जनानां परिकल्पनामश्रित्यैवाभिहिता, असम्बद्धैव चैषा ।

---

१. भावनाक्रमः १:१९२ उद्धृतम्, ति० सं० ।
२. भावनाक्रमः १:१९२ उद्धृतम्, ति० सं० ।

(५) सा च 'योगिप्रत्यक्षेण सम्यगवगम्ये' ति कथनं नैव विदुषां रुचिकरम्। युक्त्यभावस्तत्रेति यत् कथनं तदपि नास्ति युक्तिसङ्गतम्, युक्तीनां तावद् संविद्यमानत्वात् ।

विद्वांसः कल्पनापोढमभ्रान्तमिति प्रत्यक्षलक्षणं समुदीरयन्ति । अर्थाभावेऽपि भावनाबलेन अर्थावभासि सुस्पष्टं ज्ञानमुत्पद्यते । तथाहि—यथा कामशोकभयोन्मादाद्युपहतेषु असकृदभ्यासबलेन प्रमदाद्यवभासि स्पष्टं ज्ञानमुपजायते, येन ते तान् पुरःस्थितानिव दृष्ट्वा सहसा विविधशरीरकम्पादिभिश्चेष्टमाना दृश्यन्ते[1] ।

अतश्च यथोक्ततत्त्वं भावयत्सु तज्ज्ञानमुत्पत्स्यत एवेति सम्भाव्यते । यच्च स्पष्टावभासि ज्ञानं तन्नूनं निर्विकल्पकमेव, कल्पनावायुप्रकम्पितकायाकारस्य सुस्पष्टमनुपपन्नत्वात्, प्रदीपवत् ।

प्रयोगः—ये तावत् केचिन्निरन्तरं सादरं भावनामनुतिष्ठन्ति, ते भावनाफलं प्रकर्षपर्यन्तजं स्फुटावबोधमनुभवन्त्येव, रागाद्युपहतैः प्रमदादिभावनावत्[2] । यत्र चिरकालं निरन्तरं सादरं सर्वधर्मनैरात्म्यभावनं स्वभावहेतुः, तत्र प्रमाणोपपन्नार्थविषयकमविसंवादकं (ज्ञानं) भवत्येव, व्यवहारेण धूमादिलिङ्गजनितनिश्चयेनोत्पन्नाग्न्यादिज्ञानवत् । योगिनां खलु तन्नैरात्म्यज्ञानमपि प्रमाणोपपन्नार्थविषयकमिति स्वभावहेतुः ।

अस्य प्रमाणोपपन्नत्वं पश्चात् प्रकाशयिष्यते । स्पष्टावभासमानं सद् यज्ज्ञानमविसंवादनं जनयति तत् प्रत्यक्षं प्रमाणम्, रूपादिव्यवहारार्थमनुपहतचक्षुषां चक्षुर्विज्ञानादिवत्, सर्वधर्मनैरात्म्यविषयकं योगिनां ज्ञानमपि स्पष्टावभासमानं सद् अविसंवादकमिति स्वभावहेतुः । यद्येवं सर्वधर्मनैरात्म्यज्ञानं युक्तिभिः सुसाध्यं तदा कथमिव विद्वांसस्तत्र न प्रीताः? यदपि योगिज्ञानं तदसदिति यदुच्यते, तत्पूर्वमस्माभिः सम्यगुत्तरितम्, सर्वधर्माणां शशशृङ्गवदत्यन्ताभावस्याभावात् । तथापि परमार्थतस्तेषामभाव एव मायावत् । अतो नैवास्माभिः सर्वे व्यवहारास्तावन्निषिध्यन्ते, न च तेऽस्माभिर्नाभ्युपेयन्त इति यदुक्तं तत्तथा ।

---

१. तु०— कामशोकभयोन्मादचौरस्वप्नाद्युपप्लुताः ।
अभूतानपि पश्यन्ति पुरतोऽवस्थितानिव ।।
(प्रमाणवार्तिक २:२८२, पृ० १२१, मोतीलाल बनारसीदास-१९८९)

२. तस्माद् भूतनभूतं वा यद् येदवातिभाव्यते।
भावनापरिनिष्पत्तौ तत् स्फुटाकल्पधीफलम्।। (प्रमाणवार्तिक २:२८५)

(६) यैस्तावत् ''अनुमानेनापि सर्ववस्तूनि निःस्वभावत्वेन साधयितुमशक्यानि, कस्यापि धर्मिणो विषयस्यासिद्धत्वात्, दृष्टान्तादीनां चानुत्पन्नतावत्, सर्वासां युक्तीनां विषयस्य स्वभावस्य चासिद्धत्वात्'' इत्येवमुक्तम्, तदप्यसम्बद्धमेव ।

इत्थमस्माभिर्निःस्वभावत्वेनाभ्युपेते सति यदा भवन्तः प्रसङ्गमापादयन्ति तदा स प्रसङ्ग एव नास्ति ।

यैः खलु हेतुभिरस्माभिर्वस्तूनां निःस्वभावताऽभ्युपेयते, तत्र परमार्थतो हेतुदृष्टान्तधर्मिणामसत्त्वाद् यद्यनुमानानुमेयादिसर्वव्यवहाराभावप्रसङ्गोऽस्मास्वापाद्यते, तदा स प्रसङ्ग एव न भवति, इष्टापत्तेः । यतो वयमपि अनुमानानुमेयादिसर्वव्यवहारादीनां परमार्थतोऽप्रवृतिमभ्युपगच्छामः । फलतः कथमिव तावत्तदभावप्रसङ्ग आपतेदिति । अस्वीकरणं हि नाम प्रसङ्गलक्षणम् ।

वयं तावद् भवद्भिः प्रयुक्तं दूषणमपि परमार्थतोऽनुत्पन्नमेवाभ्युपगच्छामः । अतो नास्ति कोऽपि दोषावसरलेशः । अत एवाचार्यपादैः—

यदि किंचिदुपलभेयं प्रवर्तयेयं निवर्तयेयं वा ।
प्रत्यक्षादिभिरर्थैस्तदभावान्मेऽनुपालम्भः ॥[१]

इत्युक्तम् । यत् परमार्थतोऽसत् तद् व्यवहारेऽपि प्रवर्तितुं न शक्यत इत्येवं यो हि प्रसङ्गः, स प्रसङ्ग एव न भवति, व्याप्त्यसिद्धेः । यतो हि येन कारणेन यस्यात्मनिवर्तनं तेन तस्य व्यवहारनिवर्तनं तु नास्ति परमार्थस्वभावव्याप्तम्, अपि तु तद्विपर्ययव्याप्तमिति । व्यवहारस्तु परमार्थतोऽभावस्वभाव एव । परमार्थस्वभावविरहिता अपि स्वप्नादयो विविधव्यवहारेषु प्रवर्तमाना दृश्यन्ते । अतः सर्वेऽपि तावद् व्यवहारा निर्माणस्वप्नादिवदविरुद्धा एव ।

निर्मितको निर्मितकं मायापुरुष स्वमायया सृष्टम् ।
प्रतिषेधयसे यद्वत् प्रतिषेधोऽयं तथैव स्यात् ॥[२]

सर्वत्र साध्यधर्म्यादीनां परमार्थभूतत्वादेव अनुमानादिव्यवहाराः प्रवर्तन्त इति हेतोः परमार्थतो निःस्वभावत्वे सति नानुमानादिव्यवहाराः प्रवर्त्स्यन्त इति यो

१. विग्रहव्यावर्तनी, पृ० २८५, मध्यमकशास्त्रे, दरभंगा संस्करण ।
२. विग्रहव्यावर्तनी, पृ० २८३, मध्यमकशास्त्रे, दरभंगा संस्करण ।

हि दोष आरोप्यते, सोऽपि तावद् दोषाभाव एव । निर्विवादरूपतया सप्रसङ्गत्वात् परमार्थधर्म्यादिभिः अनुमानादिव्यवहाराः कुत्रापि नैव सिद्धाः, तथापि लोके यथाप्रसिद्ध एव धर्मिणि व्यवहारा भवन्ति । यतो हि प्रवादिनो हि तत्त्वनिर्णयार्थमेव अनुमानादिव्यवहारान् प्रयुञ्जन्ति । यथोक्तम्—

धर्मधर्मिव्यवस्थानं भेदोऽभेदश्च यादृशः ।
असमीक्षिततत्त्वार्थो यथा लोके प्रतीयते ।।

तं तथैव समाश्रित्य साध्यसाधनसंस्थितिः ।
परमार्थावताराय विद्वद्भिरवकल्प्यते ।।[१]

पुनश्च,

यथानुदर्शनं चेयं मेयमानफलस्थितिः ।
क्रियते विद्यमानाऽपि ग्राह्य-ग्राहकसंविदाम् ।।

अन्यथैकस्य भावस्य नानारूपावभासिनः ।
सत्यं कथं स्युराकारास्तदेकत्वस्य हानितः ।।[२]

इदं तावद् व्यवहारिकप्रमाणलक्षणमित्यपि कथ्यते । प्रमाणस्य तावत् सर्वाणि लक्षणानि तत्त्वप्रवृत्त्यर्थमेव भवन्ति, अन्यथा व्यर्थान्येव तानि स्युरिति । प्रमाणलक्षणशास्त्राण्यनधीयानासु गोपालकाङ्गनासु एवमुपदेशाभावेऽपि धूमादिलिङ्गदर्शनतोऽग्न्यादीनां ज्ञानमुत्पद्यत एव । अत एव वयमपि तत्त्वप्रवेशाय तथताव्यवहाराभ्यामनुमानादिप्रवर्तनाद् दोषरहिता एव ।

अपि च, ये व्यवहारेणानुमानादिप्रवृत्तौ यत्रानित्यादि वस्तुधर्मं सत्स्वभावं साधयन्ति, तेषां निःसंशयं तत्र व्यवहारेण वस्तुभूतधर्म्यादयः स्युरेव, यतो हि तत्र तथाविधा आश्रयहीना साध्यादिस्थितिर्नैव सिद्धा ।

यदि तत्र तथाविध आश्रयो नास्ति तदा साध्यनिषेधनाद् आश्रया-सिद्ध्याख्यो दोषो दीयते । सोऽपि यदि यथाभूतधर्मिणो निवृत्तिश्चेत्तदा निःसंशयं

---

१. प्रमाणवार्तिके स्वार्थानुमानं ८५-८६ का० ।
२. प्रमाणवार्तिके प्रत्यक्षपरिच्छेदः २:३५७-३५८ ।

साध्यादिधर्मिणोऽविनाभावस्य निषेधं करोति, यतो हि असिद्धे सति हेत्व-सिद्ध्यादिदोषा दीयन्ते । स्वयमुपकल्पितानां कतिपयधर्मिणां निवृत्तावपि साध्यादेः कस्यापि निषेधस्याभावाद् असिद्ध्याादिदोषा नैव युज्यन्ते, तदभिलषितार्थसिद्धौ बाधाऽभावात् । ये वस्तुधर्मं सत्स्वभावं साधयितुं नाभिलषन्ते, अपि तु तदारोपितधर्माणां व्यवच्छेदसिद्धिमात्रं विवक्षन्ते, तेभ्योऽसिद्ध्यादिदोषानापादयितुं व्यवहारेऽपि वस्तुभूतधर्मी नैवावश्यकः, तस्य तद्धर्माभावात् ।

तदपेक्षयाऽपि तद्धर्मिता नोपपद्यते । तदसिद्धावपि साध्याविनाभावी हेतुरभीष्टार्थसाधकः, बाधकाभावात् । वादिनोऽभीष्टार्थसिद्धौ प्रतिवादिन उपघातकामनया धर्मिणः सदसत्त्वमन्वेषयन्ति, न तु कामचारतः। धर्मिणो-ऽसत्त्वादिचर्चयाऽपि किम् ? यदि वादिनोऽभीष्टार्थहानिर्न स्यात् । 'चोदको दोषहीनः' इत्यपि कथनं विपर्ययदोषाणुपरिपूरिते परिधावनमात्रमेव, अन्यत्राभावात्। अत एव साध्यधर्मं तदनुकूलधर्मिणं चावगन्तुं पक्षलक्षणवेलायामेव युक्तिविद्-भिर्विशेषेण 'स्वधर्म' इत्यभिधीयते ।

एवं यस्तावत् स्वकार्याणि युगपन्न साधयति, स न भवत्यप्रति-हतनित्यैकस्वभावः, वन्ध्यापुत्रवत्। परैरिष्टमाकाशादिकमपि शब्दादिकार्यं न साधयतीति व्यापकानुपलब्धि, इत्यभिहितेऽयं तावन्न विरुद्धहेतुरपीति केचित् । साध्यसाधनयोरिव आकाशादिर्नैव वस्तुभूतः स्वभावधर्मीति साधनभूतोऽयं हेतुराश्रयासिद्ध इत्यपरे । तत्रापि आकाशदिधर्मिणां वस्तुतायाः कृतेऽप्यत्र निराकरणे साध्याभावमात्रमभ्युपगच्छतां नास्ति कोऽपि दोषः, हेत्वभावमात्रेण च नास्ति स्वभावोऽप्यसिद्धः, वस्तुताया अभावेऽपि धर्मिणां सिद्धेः । अतो विप्रति-पत्तिनिराकरणाय स्वाभिमतधर्म्येव यदि बाध्येत चेत्तदा साध्य एव तावन्निषेध्यो भवति, न तु धर्मान्तरयुक्तो धर्मीत्येवं निर्देशकाले स्वेष्टप्रत्यक्षानुमानाप्तप्रसिद्धिद्वारा निषेधमविधाय स्वभावस्यैव तावन्निषेधः स्वधर्मी भवतीत्यत्र पक्षधर्मता-वस्थायामाचार्येण स्वधर्मी कथित इति वार्तिककारः । तथहिः

सर्वत्र वादिनो धर्मो यः स्वसाध्यतयेप्सितः ।
तद्धर्मवति बाधा स्यान्नान्यधर्मेण धर्मिणि ।।
अन्यथास्योपरोधः को बाधितेऽन्यत्र धर्मिणि ।[१]

१. प्र० वा० ४ : १३६ का० ।

इति विस्तरः । विप्रतिपत्तिनिराकरणार्थं चोक्तम् :

यथा परैरनुत्पाद्यापूर्वरूपं न खादिकम् ।
सकृच्छब्दाद्यहेतुत्वादित्युक्ते, प्राह दूषकः ।।

तद्वद् वस्तुस्वभावोऽसन् धर्मी व्योमादिरित्यपि।
नैवमिष्टस्य साध्यस्य बाधा काचन विद्यते ।।

द्वयस्यापि हि साध्यत्वे साध्यधर्मोपरोधि यत् ।
बाधनं धर्मिणस्तत्र बाधेत्येतेन वर्णितम् ।।[१]

अवश्यं चैतदवगन्तव्यम् । अन्यथा क्रमयौगपद्याभ्यामभिव्यक्तेन अर्थक्रियासामर्थ्यवियोगेन परपरिकल्पिताः पदार्थाः कथमिव निषेद्धुं शक्ष्यन्ते । सद्वस्तुनस्तावन्नैव कथमपि निषेधः कर्तुं पार्यते । आश्रयासिद्धदोषेण यदि असतोऽपि नैव कर्तुं पार्यते तदा निषेध एव कस्यापि कथमपि कर्तुं नैव शक्यते । अत एव योगाचारैस्तावदुक्तम्—

विषयत्वं न चैकस्मिन्ननेकमपि नास्त्यणौ ।
नास्ति तत् क्षणिकं वाऽपि सच्चापि न हि विद्यते ।
क्रमेण युगपच्चापि स विरुद्धो भवेदिति ।।[२]

इत्यादिभिर्बाह्यादिनिषेधः कथमिव कर्त्तुं शक्यः स्यात् ।

तैर्थिकैःपरिकल्पितेषु द्रव्य-गुणकर्मसामान्यादिषु निषेद्धुमिष्यमाणेष्वपि कथं तत्र आश्रयासिद्धादयो दोषा नैव प्रवर्त्स्यन्ते ? यदि प्रसङ्गसाधनमात्रेणैव निषेधनान्न प्रवर्त्स्यन्त इत्येवं ब्रूयात्तदा अप्रमाणं हि तत्र प्रसङ्गसाधनम् । फलत एकान्तेनैषामभावो व्यवहारे कथं सिद्धः स्यात्, प्रमाणापेक्षितत्वात्तस्य ।

अथ प्रमाणमेव प्रसङ्गसाधनमिति चेत्तदा किमिव तत्र आश्रयासिद्धादयो दोषा न प्रवर्तन्ते ? युक्तिबलेन आगन्तुशीलेषु दोषेषु प्रेक्षावद्भिः स्वतः (स्वपक्षतः) सिद्धिर्नैव युक्तिमती अथ बाह्यार्थादीन् निषेद्धुकामानां विद्यत एव वस्तुभूतो

---

१. प्र० वा० ४:१४०-१४३ का० ।
२. तु०— न तदेकं न चानेकं विषयः परमाणुशः।
न च ते संहता यस्मात् परमाणुर्न सिध्यति ।। १२ ।।
(विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि, वाराणसेय संस्कृत० वि० वि०, पृ० ४५)

बुद्धिलक्षणो धर्मी, यतस्तेनैव बाह्यार्थेषु प्रधानादिषु चोत्पत्तिनिषेधः साध्यते, अतः आश्रयासिद्धादयो दोषास्तत्र न प्रवर्तन्त इति चेत्तदा एकानेकस्वभाव-वियुक्तत्वक्रमयौगपद्यव्याप्तार्थक्रियासामर्थ्यविरहितत्वादयो हेतवस्तदा अप्रसिद्ध-तद्धर्मत्वधर्मिणि अभीष्टसाध्यधर्मं साधयिष्यन्त्येव ।

अपक्षधर्मत्वेऽपि साध्याविनाभावमात्रहेतुः साध्यसाधनेऽसमर्थः । यद्येवं स्यात्तदा चाक्षुषत्वमपि शब्दधर्मणि कथमनित्यत्वसाधनेऽशक्तम् ? यदि ते तत्प्रसिद्धत्वमभ्युपगच्छन्ति तदा बाह्यप्रधानादिवत् बुद्धिरेव शक्तत्वैकानेकत्वव्याप्त-धर्मवियुक्तत्वान्निःस्वभावैव तावत् सेत्स्यति, तेषां तद्धर्मत्वात् । अन्येऽपि धर्मा नान्यसिद्धा भवन्ति । सामर्थ्यादिविरहितं वस्तु तावदसिद्धमेव ।

अन्यथा (यद्येवं न स्यात्तदा) ततो बाह्य-प्रधानादयो न निःस्वभावाः सेत्स्यन्ति । निःस्वभावत्वे खलु सिद्धे आश्रयासिद्धादिदोषाणां तादवस्थ्येऽपि नास्ति स्वपक्षहानिप्रसङ्गः । बुद्धौ तावत् सिद्धेऽपि बाह्यप्रधानादिभिरुत्पत्तिनिषेधे प्रधानादीनां परिकल्पितस्वभावनिषेधस्तु असिद्ध एव, आकारान्तरत्वात्तस्य । यद्यसिद्ध एव सः, तदा परकल्पिताः प्रधानादयोऽसन्त एव । एवंविधे तावद् धर्मिणि कथमसद्व्यवहारोऽपि प्रवर्तेत । न खल्वन्येषु अन्यव्यवहारप्रवृत्तिर्युज्यते ।

केचन तावदज्ञानिनस्त्रिषु प्रतिसंख्यानिरोधाद्यसंस्कृतेषु कस्याप्युत्पत्ति-मत्त्वाभावं परमार्थवस्तुरूपेण परिकल्पयन्ति । तन्निषेधसाधने च बुद्धेस्तावत् कथं नाम विषयिभावो भविष्यति, यतो ह्यन्ये (वादिनः) तेषु तया उत्पत्तिमत्त्वाभावधर्मं नाभ्युपयन्ति । अतो तन्निषेधस्तावन्न कथमपि साधयितुं शक्यः ।

अथ अनादिकालीनस्वबीजपरिपाकविकल्पपरिनिष्पन्नबालानां बुद्धौ विद्यमानो बाह्यवस्तुविकल्प एव धर्मी, तदाधारेण प्रधानादीनां निषेध्यमानत्वात् । स परमार्थतः स्वभावविरहितोऽपि भ्रान्त्या बाह्यमिव प्रधानाद्यभिन्नमिव सर्वसामर्थ्यशून्यं च सर्वधर्मसमवेतमिव कल्पयति । तत्र प्रधानादिस्वरूपनिषेधे प्रधानादिस्वरूप-निषेधस्तावत् साध्यसाधनविषयकः सिध्यति, यतो हि स बालैर्बाह्यप्रधानाद्युप-गृहीतवादिप्रतिवादिभिरपि तैमिरिकैर्द्विचन्द्रदर्शनमिव तदभिन्नतयैव व्यवह्रियते।

स हि यद्यपि (सर्वथा) बुद्ध्या परिकल्पितमात्र एव, तथापि तदाकारतया बुद्धिरित्येवमुपचर्यते वस्तुतोऽयं नास्ति (कथमपि) बुद्धिस्वभावः, तद्विलक्षण-स्वभावेनावभासमानत्वात्तस्य । अतः सिद्धेऽपि तस्य निःस्वभावत्वे बुद्धिनिः

स्वभावताया नास्ति प्रसङ्गः, यतो हि बाह्यप्रधानादीनां तावन्निषेधस्तु प्रमाणैः साध्यते, न तु (कदाचित्) तत्त्वनिषेधाय हेतवः प्रयुज्यन्ते ।

वस्तुसतां शब्दादिबाह्यधर्मिणाम् अनित्यादिधर्मसिद्धये (ते) बाह्यशब्दाद-यस्तदभिन्नाश्च बुद्धिस्थ उपचारधर्मिण्येवाश्रयन्ते, यतो हि ते देशकालादि-भिन्नावस्थानियता बाह्यशब्दादयो वादिप्रतिवादिनां बुद्धौ स्वस्वभावेन नैव प्रत्यक्षीभवन्ति । साध्यसाधनादिविशेषाणामप्यसम्भवः, निरंशत्वात् । अतोऽनुमानानुमेयादयः सर्वे व्यवहारा बुद्धिस्थ एव धर्मिण्याश्रिताः प्रवर्तन्ते, प्रकारान्तरासम्भवात् । यद्येवं तदा परमार्थतो निःस्वभावत्वे परिकल्पितधर्मिणं निःश्रित्य निषेधादिसिद्ध्यर्थम् आश्रयासिद्धादिदोषाणामप्रवृत्तावपि कामं बलेनास्मासु उपालम्भाः क्रियन्ते ।

यथा हि परमार्थप्रवृत्त्यर्थं भवन्तः प्रधानादिनिषेध्ये परिकल्पितधर्मिण्येव साध्य-साधनादीन् मनसिकुर्वन्ति, तथैव वयमपि प्रसिद्धेषु रूपशब्दादिषु ये तावत् सदसदादिस्वभावा आरोप्यन्ते, तन्निषेधाय बालेभ्यस्तान् माया-मरीचि-स्वप्न-प्रतिबिम्बादिसमान् निर्दिशामः ।

तत्र यथा आरोपिते धर्मिणि वस्तुत्वारोपणनिषेधेऽपि वादिप्रतिवादिषु प्रतिभासमानत्वाद् असदादिदोषा न प्रवर्तन्ते, तथैव रूपादयोऽपि तावदा-गोपालङ्गनानामवभासन्ते, तत्कथं नाम तेऽसिद्धा भविष्यन्तीति । अवभासो हि तत्कारणनिवृत्त्या जायमानेन सत्यस्वभावेन तावन्नास्ति व्याप्तः, अलीकस्याप्यवभास-मानत्वात् । यद्येवं नो चेत्तदा सर्वे पुरुषास्तत्त्वदर्शिनः स्युः, केवलस्य तत्त्वस्यैवावभासमानत्वात् ।

यथैव हि तस्मिन् परिकल्पितधर्मिणि सामर्थ्यशून्यत्वव्याप्त्युपन्यासेन निः-स्वभावत्वं प्रसाध्य प्रधानादयः साध्यन्ते, तथैवास्माभिरपि परिकल्पितवस्तुनि तत् (निःस्वभावत्वं) सम्यक्तया साधयितुं यथोक्तः सामर्थ्याभावादिः कथं न सिद्धः स्यात्। प्रेक्षावद्भिस्तु स्वीकरणं विचारार्हम्, भावात्मकताया निर्णयस्यायुक्तत्वात्, विचारा-वस्थायां तु नास्त्येव । अतस्तन्निर्णयो न कृतः विचारोऽपि निर्णयार्थक एव । यतः प्रमाणद्वारा सिद्धान्तनिर्णयकाले कोऽपि सिद्धान्तो नाभ्युपगतो भवतीत्यतस्तस्मिन् काले कस्मिन् आश्रयासिद्धिमुखेन धर्म्यसिद्ध्यादिदोषः प्रदातुं शक्यते । अथ वादी प्रमाणैस्तत्त्वनिर्णयं कृत्वा परेभ्यस्तत्प्रतिपादयितुं प्रवृतः, अतः स सिद्धान्ताभ्युपगमात्

पूर्ववर्तीति मन्यते, तदाऽपि तावन्न युज्यते । स्वप्रतीतिकाले सिद्धान्तो नाभ्युपगम्यत इति ।

पूर्वत एव सिद्धान्तमनभ्युपगच्छन्तो वादिनः स्वयं प्रमाणतस्तत्त्वज्ञानं कुर्वन्ति, तैरेव चापरानपि बोधयन्तीति कथं सिद्धन्तोऽभ्युपगतः स्यात् । पूर्वं स्वयं प्रमाणैस्तत्त्वनिश्चयं कृत्वा सिद्धान्तेन अपरेभ्योऽवबोधनमपि नास्ति सिद्धम् । अपरेऽपि प्रेक्षावन्तस्तावत् तच्छब्दमात्रेणैव प्रमाणैरनुपपन्नेऽर्थे नैव विश्वसन्ति । अतः स्वनिर्णयवद् अपरेभ्योऽपि निर्देशसमये तादवस्थ्यात् सर्वत्र प्रमाणैरेव तत्त्वनिर्णयः क्रियते । अतः सिद्धान्तो नाभ्युपगतो भवतीति । अत एव कथं तेन धर्मिणस्तावदसिद्धादयः प्रतिपाद्यन्ते । सम्यक्प्रमाणबलेन वादिनामभीष्ट-साध्यसिद्धावपि 'सिद्धान्ताभ्युपगमात् तेभ्यो दोषा जायन्ते' इति ये वदन्ति किं तेषां युक्त्यन्तरमिति । वस्तुतस्तत्त्वविमर्शावसरे सिद्धान्तप्रसिद्धे धर्मिणि न केऽप्याश्रयन्ते । तथाविधस्य धर्मिणिः कुत्रापि वादिप्रतिवादिष्वसिद्धत्वादेव ।

यथा बौद्धेषु शब्दादयो भौतिका इत्यभ्युपगम्यन्ते, न तथा वैशेषिकादिषु, आकाशगुणत्वेन तस्याभ्युपगमात् । यदि तथाविधो धर्मी सिद्धो न स्यात्तदा न कोऽपि कुत्रापि तत्साधनार्थं प्रवर्तेत । यदि तथाविधो सिद्धस्तदा तद्धर्मोऽपि उभयसम्मतः सिद्ध एव । अतो नास्ति विवादावसरः । अत एव सर्वे तत्त्वजिज्ञासवः सिद्धान्त-विशेषसिद्धं धर्मिणमपहाय आगोपालप्रसिद्धमेव तमाश्रित्य साध्यसाधनविषयकं चिन्तनं परिवर्धयन्ति । अतः सिद्धान्ताश्रयणं कृत्वा आश्रयासिद्धादिवचनम-सम्बद्धमेव।

व्यवहारे येऽप्रसिद्धा धर्मिणस्तेषु चोदनमिदं समुचितमेव । अस्मासु रूपादयस्तावद् व्यवहारेऽपि नाप्रसिद्धाः ।

(७) "यत्खलु परप्रसिद्धप्रमाणैः स्वपक्षः साधनीयः" इति यदुच्यते तद् दूषणमेव तावन्न भवति, अनभ्युपगमात् । अतो व्यवहारे वयम् उभयसिद्धैर्हेत्वा-दिभिः साध्यं साधयाम इत्येवं पश्चान्निर्देक्ष्यामः ।

(८) "सर्वे धर्मा विविक्ताः, न केनापि सम्यग्लिङ्गेनालिङ्गिता अति-परोक्षत्वाद्" इति यदुक्तं तदपि तावन्नैव युज्यते, सिद्धेऽपि साध्यर्मिणि साध्यधर्मसम्यग्लिङ्गयोः परस्पराविनाभूतस्य साध्यसाधनभावस्याप्रवर्तनात्, विवादाभावाच्च तत्र । तथापि कतिपयेषु धर्मिषु स सिद्धः, कतिपयेषु च सन्दिग्ध

इति । अतः अविनाभावनियमनिर्देशेन सामान्यधर्मिणि साध्यधर्मं साधयेयुरिति कथनं युज्यत एव ।

तद्वदत्रापि माया-मरीचि-स्वप्न-गन्धर्वनगरादिसदृशेषु कतिपयेष्वेव धर्मिषु स सिध्यतीत्यतः परमार्थतो निःस्वभावत्वाद् एकानेकस्वभावादिधर्मेषु व्याप्तिः सिद्धैव । अपि च, अस्माभिरन्यत्र सविवादेषु रूपादिषु व्याप्तिधर्मोपदर्शनेन साधितत्वान्नास्ति दोष इति ।

(९-१०) ये केचन—"कार्यस्वभावाभ्यां हेतुभ्यां नैव सर्वे धर्मा निः-स्वभावा इति साधयितुं शक्यन्ते, वस्तुसाधनत्वात्तयोः" इति यत् कथयन्ति, तदपि नैव युज्यते, परमार्थतो भावस्वभावसाधनावेताविति कुत्राप्यनुल्लिखितत्वात् ।

यदा साधनस्वरूपान्तःप्रविष्टत्वादिमौ वस्तुसाधनावित्युच्येते तदा निः-स्वभावतायामपि प्रयोगविशेषवशेन साधनस्वभावावेव । अतस्तत्साध्यमानायां कथं न तौ (हेतू) सम्भवतः ? स्वभावहेतुरेव कार्यादिहेतुभ्यः प्रयोगभेदेन विविधाकारेषु प्रपञ्चितः । अत एव विद्वद्भिः "पक्षधर्मस्तदंशेन व्याप्तो हेतुः[१]" इति सामान्येन हेतुलक्षणं निर्दिष्टम् । अतोऽत्रापि प्रयोगभेदेन स्वभावादयः औचित्यवशान्न विरुध्यन्ते। पश्चादप्येवं निर्देक्ष्यामः ।

तत्र सर्वे धर्मा परमार्थतोऽनुत्पन्ना निःस्वभावाश्च, तथापि इमौ द्वावपि तेषु व्यवहारसत्यत्वेन विद्येते एव । अतः कथं तावेकस्मिन्न सम्भवतः । "केवलं सम्यक् कार्यमात्रेण स्वभावमात्रेण वा हेतुना भवितव्यम्" इति यदुक्तम्, तस्यापि किमपि कारणं नास्ति, यतो हि प्रतिबिम्बफलमप्यनुमानमेव स्वहेतुतया-लम्बनीकरोति । "आदर्शादिगतः प्रतिबिम्बो हि तावदन्यदेकं रूपम्" इति यदुक्तम्, तदपि न युच्यते, सप्रतिघत्वस्य एकस्मिन्नेव विषयेऽनुपपन्नत्वात् । "तदेव रूपं तथैवालम्ब्यते" इदमपि कथनं नैव समीचीनम्, तथाविधविषयाकारसम्बद्धस्वभावेन विरहितत्वात् ।

यद्यपि प्रतिबिम्बादय आदर्शाद्याश्रयाश्रिता भवन्ति, तथापि यदि विषयाकारादिभेदानुरूपतया आलम्ब्येरन्, तदा तद्रूपं तथाविधं स्थिरस्वभावं

---

१. प्र० वा०, २ : १ ।

नास्त्येव । अन्याकारग्रहणमपि तावन्नैव युज्यते, अतिप्रसङ्गात् । 'विज्ञानस्यैव प्रतिबिम्बाकारतया प्रतिभासनादस्ति स (आकारः) विज्ञानस्वभावेन वस्तुसन्' इदि यदुक्तं तदपि न युक्तियुक्तम्, यतो हि अमूर्तं नीलादिविज्ञानं निरंशतया स्थितं विविधाकाररहितमेव भवतीत्युच्यते । प्रतिबिम्बवस्तु तद्विलक्षणतया प्रतिभासत इत्यतः कथं स (आकारः) तत्स्वभावेन सन् स्यात् । यथोक्तं भवताऽपि त्रिंशिकायां पुद्गलनिःस्वभावतां प्रतिपादयता यद् यो हि परिकल्पितः स्वभावः स सर्वथा मिथ्यैव, वन्ध्यापुत्रादिवत् ।

आत्मादयः परिकल्पितस्वभावा एवेत्यादिभिः प्रयोगैः स्वभावहेतुरेवोच्यते । तथैवान्येऽपि परपरिकल्पितधर्मा नैवालम्बिता भवन्तीति कथं नोच्यते । यथाचार्यैर्निर्दिष्टं तथा सर्वधर्मनिःस्वभावतासाधनायां व्याप्यानुपलब्धिलक्षणा धर्माः कथं नोक्ताः। तथा पश्चान्निर्देक्ष्यामः । यत्खलु स्वभावानुपलब्धिरसम्भवेत्युक्तं तत्तावत् पूर्वं कृतोत्तरमिति । नयोऽयमन्योऽन्यशून्यताया इत्यप्यशक्यसाधनः । तदा किमिति प्रश्ने लक्षणशून्यतेयमिति ।

(११-१२) विरुद्धोपलब्ध्यादयोऽसम्भवा इति यदुक्तं ता अत्यसम्बद्धा एवेति। यतो हि सर्वे धर्मा विविक्ताः कतिपये च सहविरुद्धा इति न सिध्यन्ति, तथापि माया-खपुष्पादयश्च सामान्यतया निःस्वभावाः सहविरुद्धाश्चेति सिध्यन्त्येव ।

यद्येवं नास्ति तदा कथं भवद्भिः परपरिकल्पिता ईश्वरादयो निः-स्वभावत्वेन साधयितुं शक्यन्ते । अतः सामान्येन निःस्वभावतामात्रेण यदि व्यवहारे विरुद्धादयः सिध्यन्ति, ततः सर्वेषां धर्माणां परमार्थतः सत्त्वाभ्युपगमे विरुद्धधर्मादीनुपदर्श्य निःस्वभावत्वेन तेषां सम्यक् साधनात् किमत्र तावद् विरोधः । तद्विरुद्धादीनां वस्तुतायां प्रसङ्गो न युक्तरूपः, यतो हि परमार्थतो निःस्वभावेषु धर्मेषु भूतरूपाभिव्यक्तिस्तु, कुत्रापि सम्यग्भावस्वभावे नोपतिष्ठति । यदि तिष्ठेत्तदा विरुद्धादयो न सिध्येयुः ।

अतो यदि सर्वे धर्मा निःस्वभावाःसहानवस्थानविरुद्धाश्च सिध्यन्त्य-तस्तद्विरुद्धेषु वस्तुताप्रसङ्ग इति न वक्तव्यम्, विरुद्धादीनां व्यवहारसिद्धत्वात्, न तु परमार्थतः । एवमेव दीपकादौ अदृढलक्षणे वस्तुनि परिच्छिन्ने सति दृढाकारविविक्ततैव तावत् परिच्छिद्यते, यतो न व्यवहारे व्यवच्छेदः, अतः परिच्छेदानुपपत्तिरेव तत्र । यो यथा परिछिद्यते, यत्र च तथा परिच्छेदो नास्ति, स

अभाव एव तावत् परस्परपरिहारस्थितलक्षणो विरोधो व्यवस्थाप्यते । सदसतोः क्रमाक्रमयोश्च विरोधयोरपि तथैव द्रष्टव्यम् । नास्त्यासन्ने देशेऽग्निः, अविकलशीत-स्पर्शादित्यादिस्थलेषु स विरोधस्तावत् सहानवस्थानलक्षणो व्यवस्थाप्यते ।

प्रसिद्धेऽपि तस्मिन् विरोधे दीपकादयो हि वस्तुरूपेणात्यन्तमनुपपन्नाः, मायादिमिथ्यावस्तुष्वपि जातिविनाशयोरवभासमानत्वात् अत एव आचार्यैः परमार्थप्रवृत्त्यर्थं यथा दीपकादिषु नित्यानित्यादिविरोधोऽवभासते, तथैव व्यवस्था कृता । दीपकादयो बाह्यार्थत्वेन विज्ञानरूपत्वेन वा परमार्थतोऽसिद्धाः, उभयोः स्वभावयोस्तैरेव निराकृतत्वात् । परमार्थवस्तुस्वभावेन सहानवस्थानलक्षण-विरोधस्य साक्षात्कारि ज्ञानं परमार्थवस्तुस्वभावे न कथञ्चित् प्रवर्तते, अर्वाग्दर्शिनां दर्शनमार्गेऽप्रवृत्तत्वात् । सहानवस्थानलक्षणो विरोधस्तावत् सांवृतिक एव, वस्तूनां स्वयमेव विनश्यमानत्वान्नान्यकारणैः । यदि प्रत्ययान्तरैर्विनाश इति तदा न विनाशहेतुभिस्तत्र किमप्युपक्रियते । प्रत्ययान्तरैः क्रियमाणेऽपि विनाशे स स्वहेतुभिरेव क्रियते, नान्यकारणैरिति ।

यद्यवस्तुत्वाद् विनाशस्य तत्त्वेन अन्यत्वेन वा तस्य विज्ञप्तिर्न युज्यत इति चिन्त्यते तदा आत्यन्तिकतया स विनाशकारणैर्न क्रियते, निःस्वभावत्वात् । अतोऽकिञ्चित्करा अग्न्यादयो हि कथं नाम परमार्थतो विरुद्धाः सेत्स्यन्ति । तथाप्यग्न्यादयः शीतादीन् क्रमशो निःसामर्थ्यलक्षणान् अनित्यान् प्रकर्षतमान् उत्पादयन्त्यत एव ते ह्यग्न्यादयो विरुद्धा इति केवलं व्यवह्रियन्त एव । अत आचार्यैर्विरोधनयोऽयमित्युक्तो न तु विरोध एवेत्युक्तः । अतश्च विरोधोऽयं व्यवहारमात्राश्रित एवोक्तो न तु परमार्थाश्रितः । अग्निशीतादयश्च न परमार्थतो बाह्यार्थस्वभावाः सिध्यन्ति, तेषां तावज्ज्ञानाकारस्वभावोऽपि च कल्पित एव । एकस्मिन् ज्ञाने शीतोष्णयोरवभासः सम्भवति । अनेकानि सजातीयविज्ञानानि युगपन्नैव सम्भवन्ति, अतः शीतादयः स्वप्नादिवन्मिथ्यावभास एव, अतो नास्ति तेषु परमार्थतो विरोधः।

(१३-१९) वृक्ष-शिंशपादीनि व्याप्य-व्यापकवस्तून्यपि व्यवहारमाश्रित्य परिकल्पितसामान्य-विशेषव्यवस्थया व्यवस्थाप्यन्ते, यतो हि वृक्षादयो व्यापकाः वस्तुतः सामान्यात्मकाः । परमार्थतस्त्वेतत् किमपि नास्त्येव ।

विशेषादयस्तावन्न बाह्यार्थस्वभावाः, ज्ञानाकारा अपि परमार्थतयाऽसिद्ध-त्वात्। तथाप्युपेक्षिततत्त्वार्था विद्वांसो गजावलोकनमिव स्वप्नदृष्टखदिरादि-

विविधमिथ्याविषयाणामनुभूतिवद् वृक्षादिवस्तूनां मृषात्वमेवाश्रित्य तथतायां प्रवृत्त्यर्थं परमार्थानुकूलतया व्याप्यव्यापकादिव्यवस्थां कुर्वते । तथैव बीजाङ्कुरादीनि कारण-कार्यादीन्यपि संवृत्याश्रयेणैव व्यवह्रियन्ते, न तु परमार्थसत्तया, बीजादीनां परमार्थतोऽसिद्धत्वाद् वितथानामपि स्वप्नादीनां तथैवावभासमानत्वाच्च ।

जाग्रदवस्थायां मायाकार्यकारणादीनि वितथान्यप्युपलभ्यन्त एव । अतस्तानि व्यावहारिकेण कार्यकारणभावेन वस्तुस्वभावत्वेन व्याप्तानि भवन्ति । किन्तु तावता तानि परमार्थस्वभावतया न समवतिष्ठन्ते । यतो हि व्यापके विद्यमानेऽपि सति व्याप्यस्य सिद्धिर्न नियता । तथापि वस्तुस्वभावत्वेन सुव्याप्तानि कार्यकारणवस्तूनि यदि निवर्तन्ते, तदा मायादिवत् परमार्थतः परिकल्पितो वस्तुस्वभाव एव निवर्तते । अतः विरोधादिसर्वा व्यवस्थास्तत्त्वप्रवृतौ समर्था भवन्ति। अत एव विद्वद्भिस्तथताया निर्देशः कृतः । तैर्थिकपरिकल्पिततानि प्रमाणादीनि तथताया अननुकूलत्वात् परित्याज्यानीति सम्यक्प्रमाणलक्षण-प्रतिपादकस्य शास्त्रस्य प्रणयनं कृतमिति ।

इत्थं कतिपये तैर्थिकाः पिण्डात्मादिकं मिथ्यावस्तुतत्त्वं सिसाधयिषया सर्वज्ञता-विरागिता-कर्मफलसम्बन्धादीनां सांवृतिकीं व्यवस्थां निराकर्तुं प्रमाणानां विपरीतलक्षणानि कुर्वन्ति । अतः सुधियस्तावत्तन्निषिध्य पुद्गलधर्मनैरात्म्यतथतायां प्रवेशानुकूलां सांवृतिकीं कर्मफलसम्बन्धादिव्यवस्थां प्रतिष्ठापयितुं प्रत्यक्षादीनां विशुद्धानि प्रमाणलक्षणानि विरचितवन्तः ।

तान्यपि भगवता (तथागतेन) अनुज्ञातान्येव । अतो वयं परमार्थानुकूलानि विशुद्धप्रमाणलक्षणान्येव तावन्मन्यामहे । अतो विरोधादिव्यवहाराणां स्वीकृति-मात्रेण यो हि भावस्वभावाभ्युपगमप्रसङ्गः, स तावदनैकान्तिक एव, तदभ्युपगमेऽपि भावस्वभावस्यासिद्धेः ।

(२०) नन्वेवमनुमानेन सह सम्बन्धप्रसिध्यर्थं प्रत्यक्षप्रमाणं यद्यभ्युपगम्यते तदा वस्तुनस्तावत् सिद्धिरेव, कल्पनापोढत्वादभ्रान्तत्वाच्च प्रत्यक्षप्रमाणस्य । अभ्रान्तज्ञानेनाध्यवसितः खलु वस्तुस्वभावः कथं नामानुमानेन निराकर्तुं शक्यते ? यदि निराक्रियते तदा प्रत्यक्षमेव तावद् बाधितं स्यात् । यदि तद् बाधितं स्यात्तदानुमानमेव तावन्न स्यात् सुस्थितम् । प्रत्यक्षसम्बद्धेनाप्यनुमानेन प्रत्यक्षं बाध्यत इति कथनतो नैवानुचितमन्यत् । यदि प्रत्यक्षसिद्धोऽर्थोऽनुमानेन नैव बाध्यते तदा प्राप्यस्य प्राप्त्या सुस्थित एव तावद् वस्तुवादीति कथनमपि सम्यङ् निराकृतमेवेति ।

इत्थमाचार्यैस्तावत्प्रत्यक्षस्य द्वैविध्यमभिहितम्—योगिप्रत्यक्षं सामान्यप्रत्यक्षं च । तत्र यद्धि साधारणं प्रत्यक्षं तत् परमार्थमधिकृत्य नास्त्यभ्रान्तम् । अन्यथा सर्वं योगिप्रत्यक्षमेव स्यान्न च स्युः केचनाप्यर्वाग्दर्शिनः । योगिप्रत्यक्षातिरिक्तं सामान्य-प्रत्यक्षं यद्यपि (अभ्रान्तं) नास्ति तथापि व्यवहारे स्वप्नादिवद् यथाप्रसिद्धेनार्थेन सहाविसंवादात्तदभ्रान्तमुच्यते । श्रावकीयाणि योगिप्रत्यक्षाणि पुद्गलनैरात्म्यमात्र-साक्षात्कारीणीत्यतस्तदविसंवादेन प्रत्यक्षप्रमाणानि, न तु सर्वाकारगोचरत्वेनेति । केवलं भगवत एव प्रत्यक्षं सर्वाकारतत्त्वगोचरम्, अतस्तदेव तावदविपरीतम-विसंवादकम् । फलतो यदेव सर्वाकारतत्त्वमधिकृत्याभ्रान्तं तदेव सर्वाकार-तत्त्वाविसंवादाद् यथार्थमभ्रान्तमिति । अत एव भगवद्भिरेव तावत् सर्वधर्म-लक्षणरहितता परिज्ञाता ।

तस्य सर्वाकारज्ञानस्य नास्ति वस्तुताप्रसङ्गोऽपि, सर्वधर्मसंगृहीतत्वात्तस्य । अतस्तेन लक्षणाभावतायामभिसंबुध्यते । आर्य-प्रज्ञापारमितायामपि—''यदुत प्रत्यक्षलक्षणं सर्वाकारज्ञानम्, अलक्षणे अभिसम्बुद्धत्वात्तथागतानाम्''— इति यदुक्तं तत्तथैव ।

व्यवहारार्थस्तावत् प्रत्यक्षगोचरार्थः मिथ्याभासितस्वप्नादिवत् । स यदा बालैर्वस्तुतः परमार्थत्वेनारोप्यते, तदा स अनुमानबाधितो भवति, न तु दर्शनादिव्यवहारार्थः (बाध्यते) । अतो यदभ्रान्तं तत् प्रत्यक्षम्, न चानुमान-बाधितमिति । यश्च परमार्थत्वेनारोपः स एव बाध्यते, तदभ्रान्तत्वाभावात्। अतो नास्त्यनेन प्रत्यक्षापवादप्रसङ्गः ।

अर्वाग्दर्शिनस्तावदनुमानेन प्रत्यक्षसम्बद्धत्वेऽपि न परमार्थत्वप्राप्ता भवन्ति, अपितु केवलं संवृतावेव (तिष्ठन्ति) । यतो हि अर्वाग्दर्शिभिर्वास्तविकः परमार्थस्वभावः प्रत्यक्षतया पृथक् पृथक् नानुभूयते । अतो नैव वस्तुस्वभावः संवृतिमपि बाधते किन्तु यो हि तत्र सत्याकारत्वारोपस्तन्निराकृतिरेव साध्यते । फलतो वस्तुवादिनो अर्थाभावेऽपि अर्थाभिनिवेशिनस्ते कथं सुस्थिता इति ।

एकतोऽनुमानं व्यवहारेण प्रत्यक्षसम्बद्धं सत् स्थितिं प्राप्नोति, अपरतश्च प्रत्यक्षं काष्ठद्वयघर्षणजनिताग्निरिव तद्बाधां करोतीति बाधितमेव तदिति चेन्नैतावताऽस्मास्वनिष्टापत्तिरिति । यथा सर्वे जागतिकधर्मा यथावत्प्रवि-चयाग्नेरिन्धनानि भवन्ति, स च मिथ्येन्धनानि भस्मीकृत्य स्वयमप्युपशान्तः प्रशान्तविकल्पलक्षणमुत्तमं निर्वाणमवबोधयतीति । यदुत—

विज्ञानाग्नेर्जगद्धर्माः सर्व एवेन्धनं मताः ।
तान् यथावत्प्रविचय्य ज्वालैर्दग्ध्वोपशाम्यति ।। (रत्नावली १:९७)

अतो यदि तत्त्वज्ञानमुत्पद्यते तदाऽनुमानलक्षणा कल्पना निवृत्ता सती निराश्रयाऽपि नानभ्युपगता (भवति) । अत एव भगवता रत्नकूटे सविकल्पाऽपि सम्प्रत्यवेक्षणा निर्विकल्पज्ञानफलोत्पत्तेः कारणमिति (मत्वा) महाफलाभिनिर्वृत्तये काष्ठद्वयघर्षणजनिताग्नेर्दृष्टान्तेन निर्दिष्टा ।

(२१) अपि च, सर्वधर्माणां निःस्वभावत्वसाधने यद्येको हेतुभूतो धर्मो निर्दिश्यते तदा निवृतिसाधकः स धर्मो विरुद्धो जायते ।

(२२) यद्यसन् स धर्मस्तदा असतोऽभावेनासम्बद्धत्वात् कथं हि स (अभावं) साधयेदिति ।

(२३) यद्युभयात्मक स धर्मस्तदाप्यनैकान्तिक एव । अतोऽहेतुकमेव (निःस्वभावत्वमिति) ये प्रतिविदधति तदप्यसम्बद्धमेव । यतो ह्यनेन तावत् सदसदुभयधर्माणां परमार्थत्वसाधने हेतोरसम्भवत्वमेवोच्यते युक्तिज्ञैः, न तु निः-स्वभावतादिसामान्यधर्माणां लक्षणसाधने (सम्भवत्वमिति), यदि तथैव स्यात्तदा परपरिकल्पितानामीश्वरादीनामपि निःस्वभावत्वसाधने कथं नाम ते सर्वे चोद्या नावतरिष्यन्तीति ?

तद् यथा ईश्वरादिषु सामर्थ्यव्याप्यवस्तुत्वनिषेधार्थं वस्तुस्वभावे समारोपं च निषेधार्थं असद्धर्मा न भवन्त्यसम्बद्धाः। एवमेव परमार्थतः कार्यकारणादिवस्तुधर्मेषु व्यापकनिषेधेन समारोपनिषेधं साधयितुं कथं नास्मासु साध्यसाधनसम्बन्धः। अन्यथा प्रधानादयोऽशक्यनिषेधाभवेयुः, यतो हि वस्तुसति स्वभावे न तथा कर्तुं शक्यते। यदि असता असम्बद्धतया असामर्थ्यं तदा कुत्र सामर्थ्यं स्यात्। परमार्थतोऽसद्वस्तुनि न भवति कश्चन सम्बन्धो नाम। यतो हि व्यापकनिषेधेन व्याप्यनिवृत्ति-स्तावन्निर्देशमात्रमेव। यथा सद्वस्तुनि धर्मधर्मिभावादिसर्वाणि वस्तुजातानि कल्पितानीति व्यवस्थाप्यन्ते तथा असद्वस्तुन्यपि कथं तानि नैव व्यवस्थाप्यन्ते ?

अपि च, यदा कोऽपि कदाचिदपि स्वलक्षणतया भावत्वेन परमार्थतो नैव सिध्यति, तदा वस्तुलक्षणस्य तथाभूतत्वात् तदभावोऽप्यसिद्ध एव, परमार्थतस्तत्र सदसदुभयधर्मत्वेन कस्यापि हेतोरसम्भवात्। अतस्तेषां प्रतिवादो वा परीक्षणं वा

कथं युज्येत, सर्वेषां वस्तूनां मायादिवत् सदसदुभयधर्मातीतत्वात् । सत्त्वस्य तदभावस्य चापि हेतोरानुकूल्येन वादिप्रतिवादिनोर्यथाप्रसिद्धत्वेन ते प्रसिद्ध्य-विनाभूता एवोक्ताः । अतस्तेषु धर्म-धर्मित्वं विरुद्धत्वं व्याप्य-व्यापकत्वं स्वभावः कार्यत्वादीनि च यथा आभासन्ते तथैव सर्वा अपि व्यवस्था अविरुद्धा एव । कैश्चिद् विद्वद्भिर्यदि दर्शनस्यास्य धर्म-धर्मिविरुद्धाद्याधारेण प्रतिवादः क्रियते तदा तत्र परमार्थव्यवहारनयानवबोध एव कारणं भवतीति । अतोऽनवमर्दनीयमेतदिति ग्राह्यम्।

(२४) तदपि न शब्दमात्रेण सिध्यतीति यदुक्तं तन्न दूषणमनभ्युपगमात् । न वयमपि शब्दमात्रेण शून्यतां साधयामः।

(२५) न च प्रसङ्गमात्रेण, अपि तु सम्यक्प्रमाणेनैवेति । इत्येवं यदि वस्तुषु परमार्थस्वभाव एको भवति तदा प्रकारद्वयमेव तत्र भवेत् हेतुप्रत्ययापेक्षिततत्वात् सर्वेषाम्, उत्पद्यमानस्वभावतया अनित्यत्वाच्च । यथाऽत्र सौत्रान्तिकयोगाचाराणा-मैकमत्यम्, स्वभावेन सिद्धत्वादाश्रितान्तर्भूतं वा तैर्थिकपरिकल्पितात्मादिवत् । न च नित्यानित्ययोरन्योऽन्यपरिहारस्थितलक्षणत्वात् तृतीया काचन गतिः । स्वभावेऽस्मिन् उभयमपि प्रकारद्वयं परमार्थतया न सम्भवति, साधकप्रमाणाभावाद् बाधक-सम्भवाच्च । यदि प्रत्यक्षमनुमानं वा तत्र साधकप्रमाणं तदा वस्तुस्वभाव एव पूर्वं तावदुभाभ्यां न सिद्धः, स तु (वस्तुस्वभावः) तदैव स्यात्, किन्तु कार्यकारणभाव एव तावत् प्रत्यक्षेण न परमार्थतः सिद्धः । सोऽपि तावदिन्द्रियप्रत्यक्षेण स्वसंवेदनप्रत्यक्षेण वा सिध्यति, यतो हि नार्वाग्दर्शिनो मानसप्रत्यक्षं व्यवहरन्ति, नापि च तन्मानसप्रत्यक्षं कुत्रापि सिध्यतीति तत्प्रामाण्यमङ्गीक्रियते ।

तत्र केचिदिन्द्रियप्रमाणेन न सिध्यतीति ब्रुवते, पृथगर्थविषयित्वेन निर्दिष्टत्वात्तस्य, किन्तु कार्यकारणभूतस्य तस्यान्यार्थस्य परमार्थतो ज्ञानग्राह्यत्वं नैव युज्यते । विज्ञाने स्वप्रतिभास इव यो हि ज्ञानेतरस्वभावोऽन्यावभासः (प्रतीयते), स नैव (ज्ञानाद्) अन्यः । अन्यानन्यौ हि परस्परविरुद्धौ । अतस्तदाकारेण ज्ञानेनान्यस्य प्रतीतिरिति यदुच्यते, तदपि नोपपद्यते, अतिप्रसङ्गात् ।

यद्येवं तदा घटादयः, येऽन्यप्रकाराननुविधाय प्रादुर्भवन्ति, तेऽपि सर्वे परस्परं गृहीतस्वभावा एव। योऽपि तदाकारस्तज्ज्ञानाकारमेवेति विशेषाभिधाने सत्यपि विज्ञानसादृश्येनैवान्यावबोधः संजायते, न घटमात्रादिनेत्येवं विशेषो नास्ति । विज्ञानस्वभावत्वेऽपि तेषां स्वस्वभावस्थितत्वादन्येष्वकिञ्चित्करत्वमेव । यदि नास्ति

विशेषस्तदाऽर्थक्रियार्थिनः स्वतो वस्त्वनुविधानेन सम्प्रयुज्यन्ते, तथापि प्रतिनियतार्थ-क्रियास्वभावः कुत्रापि न सिध्यति, अतिप्रसङ्गात् ।

नाट्य-चन्द्र-मल्लदर्शनवद् युगपदनेकदर्शनेन तद्विज्ञानेष्वपि परस्परसाम्यं स्यात्, ज्ञानस्वभावसाम्येन च तेषामपि परस्परं प्रत्यक्षत्वं प्रसज्येत । तदुद्भूतत्वे सतीति विशेषान्तरोपादानेऽपि अन्यार्थस्य प्रत्यक्षत्वेन प्रस्तुतिरसम्भवैव, यतो हि अभ्युपगममात्रेणोपचरितत्वाद् विशेषो न प्रसिध्यतीति ।

अन्यच्च, अन्यार्थो यदि प्रत्यक्षत्वेन प्रसिध्यति तदा ज्ञानविशेषस्ता-वत्तत्सदृशस्तदुद्भूतो वा साधनीयः । कथं ज्ञानेनान्यार्थो गृह्यत इत्येवं विचार्य-माणेऽन्यार्थो यदि प्रत्यक्षतोऽसिद्धस्तदा कथं तावदसिद्धेन स्वभावविशेषेण सिद्धा मार्गविशेषाः सेत्स्यन्त इति यावत् ।

तद्विज्ञानक्षणिकत्वस्यापि समनन्तरप्रत्ययार्थानुबलेनोपपन्नत्वाद् यथा ज्ञानानि पूर्वक्षणसापेक्षतया समुद्भवन्ति तथा जन्मान्तराण्यपि सम्भवन्ति । अतः पूर्ववर्तिनां परवर्तिज्ञानग्राह्यत्वप्रसङ्गस्य निवृत्तिर्दुष्करैव।

अपि च, ये तावदवयव्यादिबाह्यवस्तूनां प्रत्यक्षत्वमामनन्ति, स्व-सिद्धान्तानुसारं च यथा तद्दर्शनोपचारं कुर्वन्ति तथा प्रत्यक्षतयाऽवभासो नास्त्येव । कदाचिदप्यवयविनस्तदाकारग्राहिज्ञाने प्रत्यक्षानुभवो न भवति। सर्वदैव पाण्याद्यनेकावयवसमूहाकारज्ञानमेव प्रत्यक्षतयाऽनुभूयते ।

नीलाद्यवयविनो गुणेषु सदित्याकारकं ज्ञानं नैवानुभूयते, आधार-स्याप्रत्यक्षत्वे तद्गुणादिमात्राणां ग्रहणासम्भवात् । अरिष्ट-नीलाक्ष-पीताक्ष-तिमिराद्युपहतनेत्रेषु दूर-समीपस्थित एकस्मिन्नपि वस्तुनि विभिन्नानि विषमाकाराणि ज्ञानान्युत्पद्यन्ते, अतो बाह्यावयविविषयकं कल्पनाजालं चित्ते नास्त्येव विद्यमानम्, तथात्वे तस्य पृथग्ग्रहणप्रसङ्गात्। अतस्तदात्वे तत्स्वभावगुणाद्युत्पत्तिः सर्वथाऽसती एव । विरुद्धधर्माणामपि गुणानां यद्येकत्वं तदा भिन्नसत्ताकानामप्येकत्वप्रसङ्गः ।

बाधकाभावाद् गुणादीनां सर्वेषां धर्माणां सर्वेषां प्रत्यक्षत्वप्रसङ्गः । स्वप्नादिषु तथानीलादिगुणवतामर्थान्तराणां विद्यमानत्वेऽपि नीलाद्याभासिज्ञानानां पृथगनुभवो भ्रान्त एव, न चाकारवशेन अर्थान्तरग्रहणव्यवस्था युक्तिमती । ये खलु परमाण्वात्मकनीलाद्यर्थानां प्रत्यक्षत्वमामन्वते तेष्वपि तावत् समानदोषताप्रसङ्गः,

निरवयवानां सूक्ष्मपदार्थानां भिन्नाकारेषु ज्ञानेषु पृथगनुभवाभावात् । समूहविषयाणि तानि ज्ञानान्यभ्युपेतानि, स्वप्नादिवच्च तानि स्थूलावभासीन्यनुभूतानि । न समवायिभिन्नः समवायः समस्ति, नापि समवायकल्पनया तदुपचारः सम्भवति ।

यदि सञ्चितानेकवस्तुग्रहणात् स्थूलेषु भ्रान्तिरुपजायते, तदा तदानीन्तन-ज्ञानस्य अप्रामाण्यप्रसङ्गः, भ्रान्तत्वादिति । यदि सा स्थूलभ्रान्तिश्चित्तेनोपकल्पिता, तदाऽभिव्यक्तौ अनाभासताप्रसङ्गः, कल्पनाविषयाणां सर्वदा अस्पष्टावभासनात् । यदि तानीन्द्रियज्ञानान्तर्गतानि तदा परमाणूनां सर्वदाऽग्रहणप्रसङ्गः, सर्वदा तदाकारज्ञानानुत्पत्तेः ।

यत्स्थूले भ्रान्तं तत्तथाग्रहणतः पूर्वमपि न (अभ्रान्तं) सिध्यति, आरम्भे उत्पत्तावेव स्थूले भ्रान्तत्वाभ्युपगमात् । परतः प्रमाणैर्यदि प्रमाण्यं सिध्यति तदा या स्थूले भ्रान्तिः सा ग्रहणपूर्विकैवैका सिध्यति, यदि न तथा सिध्यति तदा सा भ्रान्तिर्गृहीतेत्येव न सम्भवति। स्वप्नादिष्वन्यप्रमाणानि न गृह्यन्ते, तथापि स्थूले भ्रान्तिस्तु (तत्र) दृष्टैव, अतस्तस्यास्तत्पूर्वकत्वं न युज्यते । मरुभूमौ लघ्वपि वस्तुजातं महदित्यवलोक्यते । तत्र दूरादूरभेदेन स्पष्टास्पष्टावभासभेदोऽपि नैव भवति, तस्यैकवस्तुत्वेन तत्र तादृशाकारा नैव सम्भवन्तीति ।

अपि च, यद्याकारा याथातथ्येनाभ्युपगम्यन्ते तदा यथा विविधानां रेखादीनां विस्तारस्तथा ज्ञानाकाराणामपि आकारवत् पृथक्त्वं प्रसज्येत । सिद्धान्तवैविध्य-स्थापनार्थम् अनेकज्ञानानामुत्पादमवगच्छतो विज्ञानस्य विषयेषु यथा प्रसारस्तथाऽऽभासोऽसम्भव एव । एकज्ञानेनाभिन्नस्वभावत्वाद् आकाराणामप्येक-स्वभावताप्रसङ्गः । यदि (आकाराः) भिन्नास्तदा अर्थसदृशज्ञानेन तेषां ग्रहणं नोपपद्यते, भिन्नार्थत्वात् । तद्ग्रहणार्थं सत्यामप्यन्यान्याकारकल्पनायामाकाराणाम-नवस्थाप्रसङ्गः, अन्यान्याकाराणां कदाचिदप्यनुभवाभावात् । यदि तेऽलीकास्तदा तत्त्वान्यत्वविचारोऽप्यसम्भवी । तदाऽनया दृष्ट्या तद्वशेनान्यार्थव्यवस्थानं सर्वथाऽयुक्तम्, असम्यक्त्वात् । ग्राह्याकारोऽपि हि प्रज्ञप्तिरेव स्यात् ।

अपि च, यदि ज्ञानसादृश्यं सर्वात्मना भवति, तदा अर्थानुसारिणोऽपि ज्ञानस्य अज्ञानस्वभावत्वं स्यात्, परचित्ताभिज्ञस्य योगिनोऽपि सरागत्वादिप्रसङ्गः, सरागादीनां परचित्तादीनां परिग्रहणात् । एकदेशेनापि न सादृश्यं (युज्यते), एकस्मिन् सावयवत्वप्रसङ्गात् । यदि विपर्यये ह्युपचारात् कर्तुरेकदेश एव तदा सर्वत्र

वस्तुसादृश्यसम्भावनया सर्वज्ञातृत्वं स्यात् । सादृश्यमपि प्रज्ञप्तिरेव स्यान्न तु परमार्थम्। अतः सादृश्येन ज्ञानेतरस्वभावग्रहणं न (सर्वथा) युज्यतेऽसम्भवात् ।

तत्सादृश्येऽपि न तत्प्रत्यक्षत्वेन ग्रहणं युज्यते, विषयस्य हेतुत्वे तदनुभवकाले सामीप्याभावात् । सामीप्येऽपि नैव तद्ग्रहणम्, आत्मस्थसादृश्यग्रहणप्रवण-त्वाज्ज्ञानस्य, अपरस्य अर्थस्थाकारस्य तदानीमनवभासात् । अवभासेऽपि तद्विरुद्धत्वं तुल्यपरीक्षणीयम् । यदि स एव (अनुभवः) तदर्थाकारानुभवत्वेन गृह्यत इति चेत् ? कल्पनामात्रमेवैतत् । नैव तावन्मात्रेण वस्तुनस्तादृशः स्वभावो सन्, अतिप्रसङ्गात् । 'अग्निर्माणवकः (ब्राह्मणवटुः)' इति कृतेऽप्युपचारे नैव (तस्मिन्) दाहपाकादिः प्रयुज्यते । आकारेणान्यार्थव्यवस्थानेऽप्यनुमानमेवैतन्नैव हि तत्प्रत्यक्षम्।

प्रत्येतव्या अर्थान्तराः सामीप्येऽपि न (ज्ञान-) आकारव्याप्ता भवन्ति, अर्थान्तराभावेऽपि स्वप्नादिषु तथाकारसम्भवात् । अत्यन्तपरोक्षत्वादर्थान्तराणां ते (अर्थान्तराः) तदीयज्ञानाकारवन्तः सन्तीति नैव सिध्यति । हेतुत्वं तावन्न केवलम् साकारकार्यस्योत्पादनं नाम, स्वकीयविज्ञानानां चक्षुरादिद्वारा भ्रान्तत्वात्, शब्दादिज्ञानान्तरं चक्षुर्विज्ञानोत्पादेन शब्दाद्याभासिचक्षुर्विज्ञानोत्पादसम्भवाच्च । अतस्तावत्कालिकावभासिज्ञानेनार्थान्तरग्रहणं नैव युज्यते । नाप्यनाभासिभिः, तेषु भेदाभावात् । तदा यदि सामीप्याद् विज्ञानेनार्थान्तरग्रहणं भवतीति कल्प्यते तदा सर्वाण्यपि विज्ञानानि सर्वसमीपविषयकाणि स्युः सर्वेषु तत्सत्ताया भेदाभावात् । फलतः सर्वैः सर्वदर्शनं स्यात् । श्रोत्रादिज्ञानान्यपि रूपादिविषयकाणि स्युः सामीप्ये भेदाभावात्तदानीम् । ततश्च 'इदं नीलं पीतमिदम्' इति विभागो नैव स्यात्, कस्यचनापि विभागविशेषस्यानभ्युपगमात् । यद्यभ्युपगम्यत इति तदा तत्सा-दृश्यमभ्युपगतं स्यात् ।

कल्पनास्वरूपमात्रे ज्ञानाभिन्नात्मके सादृश्यातिरिक्ततया न कश्चनापि भेदो भवितुमर्हति, तद्दोषाणामभिहितत्वात् । सामीप्यवशाज्ज्ञानस्य यदि नार्थान्त-रादनुभवस्तदा कथमिति प्रश्ने तदुत्पत्त्यैवेति वक्तव्यं स्यात् । तथाविधमभिधानं नैव युक्तम्, ज्ञानकाले विषयस्याभावात्, अभावग्रहणायोगात् समकालिककार्यकारण-भावस्यायुज्यमानत्वाच्च । कस्याप्येवंविधाभ्युपगमाभावादिति ।

चक्षुरिन्द्रियादीनामपि तद्धेतुत्वाद् ग्राह्यत्वप्रसङ्गः । तुल्यैकसामग्रीप्रतिबद्धौ देशकालावेव विज्ञानेन गृह्येते नान्यद्, यद्येवं परिकल्प्येत तदापि चक्षुरादि-

ग्राह्यत्वप्रसङ्गः दुष्परिहारः । विषयत्वाभावादेवेन्द्रियं न गृह्यत इति चेन्नैतावता तदविषयत्वम्, विषयलक्षणस्य सत्त्वात् । ग्राह्यत्वमपि न विषयस्वभावेतरत् । अतः अविषयत्वान्नास्ति तद्विषय इति कथमिव वक्तुं शक्यते । तदेवं निराकारेण तावज्ज्ञानेन नार्थान्तरग्रहणं युज्यते, नापि तदन्येन साकारेण (ज्ञानेन), व्यवस्थाया एवाभावात् ।

यद्येवं तर्हि श्रोत्रविज्ञानेनापि रूपादिग्रहणं स्यात् । अर्थान्तराणां परोक्षत्वे नैवान्याकारोऽपि सिध्यति । यस्मादर्थान्तरग्राहक आकारान्तरोऽपि नास्ति, तस्मात् कार्यकारणात्मकोऽपि नाकारान्तरः सिध्यति । अतः परमार्थतो न प्रत्यक्षतः कार्यकारणभावसिद्धिः । अत एव परमार्थतः—

तद्विविक्ततदाकारप्रत्यक्षेण द्वयेन च ।
कार्यकारणभावस्य व्यवसायो विधीयते ।।

इति यदुक्तं तदप्यसिद्धम् साकारबुद्ध्या अर्थान्तरपरिच्छेदाभावात् कार्यकारणभावनिश्चायकप्रमाणाभावे सति ज्ञानद्वयाभावकथने नास्ति किमपि बाधकम्, अनया तावद् युक्त्या सर्वेषां धर्माणां चित्तमात्रताकायप्रमुखत्वात् ।

तत्प्रत्यक्षेऽर्थान्तरायोगेऽपि तज्ज्ञानं स्वसंवेदनप्रत्यक्षगम्यमेव, तदपि च कार्यकारणभूतमेवेति; कार्यकारणभावस्तु प्रत्यक्षसिद्ध इति चेन्नैव तद् युक्तिमत्, यथा तथता तथाऽनुभवाभावाद्, यथा चानुभवस्तथा तथताया अभावात् । एवं यदि विज्ञानस्य ग्राह्य-ग्राहकाकाररहितत्वेऽपि तस्य वस्तुसत्त्वमभ्युपगम्यते तदा तत्र तथाऽनुभूतेरभावः, सर्वस्य ग्राह्यग्राहकाकारज्ञानस्यैव सर्वदाऽनुभूतेः । यद्येवं न स्यात्तदा सर्वस्यैव तथतादर्शनं स्यादिति । तज्ज्ञानमपि यथाऽनुभूयते न तथा स्थितं भवति, एकस्मिन् स्वरूपद्वयविरोधात् । यदि भ्रान्तत्वात् तत्तथा ज्ञानमिति चेत् ? का नाम भ्रान्तिः ? यदि ज्ञानं तदा नैव सा प्रत्यक्षम्, अभ्रान्तलक्षणत्वात् प्रत्यक्षस्य, तत्तु स्वयं स्वतो भ्रान्तमिति ।

द्वयात्मके च तत्स्वभावावभासादद्वयस्वभावहानिप्रसङ्गः, द्वयाद्वययोः परस्परविरोधात् । अर्थान्तरस्य भ्रान्तत्वेऽपि पर्यन्तस्वसंवेद्यत्वान्न तेनाद्वयज्ञानम् । यदि प्रत्यक्षं कल्पनास्वभावं तदा न तत् स्वलक्षणविषयकम्, कल्पनायाः सामान्यलक्षणविषयत्वात् ।

अपि च, यः कल्पनास्वभाव उच्यते, तेन स्वतस्तदात्मनोऽभिव्यक्तिरुच्यते, ग्राह्यग्राहकाकारोऽपि स्वत एवाभिव्यज्यते, अतः कल्पनास्वभाव एवैषः। यदि स (ग्राह्यग्राहकाकारः) मिथ्या तदा तदभिन्नः कल्पनास्वभावोऽपि तथैव मिथ्या, तथात्वे कथं स प्रत्यक्ष-प्रमाणेन भाव-स्वभावः प्रसिध्येत् ।

यदि विशेषो (विशेष्यः) मिथ्या तदा कल्पनास्वभावस्य सामान्यस्य वस्तुता असम्भविनी, अन्यव्यवच्छेदेन सामान्यं विशेषेषु व्यवह्रियते। तदेवं तत्त्वज्ञानस्य यथावदनुभवाभावान्नैव तस्य स्वसंवेदनप्रत्यक्षत्वं युक्तम् । स्वसंवेदनप्रत्यक्षत्वेऽपि न हि तेन ज्ञानेन कार्यकारणभावसिद्धिः, ऐकात्म्येन कार्यकारणात्मकस्य द्वयस्वभावस्य विरोधात् । अपेक्षाविशेषेण तयोः स्वभावः परिकल्प्येत तथाप्यर्थान्तरत्वादपेक्षायाः स्वसंवेदनप्रत्यक्षाभावे सा नैव सिध्यति । फलतस्तदपेक्षया व्यवस्थितस्य तत्स्वभावस्यापि प्रत्यक्षत्वं न युक्तियुक्तम् । कार्यात्मकस्य कारणात्मकस्य च स्वभावस्य अर्थान्तरभूतं ज्ञानमपि भिन्नं भिन्नम्, अतो ह्येकस्मिन् ज्ञाने नोभयोरनुभवः भिन्नकालत्वात् ।

यद्येकस्मिन् ज्ञाने नानुभवस्तदा न केनापि सम्बन्धग्रहणम् । एक-ज्ञानावभासेऽपि 'इदं कारणं कार्यं चेदम्' इति प्रत्यक्षे न शक्यमुभयोः सत्तासम्बन्धग्रहणम्, निर्विकल्पकत्वात्तस्य । सम्बन्धग्रहणाभावे नैव तावत् कार्यकारणभावग्रहण्, अन्यथा ह्यतिप्रसङ्गः स्यात् । तत्पृष्ठभाविना निश्चयाकर्षिणा ज्ञानेनापि परमार्थतस्तद् द्वयं नैव युज्यते, तेन तदनुभवस्याभावात् । अन्यानुभवस्यान्येन निश्चयोऽपि नैव शक्यते कर्तुम्, अतिप्रसङ्गादेव । एकसन्ताने एकानुभवस्य प्रज्ञप्तिरपि नैव युक्तिमती, एकसन्ताने प्रज्ञप्तस्य वस्तुनो ह्यसत्त्वात् । भिन्नसन्तानेऽपि परस्परानुभवस्य तावदसत्त्वम् । निश्चायकज्ञानकाले तावत् कार्यं कारणं चाप्यतीतम्, अतः स्वसंवेदनप्रत्यक्षेणापि न कार्यकारणाभावः प्रसिध्यतीति ।

यदि प्रत्यक्षेण कार्यकारणभावो नानुभूयते कथं तदा स्मृति-स्वभावोऽप्युत्पद्येतेति चेन्न, स्वप्नादिष्वर्थानुभवाभावेऽपि स्मृतिसम्भवात् । न च परमार्थतस्तत्स्वभावेऽर्थान्तरानुभवः सिध्यति, यथोक्तं प्राक्। इत्थं प्रत्यक्षेण तावन्न तस्य (कार्यकारणभावस्य) सिद्धिः ।

नानुमानेनापि, यथोक्तनयेन प्रत्यक्षेणानुभूयमानस्य कस्यचिद् धर्मस्या-भावात्। अतः कस्तावत् तत्स्वभावत्वेन साध्येत । हेतवोऽपि सर्वे स्वभावासिद्धा आश्रयासिद्धाश्च । दृष्टान्तधर्म्यप्यसिद्धः, सर्वविरुद्धत्वात् तुल्यपरीक्षणीयत्वाच्च ।

अपि च, कार्यहेतुनाऽपि स वस्तुत्वेन साधयितुं न शक्यते, अन्योऽन्याश्रयदोषप्रसक्तेः । (तथाहि-) कार्यकारणभावसिद्धौ कार्यहेतोःसिद्धिः, कार्यहेतोश्च सिद्धौ कार्यकारणभावसिद्धिरिति सुस्पष्टमन्योऽन्याश्रयदोषः । धर्मिणोऽसिद्धौ च कुतः स्वभावहेतोरपि प्रवृत्तिः। धर्मिणः सिद्धावपि परमार्थतः कार्यकारणभावसिद्धये नास्त्येव कुत्रापि हेतोर्व्याप्तिः, सर्वत्र विरुद्धत्वात् तुल्यपरीक्षणीयत्वाच्च ।

यदि कार्यकारणभावसिद्धये 'अस्मिन् सतीदं भवती' त्युच्यते, तदाप्येतद् भ्रान्तमेव । तद्धेतुकाले चाशेषजगतो विद्यमानत्वाद् 'अस्मिन् सती' ति तस्य कारणता नैव सर्वथा सम्भाव्यते । सन्ततावेवान्वयव्यतिरेकसम्भवात्तस्यामेव कार्यसत्त्वस्य हेतुत्वम्, न क्षणिकत्वे, यद्येवमुच्यते तथापि परमार्थकार्यकारणभावसाधनस्यैवात्रावस्थितत्वान्नैव तद् युज्यते। क्षणिकत्वव्यतिरेकेण परमार्थतः सन्ततेरसिद्धत्वात् ।

कस्यापि कार्यक्षणस्य सत्त्वं कस्यापि कारणक्षणसत्त्वाद् यदि कल्प्यते तदा तत्समकालं सर्वसत्त्वान्तर्गताशेषविद्यमानक्षणानामपि सत्त्वं स्यात् । यथा तत्स्वहेतुक्षणा विद्यमानाः, यदि दृश्यन्ते, न विद्यमाना यदि न दृश्यन्ते, तथैव तद्धेतुक्षणसमकालं सर्वसत्त्वान्तर्गताशेषक्षणा विद्यमाना यदि दृश्यन्ते, न विद्यमाना यदि न दृश्यन्ते । एवं सति तेषां कथं न हेतुत्वम् ।

अपि च, 'यदस्ति तत् सत्' इत्युक्तौ तच्छब्देन यद्यन्यो हेतुभूतो धर्मीत्येवं गृह्यते तदा सोऽपि परमार्थतः प्रत्यक्षे नैव सिध्यति, यथोक्तं प्राक्।

नानुमानेनापि धर्मिणः सत्त्वसिद्धिः सम्भाव्यते, सर्वेषामपि सत्त्वसाधकानां हेतूनां दोषत्रयानतिक्रान्तत्वात् । यदि धर्मी तावदसिद्धस्तदा सतो धर्मस्य हेतुत्वं नैव सम्भवि नापि चासतो धर्मस्य युक्तम्, विरुद्धत्वात्। उभयधर्मस्तु तावद् भ्रान्त एव, असपक्षेऽपि सत्त्वात् । नैतेभ्यो भिन्नाः साधनाकाराः । यदि धर्मी तावदसिद्धस्तदाऽपरस्यापि सत्त्वं नैव सिध्यति, तदपेक्षितत्वात् । कार्यसिद्धिरपि तथैवासम्भविनी । नात्र स्वभावहेतुना कार्यकारणभावसिद्धिः। नाप्यनुपलब्धेः, प्रतिषेधसाधकत्वात्तासां सर्वासाम् ।

कार्यकारणभावसिद्धिस्तावत् प्रत्यक्षतोऽनुपलब्धेति यदुक्तं, तत्राप्यनुपलब्धिशब्दस्तावत् तदितरस्य उपलब्धात्मकप्रत्यक्षस्याभिप्रायेण प्रयुज्यते, नानुमानमभिप्रेत्य, यथा तदप्रमाणं तथोक्तत्वात् ।

अपि च, या खलु उपलब्धिलक्षणप्राप्तस्यानुपलब्धिः सा समुपलब्धिफला, ईदृशेनान्वयेन या कार्यकारणभावसिद्धिः तत्रापि परमार्थतः सन्देहः । किं तत्त्वतः सदित्यतः सत् अथवा अदृश्यानां पिशाचादीनां समीपवर्तित्वात् अथवा दूरदेशस्थितस्य वस्त्वन्तरस्य समीपवर्तिनो बलादेवंविधः सन्देहः । उपलब्धिलक्षणप्राप्तस्यानुपलब्ध्या देशान्तरात् तदागमनस्य पूर्वतो वा तत्सत्त्वस्य निषेधः क्रियते, नान्यफलस्येति ।

यदि तत् सत्तदा तत्सत्त्वं यादृच्छिकं स्यात् । दूरदेशस्थचन्द्रादीनामपि चक्षुर्विज्ञानहेतुत्वाभ्युपगमात् । ये चान्ये तत्समर्थहेतवः तेषां निवृत्तौ तत्फलस्यापि निवृत्तौ व्यतिरेकेण या तत्सिद्धिरुक्ता, साऽपि परमार्थतो नैव सन्देहविगता, पिशाचादीनां दूरदेशस्थितानामप्यन्येषां सत्त्वेऽपि तदसत्त्वसन्देहात् । यदि तदसत्त्वं तत्रापि यादृच्छिकत्वं सम्भवति, यथा मातृविवाहसंस्कारवति देशे जन्मादानम् यत्र च नास्ति मातृविवाहस्तत्रासत्। तत्समर्थकारणान्तराणि सन्तीत्येवं विशेषाभावान्न स्यात् सन्देह इति चेत् ? न, तेषां सामार्थ्यविशेस्यासिद्धत्वात्, अवसरप्राप्तत्वाच्च तत्त्वसिद्धेरिति ।

कार्यकारणयोः सन्देहे सति तन्नैयत्यार्थं यद्यपि तत्कारणं समर्थं तथापि प्रज्ञाक्षेत्रे विशेषतस्तदसिद्धिवचनानि कथं विद्वद्भिर्निराक्रियन्ताम्। अन्वयव्यतिरेकौ व्यतिरिच्य वस्तुनि तत्सिद्धिनिश्चायकहेतूनामभावात् तत्रानवस्थादोषः स्यात् । यदि तत् सत्तदा तत्सत्त्वं साधयितुं शक्यते, किन्तु सहकारिवस्तूनां पृथक्स्वभाव इव अन्येभ्यस्तदुत्पत्त्याशङ्का कथं निवर्तेत । नाप्यदर्शनमात्रेण तदभावनिश्चयो युज्यते, अतिप्रसङ्गात् ।

नार्वाग्दर्शिनां परेभ्य उत्पत्तिनिश्चयस्य स्पष्टं दर्शनं भवतीति । यदि परेभ्योऽपि तदुत्पत्तिस्तदा न भवेद् हेतुभेदाद् भेद इति चेत् ? न, तथा सति स्वभाववैलक्षण्यादिसहकारिप्रत्ययेभ्योऽप्यनुत्पत्तिप्रसङ्गः । यदि पृथक् तद्विशेषेष्वेव ते सहकारिप्रत्यया उपयुज्यन्ते, न तु कार्यमात्रे इति चेत् ? न, परमार्थतो विशेषाणामपृथक्त्वात् । यदि तदंशेनापि (कार्याणि) उत्पाद्यानीति चेत् ? न, नैकस्मिन् अंशभेदः सम्भवतीति ।

यदि विशेषस्य पृथग्विशेषे उपचर्यमाणत्वात् स तत्त्वान्यत्वाभ्यां चिन्तयितुं न युज्यत इति व्याहरन्तो नैव विशेषान् व्याहरन्ति, प्राज्ञप्तिकस्य कदाचिदपि हेतावयुज्यमानत्वात् समूहमात्रेणैव तावदुत्पत्तिर्विभक्तिश्चापि विधीयते, न त्वेकैकेनेति

चेत्, तदपि नैव युज्यते, न च कायं व्यतिरिच्य समूहो भवति । अतः एकैकः समूह एव हेतुत्वेनाभ्युपगम्यते । फलतः परमार्थतः कार्यकारणभावसिद्धौ नास्ति किमपि प्रमाणम्, कार्यकारणभावस्य सांवृतिकत्वात् । अत आचार्यैः कार्यकारणभावो यथाप्रसिद्धि सिद्ध इत्युक्तः । अतः स नैवास्ति परमार्थेनेत्यभ्युपेयम् ।

इत्येवं परमार्थतोऽनित्यस्वभावं साधयितुं नास्ति किमपि प्रमाणम्, परपरिकल्पितशब्दानामप्रमाणत्वात्, प्रमाणस्य चैतत्प्रमाणद्वयसंगृहीतत्वात्। नित्यस्वभावमपि तावत् परमार्थतः साधयितुं नास्ति प्रमाणम्, प्रत्यक्षेणैवं तावत्तदसिद्धत्वात्, पूर्ववत्तेषां साकारनिराकारज्ञानाभ्यामपि ग्रहणस्यानुपपन्नत्वात् ।

आत्मादिनित्यवस्तून्यपि यथा स्वसिद्धान्तेषु विज्ञप्यन्ते तथा प्रत्यक्षज्ञाने नैवावभासन्ते । प्रत्यक्षज्ञानविषयत्वे सन्मात्रत्वेन तेषां सत्त्वम् । तथा सति सर्वदा सत्त्वप्रसङ्गः । न चात्र परापेक्षा युज्यते, अनाधेयातिशयत्वाद् अपेक्षाया अयोगात्, अहेतुकानां च विषयत्वानुपपन्नत्वात् ।

तद्विज्ञानेन विज्ञेयस्वभावत्वाद् विषयत्वोपचारेऽपि तद्विज्ञानस्य तद्वन्नित्यत्वप्रसङ्गः । तस्य (विज्ञानस्य) विज्ञेयस्व-भावानुसरणात् सः (विज्ञेयः) अपि तद् (विज्ञानं) अनुसरति, अन्यथा तेन ज्ञेयस्वभावानुसरणमपि न कृतं स्यात्, तद्विज्ञेयस्य तदपेक्षितत्वात् ।

नानुमानेनापि तत् सिध्यति, केनापि हेतुना सह तस्यासम्बद्धत्वात्। अतः कार्यहेतुस्तावदसम्भवी । ततः क्रमयौगपद्याभ्यां कस्यापि फलस्यानुत्पादात् । अप्रत्यक्षार्थस्य किमपि सहकारिकारणत्वेन न परिगृह्यते । कार्यकारणभा-वस्तावदन्वयव्यतिरेकाभ्यां स्पष्टमवगम्यते । अत आत्मादीनां सुखादिफलेन सह कुत्राप्यन्वयो न सिध्यति अविकलकारणत्वेन न ततः कादाचित्कसुखोत्पत्तिरिति । व्यतिरेकोऽपि तावन्नास्त्येव, नित्यत्वादव्यतिरेक एव । नापि स्वभावहेतोस्तत्सत्त्व-सिद्धिः सम्भवति, आधारधर्मिणोऽसिद्धत्वात् तत्सत्तासाधकहेतोः पूर्ववद् दोषत्रयानतिक्रान्तत्वाच्च । ये तावद् रूपादयः प्रसिद्धधर्मिणस्तेऽपि परमार्थतोऽसिद्धा एव। कादाचित्कत्वात्तेषां व्यवहारेणापि नित्यस्यापेक्षा दुरुपपादैव । अनुपलब्ध्याऽपि तावन्नैव तत्सत्त्वसिद्धिः प्रतिषेधसिद्धौ समर्थत्वात् प्रतिषेधमात्रं सा साधयतीति ।

अपि च, स्वभावानुपलब्धिरपि तावन्नैव सम्भविनी, अभावव्यवहार-साधनपरत्वात्तस्याः । इन्द्रियैरग्राह्यार्थेन सहविरुद्धयोर्व्याप्यव्यापकयोःकार्यकारण-

योश्चासिद्धत्वाद् विरुद्धोपलब्धिरपि तावन्नैव सम्भविनी । प्रमाणद्वयमतिरिच्य नास्ति प्रमाणान्तरमित्यन्यत्र प्रसाधितत्वात् । फलतः वस्तुस्वभावपरीक्षणार्थं नास्ति किमपि साधकं प्रमाणमिति । अतः प्रेक्षावद्भिः परमार्थतः सत्त्वेन स नैव व्यवहर्त्तव्यः । तत्र तावदयं प्रयोगः—यस्य परमार्थतः साधने नास्ति किमपि प्रमाणम्, कल्पनानिर्मितत्वात्तस्य तथैव सम्यक्तया ग्रहणं नैव कर्त्तव्यम्, यथा—श्यामत्वादिगुणविशिष्टस्य वन्ध्यापुत्रस्येति ।

उपर्युक्तयोरुभयोः सम्यक्स्वभावयोः प्रसिद्ध्यर्थं नास्ति किमपि प्रमाणम् । व्यापकानुपलब्धेस्तावत् प्रतिषेधमात्रफलत्वात्, प्रेक्षावतां सद्व्यवहारस्य च प्रमाणव्याप्तत्वात् । नास्ति हेतोरसिद्धत्वमिति यदुक्तं तत् पूर्वं विस्तरेण विचारितम्।

व्याप्यव्यापकभावानुपपत्तेः कल्पनाऽयोगप्रसङ्गनिवृत्तेस्तु बाधकप्रमाणाभावान्नास्त्यनैकान्तिकत्वमपि । सपक्षे सत्त्वान्नास्ति हेतोर्विरुद्धत्वमपि । सदसद्व्यवहारयोः प्रमाणव्याप्तत्वाभ्युपगतत्वे भावसिद्धिरेव (नूनं) स्यात्, तादृशस्य खलु व्याप्यव्यापकभावस्य कुत्राप्यन्वयं विहाय व्यतिरेकमात्रेण सिद्धेरसम्भवात् ।

व्यतिरेकनिश्चयोऽपि नैवान्वयनिश्चयं विना सम्भवति । यत् सत् तत् कथमसदिति तन्निवृत्त्या व्यतिरेकी भवितुं शक्नोति, सम्बन्धाभावात् । अतो नियतमेव प्रमाणाभिव्यक्तान्वयः सद्भावव्यवहारश्च स्वीकर्त्तव्यः ।

यदि स स्वीक्रियते तदा क्वचित्तदेव सदिति सद्व्यवहारप्रमाणं यत् यत् सत्तानुविधाने प्रसिद्धं तदेवास्माकं वस्तुनि प्रसिद्धमिति चेत् ? तन्नैव युज्यते । एवं सद्व्यवहारप्रमाणव्याप्तमपि प्रमाणमात्रेण परमार्थतया नैयत्येन सद्विषयित्वेन नैव सेत्स्यति, व्यापकसंनिधानेन व्याप्यविशेषनिश्चयस्य कर्त्तुमशक्यत्वाद् अन्यत्रापि सम्भवाच्च । अन्यथा वृक्षेणापि शिंशपादिविशेषा निश्चयेन ज्ञास्यन्त इति, किमेतन्नास्ति प्रतिकूलम् ? एवं तावद् वृक्षस्त्वशेषविशेषसाधारणत्वान्न तेन देवलादिविशेषा निर्णेतुं शक्याः । प्रमाणं हि नैव तावद् भावातिक्रान्तेऽपरस्मिन्नपि सम्भवति ।

इत्थमभावप्रवृत्तत्वात् प्रमाणहानिरेव स्यात्। सर्वप्रमाणानि भावाभिव्यञ्जकानि तद्व्याप्तप्रमाणबलभाविव्यवहारप्रवर्तकान्यपि प्रमाणावज्ञातवस्तुमात्रे प्रवृत्तत्वाद् वृक्षादिवत् कुतः साधारणानीति चेत् ? नैतद् युज्यते, सांवृतिकजगदर्थविषयीण्यपि प्रमाणानि भवन्तीत्येतद् बहुधा पूर्वं चर्चितम् । अन्यथा

सर्वप्रमाणानि परमार्थैकविषयीणि भवेयुः, ततश्च सर्वे तत्त्वदर्शिनः स्युः, तत्त्वदर्शिनां कृते आर्यमार्गभावनायाश्चापि नैरर्थक्यम्, वक्तृणामपि तत्त्वविषये कश्चन विवादो न स्यात्, सर्वेषां तत्त्वदर्शित्वात् तेषु संशयाभावात् । प्रमाणलक्षणशास्त्राणां प्रणयनमपि निरर्थकं स्यात्, मोहनिवर्तनफलत्वात्तेषाम्, तत्त्वज्ञानार्थमेव तैः सर्वेषां मोहावकाशो दूरीक्रियत इति ।

लक्षणकारैर्लक्षणेषु परस्परविरोधो भिन्नसिद्धान्तप्रवेशो वा न करिष्यते, तत्त्वस्यैकस्वभावत्वात् । अतो व्यवहारप्रमाणं यन्नैव परमार्थविषयि तदपि व्यवहारप्रमाणं सम्भवत्येव । नैव हि सर्वप्रमाणानि परमार्थत्वेन व्याप्तानि। अपरमार्थविषयित्वेऽपि इष्टार्थप्रापकत्वेन स्वप्नादिवद् व्यवहारप्रमाणं व्यवस्थाप्यते । तद्विषयेषु 'परमार्था' इति संज्ञाप्रदानेऽपि नास्ति विवादः । देहधारिणो ये वस्तुस्वभावस्य यथावत् परिज्ञानेन संसारकारातो मुमुक्षवस्तेषामविद्या विषयेभ्यो विनिवृत्तस्वभावा, ते च (विषयाः) सम्यग्ज्ञानगोचरा जायन्ते । अभीष्टार्थ-क्रियासाधकार्थप्राप्तिमात्रेण पुरुषा नैव मुक्ताः स्युः सर्वस्य मुक्तिप्रसङ्गात् । अतः अविसंवादि ज्ञानं प्रमाणमिति यदुक्तं तत् प्रमाणसाधारणलक्षणम् । सद्व्यवहारव्याप्तमपि तन्न सम्यगर्थविषयित्वेन सिध्यति । अतः कथं तस्मिन् सम्यग् वस्तु अविपरीततया सेत्स्यति । अस्मिन् बाधकप्रमाणाभावरूपो व्यवहारोऽपि सिध्यति ।

(२६-२९) ये तावत् परमार्थतः स्वपरोभयाहेतुकतोऽनुत्पन्नास्तेषां सम्यक्तया निःस्वभावत्वात्, खपुष्पवत्। यानि तावत् स्वतो वा परतो वा अविपरीतया सद्वस्तूनि, तानि सर्वाण्यपि तथैव । अत्र नास्ति प्रमाणासिद्धत्वमपि, यतो ये तावत् सांख्यादयस्ते हेतुं सत्कार्यं व्यवस्थापयन्ति । स्वत एव वस्तूनि जायन्त इति ब्रुवाणा नैव युक्तिसङ्गताः । न हि सद् वा असद् वा वस्तु स्वतः स्वहेतौ निष्पद्यते । इत्येवं वस्तु· यद्यात्मान-मुत्पादयतीति नियतमेव तत्रैकतरस्यासिद्धत्वम् । न ह्यत्र असिद्धस्तावदुत्पद्यते, तदानीं तस्यासिद्धत्वादेव । फलतः को हि नाम कस्योत्पादकः स्यात् । वन्ध्यापुत्रादयः खल्वसिद्धस्वभावा नात्मस्वभावमुत्पादयितुं क्षमाः।

(स्वभावतः) सिद्धोऽपि नैवोत्पादकः । तदात्मना सिद्धोऽपि विशेषाभावात् कस्तावत् कस्योत्पादकः स्यात् । यस्तावत् सिद्धः, स नैवासिद्धस्वभावयुक्तः, अतिप्रसङ्गात् । उपकार्योपकारकत्वं ताव-दुत्पाद्योत्पादकस्वभाव एव वस्तुनि युज्यते। यदि स स्वभावेन सिद्धस्तदा तस्मिन् अणुमात्रमपि उपकार्यस्वभावस्या-

भावात् कथं स उत्पाद्यः स्यात् । अविशेषणीयत्वेऽपि यद्युत्पाद्यत्वमहेतुकताया-मुपकल्प्यते तदा सज्ज्ञानमपि तथैव किं न परिकल्प्यते । अभिन्नत्वादाध्यात्मि-कायतनादीनि तथैव न परिकल्पयितव्यानि। अत एव विद्वद्भिः "आध्यात्मि-कायतनानि न स्वत उत्पन्नानि, सत्त्वात्, सज्ज्ञानवत्" इत्यस्मिन् प्रसङ्गे प्रसङ्गार्थमविदित्वा केचन (प्रयोगे) अस्मिन् दृष्टान्तासिद्धिं, केचिच्च विरुद्धहेतुत्वं निरूपयन्ति, तत्र तेषामज्ञानस्यैव दोषः । इत्थं परेषु परस्परविरोधं प्रतिपादयिषया परेषु सिद्धानि सज्ज्ञानादीनि तावदुदाह्रियन्ते । स्वतस्तावत् संसिद्धवस्तुनि कोऽपि अस्वीकृतिप्रसङ्गो नैवापादितः ।

सज्ज्ञानमपि परेषु नासिद्धम्, अतो दृष्टान्तासिद्धिः हेतोर्विरुद्धत्वमपि न स्तः। नित्यैकपर्यायस्वभावायाः स्वसन्ततेः सिद्ध्यर्थं तथाविधहेतुदृष्टान्तासिद्धेः । अपरतश्च परस्पराप्रतिबद्धाभिधानं तावदभिधानाभिलाषमात्रमेव, न तु स्वसन्ततेर्वस्तुधर्मतायाः प्रसाधनम्। यदि स सिद्धः स्यात्तदा तद्विरोधाभिधानमुचितम्, तत्र हेतुदृष्टान्तयोरप्रसिद्धत्वात् तदभिधानं तावदप्रतिबद्धमेव । परिनिष्पन्नभावात्मकत्वेऽपि यदि तदुपकारः स्वीक्रियते तदा तद्भिन्नः स उपकारो न स्वत उत्पद्यते, अर्थान्तरभूतस्योपकारस्य उत्पन्नत्वात् । यद्यभिन्नस्तदोपकारस्यापि तथैव सिद्धत्वात् स कथमिव सेत्स्यति। अतोऽस्मिन्नपि हेत्वभिधानमावश्यकम् ।

अपि च, यदि कार्यकारणभावोऽयं वृक्षद्रुमवत् पर्यायतयोच्यते तदा न तथा लोकप्रसिद्धिरिति । अतोऽवश्यमेवास्य प्रवृत्तेर्भिन्नं कारणमिति स्वल्पमपि हेतूपदर्शनमावश्यकम्। यदि कार्यकारणैकत्वमभ्युपगम्यते तदा तदुपदर्शनमसम्भवम्। यदि हेत्वभिव्यक्तौ विपरिणामे वा सति फलं भवतीति निर्दिश्यते तदा एवमयं पृथग्व्यवस्थितः सद्धेतुरेव । नैवं चिन्तनं युज्यते, यतो हि स यदि अभिव्यक्तेर्वि-परिणामस्य वाऽवभासो निश्चयेन तद्भिन्नस्तदा केवलादन्यस्मादुत्पत्तिरेवाभ्युपगता स्यात् । यदि नास्ति भिन्नस्तदा कार्यकारणविप्लवदोषः प्रसक्तः स्यात् ।

एकस्मिन् युगपद् व्यक्ताव्यक्तादिविरुद्धधर्मयोगः कथमिव युज्येत। अतः परस्परविरुद्धत्वाद् भेदाभेदपक्षोऽपि नैव समीचीनः । परस्परपरिहारस्थित-लक्षणधर्मस्य इतरप्रतिषेधकत्वाद् अन्यत्रासिद्धत्वाच्च अनुभयपक्षकल्पनमपि नैव युक्तिमत् ।

अपि च, यद्यभीष्टे तद्धेतौ अभीष्टं वस्तु आत्मनः पूर्वस्वभावमपरित्यज्य अभिव्यक्ताद्यवस्थां प्राप्नोति तदा अवस्थाविकृतिप्रसङ्गः । फलतः एकप्रतीत्य-

पेक्षघटादीनामवभासोऽनवभासश्च स्याताम् । वार्धक्येऽपि बाल्यावस्थादयः स्पष्टं प्रतिभासेरन् । यदि परित्यज्येति पक्षस्तदा निरंशस्वभावत्वात् कश्चिदप्यन्वयस्वभावो न स्यात् । पश्चाद् व्यक्तावस्थायामपि द्रव्यान्तरस्योत्पादान्नैव स्वत उत्पादः, नापि काचिदभिव्यक्तिः परिणामो वा स्यादिति ।

अपि च, व्यक्तमप्यनाभासितं सदितरलक्षणत्वाद् इतराभ्यामभिव्यक्तिपरिणामाभ्यां प्रभावितत्वात् परिकल्पितमेव । न च तदन्यरूपेण विपरिवर्तनीयम्, विरुद्धत्वात् । एकमेव वस्तु तत्त्वपरिच्छेदकाले तदितरव्यावृत्त्या परिच्छिद्यते । अन्यदपि इतरव्यावृत्त्या परिच्छिद्यते। एतदविपरीतत्वेन परिच्छेदे सति न तत् परिच्छेदयोग्यं स्यात्। यस्य परिच्छेदकाले यो विच्छेद्यो न भवति, तदभावस्तेन सह परस्परपरिहारस्थितलक्षणो भवति । ये परस्परपरिहारस्थितलक्षणास्ते एकस्मिन् धर्मिणि नैव युक्तरूपाः, यथा—एकस्मिंश्चित्ते मूर्त्तामूर्त्तत्वविशेषणानि । तत्त्वान्यत्वयोः तत्सदृशयोर्वा कथमेकस्मिन् योगः सम्भवेत्। यदि विरुद्धधर्माणामप्येकत्वं तदा सर्वेषामेकद्रव्यत्वं प्रसज्येत । अतश्च बन्धनमुक्त्योर्जातिमरणयोश्च यौगपद्यं स्यात् । यद्येवं नास्ति तदा नाममात्रं खल्वेकत्वम् । नास्त्यत्र कश्चन विवादः । अतः यो हि वस्तुभेदः प्रागवस्थाविलक्षणः परिकल्प्यते, स एव अन्यस्तत्त्वविलक्षण इति । यश्चान्यः स कथं तस्येति ?

अथ यश्चास्य स्वभावः पश्चादुपलभ्यते, स पूर्वमपि परमार्थतो विद्यत इति ? तदा स तदानीं कथं नोपलभ्यते । अथानाभासस्वभावत्वात् पूर्वं नोपलभ्यत इति चेत्? तदा हैतावपि तस्य तथैवानुपलब्धिप्रसङ्गः । इष्यमाणेऽपि चोपलब्धिस्वभावे प्राग्वत् पश्चादपि अनुपलब्धः स्यात् । यदि तदानींमावृतत्वादनुपलब्ध इति चेत् ? तदा पश्चादपि आवरण-शङ्कासद्भावात् तथैवानुपलब्धिप्रसङ्गः। दुग्धादीनां शतधा विनाशेऽपि या हि दध्यादिरूपेण उपलब्धिलक्षणप्राप्तिः, सा नास्त्युपलब्धिबाधिका ।

अपि च, यः कश्चिद् दृढरूपेण भावस्वभावस्तस्य कथमन्यथा विकारानुभवः स्यात् । यदि स तावददृढस्वभावस्तदाऽपि भङ्गुरत्वान्निरन्वयं विनष्टं स्यादिति तस्याप्यन्यथा विकारानुभवो नैव स्यात् ।

अतोऽभिव्यक्तेः परिणामस्य चायुज्यमानत्वाद् या हि ताभ्यां स्वत उत्पत्तिपरिकल्पना, साऽपि तावन्नैव युज्यते । यदि आकस्मिकी तावत् स्वत

उत्पत्तिस्तथापि यद्धि वस्तूनां देशकालस्वभावनियतत्वम्, तस्य किं कारणं स्यात् । निरपेक्षेषु तावद् वस्तुषु तथाविधा नैयत्यसम्भावना नैव युक्तिमती । यदि हि परसापेक्षत्वं तदा परत उत्पत्तिः स्यात्, न हि उपकाराभावे अपेक्षा नोमोपपद्यते साऽपि पश्चान्निषेत्स्यत इति । अपेक्षाया अपि तावत् सदा संनिहितस्वभावत्वात् सर्वदैवोत्पत्तिप्रसङ्गः । इत्येवं व्यवहारेऽपि तावत् स्वत उत्पादोऽसम्भव एव ।

परतोऽपि नैव (उत्पादः) । यदि ततः (परतश्चेत्) उत्पादः, तदा स (पराख्यः प्रत्ययः) नित्यो वा भवेद्, अनित्यो वा । नित्यात्तावद् व्यवहारेऽपि नोत्पादो युक्तियुक्तः, क्रमाक्रमाभ्याम् अर्थ-क्रियायास्तत्रानु पपन्नत्वात् । अप्रतिहतसामर्थ्यहेतुतोऽपि न भवति कादाचित्ककार्योत्पत्तिः, नापि चाविकल-हेतुतोऽपि कादाचित्ककार्योत्पत्तिः (सम्भवति) । फलतः कथं नाम तस्मात् क्रमशोऽर्थक्रिया सम्पस्यते ? परैरनाधेयविशेषस्य (क्वचिदपि) अपेक्षाया अनुपपन्नत्वात् । सहकारिसम्बद्धस्वभावमनुसरतीति चेत् ? सहकारिणामपि सर्वदा तथैवानुसरणप्रसङ्गः । नानुसरतीति चेत् ? नित्यतायास्तस्य भङ्ग आपद्यते। अतो नास्ति तस्य सहकारिकारणापेक्षा । नित्यहेतुसमाश्रितस्य फलस्यापि नान्यप्रत्ययापेक्षा, असत्त्वात् । असत्त्वेऽपि तत्प्रतिबद्धात्मभावस्य प्राप्यमाणत्वाद् बुद्धिपरिकल्पिता अपेक्षा तावद् व्यवस्थाप्यते, किन्तु तदभिनिर्हाराय यो हि अप्रतिसामर्थ्यवान् हेतुः, स एव तस्या उपकारकत्वात् (सा) तदपेक्षिता भवति, न त्वन्यान् (अपेक्षते) ।

अतो नित्यत्वेन यदभीष्टं वस्तु सदैवोपकरोति तदप्रतिहतसामर्थ्यं हेतुं परित्यज्य कथमन्यान् अपेक्षिष्यते ? कार्याणि हि सहकारिकारणान्यपेक्षन्ते, तथापि ये तावदीश्वरदयो हेतवः, यदि तेऽप्रतिहतसामर्थ्यवन्तस्तदा कथमपेक्षामर्हन्ति, येन तेभ्य उत्पत्तिमस्वीकुर्वद्भिर्बलेन ''नैवोत्पाद्यन्ते'' इत्येवम् आत्मबलोपदर्शनं करिष्यते, नान्यत्र । अतो नैव तावद् अक्रमेण क्रमोत्पत्तिरिति । एवमेव कार्याणि यदि हेतुधर्मान् नानुसरन्ति तदा तदभिन्नत्वप्रसङ्गः स्यादेवेति । अतोऽवश्यमुभयोर्भेदो-ऽभ्युपेयः ।

अक्रमादपि हेतोः क्रमिणः कार्यस्योत्पादो न विरुध्यतीति चेत् ? नैतद् युज्यते, यतः 'कार्याणि सर्वान् हेतुधर्मान् नानुविदधते' इत्येवं तत्कथनं स्यात् । किन्तु कार्याणि तावत् कारणान्वयव्यतिरेकानुविधायीनि भवन्त्येव । एतावन्मात्रमेव च

कार्यकारणभावे हेतुत्वं नाम । किमपि कार्यं नित्यस्य वस्तुनो व्यतिरेकं नैवानुविधत्ते, नित्यस्य तावद् व्यतिरेकाभावादेव । अन्यथा तदनित्यमेव स्यान्न नित्यमिति ।

नापि अन्वयानुविधानमपि । अविकलेऽपि कदाचित् कार्योत्पादाभावात् यद् यत्र अन्वयव्यतिरेकौ नानुविधत्ते, न तत् तत्कार्यं युज्यते, अतिप्रसङ्गात् ।

सतः कार्यस्य तावत् (क्वचिदपि) अपेक्षा नैव युज्यते, सर्वात्मना सिद्धत्वात्तस्य । अतो नाकाङ्क्षत एव सर्वानपि । इत्थं नित्ये तावत् क्रमशोऽर्थक्रिया न युज्यते, नापि च युगपदपि, यतो हि तस्य तथाविधार्थक्रियाया विनष्ट-स्वभावमनुसृत्य कार्योत्पत्तिर्वा तद्वियोगो वा न युज्यते । यदि तत्सामर्थ्यस्वभावं पश्चात्कालेऽपि अनुसरति तदापि तेन सर्वाणि कार्याणि यानि पूर्वोत्पन्ननि तानि नैव पुनरुत्पादयितुं शक्यन्ते, पूर्वोत्पन्नत्वादेव ।

यदन्यत् तत्सदृशं तत्कथं नोत्पद्यत इति विरोधपरीक्षाऽपि तावन्नैव युज्यते, तेन तदुत्पादयितुमशक्यत्वात् । सामर्थ्ये सति पूर्वोत्पन्नमेव स्यादिति चेत् ? नैव तावत्तद् युज्यते । तत उत्पाद्यस्य कार्यस्य अनुत्पत्तावपि तदुत्पत्तिसामर्थ्य-स्वभावानुसरणं प्रतिहतं स्यात् । यो यदा यदुत्पादयति तदा तस्मिन् अप्रतिहतसामर्थ्यं भवतीति कथनं नैव युक्तिमत्तरम् । तस्मादयं पूर्वमपि पश्चात्काल इव अनुत्पादक एव स्यात, अनुत्पादकावस्थातोऽभिन्नत्वात् । ततश्च पश्चात्कालेऽपि पूर्ववद् उत्पादक एव स्यात् । यद्येवं नास्ति तदा विरुद्धधर्मयोगाद् अस्यैकत्वहानिः स्यात् । अतः स युगपदर्थक्रियामपि तावन्नैव करोति ।

क्रमयौगपद्याभ्यां व्यतिरिच्य अन्यस्तावत् प्रकारोऽर्थक्रियाकारी नास्त्येव । परस्परपरिच्छित्त्या व्यवच्छेदाभावात्, (अतः) असन्नेव सः । अतो परस्परपरिहार-स्थितलक्षणो विरोधान्तरो न सिध्यतीति चेत् ? असन्नेव तदा स इति । अतः परतो नित्यादुत्पत्तिस्तावन्नैव युज्यते ।

नाप्यनित्यात्, क्षणस्थितिधर्मित्वात्तस्यानित्यस्य । अतः कल्पकल्पान्तरेषु अविशेषतया स्थितत्वात् पूर्ववत् पश्चादपि तस्य विनाशो नैव युज्यते । कार्योत्पत्तिस्तावदतीताद् (हेतोः) भवतीति वैभाषिकाः, यथा ते अतीतादपि विपाकहेतोः कार्योत्पत्तिं वर्णयन्ति, अनागतां वा, यथा तत एव अनागतजातेरुत्पादः। एवंविध उपचारो वा वर्तमानक्रियाक्रमो वा अतीताद्धेतोर्भवतीति वादो नैव सर्वथा युक्तः, अतीतस्यासत्त्वात् । यदि तत उत्पत्तिरङ्गीक्रियते तदा अहेतुत एव स्यात् ।

को हि नामातीतः ? किमुपहतस्वभावोऽतीत इति । यद्येवं नास्ति तदा वर्तमान इव अनुपहतस्वभावात्मकत्वात् कथं हि स अतीत इति । यश्चोपहतस्वभावः स तावदसत्स्वभावत्वात् कथं कार्यमुत्पादयिष्यति । अर्थक्रिया हि स्वस्वभावमेवापेक्षते । यदि क्रियाविनाशेन अतीत इत्युच्यते, न तु स्वभावपरिहाण्येत्युच्यते, एवं सति विनष्टायाः क्रियातः कार्योत्पत्तिर्नैव युज्यते । एवं न भवति । कथं हि कार्योत्पत्तौ क्रियमाणायां क्रियाविनाश इति । एकस्वभावात्मके वस्तुनि क्रियावन्ति अक्रियावन्ति च कार्याणि न युज्यन्ते, भिन्नतायाः प्रसङ्गात्, निरंशत्वाद्धि तस्य ।

आक्षेपमात्रा हि क्रिया, न चानाधायिका, अभिन्नत्वात् सा आक्षेपकाल एवाधानं करिष्यति । अन्यथा पूर्ववत् पश्चादपि सा तथा भवितुं न शक्ता स्यात् ।

अपि च, क्रिया नाम सा किं समर्थस्वभावा यदुत कर्मस्वभावा? यदि तत् स्वभावद्वयं वस्तुनः सकाशाद् भिन्नं तदा कथं नाम तद् (वस्तु) विनष्टमित्यभिधातुं शक्यते । यदि तदुपहतस्वभावं तदा समस्तवस्तुनो नित्यसत्तावादस्य हानिः प्रसज्यते। अर्थान्तरविनाशे सत्यपि वस्तुनो ह्यचलस्वभावस्य विनाशो नैव सिध्यति । यथा मृतेऽपि देवदत्ते यज्ञदत्तस्य अनुपहतस्वभावात्म-कत्वान्मृत स इति वक्तुं न शक्यते ।

यदि क्रियान्तरविनाशात्तस्य विनाशःस्वीक्रियते, तदैतन्नैव युज्यते, अनवस्थानात्, यतो हि क्रियायां क्रियान्तरसद्भावो नास्त्येव । तस्यामपि तुल्य एव विरोधः परीक्षा च । फलतः कस्यापि विनाशो नैव सिध्येत् । अन्यार्थत्वे सति क्रियायाः वस्तु तावद् अहेतुकमेव स्यात्, केवलं क्रियात एव कार्यस्योत्पादात् । अतो वस्तुनस्तावदसत्त्वप्रसङ्गः । अर्थक्रियासामर्थ्यलक्षणत्वाद् वस्तुनः । अन्यार्थक्रियान्तरोभयस्वभावात्मकत्वाद् यदि वस्तुन उत्पत्तिरभ्युपगम्यते तदा क्रिया यदा वस्तुन उत्पत्तिरभ्युपगम्यते तदा क्रिया यदा स्वभावत एवोत्पादयति तदा वस्त्वपि तथैवोत्पादकं स्यात् । फलतोऽन्यार्थप्रतीत्या किम् ? अर्थान्तरस्य पक्षत्वे अन्यार्थकल्पनायाम् अनवस्थादोषान्नैव (कदापि) हेतुत्वं सिध्येत् । वस्तूपकारा-भावाद् 'अस्येयं क्रिया'—इति सम्बन्ध एव न सिद्धः स्याद्, उपकारसापेक्षत्वात् सम्बन्धस्येति ।

उपकारकत्वमेव यदि वस्तुत्वेनाङ्गीक्रियते तदा क्रियात्मकत्वाद् वस्तुनः, क्रियामुपकरोतीति चेत्तदा कार्यमपि कथं न तथैवोपकरोति ? केन तावत् कारणेन

क्रियान्तरत्वेनोपकल्प्यते ? यदि क्रिया हि सन्मात्रवस्तुसापेक्षैव तदा अविकलहेतुत्वात् सदा तत्समीपवर्तिनी एव, अतो विनाशोऽपि तावन्नैव सिध्यति । यदि सा अर्थान्तरभूता तदा सम्बन्धस्तावदसिद्ध एव । क्रियाणामेव परस्परयोगाद् वस्तु तावद् गौणमेव स्थास्यति । क्षणिकस्य (वस्तुनः) उत्पादसमनन्तरमेव अस्थायित्वात् (तस्य कस्यामपि) क्रियायां कर्मस्वभावत्वं नैव युज्यते ये तावदक्षणिकास्ते सदा एकस्वभावत्वेनावस्थित्वान्नैव क्रियावन्त आकाशवत् । अतः केष्वपि 'कर्म क्रियते' इति न सिध्यति । अत एव सामर्थ्यक्रियादिशब्देन वस्तुस्वभावोऽभिधीयते, नान्यस्मिन्नर्थे ।

क्रिया, या वस्त्वभिन्नत्वेनोभयस्वभावा, सा विनश्य यदि स्वस्व-भावोपहतलक्षणा (भवति), तदा वस्त्वपि तदभिन्नतया स्वस्वभावोपहतमेव भवति। अतः कथमतीतस्य सत्त्वं सेत्स्यतीति ? वस्तुनः स्वस्वभाव इव क्रियाया अपि अविनाशप्रसङ्गे सति क्रियाया नैव (कदापि) विनाशः सिध्यति । सैव क्रिया पुनर्यदि अन्यत्वेऽनभिधेयेति कल्प्यते तदा प्रज्ञप्तिसत्त्वात् सा अवस्त्वेव । फलतस्तद्बलेन त्रिकालव्यवस्थाऽपि नैव समीचीना स्यात् । वस्तुसतः केनाप प्रकारेण अनभिधेयत्वं नोपपद्यते । तथा सति सर्वस्याप्यनभिधेयत्वप्रसङ्गः । अतोऽतीतस्य अवस्तुत्वान्नैव तेन कार्यस्योत्पत्तिरिति ।

नाप्यनागतात्। अतीत इव तस्याप्यसत्त्वात्। एवमसत्त्वाद् आकाश-कमलसदृशाद् अनागतादपि कार्योत्पत्तिर्नैव युज्यते। यदि अप्राप्तक्रियस्तावदनागत इत्युच्यते तदा तदानीं तस्मादपि कार्योत्पत्तिः आत्यन्तिकतया नैव युक्तिमती, अप्राप्तक्रियत्वादेव। यदि वस्तु सर्वदा विद्यमानं तदा तस्याः प्राप्तेरविकलकारणानां सद्भावेऽपि किमिव क्रिया नैव प्राप्यते। नापि क्रिया वस्तुनः सकाशादर्थान्तरभूतेति पूर्वमेव निर्दिष्टत्वात्। यदि नास्ति अर्थान्तरभूता तदा क्रियावत् स्वभावोऽपि नैव अप्राप्तः स्यादभिन्नत्वात्। अतः अनागतास्तित्वं नैव सिध्यति। वस्तुनः स्वभाव इव तदभिन्ना क्रियाऽपि सर्वदा सदेव, अतः सा अप्राप्तेत्यपि नैव सिध्यति। अतः अनागतान्नास्ति कार्योत्पत्तिः तस्यासत्त्वादेव।

वर्तमान इत्यपि पक्षो न सम्भवति । यदि ततः (वर्तमानात्) कार्यं समुत्पद्यते तदा समकालं वा समुत्पद्यताम्, विषमकालं (भिन्नकालं) वा समुत्पद्यताम्। न तावत् कदाचित् समकालम् । कार्योत्पत्तितः पूर्वं शशशृङ्गनिभाद् असत्कारणाद् उत्पादो नैव युक्तः । यस्मिन् काले च हेतोरात्मभावः (कार्योत्पादने) समर्थस्तस्मिन् काले कार्यस्यापि समकालं सत्त्वात् सिद्धमेव तत् (कार्यम्) इति ।

अतस्तस्मिन् (कार्ये) स हेतुः कमपि व्यापारं नैव करोति। हेतुव्यवहारोऽपि तावत् (तस्मिन्) नैव युक्तरूपः, यथा फलाभिमतो नैव हेतुरिति । यद्येवं न स्यात्तदा कार्यकारणभावस्यैव भङ्गः स्यादिति । विषम (भिन्न)कालमिति पक्षोऽपि नैव सम्भवति एवमेव यदि कार्यं (उत्पादात्) पूर्वमेव सत् स्यात् तदाऽनागतोत्पादः स्यात्। अयमपि तावत् (पक्षः) नैव युज्यत इत्युक्तपूर्वमस्माभिः ।

यदि (कार्यं) क्षणान्तरव्यवधानेनोत्पद्यते तदा तदतीतादेवोत्पद्यत इति नैव युक्तमित्युक्तपूर्वम् । यद्यव्यवहिततया (उत्पादः), तदा सर्वात्मनाऽव्यवहितत्वात् समकालिकताप्रसङ्गः । अथापि स्यात्, यद्यपि अव्यवहितत्वेन कार्यस्योत्पादस्तथापि नास्ति समकालिकताप्रसङ्गः, द्वितीये क्षणे कार्यसत्ताया अभ्युपगमादिति । तदाऽपि क्षणिकत्वान्नास्ति हेतोः स्थितिः । अत्र भगवताऽपि—"अस्मिन् सतीदं भवति" इति कार्यकारणभावस्य निर्देशात् कल्पनात्रयं विवर्ज्य चतुर्थी स्वीक्रियते । ताः कल्पनाः पुनः—कारणात् पूर्वं कार्यं वा, समकालिके कार्यकारणे वा, क्षणान्तरव्यवहितत्वं वा, अव्यवहितत्वे सति द्वितीयक्षणेऽवस्थानं वा-इत्येवंविधाः स्युः ।

तत्र यत्तावत् पूर्वमेव स्थितं भवति न तद् हेतौ सति जायते, पूर्वमेव निष्पन्नत्वात्तस्य । समकालेऽपि हेतुतो नैवोत्पत्स्यते (कार्यम्), तस्मिन् काले तस्य (कार्यस्य) अपि सत्त्वात् । इत्येवं समकालिककार्याभावात् कारणस्याप्यसत्त्वम् । कारणसत्त्वे कार्यस्यापि सत्त्वम् । तृतीयक्षणभावि कार्यमपि हेतुतो नोत्पद्यते, द्वितीयक्षण एव विनाशात् कारणं तावदसदेव । इत्थं द्वितीयक्षणे विद्यमानं कार्यमेव हेतोः समुत्पद्यते, प्राथमक्षणिकस्य हेतोः स्वकाले सत्त्वादेव । ततोऽव्यवहिते द्वितीये क्षणे कार्यसत्ताया अनुभवार्थम्—"अस्मिन् सतीदं भवती" त्युक्तम्। न च कार्यकाले कारणसत्तायाः प्रसङ्गः, क्षणिकत्वात्तदा तस्यासत्त्वात् । नापि विनष्टात् कारणात् कार्योत्पत्तिप्रसङ्गः, प्रथमे क्षणे कारणस्य अविनष्टत्वात् तदव्यवधानेनैव च कार्यस्योत्पादात् ।

तृतीये क्षणे तावत् कार्योत्पादोऽस्त्विति चेत् ? नैतदपि युज्यते, (कार्यकारणयोः) मध्ये नास्त्येवंविधम् अणुमात्रमपि कालान्तरास्तित्वम्। विद्यमानं कारणं कालान्तराव्यवहितं च कार्यं यद्यभ्युपगम्यते, नैव तत्कार्यं तदा स्वनिर्भरम् । (एवं च सति) समकालिकत्वप्रसङ्गः स्यान्नवेति विचारणीयतामर्हति । निरंशे तावद् वस्तुनि कालान्तरेणाव्यवहिते च सति समकालिकत्वं मुक्त्वा नान्या गतिः सम्भवति, तयोःसर्वात्मना अव्यवहितत्वात् । यदि नास्ति मध्ये कालान्तरास्तित्वं तदा अवश्यं

पूर्वापरयोः क्षणयोः संस्पर्शः स्यात् । तथा च सति सर्वेषां (क्षणानां) एकस्मिन्नेव क्षणे समनुप्रवेशः स्यात् । (फलतः) यथा परमाणोः सर्वात्मना संयोगे पिण्डस्य अणुमात्रताप्रसङ्गः, तथैव कल्पस्यापि क्षणमात्रताप्रसङ्ग इति ।

यथा खलु देशक्रमः प्रमाणैरवभासमानत्वात् संवृतौ स्वीक्रियत तथा कालक्रमोऽपि तत्सदृश एव, स्वप्नादौ कल्पादीनामप्यवभासमानत्वात् । तत्र प्रयोगः—ये सर्वात्मना कालान्तरेणाव्यवहितास्तेषु पूर्वापरकालभेदो न सम्भवति, दक्षिणवामशृङ्गवत् कार्यकारणयोरपि सर्वात्मना कालान्तरेणाव्यवधानमिति स्वभावहेतुः ।

अथैकदेशेनाव्यवहितत्वम्, नैव सर्वात्मनेति चेत् ? तदा क्षणस्यापि सावयवत्वप्रसङ्गः । फलतः अन्तिमकाललक्षणस्य क्षणस्यापि (स्वरूपता-)हानिः स्यात् ।

अथापि कार्योत्पत्तिकाले हेतोरभावाद्, अभावेन च सह सर्वात्मना वा एकदेशेन वा अव्यवहितत्वमिति चिन्ता न प्रवर्तत इति चेत् ? तदपि नैव युज्यते, तयोर्मध्ये कस्या अपि कालान्तरसद्भावसम्भावनाया अभावान्नैव तदा हेत्वभावयोगः सम्भवति ।

पुनश्च, कार्योत्पत्तिकाले यदि कारणं नास्ति, तदा कार्यमहेतुकमेव स्यात् । विनष्टात् कारणात् यदि कार्यमभ्युपगम्यते, न तु वर्तमानात् (वर्तमानस्य तदानीम्) असत्त्वात्, तदा तस्य वर्तमानमयुक्तम्, यदि तद् वर्तमानं तदा (तस्य) असत्त्वेन सह विरोध आपद्यते । यदि तत् सदित्यभ्युपेयते तदा अव्यवहितत्वादिचिन्ता कथं न प्रवृत्ता स्यात् । यदि पुनः कार्योत्पत्तिकाले कारणं विद्यमानमेव, किन्तु कार्यसत्ताकाले तदसदिति हेतोः अव्यवहितत्वादिचिन्ता नैव कार्येति चेत् ?

नैतदपि युज्यते, सत्तातोऽनन्यार्थकत्वादुत्पत्तेः । इत्थं तु भवन्तः कारणस्य निरन्तरत्वे सत्कार्यस्योत्पत्तिं वर्णयन्ति । ये तावन्निरन्तरत्वेन सत्त्वादित्यभिदधानास्तेऽपि कथञ्चिदप्यवहितत्वमभ्युपगच्छन्त्येव । अन्यथा निरन्तरशब्दस्य कोऽर्थः स्यात् । निरन्तरत्वम् अव्यवहितत्वं संस्पृष्टत्वमित्यादीनामभिन्नार्थकत्वात् तदभ्युपगमसामर्थ्येन कार्यकारणैकत्वमप्यभ्युपगतं स्यात्। कालान्तरेणाव्यवहितस्य सतो नान्यावस्था सम्भविनी।

अपि च, विनष्टहेतोः कार्योत्पत्तिप्रसङ्गस्य अयुज्यमानत्वाद् भवन्तस्तं (पक्षं) परित्यज्य वर्तमानहेतोरव्यवधानेन कार्योत्पत्तिमभ्युपगच्छन्ति । तत्र तावत् किं

सर्वात्मना कार्योत्पत्तिं स्वीकुर्वन्ति यदुत एकदेशेनेति चिन्ता प्रवृत्तैव स्यात्, प्रकारान्तरस्यासम्भवात् । अतः कारणं तावत् कार्यक्षणाव्यवहितमेव । तत्र च ये नाप्येकदेशेन न च सर्वात्मनेति ब्रुवन्ति, तेन तैः किमुच्यत इति विचार्यमाणे अव्यवहितमपि नाप्यव्यवहितमिति कथनं पर्यवस्येत् । एवंविधं सुभाषितं कोऽन्यः कथयितुं पारयति ।

अपि च, यदि विद्यमानकार्यकाले कारणं नास्त्येव, तदा 'अविनष्टात् कारणात् कार्यमुत्पद्यत' इति नैव कथनीयम्, तस्मिन् काले कस्याप्यविनष्ट-कारणस्यासद्भावात् । यस्मिन् काले कारणम् अविनष्टं तस्मिन् काले कार्यमपि नास्ति, अतस्तत् (कार्यं) अविनष्टात् कथमुत्पद्यते ।

एवं चिन्त्यते—स्वयं विनाशाव्यवहितेऽपि वस्तुनि नास्ति सम-कालिकत्वम्, यथाछायातपयोः पूर्वापरत्वाभावेऽपि उदकधारायां चैकदेशत्वं नास्ति, तथैवात्रापि कार्यकारणयोरसमीचीनरूपत्वेऽपि समकालिकत्वं नास्तीत्ययं विचार-प्रकारो न युज्यते, विरोधात् तुल्यपरीक्षणीयत्वाच्च ।

एवं तत्र सदसद्भावे यद्येकदेशेनाव्यवहितत्वं तदा अवयविसद्भावप्रसङ्गः । यदि सर्वात्मना तदा समकालिकत्वमेव । तथैव छायातपयोरुदकधारायां चापि यदि सर्वात्मनाऽव्यवहितत्वं तदैकदेशत्वमेव स्यात् । यद्येकदेशेनाव्यवहितत्वं तदाऽवय-विसद्भावप्रसङ्गः । अस्माकं तु (मते) सर्व एवायं सदसद्भावः परमार्थतोऽसिद्धः, तस्य सदसद्भावादिसर्वप्रपञ्चजालविरहितत्वात् । अव्यवहितत्वादिसमुद्भूतोऽसद्भाव इति नास्ति कश्चन व्यवहारस्तथापि द्वितीये क्षणे वस्तूनि स्वस्वभावनिरोधमात्रं प्रज्ञपयन्ति । नास्ति किञ्चिन्निरन्तरत्वमिति, असन्मात्रत्वात् ।

निरोधमात्रं तावन्न किञ्चित्, अतस्तेन सह परमार्थतोऽव्यव-हितत्वादिचिन्तनं नैव प्रवर्तते । कार्यकारणयोस्तु परमार्थतः सत्त्वाभ्युपगमाद् एकदेशेनाव्यवहितत्वादिचिन्ता तावत् प्रवर्तत एव । आर्यशालिस्तम्बसूत्रे यो हि भगवता तुलादण्डोपमया अव्यवहितत्वेन कार्यकारणभावोऽभिहितः, स तावदुच्छेददृष्टिपरिहारार्थं सांवृतिककार्यकारणभावत्वेन द्रष्टव्यः, न तु परमार्थतः, तुलादण्डस्य परमार्थत्वेनासिद्धत्वात्। यदि तुलादण्डस्वभाव एकोऽवयवी दृष्टान्तत्वेन प्रदर्श्यते, तदा स खल्वसिद्ध एव । परस्परविरुद्धयोरुन्नामावनामादिकृत्ययोरेकस्मिन् युगपद्भावो नैव समीचीनः । परमाणुसञ्चयात्मकोऽपि स (तुलादण्डः) अर्थतोऽसिद्ध

एव, निरवयवत्वेन सञ्चयस्यायुज्यमानत्वादेव । यदि स अवयवीति तदा तस्याभावप्रसङ्गः । यदि विज्ञानावभासिस्वभावत्वेन तुलादण्डस्तावन्निर्दिश्यते, तदा परिकल्पितस्वभावत्वेन मिथ्यैव सः । कथमिव तस्य वस्तुसत्त्वं स्यात् । अमूर्त्तत्वाद् विज्ञानस्य नोर्ध्वाधोगमनम् । अत एव छायातपोदकधारादिनोत्तरितम् ।

लङ्कावतारादिसूत्रेषु भगवता कार्यकारणभावनिषेधस्तावत् सांवृतकार्य-कारणेष्वेवावगन्तव्यः । यदपि भगवता 'अस्मिन् सतीदं भवति' इत्युक्तं तेन विकल्पत्रयं परिहृत्य चतुर्थ एव विकल्पोऽभ्युपगम्यत इति यदुक्तं तद् वक्ष्यते किं 'अस्मिन् सतीदं भवति' इति वचनेन विकल्पत्रयं निषिध्य चतुर्थविकल्पाभ्युपगम् आगमेन निर्दिष्टो यदुत युक्त्या ? आगमेनेति चेत्, तन्नैव युज्यते । यतो हि यौ छायाङ्कुरौ दीपप्रकाशौ वा समकालविद्यमानौ तावपि दीपे सति प्रकाशो भवतीति न व्यवहारविरुद्धौ । एवमेव विद्यमानकार्यं विद्यमानकारणसापेक्षमिति शब्दमात्रेण निर्दिश्यते, न तु विद्यमानकार्यकाले कारणं नासदिति । यदि हि वस्तुत्वं प्रमाणान्तरैः परमार्थतः क्षणिकत्वेन साध्यते तदा तदपि परिकल्पितमात्रमेव, न त्वागमेन (सिद्धः) । इत्थं तु लोकेऽपि समकालिकं छायाङ्कुरादिकमपि कार्यकारणभावेन ज्ञायत एव ।

अथ युक्त्येति पक्षः, तदा भगवतो वचनानि (प्रमाणत्वेन) नैवोद्धर्तव्यानि, तानि एतदर्थं नैव प्रमाणम् । अथ केवलया युक्त्यैवैकया कथनीयमिति चेत् ? एतदपि नैव वक्तुं शक्यते, यतो हि यथा युक्त्या विकल्पत्रयं न सम्भवति तथा चतुर्थोऽपि विकल्पः परमार्थतो नैव सम्भवतीति (पूर्वं) विस्तरेण निर्दिष्टम् ।

लोकप्रसिद्धिमतिक्रम्य नित्यत्व-द्रव्यत्व-स्वातन्त्र्यादिगुणोपेतमात्मान-मभ्युपेत्य कर्मफलसम्बन्धादिसंवृतिं निराकुर्वतां दृष्टिपरिहारार्थं भगवदुक्तेन इदम्प्रत्ययतामात्रेणेवावस्थितेषु संवृतिमाश्रित्य अस्मिन् सतीदं भवतीत्युक्तम्, न त्वागमेन विकल्पत्रयं परिहृत्य चतुर्थविकल्पाश्रयणं कल्पनीयम् । अतः परत उत्पत्तिर्नैव युक्तिमती । फलतश्च सर्वेषां वस्तूनां मायेव प्रज्ञप्त्या उत्पादादिभ्य एव सन्तुष्यताम्, मिथ्यात्वात् ।

विनष्टात कारणात्तावत्कार्योत्पत्तिर्न युज्यते ।
न वाविनष्टात्स्वप्नेन तुल्योत्पत्तिर्मता तव ।।

निरुद्धाद्वाऽनिरुद्धाद्वा बीजादङ्कुर संभवः ।
मायोत्पादवदुत्पादः सर्व एव त्वयोच्यते ।। १७-१८।।
(लोकातीतस्तवः, आचार्य नागार्जुनः)

अतो ये आचार्याः "न परमार्थत अध्यात्मिकान्यायतनानि परप्रत्ययतः समुत्पद्यन्ते, परत्वात्" इत्याद्यभिदधते, (तेषामपि) ते हेतवो नैव सन्दिग्धविपक्षव्यावृत्तिकाः, विपक्षे बाधकप्रमाणसम्भवात् । अतोऽनित्यतासिद्धिवत्तावत् सत्त्वसिद्धिः । जडतादिसिद्धौ परतो विपक्षे बाधकप्रमाणाभावात् तेष्वनैकान्तिकता । उत्पादनिरोध एव तावत् साधनीयः, न तु विपक्षे बाधकप्रमाणसद्भावः । व्यवहारे परतः सिद्धत्वान्नास्त्यसिद्धत्वं प्रमाणस्यापि (भवन्मते परमार्थतः) सम्यग्वस्तुत्वाद्धेत्वादीनां न व्यवहारः कुत्रापि सिध्यतीति निर्दिष्टं पूर्वम् । अत एतेषामनैकान्तिकत्वासिद्धत्वप्रतिपादनं नाम असम्बद्धमेवैतत् ।

तैर्थिकाः ये हि परादिव्यवहारवशात् परादीनि वस्तूनि सन्तीति कथयन्ति तान् आचार्य आह —

"न हि स्वभावो भावानां प्रत्ययादिषु विद्यते" (मूलमध्यमककारिका १:५)—

इत्यादिना दूषयतीत्युच्यते । अतः शास्त्रैस्तावदसिद्धत्वात् परत उत्पत्तिर्नास्तीति निर्दिष्टम् । परादयः शब्दा ये तावत्प्रज्ञप्तिगोचरास्तानपि परम्परया वस्तुसंसर्गिण इत्यभिदधतां तेषां 'वस्तुस्वभावः प्रत्ययेष्वस्तीत्युत्पद्यते' इत्यमुमभिप्रायमादाय दूषणं प्रदत्तम्, प्रत्ययादिषु सत्त्वे परमार्थतो वस्तुस्वभावस्यानुत्पादादिति विस्तरेण खल्वभिहितम् ।

अतो यदा सर्वेषां वस्तूनां परमार्थतः परत उत्पादो नैवोपपद्यते तदा प्रत्ययादिभ्योऽपि अनुत्पाददसिद्ध एव । अतो नास्त्येव परमार्थतः शब्दसंसर्गि किमपि वस्तु । फलतोऽसिद्धेऽप्येवंविधे व्यवहारे वस्तु तावदबाधितमेवेति यदुक्तं तन्न युज्यते ।

(३०) ये सांख्यादयः प्रधानेश्वरादिकं मन्वानाः प्रधानेश्वरादिभ्यो वस्तूनामुत्पादमभ्युपगच्छन्ति, तेषामपि मतं स्वतो वा परतो वा उत्पादपक्षे पृथक्पृथक् दोषाभिधानान्नैव युक्तरूपमिति ।

अन्ये ये कदाचित् स्वातन्त्र्येण उभयत उत्पत्तिं वर्णयन्ति, तेऽप्युभयपक्षीय-(स्व-परपक्षीय) दोषैर्दूषितत्वान्निराकृता एव । अपरे च ये तावत्—"उभयात्मकस्य वस्तुनः प्रमाणविरुद्धत्वान्न कोऽपि तदभ्युपगच्छतीति हेतोः उभयत उत्पत्तिं दूषयित्वा भवन्तः केवलमात्मानमेव मोहयन्ति, तत्तु (भवतां) शब्दमात्रमेव" इति कथयन्ति। ते तावद् विद्वांसः स्वयं शास्त्राणामपरिज्ञानात् शब्दार्थयोश्च सम्यगनवगमात् (केवलं) शब्दश उपहसन्ति । केचन तावत् कण्टकादितीक्ष्णतादृष्टान्तेन सर्वाणि वस्तूनि परमार्थतोऽहेतुत उत्पद्यन्त इति कथयन्ति, तत्र वस्तूनां परमार्थतोऽहेतुत उत्पत्तिं साधयतां तेषां दृष्टान्तस्तावन्नैव सिद्धः, परमार्थतोऽनुत्पन्नत्वात् सर्वधर्माणाम् । संवृतौ सिद्ध इति चेन्न, तत्राप्यसिद्ध एव, कण्टादीनां स्वबीजत उत्पादः प्रत्यक्षतो निश्चितत्वात् । अनेनैव तेषां तैक्ष्ण्यादीनामपि निश्चितत्वान्न कोऽपि (धर्मः) अहेतुत उत्पद्यते । एवं क़ादाचित्कत्वात् सर्वेषामेतेषां वस्तूनां सापेक्षत्वं निश्चितमेव । अनपेक्षितस्य तु सदा अविशेषात्तस्य कादाचित्कत्वं नोपपद्यत एवेति।

यत्तेषां सापेक्षत्वं तदेव हेतुः, अनुपकारिणि अपेक्षाया अनुपपन्नत्वात् । तत्र यदुपकारकत्वेन प्रसिद्धः, स एव तस्य हेतुरिति सिध्यति । अहेतुकत्वे सति सर्वत्र अभिन्नत्वात् कण्कादिष्वपि तीक्ष्णताया निर्धारणं न स्यात् । फलतः सर्वे सर्वात्मकाः स्युः । ये बीजादयस्ते लोके कार्यकारणात्मकत्वेन प्रत्यक्षतः सिद्धाः । अतः प्रतिज्ञा तावत् प्रत्यक्षबाधितैव । अपि च, हेतुतः साध्यस्य साधनावसरे अन्यतः (हेतुतः) उत्पत्तेः (सिद्धेः, भवद्भिः) अवश्यं स्वीकारात् स्ववचनविरोधोऽपि । अन्यथा हेतुप्रयोग एव तावन्निरर्थकः स्यात् । नैव प्रतिज्ञामात्रेण तावदिष्टार्थसिद्धिः, तथा सति सर्वतः सर्वसिद्धिप्रसङ्गः । अतोऽहेतुवादी खलु व्यवहारे प्रत्यक्षादिभिर्बाधितत्वाद् विद्वद्भिः सावधानतया परिहर्त्तव्य एव ।

हेत्वादयस्तावन्मायादिवत् सिद्धाः, ते यथा अविचाररमणीयत्वेन प्रसिद्धास्तथा तेषामनिषेधाद् अनुत्पत्तिरित्युच्यते, प्रत्यक्षादितश्चापि सा नैव बाधिता । धर्म्यसिद्धत्वादयस्तावद् दोषाः पूर्वमेव निराकृताः । सपक्षे सत्त्वान्नास्ति हेतुरप्यसिद्धो विरुद्धश्चापि । आकाशपुष्पादयस्त्वनुत्पन्ना एव, न ते सस्वभावत्वेनानुभूयन्ते । अतस्तेषु व्याप्तेरुत्पत्तेः सम्यङ् निवृत्त्या तस्यापि (सस्वभावत्वस्य) निवृत्तिः । अतो नास्त्यनैकान्तिकत्वमपि । तेषूत्पत्तेः प्रवृत्तिर्निश्चयेन साधयितुं नैव शक्यते, स्वप्नादिष्वसत्पुत्रादीनामप्युत्पत्तिदर्शनात् । सा खलु (उत्पत्तिः) तद्विज्ञाने तथैवावभासत इत्यपि कथनमयुक्तम्, तत्रापि परमार्थतस्तथाकारो नैव सम्भवीति पूर्वं

निर्दिष्टम् । अन्यस्य अन्याकारेणावभासनमप्ययुक्तमेव तत्त्वान्यत्वयोः परस्पर-विरुद्धत्वात् ?

तदुत्पत्त्या सस्वभावत्वादीनां व्याप्तत्वेऽपि उत्पत्तौ सत्यां सम्यक्स्वभावो नैव नियतरूपेण सिध्यति, व्यापकसामीप्ये सर्वव्याप्यानां सामीप्यं नावश्यंभावीति निश्चितमित्युक्तमेव पूर्वम् । अतः साधारणमेवैतद् । परमार्थतो न कस्मिन्नप्युत्पत्तिः प्रवर्तत इति साधितमेव ।

यत्र कैश्चिदपि प्रत्ययैः समुत्पद्यते तद् वस्तु कुतः प्रादुर्भवतीति कथयद्भिरभिव्यक्तिमात्रमेव अतोऽनैकान्तिक एव हेतुरिति चेत् तस्तस्यापि पूर्वं निराकृतत्वात् त्याज्यमेवैतदिति । अथ प्रत्ययैर्वस्तु अभिव्यज्यत एवेति चेत्तदा किं सा अभिव्यक्तिः स्वलक्षणोपचयस्वभावा वा तदावरणसंक्षयात्मिका वा इन्द्रियैः सुकृता वा तद्विषयकविज्ञानोत्पत्तिलक्षणा वेति विचाराः समुपजायन्ते ।

तत्र नैव तावत् प्रथमः पक्षः कथमपि युज्यते, नित्यताया हानिप्रसङ्गात् ।

यदा अनुपचयस्वभावः स्वतो विनश्य अभिव्यञ्जकप्रत्ययैरुत्पद्यते तदा एकस्यापरस्यानुपचयस्वभावस्योत्पादवशात् स्वलक्षणोपचयो भवतीति चेत् ? न, तत्पूर्वस्वभावो यदि न निरुध्येत तदा द्वौ परस्परविरुद्धौ उपचयापचयस्वभावौ निर्युक्तितया एकस्मिन्नेव स्वीकार्यौ स्याताम्। यद्यपूर्वः कश्चन स्वभावो नोत्पद्यते तदा अभिव्यञ्जकाः प्रत्ययास्तावन्निरर्थकाः स्युः । उपचयमनिराकृत्य वस्तूनामुत्पत्तिरपि न युज्यते । तच्च नैव तावदावरणसंक्षयात्मकम्, असत्स्वभावत्वेन परैरकार्यत्वात् ।

वस्तुस्वभावे क्रियानिराकरणं तावत् पूर्वमेव कृतम् । यद्यस्ति एका क्रिया, तदा सर्वे ते प्रत्यया ये यदा अर्थमभिव्यञ्जन्ति तदा अनन्यार्थभूता क्रिया तत्र नैव सम्भवति, पूर्वत एव तस्याविद्यमानत्वात् । नित्यस्य भावस्य त्वावरणं तद्विशेषाणामविनाशाद् अनुत्पादाच्च कदापि न युज्यते, अतिप्रसङ्गात् । तद्विषयकविज्ञानोत्पत्तौ विघ्नकरणादप्यावरणं नैव युज्यते, स्वविषयकज्ञानोत्पत्तौ समर्थत्वात्, विद्यमाने स्वविज्ञानविज्ञेयस्वभावेऽविकलविज्ञानं तावत् केनापि विघ्नयितुमशक्यत्वाच्च । यदि नास्ति स समर्थो वा स्वविज्ञानविज्ञेयो वा तदा स्वहेतुविकलतया तद्विज्ञानोत्पत्तिरेव न स्यात् । अतस्तद्विषयकविज्ञानोत्पत्तौ विघ्नकारकत्वाद् आवरणं तावन्नैव युज्यते ।

यथा आवरणसंक्षये तथा विज्ञानोत्पत्तावपि अविघ्नापादनस्वभावोऽपि क्रियायां नैव युज्यते । असामर्थ्यात् तद्विज्ञानविज्ञेयस्वभावाभावाच्च अभिव्यञ्जकैः

प्रत्ययैरावरणं क्रियत इत्यस्यापि निराकरणं कृतमेव (पूर्वम्)। तथात्वेऽपि तद्विषयकविज्ञानोत्पत्तिरयुक्तैव। यदि सामर्थ्यमभ्युपगम्यते तदा आवरणकारके सत्यपि अविकलहेतोः सद्भावात् सदैव विज्ञानोत्पत्तिसम्भवाद् व्यञ्जकानां भावानां क्रिया निरर्थिकैव स्यात्। अतो नित्यस्य तावदकिञ्चिकरत्वात् कथमप्यावरणं न युज्यते । अनित्यता तु कदापि केनापि हेतुविशेषेण विज्ञानानुत्पादकस्यान्यस्य क्षणस्योत्पादाद् आव्रियत एव ।

इन्द्रियैः सुकृतत्वपक्षोऽपि तावन्नैव (युज्यते) । यदि तत्सुकृतत्वं (वस्तु-)-स्वभावभूतं तदा अनित्यतायाः प्रसङ्गः, पूर्वसदृशत्वात्तस्य । यदि तदन्यार्थभूतं तदा सुकृतत्वं नैव युक्तियुक्तम्, अकिञ्चित्करत्वात्तस्य । यद्येवं नास्ति तदाऽतिप्रसङ्गः । कस्मिन्नपि वस्तुनि केनापि किमपि करणं तावन्नैव सम्भवमिति (पूर्वं) निर्दिष्टम् । इन्द्रियैः सुकृतत्वेऽपि यदि अभिव्यञ्जकैर्भावैः तदिन्द्रियविज्ञानोत्पादासामर्थ्यम् अथवा तद्विज्ञानविज्ञेयस्वभावासत्त्वं तदा तद्विज्ञानोत्पत्तिरसम्भविनी, अतो निरर्थकमेव तावत् सुकृतत्वमिति प्रसङ्गः ।

यदि विद्यत एव सामर्थ्यं तद्विज्ञेयस्वभावो वा तदा इन्द्रियैः सुकृतकत्वतः पूर्वमेव तस्मिन् (विषये) विज्ञानोत्पादस्य प्रसङ्गः स्यात्, तदा सुकृतकत्वमपि निरर्थकमेव स्यात् । अतस्तस्मिन् विषये विज्ञानोत्पादलक्षणमपि न सङ्गतं स्यात् । यतो ह्येवं तद् व्यङ्ग्यं वस्त्वपि यदि असमर्थं वा तद्विज्ञानविज्ञेयस्वभावं वाऽपि नास्ति तदा विज्ञानोत्पादेऽपि न तद् (वस्तु) तस्य (विज्ञानस्य) विषयः स्यात् । यदि (तद् वस्तु) समर्थं वा तद्विज्ञानविज्ञेयस्वभावं वा स्यात् तदा स्वस्वभाववत् सामीप्यात् तत्सत्तामात्रेणैव विज्ञानस्य समुत्पादो भविष्यतीत्यतो न तेन व्यञ्जक-विज्ञानोत्पादः क्रियत इति (सिध्यति) ।

अपि च, भवतां तावन्मते सर्वेषां वस्तूनां जातयः सदैवावतिष्ठन्त इति हेतोस्तत्र (वस्तुषु) व्यङ्ग्य-व्यञ्जकादीनामपि सदा अवस्थितत्वात् । (नित्यत्वात्) व्यङ्ग्य-व्यञ्जकादिव्यवस्था नैव (समीचीनतया सर्वथा) युज्यते, (तेषां) व्यङ्ग्य-व्यञ्जकादीनामकिञ्चित्करत्वात् । सदैवाभिव्यक्तिप्रसङ्गोऽपि सर्ववस्तूनां दुर्निवार एव, सर्वदा अविकलसमग्रीकत्वात् । अपि च, व्यक्तस्य तावन्नित्यत्वेन परिकल्पितत्वात्, नित्यस्य च सर्वसामर्थ्यविरहितत्वान्नैव हि तस्य वस्तुत्वं कथमप्युपपद्यते । अतः कथं तेनानैकान्तिकहेतुत्वमपि । इत्येवं यदि सर्वसामर्थ्यशून्यं तस्य अभावरूपत्वमेव, यथा—वन्ध्यापुत्र इति ।

ये तावदीश्वरादयः (परैः) अभ्युपगम्यन्ते, तेऽपि तथैव । तेऽपि क्रम-योगपद्याभ्यामर्थक्रियाविरोधात् सर्वसामर्थ्यशून्या एवेति पूर्वमपि (बहुधा) निर्दिष्टम् । सपक्षे सिद्धत्वान्नायं हेतुरसिद्धः, नापि विरुद्धः, वन्ध्यापुत्रादिषु वस्तुत्वप्रसङ्गान्नाप्य-नैकान्तिकोऽपि । इत्थं तावदशेषसामर्थ्यशून्यत्वमेव अभावलक्षणम् ।

असंस्कृतेष्वपि तथात्वात् कथं तानि वस्तूनीति ? इत्येवं प्रतिसंख्या-निरोधादयो ये सर्वसामर्थ्यशून्यास्तेषां वन्ध्यापुत्राद्यभिन्नत्वेऽपि ये खलु तान् वस्तुत्वेन परिकल्पयन्ति, तेषां कल्पनेयं नैव युक्तिमती, हेतोरेवाभावात् ।

प्रतिसंख्यानिरोधादयो यदि कस्यापि ज्ञानस्य विषयास्तदा अवश्यं ते हेतुत्वेनाङ्गीकरणीयाः, अहेतोर्विषयत्वानभ्युपगमात् । हेतुविशेषस्य स्वाकारार्पण-मात्रेण विज्ञानोपकाराद् विषयत्वमित्यङ्गीक्रियते । यद्येवं तर्हि तस्य नित्यताया हानिप्रसङ्गः, व्यवहारेऽपि तस्य क्रमयौगपद्याभ्याम् अर्थक्रियाकारित्वानुपपन्नत्वात् । अनुपकारित्वेऽपि यदि विज्ञानेन विज्ञेयस्वभावस्य अभावाद् विषयत्वं कल्प्यते, तथा सति यदि विज्ञानं विज्ञेयस्वभावमनुसरतीति तदा तद्विज्ञानस्यापि तदनुसरणेन नित्यतायाः प्रसङ्गः । यदि नानुसरति तदा तन्नित्यताया हानिप्रसङ्गः । यदि सर्वज्ञज्ञानं तदिति न कस्यापि वस्तुनः सामीप्यमिति कल्प्यते, तदापि प्रेक्षावद्भिस्तस्मिन् वस्तुसत्ताया व्यवहारो नोपपद्यते, विज्ञप्त्यर्थं तद्धेतुज्ञानस्याभावात् ।

येन कारणेन ततो विभक्तं शशशृङ्गादिं ये ज्ञेयत्वेनोपचरन्ति, तेषां समेषां स्वभावराहित्याद् विशेषोऽभिधातव्यः, अभावाद् विभक्तस्य राहित्यस्वभावस्य वस्तुत्वेन ज्ञानासम्भवात् । तत्र स्वभावत्वेन गृहीतलक्षणविशेषस्यात्मनः सत्त्वाभिधानमयुक्तम्, असद्वस्तुन्यपि सर्वसामर्थ्यवियोगस्वभावस्य ग्रहणात् । वन्ध्यापुत्रादिसदृशे तदभिन्नेऽपि यदि वस्त्विति नाम प्रज्ञप्यते, तदा नास्ति विवादः, किन्तु कथं वन्ध्यापुत्रादयोऽहेतुका इति नोच्यत इत्युच्यते । इत्येवम् असंस्कृतानां सत्त्वाभिधानं नैव समीचीनम् ।

अत एवोक्तं लङ्कावतारसूत्रे[१] :

असद्भावसमारोपः पुनर्महामते, यदुत आकाशनिरोधनिर्वाणाकृत-काभिनिवेशसमारोपः।

---

१. लङ्कावतारसूत्रं, पृ० ३१, दरभंगासंस्करणं ।

ये तावन्नित्यानित्याभ्यामनभिधेयत्वेन पुद्गलादीनामुभयथाऽपि सिद्धिरनैकान्तिकीति प्रतिपादयन्ति, तन्न युज्यते, सद्वस्तुनि कथमपि अनभिधेयत्वासम्भवात् । एवमेव नित्यानित्यानि तावत् परस्परपरिहारस्थितलक्षणानि । यदि तानि क्रमश एकसिद्धिनिषेधाभ्याम् अपरनिषेधसिद्धिभाञ्जि न स्युस्तदा असदेव स्युः । फलत एकस्य निषेध एवापरस्य सिद्धिरिति हेतोः कथं तावदनभिधेयं वस्त्वित्यभिधीयते ।

अन्यथा (यद्येवं नास्ति तदा) अनभिधेयत्वात् सर्वाण्येव वस्तून्यनभिधेयानि स्युः । फलतः स्वपरोदितानाम् अशेषवस्तुविशेषाणां विलोपसम्भवाद् महात्मभिर्वज्रकणादियुक्तिचतुष्टयस्याभिधानाद् एभ्यो मार्गेभ्यो नैव विरुद्धम् । यथोक्तम्—

न स्वतो नापि परतो न द्वाभ्यां नाप्यहेतुतः ।
उत्पन्ना जातु विद्यन्ते भावाः क्वचन केचन ।। इति ।।

(मूलमाध्यमिककारिका १:३)

इत्येवं सर्वे धर्मा निरात्मान इति साध्यन्ते । अत एव भगवता प्रज्ञापारमितासूत्रे वस्तुषु नित्यानित्यग्राहस्य तावन्निषेधः कृतः । अन्यसूत्राणां स्रोतांसि पूर्वमेव निर्दिष्टानि । अतो ये रूपं नित्यमित्युदीरयन्ति, ते तावन्नैव प्रज्ञापारमितायामाचरन्ति । कथमिति चेत् ? यदा तद् रूपं सदेव नास्ति तदा तन्नित्याभिधानस्य तु कथैव का ? इत्युक्तम् । सर्वाकारज्ञतापर्यन्तं (सर्वधर्मेषु) एवमेव प्रयोक्तव्यमिति ।

अत एवात्रापि परतः कार्योत्पादे तावत् को विरोधः, कथं हि ततोऽपि (परतोऽपि) कार्योत्पादनिषेधः क्रियते ? नात्र (कानिचित्) बाधकप्रमाणान्यपीत्यादि यदुक्तम्, एतत् सर्वं पूर्वं कृतोत्तरमेव ।

सत्कार्योत्पादनिषेधार्थमपि भवतां सविधे नास्ति उभयसिद्धो हेतुर्दृष्टान्तश्चेत्यादि यदुक्तम्, तदपि नैव युज्यते । तथा हि—किं तत् यत् सदित्युच्यते ? अंशैस्तावन्निरंशस्य सिद्धिरसम्भविनीति यस्य स्वभावः सर्वात्मना निष्पन्नः, यश्च निष्पन्नस्वभाव इति तस्य परैः (हेतुप्रत्ययैः) अपूर्व इत्याख्यं भेदं कर्तुं नैव शक्यते । यस्यापूर्वमिति भेदं नैव शक्यते कर्तुम्, स कदापि केनाप्युत्पादयितुं नैव शक्यते, यथा-आकाशकुसुमा-दीनि । यस्तावत्तस्य सत्ताभिनिवेशः, सोऽपि तद्वदेवेति तस्यापि हेत्वादयोऽसम्भविन एवेति ।

विच्छिन्नमात्रे साध्ये तथैव च हेतोर्निर्देशे न ते अभूतधर्मितो विरुद्धाः । यथा सति नैव आश्रयासिद्धादिदोषाः, पूर्वमेव तन्निर्दिष्टत्वात् । साध्यसाधनयोः सपक्षेऽनुगमान्नैव विरुद्धाख्योऽपि हेतुदोषः । व्यवहारेण भिन्नत्वाद् उत्पत्तौ व्यापकः। फलतो व्यापकनिवृत्त्या नास्ति व्याप्योऽपि सम्भवी । अतो नास्त्यनैकान्तिकोऽपि हेतुः । यस्य केनापि भवति भेदः, स तस्य प्रकृतिः । अतो यस्तावदन्यः, स कथं तस्येति ? यश्च स्वभावतः पूर्वमेव स्थितः, स हेतुसन्निधानात् पूर्वमपि तथैव भावात् कथं 'हेतुभिरुत्पन्नः' इति कथयितुं शक्यते ? अतो नास्त्यनैकान्तिकत्वमिति ।

भेदयोग्यत्वादुत्पत्तौ व्यापकत्वमित्यतोऽसदुत्पद्यत इति चेद् ? व्यवहार-मात्रेणैवैतत् स्यात्, परमार्थतोऽसत्त्वात् । एवमेव यदि स्वभावतोऽभाव एकप्रकृतिक एव, तदा पश्चादपि कथं स सत्स्वभावः स्यात्, सदसतोः परस्परविरुद्धत्वात् । यश्च परस्परपरिहारस्थितलक्षणो धर्मः स तद्विरुद्धधर्मिणि कथं नाम युक्तः स्यात्, यथा अमूर्तधर्मान्तर्भूतं तावदाकाशं कथं नाम मूर्तं स्यादिति । उत्पत्त्याख्यो हि प्रसिद्धः सत्स्वभावस्तावद् असत्स्वभावपरिहारस्थितलक्षणत्वात् कथं हि नाम परमार्थतो-ऽभावेन सम्प्रयुक्तः स्यात् ।

एवं विचार्यमाणे यदसत्, तस्य उत्पत्तिक्रियावत्यामुत्पत्तौ किमप्युपदेशनं नाम नास्ति । पृथक्सामर्थ्यवतः कस्यापि भावात्मकस्य हेतोरनन्तरं प्रादुर्भावस्य सम्प्रतिभासाभावात् तद्धेतोरसदुत्पद्यत इति लोके उत्पत्तिविशेषविषयिकायाः कल्पनायाः अभिधानस्य च व्यवहारः प्रवर्तते। व्यवहारमात्रेण तु वस्तुसत्त्वे बाधालेशोऽपि नैव सम्भवति । असद्वस्तुनि सदाख्यधर्मस्य तावत् सत्तालेशोऽप्यस्माभिर्नाभ्युपेयते । यदि तत् सत्, तदा नैव तदसत् । यो हि पश्चादपि उत्पत्तिस्वभावः, स तावदन्य एव । यश्चान्यः, स न तस्येत्यभिधातुं शक्यते । अतः 'असदुत्पद्यते' इति यदुक्तं तदभावतो भावसिद्धिरिति नैव युज्यते । यतो ह्यत्र भावस्वभावपरीक्षाया एवावसरः । अतः क्रियानिरोधमात्रं वक्तुं नेष्टमिति ।

यद्येतद् वस्तु हेतोः सामीप्यात् पूर्वमुद्भूतं नास्ति, तदा तस्य कः स्वभाव इत्यभिधेयम् । यदि तदा किञ्चिदपि नास्ति तदा तत् कदाचिद् वस्तुत्वेनाभिधास्यत इतिचिन्ता नैव युज्यते । यदि नास्ति वस्तुनः किमपि भावात्मकमस्तित्वं तदा तस्य स्वभावोऽसदेवेति सुस्पष्टमभिधास्यते । अन्यथा किमिति तस्यासत्त्वमित्युच्यते । एवं यो हि पूर्वमसन्, स पश्चाद्भावी कश्चन भावस्वभाव एव ।

सोऽपि कथं नामापूर्वस्वभावातिरिक्तः प्रज्ञप्तुं शक्यते । पूर्वं नासीदित्य-सदुत्पत्तेर्व्यवहारस्यापि हेतुप्रत्ययाभासाः कथं सम्यगित्यभिधातुं शक्याः ? एवमभूतस्य भूतसिद्धिस्तावदसतः सत्सिद्धिरेव स्यात् । यतो हि यदि नास्त्यन्यस्तदा अभूतादन्यो भूतो नास्ति सत्समीपवर्त्यपि । असत्यप्यन्ये अभूतादन्यस्योत्पादाभिधानमसम्बद्धमेव । फलतोऽपूर्ववस्तूनां पश्चात् सत्त्वाभिधानं तावत् तद्विरुद्धधर्मान्वितस्यैवाभ्युपगमः ।

विरुद्धधर्मान्वितः स्वभावोऽपि तावदनुपपन्न एव । तथा सति सर्वस्य सर्वस्वभावताप्रसङ्गः । एकस्मिन् क्रमेण सत्त्वासत्त्वे अविरुद्धेइत्यभिधानमपि नैव युज्यते । तथा सति समकालेऽप्यविरुद्धत्वप्रसङ्गः । यदि समकाले ते अविरुद्धे तदा क्रमेणापि कथं ते न तथा, अभिन्नत्वादिति ।

भिन्नधर्मिणि विरुद्धलक्षणस्याविरुद्धत्वेऽपि एकस्मिन् धर्मिणि नैव क्रमेणापि तद् भवितुं शक्नोति । यथा युगपदनेकविरुद्धधर्मान्वितत्वाद् एकत्वहानि-प्रसङ्गः, तथैव क्रमेणापि तदन्वितत्वात् तत्प्रवृत्तिरिति । अन्यथा परैरपि प्रधानादीनां क्रमशो महदादिगणे परिवर्तनम् अभिव्यक्तिं वा उपकल्पयतां व्यक्ताव्यक्तादि-धर्मविरोधः कथमभिधीयते ।

क्रमेण वस्तूनामुत्पादकेषु ईश्वरादिषु कथं नाम समर्थासमर्थादिवि-रोधोद्भावनं युज्यते । ये केचन पर्वत-काय-वज्रादीन् दृढस्वभावान् तेषां शीतोष्माद्यवस्थाभेदेन क्रमशो भेदं व्यवस्थापयन्ति, तेऽपि तेषां क्षणिकत्वं सिसाधयिषवः कथं क्रमेण प्रादुर्भवत्सु तेषु शीतोष्मादिविरुद्धत्वमभिधातुं शक्नुवन्ति। यदि वस्तूनि तावद् अभूत्वा उत्पद्यन्ते, भूत्वा चाभावत्वेनावभासन्त इति विचारणाद् एकस्मिन् क्रमशः सदसत्त्वमविरुद्धत्वेन व्यवस्थापयितुं शक्यत इति कथयन्तीति चेन्नेदं युज्यते । यतो हि ताम्रादिष्वेवं दाढर्यमार्दव-शैत्यौष्ण्यादीनि क्रमेण दृश्यन्त एव । अतस्तत्रापि अविरुद्धत्वप्रसङ्गः स्यात् । अतस्तेन अदृढतया ये स्वभावत्वेन साधयन्ति, तन्नैवोपपद्यते ।

अपि च, अस्माभिरप्येतादृशी दृष्टिर्नैव परित्यज्यते । यतो हि मायास्वप्नादिसमा अलीका अपि (पदार्थाः) अभूत्वा भवन्ति, भूत्वा च विनश्यमानाः प्रतिभासन्ते । किन्तु स्वभावतः सदसतोस्तु क्रमेणापि तयोः सदसतोर्विरोध एव । तद्यथा—

यद्यस्तित्वं प्रकृत्या स्यान्न भवेदस्य नास्तिता ।
प्रकृतेरन्यथाभावो न हि जातूपपद्यते ।।

(मूलमाध्यमिककारिका, १५:८)

यथोक्तं कारिकायाम् :—

सोऽसन् स्वभावतोऽभावः स कथं प्रत्ययान्तरैः ।
निःस्वभावो भवेत् कोऽन्यो हेतुरुक्तस्तथागतैः ।।

आर्यलङ्कावतारसूत्रेऽपि पूर्वं रागादीन् सत्त्वेनाभ्युपगम्य पुनरसत्त्वे-नाङ्गीकरणं वैनाशिकतैव । कार्यकारणभावो यदि परमार्थत स्यात्तदा एवमभिदधानानां (सा) दृष्टिस्तावत् सम्यग् मार्गानुसरणाद् मुक्तिमार्गानुकूलैव स्यान्नत्वननुकूला । अतो लङ्कावतारसूत्रे यदुक्तं तदप्यविरुद्धमेवं, तथा हि—

कार्यकारणदुर्दृष्ट्या तीर्थ्याः सर्वे विमोहिताः ।
अतस्तेषां न मोक्षोऽस्ति सदसत्पक्षवादिनाम् ।।

(लङ्कावतारसूत्र, ३:७२)

पुनश्च,

अभूत्वा यस्य चोत्पादो भूत्वा चापि विनश्यति ।
प्रत्ययैः सदसच्चापि न ते मे शासने स्थिताः ।।

(लङ्कावतारसूत्र, १०:१८०)

हेतु-प्रत्ययसामर्थ्यनिश्चयेऽपि परमार्थतोऽसत उत्पत्तिर्नैव युज्यते, स्वभावान्तरं कर्तुमशक्यत्वात् । प्रतिनियतसामर्थ्यतो विरुद्धमपि स्वभावं कर्तुं नैव पार्यते, तथा सति शशशृंङ्गादीनामप्युत्पादप्रसङ्गः स्यादिति विद्वांसो ब्रुवन्ति । अतो हेतूनां नियतसामर्थ्येन व्यवस्थाऽपि नियता भवेदित्यभिधानमपि तावदसम्बद्धमेव । संवृतावपि खल्वसत उत्पत्तिः कथं न विरुध्यत इति विचारणाऽपि तावन्नैव युज्यते, वस्तुन्येव विरोधस्य व्यवस्थापनान्मिथ्यावस्तुनि (अवस्तुनि) तद्व्यवस्थानम-सम्बद्धमेव । अन्यथा परमार्थैवैषा उत्पत्तिः स्यान्नतु संवृतौ ।

अपि च, या खलु वस्तूनामुत्पत्तिः संवृतिमायावदवस्थिता, सैवारोप्यास्माभिर्विरोधिवचनैर्मिथ्यात्वेन साध्यते, नान्यत्वेनेति पश्चाद् विस्तरेण निर्देक्ष्यते । एवं वस्तूनां परमार्थसदुत्पत्तिर्नोपपद्यते, न सन्ति च तानि (वस्तूनि) असद्भूतान्यपि । एतेषामुत्पत्तिर्मायावन्मिथ्यैव प्रदर्श्यते । अत एव सर्वाणि खलु वस्तूनि मायावदेव व्यवस्थितानि । अतश्च भगवता—महामते, सतोऽसतश्चानुत्पन्न-त्वात् सर्वे धर्मा अनुत्पन्ना एवेत्यनेकधा सदसतोर्निषेधं कृत्वा अनुत्पाद एव निर्दिष्टः ।

भगवताऽपि परिकल्पिस्वभावमभिप्रेत्य सदसतोरुत्पत्तिविरोधो व्यवस्थापितः न तु तत्त्वत इत्येवं येषां कथनं तदप्यग्रेऽभिधास्यते । यो हि वस्त्वात्मा परमार्थतोऽनुत्पन्न सोऽपि तत्त्वत उत्पन्न इत्येवंभूतो यो परिकल्पितः स्वभावस्तमपि ये परिकल्पितस्वभावत्वेनाभ्युपगच्छन्ति, तदा तत्रैव युक्तरूपम् । वस्तूनामस्य स्वभावस्य परमार्थतोऽनुत्पन्नत्वेऽपि ग्राह्यग्राहकारस्वभावेनानुत्पन्नत्वात् स परिकल्पिस्वभाव इति चिन्त्यते तदा परिकल्पितात्मकयोः सदसतोर्यथा उत्पत्तिविरोधस्तथैव परमार्थात्मकस्यापि कथं नोत्पत्तिविरोधः । तत्त्वतस्तु उत्पत्तेः सदसदाकारातिरिक्तत्वेन अन्याकारतयाऽनुत्पन्नत्वात् साधारणमेव तदिति ।

अतो यः प्रतीत्यसमुत्पन्नः स परमार्थतः शून्यः, मायादिवदिति । नास्त्ययं हेतुरनैकान्तिकोऽपि । यदि विपर्ययस्तदा यथोक्तदोषदूषितानि प्रमाणान्यपि सम्भवेयुः। यो हि हेतुप्रत्ययानपेक्ष्य समुत्पद्यते तस्य कृतक एव स्वभावः, न तु पारमार्थिकः । अकृतकस्य परापेक्षा नैवोपपद्यते। य एव कृतकस्तस्य नैव प्रकृत्या स्वभावो युज्यते, प्रकृतेरविकारात्। कोऽपि तां (प्रकृतिं) परिवर्तयितुं नैव क्षमः। अतो यो हि पारमार्थिकः स्वभावः, यश्चाभूत्वा भवति, भूत्वा च विगच्छति तौ (स्वभावौ) परस्परविरुद्ध-त्वादसम्बद्धाविति पूर्वं निर्दिष्टमेव। अतो नास्त्यनैकान्तिकत्वमिति । तथा हि :

"न सम्भवः स्वभावस्य युक्तः प्रत्ययहेतुभिः ।
हेतुप्रत्ययसम्भूतः स्वभावः कृतको भवेत् ।।

स्वभावः कृतको नाम भविष्यति पुनः कथम् ।
अकृत्रिमः स्वभावो हि निरपेक्षः परत्र च ।।"

(मूलमाध्यमिककारिका-१५ : १-२ का०)

नित्यानित्यस्वभावयोरुपकल्पितत्वाद् वस्तूनाम् अन्तद्वयदर्शने प्रसङ्गमापादयितुम् उक्तम् आर्यश्रीमालासूत्रे[१]—

"भगवन्, द्वयोरन्तयो पश्यतीत्युच्यते । यदुत उच्छेदशाश्वतदर्शनम् । 'अनित्याः संस्कारा इति चेद् भगवन् पश्येत् सास्य स्यादुच्छेददृष्टिः, सास्य स्यान्न

१. दे० क०, रत्नकूट, 'छ'-पृ० २७३ ख ।

सम्यग्दृष्टिः । नित्यं निर्वाणमिति चेद् भगवन् पश्येत् सास्य स्याच्छाश्वतदृष्टिः, सास्य स्यान्न सम्यग्दृष्टिः ।'' (रत्नगोत्रविभाग, पृ० ३४)

आचार्येणाप्युक्तम्—

भावमभ्युपपन्नस्य शाश्वतोच्छेददर्शनम् ।
प्रसज्यते स्वभावो हि नित्योऽनित्योऽथवा भवेत् ।। इत्यादि ।।

(मूलमाध्यमिककारिका, १४ : २१)

अतश्च सपक्षे सद्भावान्न विरुद्धोऽपि हेतुः, यतो हि विपक्षे यस्य सद्भावः, स एव विरुद्धः, न तु यस्य सपक्षे सद्भावः, स विरुद्ध इति । मायादयस्तावत् वस्तुत्वेनानुपपन्नाः, ज्ञानज्ञेयाभ्यां विलक्षणस्वभावत्वात्तेषाम्, इति पूर्वं निर्दिष्टमेव । न हि ज्ञानज्ञेयाभ्यां भिन्नो वस्तुनः स्वभावः । अनुत्पन्नस्वभावेष्वाकाश-पुष्पादिष्वदर्शनेऽपि प्रतीत्यसमुत्पादस्वभावस्तावत् सम्यक्तया युज्यत एवेति ये कथयन्तीत्यनेनापि (कथनेन) नैव (हेतोः) विरुद्धत्वं साधयितुं शक्यतेऽसम्बद्धत्वात्, व्यापकप्रवृतेः व्याप्यसाधनेऽशक्यत्वाच्च ।

मायादिषु हि मिथ्यात्वेन (तत्र) नैव प्रतीत्यसमुत्पादः सिध्यति, दृष्टान्तविकलत्वादिति यत्कथनं तदप्यसम्बद्धमेव । यदि परमार्थस्वभावमधिकृत्य मायादीनामनुत्पन्नत्वं केवलमभिधीयते, तत्तु, तदा स्वीकार्यमेव। यतोऽस्माभिरपि परमार्थत उत्पत्तिमभ्युपगम्य नैव हेतोर्निर्देशः कृतः, स तु केवलमुभयसिद्ध-प्रतिभासमादायैव । न हि सिद्धान्तापेक्षया धर्मिहेत्वादीनां निर्देशः क्रियत इति तु पूर्वं निर्दिष्टमेव । यदि मायादयो व्यवहारेणाप्यनुत्पन्ना इत्यभ्युपगम्यते तदेदं लोकस्यापि निवर्तकत्वाद् अस्माभिरस्यां निवृत्तौ प्रयत्नो नैवास्थेयः । कोऽपि स्वस्थमनाः पुरुषो यदि 'यथा मायादीनां प्रत्यया मन्त्रौषध्यादयश्च दृश्यन्ते, तथा तेषामुत्पत्तिर्नैव दृश्यते' इत्येवं कथयति, तत्तु तेषां (कथनं) विदुषां कृतेऽत्यन्तं हास्यास्पदमपमानकरं चेति। इत्थं नास्त्यसिद्धत्वमपि हेतोः ।

यथोक्तं भगवता—

यः प्रत्ययैर्जायति स ह्यजातो
न तस्य उत्पादु स्वभावतोऽस्ति ।
यः प्रत्ययाधीनु स शून्य उक्तो
यः शून्यतां जानति सोऽप्रमत्तः ।।[1]

---

१. द्र०-अनवतप्तनागराजपरिपृच्छासूत्र, दे० क०, 'क', पृ० २३० ख ।

सागरमतिनिर्देशसूत्रेऽप्युक्तम्[१]—

प्रतीत्य यद् यद् भवति तत्तन्नास्ति स्वभावतः ।
निःस्वभावा हि ते भावाः कदाचित् सम्भवन्ति न ।।

आचार्येणाप्युक्तम्—

प्रतीत्य यद् यद् भवति तत्तच्छान्तं स्वभावतः ।
तस्मादुत्पद्यमानं च शान्तमुत्पत्तिरेव च ।।

(मूलमाध्यमिककारिका- ७:१६)

पुनश्च

यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यतां तां प्रचक्ष्महे ।
सा प्रज्ञप्तिरुपादाय प्रतिपत् सैव मध्यमा ।।

(मूलमाध्यमिककारिका २४:१८)

(३१) यदि विनाशादयो हि विकल्पाः परमार्थत उत्पत्तौ बाधिता इत्युच्यते, तदपि नैव युक्तियुक्तम् । या च बाधाऽभिधीयते, काऽसौ? यदि मिथ्यात्वेन सिध्यन्तीत्युच्यते, तदा वयमप्यभ्युपगच्छामः । अतः संवृतिरेव सा इत्युच्यते । यदि युक्त्या ते प्रसिध्यन्ति तदा परमार्थत एव भवेयुः, न तु संवृत्या । यदि प्रसिद्धा तावद् बाधा निराकृतैवेत्युच्यते, तदपि नैव युज्यते, न हि प्रमाणबाधिता मिथ्यास्वभावा अपि मायादयो लोकेऽप्रसिद्धाः । अतो वस्तुस्थितं भ्रान्तं विज्ञानमपि मायादिवल्लोके प्रसिद्धमित्युच्यमानमपि न युज्यते । न ह्येकस्मिन् विविधप्रकारके विरुद्धज्ञाने तथैव मायादिस्वभावः सम्भवति, लोकेऽपि च तन्नैव ज्ञानस्वरूपेण प्रसिध्यति । मायादीनां ज्ञानस्वभावत्वेऽपि ज्ञानस्य तदभिन्नतया गृहीतमिथ्याकारत्वेनावभासितत्वात् तदपि तद्वन्मिथ्यैव । अन्यथा सत्यासत्यस्वभाव-योस्तावत् को हि सम्बन्धः स्यात् । अतो नास्ति भ्रान्तिः । अस्ति बाधाविरोध इत्युच्यते, तदपि न युज्यते, यदि नास्त्यात्मना विरोधस्तदा कथं स प्रमाणेन साधयितुं शक्यते ।

यद्यस्त्यात्मनि विरोधः, स च प्रमाणैः सिध्यत्यपीत्युच्यते तदा साधननिर्भरः सः कथमस्वीकार्यः स्यात् । न स विरोधोऽवभासत इत्युच्यते चेत्, तदाऽस्य विसर्जनं पूर्वमेवास्माभिः कृतम् ।

---

१. दे० क०, 'फ', पृ० ८ क ।

अपि च, अन्तर्ज्ञेयवादिनां मतानुसारं यदद्वयज्ञाने आकारद्वयं सागरपर्वत-भूमिजलादिकं तदंशतयोपचर्यते, तदेकस्मिन् कथं विरुद्धावभासोऽनुविधीयते । अतोऽन्तर्ज्ञेयवादिभिरप्यवश्यं कथञ्चिद् भ्रान्तं ज्ञानमभ्युपेयमेव । अन्यथा सर्वेऽपि तत्त्ववेदिनो जायेरन्, न च प्रतिवादिभिः सह विवादा अपि जायेरन् । कथं चारिष्टनीलाक्षताकामलादिभिरुपहतनेत्राणां देहादयो विरुद्धस्वभावद्वये प्रतिभासेरन् । न च सत्यात्मकस्य ज्ञानस्य प्रतिभासमानैर्मिथ्याकारैः सह कश्चनापि सम्बन्धः, सत्यासत्योः परस्परविरुद्धत्वात् । न हि भवतां मते विरोधो दृश्यत इत्यतः सर्वेषां प्रत्यक्षतस्तत्त्वदर्शित्वसम्भवाद् मुक्त्यर्थिनां कृते तत्त्वभावनायाः प्रयत्नो निरर्थक एव स्यात् ।

यद्येवं चिन्त्यते यद् 'भ्रान्ते विज्ञाने विविधावभासानां विरुद्धत्वेऽपि विरोधो नैव व्यवस्थाप्यते, वस्तुविषयत्वात्तेषामिति । वस्तुबलप्रवृत्तानुमानद्वारा वस्तुत्वेन स्वीकृतानामेव विरोधोऽभिधीयते, न तु मिथ्यात्वेन स्वीकृतानाम् । यद्येवं न स्यात् तदा तदनुमानं वस्तुबलप्रवृत्तमेव न स्यात् । फलतो विज्ञाने भ्रान्तानां मिथ्याकाराणामप्यवभासः स्यात् । तत्र तावत्तत्त्वान्यत्वादिविरोधोऽपि नाभिधीयते'— यद्येवं विचार्यते तदा सांवृतकार्यकारणभावस्य कथं विरोधः प्रतिपाद्यते, मिथ्याभूते तस्मिन् वस्तुबलप्रवृत्तानुमानविषयत्वासम्भवात् स विरुद्ध इति नाभिधेय एव ।

यदि (विरोधः) क्रियते तदाऽवश्यमस्माकमेवेष्टसिद्धिः, न तु युष्माकम् । यतो हि भवतां तथाविधेन विरोधेन मिथ्यात्वसिद्धिरेव स्यान्नत्ववभासनिराकृतिः, मिथ्यात्वस्यापि प्रसिद्ध्यविरोधात् । यदि स मिथ्यात्वेन प्रसाध्यते तदाऽस्माकमेव पक्षः स्थापितः स्याद्, यतो वयमपि कार्यकारण-देश-काल-हेतु-प्रत्ययविशेषाणां सत्यामप्यपेक्षायां (तं) प्रमाणबाधितं च मिथ्या चैव मन्यामहे, अत एव (सः) संवृतौ व्यवस्थाप्यते । तथाविधविरोधकरणेन भवद्भिरन्येषां वस्तुग्रहनिवृत्तिः कथं नाम न स्वीक्रियते, किन्तु निर्दोषाभिधानात्तावद् भवतामेव बाधा स्यात् अस्माकं तु प्रमाणानामप्रवृत्तिरपि नास्ति, अन्यथा कथं नाम संवृतौ साधयितुं शक्यः स्यात् ।

यथैव कार्यकारणभावः सिध्यति तथैव सम्यक्त्वेन अभ्युपगतवतां मिथ्यारोपनिवृत्तये केवलं वयं प्रमाणानि प्रयुञ्ज्महे, नान्यत्र । प्रमाणानां प्रयोगे सत्यपि नैव प्रत्यक्षबाधा प्रवर्तते । प्रमाणैस्तावत् केवलं वस्तुतत्त्वस्य यथास्थितिरेव स्वीक्रियते, न तु प्रसिद्धिविरोधोऽपि । अन्यथा नैव तत् प्रमाणं स्यात् । यो हि वस्तूनां परमार्थतः, प्रज्ञप्तस्वभावः, स एव प्रमाणैर्बाध्यते । अभ्रान्तत्वं हि

प्रत्यक्षलक्षणम् । अभ्रान्तप्रमाणेन यो हि बाध्यते, तस्य नैव विषयत्वं युज्यते, अतिप्रसङ्गात् । अतो नास्त्यस्यां प्रतिज्ञायां प्रत्यक्षबाधा । यद्येवं न स्यात्तदा स्पष्टावभासितया बाह्यार्थस्य प्रत्यक्षसिद्धेऽपि न स प्रत्यक्षविरुद्धः स्यात् । फलत एकानेकस्वभावविरहितत्वेऽपि न स निःस्वभावः सिध्यतीति स्यात् ।

तैमिरिकादिषु केशमशकादीनामवभासेऽपि प्रत्यक्षतो विरोधान्न केनापि तेषां मिथ्यात्वम् अस्वीक्रियते । अतः स्वानुरूपकार्यकारणभावेन अनादिकालिक-परम्परागतानां सर्वेषां जन्मनां देशकालहेतुविशेषापेक्षितत्वेऽपि मायोत्पादवत् संवृतावेव व्यवस्था क्रियते ।

ये खलु यथाप्रसिद्धं व्यवस्थापयन्ति, तेषां यदा समकालिका-समकालिकव्यवस्थायां नास्ति विरोधस्तदा अक्षणिकत्वादिदोषा अपि तेषु नैव प्रवर्तन्ते, अलीकेषु विरोधस्याप्रवृत्तेः । मायास्वप्नादिसदृशेषु धर्मेषु परमार्थतस्तावत् क्षणिकाक्षणिकत्वादयो नैव हि युज्यन्ते, यथोक्तं प्रज्ञापारमितायाम्—

ये रूपस्य नित्यत्वेऽनित्यत्वे वा आचरन्ति ते नाचरन्ति प्रज्ञापारमितायाम् । तत् कथमिति ? तद् रूपं यदा नास्ति तथा सत् तदा कथं तन्नित्यमनित्यं वा स्यात् ।''

एवं तावत् सर्वज्ञतापर्यन्तं विस्तरेणाभिधातव्यम् ।

कतिपयेष्वन्येषु (सूत्रेषु) या खलु संस्काराणां क्षणिकता देशिता, सा प्रमादसंस्कारेभ्यो मानसमुद्विग्नं कृत्वा क्रमशो नैरात्म्ये प्रवेशायैव देशिता ।

नैवमुत्पद्यते किञ्चिन्निरोधोऽपि न किञ्चन ।
मार्गप्रयोजनार्थाय निरोधोत्पाददेशना ।।

उत्पत्त्या ज्ञायते नाशो विनाशेनाप्यनित्यता ।
अनित्यताप्रवेशेन सद्धर्मेषु प्रवर्तते ।।[१]

यदि मायादिवदङ्कुरोत्पादादिषु बीजादीनां सामर्थ्यमभ्युपगम्यत इति चिन्त्यते तदा वस्तुनः स्वीकृतिरेव स्यात् , यतो ह्येवं यानि सांवृतिकानि बीजाख्यानि तानि

१. द्र०-युक्तिषष्टिका, दे० तं० (उमा) 'च', पृ० २१ क (संस्कृतच्छाया)।

सर्वाभिधानसमतिक्रान्तशशशृङ्गादिभ्यो विनिवृत्तान्येवाभिधेयानि । यद्येवं नास्ति तदा कथं भवद्भिर्लोकागमविरोधपरिहारः कर्तुं शक्येत ।

वयं तु यत्तावत् सर्वसामर्थ्यविरहलक्षणेभ्यः शशशृङ्गादिभ्यो विनिवृत्तं तदेव वस्त्विति कथयामः । 'यदि भवन्तस्तथाविधमपि संवृतिसदिति नाम्नाऽभिधातुमभिलषन्ते तदा सहर्षं ब्रुवन्तु, संवृतिपरमार्थशब्दैरभिधीयमानानां वस्तूनाम् अर्थक्रियाकारित्वाभेदादि' त्येवं चिन्त्यते ? तदपि नैव युक्तम्, यतो ह्येवं स्वप्नादौ गजाश्वाग्निभूमिवृषभादयो मिथ्याभावा ये विविधार्थक्रियां कुर्वाणाः परस्परभिन्नशरीरानुगता दृश्यन्ते ते यथैव भिन्नदेशकालावस्थासु दृश्यन्ते तथैव किं सर्वाभिधानसमतिक्रान्तशशशृङ्गादिभ्यो विनिवृत्तकायाः सन्ति ? न वा ? ते यद्येकान्तेन विनिवृत्तकायास्तदा तेवामपि वस्तुत्वप्रसङ्गः स्यात्।

यदि ते विनिवृत्तकाया इत्युच्येत, तर्हि कथं भवन्तः प्रसिद्धिविरोधस्य परिहारं करिष्यन्ति ? यद्युच्येत यथावभासं तत्स्वभावो नावतिष्ठतीत्यतः प्रतीत्यसमुत्पन्नत्वाज्ज्ञानस्वभावत्वेन वस्तुतः सन्तीति ? एतदपि नैव युज्यते, यतो हि तदा ज्ञानमात्रस्वभावत्वात्ते कायादिविशेषाननुगतत्वादत्यन्तविरुद्धस्वभावेनावभासिष्यन्ते । अन्यस्यान्यस्वभावेनावभासो नैव युक्तरूपः, तत्त्वान्यत्वयोर्विरुद्धत्वादिति पूर्वमेवावेदितम्। यदि ज्ञानस्वभावस्तावद् शुद्धस्फटिक इव निरंशः क्वचनाप्यनवस्थितो नीलादिविविधस्वभावेष्वनवभासमान इत्यभ्युपगम्यते, तदा स्वप्नादिषु गजाश्वादीनि वस्तूनि तत्स्वभावत्वेन न समुद्भविष्यन्ति, तद्विरुद्धाकारयोगात् । यद्येवं नास्ति तदा तथावभासो नैव शक्यरूपः ।

अत एव वयं ज्ञानस्वभावातीतं विपरीताकारेणावभासितं मिथ्यात्वाल्लौकिकमभ्युपगच्छामस्तथा परिकल्पितस्वभावेनोच्यमानमेव वस्तुत्वेन भ्रान्तो विषय इति कथयामः, न तु ज्ञानस्वभावत्वेन । सोऽपि तदभिन्नात्मकत्वेनावभासितत्वान्नास्ति सत्यस्वभावेन सिद्धः । एवं वस्त्वात्मना प्रसिद्धमपि प्रमाणेन यथावत् स्फुटमवभासितेऽपि परमार्थतया वस्तुस्वभावत्वेन न व्यवस्थापयामः, यथा—तृणपुरुषं पुरुषत्वेन । अतः परमार्थतो वस्तुवपुषाऽभूतं यन्मिथ्या तस्मिन् पारमार्थिकसर्वदोषविरहितशशशृङ्गदिभ्यो निवृत्तमनिवृत्तं वा चित्तं नैव प्रविशतीत्युच्येत तदेवं यथोक्तः संवृतिस्वभावः प्रमाणेन मिथ्यास्वभावत्वनोक्तो ऽपि न तथैव चिन्तनीयः, यथा—मायास्वप्नाद्यभिन्नो वस्तुस्वभावः प्रमाणेन सुस्पष्टीकृतः अयमपि परमार्थ इति प्रज्ञप्यते तदा सहर्षं प्रज्ञप्यतामुत्सवश्चानुभूयताम्, परन्तु

प्रज्ञप्तिमात्रकथनेन नैव वस्तूनि भिन्नस्वभावत्वेनोपादीयन्ते। अतः प्रतिज्ञा परित्यज्यतामिति कथनमिवैतद् ।

आचार्यः खल्वत्यन्तगम्भीरसागरे परमार्थनये प्रवेष्टुमसमर्थानां शाश्वतोच्छेदाद्यपरदर्शनानां मलविशुद्ध्यर्थं बालपृथग्जनानां च प्रवृत्त्यर्थं ये परमार्थानुकूलां यथाप्रसिद्धां पुण्यज्ञानसम्भाराद्यर्थक्रियां कुर्वन्ति, तानेवात्र परमार्थतः सदिति कथयामासुः, न त्वत्यन्तनियतपरमार्थज्ञानार्थमिति ज्ञातव्यम् । (यतो हि) ते नैव सन्ति परमार्थतः सदिति तु पूर्वमेवावेदितम्।

एतदर्थमुक्तं वार्तिके—"यथावत्तु तथैव" इति । आर्यश्रीमालासिंहनादसूत्रेऽपि—"यदनित्यं तन्मिथ्या मोषधर्मकं च, यन्मोषधर्मकं तदसत्यम्" इत्युक्तम्[1] । आगमेऽप्युक्तम्—"एतद्धि भिक्षवः परमं सत्यं यदुत अमोषधर्मं निर्वाणम्, सर्वसंस्काराश्च मिथ्या मोषधर्माणः[2]" इति ।

परमार्थतो निःस्वभावत्वेऽपि वस्तुनो यदि नियतदेशकालाद्यवभासो भवतीति कथं न शशशृङ्गादयोऽप्यवभासन्त इति चेत् ? भवद्भिरप्यस्योत्तरं दातव्यं स्यात्, यतो हि केशादिवन्मिथ्यावभासेऽपि किमिति केशादीनामेव मिथ्यावभासः, न शशशृङ्गादीनाम् । यदि तिमिरादिहेतुप्रत्ययादीनां प्रतिनियतसामर्थ्येन तथा प्रतिनियतत्वमित्युच्येत तदा असद्वस्तुनि कथं नाम हेतुप्रत्ययादीनां प्रतिनियतसामर्थ्यमिति कथयितुं शक्यते । यदि तद्दर्शनेन तथा भवतीति चेत् ? तदा तथैव अपरेष्वपि प्रतिनियतहेतुप्रत्ययत्वेन प्रतिनियतसामर्थ्येऽपि किमिति नैव तथा व्यवस्था स्वीक्रियते । इयन्मात्रेण वस्तुत्वेऽपि नैव प्रसङ्गः, तथा सति तैमिरिकदृष्टकेशादीनामपि वस्तुत्वप्रसङ्गः स्यादिति पूर्वमेवावेदितम्।

यद्येवं न स्यात्तदा तैमिरिकैरध्यालम्बितानां मिथ्याकेशादीनां हेतुप्रत्यया अपि कथं नाम नियताः स्युः । तैमिरिककेशादीनां ज्ञानस्वभावेनापि सत्यत्वं नैव युज्यत इति पूर्वमेव निर्दिष्टम् ।

अपि च, यदि ज्ञानस्वभावः सत्यत्वेन सिद्धं स्यात्तदा केशादयो न ततो भिन्ना इति तेषामपि सत्यत्वेनावबोधः स्यात्, किन्तु तदसिद्धमिति पूर्वमेवाभिहितम् ।

---

१. द्र०-दे० क०, रत्नकूटे, 'छ', पृ० २७२ ख ।
२. द्र०-प्रसन्नपदायाम् उद्धृत आगमः, पृ० १५ ।

केशादयस्तु मिथ्यात्वेन लोकेन प्रमाणेन च सिद्धा एव । अतो ज्ञानमपि केशादिमिथ्यास्वभावेनाभिन्नत्वात् तथैव मिथ्यामात्रमिति कथं केशादीनां तत्स्वभावत्वेन सत्यत्वं स्यादिति ।

यथा सर्वाणि वस्तूनि परमार्थतोऽनुत्पन्नानि तथैव संवृतावप्युत्पन्नानि भवितुं न शक्नुवन्ति, तथा हि—ये तावत् परमार्थतोऽनुत्पन्नास्तेषां संवृतावपि नोत्पादः, यथा—शशशृङ्गादय इति ये ब्रुवन्ति तेषां मायादिभिरनैकान्तिकत्वम्, साध्यवैपरीत्ये सति हेतुरपि सन्दिग्धविपक्षव्यावृत्तिकः । न हि दृष्टमात्रेणेष्टसिद्धिः, प्रमेयादीनामु-भयपक्षव्याप्तिसम्भवात् । अतः परमार्थतोऽसतो यदि संवृतावप्यसत्त्वं तदा संवृतिसत्यस्यैव विनाशप्रसङ्गः, फलतः कोऽपि विपर्ययो न स्यादिति ।

सिद्धेऽपि प्रसङ्गे व्याप्तेरसिद्धत्वाद् हेतुरनैकान्तिकः । संवृतावपि अदृष्टोत्पादाः शशशृङ्गादयो न तथाविधकर्मणां सञ्चयाभावान तु परमार्थ-स्वभावरहितत्वाद्, अनियतवस्तूनां संवृतिस्वभावोऽपि हेतुप्रत्ययसमूहनिर्भर इति स्वीकारात् । न हेतुप्रत्ययनिर्भरतामात्रेण वस्तुत्वप्रसङ्गः मायादिमिथ्यावस्तूनां हेतुप्रत्ययसमूहभावाभावाभ्यां प्रवृत्तिनिवृत्तिदर्शनात् । न हि दर्शनमात्रेण वस्तूनां तथाभावः सन्निति निर्दिष्टम् । चतुष्कोटिरहितत्वाद् विद्वद्भिर्वस्तूनां तत्त्वतो-ऽनुपपन्नत्वं साधितम् । अतो निःस्वभावतायां स्पष्टतः सिद्धत्वेऽपि प्रमाणमार्गस्य ज्ञानाभावाद् येऽन्यतो दूषितान् निराकर्तुमभिलषन्ते, तेभ्यस्तावत् प्रमाणतत्त्वं दर्शयिष्यते । ये परमार्थतश्चतुष्कोटिकोत्पादरहितास्ते निःस्वभावा एव, यथा गगननलिनम्।

(३२) विवादाधिकरणाश्च सर्वे पदार्थास्तत्सदृशा एव, एवंवादिनं कश्चित् 'कथं नाम एकस्मादेकस्यानुत्पत्तिबोधः' इति पृच्छतीति चेत् ? न हि प्रमाणनिवृत्त्या वस्तुस्वभावनिवृत्तिः, तस्य तदुत्पादकत्वतदात्मकत्वाभावात् । यदि केचित् 'तदनङ्गीकारात् कश्चित् तत्खण्डयतीति' कथयन्तीति चेत् ? तदयुक्तम् । यदि केचन 'ईश्वरादिना एकेन जगद् उत्पद्यत इति कथयन्तीति चेत् ? एतदपि न युक्तम् । यद्येकस्मादेकस्योत्पत्तिरिति तदा सा नित्याद् वा अनित्याद् वा भवेत् । न नित्यात्, तस्य अनुत्पन्नावस्थातोऽभिन्नत्वात् पूर्वापरकालवद् मध्येऽपि उत्पादकत्वविरोधात् । यदि स उत्पादयतीति चेत् ? पूर्वापरकालेऽपि तद्वदुत्पत्तिप्रसङ्ग, उत्पत्ति-स्वभावानुसरणात्तस्य। नानुसरतीति चेद्? नित्यताया हानिसद्भावात् क्रमयौगपद्याभ्यां तस्योत्पादकत्वं विस्तरेण निराक्रियते । न हि कदाचिन्नित्यादुत्पत्तिर्युक्तिमती ।

न चानित्यादपि । पूर्वकाल-समकाल-पश्चात्कालेषु च सामान्येनोत्पत्तेर्निराकृतत्वात् । न हि नित्यानित्याभ्यां व्यतिरिक्तस्तस्य कश्चनोत्पादक इति ।

ये चान्यैः (वादिभिः) एकस्वभावा ईश्वरादयो जगतोऽस्य हेतवो मन्यन्ते, तेभ्यश्चापि (हेतुभ्यः) एकस्वभावादेकस्य फलस्योत्पत्तिस्तैर्नाङ्गीक्रियते, विविधस्वभाववतो जगतस्तत उत्पत्तिस्वीकारात् । अत एकस्मादेकस्योत्पत्तिर्न भवतीति कथनकाले भ्रान्ततया ईश्वरादिकं यन्निर्दिशन्ति, तत्तु अर्थस्थितेरज्ञानमेवोद्घोषयन्ति । न हि ईश्वरादयो हेतुत्वेन अस्तित्वभाजो भवन्ति, परैस्तस्य नित्यस्वभावत्वेनोपज्ञापितत्वात् । नित्यस्तावत् सर्वसामर्थ्यशून्य इति च पूर्वमेव प्रसाधितत्वात् ।

यदि पुनः परैस्ते (ईश्वरादयः) केवलमनित्यत्वेनोपकल्प्यन्ते, तदाऽपि तस्मादेकस्यैव फलस्योत्पत्तिर्नैव युक्तिमती, यतो हि ततो यदि भिन्नसन्तानवर्तिनां फलानामुत्पत्तिर्भवति, तदा तस्य अन्यसजातीयक्षणस्य प्रतिसन्धानाभावाद् द्वितीय एव क्षणे समुच्छेदः स्यात् । यद्येवं तदा ततः सदा विजातीयफलानामुत्पत्तिकाले सर्वेषां पूर्वसजातीयक्षणानां पश्चाद्-वर्तिनि क्षणे प्रतिसन्धानाभावाद् ये तावदनित्यस्वभावा ईश्वरादिसंज्ञका जगतो हेतुत्वेनोपज्ञाप्यन्ते, ते के ?

यदि ते प्राथमक्षणिकस्वभावत्वादेकस्यैव क्षणस्य स्वभावेनाभिधीयन्ते, तदपि नैव युक्तम्, हेतोरभावेन तस्योत्पत्तेरसम्भवात् अथवा सम्पूर्णमेव जगत् तद्वदहेतुकमेव स्यात् । यतो हि पूर्वमपि पश्चादपि तद्धेतुत्वेन (सर्वथा) किमपि नास्तीति । यद्येवं तदा तस्य क्षणमात्रस्वभावहानिप्रसङ्गः, तस्यानादिकालिकत्वमप्यस्माभिः पूवमेव प्रतिषिद्धम्।

यदि तस्यापरोऽन्यो हेतुः परिकल्प्यते, तदा स एव कथं न तस्य फलं वा तदुत्पन्नो वेति कल्प्यते । किं तदभावे स न सिध्यतीति, किमर्थं स कल्प्यत इति । अभिन्नसन्ताने विद्यमानो स हेतुरनादिकालात् तस्यामेव सन्ततौ प्रवृत्त एवेति, नैवान्यसन्ताने विद्यमानः सन्नुत्पत्तिकारक इति कल्प्यते तदा तस्मिन् परमार्थतोऽसमकालत्वम्, अन्यत्र च सजातीयक्षणोत्पत्तिरपि नैव युज्यत इति पूर्वं बहुशो निर्दिष्टम् । एतच्चापि हेतुभेदस्य अभिन्नकारके प्रसङ्गश्च पश्चात् प्रतिपादयिष्यते । अतश्च ततोऽनेकफलोत्पत्तिरपि ज्ञातव्या ।

यद्यन्ये चक्षुरादयस्तावत् फलस्यैकस्य नियतोत्पादका इति मन्यन्ते, तदा अन्धबधिरत्वप्रसङ्गः दुर्निवार एव स्यात्, यतो हि चक्षुरादीनीन्द्रियाणि यदा

स्वविज्ञानमुत्पादयन्ति तदा सजातीयान्यक्षणानि नोत्पादयन्ति । फलतो द्वितीयस्मिन् क्षणे सर्वेषामन्धबधिरादित्वप्रसङ्गः स्यात् । समूह एव तावद् विज्ञानफलमुत्पादयति, अतो नैकस्मादेकस्य फलोत्पत्तिः, चक्षुःश्रोत्रमनस्कारादिभिश्चक्षुर्विज्ञानादीनामुत्पादस्य (भूयसा) दृश्यमानत्वादिति चेत्तदपि नैव युक्तम् । यद्येवं तदा हेतुभेदो भेदनियामको नैव स्यात् । यो हि घटादीनां पटादिभ्यो भिन्नः स्वभावः, स खलु हेतुभेदेनैव कृतः, न तु प्रकृत्या जनित इति । यद्येवं न स्यात्तदा अहेतुकान्येव तावद् वस्तूनि स्युः ।

तत्र हेतुभेदेऽपि यदि फलभेदो न स्यात्तदा हेतोर्भेदाभेदाभ्यां फलस्य भेदाभेदौ न कृतौ स्याताम्, व्यभिचरितत्वात् । भिन्नाभिन्नाभ्यां वस्तुनोऽभावात् सर्वेषामेव अहेतुकत्वप्रसङ्गः। इत्थं नैव ते समूहाद् व्यतिरिक्ताः सिध्यन्ति, नैव च ते समूहात् पृथक् कर्तुं शक्यन्ते । परन्तु परस्परभिन्नस्वभावात् प्रत्येकस्मादुत्पत्तिसामर्थ्यवतो यदि फलमुद्भूयते तदा अभिन्नमेव कथं नामोद्भूयते । यदि सर्व एवैकफलोत्पादने समर्थाः, न त्वनेकफलोत्पादन इत्येवं चेत्तदपि न युक्तम् । यद्येवं तदा सजातीयफलप्रतिसन्धानाभावाद् द्वितीये तावत् क्षणे चक्षुरादिसन्तानोच्छेद एव स्यात् । यदि तेषु सजातीयक्षणोत्पादे सामर्थ्यमित्युच्यते तदा तदन्यदेव तावद् वस्तु स्यात्ततश्च सामर्थ्यमेव हेतुः स्यान्न न खलु वस्तु ।

पुनश्च, सम्बन्धोऽपि नैव सेत्स्यति, समर्थस्योपकाराभावात् । उपकुर्वन्त्येवेति चेत्, समर्थान्तरस्य तत्रापेक्षितत्वादनवस्थाख्यस्तावद् दोष एव स्यात् । यदि ते स्वभावभूतं समर्थमुपकुर्वन्तीति मन्यते तदा फलमपि तथैव किं न कुर्वन्तीति । इमे समर्थास्तु वस्तुस्वभावेनाभिन्ना एव । अतो ये यतः सामर्थ्यात् सजातीयफलमुत्पादयन्ति, तत एव च चर्क्षुर्विज्ञानादिसामान्यमप्युत्पादयन्ति । अतः कथं नाम फलं भिन्नं स्यात् ।

यदि फलमेकं समूहनिर्भरम्, अन्यच्च (फलं) एकैकहेतुनिर्भरमित्यतः (फलं) भिन्नं स्यादिति चिन्त्यते, तदपि नैव युक्तम् । समूहोऽपि तावदेकैकहेतुसापेक्ष इति समूहनिर्भरत्वमपि (वस्तुतः) एकैकनिर्भरत्वमेव । अतः फलस्य सजातीयविजातीयतयोर्भेदो नैव स्यात् ।

हेतुभेदस्तावत् (फलस्य) भेदको न भविष्यतीत्येवंविधस्य प्रसङ्गस्य को ह्यर्थः ? यदि खण्डशो नोत्पादयतीत्यर्थस्तदा वस्तुस्वभावस्य निरंशत्वाद

अंशतश्चोत्पादस्यास्वीकृतत्वात् कथं नाम प्रसङ्गः स्यात्, तल्लक्षणस्यानुपपन्नत्वा-दिति ।

यदि विशेषको (भेदको) न भवतीत्येवमर्थो गृह्यते तदा असिद्धमेवैतत् । हेतुभिस्तावदनेकेभ्यो विजातीयफलेभ्यो विपरीतमेव जन्यत इत्यभिधानमपि नैव युक्तम्, यतो ह्येकस्य अंशत उत्पत्तेरसम्भवादिति प्रसङ्गो नैवोच्यते, परन्तु भवन्तो ये वस्तुषु परस्परं व्यतिरेकं विशेषं वा मन्वते, स विविधैर्हेतुभिरेव क्रियते । यदि विविधहेतूनङ्गीकृत्यापि फलमेकविधमेव स्वीक्रियते तदा भ्रान्तिसद्भावाद् वस्तूनां तावद् भेदो विविधहेतुभिरकृत एव स्यादित्येवं प्रसङ्गो नूनमभिधानीयः स्यात् । यश्चानेकविजातीयनिवृत्तिलक्षणस्य फलविशेषस्याभिलापः, सोऽप्यसम्बद्ध एव, यतो हि ये विशेषात्मकत्वेन विशेषफलमुत्पादयन्ति, ते यदि विजातीयनिवृत्त्यैव सजातीयलक्षणोत्पत्तितोऽपि निवर्तन्ते, तदा तेभ्य उत्पाद्यं सजातीयं फलं विजातीयं च नैव परस्परनिवृत्तं स्याद्, भिन्ननिवृत्तिहेतोरभावात् ।

यदि हेतवस्ते निवृत्तिस्वभावत्वात् स्वयं सजातीयफलानां भेदका अपि भविष्यन्तीत्युच्यते, तदा तथैव ते सामान्यफलेऽपि कथं न भेदकाः ? यतो हि तत्र सर्वे एकैका हेतवो भवन्ति । ये तावदेकोत्पादकस्वभावा एव ते ततो विपरीतं कमप्यन्यं नोत्पादयितुं शक्ताः, यतो हि ते उत्पादकस्वभावनिवृत्त्या अन्यार्थ इव भवन्ति, नान्ये उत्पादकस्वभावा इति। पुनस्ते परस्परनिवृत्तस्वभावाः किन्तु नैव ते उत्पादकस्वभावनिवृत्ताः । नान्यस्मिन् तदुत्पादकस्वभाव इति नैवं कथ्यते, किन्तु ये एकेनोत्पाद्यस्वभावास्ते नान्येनेति कथ्यते ।

अपि च, ते स्वस्वभावेनैवोत्पादयन्ति, न त्वन्यस्वभावेन, अतदात्मक-त्वात्, ते च यथास्वं भिन्ना अपि । स्वस्वभावेनोत्पादयन्तीत्यस्मिन् कथने को विरोधः ? एकस्वभावस्याभावो नैव तस्य स्वभावो भवितुं शक्नोति, अकार-कत्वात्तस्य ।

तेनैव तत्फलं निष्पादनीयमिति यदुक्तं तत्र का युक्तिरिति चेत् सांख्यैरेव तत्समाधानं विधेयमिति शोभनं प्रतिभाति । यतो हि ते खलु भिन्नाभिन्नस्वभावं जगदिति प्रतिपादयन्ति । अतस्तेषां यत्तत्र ग्रहणं तन्निवृत्त्यर्थमेव आचार्येण भिन्नवस्तुत्वनिर्देशकानां कृते व्यवहारवशादुक्तम् तानि (वस्तूनि) प्रतीत्यसमुत्पन्नतया नैव परमार्थत एकार्थानि नापि च भिन्नार्थानीति मन्वानां कृते नैव किमप्युक्तमिति ।

तेषां तावदनुसारं तु मायासदृशत्वात् सर्वेषु तेषु न किमप्येकं वस्तु भिन्नमभिन्नं वा सिध्यति ।

अपि च, यदि वस्तुषु परमार्थतः स्वभावद्वयम्, एकश्चोत्पादकलक्षणः, अपरश्च स्वभावलक्षणस्तदा निवृत्तेऽप्यस्मिन् स्वभावेनैवोत्पादकलक्षणस्तावन्निवर्तत इत्युत्तरं खलु समीचीनं स्यादिति ।

यस्मिन् समये सर्व एवोत्पादकस्वभावास्तस्मिन् समये यदि ते परस्परनिवृत्तस्वभावा अपि तदा उत्पादकस्वभावतो निवृत्तत्वात् कथं नामोत्पादकाः स्युः । तेषामयमेव स्वभावो यत् स्वभावभेदेऽपि एकमुत्पादयन्ति विरुद्धस्वभावेऽपि च सति नैव परीक्षायोग्या इति यदि भवद्भिरुच्यते तदा पादौ प्रसार्य तथतापरीक्षातः पराङ्मुखबुद्धयो ये व्यवहारमात्रमनुसरन्ति ते सुखेनासितुं शक्नुवन्ति । ये तु तथतापरीक्षायां प्रवृत्तबुद्धयस्तेषां कृते तथैव सुखासनं नैव युक्तरूपम् । यद्येवं न स्यात्तदा ईश्वरादिस्तावदेकः सन्नपि स्वभावभेदेऽपि च सति क्रमेण युगपद् वा विचित्रस्यास्य जगतो हेतुरूपेण नैव कथमपि विरुद्धो भविष्यति, तत्स्वभावस्य तथैव स्वभावसिद्धत्वात् । स्वभावभेदेऽपि नास्ति परीक्षायोग्य इत्यभिदधतां कृते किं नामोत्तरं दत्तं स्यात् ? तेनैव फलमुत्पादनीयमिति प्रतिपादयतां तत्र का युक्तिरिति ये कथयन्ति तेषां कृते अग्न्यादिकमपेक्ष्योत्पद्यमानो धूमस्तावद् शक्रमूर्धतोऽप्युत्पद्यत इति कथनं यथा अहेतुकत्वे युक्त्या प्रसङ्गतयोच्यते, तथैवात्र किमिति नोच्यते ? व्यवहारेऽपि एकसमूहान्तर्गतो यद्येकफलस्योत्पादको भवेत्तदा नैव विरुद्धः, किन्तु समूहान्तर्गतस्तु विरुद्ध एवेत्येवं कथयद्भिः सह नास्ति कश्चन भेदः ।

अत्रापि अग्न्यादिभिरेव फलमुत्पादनीयम्, न तु शक्रमूर्धाद्यन्यैरिति ये कथयन्ति, तत्र का युक्तिः । समूहोऽपि भिन्नः स्वभावतश्चोत्पन्न इत्येवमभिदधानैः सह को विरोध इति वक्तव्यं स्यात् । तत्र यथा एकसमूहमाश्रित्योत्पद्यमानं फलं समूहान्तरेणाप्युत्पद्यते तदा तेनोत्पाद्यस्य स्वभावस्यानियतत्वाद् अहेतुक इत्युच्यते, तथैव एकस्मिन्नेव समूहे विज्ञानादयो यदा एकहेतुमपेक्ष्यापि तद्विलक्षणहेतुत उत्पद्यन्ते तदा किमित्यहेतुकतायाः प्रसङ्गो नोक्तः स्यात् ।

हेतोर्यथात्मकेन प्रयोगेण निर्दुष्टात् स्वभावविशेषाद् हेतुभेदो भेदकश्च विरुद्धावेव स्याताम् । यतो हि चक्षुरादिना भिन्नस्वभावेन चक्षुर्विज्ञानादीनां फलानामुत्पत्तिकाले साक्षाद् भेदाभावेऽपि प्रतीतिस्वभावाद् रूपादयः पृथग्विषयत्वेन नियता भवन्ति, तद्विकारेण च तथोत्पद्यन्ते । ते चान्वयव्यतिरेकाभ्यां समनन्तर-

प्रत्ययेन च प्रतीतिस्वभावाः स्युः, न तु चक्षुरादयस्तथा नियताः सन्ति । विशेषहेतुरपि तत्सदृश एव । इन्द्रियेण च विषयग्रहणं पृथक्तया नियतम् । इत्येवमिन्द्रियाणि विषयाश्च न प्रतीतिस्वभावाः । इन्द्रियेषु समनन्तरप्रत्यये चापि नास्ति विषयग्रहणस्वभावः, विषयेण च समनन्तरप्रत्ययेन चापि पृथक्तया विषयग्रहणं नैव नियतम् । एवंविधया नियतव्यवस्थया निश्चयेन हेतुभेदो भेदक एव स्यात् । भेद एव भिन्नविशेष इत्यसौ विचारो यदि व्यवहारतया बालपृथग्जनानां प्रवृत्त्यर्थमेवोच्यते तदा तु सुतरां युज्यते, न तु परमार्थतः ।

अथ ये तावद् भेदास्ते अप्रज्ञप्तिमात्रात्मका वा निवृत्तिविशेषेण प्रज्ञप्ति-स्वभावात्मका वा ? यदि प्रथमः पक्षस्तदा विज्ञानस्य आलम्बनादि-स्वभावादभिन्नत्वेन तथैवानेकत्वप्रसङ्गः । आलम्बनादिस्वभावोऽपि विज्ञानवन्नैव तावदेकत्वनिवृत्तः स्यात् । विज्ञानमपि प्रतीतिस्वभावतो नास्ति भिन्नोऽतस्तथैव रूपादिभ्यस्तस्यानुत्पत्तिप्रसङ्गः ।

तथैवाभिन्नेऽपि रूपादिभ्य उत्पद्यत इत्युच्यत इति चेदेकस्मिन् एकदा परस्परविरुद्धावुत्पादानुत्पादौ कथं नाम न विरुद्धौ स्यातामित्ययं दोषो नैव युज्यतामिति विचार्य ये विशेषान् विज्ञानतो भिन्नार्थत्वेन कल्पयन्ति तेषां तदा विज्ञानमहेतुकं स्याद् अन्यस्मिन्नेव तदा चक्षुरादीनां योगात् । फलतः सदा सत्त्वेन प्रसङ्ग इति ।

यदि प्रज्ञप्तिस्वभाव इति द्वितीयपक्षः स्वीक्रियते तदापि विज्ञानस्याहेतुकत्वं प्रसज्यत एव, प्रज्ञप्त्यात्मकत्वे चक्षुरादीनामुपयोगाभावात् । प्रज्ञप्त्यात्मकत्वे कस्यापि योगो नैव भवतीत्यतः सर्वेषामहेतुकत्वप्रसङ्गः । फलतः परमार्थतोऽनेकेभ्य एकस्य फलस्योत्पत्तिर्नैव सर्वथा युज्यत इति ।

नैकस्मादनेकस्यापि (उत्पादः), पूर्ववदत्रापि हेतुभेदस्याभेदकत्वप्रसङ्गात् । इत्थं चक्षुर्यदिस्वविशेषतया तज्जातीयक्षणस्योत्पादकत्वात् स्वविज्ञानमुत्पादयतीति, तदा हेतुभेदाभावेऽपि फलस्य भिन्नत्वात् फलस्य तावद् भेदाभेदौ कथं नाहेतुका-विति । येन खलु कारणेन तत्र फलान्तरोत्पत्तिमत्त्वे नास्त्यन्यः (कश्चन) विशेषः, निरंशत्वात् सर्ववस्तूनाम्, अतो हेतुस्तावत् स्वभावप्रच्युतो भूत्वा फलं नोत्पादयतीति, तथापि तस्मिन् हेत्वात्मकत्वे भेदाभावात् तन्निर्वृत्ते फलेऽपि तावद् भेदो न स्यात् ।

एकस्मादनेकस्य अनेकस्मादेकस्योत्पत्तिर्या कथ्यते, किं सा नैव दृश्यते ? (अर्थात् दृश्यत एव), अतस्तस्याः परिहारं कर्तुं शक्यत इत्यभिधानं तावन्नैव युज्यते।

वयमपि सा अदृश्येति न साधयामः । दर्शनमात्रं तु नैव तावत् प्रमाणमपि, स्वप्नवन्मिथ्यावभासमानत्वात् । यद् यथा दृश्यते तत्तथैव सदित्यभिनिविशमानानां केवलं मिथ्याकल्पनानां निराकरणाय स्वप्न इव साध्यमानत्वान्नास्ति तावद् विरोधोऽपीति ।

अपि च, चक्षुर्विज्ञानादीनां वस्तूनां यान्यनेकस्मादुत्पद्यमानानि दृश्यन्ते, तेषां पारमार्थिकः स्वभावस्तावदेकत्वेन नैव कथमपि सिद्धः, सदा विभिन्नेष्वा-कोरष्ववभासमानत्वात् । विविधोऽपि स्वभावो यद्येकः स्यात्तदा सर्वेषामेवैक-द्रव्यताप्रसङ्गः स्यात् । यच्चैकस्य तावदसिद्धिः, सा संघातात्मकत्वादसिद्धैव । एकस्य चानेकेषां च वस्तूनां परमार्थत उत्पत्तिस्तावत् कुत्र समवलोक्यते ?

अनेकस्मादनेकस्योत्पत्तिरिति द्वितीयोऽपि पक्षो नैव युक्तः । एकैकस्य फलस्य तावदनेकैर्हेतुभिः क्रियमाणत्वादयमपि पक्षस्तावदनेकस्मादेकस्यैवोत्पत्ति-पक्षः स्यात् । अस्य (पक्षस्य) दोषोऽप्यस्माभिः पूर्वमेवोक्त इति ।

यद्येकस्मिन् फले एकैकस्य हेतोर्योगः क्रियते, तदा पक्षोऽयम् 'एकस्मादेकस्योत्पत्तिपक्षः' स्यादिति । अस्मिन्नपि पक्षे यद्दूषणं तत् पूर्वमेवोक्तम् । अतो नास्त्ययमसिद्धो हेतुरपि कोटीनां चतुष्कं विहाय नास्त्यन्योऽपि कश्चनोत्पत्तिपक्षः । सर्वेषां नित्यवस्तूनां निराकरणमपि पूर्वमेव कृतम् । अतो नास्त्यनैकान्तिकत्वमपि हेतोः । सपक्षे सत्त्वाद् विरुद्धोऽपि हेतुर्नास्ति ।

आचार्योऽपि संवृतौ कार्यकारणभावस्थितिं स्वीकृत्य यथा व्यवहारे एकस्मादनेकस्य चानेकस्मादेकस्य चोत्पत्तिः प्रसिध्यति तथा दृश्यत एवेति कथयामास । चक्षुरादिभिरन्वय-व्यतिरेकाभ्यां चक्षुर्विज्ञानादीनामुत्पत्तिविशेषं ज्ञात्वा बालपृथग्जनानां प्रवृत्त्यर्थं कार्यहेत्वोर्भेदकाले यदि हेतुर्भिन्नस्तदा कार्यभेदोऽपि सुतरां स्यादित्युक्तवान्, न तु परमार्थ-दशायाम्, परमार्थतोऽसिद्धत्वात्तस्य, यथा विचारितं प्रागेव ।

एकस्माद् हेतोरनेकफलानामुत्पत्तिरयुक्तेत्यादिकं यदुक्तम्, तेषां समेषां समाधानमपि पृथक्-पृथगस्मामिः पूर्वमेव कृतम् ।

(३३) 'प्रतीत्यसमुत्पन्नत्वाद्' इत्ययं यो हेतुः, स अनैकान्तिक इति ये कथितवन्तस्तेषामप्युत्तरं दत्तपूर्वमेव ।

(३४) यदि वस्तूनि परमार्थतो न सस्वभावानि, तदा नैव तानि संवृतावपि भवितुं शक्यानीति यदुक्तम्, तस्याप्युत्तरं पूर्वं प्रदत्तमेव । 'एकानेकस्वभाव-रहितत्वात्' इति हेतोर्यदसिद्धत्वादिकमुक्तम्, तेषां सर्वेषामपि समाधानं पूर्वाचार्यैः पूर्वं सम्यक्तया कृतमेव । तथापि ये तावत् केचन द्वेषवशाद् दूषणानि प्रयुञ्जते, सा तेषां विप्रतीतिरेवेत्यभिधातुं शक्यते।

(३५) यदि ते प्रसङ्गं साधयन्ति, तदा नैव हेतोरसिद्धिः, वस्तूनामेका-नेकस्वभावरहितत्वहेतोः परैः स्वीकृतत्वात्। तदभिव्यक्तधर्मस्वीकारात्तस्यापि (हेतोः) तावत् सामर्थ्यतः स्वीकरणमेव स्यादिति ।

तत्र यैस्तावत् कदाचिद् ईश्वरादयो नित्यैकत्वस्वभावेन परि-कल्पितास्तैस्तेषु क्रमोत्पादधर्मयोगोऽपि यतः स्वीक्रियते, अतस्तत्सामर्थ्यत एकत्व-स्वभावरहितताऽपि तैरवश्यं स्वीकृता स्यात् । यतो ह्येकस्वभावता-यामनुत्पादावस्थातोऽभिन्नत्वात् पूर्वकालवत् पश्चात्कालेऽप्युत्पादकस्वभावता नैव युज्यते । यद्युत्पादक एव स्वभावः स्यात्तदा पूर्वावस्थातः स्वभावस्य भिन्नलक्षण-त्वादेकत्वहानिरेव स्यादिति ।

ते (ईश्वरादयः) तावदनेकत्वेऽपि नैव युज्यन्ते, यतो हि तत्त्वतायां समकालिकत्वमपरस्मिंश्च स्वपरप्रतिसन्धानं तावन्नैव युज्यत इति पूर्वं प्रसाधितमेव । ये तावदाकाशादीनां त्रयाणामसंस्कृतानामेकस्वभावत्वं फलप्रतिसन्धानाभावं च तेषां स्वीकुर्वन्ति, तैरपि ज्ञानस्वभावस्य क्रमोद्भूतत्वं तावत् स्वीक्रियते, अतस्तत्सामर्थ्य-स्तैरप्येकस्वभावरहिततैव स्वीकृता स्यात्, यतो हि प्रत्येकज्ञानात्तज्ज्ञेयस्वभावस्तावद् भिन्न एव स्यात् । यदि न स्यात्तदाऽभिन्नत्वात् पूर्ववत् तज्ज्ञाने ज्ञेयस्वभावो नैवोपपन्नः स्यादत एकस्वभावस्तावन्नैव युज्यत इति । नैव तेऽनेकस्वभावा इत्यपि पूर्वमेवास्माभिः प्रसाधितम् ।

ये तावन्नित्यैकस्वभावाः काल-पुरुष-प्रधान-ब्रह्मादयश्च विचित्राया अस्या जगद्व्यवस्थाया हेतुत्वेन परिकल्प्यन्ते, ते यदि सत्यासत्यादिविविधस्वभावां वस्तुसामग्रीं क्रमेण युगपद् वा गृह्णन्तीति स्वीक्रियते तदा तत्सामर्थ्यत एकत्वरहित एव स्वभावे ते नियमेन स्वीकृताः स्युः, यतो हि विविधस्वभावस्य जगतो ग्रहणे एकस्वभावा नैव युज्यन्ते । यदि ते नैव एकत्वेन सिध्यन्ति, तदाऽनेकत्वमपि तेषां सुतरां नैव युज्यते, संघातस्वभावत्वात् ।

ये तावत् पुद्गलामिधं पदार्थं नित्यानित्यत्वेनानिर्वचनीयमिति परिकल्पयन्ति तेऽप्येनम् एकानेकस्वभावरहितत्वेन साक्षात् स्वीकुर्वन्त्येव, फलत एकस्वभावस्य तावन्नित्यत्वेऽनिर्वचनीयता नैव युक्तिमती । अपि च, भिन्नभिन्नस्वभावेनानु-भूयमानस्य तावत् क्षणिकत्वेऽनिर्वचनीयता नैव युज्यते । कायः भूमिपर्वतादयो येऽनित्याः सावयवाः पृथक्स्वभावास्तान् एकद्रव्यत्वेन परिकल्पयन्ति, तेऽपि तदवयवद्रव्यं भिन्नानेकविषयव्यापकमिति स्वीकुर्वन्त्यत एकत्वरहिततैव तेषां स्वीकृता स्यात् यतो हि यदि तस्य प्रत्येकस्मिन्नवयवे नास्ति भिन्नस्वभावस्तदा नैव तस्मिन् व्यपकताऽप्युपपद्यत इति ।

निरंशेषु तावदावृतानावृतत्वादिविरुद्धधर्मयोगोऽपि नैवोपपद्यते । ये तावद् देहादीनां परमाणुसञ्चयात्मकत्वात् तान् परमाणून् पृथक्शः परिकल्पयन्ति, तेऽपि तेषु संयोगसंघातादीन् स्वीकुर्वन्त्येवेत्यतस्तैस्तत्सामर्थ्यात्तेषामेकत्वरहितताऽपि स्वीकृतैव स्यादिति । यतो हि निरंशस्वभावे (वस्तुनि) यत्रैव हि संयोगादयोऽनुभूयन्ते, तत्र तादृशो नास्त्येव कश्चन पक्षः (भागः), यस्मिन् पक्षेण केनचित् सह संयोगः सञ्चयो वा न भवति, तादृशेषु (निरंशेषु) विस्तरेण विषयव्याप्तिरपि नैव युज्यते । न चावयविनामेकस्वभावत्वमपि न युज्यते, अवयवसंघा-तात्मकत्वात्तेषाम् ।

परमाणुषु चावयविद्रव्येषु चोभयेषु तावदनेकस्वभावत्वमपि न युज्यते, यतो हि सञ्चितस्वभावात्मकत्वात्ते यदा नैवैकस्वभावत्वे युज्यन्ते तदा तत्परतन्त्रतया व्यवस्थितत्वेन तेषामनेकस्वभावत्वमपि नैव सिध्यति। इत्थं यदा कार्यं च कारणं चापि द्रव्यमेकानेकस्वभावरहितं सिद्धम्, तदा तदाधारेण कल्पितानां गुण-कर्म-सामान्यविशेषाणां संघातस्य चापि सिद्धिः सुतरां नैव स्यात्, तत्परतन्त्रत्वात्तेषाम्।

एवं कादाचित्कत्वसामर्थ्यतः समस्तज्ञेयानामेकानेकस्वभावशून्यत्वमेव स्वीकर्त्तव्यमित्यनेकधा निवेदितम् । ज्ञानमपि तावत् काममेकस्वभावमित्युपकल्प्यतां किन्तु तत्स्वरूपं विविधस्वभावग्राहकमिति स्वीकृतत्वात् तत्सामर्थ्यत एकस्वभावरहितमेव तदिति स्वीकृतं स्यात् । यतो हि तज्ज्ञानं तावत् साकारमित्यवश्यं स्वीकर्त्तव्यम्, अन्यथा विषयाकारेण यो नाकारितस्तस्य ज्ञानकायस्य विषयग्राहकरूपेण व्यवस्थापनं नोपपन्नं स्यात्। यदि साकारत्वेन स्वीक्रियते तदा तस्यैकस्वभावरहितत्वमपि स्पष्टतया स्वीकृतमेव स्यात्, विभिन्नात्म-कत्वाज्ज्ञानकायस्य । विविधताया एकतायाश्च परस्परं स्फुटो विरोधः । अतः सर्वाण्येव तावज्ज्ञानानि विभिन्नानां वस्तूनां विषयित्वेन स्वीक्रियन्ते। अत एव

स्वयूथ्याः 'सञ्चितालम्बनाः पञ्चविज्ञानकायाः' इति स्वीकुर्वन्ति। षष्ठं तावद् विज्ञानं चित्तचैतसिकानप्यालम्बनीकरोतीति ।

चित्रदर्शनकाले चित्राकारं विज्ञानमुपजायमानमनुभूयते, अतः सर्वज्ञानानि चित्राकारत्वेन प्रसिध्यन्ति । तत्र विविधतायां (विचित्रतायां) स्वमतस्थापनार्थं तावदनेकज्ञानोत्पत्तिकल्पनमपि नास्ति समीचीनम्, अमूर्तत्वात्तानि तत्र प्रकीर्णरूपेण नैवोपतिष्ठन्ति, अस्थितत्वाच्च विचित्रता नैवोपपद्यते । गुणकर्मसमवेतानां द्रव्यादीनां तावज्ज्ञानेन युगपद्ग्रहणस्वीकाराद् अपरेऽपि (सिद्धान्तवादिनः) ज्ञानं चित्राकारत्वेनैव स्वीकुर्वन्ति । ये हि द्रव्यपर्यायादिविशेषणैः सर्वं वस्तु तावन्मेचकमणिवदित्यामनन्ति, तेष्वपि तद्विषयिमनसो विषयत्वेऽनेकवस्तुस्वभावाः स्वीक्रियन्त एव । ये तावच्चातुर्महाभौतिकानि वस्तून्युपकल्पयन्ति, तेऽपि ज्ञानमनेकवस्तुविषयमेवाभ्युपगच्छन्ति । ये च विषयं सत्त्वरजस्तमोगुणात्मकमभ्युपयन्ति, तेऽपि ज्ञानविषयमनेकवस्तुस्वभावं स्वीकुर्वन्त्येव, वस्तुत्रयात्मकत्वस्वीकाराद् विषयाणाम् ।

येऽप्यतीतादिविषयकं मनोविज्ञानमात्रमनालम्बनमिति मन्वते, तेषामपि मतेऽभिधानाकारेण युक्तत्वात्तदेकाकारमिति न युज्यते, अनेकाक्षरस्वभावेनावभासितत्वात् । स्वप्नादिज्ञानान्यपि नीलादिविभिन्नाकारान् अनुभवन्तीति तान्येकस्वभावानीति नैव युक्तानि । ये खलु विज्ञानमात्रस्वभावं जगदित्यामनन्ति, ते बाह्यपदार्थानामविषयिभूतत्वात्तत् स्वसंवेदनस्वरूपं पर्यन्तं च ज्ञानमिति स्वीकुर्वन्ति, तेऽप्यनादिकालीनभ्रान्तवासनापरिपाकवशाद् रूपादिविभिन्नविपरीतावभासानां सर्वेषां विज्ञानानामुत्पत्तिं स्वीकुर्वन्त्यतो विज्ञानमेकस्वभावमिति नैवाभ्युपगच्छन्ति। फलतो दर्शनेषु कस्मिन्नपि विज्ञानं नैकस्वभावमिति सिध्यति । यदि तथा न सिध्यति, तदा अनेकस्वभावोऽपि न सिध्यतीति बहुशः पूर्वमावेदितम् ।

अत एव स्वातन्त्र्येण साधको हेतुरप्ययं नासिद्ध इति यथोक्तनयेन वादिप्रतिवाद्युभयेषु सर्वे धर्मा एकानेकस्वभावरहिता एव सिद्धाः । ये च व्यवच्छेदमात्रात्मकास्तेषु साध्यसाधनानुगतो धर्म्येव अवस्तुभूतः सिध्यतीति पूर्वमनेकधा निर्दिष्टम् । स्वपरोभयसिद्धान्तवादिभिरुपकल्पितधर्मिण्यपि साध्यधर्मस्य यथोक्ता व्यवच्छेदमात्रता द्वयोरपि सिद्धैव ।

पुनश्च, हेतुरप्ययं कथं सिध्यति ? यद्यनुपलब्ध्येति चेत् ? साऽप्यपरयाऽनुपलब्ध्या सिध्यतीत्यनवस्थाप्रसङ्गः स्यात् । नापि प्रत्यक्षेणानुपलब्धिसिद्धिरपि,

प्रत्यक्षस्याविषयत्वादित्यपि कथनं निराकृतमेव, यतो हि यथोक्तनयेनैव ते हेतुं साधयन्तीति ।

इत्येवं ये केचिदिन्द्रियैरगम्या आत्मादयस्ते तद्व्याप्तक्रमिककार्ययोगादि-धर्माणां स्वीकृत्या एकानेकस्वभावरहितत्वेनैव प्रसिद्धाः । यदि धर्म्येव तावदसिद्धस्तदा तद्राहित्यचिन्तनमप्ययुक्तम्, तादृशानां वस्तूनां प्रतिषेधाय धर्मिणः परीक्षायाः सर्वत्रानिवार्यत्वात् । अतस्तद्धर्मा नोपलभ्यन्त इति पूर्वमेव निर्दिष्टम् । अन्यथा (यद्येवं न स्यात्) तदा तन्निषेधाय भवतामपि अर्थक्रियासामर्थ्यवियोगलक्षणो हेतुस्तावत् कथं सिद्धो भविष्यतीति चोदना कथं न स्यात् । परपरिकल्पिते धर्मिणि तथाविधक्रमिककार्याणां स्वीकृत्यैव तद्व्याप्तधर्माणां निष्पत्तेस्तन्मतमात्राश्रितत्वाद् धर्मिणस्तस्य तावत् परिकल्पितत्वमेव । अनुमानेन तथा ज्ञाने सत्यपि नास्त्येवान-वस्थाप्रसङ्गः, स्वतः प्रमाणत्वात्तस्य । व्यवहारेणापि तावत् साध्यव्याप्तसाधनस्य सिद्धत्वादिति पूर्वमेव सम्यगुक्तत्वात् ।

रूपादयस्तावद् धार्मिणः, ये खल्वपरोक्षास्तेऽपि प्रत्यक्षत एकस्वभावरहिता एव, विविधेष्वाकारेषु सर्वदा प्रतिभासनादविशेषेण पृथक्श एकस्वभावत्वेनाननुभूय-मानत्वात् । एकस्वभावरहितत्वेन सिद्धे सत्यनेकस्वभावराहित्यमपि सुतरां प्रत्यक्षतः सिद्धमेव, एकैकसञ्चितत्वादनेकस्वभावस्य । न खलु प्रत्यक्षादिप्रमाणानि व्यवहारेणासद्भूतानीति पूर्वमेवोक्तम् ।

यत्खलु परमार्थतोऽसत्, तत् संवृतितोऽप्यसदेव, कियताऽप्यंशेना-ननुभाव्यत्वात्, शशशृङ्गवत् । यदि प्रत्यक्षमपि तथैवेत्युच्येत, एवं सत्यसम्बद्धत्वाद-नैकान्तिकत्वमेवास्य हेतोरिति पूर्वमेव कृतोत्तरम् । आरोपितस्यात्मनो यः खलु स्वभावः, सोऽपि तथैव ज्ञेयः, किन्तु नैव स परमार्थतोऽसन्, मरीचिकासु जलज्ञानसदृशत्वात्तस्य ।

आरोपस्वभावात्मकत्वात् सर्वप्रत्यक्षाणां कथं हि तैरेकानेकस्व-भाववियुक्तत्वं ज्ञातुं शक्यत इति चिन्तायां हेतुरयमत्र मायाकारप्रत्यक्षानुमानाभ्याम-नैकान्तिक एव । यतो हि मायाकारज्ञाने तावद् योऽयं गजाद्याकारारोपस्तस्मिन् स्वभावे परमार्थतो नाभिनिवेशो जायते । तस्मिंस्तथाऽभिनिवेशाभावात् तत् परमार्थतस्तद्विविक्तज्ञानोत्पत्तिहेतुर्भवतीत्यवश्यं तद्विषयित्वेन व्यवस्थाप्यते । एवं प्रेक्षावतां प्रत्यक्षस्य निराकृतेऽपि भ्रान्तिकारणे कदाचिदन्यारोपाकारस्वभाववतः

(ज्ञानस्य) उत्पत्तिर्भवतीति परमार्थतस्तत्स्वभावेऽनभिनिवेशेन हेतुना नियतेन तावत्तद्विविक्तविषयित्वेन व्यवस्थाप्यते । तथैवानुमानज्ञानमपि यद्धि सामान्ये तावद् वस्तुलक्षणे समारोपाकारम्, तदपि वस्तुतथताया यथावज्ज्ञानस्वभावत्वात् तद्विषयकं भवतीति प्रमाणसद्भावादनैकान्तिक एव हेतुः । नास्ति तद्विषयीति कथनं तावन्नैव युक्तम्, अश्वशृङ्गवद् वस्तूनामभ्युपगमाभावात् ।

तर्हि कथमिति चेत् ? मायादिस्वभाववदिति, मायादिवत् प्रत्यक्षत्वात् । गृहीतेऽप्येकानेकस्वभावराहित्येऽनाप्तपुरुषशास्त्रश्रवणेनोत्पन्नारोपैरनिर्धार्यापरेण (प्रकारेण) निर्धारयतामेकानेकस्वभाववियुक्तत्वमनुपलब्ध्या तावत् कथं सेत्स्यति ? विविधप्रकारादिलिङ्गैः सर्वे यद्येकस्वभावरहितत्वेन साध्यन्ते तदा तेऽनेकत्व-स्वभावरहिता अपि सिध्यन्त्येव, एकसञ्चयात्मकत्वादनेकस्य । एकत्वं वानेकत्वं वा सर्वेष्वाकारेषु व्याप्तम्, परस्परपरिहारस्थितलक्षणत्वात्तयोः । व्यवहारे घटादिविषयपरिच्छेदेन पुरुषा अतुल्यसम्बद्धान् व्यवहारयोग्यानत्यन्तं परिच्छेदयन्ति । ततस्तुल्यविपर्ययादिस्वभावविच्छेदेन परिच्छेदः । तथैव। परिच्छिन्नेऽप्यनेकवस्तु-व्यवहारयोग्येऽनेकद्रव्यजातिसंघाते ततोऽतुल्यविपर्ययविच्छेदेनैव परिच्छेदः । परिच्छेदो यदि नैव विच्छिन्नस्तदा स नास्त्येव, परस्परपरिहारस्थितलक्षणत्वात्तयोः । ये तावत् परस्पर-परिहारस्थितलक्षणास्ते सर्वत्र व्यापिनः, ये हि सर्वत्र व्यापिनस्ते स्कन्धाद्यन्यापोढाः, मूर्तामूर्तत्वादिविशेषवदिति ।

एकानेकत्वे अपि तथैव । व्यापकनिवृत्त्या व्याप्यनिवृत्तेर्नियतत्वान्नास्ति तावद् हेतुरपि सन्दिग्धविपक्षव्यावृत्तिकः, अपरेषां स्कन्धानामभावात् । व्याप्यस्य व्यापकस्य वा वस्तुनः स्वतोऽसिद्धत्वादसिद्ध एव स हेतुरिति केचन । तथैव धर्मिण्येव केवले व्याप्यसद्भावसिध्यर्थं व्यापकनिवृत्त्या व्याप्यनिवृत्तिरसिद्धैवेत्यपरे । एतेषां सर्वेषां (आक्षेपाणां) समाधानं तावत्पूर्वमेवास्माभिः कृतम् ।

एवं व्याप्यव्यापकादिसर्ववस्तूनां पूर्वं संवृत्त्याश्रितत्वं प्रसाध्य पश्चाद् व्यवस्था कृतेत्यपि पूर्वमावेदितमेव । अत्यन्तं समीपवर्तिनि व्यापके नियतं व्याप्यविशेषज्ञानं नैव भवतीत्यपि पूर्वमेव निर्दिष्टम् । अतो व्यवहारेण एकानेकस्वभावमात्रेण सत्त्वं व्याप्तमिति । तथाप्यनेन परमार्थस्वभावो नैव निश्चीयते । एकानेकस्वभावास्तावद् घटादयः संवृत्याऽप्यवभासन्त एवेति।

व्याप्यव्यापकभावसिद्धिस्तु विशेषतो व्यवहारधर्मिणमाश्रयते, व्यापक-निवृत्तिस्तु परमार्थमाश्रयते, अतो विवादास्पदीभूतेषु सर्वधर्मिषु सामान्येन

साधयितुमिष्यमाणत्वात् कथमिमौ द्वौ (व्याप्यव्यापकौ) एकस्मिन् धर्मिण्याश्रिताविति चेत् ? एकस्मिन् धर्मिण्याश्रितत्वेऽपि (मिथः) सापेक्षत्वाद् भिन्नावेवेति नास्ति दोषः। एवमेव व्याप्यव्यापकभावसिद्धिस्तु व्यवहारसत्यमाश्रयते, व्यापक-निवृत्तिस्तावत् परमार्थसत्यमेवाश्रयते, अतो विरुद्धैव ।

(३६-३७) यः खलु साध्यः, साधको वा तौ प्रसज्यप्रतिषेधस्वभावौ, न वा तथास्वभावौ ? प्रथमे तावत्पक्षे तौ नैव बोध्य-बोधकरूपेणोपपन्नौ, निःस्वभाव-त्वादसम्बद्धत्वादनुपपन्नत्वाच्च । ये सर्वाभिलापविगतलक्षणास्ते न कथञ्चनापि बोध्या बोधकाश्च, अश्वशृङ्गवत्, यथोक्ताः सर्वे साध्यसाधकादयोऽभिलापरहित-लक्षणात्मकाः।

(३८-३९) ये परस्परमसम्बद्धास्तेऽपि नैव बोध्य-बोधकस्वभावाः, हिमवद्विन्ध्यपर्वतवत्, साध्यसाधका अपि परस्परमसम्बद्धाः।

(४०) अभिन्नस्वभावा अपि केचन न बोध्य-बोधकभावापन्नाः, वृक्ष-शाखावत्। साध्य-साधका अप्यभिन्नाः। यदि प्रसज्यप्रतिषेधस्वभावपक्षपातिनस्तदा एकानेकस्वभावरहितास्तावद् वस्तुस्वभाव-भूतार्थक्रियायोग्यत्वस्वीकारादपि न स्वीक्रियन्त इत्यप्ययुक्तियुक्तम्, विकल्पस्यास्य परपरिकल्पितेश्वरादिनिषेधेऽपि सर्वत्र समानत्वात् । अतोऽवश्यं व्यापकधर्मनिवृत्त्यैव ईश्वरादीनां निराकरणं कर्त्तव्यम्, अत्यन्तपरोक्षेषु प्रत्यक्षेण निषेद्धुमशक्यत्वात् । अतस्तस्मिन् कथं न सर्वे विवादा आपतेयुरिति ।

न तदेकं न चानेकं विषयः परमाणुशः ।
(विंशिका विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः ११ का०)

तथा

भावा यत्र विचार्यन्ते न ते सन्ति स्वभावतः ।
कथमिति न तेष्वेकानेकत्वं हि स्वभावतः[१] ।।

इत्यादिभिर्बाह्यार्थपरिकल्पना तावन्निषेध्यते । तत्रापि कथं न विवादाः स्युरिति । यदि निःस्वभावता तत्र नैव बोध्यत इति चेत्तदा अश्वशृङ्गस्यापि

१. द्र०-मध्यमकालङ्कारः, दे० क० उमा, 'स', पृ० ५५ क ।

बोधाभावः कथं नोल्लिख्यते । भवतामभिलापलक्षणरहिताः सर्वे भावा न मनागपि बोध्यन्त इत्यादिप्रयोगेषु विद्यत एव साध्य-साधकयोर्निषेधस्वभावः, अतः कीदृशस्तावदयं बोधकभावः । अतः प्रयोगोऽयमात्मनो हानिकर एवोल्लिखितः शस्त्रशिक्षणदोषाभ्युपगमवत् । अतो नास्ति प्रयोगकौशलमपि सर्वेषां वस्तूनां निश्चेतव्यप्रसङ्गाल्लिङ्गस्यैव वस्तुनो बोधो न केनापि स्वीक्रियते, कस्यापि लिङ्गबोधस्य कस्मिन्नप्यवश्यमेव सम्भवात् । अतो नियतमेव लिङ्गं प्रत्यक्षेण बोध्यते, साध्याकारस्य नियमेनोत्पादकत्वात् ।

लिङ्गं तावत् कल्पनया बोधकत्वेन व्यवस्थितमिति युक्तम् । अतो निःस्वभावत्वेऽपि नियततदाकारस्य साध्यकारनिश्चयोत्पत्तौ हेतुत्वाद् बोधकत्वेन कल्पनायां नास्ति कश्चन दोषः । केवलस्य वस्तुभूतलिङ्गस्यैव सर्वत्र नोल्लेखो भवति, आकाशनिषेधकस्य लिङ्गस्य नितरां कल्पितत्वादेवेति पूर्वं निर्दिष्टम् । असम्बद्धत्वादिति यदभिहितम्, तत्रापि यदि वस्तुभूतः सम्बन्ध एवैको हेतुत्वेन कथयितुमिष्यते, तदापि स हेतुर्नास्त्यनैकान्तिकः, वस्तुभूतेऽपि (हेतौ) कुत्रचित्तथाविधस्य सम्बन्धस्यासिद्धत्वात् । स (सम्बन्धः) तावद् द्वयाश्रितत्वेन परस्परश्लिष्टस्वभावत्वेन चोपकल्प्यते । द्वयोर्निष्पन्नयोः (वस्तुनोः) स्वभावः श्लिष्ट इति नोपपद्यते, स्वस्वभावे व्यवस्थितत्वात्तयोः । श्लिष्टत्वे सत्येकत्वमेव स्यात् । तच्च विरुद्धमेव । एकत्वे सति नैव द्वयाश्रित्वं तावद् युक्तम् ।

यदि स सम्बन्धिभ्योऽर्थान्तरं इति तदा स्वस्वभावव्यवस्थितत्वात् कथं नाम सम्बद्धस्वभावः स्यात् । यदि नास्त्यर्थान्तर इति तदा केवलं सम्बन्धिनावेव स्याताम्। अतः सम्बन्धस्तावत् कल्पनामात्रात्मक एव, न तु वस्त्वात्मक इति । यानि हि सम्बन्धोद्भूतानि लक्षणानि तान्यपि कल्पनात्मकान्येव, कार्यकारणयोर्युगपत्सम्भवा-भावात् । ये तावदसन्निहितास्तेषु न सम्भवति सम्बन्धः ।

अपि च, यदा कार्यस्वभावः परिनिष्पन्नः तदा अपेक्षाविरहान्नैव तस्य कुत्रचिन्निर्भरत्वम् । अतो नास्ति तस्य केनापि सह सम्बन्धः । अपरिनिष्पन्नेऽपि तस्मिन् कारणेन सह सम्बन्धकाले विदूरे स्थितत्वादसम्बद्धमेव तत् स्यादिति । अतः कल्पनयैव भवन्तो वस्तुप्रयोगमनुतिष्ठन्तीति ।

कार्यानपेक्षितत्वेऽपि स्वहेतोर्हि प्रसिद्धितः ।
तदन्यापेक्षया सिद्धेरभावात् कल्पना पुनः ।
हेतुं बध्नाति कार्येण कार्यं न, तच्च कीदृशम् ।।

तदात्मकलक्षणसम्बन्धोऽपि नैव समीचीनः, द्वयाश्रितत्वात्तस्य । तदात्मकत्वे द्वैतं नैवोपपद्यते । द्वयाभावे कः केन सम्बध्येत सम्बन्धी । अतः कल्पनारचितमूर्तित्वात् सर्वेषां सम्बन्धानाम्, अभावे चैवानुपहतप्रवृत्तेर्हेतोरसिद्धिरेव स्यात् । असम्बद्धत्वे सति अभेदाभावात् कथं तादृशी युक्तिः, प्रयुज्यते । अभेदे सति तदात्मक एव सम्बन्ध इति निर्देशः स्यात् ।

वस्तुमात्र एव तादात्म्यसम्बन्धः, न त्वन्यत्रेति चेत् ? अयुक्तमेतद्, अभिन्नपर्यायत्वात्तादात्म्यस्य । स तु निःस्वभावस्यापि नैरात्म्यसदृशत्वादविरुद्ध एव। यद्येवं न स्यात्तदा 'अभिन्नत्वाद्' इत्यपि वक्तुं न पार्येत। तत्र 'अभिन्नत्वाद्' इत्ययं हेतुर्यदि परमार्थाधिकारेणोच्येत तदा अनेकान्तिक एव, यतो हि कृतकत्वानित्यत्वे यद्यपि परमार्थतो नैव भिन्ने तथापि बोध्य-बोधकवस्तुषु तावत् ते दृश्येते ।

यदि व्यवहारेऽपि तयोर्नास्ति भिन्नत्वमित्युच्येत तदा असिद्धमेव, निवृत्तिविशेषोपकल्पिताया भिन्नतायास्तत्र सद्भावात् । एवमेव शब्दादिधर्मिणि यदा अकृतकत्वादितो निवृत्तिर्निश्चीयते तदा नित्यादितोऽपि निवृत्तेर्निश्चयनात् परमार्थतो भिन्नताया अभावेऽपि निवृत्तिविशेषापेक्षया कृतकत्वानित्यत्वादीनां भिन्नव्यवस्थाया उपकल्पनाद् बोध्यबोधकवस्तुव्यवस्था तावत् क्रियत एव । इत्थं यदा वस्तूनि सामर्थ्यतः प्रतिम्बिवद् एकानेकस्वभावविनिवृत्तानि भवन्ति तदा परमार्थ-स्वभावतोऽपि तेषां निवृत्तिर्नियतैव । अतो निवृत्तिविशेषापेक्षया कृतकत्वं भिन्नं व्यवस्थाप्यते, अत एव च तत्र बोध्य-बोधकभावोऽपि सम्भवत्येव । पुनश्च, यथा नित्यं तावद् वस्तु अर्थक्रियासामर्थ्यविरहाद् वस्तुस्वभावेन रहितं साध्यते, तथैव अन्यत्रापि तत्सदृशत्वान्न विरुध्यते ।

(४१) यदपि अतद्व्यावृत्तिविशेषेणानयोः कृतकत्वं तद् वस्तु स्यात् नीलपीतादिवत्तत्स्वभावत्वादिति कथनं तावदसम्बद्धमेव, कृतकत्वानित्य-त्वाभ्यामनियतत्वात् । कृतकत्वानित्यत्वयोर्भेदो व्यावृत्त्योच्यते, किन्त्वेतावता न तद् वस्तु । यथा नित्यवस्तुनिषेधाय अर्थक्रियासामार्थ्यरहितत्वं निःस्वभावत्वं च व्यावृत्तिकृतविशेषे सत्यपि नैव वस्तु, तथैवान्यदपि तत्सदृशमिति ज्ञेयम्, अतो गौणमेवेदम् । यत्खलु नीलात्मकं पीतात्मकमिति निदर्शनं तदपि परमार्थे तावद् वस्तुन्यसिद्धत्वादयुक्तम् । येऽस्मिन् असत्पक्षत्वेन दोषमारोपयन्ति, तदपि नैव युक्तियुक्तम् । यतो हि नयोऽयमसन्निति कथनमात्रेण तावत् परमार्थे वस्तुनि न

किमपि सिद्धं भवति, अमूर्तादिशब्दप्रयोगेऽपि कल्प्यमानमाकाशं तावदसत्त्वान्नैव युक्तम् ।

तत्र बुद्धौ प्रतिभासमानो यो हि पूर्वोदितो धर्मी, सोऽपि असता तावन्नयेन (असत्पक्षेण) तथोक्तः, किन्तु परमार्थे वस्तुनि स नैव युक्तरूपः । वस्तुसदिति व्यवहरतां कथनमिदं सिद्धसाधनमिति स्यात्, एकानेकस्वभावरहितं खलु परमार्थं वस्तु नैव किञ्चित्, तस्य कल्पना-विषयत्वेनापि बहिर्भूत्वादिति । सर्वे खलु पदार्थाः एकानेकस्वभावाभ्यां व्याप्ता इति तु पूर्वमेव प्रसाधितम् । मायादिभिरव्यतिरिक्ताः परमार्थतो निःस्वभावा हि भावास्ते यदि 'वस्तु' इति नाम्ना व्यवह्रियेरन्, तदा नास्ति कश्चनापि दोषः, भवत्कल्पितपक्षहान्या तावत्तस्य दूषितत्वात् । अतो नास्ति हेतुरनैकान्तिकः । नास्ति विरुद्धाख्योऽपि (दोषः), प्रतिबिम्बादिसपक्षेषु सत्त्वात् । एकानेकस्वभावानि प्रतिबिम्बादिवस्तूनि नैव परमार्थतो युक्तानि, ज्ञानज्ञेयादिस्व-भावेन परमार्थतोऽसिद्धत्वादिति पूर्वमेवोक्तम् ।

(४२) एवं यथा एकानेकस्वभावलक्षणो हेतुस्तावन्नैरात्म्यं साधयति तद्वदभावधर्मिणि धर्मिव्यावृत्तिसाधकत्वाद् विरुद्धोऽयं हेतुरिति यदुक्तं तत्तु अत्यन्तं प्रमाणानभिज्ञतामात्रमेव । यदा वस्तुस्वभावो धर्मी साधयितुमिष्यते, तदा तद्व्यावृत्तिसाधकत्वेन स हेतुर्विरुद्ध इत्युच्यते, किन्तु यदा स (धर्मी) निःस्वभावत्वेन साध्यते तदा सिद्धेऽपि वादिनो मते कथं तावद् विरुद्धो हेतुर्भविष्यति । निः-स्वभावतायां हि साधयितुमिष्टायां वस्तुस्वभावो धर्मी नैव सम्भवति, अननुरूपत्वादिति पूर्वमेवोदितम् । अतः साध्यसाधनाभ्यां यथोक्तो धर्मी अवस्तुभूत एव सम्मत इत्यस्मात् कारणात् तेन हेतुना तावद् व्यावृत्तिरेव साध्यते । वस्तुस्वभावसिद्धौ तु तद्विपरीतस्यैव सिद्धिः स्यात् ।

यथाऽयं हेतुर्नैरात्म्यं साधयति तथैव अभावधर्म्यपीति केषाञ्चित् कथनम-सम्बद्धमेव । यतो हि येन कारणेन तावन्नैरात्म्यस्य अभावस्य च द्वयोर्धर्मयोर्विरुद्ध-हेतुभ्यां सिद्धिरुच्यते, तौ व्यावृत्त्याऽपि नैव भिन्नौ, पर्यायस्वभावत्वात्तयोः । फलतो निरात्मकमिदं नैरात्म्यादिति कथनमिव स्यात् । एवंविधं तावदभिधानकौशलं कस्य स्यात् ? (न कस्यापीत्यर्थः) । अतः सर्वे धर्मा निःस्वभावाः सिध्यन्ति । हेतुरपि भगवतैवोक्तः; तथा हि—

यथा हि दर्पणे रूपमेकत्वान्यत्ववर्जितम् ।
दृश्यते न च तन्नास्ति तथा चोत्पादलक्षणम् ।।

(लङ्कावतारसूत्र, १० : ७०९)

फलतो निःस्वभावतासाधनार्थं न कोऽपि हेतुरिति यत्कथनम्, तस्याप्युत्तरं दत्तपूर्वमेव ।

(४३-४४) यदि विज्ञानमपि इतरधर्माणामिव निःस्वभावमेव स्यात्तदा मिथ्यात्वाद् योगिभिरन्यधर्माणामिव तस्यापि परित्यागः करिष्यत एव । यद्येवं करिष्यते तदा न कोऽपि योगिनो भविष्यन्ति, न च तेषां तत्त्वज्ञानं भविष्यति, नापि भगवतां बुद्धानामप्रतिष्ठितनिर्वाणं नैव च तेषां तत्त्वज्ञानं भविष्यति । अनेन खलु हेतुना सर्वासां व्यवस्थानां विलोप एव स्यादिति यत्कथनं तदपि नैव युक्तम्, यतो हि प्रसङ्गस्तावदयं यदि सत्याभिनिवेशपरित्यागार्थमुच्यते तदा सहर्षमुच्यताम्, किन्तु तथाऽभ्युपगम्य नैव प्रसङ्गः प्रयुक्तः, तल्लक्षणस्यैवानभ्युपगमात् । यदि सर्वविधप्रसङ्गपरित्यागार्थं तावदुच्यते, तदा हेतुरयमनैकान्तिकः साध्यविपरीतबाधकप्रमाणाभावात् । यन्मिथ्या तत् सर्वथा परित्याज्यमित्येतस्य नैव किमपि कारणमुपलभामहे, मिथ्यात्वेऽपि प्रयोजनवशान्मायाकार इव मायादर्शनवत् । ये हि मिथ्या स्वपरार्थं नैवोपयुज्यन्ते, ते योगिभिः परित्याज्या इति कथनं तु युज्यते, परन्तु ये तावत् साक्षात् परम्परया वा स्व-परप्रयोजनप्रसाधकाः, कृपालूनां परहितकरणोपायभूतास्तेषां कथं सर्वदा परित्यागः कर्तुं शक्यते ।

अतो ये क्षेत्रपरिशुद्धिनिर्माणकायादयस्ते परार्थमत्यन्तमावश्यकाः, ते सर्वे विपरीतपरिहारद्वारा परित्याज्या अपि यावत्संसारमपरित्याज्या एव । ते यद्यपि मायाकार इव सर्वान् मिथ्याभूतान् जानन्ति, तथापि परहितोपायभूतान् तान् न परित्यजन्ति । नास्ति तेषु विपर्ययभूता आसक्तिरपि, सम्यग्रूपेण तेषां यथाभूतपरिज्ञानात् । यथोक्तम् आर्यधर्मसङ्गीतौ[१] :

मायाकारो यथा कश्चिन्निर्मितं मोक्षमुद्यतः ।
न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ।।

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा सम्बोधिपारगः ।
संनह्यते जगद्धेतोर्ज्ञातपूर्वं जगत् तथा ।।

(उद्धृतम्, भावनाक्रमः, पृ० १९३)

भावोऽपि तावन्न ग्राह्यो न चाभावोऽपि परित्याज्यः, यतो हि श्रावका अपि, ये वस्तुसंज्ञिनस्तेऽपि आदिमं सत्यद्वयं विवर्जयन्ति, तृतीयं चार्यसत्यमभावभूतमपि

---

१. द्र०-दे० क० 'श', पृ० ४३ ख ।

परिगृह्णन्ति । कृपापराधीनचेतसो योगिनोऽपि परहितार्थं विविधरूपेण गजादिमिथ्या-निर्माणादिकं साधयन्ति ।

तत्र महाकरुणापराधीनतया ये परेषाम् अशेषहितसुखोपायशालिनः प्रज्ञालोकेन विध्वस्तसकलक्लेशान्धकाराः परहिताभिलाषिणो मतिमन्तस्ते प्रहीणेष्वपि सकलविपर्यासेषु पूर्वप्रणिधानवशतया यावत् सत्त्वकर्मक्लेशास्तावदा-काशपर्यन्तं स्थातुमेवाभिलषन्ते । इत्थं समेषां वस्तूनां परमार्थतो निःस्वभावत्वेऽपि हेतुप्रत्ययसामग्रीपारतन्त्र्येण मायावत् सम्भवन्त्येव । हेतुमन्तस्ते न भवन्ति वस्तुसन्तः, अन्वयासिद्धत्वान्मायादिना भ्रान्तत्वाच्च । मिथ्याभूता हि ये स्वानुरूपहेतु-मन्तस्तावन्नैव भवन्ति, ते व्यवहारेऽप्यसन्त एवेति पूर्वमेवावेदितम् । अतो यथा मायादयः स्वहेतुसाकल्यपरतन्त्रतया प्रादुर्भवन्ति, तथैव योगिनां ज्ञानादयोऽप्य-विचाररमणीया एव ।

तत्र योगिज्ञानादिमायाहेतुस्तावद् यथावत् पुण्यज्ञानसम्भारानुकूल एव । संक्षेपतो भगवताम् अप्रतिष्ठितनिर्वाणहेतुस्तु करुणा प्रज्ञा च । कृपया हि तन्निर्वाणावबोधेऽपि ते नैव तस्य साक्षात्कारं कुर्वन्ति । प्रज्ञया तावत् सर्वसंक्लेशहेतोः सम्मोहस्यानवकाशात् संसारदोषगन्धेनाप्यलिप्ताः सन्तो नैव संसारे पतन्ति । अतस्ते नैवानयोर्द्वयोः (संसारनिर्वाणयोः) तिष्ठन्ति । अतः प्रज्ञोपाय-युगनद्धचर्या तावदप्रतिष्ठितनिर्वाणहेतुः । अत एव च सा बोधिसत्त्वानां मार्ग उच्यते। तया विरहिताः सत्त्वास्तु श्रावकादिभूमिषु पतन्ति । यथोक्तम्........

''अपि च, शारिपुत्र, शून्यताऽनिमित्तं च बोधिसत्त्वानां मार्गः । ये तावत् प्रज्ञापारमितया विरहिताः, उपायकौशल्येन चापरिगृहीतास्ते यदि भूतकोटिं साक्षात्कुर्वन्ति, तदा नूनं श्रावकाः प्रत्येकबुद्धा एव भवन्ति ।''

प्रभास्वरादिज्ञानेन लोको यथावत् समनुपश्यति । तद्यथा— अचिन्त्यसामर्थ्यवत्त्वाद् योगिनो यथा वस्तून्यवभासन्ते तथा करतलामलकवत् संवृतिपरमार्थाकाराभ्यां सर्वाकारं प्रत्यक्षतया अवबुध्यन्ति । अत एव भगवान् सर्वाकारज्ञानत्वेन व्यवस्थापयामास । सर्वप्रपञ्चरहितं निरुत्तरं लोकोत्तरम-शेषधर्मनिराभासं ज्ञानं भूतार्थभावनाप्रकर्षपर्यन्तजं तत्त्वाव-बोधकं भवति, (तथापि) व्यवहारे सर्वं निर्माणवत् सदेव भवति । अतो यथा सर्वाकारज्ञानादौ वस्तुव्यवस्था कृता, सा न प्रणश्यति, परमार्थेऽभावात् । अत एव भगवत्यामुक्तम्—''यदि भगवन्, सर्वे धर्मा निर्माणमिव भवन्ति तदा भगवति निर्वाणे च किमन्तरम् ? भगवान्

आह—न किमपीति । कथम्? भगवतः सर्वाणि कर्माणि निर्माणवद् भवन्ति । परिनिर्वृतेऽपि भगवति तथागतो निर्माणं करोति । निर्माणस्य तावन्नोद्भवो नापि परिनिर्वाणं किमपि भवति । इत्थं बोधिसत्त्वैः सर्वधर्मेषु निर्माणमिवाधिमुक्तिं विधाय प्रज्ञापारमितायामाचरितव्यम् ।'' इत्येतत् प्रतिपादितम् ।

(४५) ये हि रूपादयो भिन्नदेशकालावस्थासु स्पष्टं प्रत्यक्षेणावभासन्ते ते निश्चयेन स्वभावेन युक्ता इत्यतः प्रतिज्ञा तावत् प्रत्यक्षेण बाधितेति यत् पूर्वमुक्तम्, तन्न सर्वथा समीचीनमिति चेन्न, यतो हि भिन्नदेशकालावस्थास्ववभासितत्वमात्रेण प्रत्यक्षावभासो नैव युक्तः, स्वप्नाद्यवस्थास्वपि तथाऽवभासितत्वात् । वस्तूनां खलु परमार्थस्वभावतया साधयितुमिष्यन्ते, किन्तु नैव स्वभावः परमार्थतया सिद्ध इति पूर्वमावेदितम् ।

अपि च, यदि भ्रान्तप्रत्यक्षेऽवभासितत्वात् प्रत्यक्षेऽवभासितत्वमभ्युपगम्यते तदा नैव तेन बाधा युज्यते, तिमिराद्युपहतलोचनेषु विद्यमानेऽपि द्विचन्द्रे न तेन एकचन्द्रादिबाधा युक्तिमती । यद्यभ्रान्त-प्रत्यक्षेऽवभासितत्वेन तथा (बाधा) अभ्युपेयते तदा तन्नैव सिध्यति, अर्वाग्दर्शिनां प्रत्यक्षस्य तत्त्वार्थेऽभ्रान्तत्वाभावात् ।

न चक्षुः प्रमाणं न श्रोत्र घ्राणं न जिह्व प्रमाणं न कायचित्तम् ।
प्रमाण यद्येत भवेयुरिन्द्रिया कस्यार्यमार्गेण भवेत कार्यम् ।।

यस्मादिमे इन्द्रिय अप्रमाणा जडाः स्वभावेन अव्याकृताश्च ।
तस्माद् य निर्वाणपथैव अर्थिकः स आर्यमार्गेण करोतु कार्यम् ।।

(समाधिराजसूत्र, ९ : २३-२४)

अतस्तथागतस्यैव केवलं प्रत्यक्षं परमार्थेऽभ्रान्तम् । ते नैव किमपि वस्तु सत्त्वेनालम्बन्ते । यथोक्तम्—

''सुभूते, मोहपुरुषास्तावन्नेत्ररहिता अन्धा एव । ते रूप-वेदना-संज्ञा-संस्कार-विज्ञानत आरभ्य सर्वाकारज्ञानपर्यन्तं तथागतचक्षुषा अनुपलब्धेषु सर्वधर्मेषु सत्त्वेनाभिनिविशन्ते'' .... इति विस्तरः ।

प्रतिज्ञाया अनुमानेनाभास इति यदुक्तं तदपि नैव युज्यते, यतो हि नानुमानेन किमपि वस्तु स्वभावतः सिध्यति, प्रमाणबाधितत्वात्तस्येत्युक्तपूर्वम् ।

(४६) धूमादिहेतुभिर्यो हि अग्न्यादीनां लोके निश्चयः, सोऽपि तावदग्निर्नैव सद्विषयः, स्वप्नेऽपि तथाविधस्य निश्चयस्य सम्भवादिति । धूमाग्न्योः सत्त्वनिषेधस्तावत् कृतपूर्व एव । अतो नास्ति किमपि । सांवृतिकं हि वस्तु मायावद् हेतुप्रत्ययसापेक्षम् । अतो नास्ति तेन सह कादाचित्कत्वविरोधः । ये तावदहेतुकोत्पादमभ्युपगच्छन्ति, तेषामेव कादाचित्कत्वविरोधः, न तु सहेतुकोत्पादमभ्युपगच्छताम् । कादाचित्कत्वमपि तावदसिद्धमेव, परमार्थतोऽनुत्पादात् ।

(४७-५१) यच्च त्रायस्त्रिंशनगरादिकमुक्तम्, तदप्यविरुद्धमेव, व्यवहारे सत्त्वात् । वस्तूनां कूर्मरोमादिवदभावस्वभावत्वं यदि नैव प्रतिज्ञायते, तदा कथमिति चेत् ? मायास्वप्नादिवदिति ब्रूमः । तथागतेनाप्युक्तम्—

महामते, सर्वे धर्मा निःस्वभावा इत्यपि बोधिसत्त्वैर्नैव प्रतिज्ञा कार्या । तदा किमिति चेत् ? आभास-निराभासलक्षणत्वाद् बोधिसत्त्वैः सर्वे धर्मा मायास्वप्नादिवन्निर्देष्टव्याः ।

व्यवहारे तावद् (वस्तूनाम्) आभासलक्षणम्, परमार्थे तु निराभासलक्षणमिति सूत्रार्थोऽभिव्यज्यते । तदपि—

सर्वं विद्यति संवृत्या परमार्थे न विद्यते ।
धर्माणां निःस्वभावत्वं परमार्थेऽपि दृश्यते ।।

(लङ्कावतारसूत्रम्, १० : १३०)

अतः 'सर्वे धर्मा व्यवहारमात्राश्रिताः', इत्यस्मिन् भगवन्निर्देशे नास्ति कश्चन विरोधः । भगवत्यामप्युक्तम्—

''बोधिसत्त्वा महासत्त्वास्तावल्लोककल्पनया अनुत्तरसम्यक्संबोधौ अभिसम्भोत्स्यन्ते । परमार्थतस्तु बोध्यर्थमनुष्ठीयमानानि रूपं वेदना संज्ञा, संस्काराः विज्ञानानि कान्यपि न सन्त्येव । एवमेव अष्टादश धातवः, षट् स्पर्शाः, षड् वेदनाः, षड् धातवः द्वादश प्रतीत्यसमुत्पादाङ्गानि, पारमिता, शून्यता, स्मृत्युपस्थानानि, सम्यक् प्रहाणानि ऋद्धिपादाः, इन्द्रियाणि, बलानि, बोध्यङ्गानि, आर्याष्टाङ्गिकमार्गाः, सत्यानि, ध्यानानि, अपरिमाणानि, अरूपाणि, विमुक्तिद्वाराणि, अनुपूर्वसमापत्तयः, अभिज्ञाः, समाधयः, धारणीद्वाराणि, तथागतबलानि, प्रतिसंविदः, महाकृपा, आवेणिकबुद्धधर्माः, चत्वारि फलानि, मार्गज्ञानानि, अनुत्तरसम्यक्संबोधिरपि नैव

स्वभावतः सत्त्वेन सिध्यन्ति । सर्वेषामेतेषां धर्माणां लोकव्यवहाराश्रयेण कल्पितत्वात्, न त्वेतेषां परमार्थतः सत्त्वम्''—इति निर्देशः ।

रूपत आरभ्य सर्वाकारज्ञानपर्यन्तं ये तावद् धर्मास्तेषां न स्तः संयोगवियोगावपि । यतो हि रूपं हि अदर्शनम् अप्रतिघम् अलक्षणमेव असत्त्वात् । सत्त्वानां ग्रहणार्थं ते केवलं तथागतेन लोकव्यवहारार्थं कथिताः, न तु परमार्थतः । लोकसंवृतौ ये पुनः प्राप्तिरभिसमयः पञ्चगतिभेदास्तेऽपि पूर्वत एव परमार्थतो न सन्ति। परमार्थे तु कर्मापि नास्ति कर्मफलमपि, संक्लेशो नास्ति, नास्ति व्यवदानमपि । न स्त उत्पादनिरोधावपीत्युक्तम्। परमार्थतस्तावद् भगवान् सर्वत्र संक्लेशव्यवदानयोर्निषेधं कृतवान्, तथापि व्यवहारे तान् अङ्गीकृतवान् । तेषां तावदनिषेधेन स्वीकरणेऽपि नास्ति (कश्चन) दोषः । अन्यत्र भगवान् स्वप्ने सर्पं दृष्ट्वा मूर्च्छा तदभावे संक्लेशं व्यवदानं च मिथ्यैवेति कथितवान् ।

(५२) नास्ति चतुरार्यसत्यापवाददोषोऽपि, यतो हि महायानादन्यत्र भगवान् तेषां (आर्यसत्यानां) उपदेशं कृतवान् । ब्रह्मपरिपृच्छासूत्रे तावदुक्तम्—

"यदुत दुःखं समुदयो निरोधो मार्गश्चेति नैव सन्त्यार्याणां सत्यानि, किन्तु ब्रह्मन्, यदनिष्पन्नं दुःखम्, तदेवार्याणां सत्यम् । यो ह्यनुत्पन्नः, स एवार्याणां समुदयः। यश्चानिरोधोऽनुत्पन्नश्च स एवार्याणां सत्यम् । सर्वधर्माणामद्वयसमतायां या खलु मार्गभावना, सैवार्याणां सत्यमिति । अतो नास्ति परमार्थतो दुःखसत्यम् । तत्तु श्रावकानधिकृत्य संसारोद्विग्नमानसानां कृते पुद्गलनैरात्म्यप्रवेशार्थं तावदनित्यादिस्वभावत्वेन केवलं निर्दिष्टम्, न तु नैरात्म्यद्वयनिर्देशाधिकारेणेति ज्ञातव्यम्"[१] ।

(५३) यश्च तावज्जन्यजनकस्वभावो जनेष्वागोपालं प्रसिद्धस्तेन प्रसिद्धिविरोधदोषोऽपीति यदुक्तं तदप्यसम्बद्धमेव, परमार्थस्वभावादीनां सामान्यजनेष्वप्रसिद्धत्वात् । यदि प्रसिद्धस्तदा ते नैव सन्ति साधारणजनाः । स्वप्नादिवन्मिथ्यास्वभावस्यापि प्रसिद्धिर्नैव सुसम्भवा । प्रसिद्धिस्तावत् प्रत्यक्षानुमानाभ्यामतिरिक्तत्वेन नैव प्रमाणमिति । सा प्रमाणान्तर्गतैवेति चेत् ? तदा तद्विरोधपरिहारेण तद्बाधाया अपि परिहारः कृत एव ।

---

१. द्र०-ब्रह्मपरिपृच्छासूत्रं, दे० क०, 'ब', पृ० ३८ ख ।

(५४) यच्चावश्यं परोत्पत्त्यर्थं हेतुप्रयोगाभिलाषेण ततोऽवश्यमुत्पत्त्यभ्युपगमात् स्ववचनविरोध इत्युक्तम्, तदप्यविरुद्धमेव, नियतोत्पत्त्यर्थं हेतुप्रयोगान्नैव ततः परमार्थतो नियतोत्पत्तिरभ्युपगता भवति। तत्किमिति चेत् ? उत्पत्तिमात्रम्, नोत्पत्तिविशेषः । परमार्थत उत्पत्तिनिषेधेनात्र वस्तूनां निःस्वभावतैव परमार्थतः साधयितुमिष्यते, न तूत्पत्तिमात्रनिषेधः । अतो यद्यपि हेतुभ्यो नियततया पारमार्थिकी उत्पत्तिर्नैव भवति, तथापि बिम्बात् प्रतिबिम्बवत् सांवृतिकी उत्पत्तिस्तावदविरुद्धैव । अतो नास्ति प्रतिज्ञायाः स्ववचनविरोधः ।

(५५) यच्च भगवता—"चक्षुर्विज्ञानसमङ्गी नीलं विजानाति नो तु नीलम्"[1]—इत्युक्तम्, तदपि इन्द्रियविषयव्यवहारमभ्युपेत्यैवोक्तमिति । अन्यत्र तु—"न चक्षुः प्रमाणं न श्रोत्र घ्राणम्"[2] इत्यादिना षडिन्द्रियाणां प्रमाणत्वं प्रतिषिद्धमेवेति पूर्वमेव निर्दिष्टम् ।

आर्यप्रज्ञापारमितादिष्वपि रूपादिविषयाणां प्रतिषेधो विहित एव । लोकसंवृतौ तु सर्वे (धर्माः) संविद्यन्त एवेत्येवंविधं भगवान् स्वाभिप्रायं सुस्पष्टं प्रकटितवान् । उपलम्भवतां तावन्नास्ति सुविशुद्धा प्रज्ञापारमितेत्यप्युक्तवान् । उपलम्भानुपलम्भयोर्बोधिसत्त्वेभ्यो हेयोपादेयत्वमपि (क्रमशः) निर्दिश्यत एव । भगवत्यामप्युक्तम्—कियता भगवन्, उपलम्भः, कियता च तावदनुपलम्भो भवतीति? भगवान् आह—यावद् द्वयता तावदुपलम्भः, यदद्वयं तदेवानुपलम्भः । अपृच्छत्—कियता भगवन् द्वयता ? भगवान् आह—यावत् सुभूते, नाम रूपं श्रोत्रं घ्राणम् इत्यत आरभ्य यावद् बुद्धत्वम् अनुत्तरसम्यक्संबोधिः बुद्ध इति तावद् द्वयतेत्युपदिदेश । पुनश्च, यावद् द्वयसंज्ञा, नैव तावदानुलोमिकी क्षान्तिरित्यप्युक्तवान्। आर्यधर्मसंगीतौऽपि[3]—सर्वधर्मा नैवोपलभ्यन्ते, तेषामदर्शनादित्युक्तम् ।

अतो व्यावहारिकचक्षुरादीनभिसन्धाय द्रष्टृत्वतो ज्ञातृत्वपर्यन्तमात्मप्रसिद्धेस्तद्दृष्टिनिषेधार्थं पुद्गलनैरात्म्यप्रवेशाभिप्रायेण चक्षुरादीनां निर्देशः कृतः। अत एव चानाभासिन आकाशोत्पलस्य नीलत्वादिवदिमे नीलादिरूपाणां ये सांवृतिका आभासास्तेऽपि न सन्त्यत्यन्ताभावरूपाः ।

---

१. द्र०-तत्त्वसंग्रहः, पृ० १६, बौद्धभारती, १९८१ ।
२. द्र०-समाधिराजसूत्रं ९:२३ ।
३. द्र०-दे० क० 'श', पृ० ४७ ख ।

(५६) 'यत् किञ्चित् समुदयधर्मकं तत् सर्वं निरोधधर्मकम्[१]' इत्यमुनानुमानेन सम्यक्तया क्षणिकत्वेन स्थितस्य वस्तुधर्मिणः सिद्धिर्निनिर्दिष्टेति यदुक्तं तदप्युत्पादविनाशधर्मिणो ज्ञानेन नैरात्म्यप्रवेशार्थं श्रावकानधिकृत्य पुद्गलनैरात्म्यमभिप्रेत्य चोक्तम्, न तु बोधिसत्त्वानामधिकारेण गम्भीरतत्त्वालापमपेक्ष्य प्रोक्तमिति । यतो हि भगवता संस्काराणामुत्पादविनाशस्वभावस्य सम्यगनुदर्शनं तदुद्देश्यं च प्रज्ञापारमितायामिव निर्मितसदृशमित्युक्तम् । संस्कारासंस्कारकोटिद्वयवियोगस्तावदनुत्तरसम्यक्संबोधेरुपाय इत्युपदिष्टः । आर्यधर्मसंगीतौ हि तथागतेन भयस्थानस्य परिहारार्थं व्यवहारे चोत्पादनिरोधौ तावदुक्तौ ।

आचार्येणाप्युक्तम्—

उत्पादव्ययकर्मणाऽभिप्रायार्थः प्रदर्शितः ।

(युक्तिषष्टिका, कारिका-२१)

पुनश्च,

यथा माया यथा स्वप्नो गन्धर्वनगरं यथा ।
तथोत्पादस्तथा स्थानं तथा भङ्ग उदाहृतम् ।।

(मूलमाध्यमिककारिका, ७ : ३४)

अपि च, आर्यसागरनागराजपरिपृच्छासूत्रेऽपि—

आदावन्ते हि शून्यत्वं जातिर्भङ्गस्तथा स्थितिः ।
सर्वे धर्माः स्वभावेन शून्या नासन्न सत् पुनः[२] ।।

इत्यादिकमुदाहृतम् ।

यच्च तावत् संस्काराणां क्षणिकत्वम्, तदपि नैवोपपन्नमिति निर्दिष्टम् । आर्यसुबाहुपरिपृच्छासूत्रे चोक्तम्—

''यदुत त्रयाणामतीतानागतप्रत्युत्पन्नानां कालानां परिज्ञानं जायते । तत्रातीताः संस्काराः, ये तावन्निरुद्धास्ते भूतकाल इत्युच्यन्ते । ये ह्यनागता

१. द्र०-दे० क०, 'अ', पृ० ५३ क, कनकवर्णपूर्वयोगनामसूत्रम् ।
२. द्र०-दे० क०, 'फ', पृ० १९२ क ।

अनुत्पन्नास्ते भविष्यकाल इति । ये च प्रत्युत्पन्ने पृथगुत्पन्नास्ते वर्तमानकाल इत्यभिधीयन्ते । वर्तमानकालोत्पन्नानि स्कन्धधात्वायतनानि न स्थितानि नाप्यस्थितानीति परिज्ञायन्ते । कथमिति चेत् ? लोकोऽयं क्षणमात्रमपि नावतिष्ठति । ये तावत् क्षणिकास्तेषामुत्पादोऽप्यन्यः, स्थितिरप्यन्या, व्ययोऽप्यन्यो भवति, तेषां क्षणिकत्वात् स्थितास्थितत्वा-भावाच्च[1] ।''

इत्यादिकमभिहितम्

अतश्च क्षणिकता तावत् कल्पनास्वभावात्मिकैव, तदादिमध्यान्तानां भिन्नस्वभावत्वादित्युपदिदेश । तथैवाचार्येणाप्युक्तम्—

यथान्तोऽस्ति क्षणस्यैवमादिर्मध्यं च कल्प्यताम् ।
त्रयात्मकत्वात् क्षणस्यैवं न लोकस्य क्षणं स्थितिः ।।

(रत्नावली, १ : ६९)

(५७) यच्च भगवता ''धूमेन ज्ञायते वह्निः[2]'' इत्यादिकमुक्तम्, तदपि सूत्रान्तरेषु सकलसामग्रीसमवधानात् समुत्पद्यमानानामग्निधूमादीनां सामान्येन निषेधपरकमेव । अतो नैव तत् परमार्थमधिकृत्योक्तमिति निर्दिष्टमेव पूर्वम् । आर्यलङ्कावतारेऽप्युक्तम्—

समवायाद् विनिर्मुक्तो बुद्ध्या भावो न गृह्यते ।
तस्माच्छून्यमनुत्पन्नं निःस्वभावं वदाम्यहम् ।।

(लङ्कावतारसूत्रम्, ३ : ८८)

अन्यच्च तत्रैव—

एकत्वं वा ह्यनेकत्वं यथा बालैर्विकल्प्यते ।
समवायात् पृथङ् नास्ति न चान्यस्य पृथक् स्थितिः ।।

(लङ्कावतारसूत्रम्)

आर्यघनव्यूहसूत्रे चोक्तम्—

न स्कन्धा धातवो नैव सर्वे धर्मा अलक्षणाः ।
चिन्त्यमानोऽपि नैवास्ति परमाणुस्तथा स्थितः ।।

---

१. द्र०-दे० क०, रत्नकूटे 'च', पृ० १७५ ख ।
२. द्र०-दशधर्मकसूत्रम्, दे० क०, पृ० १६१ ।

पुनश्च,

पृथिव्यबादिवस्तूनि कल्पितानि सुकल्पकैः ।

अपि च,

विचारे सति नैवास्ति परमाणोश्च वस्तुता[१] ।

इत्याद्युक्तम् ।

अतः पृथिव्यादीनां कल्पितस्वभावत्वात् तत्स्वभावसंगृहीतास्तावदग्नि-धूमादयोऽपि कल्पितस्वभावा एव । अतोऽग्निधूमादीनां कल्पनाकल्पितस्वभावत्वेन निर्देशः संवृतिमात्रात्मक एव, न तु परमार्थात्मकः ।

(५८) अभिधर्मादौ यः खलु हेतुप्रत्ययादीनां निर्देशः, सोऽपि संवृतिरेव, न तु पारमार्थिकः । परमार्थतस्तु यदा न कस्यचनोत्पादस्तदाऽहेतुकत्वं तावदनुपपन्नमेवेति पूर्वमेव निर्दिष्टम् । यस्तावत् स्कन्धादीनां निर्देशः, सोऽपि व्यवहारसत्याश्रित एवेत्यपि पूर्वमेव निर्दिष्टम् ।

(५९-६०) आर्यधर्मसंगीतौ[२] तावदुक्तम्-बोधिसत्त्वेन तथागतार्हत्सम्यक्-संबुद्धानां यो व्यावहारिकत्वेन निर्देशः कृतः, स खलु दशधा बोदितव्यः । कथं दशधा? तद्यथा—स्कन्धनिर्देशः धातुनिर्देशः, आयतननिर्देशः, सत्त्वनिर्देशः कर्मनिर्देशः, जातिनिर्देशः, जरानिर्देशः, मरणनिर्देशः प्रतिसन्धिनिर्देशस्तथै-वैतेषामुपशमार्थं निर्वाणनिर्देश इति । सर्वेऽपीमे व्यवहारमात्रत्वेन निर्दिष्टा इति तत्रोक्तम् । स्व-परम-तस्थितैस्तत्त्वार्थत्वेनोपकल्पितानां स्कन्धादीनां परमार्थतो-ऽनुत्पन्नत्वेन साधनात् सिद्धसाधनमेव।

(६१) यच्च तदा वस्त्वेव स्वीकृतं स्यादित्युक्तं तत्पूर्वं कृतोत्तरमेव।

(६२-६४) का नाम संवृतिर्यदि सर्वमेवासदिति यदुक्तं तदपि नैव युक्तिसंङ्गतम्, परस्परविरोधात् । संवृतिर्हि नास्ति शशशृङ्गवदभावस्वभावा । तदा

---

१. द्र०-आर्यघनव्यूहसूत्रम्, दे० क०, 'छ', पृ० ४७ ख ।
२. द्र०-दे० क०, 'श', पृ० ११ क ।

कथमिति चेत्? यच्च सम्यङ् निःस्वभावं वस्तु तस्य तन्निवृत्ताकारे या समारोपिका भ्रान्तबुद्धिः, सैव संवृतिरिति । अथवा यया तत्त्वमाव्रियते (यया वा तत्त्वबोधः) बाध्यते, सा संवृतिरिति । सूत्रेऽपि तावदुक्तम्—

भावा विद्यन्ति संवृत्या परमार्थे न भावकाः ।
निःस्वभावेषु या भ्रान्तिस्तत्सत्यं संवृतिर्भवेत् ।।

(लङ्कावतारसूत्रं १० : ४२९)

तन्निर्वृतत्वात्तदुपदर्शितं सर्वं खलु वस्तु संवृतिमात्रमेवेत्युक्तम् । साऽप्यनादिकालीनभ्रान्तवासनापरिपाकजरूपैव । तया सर्वेषु सत्त्वेषु पारमार्थिक-वस्तुस्वभाव इवोपदर्श्यते, अतस्तद्बुद्ध्यधिकारेण सर्वं हि मिथ्यावस्तु संवृतिसन्मात्रमेवेति । तच्च नैव परमार्थतो वस्तुस्वभावम्, यथाभासमनवस्थितत्वात्। नैव च शशशृङ्गवत् तदत्यन्ताभावस्वभावमपि, अविचारतो रमणीयत्वेनाव-भासमानत्वात् । यथोक्ता संवृतिस्तावन्नैव वस्तुस्वभावाऽपि, विपरीताकारोप-ग्राहेणाभासितत्वात् । तत्त्वान्यत्वयोस्तावत् परस्परपरिहारस्थितलक्षणत्वात् तत्त्वान्यत्वविरोध इति पूर्वमेव निर्दिष्टम् ।

न च ते अत्यन्तमभावस्वभावे, अवभासमानत्वात् । अतः सर्वं खलु वस्तु सदसत्स्वभावातीतम् । अतो भावमभावं वा स्वभावमाश्रित्य यत्तावच्चोद्यं तत्सर्वं निराधारमेव। वस्तुन्येव तावद् विधिर्वा प्रतिषेधो वा सम्भवी । विधिप्रतिषेधाभावे त्वसदेव । अत उभयं खल्वसत्स्वभावविरुद्धम्, नैव तदसद्वस्तुनि (सम्भवति) ।

कस्यचिदेकस्यापि स्वभावस्य तत्रासिद्धेः उभयासत्स्वभावत्वेन व्यवस्थाप्यते। अतो नास्त्युभयासत्स्वभावे कश्चन विरोधः । अपेक्षाविशेषेण सामर्थ्यासामर्थ्यादिविरोधोऽपि नैव सम्भवी, असामर्थ्यादीनां परमार्थसत्याश्रितत्वेन सामर्थ्यादीनां च संवृतिसत्याश्रितत्वेन व्यवस्थीयमानत्वात् ।

मायापुरुषादिवत् सर्ववस्तुषु भ्रान्ताभ्रान्तज्ञानाभ्यां व्यवस्थापनात् क्रमशः सत्यद्वयभेदो व्यवस्थाप्यते । मायापुरुषादौ भ्रान्तैर्यथा व्यवस्थीयते, तथा सर्ववस्तुषु मिथ्याकारेण ज्ञानेन यदारोपितं तत् संवृतिसत्यमिति व्यवह्रियते । मायापुरुषादौ अभ्रान्तैर्यथा व्यवस्थीयते तथैव सर्ववस्तुषु यः स्वभावः सम्यक्प्रमाणैः सम्प्रतिपाद्यते, स परमार्थसत्यम् । अतो मायादिव्यवहार इवापेक्षाविशेषेण सत्यद्वयाश्रिता इमे सर्वव्यवहारा अविरुद्धा एवेत्यवश्यमभ्युपेतव्यम् ।

यद्येवं नास्ति तदा तैमिरिकाद्यालम्बितेषु केशादिषु विज्ञानवादिनां च द्वयाभासेषु किमिवेमानि चोद्यानि न स्युः । इत्थं यदीमे केशादयः परमार्थतोऽसन्त एव तदा कथमिव ते सद्रूपेणावभासन्ते, कथमिव च देशकालावस्थानां पृथङ् निश्चयः परिगृह्यते । उत्पादानुत्पादादयः सदसती च परस्परमेकस्मिन् नैव युज्यन्ते, यतो हि तत्र यथा केशादिषु द्वयाभासेषु च भ्रान्ताभ्रान्तज्ञानाभ्यां व्यवस्थितस्वभावस्य संवृतिपरमार्थसत्यमाश्रित्य संवृतौ सत्त्वं परमार्थे चासत्त्वं व्यवस्थाप्यते, यथा च तत्रापेक्षा-विशेषस्तावदविरुद्ध एव, तथैव सर्ववस्तूनां सादृश्येन नेदं चोद्यं युज्यत एव।

ये च संवृतावुत्पाद इत्यभिदधते, तेषामयमाशयः—येन हेतुना यथोक्तभ्रान्तानां संवृतिस्वभावानां वस्तूनां नैव सम्यगुत्पादो जायते तथाप्युत्पत्ति-सादृश्यमुपदृश्यते, अतस्तेषां बुद्धिमधिकृत्य संवृतावुत्पादो भवतीत्यभिधीयते । अत एव भगवता चाप्युक्तम्—"भावा विद्यन्ति संवृत्या" इति । (लङ्कावतारे १ : ४२९)

परमार्थतोऽनुत्पन्नत्वादिकं यदुक्तं तस्यायमर्थः—सम्यक् श्रवणचिन्तन-भावनोत्पन्नानि सर्वज्ञानान्यविपर्यस्तविषयित्वात्परमानि, तेषामर्थः परमार्थ इति । प्रत्यक्षेण वा परम्परया वा कृता भेदा अपि सन्ति । ताभ्यां सर्वाणि वस्तूनि अनुत्पन्नत्वेनैव ज्ञायन्ते । इत्थं परमार्थतोऽनुत्पाद इति सम्यग्ज्ञानेन असिद्धोत्पाद इत्येव वक्ष्यते । अत उभे अपि न स्तोऽसम्बद्धाभिधाने यद्येवं नास्ति तदा भवद्भिरपि 'सर्वाणि वस्तूनि परमार्थतोऽनुत्पन्नानि' इत्यादीनामर्थः कथमुपनीयते, कथं वा भवतां सत्यद्वयाश्रितो व्यवहारः प्रवर्तते । यदि नियतं शब्दार्थमतिरिच्य मिथ्यैव परे दूष्यन्ते तदा स्पष्टमसम्बद्धमेवाभिधानं परिलक्ष्यते ।

अपरीक्ष्यैव अविकल्पमात्रमित्यादि यदुक्तं तदप्यसम्बद्धमेव, यतो हि चिन्तनोत्पन्नस्य प्रज्ञातत्त्वस्याविपरीतत्वेन नियतचिन्तनगतसम्यक्प्रमाणबलोत्पन्नं तथैव भावनाबलोत्पन्नमपि कल्पितमेवोच्यते, यतो हि तत्त्वार्थप्रत्यक्षस्तावत् सम्यग्विचार-हेतुकस्तन्निष्यन्दभूतश्च भवति ।

यानि खलु तत्त्वार्थपराङ्मुखानि मिथ्याकारोपगृहीतानि ज्ञानानि, तानि सर्वाणि तद्विपरीतत्वाद् अकल्पितानीत्युच्यन्ते, तानि नैव निर्विकल्पानि, नैव च कल्पनामात्ररहितानि । अतस्तत्प्रसिद्धस्वभावत्वात् सर्वाणि मिथ्याकारस्वभावानि वस्तूनि संवृतिरित्यभिधीयन्ते । फलतोऽकल्पितत्वेऽपि न तावन्निर्विकल्पज्ञानम्, न चानुमानप्रसिद्धार्थस्य परिहारः, नैव च वस्तुतत्त्वस्वीकारः । नैवात्र

तावदसन्निषेधाभिलाषोऽपि । इत्थं दूषणमिदं सर्वबालपृथग्जनान् संक्लेशयितुं शब्दप्रयोगमात्रमेव । अतो नैव तद् विदुषां सन्तोषकरमिति ।

(६५) 'संवृतिर्लोकप्रसिद्धा' इत्यादिकं यदुक्तं तच्च दोषरहितमेव, सर्वेषां लोकप्रसिद्धार्थानां संवृतित्वेनाभ्युपगमात् । नापि सर्वेऽर्थाः सर्वेन्द्रियगोचराः, केनचित् कस्यचिदेव ग्रहणात् । अतः कर्मफलादीनां पृथक्शो नियतव्यवस्था या अत्यन्तपरोक्षा, सा सर्वथा सर्वज्ञज्ञानस्यैव गोचरा, न तु सामान्यज्ञानविषया । केचन शास्त्ररचयितारः प्रसिद्धिमतीत्य कल्पनादिस्वभावत्वेनोपकल्पितं वस्तु मिथ्यासंवृतिसदिति कथयन्ति, तत्तु प्रसिद्धावप्यसदिति । यत्तु प्रतीत्यसमुत्पादानुकूलत्वेन परिकल्पितं तत्तु "नास्तीह सत्त्व आत्मा वा धर्मास्त्वेते सहेतुकाः[१]" इत्यतः संवृतिसदेवेत्युक्तम् । अतो वस्तूनामनेकत्वेऽपि प्रणेतृभिर्यद्यप्यनेकस्वभावत्वेन कल्पितानि, तथापि तेषां स्वभावे नैव परस्परविरोधः ।

(६६) यच्च 'मायार्थः संवृत्यर्थः' इत्युक्तं तदप्यसत्यार्थे मायार्थस्य स्वीकाराद् दोषरहितमेव, अत्यन्ताभावस्वभावाभावात् । अतो नास्त्यस्मिन् पूर्वोक्तो दोषोऽपि । नापि चात्र संक्लेशव्यवदानापवाददोषोऽपि, तस्य पूर्वं निराकृतत्वात् ।

मायार्थस्य मिथ्याज्ञानार्थत्वे ज्ञानवस्तुनि नैव प्रसङ्गः, मिथ्याकारोपगृहीतत्वेनावभासनात्, सत्यासत्ययोः परस्परविरुद्धत्वाच्च । मिथ्यास्वरूपस्यापि सत्यत्वेनावभासे सति नैव ज्ञानं भ्रान्तं स्यात्, तस्मिन्नेकस्वभावोऽपि नैव युक्तरूपः, एकस्मिन्नेकस्वभावस्य विरुद्धत्वात्। असत्यस्वभावस्य मिथ्यात्वाद् भ्रान्ते सति नैव ज्ञानं सत्यं स्यात्, तयोः सर्वात्मना परस्परविरुद्धत्वात्, एकस्मिन्नवयवावयविभावस्यासम्भवाच्च । अतो मिथ्यास्वभावत्वाज्ज्ञानस्वरूपेऽन्तर्ज्ञेयवादिनां मते महान् विशेषो (भेदः) जायते ।

(६७) संवृतिः शब्दमात्रात्मिकेत्यादि यदुक्तं तदपि पूर्वपक्षरूपेण स्वमतोपकल्पितमेव । अतस्तन्नैव युज्यते । सुगतमतेष्वपि जगदिदं शब्दमात्रमेवेत्युक्तम् । यथोक्तम् सूत्रे—

सूत्रे सूत्रे विकल्पोक्तं संज्ञानामान्तरेण च ।
अभिधानविर्निमुक्तमभिधेयं न लक्ष्यते[२] ।। (लङ्कावतारसूत्रम्, ३-७८)

---

१. द्र०-अभिधर्मकोशे पुद्गलविनिश्चयः, पृ० १२०३ (बौद्धभारतीसंस्करण, १९८७)।
२. द्र०-लङ्कावतारसूत्रं, दे० क०, 'च', पृ० २६० ख ।

ये तावदभिधानं वस्तुभूतम्, अभिधेयं च तदतिरिक्तमिति कल्पयन्ति, तेषामेवं कल्पयतां मतनिषेधार्थमेवाभिधेयं कल्पनायां प्रतिष्ठितमित्युपदर्शितं संज्ञामात्रे प्रतिष्ठितमित्यादिना । संज्ञा तावदत्र कल्पनामात्रात्मिकैव, तस्यामवभास्यमानं नामैवाभिधानम्, अर्थस्त्वभिधेयः ।

अतोऽभिधानादतिरिक्तमभिधेयं नास्तीत्युक्तम्[१] ।

कल्पनाज्ञानेऽवभास्यमानमभिधानमत्र नामशब्देनाभिप्रेतं, न तु श्रोत्रविज्ञान-विज्ञेयः शब्दः तस्याभिधानत्वाभावात् । एतावन्मात्रत्वे सति रूपादीनां सर्वे विविधाभासा न सेत्स्यन्ति, न च स्कन्धादीनां व्यवस्थाऽपि सेत्स्यति । सूत्रेऽपि परमार्थसत्यनिर्देशसामर्थ्येन सर्वेषां ज्ञानज्ञेयाभिधाना-दीनां संवृतिसत्यत्वेन निर्दिष्टत्वान्नैव ते शब्दमात्रत्वेन निर्दिष्टा इति । आर्यसत्यद्वयनिर्देशसूत्रेऽप्युक्तम्—

"यदुत देवपुत्र, परमार्थस्तावत् सर्वव्यवहारातीतः, यतो हि निर्विशेषः अनुत्पन्नः अनिरुद्धः अभिधानाभिधेयज्ञानज्ञेयादिरहितः स इति[२]।"

एतत्सामर्थ्येन ज्ञानज्ञेयाभिधानादयः सर्वे संवृतिसत्यत्वेनोपदर्शिताः, संवृति-सत्यस्य परमार्थस्वभावनिवृत्तत्वात् । अत एवार्याक्षयमतिनिर्देशसूत्रेऽप्युक्तम्—

"एतदानुकूल्येन लोकव्यवहारस्तावज्ज्ञानज्ञेयात्मकः अक्षरशब्दै-र्निर्दिष्टोऽभिधानात्मक एव संवृतिसत्यमिति वेदितव्यम्, न तु अभि-धानाभिधेयमात्रात्मकमिति" । अन्यथा यत्र चित्तस्य प्रवृत्तिरपि नास्ति, एवंविधः परमार्थः संवृतिसत्यनिवृत्तस्वभाव इति निर्देशोऽपि कथमुपपन्नः स्यात् । तत्र परमार्थत्वेन निर्दिष्टानामर्थानामवस्तुभूतानां सुभाषितादिविभागोऽपि नैव सुशक इति चोद्यं तावत् सिद्धसाधनमेव । सर्वे धर्मास्तथतात्वेनैकरसा एव । तथतायां नास्ति कश्चनापि विभागः । अतः सुभाषितदुर्भाषितत्वेन यदि तथतास्वभावो नैव विभागार्हस्तदा नैवायं कश्चनापि दोष इति।

इत्येवं ये ताथागतागमाः प्रत्यक्षपरोक्षतया परमार्थाभिधायका देहवतां च हितसुखजनकास्ते सुभाषितानीत्युच्यन्ते, तद्विपरीतानि न सुभाषितानीति तेषां भेदः

---

१. नाभिधानात् पृथग्भूतमभिधेयं हि विद्यते। (लङ्कावतारसूत्रम्)
२. द्र०-आर्यसत्यद्वयनिर्देशसूत्रं, दे० क०, 'म', पृ० २४७ क ।

सिध्यति । भवन्मतानुसारं तावन्नाम्नः परिकल्पितस्वभावतयोपादानात् सुभाषिता-सुभाषितरूपेण कथं व्यवस्था क्रियते ? अस्मिन् भवतां यदुत्तरम्, अस्माकमपि तथैवेति गौणमेवैतत्। यत्तावच्छब्दार्थेत्यादिकमुक्तम्, तदपि नैव युज्यते, शब्दार्थयोः संवृतिमात्रत्वाभावात् ।

(६८) शब्दार्थोऽप्यस्तीति निर्दिश्यते, यतो हि अभिधेयादिसमस्तवस्तूनि परमार्थतो निःस्वभावत्वेन मायादिवत् परिकल्पितस्वभावानि । यथा अनेके पुरुषाः पुरुषेतिशब्दार्थसामान्याकारस्वभावेन व्यवस्थाप्यन्ते, तथैव परमार्थतो निःस्वभावानि वस्तूनि कथं न व्यवस्थापयितुं शक्यन्ते ? विशेषतः केवलं वस्तुस्वभाव एव शब्दार्थसामान्यस्वरूपो भवतीति यदुक्तं तत्र किमपि कारणं नैव पश्यामः । अनादीति यद् विशेषणं नास्ति वस्तुभूतं तस्याप्यसदिति सामान्यव्यवहारो दृश्यते । सुखादीनि स्वसंवेद्या-नीत्यादिकं यदुक्तं तदपि नैव युज्यते, तेषां सर्वेषां सुखादीनां संवृत्यन्तर्गतत्वादिति पूर्वं कृत एव निर्देशः । वस्तूनि केवलमनिदर्शनस्वभावानि एव भविष्यन्तीति यदुक्तं तत्रापि नास्ति काचन युक्तिः, केशोण्डुकद्विचन्द्रादि-मिथ्यास्वभावानामप्यनिर्वचनीयस्वभावेन दृश्यमानत्वात् । सूत्रेऽप्यभिधानाभिधेयादयः सांवृतिकाः, न तु सत्स्वभावा निर्दिष्टा इति पूर्वमुक्तमेव । अस्य स्रोतोभूतं सूत्रं पूर्वं निर्दिष्टमेव ।

ये केचन परमार्थं यद्यपि प्रसज्यमात्रमित्यभिदधते, (किन्तु) स तथा प्रसज्यमात्रो न भवति । अनिश्चितमेव तस्य लक्षणम् । यस्तावत् परमार्थे ह्यारोपितस्वभावः स संवृतिरेव । स (परमार्थस्तु) सर्वप्रपञ्चातीतः । सूत्रेऽप्युक्तम्—"मञ्जुश्रीः, किं तावत् परमार्थसत्यम् ? मञ्जुश्री-राहदेवपुत्र, यदि परमार्थतः परमार्थसत्यं कायवाक्चित्तनिषेधमात्रस्वभावः स्यात्तदा स परमार्थसत्यमिति संख्यां न गच्छेत्, तदा स संवृतिरेव स्यात् । अपि च, देवपुत्र, परमार्थतः परमार्थसत्यं सर्वव्यवहारातीतमिति"।[१]

तेषु वस्तुवासनाया अपि पूर्वं कृतनिषेधात् केवलं संवृत्यन्तर्गतान्येव तान्यतोऽन्यतः पूर्तिर्नैवावश्यिकी । यदि प्रमाणैरभावो नैव मायादिभिर्भिन्नस्तथापि परमार्थतः स्वतः सदिति नाम क्रियते तदा सहर्षं क्रियतां स्वैरमुत्सवोऽप्यनुभूयताम्, किन्तु स्वमतानुकूल्येन कृतां व्यवस्थां वस्तूनि नैवानुविदधते । प्रतीत्यसमुत्पन्नता

---

१. द्र०-आर्यसत्यद्वयनिर्देशसूत्रं, दे० क०, 'म', पृ० २४७ क ।

स्वसंवेद्यता च नैव वस्तुनो हेतुर्भवति, मायाकेशोण्डुकादीनां भ्रान्तत्वात् कुत्रापि सम्बन्धस्यासिद्धत्वाच्च । यद्यप्रतीत्यसमुत्पन्नत्वे वस्तूनि नैव दृश्यन्ते तदा तददर्शनमन्यत्रापि तथैव स्यादिति कथनमसम्बद्धमेव, सत्यपि व्यापके वृक्षे शिंशपासत्त्वस्यानिवार्यत्वात् । अतः सुखादीनि तावदविपरीतत्वेनासिद्धत्वान्नैव निर्विवादभूतानि ।

(६९) क्षणमात्रातिरिक्तत्वेनास्थितत्वादित्यादिकं यदुक्तं तदपि नास्त्यस्वीकार्यम्, स्वभावतोऽनित्यत्वस्यानुपपन्नत्वात् । वस्तूनां यदि सम्यक्त्वं तदा स्थितत्वास्थितत्वयोः परस्परविरोधोऽप्यनुपपन्न एवेति पूर्वं कृतनिर्देशादिति । अतश्चलस्वभावत्वाद् वस्तूनि तावन्निःस्वभावत्वेन प्रदर्श्यन्ते, अत एव च तानि संवृतिस्वभावान्युच्यन्ते ।

यदि चलस्वभावार्थः संवृत्यर्थस्तदा नास्त्यनिष्टापत्तिः । तानि सर्वाणि चलस्वभावानि वस्तूनि मायादिवत् प्रकृत्या निःस्वभावलक्षणरहितानि, परमार्थस्वभावानि चेति । सोऽपि (स्वभावः) तथागतः स्यान्नवा स्यात् सर्वदा स्थितत्वान्नित्यः, अतो नास्ति सिद्ध-साधनम् ।

(७०) यदपि असत्यार्थेत्यादिकमुक्तं तदपि सत्यशब्दस्यार्थानभिज्ञतयैवोक्तम्, भ्रान्तबुद्धित्वात् संवृतेरिति पूर्वं निर्देशात् । मिथ्याकारतयोपगृहीतत्वेन स असत्य इत्युक्तः । सम्यक्तया असत्येऽपि तस्मिन्, सत्य इव प्रसिद्धत्वात् तच्चिन्तनाधिकारेण सत्येति नाम्ना व्यवह्रियते । यदा सर्वाणि ज्ञानज्ञेयादीनि संवृतिरित्युच्यन्ते, तदापि लोकप्रसिद्ध्यैव सत्यानीत्यभिधीयन्ते, न तु सम्यग्ज्ञानाधिकारेण, शब्दमात्रस्य अपेक्षाविशेषवशेन प्रयुक्तत्वात् सत्यासत्ययोः परस्परविरोधाभावात् ।

विपरीताकारेणावभासितत्वात् संवृतिस्तावद् वस्तुत्वेन नैवाभ्युपेयते, अन्यत्वाभावादिति पूर्वमेवावेदितम् । तया व्यवस्थितं जगत् तदधिकारेण यतः सत्यमित्युच्यते, अतः संवृतिरवश्यं वस्तुतया स्वीकर्तव्येति यदुक्तं तस्याप्ययुक्तत्वात् प्रतिज्ञा नैव हापयितुं शक्या ।

(७१) संवृतिः प्रमाणम् अप्रमाणं वा ? यदि प्रमाणं तदा कथं सा संवृतिः? यद्यप्रमाणं तदा कथं तया नैरात्म्यं साधयितुं शक्यम् ? - इति यदुक्तं तदपि नैव युक्तम्। यतो हि यथा अनुमानज्ञानस्य मिथ्याकारग्रहणप्रवृत्तत्वात् संवृति-

स्वभावत्वेऽपि अभीष्टार्थक्रियाप्रापकत्वात् प्रमाणत्वमभ्युपगम्यते तथैव संवृतिस्वभावस्य मिथ्यात्वेऽपि यथानुरूपश्रवणमननादिहेतुपरम्परागतत्वाल्लौकिकलोकोत्तरार्थैः सहाविसंवादात् प्रमाणत्वमभिधीयते, तद्विपरीतत्वे त्वप्रमाणम् । प्रमाणादिसर्वव्यवस्थास्तावद् व्यवहारेणैवेति पूर्वं प्रसाधितमेव, अतस्ता गौणा एव ।

(७२) यानि विज्ञानादीनि संवृतिबीजानि तानि परमार्थतोऽङ्गीकर्त्तव्यानीति यदुक्तं तन्न युक्तियुक्तम्। यदीमानि कारणमात्राणीति साध्यन्ते तदा सिद्धसाधनमेव, यतो ह्येतेषां स्वानुरूपहेतवस्तावदनादिसंवृतिरूपा इति स्वीक्रियन्त एव, नेमान्यहेतुकत्वेन प्रतिज्ञायन्ते ।

यदि तद् बीजं परमार्थसिद्धमेकं चेति तदा कुत्रापि तदन्वयाभावादनैकान्तिकमेव । वृक्षाद्यशेषसंवृतीनां यद्युत्तरोत्तरोपादानहेत्वानुकूल्यं न परीक्षिष्यते तदा रमणीयतामात्रमेव दृष्टं स्यात् । नापि विरुद्धो हेतुः, यक्षानुरूपबलेः सद्भावात् सर्वास्ताः संवृतयोऽसत्स्वभावाः प्रसाधिता एव। अन्यथा (यद्येवं न स्यात्) कथं ताः संवृतय इति । यद्यसत्स्वभावास्तदा बीजान्यपि तदनुरूपावस्तुभूतान्येव, न ते वस्तुभूतानि, तद्विरुद्धत्वाद् असिद्धत्वात् प्रमाणबाधितत्वाच्चेति ता गौणा एव ।

(७३) वस्तुस्वभावस्तावत् स्वीक्रियत इति यदुक्तं तत्तु येन कारणेन वस्तुस्वभावः स्वीक्रियते तेन सत्यद्वयभेदानुविधानं कुत्रापि नैव सिध्यति । असत्यपि वस्तुस्वभावे अपरीक्ष्यमाणानि रूपादीनि सिद्धान्येव। तेषु ये उत्पादादयः समारोप्यन्ते ते संवृतिसत्यत्वेन व्यवस्थाप्यन्ते । प्रमाणैः सम्यङ् निरूप्य अनारोपिता ये तावदनुत्पादादयस्ते परमार्थसत्यतया व्याह्रियन्ते । अतः परमार्थतोऽसत्यपि वस्तुस्वभावे सत्यद्वयं व्यवस्थाप्यत एवेति गौणा एव ।

(७४) यत्तावदिदं गौणं परमार्थमित्युक्तं तदप्यसम्बद्धमेव, धर्मपुद्गलनैरात्म्यलक्षणायास्तथताया युक्तिसङ्गतत्वात् । परमोऽपि सा, आवरणपरिहारार्थिभिरर्थ्यत्वादर्थोऽपि सा । अविपरीतस्य ज्ञानस्य अर्थ इति विषय इति कृत्वा सा परमार्थ इत्युच्यते । यत्खलु विषयि लोकोत्तरं ज्ञानं तदन्यशब्दार्थप्रयोगैरपि व्यवह्रियते । श्रवण-मनन-भावनोप-जातायाः प्रज्ञाया अनुकूलत्वाद् व्यवहारेणैव सा एवमभिधीयते ।

तत्र येन कारणेन परमार्थतत्त्वलक्षणभावनया योगिभिरशेषसंक्लेशान् परिहृत्य उत्तरोत्तरप्रज्ञादिविशेषगुणांश्चधिगम्य महार्थत्वं प्रसाध्यते, तेन 'परम'-

शब्दप्रयोगः सर्वथा युज्यत एव । तदपि लोकोत्तरं परमं ज्ञानं सर्वकल्पनाविगतत्वात् सर्वधर्मनिराभासत्वाच्च स्वसंवेद्यमनुपलम्भात्मकं च, न तूपलम्भस्वरूपम् । यथोक्तम्—

''देवपुत्र, परमार्थसत्यं तावत् सर्वाकारपरमगोचरसर्वज्ञस्याप्यतीतम्[१] ।''

अनेन वस्तुविषयतः सम्यगतीतत्वेन निर्देशादालम्बनदर्शनस्य निषेध एव कृतः । परमार्थलक्षणे यज्ज्ञानात्मकमित्युक्तं तदप्यशेषसम्पदाधारभूतमेव । अतो महार्थसाधकत्वात् परमार्थस्तावन्नास्ति गौणः ।

अपि च, यद्यस्ति तावदेकः कश्चन गौणः परमार्थस्तदा निर्वाणं तावत् कीदृशः परमार्थः ? तत्र कस्यापि वस्तुनः सम्यक्तया अर्थस्वभावसम्भवाभावात् तदपि कथमेभिश्चोद्यैरनवमर्दनीयं स्यात् । अतस्तत्र यद् भवतामुत्तरं तदस्माकमपि समानमेव । परमार्थे वस्तूनि तावन्न सन्तीति यदुक्तं तदपि परमार्थमधिकृत्य ज्ञानात्मकत्वं सम्यगविपरीतत्वेनासदेवेत्युक्तम्। एकेन खलु प्रकारेण परमार्थस्तावदसन्निति यदुक्तं तत्तत्त्वतो विचारेणासदेवेत्यर्थः ।

(७५) संवृति-परमार्थयोरेकत्वमिति यदुक्तं तत्र भगवान् परमार्थलक्षणं संस्कारलक्षणेन सह तत्त्वतो नान्यं नानन्यमिति स्वयमेवोक्तवान् । यथोक्तमार्य-सन्धिनिर्मोचनसूत्रे—

''यदुत यदि परमार्थलक्षणं संस्कारेभ्यो नान्यं (अभिन्नं) स्यात्तदा सर्वे बालपृथग्जनाः सत्यदर्शिनः स्युः । ततश्च सर्वे प्राप्तनिर्वाणाः सर्वज्ञाश्च भवेयुः । यथा च संस्काराः संक्लेशलक्षणास्तथैव परमार्थोऽपि संक्लेशलक्षणः स्यात् । तथा च यथा परमार्थः सर्वसंस्कारेष्वभिन्नस्तथा संस्कारलक्षणान्यपि (अभिन्नानि) स्युः, किन्तु संस्कारलक्षणानि भिन्नानि, फलतः परमार्थो नैवानन्यः । भूतार्थप्राप्तेरनन्तरं योगिभिः परमार्थगवेषणं नैव युज्यत इति परमार्थस्तावत् संस्कारेभ्यो नास्त्यन्यो नान्योऽपीति । अन्यथा सत्यदर्शिनां संस्कारनिमित्तमनभिभूतमेव स्यात् । संस्कार-निमित्तस्यानभिभवाद् योगिनस्तावन्नैव निमित्तबन्धनान्मुक्ताः स्युः । निमित्त-बन्धनैरमुक्तत्वान्न च ते दौष्ठुल्यबन्धनादपि मुक्ताः स्युः । तस्मादमुक्तत्वान्नैव स्यात् निर्वाणसिद्धिर्न वानुत्तरसुखानुभूतिरपि । अपि च, परमार्थलक्षणं यदि

---

१. द्र०-आर्यसत्यद्वयनिर्देशसूत्रं, दे० क०, 'म', पृ० २४७ क ।

संस्कारलक्षणेभ्यो भिन्नं स्यात्तदा न स्यात् परमार्थः संस्काराणां सामान्यलक्षणम् न च परमार्थलक्षणं संस्काराणां नैरात्म्यं निःस्वभावता वा स्यात्, नापि संक्लेशव्यवदानयोः पृथग्लक्षणं सिध्येत् । फलतः शंखस्य शुक्लत्वमिव परमार्थलक्षणं संस्कारेभ्यस्तत्त्वान्यत्वाभ्यामनिर्वचनीयमेवेति'' ।

वस्तुतायामेव तावत्तत्त्वान्यत्वकल्पनं सम्भवति। परमार्थलक्षणे तु निःस्वभावत्वेन तत्त्वान्यत्वाभ्यां वस्तु नाभिधातुं शक्यते । वस्तुसत्त्वे हि तत्त्वान्यत्वबोधस्य सम्भवान्न तु निःस्वभावे वस्तुनि तत्सम्भवः, अतो नास्ति विरोधः। ज्ञानात्मकपरमार्थोऽपि संवृत्या सह तथतालक्षणे परमार्थाकारे एकत्वेन स्वीक्रियत एव । यथोक्तमार्यप्रज्ञापारमितायाम्—

''किं भगवन्, अस्ति लोकसंवृतिरन्या, परमार्थोऽप्यन्यः ? भगवानाह— सुभूते, नैव लोकसंवृतिरन्या, परमार्थोऽप्यन्यः । यत्तावल्लोकसंवृतेस्तत्त्वं तदेव परमार्थस्यापि तत्त्वमिति'' । ज्ञानात्मकस्तु परमार्थो मायादिभिरभिन्नत्वात् सम्यक्संवृतिस्वभावश्च तत्त्वावबोधानुकूलत्वात् परमार्थस्वभावश्च । अतोऽपेक्षाविशेषवशेन एकस्मिन्नुभयस्वभावो नैव विरुद्धः ।

(७६) यत्तावद् भवद्भिः पुण्यज्ञानसम्भारपारिपूरिर्दुष्करेत्यादिकमुक्तं तदपि नैव युज्यते, अनेनैव तावद् दर्शनेन सम्भारपरिपूर्णताया युज्यमानत्वात्। इत्थं सम्यग्दृष्टिसमुत्थिता एव दानादयः परिशुद्धहेतुसमुत्थितत्वादिष्टफलं विशेषफलं चाभिनिर्हरन्ति, न तु विपरीतसमुत्थिताः, मिथ्यादृष्टिसमुत्थितशीलाङ्गादिवत् ।

परमार्थतो दानादिवस्तूनामभावात् तदुपलम्भो विपरीत एव, मरीच्यादिषु जलोपलम्भवत् । अतस्तत्समुत्थितपारमितानां सर्वोऽपि प्रयासो मिथ्यात्मात्मीयसमुत्थितदानादिवद् अविशुद्धहेतुसमुत्थितत्वेनात्यन्तं निर्बल एव । उपलब्धिलक्षणप्राप्तानां दानादीनामनुपलब्धिस्तावत् सम्यगर्थत्वेन मरीच्यादिषु जलानुपलम्भ इवाविपरीतैव । अतस्तत्समुत्थितदानादयो महाफलाः, सूपचितहेतुसमुत्थितत्वेन स्वस्थबीजाभिनिर्हृताङ्कुर इव । अतोऽनुपलम्भसमाश्रितेषु दानादिषु सम्यग्दृष्टिसमुत्थिततया विद्वज्जनेषु श्रद्धैवोत्पद्यते, न त्वन्येषु । येन कारणेन दानादिष्वप्रवृत्तेः पुण्याभावस्तानि दातव्यादीनि नैवात्यन्तमसद्भूतानि, संवृतौ तेषां सद्भावात्। नैव च सर्वदाऽनुपलम्भ एव, असमाहितावस्थायां मायादिवत् तेषामुपलम्भोऽपि । तदाधिमुक्तिसमुद्भूतानुपलब्धौ तानि व्यवस्थाप्यन्त एव । यथोक्तं भगवता—

"कथं भगवन्, उपायकुशला बोधिसत्त्वा महासत्त्वा दानं दत्वा प्रज्ञापारमितां परिसम्पादयन्ति ? भगवानाह—सुभूते, यदा बोधिसत्त्वा महासत्त्वा दानं दत्वा परित्यजन्ति तदा मायाबुद्धिरेव तेषां दाने सूपतिष्ठतीति" विस्तरः ।

अत एव भगवन् ये बोधिसत्त्वा भवन्ति, तेभ्यो मायादिवदधिमुक्त्या अर्थिजनेभ्यः पुत्रादीनां परित्यागो रोचते । समापत्त्यवस्थायां तु दानादीनामत्यन्त-मनुपलम्भ एव । तदा ते तत्प्रवृत्तिं नैवाश्रयन्ते, समाहितावस्थायां दानादी-नामुपेक्ष्यमाणत्वात् । किन्तु पृष्ठलब्धावस्थायां तावत् ते प्रवर्तन्त एव । आर्यरत्न-कूटसूत्रेऽप्युक्तम्—

"भिक्षवः, बोधिसत्त्वैर्दानादीनां स्वभावोपलम्भो नैव कर्त्तव्यः, अदानमपि नैवाचरितव्यम्" इति विस्तरः ।

अत एव प्रज्ञापारमितादिष्वपि शून्यताधिमुक्तस्य अनुपलम्भाश्रितानि दानादीनि बृहत्फलानि परिपूर्णानि चेत्युक्तानि । यथोक्तं तत्रैव—

"तत्किं मन्यसे सुभूते, सुकरं पूर्वस्यां दिशि आकाशस्य प्रमाणमुद्गृहीतुम्? सुभूतिराह नो हीदं भगवन् । एवमेव सुभूते, यो बोधिसत्त्वोऽप्रतिष्ठितो दानं ददाति, तस्य सुभूते, पुण्यस्कन्धस्य न सुकरं प्रमाणमुद्गृहीतुम् ।[१]"

दानशब्दोऽत्र षट्पारमितावाचकः, षट्दानपारमिता इत्युक्तत्वात् । आर्यरत्नाकरसूत्रेऽप्युक्तम्—

"बोध्यर्थमनुतिष्ठद्भिः सर्वे धर्मा निःस्वभावा ज्ञेयाः । तत्र दानमपि निः-स्वभावत्वेन ज्ञायते । उपादाता च निःस्वभावत्वेन ज्ञेयः, देयमपि निःस्वभावमिति ज्ञेयम्, परिणामनाऽपि निःस्वभावेति ज्ञेया, यस्य खलु परिणामना क्रियते, तदपि निःस्वभावत्वेन ज्ञेयम् । यदर्थं हि परिणामना विधीयते तदपि निःस्वभावत्वेनैव ज्ञेयम् । तत् किमर्थम् ? दानं तावद् दानस्वभावेन शून्यम् । तथैव उपादाता देयं दानफलं परिणामना बोधिश्चेति तत्तत्स्वभावेन शून्या इति योगः करणीयः । एवं हि शून्यताधिमुक्तस्याप्रमेयैश्चिन्तनैर्दानपारमिता परिशुद्धा भवति, तद् दानं च दानपारमितेति संज्ञां प्रतिलभते, न तु कदापि मलिना भविष्यति[२]"— इति विस्तरः ।

१. वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता, पृ० ३०, तिब्बती-संस्थान।
२. द्र०-आर्यरत्नाकरसूत्रम्, दे० क०, 'थ', पृ० २४४ ख ।

इत्येवमनुपलम्भसमाश्रितानि दानादीनि बृहत्फलानि विशुद्धानि च भवन्ति । ततश्च अनुत्तरसम्यक्संबोधिस्तावत् करतलस्थितेव भवति, उपलम्भावकाशोऽपि दूरत एव स्थितः ।

(७७) सर्वे धर्मा निःस्वभावा इति यदुच्यते, तस्य तावत्कोऽर्थः ? यद्यात्मनाऽसत्त्वान्निःस्वभावास्तदा सिद्धसाधनमेवेति यदुक्तं तदपि यद्यात्मनाऽसत्त्वान्निःस्वभावत्वेन व्यवस्थाप्यते तदा न च विरुद्धत्वं नापि सिद्धसाधनमिति । यतो हि यदि वस्तुनः स्वभावोऽविपरीतस्तदा परापेक्षया तत्सत्त्वम् आदितश्चासत्त्वं नैवोपपद्यते, एकस्मिन् सदसत्त्वयोः क्रमेणापि विरोधात् । फलतस्तावदिमानि वस्तूनि परमार्थतः स्वभावेन परापेक्षितानीत्यतो निःस्वभावान्येव । न हि स्वभावस्य कृतकत्वं नाम युज्यत इति पूर्वं कृतनिर्देशात् । न चैषां परमार्थतः परापेक्षयापि सत्त्वमिति पूर्वमेव प्रसाधितम् । अतः कथमिव सिद्धसाधनम् । व्यवहारे तावदिमानि परमाश्रित्य प्रवर्तन्ते, अतो नित्यसत्त्वादीनामपि नास्ति प्रसङ्गः । एवमेव यदि वस्त्वादीनि प्रकृतितः सस्वभावानि तदा स्वात्मनाऽसत्त्वं स्वभावेन च सत्त्वं नैवोपपद्यते, विरुद्धत्वात् । एकस्मिन् वस्तूनि सत्त्वासत्त्वस्थितास्थितत्वादयः परस्परविरुद्धधर्मा नैव युज्यन्ते । अतः स्वात्मनाऽसत्त्वात् स्वभावतश्चास्थितत्वात्तानि (वस्तूनि) निःस्वभावत्वेनैव सुस्पष्टतयाऽभिव्यज्यन्ते । फलतः कथमिव सिद्धसाधनं स्यात् । परिकल्पितात्मना स्वभावतोऽसत्त्वं तदा नैव सिद्धसाधनमिति पूर्वमेव प्रसाधितम्, प्रमाणबाधितत्वात् परिकल्पितस्वभावस्येति ।

वस्तूनामुत्पत्तिरपि परमार्थतः प्रमाणबाधितैव । सा च संवृत्या युज्यते, न तु ग्राह्य-ग्राहकस्वभावतया । यच्चार्याणां परमज्ञानगोचरं वस्तूनामविपरीतं स्वलक्षणं तदपि नैव सदिति युक्त्यागमाभ्यां पूर्वं प्रतिपादितमेव । या च संक्लेश-व्यवदानव्यवस्था, साऽपि नैवाविपरीतस्वलक्षणसमाश्रिता । भगवताऽपि व्यवहार-सत्याश्रितत्वेनैवास्याः व्यवस्थाया निर्दिष्टत्वादित्यपि पूर्वमेवावेदितम् ।

(७८) सर्वाणि तावद् वस्तून्यादित एव नोत्पन्नानीत्यतोऽनुत्पन्नानीति यदुक्तं तत्र नैव सिद्धसाधनादयो दोषाः प्रवर्तन्ते, यतो हि सर्वे धर्माः परमार्थतोऽनादिकालादेव प्रशान्तत्वादनुत्पन्ना इत्यभ्युपगम्यन्ते, न तु संसारस्यानादिमात्रतया, न चापि पूर्वनिरुद्धस्य अनुत्पत्तिकतया । अपि च, भगवता बालपृथग्जनानां सन्त्रासपरिवर्जनार्थमेभिरपि प्रकारैर्वस्तूनामनुत्पत्तिः सन्दर्शिता, न तु इयन्मात्रेणैवेत्यवधार्यते, स्वपरादिभिरनुत्पादस्य पूर्वमेव निर्दिष्टत्वादिति ।

परिकल्पितात्मना स्वात्मना वानुत्पादेऽपि नैव सिद्धसाधनमिति निर्दिश्यते। मायादिवद् व्यवहारतयोत्पत्तेरभ्युपगमोऽपि सर्वथाऽनुत्पन्नत्वेन, नैवानुत्पत्तेरभ्युपगमो न वा परमार्थतोऽनुत्पत्तेरभ्युपगमः । अतो नास्ति दर्शनादिविरोधोऽपि । सर्वे तावद् धर्मा धर्मधातुलक्षणायां निःस्वभावतायां समरसत्वेन तथताकारतया नैव विशेषोत्पत्तिरित्यतोऽनुत्पत्तिरभ्युपगम्यते, तथापि नैव तत्र सिद्धसाधनमिति । लोकप्रसिद्धमपि स्वभावमालोच्य विशेषोत्पत्तिर्नास्तीत्यपि नैवोच्यते, अतो नास्ति दर्शनादिविरोधोऽपि । यद्यप्युत्पत्तिक्रियालक्षणरहितत्वाद् ईश्वरादितोऽनुत्पन्नत्वाद् वाऽनुत्पत्तिः स्वीक्रियते, तथापि नैव तन्मात्रतयैवेति, अपि तु यथा पूर्वमुक्तं तथात्वेनैवास्वीक्रियते । ये तावदनेकसूत्रविरोध इति कथयन्ति, तेभ्यः पूर्वमेव दत्तमुत्तरम् ।

(त्रियानसाधनम्) यदपि साधनविशेषेण यानत्रयसिद्ध्यनुमानं श्रद्धाविशेषेण च गोत्रविशेषानुमानं निर्दिष्टं तेनापि यानत्रयं साधयितुं न शक्यते । अनेन तावदपरिमिता यानभेदाः स्युः । पुनश्चानेन यानत्रयसाधनानुमितस्य गोत्रत्रयस्यापि निश्चितावबोधो नैव कर्तुं शक्यः, अपरिमितगोत्रभेदावबोधात् । सूत्रेऽपि—"एवं हि सति अपरिमितस्य यानभेदस्य प्रसङ्गः स्यात्"— इत्युक्तम् ।

येन खलु कारणेन सत्त्वेषु गोत्रभेदानुमानस्य नियता सिद्धिः नियतश्च श्रद्धाभेदावबोधः प्रतीयते, सोऽप्यनैकान्तिक एव । तथा हि—ये केचन केवलं परहितमेव चिन्तयन्ति, तेऽप्यकल्याणमित्रसंसर्गेण अकारणमेव परदुःखमभिनन्दन्तो दृश्यन्ते। एवमेव येऽकारणमेव परदुःखमभिनन्दनार्थमालम्बन्ते, तेऽपि कल्याणमित्रसम्पर्कादिना केवलं परहितचिन्तने प्रवर्तमाना अवलोक्यन्ते । ये खल्वल्पमात्रके स्वसुखे हिते चासज्यमानाः परेषु दौर्मनस्यं धारयन्ति, तेऽपि परेषु दौर्मनस्यविपरीतत्वे-नाप्यवलोक्यन्ते । ये तावत् भवसुखाभिलाषेण पुण्यानि सम्पादयन्ति, तेऽपि भवसुखेच्छाविपरीतत्वेन सम्यक्कार्याण्यनुतिष्ठमाना अपि दृश्यन्ते। इत्थं साधनानामनियतत्वावबोधात् श्रद्धाया अनैयत्यमनुमीयते । फलतस्तत्रानुमानेन गोत्रभेदस्याप्यनियतस्वभावोऽवबुध्यते । अतो गोत्रभेदस्याप्यनियततया कथं तावद् यानत्रयनिश्चयः साधयितुं शक्यः ।

सत्त्वानां विविधाशयवशेनापि गोत्रभेदो निश्चेतुं न शक्यते । यानि तावत् पञ्चाभिसमयगोत्राणि तान्यपि एकनिश्चयाभिप्रायेणैव निर्दिष्टानि, न त्वात्यन्तिकतया । तस्मिन्नेव हि सूत्रे गोत्राण्यनात्यन्तिकतयैव निर्दिष्टानि । तथा हि—

"सर्वकुशलमूलोत्सर्गेच्छन्तिको हि महामते, पुनरपि तथागता-धिष्ठानात् कदाचित् कर्हिचित् कुशलमूलान् व्युत्थापयति । तत्कस्य हेतोः? यदुत अपरित्यक्ता हि महामते, तथागतानां सर्वसत्त्वाः" इति (लङ्कावतारसूत्रं, पृ० २९) ।

फलतस्तथागताधिष्ठानेन तावदपरेऽप्यनुत्तरबोधौ प्रणिदधत इति ज्ञातव्यम् । यस्तावद् अक्षयमतिनिर्देशसूत्रे यानत्रयनिर्देशः, सोऽपि नैवाधारभूतः, यतो हि तथागता लोकस्य विविधाशयवशेन विविधानि यानानि निर्दिशन्तो धर्मोपदेशे प्रवर्तन्ते, न तु यानत्रयमात्रतया । एवमेव आर्यगण्डव्यूहसूत्रेऽप्युक्तम्—

"श्रीवैरोचनाख्ये लोकधातौ तथागतसमन्तज्ञानरत्नार्चिश्रीगुणकेतुराजेन अभिसम्बोधिरधिगता, तदनन्तरमेव तेन अप्रमेयाः सत्त्वाः श्रावकभूमौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः निर्याणायां भूमौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः इन्द्रियपरिशुद्धि-प्रभावनानिर्याणायां बौधौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः विमलपराक्रमध्वजायां बोधौ परिपाचिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः बुद्धभूमौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः बलसमतासमुदाचारानुगमनिर्याणायां बौधौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः सर्वत्रानुगतद्धर्यभिसम्भिन्ननययाननिर्याणायां बौधौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः चर्याप्रयोगसमवसरणनयनिर्याणायां बौधौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः समाधि-प्रस्थाननयनिर्याणायां बोधौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः सर्वारम्बणविषय-परिशुद्धिमण्डलनयनिर्याणायां बोधौ प्रतिष्ठापिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः बोधिसत्त्वबोधौ चित्तमुत्पादिताः । अप्रमेयाः सत्त्वाः बोधिसत्त्वमार्गे प्रतिष्ठापिताः" इति विस्तरः ।

(गण्डव्यूहसूत्रं, पृ० २१०)

भगवताऽपि बालजनप्रवेशार्थं यानभेदो व्यवस्थापितः, न तु नीतार्थतया निर्दिष्टः । अत एव आर्यलङ्कावतारेऽप्युक्तम्—

"देवयानं ब्रह्मयानं श्रावकीयं तथैव च ।
तथागतं च प्रत्येकं यानानेतान् वदाम्यहम् ।।

यानानां नास्ति वै निष्ठा यावच्चित्तं प्रवर्तते ।
चित्ते तु वै परावृत्ते न यानं न च यानिनः ।।

यानव्यवस्थानं नैवास्ति यानभेदं वदाम्यहम् ।
परिकर्षणार्थं बालानां यानभेदं वदाम्यहम्" ।।

(लङ्कावतारसूत्रं, पृ० ५५)

अत एव आर्यसद्धर्मपुण्डरीकसूत्रादौ एकयाननिर्देशो नैव नेयार्थ इति प्रतिपादितम् तथा हि—

''एवं रूपेषु शारिपुत्र, कल्पसंक्षोभकषायेषु बहुसत्त्वेषु लुब्धेष्वल्पकुशलमूलेषु तदा शारिपुत्र, तथागता अर्हन्तः सम्यक्संबुद्धा उपायकौशल्येन तदैवैकं बुद्धयानं त्रियाननिर्देशेन निर्दिशन्ति'' ।

पुनश्च

''इमेषु बुद्धधर्मेषु श्रद्धाध्वं मे शारिपुत्र, पत्तीयतावकल्पयत । न हि शारिपुत्र, तथागतानां मृषावादः संविद्यते । एकमेवेदं शारिपुत्र, यानं यदिदं बुद्धयानम्'' । (सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रं, पृ० २१)

पुनश्च

ये भोन्ति हीनाभिरता अविद्वसू
अचीर्णचर्या बहुबुद्धकोटिषु ।
संसारलग्नाश्च सुदुःखिताश्च
निर्वाण तेषामुपदर्शयामि ।।

उपायमेतं कुरुते स्वयम्भू
बौद्धस्य ज्ञानस्य प्रबोधनार्थम् ।
न चापि तेषां प्रवदे कदाचिद्
युष्मेऽपि बुद्धा इह लोकि भेष्यथ ।।

किं कारणं कालमवेक्ष्य तायी
क्षणं च दृष्ट्वा ततु पश्च भाषते ।
सोऽयं क्षणो अद्य कथञ्चि लब्धो
वदामि येनेह च भूतनिश्चयम् ।।

(सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रं, २:४६-४८)

बौद्धस्य ज्ञानस्य प्रकाशनार्थं
लोके समुत्पद्यति लोकनाथः ।
एकं हि यानं[१] द्वितियं न विद्यते
न हीनयानेन नयन्ति बुद्धाः ।।

---

१. कार्यं, सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र, दरभङ्गा संस्करणं......... ।

प्रतिष्ठितो यत्र स्वयं स्वयम्भू-
यर्च्चैव बुद्धं यथ यादृशं च ।
बलाश्च ये ध्यानविमोक्ष इन्द्रिया-
स्तत्रैव सत्त्वा पि प्रतिष्ठापेति ।।

मात्सर्यदोषो हि भवेत मह्यं
स्पृशित्व बोधिं विरजां विशिष्टाम् ।
यदि हीनयानस्मि प्रतिष्ठपेय-
मेकं पि सत्त्व न ममेतु साधु ।।

(सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रं, २:५६-५७)

एकं हि यानं द्वितियं न विद्यते
तृतियं हि नैवास्ति कदाचि लोके ।
अन्यत्रुपाया पुरुषोत्तमानां
यद्याननानात्वुपदर्शयन्ति ।।

(सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रं, २:५४)

तत्र प्रज्वलितगृहान्तःस्थितान् बालजनान् बहिर्निष्कासयितुमुपायभूतस्य वाहनविशेषस्य दृष्टान्तद्वारा, तद्वदेव रत्नद्वीपस्थितं नायकपुरुषं निवर्तयितुमुपायभूतस्य मध्येऽरण्यं नगरनिर्माणस्य च दृष्टान्तद्वारा भगवान् उपायभूतानि यानि त्रीणि यानान्युपदिष्टवान्, स तावन्नेयार्थ एव । आर्यबोधिसत्त्वगोचरोपायविषयविकुर्वण-निर्देशे नाम महायानसूत्रेऽप्युक्तम्—

''मञ्जुश्रीः, तस्मिन् बुद्धक्षेत्रे यानेनैकेन निर्यास्यतीति तद् यानं तावत् सारवत् स्यादिति । नास्मासु श्रावकप्रत्येकबुद्धयानव्यवस्था । कथमिति चेत् ? तथागता हि नानात्वसंज्ञाविरहिता इति हेतोः ।

यदि मञ्जुश्रीः, तथागताः कस्मैचिन्महायानं निर्दिशेयुः, कस्मैचित् प्रत्येकबुद्धयानम्, कस्मैचिच्च श्रावकयानं निर्दिशेयुस्तदा तथागतस्य तावच्चित्तम् अपरिशुद्धमभिनिवेशजुष्टं च स्यात् । प्रादेशिकी च तस्य महाकरुणा स्यान्नानात्वसंज्ञा च । धर्ममुष्टिश्चाचार्यस्य स्यात् । अपि च, मञ्जुश्रीः, येभ्यश्च सत्त्वेभ्योऽहं धर्ममुपदिशामि ते सर्वे बोधिनियता महायानपरायणाः सर्वज्ञताभिनिर्हृताः पक्षैकनिष्ठाश्च भवन्ति । तदित्थं सर्वज्ञतामनुप्राप्नुवन्तीति । अतो

नास्मासु यानव्यवस्थेति । मञ्जुश्रीः, या हि यानव्यवस्थाऽभिधीयते, तया सर्वज्ञेन भूमेर्व्यवस्था कृता, पुद्गलानां व्यवस्था कृता, अल्पसत्त्वसमूहस्य अप्रमेय-सत्त्वसमूहस्य च व्यवस्था कृता । धर्मधातोरसम्भेदाद् यानभेदोऽपि तावन्नास्ति । अनेन हि प्रस्थानद्वारं प्रदर्शितम् । प्रस्थाननिर्देशोऽपि तावत् संवृतिरेव, न तु परमार्थः । अत एकमेव यानम्, न द्वितीयमिति[1] ।''

आर्यश्रीमालासूत्रेऽप्युक्तम्—

''यच्च परिनिर्वाणं यानि च त्रीणि यानान्युपदिष्टानि तत्सर्वं तथागतानामुपायमात्रम्, एकयानावबोधेन अनुत्तरसम्यक्संबोधेरधिगमात्[2] ।''

अत एव एकयाननिर्देशस्तावदाभिप्रायिक इति वचनस्य धर्मधातुलक्षणे सर्वयानानां समत्वादेकयानमिति कथनं तावन्नास्त्यार्यसद्धर्मपुण्डरीकाद्यनुकूलमिति नियतं विद्वद्भिरवधार्यम्, नैव तदभिप्रायवशादुक्तमिति ज्ञेयम् । आर्यदशधर्मादौ यानत्रयनिर्देशस्तु उपायस्वरूपत्वाद् विनेयजनेभ्यः स एकयाननिर्देशाभिप्रायेणैव विहित इत्येव निश्चेयम् । अतो यानत्रयनिर्देशस्तावद् बुद्धानामुपायमात्रम्, न तु वास्तविक इत्यतो विनेयजना नैव तेषु प्रवर्तन्ते । महायानसूत्रालङ्कारे हि—एकस्य यानस्य च या हि देशना तदानुकूल्येन प्रयोजनेन सा ।

इति यदुक्तं तच्छ्रावकाणां यद्यनुशयसमुच्छेदो जायेत तदा जातेरपि सर्वथोपच्छेदाद् अनेकजन्मपरम्परासमुदागतं बुद्धत्वं कथं नाम साध्यं स्यादिति कथनं तु तेषां जातेः सर्वथोपच्छेदस्यासिद्धत्वान्नैव युक्तम् । आर्यश्रीमालासिंहनादसूत्रे चोक्तम्—

''अर्हतोऽपि विनाशसद्भावात्तत्संत्रासेन तावदर्हन्तः प्रत्येकबुद्धा अपि भगवतः शरणं प्रतिपद्यन्ते, सोपधिशेषधर्मित्वाद् भगवन् श्रावकार्हतां प्रत्येकबुद्धानाम्, जन्मक्षयाभावाच्च भगवन्, तेषाम् । अतो भवत्येव तेषां जन्म । भवन्त्येव ते सोपधिशेषाः, नैव जन्मना, अपितु कर्मणां पारिपूरेरभावाद् बहुकरणीयावशेषाच्च । यदि नैव ते तेषां परिहारं कुर्वीरन् तदा सन्त्यनेके निर्वाणधातोरपसारकास्तेषु प्रहातव्य-धर्मा[3]...'' इति विस्तरः ।

---

१. द्र०-आर्यबोधिसत्त्वगोचरोपायविकुर्वणनिर्देशसूत्रं, दे० क०, 'प', पृ० ९४ ख ।
२. द्र०-आर्यश्रीमालासूत्रं, दे० क०, पृ० २७० क ।
३. द्र०-आर्यश्रीमालासिंहनादसूत्रं, दे० क०, रत्नकूटे 'छ', पृ० २६४ क ।

यश्च जातिक्षय इत्यादिना क्षयानुत्पादज्ञानयोः समुद्भवस्तस्य नेयार्थत्वं तु तस्मिन्नेव सूत्रे निर्दिष्टम् । तथा हि—

"भगवन्, अर्हतां प्रत्येकबुद्धानां विमुक्तिं यावद् यत् प्रत्यवेक्षणाज्ञानं याश्चाश्वासाधायिकाश्चतस्रोऽनुस्मृतयस्तत् सर्वमाभिप्रायिकम्, यानानां नेयार्थत्वेन विभागं कृत्वा व्याकरणात् । भगवन्, तत्किमर्थमिति चेत् ? द्विधा भवति च्युतिः— समुच्छेदिका च अचिन्त्यपरिणामिनी चेति । तत्र समुच्छेदिका तावच्च्युतिः प्रतिसन्दधतां सत्त्वानामेव । भगवन्, अर्हतां प्रत्येकबुद्धानां वशिताप्राप्तबोधिसत्त्वानां च मनोमयकायस्य च्युतिस्तु बोधिमण्डपर्यन्तम् अचिन्त्यपरिणामिन्येव भवति । भगवन्, अनयोर्द्वयोश्च्युत्योः समुच्छेदच्युतेरधिकारे तावदर्हतां प्रत्येकबुद्धानां जातिक्षयो जायत इति प्रतीयते[1].... इति" विस्तरः ।

अनयोस्तावच्च्युत्योरविद्यावासभूमिप्रत्ययैरनास्रवकर्महेतुभिः समुद्भूता जातिस्तु भवत्येवेति निर्दिष्टम् । तथा हि—

"भगवन्, यदुत उपादानप्रत्ययाः सास्रवकर्महेतुकास्त्रयो भवाः सम्भवन्ति । एवमेव भगवन्, अविद्यावासभूमिप्रत्यया अनास्रवकर्महेतुका अर्हतां प्रत्येकबुद्धानां वशिताप्राप्तानां बोधिसत्त्वानां च मनोमयास्त्रयः कायाः सम्भवन्ति....इति" विस्तरः।

(रत्नगोत्रविभागः, पृ० ३३)

आर्यलङ्कावतारसूत्रे चापि निर्दिष्टं यद् धातुत्रयातिक्रान्ता अपि तेऽनास्रवधातौ अवस्थिता भवन्ति । अतस्तथागताधिष्ठानेन जातिवशितां प्राप्य सम्भारद्वयं च परिपूर्य ते बुद्धत्वमवाप्नुवन्तीति । तथा हि—

"प्रहीणा भवन्ति धर्मनैरात्म्यावबोधात्, तदा ते वासनादोषसमाधिमदा-भावादनास्रवधातौ प्रतिविबुध्यन्ते । पुनरपि लोकोत्तरानास्रवधातुपर्यापन्नान् सम्भारान् परिपूर्य अचिन्त्यधर्मकायवशवर्तितां प्रतिलप्स्यन्ते ।

यथा हि काष्ठमुदधेस्तरङ्गैर्विप्रवाह्यते ।
तथा हि श्रावको मूढो लक्षणेन प्रवाह्यते ।।

---

१. द्र०-आर्यश्रीमालासिंहनादसूत्रं, दे० क०, रत्नकूटे 'छ', पृ० २६५ ख ।

वासनाक्लेशसम्बद्धाः पर्युत्थानैर्विसंयुताः ।
समाधिमदमत्तास्ते धातौ तिष्ठन्त्यनास्रवे ।।

निष्ठागतिर्न तस्यास्ति न च भूयो निवर्तते ।
समाधिकायं सम्प्राप्य आकल्पान्न प्रबुध्यते ।।

यथा हि मत्तपुरुषो मद्याभावाद् विबुध्यते ।
तथा ते बुद्धधर्माख्यं कायं प्राप्स्यन्ति मामकम् ।।

(लङ्कावतारसूत्रं २ : २०५-२०८)

अत्र खलु काष्ठोदध्युपमया भवसागरे प्रवहमानत्वं निर्दिष्टम् । तरङ्गोपमया तावद् धर्मलक्षणं प्रति अभिनिवेशवशात् परिनिर्वाणं न प्राप्यत इति सङ्केतितम् । 'वासनाक्लेशसम्बद्धाः' इत्यादिना तु अविद्यावासनाभूमिबन्धनेनाविमुक्ताः, क्लेशपर्युत्थानैश्च विसंयुक्ता इति । 'निष्ठागतिर्न तस्यास्ति' इत्यादिना तावन्निर्वाणनगरेऽप्रविष्टास्तथा भवसागरेऽपि न भ्रमन्तीति । अनास्रवसमाधि-सम्प्रयुक्तत्वाद् अनेककल्पपर्यन्तमनास्रवधातौ स्थितिः, तदनन्तरं ततो व्युत्थाय सम्भारान् परिपूर्य बुद्धत्वावाप्तिरित्यादिकं स्पष्टतया निर्दिष्टम् ।

यच्चाप्यार्यलङ्कावतारादिसूत्रेषु निर्मितश्रावकानधिकृत्य श्रावकव्याकरणं कृतं तद्धीनाधिमुक्तसत्त्वानां भयपरिहारार्थं यानत्रयनिर्देशोपायप्रदर्शनार्थं चेति ज्ञातव्यम्। अवैवर्तचक्रसूत्रेऽप्युक्तम्—

''सर्वेषु लोकधातुषु सर्वबुद्धानां धर्मोपदेशस्तावदवैवर्तचक्रसमानतया समान इति । मर्त्यलोकधातुसत्त्वास्तु पञ्चकषायकाले समुत्पद्यमाना हीनाधिमुक्ता एव। अतस्ते एकयानोद्देश्यं नैव परिपालयन्ति, न च तस्मिन्नधिमुच्यन्ते । अतोऽनया युक्त्या ते सत्त्वा बुद्धत्वं प्रत्यभिमुखीक्रियन्त इति[१] ।''

आस्रवाणां क्षयादर्हन्तो यदि न प्रतिसन्दधते, अतोऽनेकजन्मपरम्परासाध्यं बुद्धत्वं न प्रतिलभन्त इति तदा बोधिपरिणामितानामप्यर्हतां न प्रतिसन्धिर्न च तेषु बुद्धत्वाधिगम इति । यदि प्रणिधानबलेन तथागताधिष्ठानेन च तेषां प्रतिसन्धिरभ्युपगम्यते, तदा कथं नापरेष्वपि तथा? यथोक्तमार्यप्रज्ञापारमितायाम्—

---

१. द्र०- आर्यावैवर्तचक्रसूत्रं, दे० क०, 'श', पृ० २४३ क ।

"अपि च, यदि तेऽनुत्तरसम्यक्संबोधौ चित्तमुत्पादयन्ति, तदा अनुमोदयिष्यामि, नाहं तेषां कुशलमूलानां विघ्नं करिष्यामि । शुद्धधर्मविशेषैः शुद्धधर्मविशेषाध्युपालम्भः करणीय इति ।"

यदि ते सर्वेण सर्वमनुत्तरसम्यक्संबोधये अभव्या इति तदा कथं नाहं तेषां कुशलमूलानां विघ्नं न करिष्यामीत्युक्तम् । अत्यन्ताभावेषु नैव विघ्नसम्भवः । अवस्थाविशेषाभिप्रायेणैव शान्तस्यैकायनस्य कथनं नियतम्, न तु सर्वदैव नियताभिप्रायेणेति ज्ञेयम् । आर्यसद्धर्मपुण्डरीकसूत्रेऽप्युक्तम्—

"भिक्षुर्वा भिक्षुणी वाऽर्हत्त्वं प्रतिजानीयादनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ प्रणिधानं परिगृह्योच्छिन्नोऽस्मि बुद्धयानादिति वदेदेतावन्मे समुच्छ्रयस्य पश्चिमकं परिनिर्वाणं वदेदाभिमानिकं तं शारिपुत्र, प्रतिजानीयाः ।" (सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रं, पृ० ४८)

अर्हन्तस्तावत् क्लेशक्षयहेतोः सर्वथा नैव प्रतिसन्दधते, तथात्वात् । ये खलु सत्यदर्शिनः श्रावकाः, ये च कामधातुरागरहिता अनागामिनस्ते बुद्धगोत्रका इति । द्विविधा अपि तेऽनुत्तरसम्यक्संबोधौ व्याकृताः अचिन्त्यपरिणामिन्या जात्या युक्तत्वात्तेषामिति यत् कथनं तदप्यार्य-श्रीमालासिंहनाद-आर्यप्रज्ञापारमिता-आर्यदशधर्मकसूत्रादिविरुद्धम् । तेषु केवलमर्हत एव प्रतिसन्धिरुपदिष्टा, न त्वनागामिनामिति । तत्रार्यमालासिंहनादसूत्रं तु पूर्वमेवोद्धृतम् । आर्यप्रज्ञापारमितासूत्रे चोक्तम्—

"अर्हत्त्वं समधिगम्य यदि स सम्यक्संबोधिमभिलषते तदा कथं नाम अजातिं लब्धुं शक्नोति, परिजानता खलु भगवता तस्य जातेर्व्याकृतत्वात् । भगवानाह—मैत्रेय, नाहं कर्मक्लेशवशाज्जतिं प्रज्ञपयामि, अपितु अचिन्त्यपरिनिर्वाणे परिणामनया तस्य जातिं प्रज्ञपयामीति" ।

आर्यदशधर्मकसूत्रेऽप्युक्तम्—

"भगवन्, श्रावकाः क्षीणास्रवाः, परिक्षीणभवसंयोजनगोत्रकास्त-थापि कथं तेऽनुत्तरसम्यक्सम्बोधिमभिसम्बोद्धुं शक्ष्यन्ते ? भगवानाह—शृणु कुलपुत्र, तस्य दृष्टान्तम्। तथैवास्ति यथा कुलपुत्र, क्षत्रियकुलेऽभिषिक्तः कश्चन राजकुमारो यदि सर्वासां शिल्पविद्यानामध्ययनं करोति। स नास्ति तीक्ष्णेन्द्रियोऽपि तु मन्देन्द्रियः सन् पश्चादध्येयस्य पाठ्यस्य प्रथमम्, पूर्वमध्येयस्य पाठ्यस्य पश्चादध्ययनं करोति, तदा किं

विचारयसि कुलपुत्र, किमेतावता स नास्ति राजकुमार इति कथयिष्यते ? अवोचत्—नैव भगवन्, नैव सुगत, राजकुमार एव स कथयिष्यते । भगवानाह— कुलपुत्र, तथैव बोधिसत्त्वगोत्रका अपि ये मन्देन्द्रियास्ते पूर्वं भावनामार्गेण क्लेशक्षयं कृत्वा पश्चादनुत्तरसम्यक्संबोधौ अभिसम्बुद्धा भविष्यन्तीति[1] ।'' विस्तरः ।

यच्च ''सार्वगतिका बुद्धा भविष्यन्ति'' इत्युक्तम्, तदर्थस्तावत् सर्वेषां बुद्धत्वसामीप्यापेक्षाभिप्रायेणेति— यदुक्तं तदपि स्वेच्छामात्रोपकल्पितत्वादयुक्तमेव । सार्वगतिकानां भव्यतां दृष्ट्वा तथोक्तमित्यत्र को विरोधः । तथैव चार्यरत्नमेघादि-सूत्रेष्वपि भगवतः शाक्यमुनेर्नामश्रवणमात्रेण अवैवर्तिकबीजारोपणाद् अभेदेन सर्वे सत्त्वा अवैवर्तिकत्वे व्याक्रियन्ते, न तु सामीप्यापेक्षया । अतो येन श्रावणं येन वा श्रवणं यश्च श्रोता तेष्वपि अवैवर्तिकबीजानि विद्यन्त एव, यतो हि भवतां मतेऽपि मलानामागन्तुकत्वाच्चित्तं प्रकृत्या प्रभास्वरमभ्युपगम्यते । अतः सार्वगतिकास्तदर्थं भव्या एव । अस्तदभिप्रायेण तथाऽभिधानं युज्यत एव।

सर्वे सत्त्वास्तथागतगर्भा इति यदुक्तं तेन सर्वेऽप्यनुत्तरसम्यक्-संबोधिपदप्राप्तियोग्या एवोपदर्शिताः, यतो हि तथागतशब्दो धर्मधातुः पुद्गलधर्मनैरात्म्यलक्षणः प्रकृत्या प्रभास्वरश्चेत्येतेष्वर्थेष्वभ्युपगम्यते । तथा च निर्देशेन सर्वेऽनुत्तरसम्यक्संबोधिस्वभावा एव निर्दिष्टाः ।

अपि च, 'यानम्' इति यदुक्तं तदपि निर्वाणनगरप्रापको ज्ञानात्मको मार्ग एवेत्युक्तम्, यायतेऽनेनेति कृत्वा । तत्त्वज्ञानादेव हि मोक्षमधिगन्तुं शक्यते, नान्यस्मात् । तत्त्वमप्येकमेव, अन्यथाऽनवस्थाप्रसङ्गः । दृष्टिभेदेऽपि वस्तुतत्त्वं नानेकरूपेषु विभाजयितुं शक्यते । एकस्वभावत्वात्तत्त्वस्य, तद्विषयि ज्ञानमप्येक-स्वभावमेव । अधिगततत्त्वानां बुद्ध-बोधिसत्त्वानां यज्ज्ञानं तदपि तत्त्वविषयकाभि-ज्ञानस्वरूपमेव, सर्वसंक्लेशप्रतिपक्षत्वात्तस्य । न हि प्रादेशिकैर्ज्ञानैस्तत्त्वबोधो-ऽतिप्रसङ्गात् । तथा सति सर्वे तत्त्वदर्शिनः स्यु : । अतो यत्तावत् पुद्गल-धर्मनैरात्म्यतत्त्वसाक्षात्कारि ज्ञानं तदेव निर्वाणप्रापकः सम्यङ् मार्गो नान्यः । अत एकमेव यानमिति ।

---

१. द्र०-आर्यदशधर्मकसूत्रं, दे० क०, रत्नकूटे 'ख', पृ० १६४ ख ।

एत एव भगवता नान्येन तावन्मार्गेण मोक्ष इति निर्दिष्टम् । आर्यलङ्कावतारसूत्रे चोक्तम्—

"यदुत अन्ये पुनर्महामते, कारणाधीनान् सर्वधर्मान् दृष्ट्वा निर्वाणगतिबुद्धयो भवन्ति, धर्मनैरात्म्यदर्शनाभावान्नास्ति मोक्षो महामते । एषा महामते, श्रावकयानाभिसमयगोत्रकस्यानिर्याणनिर्याणबुद्धिः । अत्र ते महामते, कुदृष्टिव्यावृत्त्यर्थं योगः करणीयः" इति । (लङ्कावतारसूत्रम्, २:२७ पृ० २७)

आर्यप्रज्ञापारमितासूत्रेऽपि भगवता प्रोक्तम्—

"यद् द्वयं तद् वस्तु, अद्वयं तु अवस्तु । अवोचत्—भगवन्, किं तावद् द्वयम् ? भगवानाह—सुभूते, रूपसंज्ञैव द्वयम्, तथैव स्कन्ध-धातु-स्पर्श-वेदना-धातुषट्क-प्रतीत्यसमुत्पादध्यानारूप्यदुःख-नैरात्म्य-सुख-सत्त्वादीनां संज्ञा" इति ।

इत्यादिकं विस्तरेण तावन्निर्दिश्य—

"यावद्धि संज्ञा तावद् द्वयम् । यावद् द्वयं तावद् वस्तु । यावद् वस्तु तावत् संसारः । यावच्च संसारस्तावन्नास्ति सत्त्वानां मोक्षः" इति ।

इत्यनेन प्रकारेण द्वयसंज्ञानुकूला क्षान्तिरपि तावदसत्त्वेन ज्ञातव्येति प्रकटितम् । आर्यसत्यद्वयावतारसूत्रेऽपि प्रज्ञप्तं यत् सर्वक्लेशानां मूलं भावाभिनिवेश एव । अत एव सर्वधर्मनिःस्वभावभावनयैव तावत् क्लेशाः परिहर्तुं शक्यन्ते, नान्येन केनचिन्मार्गेणेति कृतो निर्देशः । तथा हि—

"कथं मञ्जुश्रीः, क्लेशा विनयं गच्छन्ति, कथं क्लेशाः परिज्ञाता भवन्ति ? मञ्जुश्रीराह—परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावेषु सर्वधर्मेषु संवृत्यासद्विपर्यासः । तस्माद् असदविपर्यासात् संकल्पविकल्पः । तस्मात् संकल्पविकल्पाद् अयोनिशोमनसिकाराद् आत्मसमारोपः । तस्माद् आत्मसमारोपाद् दृष्टिपर्युत्थानम् । तस्माद् दृष्टिपर्युत्थानात् क्लेशाः प्रवर्तन्ते । यः पुनर्देवपुत्र, परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावान् सर्वधर्मान् प्रजानाति, स परमार्थतोऽविपर्यस्तः । यश्च परमार्थतोऽविर्यस्तः सोऽविकल्पः । यश्चविकल्पः स योनिशः प्रयुक्तः । यश्च योनिशः प्रयुक्तः, तस्यात्मसमारोपो न भवति । यस्यात्मसमारोपो न भवति तस्य दृष्टिपर्युत्थानं न भवति । यावत् परमार्थतो निर्वाणदृष्टिसर्वदृष्टिपर्युत्थानमपि न भवति । तस्यैवम्

अनुत्पादविहारिणः क्लेशा अत्यन्तं विनीता द्रष्टव्या। अयमुच्यते क्लेशविनयः । यदा देवपुत्र, क्लेशान् निराभासेन ज्ञानेन परमार्थतोऽत्यन्तशून्यान् अत्यन्ताभावान् अत्यन्तनिर्निमित्तान् प्रजानाति, तदा देवपुत्र, क्लेशाः परिज्ञाता भवन्ति । तत्र यथापि नाम देवपुत्र, य आशीविषस्य गोत्रं प्रजानाति, स तस्याशीविषयस्य विषं शमयति । एवमेव देवपुत्र, यः क्लेशानां गोत्रं प्रजानाति, तस्य क्लेशाः प्रशाम्यन्ति । देवपुत्र आहकतमन् मञ्जुश्रीः, क्लेशानां गोत्रम् ? आह—यावदेषा परमार्थतोऽत्यन्ताजाता-नुत्पन्नाभावेषु सर्वधर्मेषु कल्पना, इदं क्लेशानां गोत्रम्'' इति विस्तरः[१] ।

फलतः सर्वधर्मशून्यताभावनयैव तावन्निःश्रेयसनगरप्रवेशः । अतस्तदर्थिनो ये कल्याणमिच्छन्ति, तैः कुमार्गविचारान् दूरत एव परित्यज्य महात्मभिर्यो हि युक्त्यागमप्रदीपः प्रकाशीकृतः सद्भिश्च पुरुषैः (यः) मुहुर्मुहुरावेदितः स सादरं निरन्तरं च सदा सेवनीयः । अतश्च एकमेव यानम्, सर्वे च धर्माः परमार्थतो निः स्वभावा इति सिध्यति ।

।। आचार्यकमलशीलप्रणीतं मध्यमालोकाख्यं शास्त्रं समाप्तम् ।।

भारतीयोपाध्यायशीलेन्द्रबोधिना भोटदेशीयानुवादकेन द्पल ब्र्चेगस् महाभागेन चानूदितम् ।

शुभमस्तु

• • •

---

१. द्र०-आर्यसत्यद्वयावतारसूत्रं, दे० क०, 'म', पृ० २५३ ख ।



དབུ་མ་སྣང་བ།



༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། མདྷྱམཀཱལོཀནཱམ། བོད་སྐད་དུ། དབུ་མ་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ།
འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

འདི་ན་མི་མཁས་གང་དག་ལྷ་བ་ཉམས་པས་དངོས་ལ་ཞེན་པའི་གདོན་ཆེན་གྱིས། |
ཟིན་པའི་དབང་གིས་བློ་གྲོས་ཉམས་པས་ཆེ་བའི་ཆེ་བ་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་ལ། |
སྨོད་པར་བྱེད་ཀྱང་བདག་ཉིད་ཕུང་བ་འབབ་ཞིག་བྱེད་དུ་ཟད་པ་དེ་དག་གི |
འབྱུང་པོའི་གདོན་རྣམས་ཞི་བར་བྱ་ཕྱིར་སྙིང་རྗེས་གསོ་བའི་ཐབས་ནི་བརྩམས་[1]པར་བྱ། |

ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་དྲ་བ་མཐའ་དག་འབྱུང་བའི་རྩ་བ་ནི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡིན་པས་དེ་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ། ལེགས་པའི་གོ་འཕང་འདོད་པ་རྣམས་ལ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་འདི་རྩོམ་མོ།།[2]

འདི་ན་ཁ་ཅིག་དོན་དམ་པ་ཟབ་མོའི་ཚུལ་གྱི་རྒྱ་མཚོའི་གཏིང་མ་དཔོགས་ནས་སྨྲ་བ། ལུང་དང་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་གྲང་ན།

(1)རེ་ཞིག་བཀའ་[3]ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་སུ་(134a)ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཚིག་ནི་འདོད་པ་ཙམ་གྱི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་བུའི་དངོས་པོ་དང་འབྲེལ་བ་མེད་པས་ཚད་མ་དང་མི་ལྡན་པའི་ཡང་ཕྱིར་རོ། །འབྲེལ་བ་ཡོད་དུ་ཆུག་ན་ཡང་ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་གཏན་ལ་དབབ་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

1 བརྩམ་ པེ།
2 བཙམ། སྣ།
3 རེ་ཞིག་ལུང་ སྣ།

རྟོགས་པར་བྱེད་པ་གང་དག་དེའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ལུགས་ཁས་ལེན་པ་དེ་དག་ལ་ཡང་གང་གིས་ན་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་དངོས་པོ་མ་ལུས་པའི་[1]ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་དེ་ལྟ་བུའི་ཚིག་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཉེ་བར་བསྟན་པར་མི་ནུས་སོ།།

(2)མདོ་ཁ་ཅིག་ལས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ། མ་སྐྱེས་པ། གཟོད་མ་ནས་ཞི་བ། རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དྲང་བའི་དོན་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བསྟན་པ་ནི་དགོངས་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་གསུམ་པོ་ཀུན་བརྟགས་པ་དང་། གཞན་གྱི་དབང་དང་། ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་རྣམས་ནི་གོ་རིམ་[2]བཞིན་དུ་མཚན་ཉིད་དང་། སྐྱེ་བ་དང་། དོན་དམ་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལས་དགོངས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་ཏེ། དེ་བས་ན་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་གཟོད་མ་ནས་ཞི་བའོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་སྟེ། དེ་བཞིན་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་ལས་མདོའི་དོན་གྱི་དགོངས་པ་སྨྲར་བ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ།།

(3)གཞན་ཡང་གཉིས་སུ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཁོ་ནར་[3]ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱེ་བྲག་འབྱེད་ཀྱི། རང་རིག་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གཉིས་སུ་

1 ལུས་པ། པེ།

2 རིམས་བཞིན་ སྣེ།

3 ནས་ སྣ། པེ།

སྣང་བ་ཡང་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་དེས་རྣམ་པར་གཞག[1]པའི་ངོ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་བརྟེན་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།[2] །དེ་བས་ན་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པར་གསུངས་ཀྱི།[3] དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་རེ་ཞིག་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(4)རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་མངོན་སུམ་གྱིས་ནི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་དབེན་པར་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་(134b)རོ། །དངོས་པོ་མེད་པ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་[4]ཉིད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་ཡང་རང་གི་ངོ་བོ་ཉེ་བར་སྟོན་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྟེ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དངོས་པོའི་མཚན་ཉིད་ནི་དོན་བྱེད་ནུས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་དམ་བཅས་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་དེ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ན་ནི། ཇི་ལྟར་དེས་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་དབེན་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར། གཞན་ཡང་དོན་གཞན་གྱིས་དབེན་པའི་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པ་འགའ་ཞིག་འཛིན་ན་ནི་དེ་ལས་གཞན་པས་སྟོང་པ་ཉིད་མངོན་སུམ་གྱིས་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་པར་འགྱུར་ན། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་

---

1 རྣམ་པར་བཞག་ སྣ། པེ།
2 ཉིད་དོ། སྣ། པེ།
3 གསུང་ཀྱིས་ སྣ། པེ།
4 ངོ་བོམེད་པ་ སྣ། པེ།

མེད་པ་ཉིད་དུ་སྨྲ་བ་རྣམས་ལ་ནི་གང་འགའ་ཞིག་མངོན་སུམ་དུ་དམིགས་པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དབེན་པར་[1]རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དབེན་པའི་དངོས་པོ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ། དེ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་དུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་ནང་དུ་མ་འདུས་ན་ནི་རང་གིས་[2]དམ་བཅས་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ།།

(5)འདི་ནི་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་ཡང་དག་པར་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་མཁས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་ཚིམ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལ་རིགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དེ་ཡང་མེད་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི། དེའི་ཚེ་དེ་ཇི་ལྟར་ཚད་མར་འགྱུར། འོན་ཏེ་ཡོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དམ་བཅས་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ།།

(6)རྗེས་སུ་དཔག་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱེད་ལ་གཞི་ཆོས་ཅན་འགའ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་ཐམས་ཅད་གཞི་དང་རང་གི་ངོ་བོ་མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ན་ཇི་ལྟར་དེས་དེ་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར།

(7)ཇི་སྐྱེ་[3]གཞན་ལ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཕ་རོལ་པོས་ཁས་བླངས་པའི་གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པས་རང་གི་ཕྱོགས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་[4]པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་

1 དབེན་པ་ སྣ། པེ།
2 རང་གིས་ སྣ། པེ།
3 ཅི་སྟེ་ སྣ། པེ།
4 བསྒྲུབ་ སྣ། པེ།

མ་ཡིན་ཏེ། ལུགས་ནི་སྒྲུབ་པ་དང་སུན་འབྱིན་པ་གཉིས་ཀ་(135a)ལ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་ཕ་རོལ་པོས་ཁས་བླངས་པའི་གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པ་དངོས་སུ་ཡོད་པ་ཁོ་ན་མ་ཡིན་གྱི། གཞན་དག་རྣམ་པར་སྨོངས་པས་དེ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ན་ནི་ཇི་ལྟར་དེས་ན་ཁྱེད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཡང་དག་པར་འགྲུབ་པར་འགྱུར། འོན་ཏེ་དེ་དངོས་པོའི་ཚུལ་གྱིས་ཡོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ན་ནི། འོ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གཞན་འབའ་ཞིག་ལ་གྲུབ་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱེད་ལ་ཡང་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོ་རྣམས་གྲུབ་པ་དང་མ་གྲུབ་པ་ནི་སྐྱེས་བུའི་འདོད་པས་ལྷག་པར་འབྱུང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཕ་རོལ་པོས་ཁས་བླངས་པའི་སྒྲུབ་པ་ལ་སོཏ་པ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན་དངོས་པོ་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུའང་ཅིའི་ཕྱིར་ཁས་མི་བླང་།

(8)གང་དུ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་དབེན་པ་དང་རྟགས་གང་དང་ཡང་ལྡན་ཅིག་འབྲེལ་པར་མ་གྲུབ་སྟེ། དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྟེ་གྲུབ་ན་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་མཐོང་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་ཡང་འགྱུར་ལ། དང་པོ་ཉིད་ནས་གྲུབ་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རྟགས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བ་དོན་མེད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ།།

(9)གཞན་ཡང་རེ་ཞིག་རང་བཞིན་དང་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་དག་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ནི་དངོས་པོ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཁྱེད་ཀྱི་ལུགས་ཀྱིས་དེ་གཉིས་སྲིད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཅི་ཡང་གང་དང་ཡང་ལྡན་ཅིག་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་མི་སྲིད་དོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་

མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་གང་གི་ཡང་རང་གི་ངོ་བོ་ཅི་ཡང་མེད་པས་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ལྟ་ག་ལ་ཡོད།

(10)མི་དམིགས་པ་ཡང་དེ་སྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་རང་བཞིན་མི་དམིགས་པ་མེད་པའི་ཐ་སྙད་གྲུབ་[1]པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མངོན་སུམ་གྱིས་གཞན་གྱིས་དབེན་པའི་དངོས་པོ་རྟོགས་ན་དམ་པ་མ་ཡིན་པའི་བསྟན་བཅོས་མཉན་པས་ཡིད་རྣམ་པར་རྨོངས་པ་ཁ་ཅིག་དེ་ལ་གཞན་གྱིས་དབེན་པར་ཐ་སྙད་འཇུག་པར་མི་བྱེད་པ་རྣམས་ལ་དེའི་ཐ་སྙད་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡིན་ན་ཁྱེད་ལ་ནི་གང་དུ་དེའི་ཐ་སྙད་རབ་ཏུ་[2]བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཆོས་ཐམས་(135b)ཅད་ཀྱིས་རབ་ཏུ་དབེན་པའི་དངོས་པོ་མངོན་སུམ་གྱིས་རྟོགས་པ་དེ་ལྟ་བུ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ། རང་གི་ཕྱོགས་ཉམས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བཤད་ཟིན་པ་ཉིད་དོ།།[3]

(11)དེ་དང་འགལ་བ་དམིགས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་མི་སྲིད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་དབེན་པ་དང་འགའ་ཡང་ལྡན་ཅིག་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་གྲུབ་ན་ནི་དེ་དང་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་མི་འདོད་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་འགལ་བ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་རྣམ་པར་གཞག་[4]སྟེ། ལྷན་ཅིག་

---

1 སྒྲུབ་ སྣ།

2 ཐ་སྙད་སྒྲུབ་པའི་ སྣ།

3 བཤད་ཟིན་ཏོ།། པེ།

4 བཞག སྣ། པེ། སྣར་ཐང་དང་པེ་ཅིང་པར་མའི་ནང་རྣམ་གཞག་གི་གཞག་ཐམས་ཅད་བ་བཞག་ཏུ་བྲིས་འདུག་གོ།

མི་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་དང་། ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་དོ། །དེ་ལ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་གང་ཞིག་གང་ཡོད་པས་ငེས་པར་མེད་པ་དེ་གཉིས་ནི་འགལ་བ་དང་པོར་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ། དཔེར་ན་གྲང་བ་དང་ཚ་བའི་རེག་པ་ལྟ་བུའོ། གང་ལ་གང་ཞིག་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་གང་རྣམ་པར་བཅད་པ་[1]མེད་ན་མེད་པ་དེ་གཉིས་ནི་དེ་ལ་འགལ་བ་གཉིས་པར་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ། དཔེར་ན་ཆོས་ཅན་གཅིག་ལ་ཅིག་ཅར་དངོས་པོ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དག་ལྟ་བུའོ། །འགལ་བ་དེ་ལྟ་བུ་རྣམ་པ་གཉིས་ཀ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྨྲ་བ་ལ་མི་སྲིད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ནམ་མཁའི་ཨུཏྤལ་ལ་སོགས་པ་ལ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་ཉིད་ཀྱང་མེད་ལ་གཞན་རྣམ་པར་བཅད་[2]པས་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ཡང་མེད་དེ། དེ་ནི་དངོས་པོའི་མཐའ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡོད་པར་རྣམ་པར་གཅད་པས་འདི་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་རྣམ་པར་འཇོག་མོད་ཀྱི། དེ་ཡང་ལ་ལར་ཡོད་པ་འགའ་ཞིག་རྣམ་པར་གཅད་པ་གྲུབ་ན།[3] གྲུབ་པར་[4]འགྱུར་བ་ཞིག་ན། ཁྱེད་ནི་གང་དུ་ཡང་གང་ཞིག་རྣམ་པར་གཅད་པར་འགྱུར་བ་གང་ཡང་ཡོད་པར་མི་འདོད་དོ།། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཉེ་བ་ཡིན་ན་ཁྱེད་ལ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་འགའ་ཡང་ཡོད་པར་མ་གྲུབ་བོ། །ཇི་སྟེ་[5]གྲུབ་ན་ནི་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་[6]

1 གཅད་ སྡེ།

2 གཅད་ སྡེ།

3 འགྲུབ་ན་ སྣ།

4 འགྲུབ་ན་ སྣ།

5 ཅི་སྟེ་ སྣ།

6 དེ་ནི་ སྣ།

དངོས་པོ་གྲུབ་པར་གྱུར་[1]བ་ཡིན་ནོ། །གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་རྣམ་པར་གཅད་པས་ངོ་བོ་ཉིད་འགའ་ཞིག་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ཉིད་ཁོ་བོ་ཅག་གི་དངོས་པོ་བསྒྲུབས་པར་ཡང་[2]འགྱུར་བས་དེ་ལྟ་ན་[3]རེ་ཞིག་དེ་དང་འགལ་བ་དམིགས་པ་མི་སྲིད་དོ།།

(12)དེ་མི་སྲིད་ན་འགལ་བས་ཁྱབ་པ་དམིགས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་མི་སྲིད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་ཐམས་ཅད་འགལ་བས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བའི་ཕྱིར་འགལ་བ་མ་གྲུབ་ན་དེ་དག་ཀྱང་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(13)ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་མི་དམིགས་པ་ཡང་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་། ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ཡང་དག་པར་གྲུབ་ན་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དགག་པའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡིན་ན། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ལ་ནི་གང་གིས་ཀྱང་ཁྱབ་པར་མ་གྲུབ་བོ། །ཇི་སྟེ་[4]གྲུབ་ན་ནི་ཁྱབ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་དངོས་པོར་གྲུབ་པར་འགྱུར་རོ།།

(14)རྒྱུ་མི་དམིགས་པ་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་གྲུབ་ན་འབྲས་བུའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དགག་པའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡིན་ན། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་

---

1 འགྱུར་པ་ སྣ།

2 བསྒྲུབས་པར་འགྱུར་ སྣ། པེ།

3 དེ་ལྟར་ན་ སྣ། པེ།

4 ཅི་སྟེ་ སྣ། པེ།

མེད་པ་ཉིད་ལ་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་གྲུབ་པ་མེད་དོ། །གྲུབ་ན་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུར་གྱུར་པ་དེ་ཉིད་དངོས་པོར་གྲུབ་པར་འགྱུར་རོ།།

(15)ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་གང་ཞིག་བཀག་པས་འདི་དག་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བའི་བྱེད་རྒྱུ་གཅིག་པུ་ནི་འགའ་ཡང་མེད་དོ།།

(16)ཁ་ཅིག་གིས་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་བྱེད་རྒྱུ་གཅིག་པུ་ཁས་བླངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་བཀག་ཀྱང་འདི་དག་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ནི་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཐམས་ཅད་རང་གི་རྒྱུ་ཁོ་ན་ལས་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་དག་ནི་[1]སོ་སོ་རང་རང་གི་རྒྱུ་དགག་པར་བྱ་བར་ཡང་མི་ནུས་ཏེ། དེ་ནི་གྲགས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(17)གཞན་ཡང་བདག་མེད་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་དུ་སྒྲུབ་ན་དེའི་ཚེ་དཔེ་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པ་དཔེ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་ཁ་ཅིག་ནི་ཕྱིའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཁོ་ནར་འདོད་ལ། གཞན་དག་ནི་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འདོད་པས་དེ་དག་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་འདོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།།

(18)འོན་ཏེ་ཉི་ཚེ་བའི་བདག་མེད་པ་བསྒྲུབ་པར་འདོད་ལ། དེ་ལ་ཡང་གལ་ཏེ་མུ་སྟེགས་པས་ཀུན་བརྟགས་པའི་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་འགོག་པར་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དོ།།

(19)འོན་ཏེ་འཇིག་རྟེན་ན་གྲགས་པ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དཔེ་ཡང་མེད་ལ། དམ་བཅས་པ་ཡང་མངོན་སུམ་དང་འགལ་ལོ།།

---

1 དེ་དག་གི་ སྣ། འདི་དག་གི་ པེ།

(20)གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་འབྲེལ་པ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མངོན་སུམ་ཚད་མར་ཁས་ལེན་(136b)ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོར་གྲུབ་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་མངོན་སུམ་གྱི་མཚན་ཉིད་ནི་རྟོག་པ་དང་བྲལ་ཞིང་མ་ནོར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། མ་ནོར་བའི་ཤེས་པས་གཏན་ལ་ཕབ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དག་ཀྱང་ཇི་ལྟར་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གསལ་བར་བྱ་བར་ནུས། དེ་སེལ་ན་ནི་མངོན་སུམ་ལ་གནོད་པ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་གནོད་ན་ནི་[1]རྗེས་སུ་དཔག་པ་ཡང་ལེགས་པར་མི་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །མངོན་སུམ་དེ་ཉིད་ལས་འབྲེལ་བ་ཐོབ་པའི་རྗེས་སུ་དཔག་པས་ཡང་དེ་ཉིད་ལ་གནོད་པ་[2]བྱེད་པར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར། འོན་ཏེ་མངོན་སུམ་དུ་གྲུབ་པའི་དོན་ལ་གནོད་པར་མི་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོར་[3]སྨྲ་བ་རྣམས་ལེགས་པར་གནས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། ཐོབ་པར་བྱ་བ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(21)གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་ཡོད་པའི་ཆོས་ཤིག་སྟོན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་བཟློག་པ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཡིན་ནོ།།

(22)འོན་ཏེ་མེད་པའི་ཆོས་ཤིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་མེད་པ་དང་དངོས་པོ་མེད་པར་ལྷན་ཅིག་ཕན་ཚུན་འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་ན་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན།

(23)ཇི་སྟེ་གཉི་གའི་ཆོས་ཤིག་ཡིན་ན་ནི་དེ་ཡང་ངེས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། མི་མཐུན་

---

1 གནོད་ན་རྗེས་སུ་ སྡེ།
2 གནོད་པར་ སྣ།
3 དངོས་པོ་སྨྲ་བ་ པེ།

པའི་ཕྱོགས་[1]ལ་ཡང་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ལས་དེ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བའི་ཚད་མ་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(24)དེ་ནི་ཚིག་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་མི་འགྲུབ་སྟེ། ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཚིག་ཀྱང་འགལ་ཏེ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ན་ནི་ཇི་ལྟར་དེ་གྲུབ་པར་འགྱུར།

(25)ཐལ་བར་བསྒྲུབས་པས་ཀྱང་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་མི་འགྲུབ་སྟེ། དེ་ལྟ་བུའི་ཐལ་བ་ཉིད་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐལ་བར་སྒྲུབ་པའི་སྒོ་ནས་ནི་གཞན་གྱི་ཕྱོགས་ལ་གནོད་པ་ཙམ་དུ་འགྱུར་གྱི། རང་གི་ཕྱོགས་འགྲུབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་གཉི་ག་ལ་གྲུབ་པའི་གཏན་ཚིགས་གཞན་ལ་ལྟོས་[2]པའི་ཕྱིར་རོ།།

(26)གང་ཡང་དངོས་པོ་རྣམས་ནི་རང་ལས་མི་སྐྱེ་སྟེ། མ་སྐྱེས་པ་རྣམས་ནི་མེད་པས་གང་དུ་ཡང་རྒྱུ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྐྱེས་ཟིན་པ་རྣམས་ཀྱང་ཡང་བདག་ཉིད་བསྐྱེད་པ་དོན་མེད་དེ། གྲུབ་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །བྱེ་བྲག་མེད་པ་ཡིན་ན་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་ཡང་རིགས་པ་མ་(137a)ཡིན་ཏེ། དེའི་རྒྱུ་ནི་བྱེ་བྲག་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དངོས་པོ་རྣམས་གཞན་ལས་ཀྱང་མི་སྐྱེ་ཏེ། གཞན་ཉིད་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།། གཞན་ཡང་རེ་ཞིག་གཞན་དུ་གྱུར་པ་རྟག་པ་ལས་ཀྱང་འདི་དག་མི་སྐྱེ་སྟེ། རྟག་པ་ནི་རིམ་དང་ཅིག་ཅར་དག་གིས་དོན་བྱེད་པར་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །མི་རྟག་པ་ལས་ཀྱང་

---

1 མི་མཐུན་ཕྱོགས་ སྡེ།

2 བལྟོས་ སྣ། པེ།

རེ་ཞིག་ཞིག་པ་ལས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དེའི་ཚེ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། མ་ཞིག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།། དུས་མཉམ་པར་འབྱུང་བ་དག་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གྲུབ་ཟིན་པའི་གནས་སྐབས་ན་གཉི་ག་ཡང་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་[1]ཡིན་པས་ཕན་ཚུན་ཕན་འདོགས་པར་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །མ་གྲུབ་པའི་གནས་སྐབས་ན་ནི་གཉི་ག་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཧ་ཅང་ཕན་འདོགས་པར་མི་བྱེད་པ་ཉིད་དོ། །གཉི་ག་ལས་ཀྱང་མི་སྐྱེ་སྟེ། ཇི་སྐད་བཤད་པའི་སྐྱོན་གཉི་གར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་དང་། གཅིག་ལ་གཉིས་ཉིད་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོ་རྣམས་ནི་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་འབྱུང་བ་ཡང་རིགས་པ་[2]མ་ཡིན་ཏེ། རེས་འགའ་བ་ཉིད་དུ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རང་ལས་མ་ཡིན། གཉི་ག་ལས་མ་ཡིན། རྒྱུ་ཞིག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན། རྒྱུ་མེད་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན། རྒྱུ་རྟག་པར་འདོད་པ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་མི་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་རིགས་ན། རྒྱུ་གཞན་མི་རྟག་པར་འདོད་པ་མ་ཞིག་པ་[3]ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་ལ་གོ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ན་གང་གི་ཕྱིར་དེ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་ཡང་དགག། འདི་ལ་ནི་གནོད་པ་བྱེད་པའི་ཚད་མ་ཡང་ཅུང་ཟད་[4]ཀྱང་མེད་དོ། །གཞན་དུ་གྱུར་པ་དངོས་པོ་ཙམ་ཡང་མི་འགྲུབ་པ་ཡང་[5]མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་

---

1 ངོ་བོ་ཡིན་པས་ སྣ། པེ།

2 འབྱུང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སྣ།

3 མ་ཡིན་པ་ལས་ སྣ། པེ།

4 མཆན་མ་ཅུང་ཟད་ སྣ། པེ།

5 པར་ཡང་ སྣ། པེ།

གང་གི་[1]མཇུག་ཐོགས་སུ་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བ་དེ་ཉིད་གཞན་ཞེས་བྱའོ། །འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་སྔོན་རོལ་དུ་དེ་ལ་གཞན་ཞེས་བྱ་བ་མ་གྲུབ་ཏུ་ཟིན་ཀྱང་དངོས་པོ་ལ་ནི་ཉམས་པ་མེད་པ་ཉིད་དོ།།

(27)ཁ་ཅིག་གིས་གཞན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་གཏོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མ་ངེས་པ་ཡིན་ཏེ། གཞན་ཉིད་དང་སྐྱེད་པར་བྱེད་པར་འགལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །མི་འགལ་བའི་ཚུལ་དེ་ནི་དགག(137b)པར་ནུས་པ་ཡང་[2]མ་ཡིན་ཏེ་ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་ན་ནི་གཞན་འགའ་ཞིག་ལ་དབྱུལ་བ་ཉིད་དང་། ལྡན་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་མཐོང་བས་གཞན་ཉིད་ཀྱི་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་དབྱུལ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཉེ་བར་ལེན་པར་འགྱུར་རོ།།[3]

(28)འོན་ཏེ་གཞན་མ་ཞིག་པ་མ་ཆོད་པ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་གཏོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །མ་ཆོད་པར་འབྲས་བུ་སྐྱེ་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་ཀྱིས་འབྲས་བུ་ཡོད་པའི་དུས་ན་རྒྱུ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཚེ་འབྲས་བུ་ཡོད་པར་འགྱུར་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་རྒྱུ་འགག་པར་འགྱུར་ཏེ། སྲང་མདའི་མཐོན་དམན་བཞིན་པས་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་ཐལ་བར་ག་ལ་འགྱུར། དེས་ན་རྒྱུ་གནས་སུ་ཟིན་ཀྱང་དེའི་ཚེ་འབྲས་བུ་གྲུབ་

1 གང་གིས་ སྣ། པེ།
2 ནུས་པ་མ་ཡིན་ སྣ། པེ།
3 འགྱུར་ཏེ་ སྣེ།

ཟིན་པའི་ཕྱིར་དོན་མེད་པ་ཉིད་དོ། གཞན་ཡང་དཔེར་ན་དངོས་པོ་ཞིག་ནས་མེད་པ་མ་ཆོད་པར་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་གཞག[1]པར་བྱ་བ་དངོས་པོ་དང་ལྷན་ཅིག་དུས་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་བ་ལྟར་འབྲས་བུ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བས་མི་འགལ་བ་ཉིད་དོ།། དཔེར་ན་གྲིབ་མ་དང་ཉི་མ་དག་དང་འབབ་ཆུའི་རྒྱུན་དག་ལ་ཆུའི་རྒྱུན་སྔ་ཕྱི་དག་མ་ཆོད་ཀྱང་ཡུལ་གཅིག་པ[2]ཉིད་མ་ཡིན་པ་ལྟར་འདི་ལ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བས་དུས་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །གཞན་དངོས་པོར་གྱུར་པ་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་ཅིག་གྲོས་ལ་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ།།

(29)གང་ཡང་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་ཡང་མི་སྐྱེ་སྟེ། སྐྱེ་བ་དོན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། མེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཡང་སྐྱེ་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འབྲས་བུ་ཡོད་པ་སྐྱེ་བ་དགག་ན་ཁྱེད་ལ་གཉི་ག་ལ་གྲུབ་པའི་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་མེད་དེ།[3] གྲུབ་ན་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་དམ་བཅས་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ།།

(30)གྲངས་ཅན་ལ་སོགས་པས་ཀུན་བརྟགས་པའི་འབྲས་བུ་ཡོད་པར་སྨྲ་བ་མི་རུང་དུ་ཆུག་ན་ཡང་། འབྲས་བུ་མེད་པ་སྐྱེ་བ་ལ་གོ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ན་གང་གིས་འདི་ཡང་དགག རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཡང་སྐྱེ་བར་ཐལ་བར་ཡང་མི་(138a) འགྱུར་ཏེ། དེ་དག་ལ་དེ་ལྟ་བུའི་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་མི་སྐྱེ་བ་ཡིན་གྱི་མེད་པའི་ཕྱིར་ནི་མ་

1 བཞག་ སྣ། པེ།

2 ཅིག་པ་ སྣ། པེ།

3 མེད་དོ། སྡེ།

ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ལས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བར་ཐལ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། རྒྱུའི་ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པའི་སྒོ་ནས་རྣམ་པར་གནས་པ་ངེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུའི་ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པ་ཡང་གནོད་མི་ཟ་བར་ཁས་བླངས་[1]དགོས་ཏེ། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཀུན་རྫོབ་པ་ལ་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ལས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར།

(31)གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་ཞིག་པ་དང་མ་ཞིག་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དོན་དམ་པ་བའི་སྐྱེ་བ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་ན་ཀུན་རྫོབ་པ་ལ་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་གནོད་པ་མི་བྱེད་དེ། དངོས་པོའི་སྟོབས་ལས་འོངས་པའི་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་ཡུལ་ནི་སྐྱེས་བུའི་འདོད་པའི་དབང་གིས་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པར་རྟོགས་པས་དེ་ལ་གཏན་ཚིགས་མི་འཇུག་གོ་ཞེ་ན། འོ་ན་ནི་འདི་གཏན་ཚིགས་མ་ཡིན་ཏེ། གནོད་པར་བྱར་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

(32)གང་དག་རྒྱུ་གཅིག་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་དུ་མ་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ལ། དུ་མ་ལས་ཀྱང་གཅིག་[2]སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གཞན་དུ་ན་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དུ་མ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་དུ་མ་མི་སྐྱེ་སྟེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་འབྲས་བུ་རེ་རེ་ལ་རྒྱུ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྒྱུ་ཐ་དད་པ་དེ་ཉིད་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་ཏེ། དུ་མ་ལས་རེ་རེ་ཞིག་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་རེ་རེ་ལ་མི་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་དུ་མ་ལས་དུ་མ་སྐྱེ་བ་

---

1 སླང་ སྣ། པེ།

2 ཅིག་ སྣ། པེ།

ཡིན། གཅིག་ལས་གཅིག་སྐྱེ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། མིག་ལ་སོགས་པའི་དབང་པོ་དག་ལས་དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེའི་དེའི་ཚེ་རང་གི་རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་མི་སྐྱེ་ན་ཐམས་ཅད་ལོང་བ་དང་འོན་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་ལོང་བ་དང་འོན་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོར་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་གླེང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་མི་སྲིད་པ་[1] ཉིད་དོ། །ཐམས་ཅད་ཚོགས་པ་ཁོ་ན་ལས་[2]སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་གཅིག་ལས་གཅིག་སྐྱེ་བ་ནི་ཉུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ། (138b)།གང་གིས་ན་གཅིག་ལས་དུ་མ་སྐྱེ་བ་དང་། དུ་མ་ལས་གཅིག་སྐྱེ་བ་འགལ་བར་འགྱུར་བ་རྒྱུའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཡང་འཐོས་ནས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་མི་འདོད་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་མར་མེ་ལ་སོགས་པའི་རང་གི་ངོ་བོ་དུ་མ་ཅན་ཡོད་པ་ཙམ་གྱིས་འབྲས་བུ་རང་གི་ངོ་བོ་དུ་མ་ཅན་སྐྱེད་པ་མཐོང་བ་ཉིད་དོ། །རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པར་ཐལ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། རྒྱུའི་བྱེ་བྲག་ལས་འབྲས་བུའི་བྱེ་བྲག་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུའི་བྱེ་བྲག་ལས་འབྲས་བུའི་བྱེ་བྲག་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཁོ་ན་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།།[3]

(33)གང་ཡང་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཞི་བའོ་ཞེས་ཟེར་བ་གང་ཡིན་པ་[4]དེ་ཡང་འདིའི་མ་ངེས་པ་ཡིན་ཏེ། རྟེན་ཅིང་

1 མི་སྲིད་པ་མི་སྲིད་པ་ སྣ།
2 ཁོ་ནས་ པ།
3 བྱེད་པ་ཉིད་དོ།། སྣ།
4 ཟེར་བ་ཡིན་པ་ སྣ།

འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཉིད་དང་། ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པར་ལྷན་ཅིག་འགལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་གྲགས་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཉིད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་མ་སྐྱེས་པ་རྣམས་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པར་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་མེད་དོ།།

(34)གལ་ཏེ་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པར་མ་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འདི་དག་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་ཏེ། གང་དག་དོན་དམ་པར་མེད་པ་དེ་དག་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མི་སྐྱེ་བར་མཐོང་སྟེ། དཔེར་ན་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལྟ་བུའོ། །ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་མཚུངས་ན་ཇི་ལྟར་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་སྣང་བ་དེ་བཞིན་དུ་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་སྣང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། སྣང་བའི་བྱེ་བྲག་ངེས་པ་འདི་ལ་རྒྱུ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ།།

(35)གང་དག་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་མེད་པའོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ལ་ཡང་གལ་ཏེ་ཐལ་བར་སྒྲུབ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གཞན་དག་དེ་ལྟ་བུ་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་དངོས་པོ་ནི་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་ཏོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རང་དགར་སྒྲུབ་ན་ཡང་གཏན་ཚིགས་ཅིག་ཤོས་ལ་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བུའི་ཆོས་ཅན་བདག་ཉིད་ལ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཡང་ཡིན་ལ། མི་(139a)མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལས་ལྡོག་པ་[1]ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བའི་ཕྱིར་མ་ངེས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ།།

---

1 ལོག་པ་ སྣ། པེ།

(36)གཞན་ཡང་འདི་ལ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པ་དག་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དམ། མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་ཏུ་འགྱུར་གྲང་ན། གལ་ཏེ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོར་[1] ཁས་བླངས་པར་གྱུར་བས་དེ་ཡང་མི་འདོད་[2]པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྟོགས་པར་བྱ་བ་དང་། རྟོགས་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོར་མི་འགྱུར་ཏེ། གཉི་ག་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། ཕན་ཚུན་འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །

(37)གང་ཞིག་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་དེ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་གོ་བར་མི་བྱེད་ཅིང་། གོ་བར་བྱ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་རྟའི་རྭ་ལྟ་བུ་ཡིན་ལ། ཇི་སྐད་བཤད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་དག་ཀྱང་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །

(38)གང་དག་ཕན་ཚུན་མ་འབྲེལ་བ་དེ་དག་ནི་གོ་བར་བྱ་བ་དང་གོ་བར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་རི་འབིགས་བྱེད་དང་གངས་ཅན་དག་ལྟ་བུ་ཡིན་ལ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་དག་ཀྱང་ཕན་ཚུན་མ་འབྲེལ་བ་ཡིན་ནོ། །

(39)ཅི་སྟེ་གཉི་ག་ཡང་དངོས་པོ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་བདག་ཉིད་ནི་དངོས་པོ་ཁོ་ན་ལ་རྣམ་པར་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། །

---

1 ངོ་བོ སྣ།

2 གྱུར་པས་མི་འདོད་ སྣ། པེ།

(40)གང་ཞིག་གང་ལས་ཐ་དད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་[1]དེ་དག་ལ་ནི་གོ་བར་བྱ་བ་དང་། གོ་བར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་མེད་དེ། དཔེར་ན་ཤིང་དང་ལྗོན་པ་དག་ལྟ་བུ་ཡིན་ལ། ཇི་སྐད་བཤད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་དག་ཀྱང་ཐ་དད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །བྱས་པ་ཉིད་དང་མི་རྟག་པ་ཉིད་དག་གིས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་ནི་ལྡོག་པས་བྱས་པའི་བྱེ་བྲག་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(41)གལ་ཏེ་འདི་ལ་ཡང་ལྡོག་པས་བྱས་པའི་བྱེ་བྲག་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་དེ་ནི་[2]རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་ནི་སྔོན་པོ་དང་སེར་པོ་དག་བཞིན་དུ་དེ་དག་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ།།

(42)གཞན་ཡང་ཇི་ལྟར་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་(139b)བའི་གཏན་ཚིགས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོ་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཅན་ཡང་དངོས་པོ་མེད་པར་སྒྲུབ་ན་ནི་ཆོས་ཅན་ལས་[3]བཟློག་པ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟར་ན་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་ལ་ཚད་མ་ཅི་ཡང་མེད་དོ།།

(43)གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ཆོས་གཞན་བཞིན་དུ་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ཡང་བརྫུན་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཆོས་གཞན་བཞིན་དུ་སྤོང་བར་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་བྱེད་ན་ནི་རྣལ་

---

1 ཐ་དད་པའི་ངོ་བོ་དེ་དག་ལ་ནི་ སྣ། པེ།

2 དེའི་རིགས་པ་ སྣ། པེ།

3 ཆོས་ཅན་ལ་ སྣ། ཆོས་ཅན་ཡང་ པེ།

འབྱོར་པ་ཡང་མེད། རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ཡང་མེད། དེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སོ་སོར་རིག་[1]པ་ཡང་མེད། དེས་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཡང་མེད། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཡང་མེད་དེ། དེའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་བཤིག་པ་ཡིན་ནོ།།

(44)ཀུན་རྫོབ་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱང་ཕྱིན་ཅི་ལོག་དང་ལྡན་པར་ཐལ་བར་ཡང་འགྱུར་རོ།།

(45)གཞན་ཡང་ཁྱེད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་དམ་བཅས་པ་འདི་ནི་རིགས་པ་དང་ལུང་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ། །འདི་ལྟར་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་དང་དུས་ཀྱི་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་གིས་གསལ་བ་ཁོ་ནར་སྣང་བའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པས་རེ་ཞིག་དང་པོར་མངོན་སུམ་དང་འགལ་བ་[2]འཇུག་པར་གསལ་བ་ཉིད་དོ།།

(46)མེ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་གང་དག་སྔོག་ཏུ་གྱུར་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འདོད་པ་དེ་དག་ཀྱང་དེར་འཁྲུལ་པ་མེད་པའི་རྟགས་དུ་བ་ལ་སོགས་པ་ངེས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚད་མ་རྗེས་སུ་དཔག་པས་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཁོ་ནའོ། །དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་ཡང་རེས་འགའ་བ་ཉིད་ཀྱིས་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་པར་གྲགས་ཏེ། རྒྱུ་མེད་པ་ནི་ལྟོས་པ་མེད་པས་རེས་འགའ་བ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དམ་བཅས་པ་ལ་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གནོད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ།།

1 རིགས་ སྣ། པེ།

2 འགལ་བ་ལ་ སྣ། པེ།

(47)སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་གྲོང་ཁྱེར་ལ་སོགས་པ་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་མཐའ་དག་གི་མིག་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་སྐྱོབ་པ་(140a)བདག་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱན་སྒྲིབ་པ་མི་མངའ་བས་མངོན་སུམ་དུ་གཟིགས་ཏེ། གཞན་དག་ལ་ཡང་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ཡོད་པར་ཡིད་ཆེས་པའི་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པས་ལུང་དང་འགལ་བ་ཡང་ཡིན་ཏེ། ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་མེད་པ་དག་ལ་ནི་དེ་ལྟར་གཟིགས་པ་དང་བསྟན་པ་འཐད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(48)བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཕྱི་དང་ནང་གི་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་རྣམ་པ་དུ་མར་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་འདི་དག་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ན་ཇི་ལྟར་རུང་སྟེ། ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་ཤིན་ཏུ་མེད་པ་རྣམས་ནི་གཏན་[1]ནས་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ།།

(49)ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་འབྲས་བུ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་ལྷ་དང་དམྱལ་བ་ལ་སོགས་པའི་འགྲོ་བར་གྱུར་པ་གང་དག་རང་བྱུང་ཉིད་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་བསྟན་པ་དེ་དག་དང་ཡང་ཇི་ལྟར་འགལ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། རུས་སྦལ་གྱི་སྤུ་ལ་སོགས་པ་ཤིན་ཏུ་མེད་པ་རྣམས་ལས་གོས་བྱ་བར་བསྟན་པ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(50)དེའི་ཕྱིར་ལས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཡིད་དུ་འོང་བ་དང་ཡིད་དུ་མི་འོང་བ་ལ་སྐུར་བ་བཏབ་པས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་ཕྱོགས་ལ་སྐུར་བ་བཏབ་པར་འགྱུར་རོ།།

(51)མདོ་ལ་སོགས་པ་ལས་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ལམ་བསྒོམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་གོང་ནས་གོང་དུ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་འབྲས་བུ་རྟོགས་པར་རྣམ་པར་

---

1 བསྙིན་ སྣ། བརྟེན་ པེ།

གཞག་པ་གང་ཡིན་པ་དེར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། རྟོགས་པ་དང་། རྟོགས་པར་བྱ་བ་དང་། རྟོགས་པར་བྱེད་པ་རྣམས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རི་བོང་གི་རྭ་ལས་བྱུས་པའི་ཐེམ་སྐས་ཀྱི་ལམ་ལ་མོ་གཤམ་ཀྱི་བུའི་རྐང་པ་བཞག་ནས་རྟའི་རྭ་ལས་བྱས་པའི་ཀ་བའི་ཚོགས་བརྩུགས་པའི་ཁང་བཟངས་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་རབ་ཏུ་མཐོ་བའི་སྟེང་དུ་འཛེག་པ་ནི་མེད་དེ། དེའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཕྱོགས་ལ་སྐྱུར་བ་བཏབ་པའི་ཉེས་པར་འགྱུར་རོ།།

(52)དེ་ལྟར་ཁྱེད་ཀྱི་ཕྱོགས་གཉིས་ཀ་ལ་སྐྱུར་བ་བཏབ་ན་བདེན་པ་བཞི་བཀག་པ་ཡིན་ནོ།།

(53)ས་བོན་དང་མྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་དང་། སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པར་གནག་རྫིའི་ཆུང་མ་ཡན་ཆད་ལ་གྲགས་པས་དམ་བཅས་པ་ལ་གྲགས་པས་གནོད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ།། (140b)

(54)གཏན་ཚིགས་སྤྱོར་བར་འདོད་པས་གཞན་དག་ངེས་པ་བསྐྱེད་པར་འདོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་ལས་ངེས་པ་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་རང་གི་ཚིག་དང་འགལ་བ་ཡང་ཡིན་ནོ།།

(55)གང་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པའི་ཚད་མའི་སྒོ་ནས་དངོས་པོ་རྣམས་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་དེ་ལ་ཡང་གནོད་པར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྡན་པས་སྔོན་པོ་ཤེས་ཀྱི་སྔོན་པོའོ་སྙམ་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་མངོན་སུམ་གྱི་ཚད་མ་རྟོག་པ་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་རྟོགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་[1]རབ་ཏུ་བསྟན་ཏོ།།

---

1 ཞེས་རབ་ཏུ་ སྣ།

ནམ་མཁའི་ཨུཏྤལ་ལ་ཡོད་པའི་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པ་ནི་མིག་གི་སེམས་ཀྱིས་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་མེད་དོ།།

(56)གང་ཅུང་ཟད་སྐྱེ་བའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ནི་འགོག་པའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་ནོ་[1]ཞེས་བྱ་བ་འདིས་གཏན་ཚིགས་ལ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བས་ཁྱབ་པས་[2]ཉེ་བར་སྟོན་པ་མཛད་པས་དངོས་པོ་རྣམས་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་ཚད་མས་རབ་ཏུ་གྲུབ་པའི་སྐད་ཅིག་མར་གནས་པའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསལ་བར་རབ་ཏུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པ་[3]ཡིན་ཏེ། ནམ་མཁའི་པདྨ་ལ་སོགས་པའི་ཤིན་ཏུ་མེད་པ་རྣམས་ལ་ནི་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པའི་ཆོས་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(57) དུ་བ་ལས་ནི་མེར་ཤེས་ཏེ། །
ཆུ་སྐྱར་ལས་ནི་ཆུ་ཡིན་ནོ། །[4]

ཞེས་མེ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའི་ངེས་པས་ངེས་པར་གཟུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསལ་བ་ཁོ་ནར་རབ་ཏུ་བསྟན་ཏེ། ཆུ་སྐྱར་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་མཐོང་བས་སྐྱིག་ཀྱུའི་ཆུ་ལ་སོགས་པ་མེད་པའི་རྗེས་སུ་དཔག་པར་འཐད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

---

1 གསེར་མདོག་སྔོན་གྱི་སྦྱོར་བ་ཞེས་བྱ་བའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཨ། ཤོག ༨༣ ན

2 ཁྱབ་པར་ པེ།

3 ཡང་བརྗོད་པ་ པེ།

4 ཆོས་བཅུ་པའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། དཀོན་རྩེགས། ཁ ཤོག ༡༦༧ བ

(58)ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་མེད་པར་སྨྲ་བ་ལ་ཆོས་མངོན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་རྒྱུ་དྲུག་དང་རྐྱེན་བཞི་བཤད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་ཇི་ལྟར་རྟུང་སྟེ་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་འགའ་ཡང་མེད་ན་དེ་དག་གི་རྒྱུ་ལ་སོགས་པ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(59)མདོ་ལས་ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དག་གིས་ཆོས་མཐའ་དག་ཡང་དག་པར་བསྡུས་པར་བརྗོད་ལ། ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་(141a) ཀྱང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ཁོ་ནའི་ངོ་བོར་རབ་ཏུ་བསྟན་ན། དེ་ཇི་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་པར་འགྱུར།

(60)གལ་ཏེ་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལས་[1]མ་གཏོགས་པའི་ཆོས་ཤིག་མི་སྐྱེ་བར་སྨྲ་བ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་བཙོད་པ་མེད་དེ་དེ་ལས་མ་གཏོགས་པའི་ཆོས་ནི་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་ཁས་མི་ལེན་ཏོ།།

(61)ཇི་སྟེ་[2]ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཚད་མ་ལ་སོགས་པ་ཁས་ལེན་པའི་ཕྱིར་སྐྱོན་དབྱུང་བ་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གླགས་མི་ཐད་དོ་[3]སྙམ་དུ་སེམས་ན། འོ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་ཚད་མ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གདོན་མི་ཟ་བར་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལོག་པར་བརྗོད་དགོས་སོ། །དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ན་འཇིག་རྟེན་དང་ལུང་དང་འགལ་བ་ཇི་ལྟར་སྤོང་བར་འགྱུར། ཁོ་བོ་ཅག་ནི་ནུས་པ་མ་

1 སོགས་པ་མ་གཏོགས་ སྣ། པེ།

2 ཅི་སྟེ་ སྣ། པེ།

3 གླགས་མི་ཐོད་དོ་ སྣ། པེ།

ལུས་པ་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལོག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ལ་དངོས་པོ་ཞེས་བརྗོད་དེ། གལ་ཏེ་ཁྱེད་ལ་[1]ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་དོ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་ན་ནི་དགའ་དགུར་འདོགས་ལ་རག་གོ །མིང་དུ་བཏགས་པ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་ནི་དངོས་པོ་དེ་ལྟ་བུའི་ངོ་བོར་འབྲང་བ་མེད་དེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།།

(62)གཞན་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ཡང་ཅི་ཡིན་པ་བརྗོད་དགོས་སོ།། གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད་མེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱས་ན་ནི་[2]ནུས་པ་མེད་པར་སྨྲས་[3]པར་འགྱུར་ལ། སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཞེས་བྱས་ན་ནི་དེ་ནུས་པ་ཡིན་ན། དེ་ཇི་ལྟར་ནུས་པ་དང་མི་ནུས་པ་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་འདི་དག་གཅིག་ལ་ལྡན་པར་འགྱུར། མེད་པའི་སྒོ་ནས་ཡོད་པ་ཉིད་འགྲུབ་པར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར།།

(63)ཇི་སྟེ་ཐམས་ཅད་མེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་ཀུན་རྫོབ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་བརྗོད་པ་མེད་དེ། ཁྱེད་ཀྱིས་[4]དམ་བཅས་པ་ནི་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །དངོས་པོ་ཡང་སྐྱེ་བ་ཁོ་ན་ཞེས་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བ་ཇི་སྐད་དུ་བཤད་པར་[5]འགྱུར་ཞེ་ན། སྐྱེ་བ་སྐྱེ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། ཀུན་རྫོབ་ལས་བཟློག་པ་སྐྱེ་བ་མེད་(141b)པ་ཡང་དོན་དམ་པ་ཡིན་པས་དེའི་

---

1 ཁྱེད་དེ་ལ་ སྣ། པེ།

2 ཅེས་བྲ་ སྡེ།

3 སྨྲས་པར་ སྡེ། པེ།

4 ཁྱེད་ཀྱི་ སྣ། པེ།

5 སླས་ སྣ། པེ།

ཆོ་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་སྐྱེ་བ་མེད་པ་སྐྱེ་བ་མེད་དོ་ཞེས་སྨྲ་བར་འགྱུར་རོ།།[1] དེ་ལྟ་ན་ནི་བརྗོད་པ་འབྲེལ་བ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །གཉིས་ཀ་དང་གཉིས་ཀ་མ་ཡིན་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཡང་འགལ་བའི་ཕྱིར་མི་སྲིད་པ་ཁོ་ནའོ།།

(64)འོན་ཏེ་མི་རྟག་པའི་དོན་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དོན་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་མི་རྟག་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཅི་ཞིག་ཡིན། གལ་ཏེ་རྟག་པ་མེད་པ་ཙམ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་སྒོ་ནས་ཇི་ལྟར་འགྲོ་བ་ལ་གྲགས་པར་འགྱུར། འོན་ཏེ་རྟག་པ་ལས་གཞན་པ་ཞིག་མི་རྟག་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། རྟག་པ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ནི་ཤུགས་ཀྱིས་ན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ཡིན་པས་དེའི་ཚེ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་དོ་ཞེས་བྱས་ན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པའི་ཤེས་པས་རྟོགས་པ་ཡོད་དོ་ཞེས་བརྗོད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་ཡིན་ན་ནི་ཇི་ལྟར་ན་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁས་མ་བླངས་པ་ཡིན། རྗེས་སུ་དཔག་པས་རྟོག་པ་ཡང་སྤྱང་བར་བྱས་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(65)ཇི་སྟེ་འཇིག་རྟེན་ལ་གྲགས་པ་ཀུན་རྫོབ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ལ་ཡང་འཇིག་རྟེན་འདི་གང་ཡིན་པར་འདོད། ཅི་བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་རྣམས་སམ། འོན་ཏེ་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པ་ཡིན། རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་པོ་ལྟར་ན་དངོས་པོ་ལ་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་རང་བཞིན་དུ་མར་འགྱུར་ཏེ། གཅིག་ལ་ཡང་བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་མང་པོ་རྣམས་རྣམ་པ་དུ་མར་སྒྲོ་འདོགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཉིས་པ་ལྟར་ན་བདག་མེད་པ་དང་ལས་དང་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་ཁས་བླང་བར་མི་བྱ་སྟེ། འདི་དག་ནི་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པ་ལ་གྲགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(66)འོན་ཏེ་སྒྱུ་མའི་དོན་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དོན་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ལ་ཡང་སྒྱུ་མའི་དོན་

1 སྨྲས་པར་ སྣ། པེ།

ཞེས་བྱ་བ་འདི་གང་ཡིན་པ་བརྗོད་པར་བྱ་དགོས་སོ།[1] །གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད་མེད་པ་ཡིན་ན་ནི་སྔར་བཤད་པའི་ཉེས་པར་ཡང་འགྱུར་ལ། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བ་དག་ཏུ་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར། འོན་ཏེ་སྒྲ་མ་ནོར་བའི་ཤེས་པས་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འདི་ཤེས་བྱ་ནང་གི་ཡིན་པའི་ཚུལ་ལས་ཁྱད་པར་ཅི་ཡོད།

(67)ཇི་སྟེ་[2]ཀུན་རྫོབ་སྒྲ་ཙམ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ལེགས་པར་བཤད་པ་དང་ཉེས་པར་བཤད་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་[3]ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། བསྟན་པར་བྱ་བའི་དོན་མེད་ན་སྒྲ་ཙམ་ལ་(142a)ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(68)ཇི་སྟེ་སྒྲའི་དོན་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་ཅི་ཡང་ཁྱད་པར་མེད་པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར། བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་སོ་སོ་[4]རང་གིས་རིག་པར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་གང་གི་ནང་དུ་བསྡུ་བར་འགྱུར། རེ་ཞིག་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་བརྗོད་དུ་མེད་པའི་ཕྱིར་ལ། ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ནི་ཐ་སྙད་གདགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་སྐད་དུ་མདོ་ལས་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་གང་ཞེ་ན། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཐ་སྙད་ཇི་སྙེད་ཡི་གེ་དང་སྒྲས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། འདིས་ནི་མདོར་ན་ཀུན་རྫོབ་སྒྲའི་དོན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་སྣང་བ་དང་རྣམ་པར་བརྟག་པར་བྱ་བའི་དོན་དེ་དག

1 བརྗོད་དགོས་སོ།། སྣ། པེ།

2 སྣར་ཐང་དང་པེ་ཅིང་དཔར་མའི་ནང་ཇི་སྟེ་ཞེས་པ་ཕལ་ཆེར་ཅི་སྟེ་ཞེས་འདུག་རུང་དོན་ལ་ཁྱད་མེད་པར་སྣང་ངོ་།

3 དབྱེ་བར་ སྣ།

4 སོ་སོར་ སྣ། པེ།

གཅིག་ཏུ་བྱས་ནས་སྨྲིའི་རྣམ་པ་གཟུང་སྟེ། དེ་སྐད་དུ་བརྗོད་དོ་[1] ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དོན་དམ་པ་ལ་ཡང་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ཡང་ཚིག་གི་ངོ་བོར་གཞག་པར་[2] བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་དག་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའི་ནང་དུ་འདུས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་དངོས་པོར་ཡོད་པ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བདེན་པའི་ཁྱད་པར་གཞན་གྱིས་ཁ་བསྐང་བར་བྱ་བའི་རྣམ་པ་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་བརྟེན་ནས་སྐྱེས་པའི་གཟུགས་དང་བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་རང་རིག་པ་དག་ལ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་ན་ནི་དགའ་དགུར་ཐོགས་ལ། ཟན་ཡང་བྱིན་ཅིག། ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་དེ་ཙུང་ཟད་ཡོད་པས་བཙད་པ་མེད་དོ།

(69)ཇི་སྟེ་སྐད་ཅིག་ལས་ཕན་ཆད་དུ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་མི་བརྟན་པའི་དོན་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དོན་ནོ། །དེ་ལས་བཟློག་པ་རྟག་པའི་དོན་ནི་དོན་དམ་པའོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ཡིན་ན་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་ཁྱེད་ཀྱིས་ཀྱང་དངོས་པོ་སྐད་ཅིག་པར་ཁས་བླངས་ལ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་དེར་ཟད་པས་བཟློད་པ་མེད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དངོས་པོའི་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་བདག་མེད་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་དོན་དམ་པར་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་བྱུང་ཡང་རུང་མ་བྱུང་ཡང་རུང་། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་[3] མི་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རྟག་པར་འདོད་དོ།།

(70)འོན་ཏེ་མི་བདེན་པའི་དོན་ཀུན་རྫོབ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་དེ་བདེན་

1 དེ་སྐད་དུ་བྱའོ་ སྡེ།

2 བཞག་པ་ སྣ། པེ།

3 དུས་ཐམས་ཅད་མི་འགྱུར་ སྡེ།

པར་འགྱུར། གཅིག་ལ་བདེན་པ་དང་མི་བདེན་པ་(142b)ཉིད་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་ནི་མི་འཐད་དོ། །ཀུན་རྫོབ་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཅི་ཡང་རུང་བ་ཞིག་ཏུ་ཁས་བླང་བར་བྱ་དགོས་སོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཇི་ལྟར་དེས་འགྲོ་བ་ལ་བདེན་པ་ཞེས་བྱ་བར་གྲུབ་པར་འགྱུར། དེ་[1] ཁས་ལེན་ན་ནི་དམ་བཅས་པའི་དོན་བོར་བ་ཡིན་ནོ།།

(71)གཞན་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཚད་མའམ་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་གྲང་ན། གལ་ཏེ་ཚད་མ་ཡིན་ན་ནི་འདི་ཇི་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་ཡིན། འོན་ཏེ་ཚད་མ་མ་ཡིན་ན་ནི་འདི་ལས་ཇི་ལྟར་བདག་མེད་པ་འགྲུབ་པར་འགྱུར།

(72)གདོན་མི་ཟ་བར་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ས་བོན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་ཡང་ཁས་བླང་དགོས་ཏེ། ས་བོན་མེད་པའི་ཀུན་རྫོབ་ནི་མི་འཐད་དོ།། ས་བོན་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ནི་དངོས་པོར་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ།།

(73)གཞན་ཡང་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཁས་ལེན་ན་དེ་ལ་སྒྲོ་བཏགས་པ་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ཡིན་ལ། སྒྲོ་མ་བཏགས་པ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ཡིན་པས་བདེན་པ་གཉིས་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་རུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཁས་མི་ལེན་ན་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱང་མེད། དོན་དམ་པར་རྣམ་པར་གཞག་པར་ཡང་མི་ནུས་ཏེ། རྣམ་པར་གཞག་པའི་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(74)གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་[2]དོན་དམ་པ་གྱི་ན་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གང་གི་དོན་དུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་དེ་འདི་དོན་དམ་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ཇི་ལྟར་ན་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་[3]

1 དེས་ སྣ། པེ།

2 གཞན་ཡང་དོན་དམ་ སྡེ།

ངེས་པར་གཟུང་བ་ཡང་ཡིན། འདི་ནི་དོན་དམ་པའི་སྒྲར་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཉིད་དུའང་འོས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་འདི་དོན་དམ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། འདིའི་དོན་ཡང་དམ་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ནི་ཡེ་ཤེས་དམ་པའི་དོན་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། ཕྱི་ན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་དམ་པ་ཕྱི་ན་ཉིད་ཅིག་ཡིན་ན་ནི་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་རྣམས་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱི་ན་ཉིད་[1]ཅིག་བཀག་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། དེས་ན་དངོས་པོ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་རོ།།

(75)གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་པ་དག་གཅིག་པར་འདོད་ན་ནི། དེའི་ཚེ་བདེན་པ་གཉིས་སུ་རྣམ་པར་གཞག་པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར་ཏེ་གཉིས་ལས་གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག་དོར་དགོས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་ཐ་དད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གཉི་ག་ཡང་སོ་སོར་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་(143a)ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྟེ་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའོ་ཞེ་ན། གཅིག་ལ་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་འདི་གཉིས་སུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཐ་དད་པ་ཡང་མ་ཡིན། ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་འདི་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་འདི་དག་ནི་གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག་དགག་པ་ཅིག་ཤོས་བསྒྲུབ་པ་མེད་ན་མེད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ནི་དེའི་ཚེ་དགག་པར་[2]ཡང་ཇི་ལྟར་ནུས་ཏེ། སྒྲུབ་པ་དང་དགག་པ་དག་ཅིག་ཅར་གཅིག་ལ་འགལ་བའི་

3 ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ སྣ། པེ།

1 ཕྱི་ན་ཅིག་ སྣ། པེ།

2 དེའི་དགག་ སྣ། པེ།

ཕྱིར་རོ།།

(76)གཞན་ཡང་ཁྱེད་ཀྱི་ལྟར་ན་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་རྫོགས་པ་ཡང་རྟུང་བ་དཀའོ། །དེ་མེད་པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱང་ཐོབ་པར་དཀའ་བ་ཁོ་ན་སྟེ། འདི་ལྟར་མ་ཆོད་པ་དང་ཕན་གདགས་པར་འདོད་པས་གང་བྱིན་པ་དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་དང་བ་སྐྱེད་པར་བྱེད་ཀྱི། སྦྱིན་པར་བྱ་བ་དང་། སྦྱིན་པ་པོ་དང་། ལེན་པ་མི་དམིགས་པ་[1]ལ་བརྟེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་ཅི་སྦྱིན་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་མི་དམིགས་སམ། འོན་ཏེ་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར། ཕྱོགས་དང་པོ་ལྟར་ན་སུས་ཀྱང་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་བྱིན་པས་བསོད་ནམས་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །སེམས་ཅན་མེད་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་[2]རྣམས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དོན་[3]གྱི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་ངལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དོན་མེད་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལྟ་བས་ན་མེད་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །ཡུལ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་སྦྱིན་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་གཟིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔར་གྱུར་པས་དོན་དུ་གཉེར་བ་རྣམས་ལ་སྲས་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་ཡོངས་སུ་བཏང་[4]བར་འགྱུར། ཁྱེད་ནི་དམིགས་པ་ལ་བརྟེན་པའི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་དག་པར་ཡང་མི་འདོད་དེ། དེ་ལྟ་བས་ན་ཚོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་མི་སྲིད་

1 མི་དྨིགས་པ་ལ་ སྡེ།
2 བྱང་ཆུབ་སེམས་རྣམས་ སྣར།
3 སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ པེ།
4 ཇི་ལྟར་བཏང་ སྣར། པེ།

དོ། །དེ་མེད་པས་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱི་གོ་སྐབས་ཀྱང་ཐག་བསྲིངས་བར་འགྱུར་རོ།།

(77)གཞན་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་དོན་གང་ཡིན་པར་འདོད། གལ་ཏེ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པའི་ཕྱིར་(143b)ངོ་བོ་ཉིད་མེད་དོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དེ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་རག་ལས་པའི་ཕྱིར་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་དངོས་པོ་རྣམས་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་མི་འདོད་དོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ལྟོས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རྟག་ཏུ་ཡོད་པའམ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྟེ་འགགས་པ་རྣམས་ཡང་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་མི་སྐྱེ་བས་རང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་དོ་ཞེ་ན། འདི་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་འགགས་པ་རྣམས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་ནི་མི་འདོད་དོ། །འོན་ཏེ་རང་བཞིན་དེ་ལ་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་འདོད་དོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དེ། སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་འཇིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་སྐད་ཅིག་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྐད་ཅིག་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་སྐད་ཅིག་མ་གཞན་དུ་གནས་པར་ཡང་མི་འདོད་དོ།།

ཇི་སྟེ་ཇི་ལྟར་བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་དངོས་པོར་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་དོན་དམ་པར་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་མེད་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་དོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་ཀུན་བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་འདོད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ།།



གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་བྱིས་པ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོས་ཀུན་བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་དུ་ཟིན་ཀྱང་འོན་ཀྱང་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་གཉིས་སུ་མེད་པའི་བདག་ཉིད་དུ་ནི་གནས་པ་ཁོ་ནའོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ཏེ་གལ་ཏེ་[1]འདི་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བར་མི་འགྱུར་རོ།།[2]

(78)དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་ཡང་མ་སྐྱེས་པའི་དོན་འདི་གང་ཡིན་པར་འདོད། གལ་ཏེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དང་པོ་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། འདི་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དེ་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་འཁོར་བ་ཐོག་མ་མེད་པར་ནི་འདོད་དོ། །འོན་ཏེ་[3] སྔར་སྐྱེས་ཟིན་པའི་དངོས་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དོ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་སྔར་སྐྱེས་ཟིན་པ་ཡང་སྐྱེ་བར་མི་འདོད་དེ། དེ་ནི་ཞིག་(144a) པའི་ཕྱིར་རོ། འོན་ཏེ་སྔོན་མེད་པ་ཅི་ཡང་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ཡང་མི་འདོད་པ་བསྒྲུབས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འཁོར་བ་ན་སྔོན་མེད་པའི་སེམས་ཅན་འབྱུང་བར་[4]ནི་མི་འདོད་དོ། །ཆོས་སྔོན་མེད་པར་སྐྱེ་བར་ཡང་མི་འདོད་དེ། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་

1 མ་ཡིན་ཏེ་འདི་ཡང་ སྣ། པེ།

2 གོང་གི་རྩོད་པ་ཞི་ལྟ་པ་ནས་འདི་བར་ལྕང་རིགས་དང་འགལ་བའི་རྩོད་པ་འདིར་ཐུན་མོང་ལུང་དང་འགལ་བའི་རྩོད་པ་བརྒྱད་ཡོད་ལ། རིགས་པ་དང་འགལ་བའི་རྩོད་པ་ཉེར་དྲུག་ཡོད་པ་བསྟན་དར་ཐུགས་རམ་པས་གསུངས།། དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་ཐོ། ལོ་ཀེ་ཤ་ཙནྡྲ། དིལླི

3 གལ་ཏེ་ སྣ།

4 འབྱུང་བ་ནི་ སྣ།

སྤྱིར་འགྲོགས་པ་དང་རིགས་མཐུན་པའི་ཆོས་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་ཀུན་བརྟགས་པའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་དུ་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ཡང་འགལ་བ་མེད་དེ། བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྐྱེ་བར་མི་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

ཅི་སྟེ་བདག་ཉིད་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་ཡང་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་རག་ལས་པའི་ཕྱིར་འགལ་བ་མེད་དོ། །ཇི་སྐད་དུ་སྔར་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ནི་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་བཟློག་པར་དཀའོ། །འོན་ཏེ་འདི་དག་ཕན་ཚུན་ཁྱད་པར་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ཡང་གལ་ཏེ་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ལས་བསམས་ནས་སྨྲ་ན་དེའི་ཚེ་ཉེས་པ་མེད་དོ། །འོན་ཏེ་འཇིག་རྟེན་ན་གྲགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་ནི། དེའི་ཚེ་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་གང་གིས་བཟློག་པར་འགྱུར། ཇི་སྟེ་རང་གི་ངོ་བོ་ལས་དོན་དམ་པ་གཞན་དུ་གྱུར་པ་བྱ་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྐྱེ་བ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ཡང་ཉེས་པ་མེད་དེ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་བྱ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་གཞན་གྱིས་མ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ཡང་མི་འདོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་འགའ་ཡང་མི་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་ན་རྣམ་པ་འདིས་གཞིད་མ་ནས་ཞི་བ་དང་། རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཚིག་གི་དོན་ཀྱང་དཔྱད་པར་བྱ་བ་ཁོ་ནའོ།།

གཞན་ཡང་མདོ་སྡེ་མང་པོ་དང་འགལ་བ་གཞན་ཡང་སྣང་བ་ཉིད་དེ། དེ་སྐད་

དུ་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ལས།[1] "དེ་ལྟ་བས་ན་ངས་མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ལས་དགོངས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེས་བཤད་དོ།" ཞེས་གསུངས་ཏེ་མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་ལ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་ནོ།།

ཐེག་(144b)པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་ལས་[2]ཀྱང་། "རིགས་ཀྱི་བུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ལ་ཚུལ་བཞིན་མ་[3]ཡིན་པར་སྒྲ་ཇི་བཞིན་པར་[4]རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་མ་ཡིན་པར་དགོངས་པའི་ཚུལ་བཞིན་དུ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་དུ་འགྱུར་རོ། །རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ལ་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པར་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ལ་དམ་པ་མ་ཡིན་པའི་ལྟ་བ་ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ་མཚན་མའི་ལྟ་བ་དང་། ལྟ་བ་མ་ཡིན་པར་ལྟ་བའི་ལྟ་བ་དང་། ཐ་སྙད་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་དང་། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་དང་། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་དང་།[5]" ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་གསུངས་ནས་"རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་ལ་མཚན་མའི་ལྟ་བ་

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༧ ན ༥

2 ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་རབ་ཏུ་དད་པ་རབ་ཏུ་སྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། པ། ༡༧ ན ༡

3 ཚུལ་མ་ཡིན་ སྡེ།

4 ཇི་བཞིན་དུ་ སྣ།

5 ལྟ་བ་ཞེས་ སྡེ།

གང་ཞེ་ན། ངས་སྦྱོར་བ་ལས་བྱུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་དགོངས་ཏེ། ཆོས་རྣམས་མེད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་ལ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་ཆོས་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱང་མེད་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་ཏེ། མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་མ་ཉེ་བར་བཟུང་ནས་མེད་པའི་ལྟ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་བས་ན་མཚན་མའི་ལྟ་བ་ཞེས་བྱའོ། དེ་ལ་ལྟ་བ་མ་ཡིན་[1]པར་ལྟ་བའི་ལྟ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་སྟེ། དེ་ལ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ནི་ལྟ་བར་འདུ་ཤེས་སུ་མི་འགྱུར་ཏེ།[2] མེད་པར་ལྟ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་[3]དེའི་ལྟ་བ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ།[4] དེ་ལྟ་བས་ན་ལྟ་བ་ལ་མ་ཡིན་པར་ལྟ་བའི་ལྟ་བ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལ་ཐ་སྙད་ལ་སྐུར་པ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་དང་། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་དང་། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་ནི་མཚན་མའི་ལྟ་བ་དེས་ཐམས་ཅད་ལ་སྐུར་བ་བཏབ་ན་ཐ་སྙད་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་ལ་ཡང་མངོན་པར་ཞེན་པར་འགྱུར། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་ལ་ཡང་མངོན་པར་ཞེན་པར་འགྱུར། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ལྟ་བ་ལ་ཡང་མངོན་པར་ཞེན་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་བས་ན་ལྟ་བ་ཐམས་ཅད་མཚན་མའི་ལྟ་བའི་གཞི་

1 ལྟ་བ་ལ་མ་ཡིན་ སྣེ། པེ།

2 བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ནི་མེད་པར་ལྟ་བ་དེ་ལ་ལྟ་བ་མ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་འདུ་ཤེས་སུ་མི་འགྱུར་ཏེ། སྣ། པེ།

3 དེ་ཡང་ སྣ། པེ།

4 ཆེན་པོ་ཡིན་པས། སྣ། པེ།

ཅན་(145a)ཁོ་ནའོ་"ཞེས་རྒྱས་པར་བརྗོད་དོ། །འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[1]

བཏགས་པའི་དངོས་པོ་མེད་པ་སྟེ། །
གཞན་གྱི་དབང་ནི་ཡོད་པ་ཡིན། །
སྒྲོ་འདོགས་པ་དང་སྐུར་འདེབས་པའི། །
མཐའ་ལ་རྟོག་པ་བརྟག་པར་འགྱུར། །
བཏགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ནི། །
ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པ། །
གཞན་གྱི་དབང་ལ་བརྟེན་ནས་ནི། །
མི་རྣམས་ཀྱི་ནི་རྣམ་རྟོག་སྐྱེ། །

ཞེས་གསུངས་ཏེ། འདི་ལས་ནི་གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ནི་དོན་དམ་པར་ཡོད་ལ། དེ་ལ་ཀུན་བཏགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པར་བཤད་དོ་ཞེས་བསྟན་པར་འགྱུར་རོ། །ཡང་དེ་ཉིད་ལས།[2]

ཕུང་པོ་ལ་ནི་བདག་མེད་དེ། །
བདག་ལའང་ཕུང་པོ་མེད་པ་ཉིད། །
དེ་དག་ཇི་ལྟར་རྟག་བཞིན་མིན། །
དེ་དག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མིན། །

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༧༠ ན ༧

2 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༡༧ ན ༨

ཞེས་གསུངས་ཏེ། དགག་པ་འདི་གཉིས་ཀྱིས་ཀྱང་ཕུང་པོ་རྣམས་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །སྟོང་པ་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།[1] "ལས་ཀྱང་ཡོད།རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡང་ཡོད་དེ། བྱེད་པ་པོ་ནི་མི་དམིགས་སོ་"ཞེས་གསུངས་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་ཏེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པར་ལས་ཀྱང་ཡོད། རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡང་ཡོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་བྱེད་པ་པོ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པས་བྱེད་པ་པོ་མི་དམིགས་སོ་ཞེས་བརྗོད་པར་མི་བྱའོ། །ཡང་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[2]

ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར། །
དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཡོད་པ་ཉིད། །
གལ་ཏེ་ཇི་ལྟར་མཐོང་དེ་ཉིད། །
ཐམས་ཅད་དེ་ཉིད་མཐོང་བར་འགྱུར། །
ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མེད་པའི་ཕྱིར། །
ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་དག་པ་མེད། །
དེ་དག་ཇི་ལྟར་མཐོང་བཞིན་མིན། །
དེ་དག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མིན། །

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཤ། ༣༥༣ ནས་ ༣༦༡ བར་ཡོད་པ་གཅིག་དང་། མདོ་ཆེན་པོ་སྟོང་པ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ། མདོ་སྡེ། ཤ། ༣༥༠ ན ༡ ནས་ ༣༥༣ བ ༣ བར་ཡོད་པ་གཉིས་བཞུགས་རུང་ལུང་འདྲེན་འདི་གཉི་ཀའི་ནང་བརྙེད་སོན་མ་བྱུང་།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ ༡༡༧ ན ༨

ཞེས་གསུངས་ཏེ། འདི་ལས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ཉེས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། ཡང་དེ་ཉིད་ལས།[1]

དོན་ཡོད་མ་ཡིན་སེམས་ཉིད་དེ། །
ཕྱི་རོལ་དོན་མཐོང་ལོག་པ་ཡིན། །
རིགས་པས་རྣམ་པར་ལྟ་རྣམས་ཀྱི། །
གཟུང་དང་འཛིན་པ་འགག་པར་(145b)འགྱུར། །
ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར། །
ཕྱི་རོལ་དོན་ནི་ཡོད་མ་ཡིན། །
བག་ཆགས་ཀྱིས་ནི་བསྒྲིབས་པའི་སེམས། །
དོན་དུ་སྣང་བར་རབ་ཏུ་འབྱུང་། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །

འཕགས་པ་ས་བཅུ་པ་ལས་ཀྱང་།[2] "འདི་ལྟ་སྟེ། ཁམས་གསུམ་པ་འདི་ནི་སེམས་ཙམ་མོ་"ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་བཞིན་དུ་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ ༡༦༥ ན ༥ ལུང་འདིའི་འགྱུར་ལང་གཤེགས་ནང་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། ཕྱི་རོལ་དོན་མཐོང་ལོག་པ་སྟེ། །དོན་མེད་སེམས་ནི་འབའ་ཞིག་གོ། རིགས་པས་རྣམ་པར་གཞིགས་ནས་ནི། །གཟུང་བ་དང་ནི་འཛིན་པ་འགག །ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་བརྟགས་པ་ལྟར། །ཕྱི་རོལ་གྱིས་ནི་དོན་མེད་དོ། །བག་ཆགས་ཀྱིས་ནི་དཀྲུགས་པའི་སེམས། །དོན་དུ་སྣང་བ་ཞིན་ཏུ་འབྱུར།།
2 སྡེ་བཀའ། ཕལ་ཆེན། ཁ། ༣༣༠ བ

པ་དང་། ལང་ཀར་གཤེགས་པ་དང་།[1] སྡུག་པོ་བཀོད་པ་ལ་སོགས་པ་ལས། ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་གྱི་ལུས་ཉིད་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་སེམས་ཁོ་ན་དོན་དམ་པར་ཡོད་ཀྱི། གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པར་འགྱུར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ།།

འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[2] "འོད་སྲུངས་རྟག་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མཐའ་གཅིག་གོ །འོད་སྲུངས་མི་རྟག་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མཐའ་གཉིས་པའོ།། འོད་སྲུངས་དེ་བཞིན་དུ་ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མཐའ་གཅིག་གོ །འོད་སྲུངས་མེད་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མཐའ་གཉིས་པའོ། །མཐའ་འདི་གཉིས་ཀྱི་དབུས་གང་ཡིན་པ་ནི་གཏན་དུ་མེད་པ། མི་གནས་པ། སྣང་བ་མེད་པ། རྣམ་པར་རིག་པ་མེད་པ་གནས་པ་མེད་པ་སྟེ། འདི་ནི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དབུ་མའི་ལམ་ལ་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའོ་"ཞེས་གསུངས་ཏེ། འདིས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ། བསྟན་དུ་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པ། རྟག་པ་དང་ཆད་པའི་མཐའ་གཉིས་དང་བྲལ་བ་ཡོད་དོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྲིན་ལས་ཀྱང་།[3] "རིགས་ཀྱི་བུ་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པ་ཞིག་ཡོད་པར་མ་གྱུར་ན་ནི་ཚངས་པར་སྤྱོད་པའི་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པ་དེ་ཉིད་ལས། གང་དག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་དེ་ལ་ཡང་སྐུར་བ་བཏབ་

---

1 འདི་ལྟར་ཁམས་གསུམ་འདི་ནི་རང་གི་སེམས་ཙམ་སྟེ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༥༧ ན༢

2 འོད་སྲུང་གིས་ཞུས་པའི་ལེའུ། སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཆ། ༡༣༡ ན ༡

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༩༩ ན ༦ དོན་དམ་པར་མེད་དུ་ཟིན་ན་ཞེས་འདུག

ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་དེ་དག་ནི་གསོར་མི་རུང་ངོ་ཞེས་བསྟན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་[1]"འོད་སྲུངས་གང་ཟག་ཏུ་ལྟ་བའི་རི་རབ་ཙམ་ནི་བླའི། མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ" ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མ་རུང་(146a)བར་མི་འགྱུར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ལས་[2]སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་གསུངས་ཏེ། "བྱམས་པ་གཞན་གྱི་དབང་གི་མཚན་ཉིད་དང་། ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་མཚན་ཉིད་ལ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བར་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་དང་། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཏན་བྲལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་ལ་མི་དམིགས་ཏེ། འདི་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་མཐའ་དག་ཅེས་བྱའོ" ཞེས་གང་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། །གང་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ་སོ་རང་གིས་[3]རིག་པར་བྱ་བ་དོན་དམ་པའི་དངོས་པོ་གདོན་མི་ཟ་བར་ཡོད་དོ། །གཞན་དུ་ན་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ལས་བརྗོད་པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཅན་མ་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་དེ་ཡང་གང་ཞེ་ན། གང་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་གང་འཕགས་པའི་གཟིགས་པས་བརྗོད་དུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པ་སྟེ། བརྗོད་དུ་མེད་པའི་ཆོས་ཉིད་དེ་ཁོ་ན་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་འདུས་བྱས་ཞེས་བྱ་

---

1 དཀོན་མཆོག་སྤྲིན། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ ༤༧ ན ༦ མདོའི་ནང་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། རིགས་ཀྱི་བུ། གལ་ཏེ་དོན་དམ་པ་མེད་དུ་ཟིན་ན་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ།།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ ༡༨ བ ༣

3 སོ་སོར་རང་རིག་པར་བྱ་བ་ སྣ། པེ།

བ་དང་དེ་བཞིན་དུ་འདུས་མ་བྱས་ཞེས་བྱ་བར་མིང་དུ་བཏགས་སོ་ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་དང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ།།

(1)ཁྲོད་ཀྱིས་[1]དོན་དམ་པར་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཐེག་པ་ནི་གཅིག་པོ་ནར་ཟད་དེ། ལྷག་མ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་དང་། ལུང་དང་འགལ་ཏེ། འདི་ལྟར་སྒྲུབ་པའི་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་མཐོང་བའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་རྣམས་དད་པ་སྣ་ཚོགས་པར་དམིགས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཁ་ཅིག་ནི་གཅིག་ཏུ་གཞན་ལ་ཕན་པའི་བསམ་པ་ལ་ཞུགས་པར་སྣང་ངོ་། །གཞན་དག་ནི་རྒྱུ་མེད་པ་ཁོ་ནར་ཕ་རོལ་པོ་སྡུག་བསྔལ་བ་ཁོ་ནར་མངོན་པར་དགའོ། །གཞན་དག་ནི་བདག་འ་ཕན་པ་དང་། བདེ་བ་ཆུང་ངུ་ལ་ཡིད་ཆགས་ཤིང་གཞན་ལ་འཕྲུ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཁ་ཅིག་ནི་རང་གི་བདེ་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་སྒྲུབ་པ་ལྟར་ལེན་ཅིང་ཕ་རོལ་ལ་གནོད་ཅིང་སྡུག་བསྔལ་བ་ལས་[2]རྣམ་པར་ལོག་པ་ཡིན་ནོ། །ལ་ལ་ནི་འཁོར་བའི་བདེ་བ་ཙམ་འདོད་ཅིང་བསོད་ནམས་དག་བྱེད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཞན་དག་ནི་སྲིད་པའི་བདེ་བ་འདོད་པ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་ཅིང་བདག་ཉིད་རྣམ་པར་ཐར་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་(146b)བརྩོན་པར་བྱེད་དོ། །གཞན་དག་ནི་ཕ་རོལ་པོ་ཁོ་ན་གྲོལ་བར་བྱ་བར་སེམས་ཤིང་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་གོ་འཕང་གི་རྒྱུ་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དག་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་དམིགས་སོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དེ་ལྟར་སྒྲུབ་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དམིགས་ནས་དེའི་རྒྱུའི་བྱེ་བྲག་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་འདོད་པའི་མཚན་ཉིད་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་སྟེ། འབྲས་

---

1 མཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་སྒྲུབ་ཀྱི་བརྗོད་པ་འདི་ནས་འགོ་ཚུགས།

2 སྡུག་བསྔལ་བ་ལ་ སྣ། པེ།

བུའི་བྱེ་བྲག་ནི་རྒྱུའི་བྱེ་བྲག་གིས་བྱས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(2)བདག་ཉིད་འདོད་པའི་སྒོ་ཁོ་ན་ནས་འཇུག་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་དད་པ་ཁོ་ན་འཇུག་པའི་རྒྱུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ངེས་སོ། །སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དད་པའི་བྱེ་བྲག་དེ་ཡང་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་མེད་ན་མེད་པ་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་རིགས་ཐ་དད་པས་ཇི་ལྟར་མཐུན་པར་རིགས་ཀྱིས་བྱས་པའི་སྒྲུབ་པའི་བྱེ་བྲག་གི་སྒོ་ནས་ཐེག་པའི་མཚན་ཉིད་འབྲས་བུ་ཡང་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་རིགས་པས་ཐེག་པ་[1]སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་དུ་ངེས་ཁོ་ནའོ།།

(3)ཁམས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་མདོ་[2]ལ་སོགས་པ་ལས་ཀྱང་། སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་[3] ཁམས་སྣ་ཚོགས་པ་ཡིན་པར་བསྟན་ཏོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཁམས་སྣ་ཚོགས་མཁྱེན་པའི་སྟོབས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཁམས་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་མེད་པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་། མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རིགས་ལྔར་ནི་བར་བསྟན་ཏོ། །འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས་[4]ཀྱང་ "གསུམ་པོ་འདི་དག་ནི་ངེས་པར་འབྱིན་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་མདོ་སྡེ་མང་པོ་གཞན་དག་ལས་ཀྱང་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་ཐེག་པ་

---

1 རིགས་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་ སྣ། པེ།

2 ཁམས་མང་པོའི་མདོ། སྡེ་དགེ། མདོ་སྡེ། ཤ། ༣༩༧–༣༠༡

3 སེམས་ཅན་ནི་ སྡེ།

4 སྡེ་དགེ། མདོ་སྡེ། མ། ༡༣༧ ན ༡

གསུམ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ཀྱང་ཐེག་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་བོ།།

(4)འཕགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་པདྨ་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པ་ལས།[1] ཐེག་པ་ནི་གཅིག་ཁོ་ན་འོ་ཞེས་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དགོངས་པ་ཅན་དུ་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ། མཉམ་པ་ཉིད་ལ་དགོངས་པ་ལ་སོགས་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་དགོངས་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཐེག་པ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པས་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དེ། ཐེག་པ་ནི་བགྲོད་པར་(147a)བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པ་བགྲོད་པར་བྱེད་པའི་གང་ཟག་བདག་མེད་པར་མཚུངས་པ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །ཡང་ན་རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་མཚན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །ཡང་ན་རིགས་པ་མ་ངེས་པའི་ཉན་ཐོས་རྣམས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཁོ་ནས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་ཏོ། །རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བདག་ཉིད་ལྟ་བུའི་བསམ་པ་བརྙེས་ལ། ཉན་ཐོས་ཀྱི་རིགས་སུ་སྐྱེས་པ་སྤྱོན་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཚོགས་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་བདག་ཉིད་སངས་རྒྱས་[2]སུ་བྱ་བའི་བསམ་པ་ཐོབ་སྟེ། བསམ་པ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་ཐོབ་པ་དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་ཉིད་ཀྱིས་[3]ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་ཐེག་པས་རྣམ་པ་དུ་མར་ངེས་པར་འབྱུང་བ་

---

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཛ། ༡ ནས་ ༡༨༠ བ

2 རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་སངས་རྒྱས་" སྡེ།

3 བདག་ཉིད་ཀྱི་ སྣ། པེ།

ལྷ་བུའི་སྒྲོ་ནས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །ཡང་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལས་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཐེག་པ་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་དེའི་དབང་དུ་མཛད་ནས་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་བཤད་དོ་ཞེས་དེ་ལྷ་བུའི་དགོངས་པས་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་ཏོ། །ཡང་ན་ཉན་ཐོས་ཀྱི་རིགས་སུ་མ་ངེས་པ་རྣམས་ཀུན་དུ་དྲང་བའི་ཕྱིར་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རིགས་སུ་མ་ངེས་པ་རྣམས་ཡང་དག་པར་གཟུང་བའི་ཕྱིར་ཏེ། དགོངས་པ་འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་ཆོས་བཅུ་པ་དང་། འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་དང་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་གསལ་བར་བསྟན་པ་ཉིད་དོ།།

(5)གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྐྱེ་བ་བརྒྱུད་པ་དུ་མས་ཚོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱི་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་འགྱུར་གྱི། ཉན་ཐོས་ཀྱིས་སྲིད་པའི་ཀུན་ཏུ་སྦྱོར་བ་མ་ལུས་པ་སྤངས་པ་པ་ལ་ནི་གང་གིས་ན་དེ་དག་གིས་སྐྱེ་བ་[1]བརྒྱུད་པ་དུ་མས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་ཡང་སྲིད་པར་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་ནི་འགའ་ཡང་མི་སྲིད་དོ། །ཇི་ལྟར།[2]

སྲིད་པའི་རྩ་བ་ཕྲ་རྒྱས་སྟེ། །

ཞེས་བཤད་པ་ལ་དེ་དག་ཀྱང་བདག་ཏུ་འཛིན་པ་(147b)ལས་རབ་ཏུ་འབྱུང་བ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་པ་དང་འདོད་པ་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་རྣམས་ནི་བདག་ཏུ་ལྟ་བ་དང་འགལ་

1 སྐྱེ་བར་ སྐྱེ།

2 ཆོས་མངོན་པ་མཛོད། སྡེ་བསྡུས། མངོན་པ། ཀུ ༡༥ བ ༧

བ་བདག་མེད་པའི་ལམ་གོམས་པས་ཕྲ་རྒྱས་ཐམས་ཅད་རྩ་བ་དང་བཅས་ཏེ་བཅད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཆད་ན་དེ་དག་གི་སྐྱེ་བ་ཡང་གཞི་མེད་པའི་ཕྱིར་ཆད་པ་ཡིན་པས་དེ་དག་གི་སྐྱེ་བ་བརྒྱུད་པ་དུ་མས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་ལྷ་ག་ལ་འགྱུར། གང་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དམ་པའི་ཆོས་པདྨ་དཀར་པོ་ལས་ཉན་ཐོས་རྣམས་སངས་རྒྱས་ཉིད་དུ་ལུང་བསྟན་པ་མཛད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྤྲུལ་པའི་ཉན་ཐོས་རྣམས་སྤྲུལ་ནས་སམ། བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་རྣམས་ལས་དགོངས་ནས་མཛད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་བལྟ་སྟེ། འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕ༹་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལ་སོ༹་པ་ལས་བསྟན་པ་ཉིད་དོ། །གང་ཡང་འཕ༹་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལས།[1]

འདི་ན་སྡོད་མིན་སེམས་ཅན་འགའ་ཡང་མེད། །

འགྲོ་བ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་འགྱུར། །

ཞེས་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བཤད་པའི་དུས་དེ་ན་ཉེ་བའི་འགྲོ་བ་རྣམས་ལས་དགོངས་ནས་གསུངས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །ཁ་ཅིག་ལས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ཅན་ནོ་ཞེས་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དགོངས་ནས་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་དམ་པར་ཐེག་པ་གསུམ་ཡང་ཡོད་པ་ཉིད་ལ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་ཟེར་ཏེ། ཕྱོགས་སྔ་མ་ཡིན་ནོ།།

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ད། ༣༣ བ ༨ མདོའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། འགྲོ་བ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་འགྱུར། །འདི་ན་སྡོད་མིན་སེམས་ཅན་གང་ཡང་མེད།།

[1]དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལ་ལན་གདབ་[2]པར་བྱ་སྟེ། (1)དེ་ལ་རེ་ཞིག་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་བརྗོད་པར་བྱའོ། །ཅི་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་ལུང་གཅིག་ཏུ་བླང་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའམ། །འོན་ཏེ་བླང་བར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱང་ཡིན། དེ་ལ་རེ་ཞིག་ཕྱོགས་དང་པོ་ལྟར་ནི་[3]རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་ནི་སུ་ཡང་ལུང་གང་ལ་ཡང་བརྟེན་པར་བྱ་བ་ཡང་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་ལ་ཁ་ཅིག་ང་རྒྱལ་གྱིས་སམ། དོན་དུ་མི་གཉེར་བས་སམ། སྡིག་པའི་(148a)གྲོགས་པོ་དང་ཕྲད་པས་སམ། ཡིད་རྣམ་པར་སྨོངས་པས་སམ། དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ཡང་དག་པ་མ་རྙེད་པས་སམ། གཞན་གྱི་ངོར་[4]འཛུག་པས་སམ། དད་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་པོ་དང་བྲལ་བས་སམ། ལེགས་པར་རྟོགས་པའི་མཁས་པ་དང་བྲལ་བས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་རིན་པོ་ཆེ་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་དང་བར་དུ་དགེ་བ་ལ་མི་བརྟེན་དུ་ཟིན་ཀྱང་[5]ཅི་དེ་ཙམ་གྱིས་མཁས་པ་རང་དང་གཞན་ལ་ཕན་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ཐབས་ཐོབ་པ་ལེགས་པར་རྟོག་པ་ལ་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱང་རྟེན་པར་མི་བྱེད་དམ། ཚོང་པ་ངན་པ་རྣམས་ཀྱིས་རིན་ཐང་མེད་པའི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ་ཡོངས་སུ་མ་ཤེས་ནས་བོར་ཞེས་ཏེ། ཚོང་པ་བཟང་པོ་ལེགས་

1 འདི་ནས་རང་ལུགས་དབུ་ཚུགས་པ་ཡིན།

2 བཏབ་ སྣ། པེ།

3 དང་པོ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། སྣ། པེ།

4 ངོ་བོར་ སྡེ།

5 མི་བརྟེན་དུ་ཟིན་ཀྱང་ སྣ། པེ།

པར་རྟོག་པ་ལ་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱང་དེ་མི་ལེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་བསྒྲིགས་པ་དང་བདར་བ་དང་བཅད་པ་དག་གིས་གསེར་བཟང་པོ་བཞིན་དུ་མངོན་སུམ་དང་རྗེས་སུ་དཔག་པ་དང་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་དག་གིས་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་དང་། ལུང་གཞན་ཡང་དེ་ལས་[1]བཟློག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མཁས་པ་མངོན་པར་མཐོ་བ་དང་། ངེས་པར་ལེགས་པའི་འབྲས་བུ་འདོད་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་མ་ལུས་པར་བསྒྲུབ་པ་ལ་གཟོ་བ་[2]རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཡོངས་སུ་སྤངས་ནས། གསུང་རབ་རིན་པོ་ཆེ་གཅིག་ཏུ་དགེ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་བརྟེན་པར་བྱ་བ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་ཡིན་ན་ནི། དེའི་ཚེ་ཁྱེད་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ཉིད་ཡོངས་སུ་བརྟགས་ཏེ་ཁས་ལེན་ན་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་དབུ་མའི་ལམ་གསལ་རབ་ཏུ་བསྟན་པ་མཛད་པ་འདི་ལ་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་མི་བརྟེན། གལ་ཏེ་བདག་ཉིད་དེ་ལ་བརྟེན་མི་ནུས་སུ་ཆུག་ནའང་། འོན་ཀྱང་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཞལ་སྔ་ནས། རིགས་པའི་སྒྲོན་མའི་ཚོགས་རྣམ་པ་དུ་མས་འདི་གསལ་རབ་ཏུ་བརྗོད་ན་དེའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཀྱང་ཅིའི་ཕྱིར་ཁས་མི་ལེན། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སློབ་དཔོན་དེ་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་སྟོན་པའི་ཕྱིར་དང་། ས་དང་པོ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལུང་བསྟན་ཏོ། །གལ་ཏེ་འདིས་འདི་ལོག་པར་སྟོན་པར་འགྱུར་ན་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་ལྟར་ལུང་(148b)སྟོན་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ།། དེའི་ཕྱིར་སློབ་དཔོན་གྱི་ཚིག་སྤྱངས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་སྤངས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དེ་ལུང་དང་ལྡན་

1 དེ་ལ་ སྣ། པེ།
2 བཟོ་བ་ སྣ། པེ།

པས་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཞལ་སྔ་ནས་བསྟན་པའི་ལམ་བོར་ནས། འཕགས་པ་མ་ཡིན་པའི་སྐྱེ་བོས་རབ་ཏུ་བསྟན་པ་ལ་བརྟེན་པར་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

ཁ་བོ་ཅག་ནི་[1]སྒྲ་རྣམས་ལ་དོན་དམ་པའི་འབྲེལ་བ་འགའ་ཡང་མི་འདོད་དོ།། དེའི་ཕྱིར་དེ་བཀག་པས་མི་འདོད་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་འདི་ནི་བརྡ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ལ་སྒྲ་བ་པོའི་འདོད་པས་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་སྟོན་པར་བྱེད་དོ། །དོན་དང་སྐབས་ལ་སོགས་པས་འཁྲུལ་པ་མེད་པའི་མིས་བརྗོད་པའི་སྒྲ་རྣམས་བརྗོད་པར་འདོད་པའི་དོན་དང་འབྲེལ་བ་མེད་པར་ཡང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ངེས་པར་བྱ་བར་མི་ནུས་ཏེ། གཞན་དུ་ན་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་ཆད་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ།།

སྲུང་བ་མ་ཡིན་པ་དང་། མ་སྨོས་པ་དང་། མ་ཆགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཚིག་བདེན་པའི་དོན་ཉིད་སྟོན་པའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚིག་ལོག་པའི་དོན་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་རང་གི་རྒྱུད་ལ་ཡང་ངེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་བཀའ་གང་ཞིག་ཚུལ་གསུམ་གྱི་བརྟག་པས་ཡོངས་སུ་དག་པ་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་དང་བར་དུ་དགེ་བར་ངེས་པ་དེ་ནི་མི་སླུ་བའི་ཕྱིར་དེ་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བརྟེན་པར་བྱ་བ་ཉིད་དོ།།

(2)ཁོ་བོ་ཅག་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་དང་ཞེ་འགྲས་པའི་མི་མུ་སྟེགས་ཅན[2]རྣམས་ལ། དེ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཚད་མ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་ལུང་གི་དོན་དཔྱོད་ན་དེའི་ལུང་དང་ལྡན་པ་ལ་དེ་ཁུངས་ཉིད་དུ་རབ་ཏུ་སྟོན་ཏོ། །དེ་སྟོན་པར་བྱེད་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་མེད་

1 གི་ སྒྲོ།

2 ཞེ་གྲས་པའི་མུ་སྟེགས་ སྣ། པེ།

པ་ཉིད་དོ་ཞེས་བརྗོད་པར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ངེས་པའི་དོན་གྱི་མདོ་ལ་བརྟེན་པར་གསུངས་ཀྱི། དྲང་བའི་དོན་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

ངེས་པའི་དོན་ཀྱང་གང་ལ་བྱ་ཞེ་ན། ཚད་མ་དང་བཅས་པ་དང་། །དོན་དམ་པའི་དབང་དུ་མཛད་ནས་བཤད་པ་གང་ཡིན་པ་སྟེ་དེ་ནི་དེ་ལས་ལོགས་ཤིག་གཞན་གང་དུ་ཡང་དྲང་བར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་སྐྱེ་བ་ཡང་ཚད་མས་ཡང་དག་པར་གྲུབ་སྟེ། (149a)དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ནི་རིགས་པ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་ཀྱིས་དོན་དམ་པ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས།[1] "མི་སྐྱེ་བ་ནི་བདེན་ནོ། །སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཆོས་གཞན་ནི་མི་བདེན་ཏེ། བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་ཅན་ནོ" ཞེས་གསུངས་སོ། །འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་།[2] "ལྷའི་བུ་དོན་དམ་པར་མི་སྐྱེ་བ་ཡིན་ནོ" ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་རྣམ་པར་གཞག་གི་འགའ་ཙམ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཡང་དེ་ཉིད་ལས།[3] "ལྷའི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་ཁམས་སའི་སྣོད་ཀྱི་ནང་གི་ནམ་མཁའ་གང་ཡིན་པ་དང་། རིན་པོ་ཆེའི་སྣོད་ཀྱི་ནང་གི་ནམ་མཁའ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་དོན་དམ་པར་ནམ་མཁའི་ཁམས་ཁོ་ནར་ཟད་དེ། འདི་ལ་ཐ་དད་དུ་བྱ་བ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ། །ལྷའི་བུ་དེ་བཞིན་དུ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༦ བ ༡ སྐྱེ་བ་མེད་པ་ནི་བདེན་པ་སྟེ། །སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་གཞན་རྣམས་ནི་མི་བདེན་པ་ལོག་པ་བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་ཅན་ནོ།།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༥༧ ན ༧ དཀར་ཆག་ནང་མདོ་འདི་ལ་འཕགས་པ་ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་བདེན་པ་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཞེས་བཀོད་འདུག

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༥༨ ན ༣

དོན་དམ་པར་ཞིན་ཏུ་མི་སྐྱེ་བ་ཉིད་དོ། །རྣམ་པར་བྱང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དོན་དམ་པར་ཞིན་ཏུ་མི་སྐྱེ་བ་ཉིད་དོ། །འཁོར་བ་ཡང་དོན་དམ་པར་ཞིན་ཏུ་མི་སྐྱེ་བ་ཉིད་དོ། །མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་བར་དུ་ཡང་དོན་དམ་པར་ཞིན་ཏུ་མི་སྐྱེ་བ་ཉིད་དེ། འདི་ལ་ཐ་དད་དུ་བྱ་བ་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཞིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་རོ་" ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟར་ན་སྐྱེ་བ་མེད་པ་འདི་ཡང་དོན་དམ་པ་དང་མཐུན་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པ་ཞེས་བྱའི་དངོས་སུ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་སུ་ནི་དོན་དམ་པ་སྤྲོས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་གང་ཙུང་ཟད་ཇི་ཙམ་དུ་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པའི་དབང་དུ་བསྟན་པ་མཛད་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ནི་ངེས་པའི་དོན་དུ་གཟུང་བར་བྱ་ལ་བཟློག་པ་ནི་དྲང་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས།[1] ངེས་པ་དང་དྲང་བའི་དོན་གྱི་མདོ་སྡེའི་མཚན་ཉིད་བཤད་དེ། "ངེས་པའི་དོན་གྱི་མདོ་སྡེ་ནི་གང་། དྲང་བའི་དོན་གྱི་མདོ་སྡེ་ནི་གང་ཞེ་ན།[2] མདོ་སྡེ་གང་དག་ཀུན་རྫོབ་བསྒྲུབ་པ་བསྟན་པ་དེ་དག་ནི་དྲང་བའི་དོན་ཞེས་བྱའོ། །མདོ་སྡེ་གང་དག་དོན་དམ་པ་བསྒྲུབ་པ་བསྟན་པ་དེ་དག་ནི་ངེས་པའི་དོན་ཞེས་བྱའོ། །མདོ་སྡེ་གང་དག་ཚིག་དང་ཡི་(149b)གེ་སྣ་ཚོགས་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་དྲང་བའི་དོན་ཞེས་བྱའོ། །མདོ་སྡེ་གང་དག་ཟབ་མོ་བལྟ་དཀའ་བ་རྟོགས་པར་དཀའ་བ་བསྟན་པ་དེ་དག་ནི་ངེས་པའི་དོན་ཞེས་བྱའོ། །མདོ་སྡེ་གང་དག་བདག་དང་། སེམས་ཅན་དང་། སྲོག་དང་། གསོ་བ་དང་། སྐྱེས་བུ་དང་། གང་ཟག་དང་། ཤེད་

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༡༥༨ ན ༣ འདིར་ལུང་ཚ་ཚང་དྲངས་མི་འདུག

2 མདོ་སྡེའི་མཚན་ཉིད་བཤད་དེ། དྲང་བའི་དོན་གྱི་མདོ་སྡེ་ནི་གང་ཞེ་ན། སྡེ།

ལས་སྐྱེས་པ་དང་། ཤེད་བུ་དང་། བྱེད་པ་པོ་དང་། ཚོར་བ་པོ་སྨྲད་སྒྲ་ཚོགས་ཀྱིས་བཤད་པར་བྱ་བ་བདག་པོ་མེད་པ་ལས་བདག་པོ་ལྟ་བུར་བསྟན་པ་དེ་དག་ནི་དྲང་བའི་དོན་ཞེས་བྱའོ། །མདོ་སྡེ་གང་དག་དངོས་པོ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་། མཚན་མ་མེད་པ་དང་། སྨོན་པ་མེད་པ་དང་། མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པ་དང་། སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། མ་སྐྱེས་པ་དང་། སེམས་ཅན་མེད་པ་དང་། སྲོག་མེད་པ་དང་། གང་ཟག་མེད་པ་དང་། བདག་པོ་མེད་པ་རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་སྟོན་པ་དེ་དག་ནི་ངེས་པའི་དོན་ཞེས་བྱའོ་"ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པའོ།།

སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་མདོ་གཞན་དག་ལས་དགོངས་པ་གཞན་གྱི་ངེས་པའི་དོན་དུ་བཤད་དོ་ཞེས་བརྗོད་པར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་ནི་བདག་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ཡང་ངེས་པའི་དོན་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་དམ་པ་བརྗོད་པ་ཁོ་ན་ངེས་པའི་དོན་ཡིན་ལ། བཟློག་པ་ནི་དྲང་བའི་དོན་ཡིན་នོ་ཞེས་བྱ་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན་ལས་ཀྱང་།[1] "ངེས་པའི་དོན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པའོ་" ཞེས་གསུངས་ལ། སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས། ངེས་པའི་དོན་ཏོ་ཞེས་བསྟན་ཏེ། དེ་ལྟ་བས་ན་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་དོན་དམ་པའོ་ཞེས་བྱ་བར་ངེས་སོ།།

གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ཡིན་ན། འོ་ན་ཇི་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ག ༣༩༡ བ ༣

དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ལས།[1] ངོ་བོ་ཉིད་གསུམ་པོ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་རྣམ་པ་གསུམ་ལས་དགོངས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྟན་ཞེ་ན། འདི་ནི་ཉེས་པ་མེད་དེ། གང་དག་ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་ཡང་སྐུར་བ་འདེབས་པར་བྱེད་པ་དང་། དམ་པ་མ་ཡིན་པའི་བསྟན་བཅོས་མཉན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པས་བློ་གྲོས་ཕྱིན་ཅི་(150a)ལོག་ཏུ་གྱུར་པ་གང་དག་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་བརྟེན་པ་ཁོ་ན་ལ་ཡང་རྟག་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོར་སྒྲོ་འདོགས་ཤིང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་ཡང་ཇི་ལྟ་བ་དེ་བཞིན་དུ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པར་འགྱུར་བ་དེ་དག་སྒྲོ་འདོགས་པ་དང་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་མཐའ་གཉིས་སུ་ལྷུང་བའི་བློས་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་གྱི་རྒྱ་མཚོ་མཐའ་གཉིས་དང་བྲལ་བ་ཤིན་ཏུ་ཟབ་མོ་ལ་མི་འཇུག་པས་དེའི་དོན་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་དོན་དམ་པའི་དབང་དུ་མཛད་པ་ཁོ་ནར་བརྗོད་ཅིང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་རྣམ་པ་གསུམ་གྱི་དགོངས་པ་བསྟན་པས་དབུ་མའི་ལམ་འཐའ་གཉིས་དང་བྲལ་བ་རབ་ཏུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ངེས་པའི་དོན་ཁོ་ན་གཞུང་འཇུགས་པར་མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །དབུ་མ་པ་རྣམས་ཀྱང་ངོ་བོ་ཉིད་གསུམ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཁས་མི་ལེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། གཞན་དུ་ན་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་ཇི་ལྟར་སྤོང་བར་འགྱུར།

དེ་ལ་དངོས་པོ་མ་བརྟགས་ན་གྲགས་པ་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་བརྟེན་ནས་བྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དེ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་གཞན་གྱི་རྐྱེན་གྱི་དབང་གིས་སྐྱེའི། བདག་ཉིད་ཁོ་ན་ནི་མ་ཡིན་པས་སྐྱེ་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༧ ནས་གཟིགས།

བ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ། མཁས་པ་རྣམས་ནི་བརྟེན་ནས་བྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་ངེས་པར་འཛིན་ཏེ་རང་བཞིན་ནི་བཅོས་མ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །མ་བྱུང་བ་ལ་བྱུང་བ་དང་། བྱུང་ནས་མེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ལ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དག་ནི་རིམ་གྱིས་ཀྱང་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་སྐད་དུ།[1]

རང་བཞིན་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་དག་ལས། །
འབྱུང་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །
རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལས་བྱུང་ན་ནི། །
རང་བཞིན་བྱས་པ་ཅན་དུ་འགྱུར། །
རང་བཞིན་དག་ནི་ཇི་ལྟ་བུར། །
བྱས་པ་ཅན་ཞེས་བྱ་བར་འགྱུར། །
གལ་ཏེ་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོད་འགྱུར། །
དེ་ནི་མེད་པ་ཉིད་མི་འགྱུར། །
རང་བཞིན་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་ནི། །
ནམ་ཡང་འཐད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །

ཞེས་བཤད་དོ། །ཡང་

ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཡོད་ཡིན་ན། །

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། རྩ་ཤེས། དབུ་མ། ཙ། ༨ བ ༥

མེད་པ་རུང་བ་མ་ཡིན་ནོ། །[1]

ཞེས་བཤད་དོ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་འཕགས་པ་ཀླུའི་(150b)རྒྱལ་པོ་མ་དྲོས་པས་ཞུས་པ་ལས།[2]

གང་ཞིག་རྐྱེན་ལས་སྐྱེས་པ་དེ་མ་སྐྱེས། །
དེ་ལ་སྐྱེ་བའི་རང་བཞིན་ཡོད་མ་ཡིན། །
རྐྱེན་ལ་རག་ལས་གང་དེ་སྟོང་པར་བཤད།།
གང་ཞིག་སྟོང་ཉིད་ཤེས་དེ་བག་ཡོད་ཡིན།།

ཞེས་བསྟན་ཏོ། །ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་རྒྱ་མཚོས་ཞུས་པ་ལས། །[3]

གང་དག་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་། །
དེ་དག་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད། །
གང་དག་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ། །
དེ་དག་གང་དུའང་མི་འབྱུང་ངོ་། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཕགས་པ་ཡབ་དང་སྲས་མཇལ་བ་ལས་ཀྱང་།[4] རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ལ་འཇུག་པས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལ་འཇུག་པ་བསྟན་ཏེ།

---

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། རྩ་ཤེས། དབུ་མ། ཙ། ༤ བ ༨

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཕ། ༣༣༠ བ ༣ ལུང་འདི་ཚིག་གསལ་དུ་དྲངས་པའི་བསྒྱུར་འདིར་ལྟར་བྱུང་སྟེ། རྐྱེན་ལས་སྐྱེས་པ་གང་ཡིན་དེ་མ་སྐྱེས། །དེ་ལ་སྐྱེ་བ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེ།། རྐྱེན་ལ་རག་ལས་གང་ཡིན་སྟོང་པར་གསུངས། །སྟོང་ཉིད་གང་ཤེས་དེ་ནི་བག་ཡོད་པའོ།།

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཕ། ༨༤ ན ༨

4 སྡེ་བཀའ། དཀོན་རྩེགས། ཉ། ༤༦ བ ༡

“ཇི་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ལ་མ་རིག་པ་ནི་མ་རིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་མ་མཆིས་སོ།། དེ་ཅིའི་སླད་དུ་ཞེ་ན། འདི་ལྟར་མ་རིག་པ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་ལགས་སོ། །ཆོས་གང་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་མ་མཆིས་པ་དེ་ནི་དངོས་པོ་མ་མཆིས་པའོ། །གང་དངོས་པོ་མ་མཆིས་པ་དེ་ནི་ཡོངས་སུ་མ་གྲུབ་པའོ། །གང་ཡོངས་སུ་མ་གྲུབ་པ་དེ་ནི་སྐྱེ་བར་ཡང་མི་འགྱུར། དེ་འགག་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །གང་མ་སྐྱེས་མ་འགགས་པ་དེ་ནི་འདས་པ་ཞེས་གདགས་པར་བགྱི་བ་མ་ལགས། མ་འོངས་པ་མ་ལགས། ད་ལྟར་བྱུང་བ་ཞེས་གདགས་པར་བགྱི་བ་མ་ལགས་སོ། །གང་དུས་གསུམ་དུ་ཡང་མི་འཐད་པ་དེ་ནི་མིང་མ་མཆིས་པ། མཚན་ཉིད་མ་མཆིས་པ། མཚན་མ་མ་མཆིས་པ། གདགས་སུ་མ་མཆིས་པ་སྟེ། སེམས་ཅན་རྣམས་གཟུང་བའི་ཕྱིར་མིང་ཙམ་དང་། བརྡ་ཙམ་དང་། ཐ་སྙད་ཙམ་དང་། ཀུན་རྫོབ་ཙམ་དང་། བརྗོད་པ་ཙམ་དང་། གདགས་པ་ཙམ་ནི་མ་གཏོགས་སོ། །མ་རིག་པ་ནི་དོན་དམ་པར་མི་དམིགས་སོ། །ཆོས་གང་དོན་དམ་པར་མི་དམིགས་པ་དེ་ནི་གདགས་པར་བགྱི་བ་མ་ལགས། ཐ་སྙད་གདགས་པར་བགྱི་བ་མ་ལགས། བརྗོད་པར་བགྱི་བ་མ་ལགས་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་མིང་ཙམ་དང་བརྡ་ཙམ་གང་ལགས་པ་དེ་ཡང་ཡང་དག་པ་མ་ལགས་སོ་”ཞེས་བྱ་བ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་གཞན་གྱི་དབང་གི་[1]ངོ་བོ་ཉིད་ནི་ཡང་དག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་ནི་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་དག་ཀྱང་(151a)རྐྱེན་ལ་རག་ལས་པར་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་འདི་སྒྱུ་མ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་

1 གིས་ སྣ། པེ།

རྣམ་པར་གཞག་གོ།

དེ་སྐད་དུ། འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་དེ་ཉིད་ལས།[1] "དཔེར་ན་སྒྱུ་མ་བྱས་པ་ལྟར་དེ་བཞིན་དུ་སྐྱེ་བ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཉེ་བར་བལྟ་བར་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་དེ་ཉིད་ལ་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པ་དོན་དམ་པ་བའི་རང་གི་ངོ་བོར་སྒྲོ་འདོགས་པ་[2]གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །དེ་ཡང་ཇི་ལྟར་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག་གོ །ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་འདི་ཡང་དངོས་སུ་ན་གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་ལ་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ། དེ་ཉིད་ལ་དེའི་མཚན་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྟགས་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པའི་མཚན་ཉིད་དོན་དམ་པ་བས་སྟོང་པའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་མ་འགགས་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་གཟོད་མ་ནས་ཞི་བ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་སྐད་དུ། འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་དེ་ཉིད་ལས།[3] "གང་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ་དེ་ནི་མ་སྐྱེས་པའོ། །གང་མ་སྐྱེས་པ་དེ་ནི་མ་འགགས་པའོ། །གང་མ་འགགས་པ་དེ་ནི་གཟོད་མ་ནས་ཞི་བའོ། གང་[4]

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༧ བ ༣

2 སྒྲོ་འདོགས་པ་བཏགས་པ་ སྣ། པེ།

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༧ བ ༥

4 ཞི་བའོ། །གཟོད་མ་ནས་... སྣ། པེ།

གཟོད་མ་ནས་ཞི་བ་དེ་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།།

ཡང་"དེ་ལྟ་བས་ན་ངས་མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ལས་དགོངས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེས་བཤད་དོ་"ཞེས་གསུངས་པ་པ་གང་ཡིན་པ་དེར་ཡང་སྒྲ་ཇི་བཞིན་གྱི་དོན་དུ་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་དེ་སེལ་བར་ཡང་མཛད་ལ། གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀུན་རྫོབ་པ་ལ་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཀུན་བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་དབེན་པ་སྒྲུབ་ཅིང་སྐུར་བ་མི་འདེབས་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཡང་སྟོན་པ་ཡིན་གྱི། དོན་དམ་པ་ཉིད་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །མཚན་ཉིད་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་འགའ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ།

མཚན་ཉིད་མེད་པའི་དངོས་(151b)པོ་ནི། །
འགའ་ཡང་གང་ནའང་ཡོད་མ་ཡིན། །[1]

ཞེས་བཤད་པ་ལྟ་བུའོ།།

ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་རྟག་ཏུ་རང་བཞིན་གྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ནར་གནས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་རྟག་ཏུ་སྒྲོ་བཏགས་པ་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཡང་ཚད་མས་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་དོན་དམ་པ་ཞེས་ཀྱང་བྱ་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ནི་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༨ ན ༣

པ་ཡིན་ནོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ལས།[1] ''དེ་ནི་དོན་དམ་པ་ཡང་ཡིན་ལ། ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བ་ཡང་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའོ་ཞེས་བྱའོ་''ཞེས་གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་འདིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ངེས་པའི་དོན་ཡིན་ནོ། །དེ་ནི་དོན་དམ་པ་ལ་དགོངས་ནས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དགོངས་པ་བསྟན་པ་ཡང་ངེས་པའི་དོན་ཉིད་དུ་འགལ་བར་མི་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་[2]པ་ངེས་པའི་དོན་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་བསལ་བའི་ཕྱིར་དང་། སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་རྟོག་པ་བསལ་བའི་ཕྱིར་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་དེ་ཉིད་ལས།[3] ''དོན་དམ་ཡང་དག་འཕགས། གཞན་ཡང་། ངས་དོན་དམ་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཆོས་བདག་མེད་པས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བ་ལས་ཀྱང་དགོངས་ཏེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པ་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་འགགས་པ་དང་། གཟོད་མ་ནས་ཞི་བ་དང་། རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་བཤད་དོ་''ཞེས་བསྟན་ཏོ། །

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༧ ན ༧ མདོའི་ནང་ལུང་གི་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། དེ་ནི་དོན་དམ་པ་ཡིན་ལ། དོན་དམ་པ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བ་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཅེས་བྱའོ།།

2 སོགས་པ་ངེས་པའི''' སྣ། པེ།

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༧ བ ༧

གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ཡིན་ན། འོ་ན་དད་པ་ཆེར་འབྱུང་གི་མདོ་ལས།[1] "ངས་གང་སྦྱོར་བ་ལས་བྱུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་དགོངས་ཏེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་མེད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་ཆོས་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱང་མེད་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་ནས་མེད་པའི་མཚན་མ་བཟུང་སྟེ། མེད་པའི་(152a)ལྟ་བར་འགྱུར་རོ། དེ་ལྟ་བས་ན་མཚན་མའི་ལྟ་བ་ཞེས་བྱའོ་"ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཇི་ལྟར་དྲང་ཞེ་ན། འདི་ལ་ཡང་ཇི་སྐད་དུ་བཤད་པའི་གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་སྦྱོར་བའི་སྟོབས་ཀྱིས་སྐྱེས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་སྦྱོར་བ་ལས་བྱུང་བ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས།[2] "སྦྱོར་བ་ལས་བྱུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་ཉིད་ལ་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རྟོགས་པས་མངོན་པར་བསྒྲུབས་པ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་ལ་གློ་བུར་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྦྱོར་བ་ལས་བྱུང་བ་ཞེས་བྱའོ། །ངོ་བོ་ཉིད་འདི་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཀ་ཡང་དོན་དམ་པར་མི་རུང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་འདིས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་གྱི། ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མེད་པའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་མེད་ན་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་

1 སྡེ་དཀའ། ཕེར་ཕྱིན། ཀ །མདོ་སྡེ་འདི་ལ་རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པས་ཞུས་པའི་མདོ་ཡང་ཟེར།

2 ཁུངས་རྙེད་སོན་མ་བྱུང་།

མོང་ས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱུང་བའི་ཆོས་རྣམ་པར་གཞག་པར་[1]ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་ནི་དེས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བ་ཡིན་གྱི་དོན་དམ་པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་མདོ་གཞན་དག་ལས་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པའི་དགོངས་པ་མི་ཤེས་པ་གང་དག་སྟོང་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་དངོས་པོའི་ངོ་བོར་བཟུང་ནས། ཕྱིས་དེ་ཡང་མེད་པར་སེམས་ཤིང་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ལ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་གྱི་དོན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དེ་དག་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་མ་གཟུང་[2]བའི་ཕྱིར་མཚན་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྟ་བར་འགྱུར་བས་དེ་དགག་པའི་ཕྱིར་འདི་གསུངས་ཀྱི། དབུ་མ་པ་རྣམས་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་དག་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཚན་མར་འཛིན་པ་ཐམས་ཅད་ལས་ལོག་པར་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་ལ་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་མར་འཛིན་པ་མེད་དེ། ཇི་སྐད་དུ།

གཞན་གྱི་རྐྱེན་མིན་ཞི་བ་སྟེ། །
སྤྲོས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མ་སྤྲོས་པ། །
ཐ་དད་དོན་མིན་རྣམ་མི་རྟོག །
འདི་ནི་ཡང་དག་མཚན་ཉིད་དོ། །[3]

ཞེས་བཤད་པ་དང་། ཡང་།

ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་བརྟག་པར་འཛིན། །

1 བཞག་པ་ སྣ། པེ།

2 བཟུང་ སྣ། པེ།

3 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༡༡ ན ༣ གཞན་ལས་ཤེས་མིན་ཞི་བ་དང་། །སྤྲོས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མ་སྤྲོས་པ། །རྣམ་རྟོག་མེད་དོན་ཐ་དད་ལས། །དེ་ནི་དེ་ཉིད་མཚན་ཉིད་དོ།།

མེད་ཅེས་བྱ་བ་ཆད་པར་ལྟ། །
དེ་ལྟས་ཡོད་དང་མེད་ཉིད་ལ། །
མཁས་པས་གནས་པར་མི་བྱའོ། །[1]

ཞེས་བཤད་(152b) པ་ལྟ་བུའོ།།

གང་དག་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་མར་འཛིན་པ་དེ་དག་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བར་བྱ་བའི་སྐབས་མེད་པ་ཉིད་དེ།

གང་དག་རང་དངོས་གཞན་དངོས་དང་། །
དངོས་དང་དངོས་མེད་ཉིད་མཐོང་བ། །
དེ་དག་སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་ལ། །
ཡང་དག་མཐོང་བ་མ་ཡིན་ནོ། །[2]

ཞེས་བཤད་པ་གང་ཡིན་པའོ། །དངོས་པོ་མེད་པར་མངོན་པར་ཞེན་པ་འདི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ཅན་ཡིན་པར་མདོ་ལས་བརྗོད་དེ། ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[3]

མེད་པ་ཡོད་པའི་བློས་བྲངས་ཏེ། །
ཡོད་པའང་མེད་པའི་བློས་བྲངས་སོ། །
དེ་ཕྱིར་མེད་པར་བརྗོད་མི་བྱ། །

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༩ ན ༣
2 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༨ བ ༣
3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག་ ༡༣༡ ན ༦ ཁྲི། ༣ ཿ ༧༧

ཡོད་པ་ཉིད་དུའང་མི་བརྟག་གོ །

ཞེས་གསུངས་པ་པ་ལྟ་བུའོ། །དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པས་དབང་མེད་པ་རྣམས་ཁོ་ན་མཚན་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྟ་བ་ཡིན་གྱི། དངོས་པོར་འཛིན་པ་ཐག་བསྲིངས་པ་རྣམས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ནི་གང་ལའང་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། དེ་སྐད་དུ།[1]

གང་དག་བརྟེན་ནས་དངོས་པོ་རྣམས། །
བདེན་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་འདོད་པ། །
དེ་དག་ལ་ཡང་ཇི་ལྟ་བུར། །
རྟག་སོགས་[2]སྐྱོན་དེར་འགྱུར་མ་ཡིན། །[3]
གང་དག་བརྟེན་ནས་དངོས་པོ་རྣམས། །
ཆུ་ཡི་ཟླ་བ་ལྟ་བུར་ནི། །
ཡང་དག་མ་ཡིན་ལོག་མིན་པར། །
འདོད་པ་དེ་དག་ལྟས་[4]མི་འཕྲོགས། །
དངོས་པོར་ཁས་ལེན་ཡོད་ན་ནི། །
འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་ལས་བྱུང་བའི། །
ལྟ་བ་མ་རུང་ཡོངས་སུ་འཛིན། །

---

1 རིགས་པ་དྲུག་བཅུ་པ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ཤོག ༣༣ ན

2 རྟག་ཚོགས་ སྣ། པེ།

3 དེ་དག་ལ་ཡང་རྟག་སོགས་སྐྱོན། །དེ་དག་ཇི་ལྟར་འབྱུང་མི་འགྱུར། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ ཤོག ༣༣ ན ༣

4 ལྟས་ པེ།

དེ་ལས་བྱུང་བའི་རྟོད་པ་འཛིན། །

ཞེས་བཤད་དོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་གང་དག་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ལ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དེ་དག་དགག་པའི་ཕྱིར་མཚན་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྟ་བ་སྤང་གྱི་དབུ་མ་པར་སྨྲ་བ་རྣམས་ནི་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ལ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཁས་ལེན་པའི་ཕྱིར་དང་། ཀུན་རྫོབ་པའི་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་སྐད་དུ།[1]

དེ་ཉིད་ཚོལ་ལ་ཐོག་མར་ནི། །
ཐམས་ཅད་ཡོད་ཅེས་བརྗོད་པར་བྱ། །
དོན་རྣམས་རྟོགས་ཤིང་ཆགས་མེད་ལ། །
ཕྱིས་ནི་རྣམ་པར་དབེན་པ་ཉིད། །
རྣམ་པར་དབེན་དོན་མི་ཤེས་ལ། །
ཐོས་པ་ཙམ་ལ་འཇུག་བྱེད་ཅིང་། །
གང་དག་(153a)བསོད་ནམས་མི་བྱེད་པ། །
སྐྱེས་བུ་ཐ་ཤལ་དེ་དག་བརླག །
འབྲས་བུར་བཅས་པའི་ལས་རྣམས་དང་།[2] །

1 རིགས་པ་དྲུག་ཅུ་པ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༣༡ བ ༣

2 སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༣༡ བ ༣ ཀང་པ་འདིའི་བསྒྱུར་སྡེ་བསྟན་ནང་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། ལས་རྣམས་འབྲས་བུ་བཅས་ཉིད་དང་།།

འགྲོ་བ་དག་ཀྱང་ཡང་དག་བརྗོད། །
དེ་ཡི་རང་བཞིན་ཡོངས་ཤེས་དང་། །
སྐྱེ་བ་མེད་པའང་བསྟན་པ་ཡིན། །
འཇིག་རྟེན་དབང་དུ་རྒྱལ་བ་རྣམས། །
ང་དང་ང་ཡི་ཞེས་གསུངས་ལྟར། །
དེ་བཞིན་ཕུང་པོ་སྐྱེ་མཆེད་ཁམས། །
དགོས་པའི་དབང་གིས་བཤད་པ་ཡིན།[1] །

ཞེས་བཤད་དོ།།

གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ཡིན་ན། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[2]

བཏགས་པའི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད། །
གཞན་གྱི་དབང་ནི་ཡོད་མ་ཡིན། །
སྒྲོ་འདོགས་པ་དང་སྐུར་འདེབས་པའི། །
མཐའ་ལ་རྟོག་པ་བརླག་པར་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པ་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཇི་ལྟར་དྲང་སྙམ་པ་ལ། འདིར་ཡང་གང་ཞིག་ཀུན་བཏགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཇི་སྐད་བཤད་པ་ལ་ཡང་དག་པར་སྒྲོ་འདོགས་པར་བྱེད་པའི་སྒྲོ་

1 སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༣༡ བ ༣ རིགས་པ་དྲུག་ཅུ་པའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། སྐྱེ་བ་མེད་པ་དག་ཀྱང་བསྟན། །དགོས་པའི་དབང་གིས་རྒྱལ་བ་རྣམས། །ང་དང་ང་ཡི་ཞེས་གསུངས་ལྟར། །དེ་བཞིན་ཕུང་པོ་སྐྱེ་མཆེད་ཁམས། དེ་བཞིན་དགོས་པའི་དབང་གིས་གསུངས།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༧༠ ན ༧

འདོགས་པ་དེ་དགག་པའི་ཕྱིར་བརྟགས་པའི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད་ཅེས་གསུངས་སོ།། གང་དག་གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཇི་སྐད་བཤད་པ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཡང་འགོག་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཕྱིར་གཞན་གྱི་དབང་ནི་ཡོད་པ་ཡིན་ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་ཞིག་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་མཐའ་འདི་གཉིས་སུ་རྟོག་པར་བྱེད་པ་དེ་ནི་དབུ་མའི་ལམ་ལ་མི་འཇུག་སྟེ། གཡང་སའི་གནས་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་ཕུང་པོ་དང་འདྲ་བས།

སྒྲོ་འདོགས་པ་དང་སྐུར་འདེབས་པའི། །
མཐའ་ལ་རྟོག་པ་བརླག་པར་འགྱུར། །[1]

ཞེས་གསུངས་སོ། འདིས་ནི།

ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བརྟགས་པ་ཡི། །
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་སྐྱེས་པ། །
གཞན་གྱི་དབང་ལ་བརྟེན་ནས་སུ། །
མི་རྣམས་ཀྱི་ནི་རྣམ་རྟོག་སྐྱེ། །[2]

ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བསལ་བ་ཡིན་ནོ། །འདིས་ཀྱང་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་སྒྲོ་འདོགས་པ་དང་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་མཐའ་བསལ་བར་མཛད་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་དོན་དམ་པར་གཞན་གྱི་དབང་ཇི་ལྟར་བརྟགས་པ་བཞིན་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་བརྟགས་པའི་

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༧༠ ན ༧

2 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༦༩ བ ༩ མདོའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། ཀུན་བརྟགས་པ་ཡི་རང་བཞིན་གྱིས། །ཐམས་ཅད་ཆོས་ནི་མ་སྐྱེས་པ། །གཞན་གྱི་དབང་ལ་གནས་ནས་ནི། །མི་ཡི་རྣམ་རྟོག་འཁྲུམ་པ་ཡིན།།

ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་སྐྱེས་པ་ཉིད་དོ། །འདིས་ནི་སྒྲོ་འདོགས་པའི་མཐའ་བསལ་བ་ཡིན་ནོ།། གཞན་གྱི་དབང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་དང་། དེ་ལ་བརྟེན་ནས་སྐུར་པས་སྐུར་བ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གཞན་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་དེ་བས་ན་(153b)

གཞན་གྱི་དབང་ལ་བརྟེན་ནས་སུ། །
མི་རྣམས་ཀྱི་ནི་རྣམ་རྟོག་སྐྱེ། །[1]

ཞེས་གསུངས་སོ། །འདིས་ནི་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་མཐའ་བསལ་བ་ཡིན་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་པའི་སྐྱེ་བ་ལ་སྐུར་བ་མི་འདེབས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་དང་དེ་ལས་གཞན་གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་དང་དངོས་པོ་རྣམས་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པར་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ནི་བྱིས་པ་རྣམས་སྐྲག་པའི་གནས་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་སྐྱེ་བའི་དབང་དུ་མཛད་ནས་བཞུགས་པ་ལ་དགོངས་པས་བསྟན་ཏོ་ཞེས་བྱ་བར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའི་དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་མདོ་དེ་ཉིད་ལས་བཀག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[2]

བློ་ཡིས་རྣམ་པར་གཞིགས་ན་ནི། །
གཞན་དབང་མེད་ཅིང་བརྟགས་པའང་མེད། །
གྲུབ་པའི་དངོས་པོ་ཡོད་མིན་ན། །
བློ་ཡིས་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་བརྟགས། །
ངོ་བོ་ཉིད་མེད་རྣམ་རིག་མེད། །

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག་ ༡༦༨ བ ༨

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག་ ༡༣༡ བ ༧

དངོས་པོ་མེད་ཅིང་ཀུན་གཞི་མེད། །
བྱིས་པ་རོ་དང་འདྲ་བ་ཡི། །
ངན་རྟོག་རྣམས་ཀྱིས་འདི་དག་བརྟགས། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "རིགས་ཀྱི་བུ་འཇིག་རྟེན་གནས་པ་འདི་ནི་སྐྱེ་བ་དང་འགག་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡིན་པས་དེ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཅན་གྱིས་འཇིག་རྟེན་གྱི་སྐྲག་པའི་གནས་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་ཕྱིར་ཐ་སྙད་ཀྱི་དབང་གིས་སྐྱེ་འོ། འགག་གོ་ཞེས་གསུངས་ཀྱི། རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལ་ཆོས་འགའ་ཡང་སྐྱེ་བ་ནི་མེད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་ཀྱང་།[2] "ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རི་དྭ་ཏིའི་བུ། དེ་ལྟར་ན་གཟུགས་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པའོ། །གང་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་དེ་ལ་ནི་སྐྱེ་བ་ཡང་མེད། འགག་པ་ཡང་མེད་དོ། །གང་ལ་སྐྱེ་བ་ཡང་མེད། འགག་པ་ཡང་མེད་པ་དེ་ནི་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་མི་མངོན་ཏེ། ཚོར་བ་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་དུ་ཡང་དེ་དང་འདྲའོ་"ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ།།

འདི་ལ་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་རང་བཞིན་ཡིན་པར་རིགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་བློ་བུར་བ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ལས་ཕྱི་རོལ་ཏུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་དང་། དེ་ལྟར་སྨྲའི་དོན་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ།། (154a)འོན་ཏེ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པ་རྣམས་ལ་ཡང་བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོའི་རང་

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ཤོག ༢༣ ན ༣
2 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། མ་རྟེད།

བཞིན་དུ་ཀུན་བཏགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་གིས་དེའི་རང་བཞིན་ཉིད་དུ་ཀུན་བཏགས་པའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱི་སྒྲར་བརྗོད་པར་བྱ་བར་འགྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འདོད་པའི་དོན་དང་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་ཉེས་པ་མེད་དོ། །མདོ་གཞན་ལས།[1] "རིགས་ཀྱི་བུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་རྣམས་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པར་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་དད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །སྒྲ་ཇི་བཞིན་མ་ཡིན་པར་དགོངས་པ་ཅན་གྱི་དོན་ཚུལ་བཞིན་དུ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་དད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་དུ་འགྱུར་རོ་"ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདིར་ཡང་དོན་དམ་པའི་དགོངས་པ་མི་ཤེས་པ་གང་དག་ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་ཡང་སྐུར་བ་འདེབས་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ཆོས་ལ་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པར་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་དད་པའི་སྐྱེ་མཆེད་དུ་མི་འགྱུར་བས་དེ་དགག་པའི་ཕྱིར་འདི་གསུངས་པར་ཟད་དོ།།

མདོ་ཐམས་ཅད་ལས་ཀྱང་སྒྲ་ཇི་བཞིན་གྱི་དོན་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་དང་། དགོངས་པ་ཅན་གྱི་དོན་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ལ་འབད་པ་ཡང་དག་པར་སྐྱེད་པའི་ཕྱིར་དང་། གཞན་ཡིད་ཆེས་པ་ཡང་དག་པར་སྐྱེད་པའི་ཕྱིར་གསུངས་ཀྱི། དབུ་མ་པའི་གཞུང་ལུགས་དགག་པའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དབུ་མ་པ་རྣམས་ཀྱི་ནི་སྒྲ་ཇི་བཞིན་གྱི་དོན་དུ་མི་རྟག་གོ་ཞེས་སྨྲར་བཤད་ཟིན་ཏོ། །དེ་སྐད་དུ། འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྲིན་ལས་ཀྱང་། "ཇི་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དོན་དམ་པ་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་

1 ཐེག་པ་ཆེན་པོ་དད་པ་ལ་རབ་ཏུ་སྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། པ། ༡༧ བ ༡

གཟུགས་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པར་བྱེད་པ་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་དུ་སོ་སོར་རྟོག་པར་བྱེད་ཅིང་དེ་གཟུགས་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པ་ན་གཟུགས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་མི་དམིགས། ཀུན་འབྱུང་བ་མི་དམིགས། འགག་པ་མི་དམིགས་པ་ནས་དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་དུ་སྐྱེ་བ་མི་དམིགས་ཏེ། དེ་ཡང་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་འཇུག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡིན་གྱི། ཐ་སྙད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་"[1] ཞེས་བསྟན་ཏོ།། (154b)འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་།

ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ནི་ཐམས་ཅད་ཡོད། །
དམ་པའི་དོན་དུ་ཡོད་མ་ཡིན། །
དངོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་དང་། །
དམ་པའི་དོན་ཀྱང་བསྟན་པ་ཡིན། །[2]

ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་དག་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ཤོག ༣༥ བ ༣ ལུང་འདི་མདོའི་ནང་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། རིགས་ཀྱི་བུ། དེ་ལ་ཇི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བདག་མེད་པ་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། རིགས་ཀྱི་བུ། འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གཟུགས་ལ་རྟོག། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་རྟོག་སྟེ། དེ་གཟུགས་ལ་རྟོག་པ་ན་གཟུགས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་མི་དམིགས། ཀུན་འབྱུང་བ་མི་དམིགས། འགོག་པ་མི་དམིགས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་། རྣམ་ཤེས་པའི་སྐྱེ་བ་མི་དམིགས། ཀུན་འབྱུང་བ་མི་དམིགས། འགོག་པ་མི་དམིགས་སོ།།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༨༣ བ ༣ མདོའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ནི་ཐམས་ཅད་ཡོད། །དམ་པའི་དོན་དུ་ཡོད་མ་ཡིན། །ཆོས་རྣམས་རང་བཞིན་མེད་པ་ལ། །དམ་པའི་དོན་དུ་ཡོད་འདི་ནི།།

དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྐྱེ་བ་དང་། ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མི་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་དུ་གཞུང་འཛུགས་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྲིན་ལ་སོགས་པ་ལས་གསུངས་པ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་དང་འགལ་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། ལོག་པར་རྟོག་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་དེ་ལས་ནི་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མི་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དང་ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པར་བརྗོད་དོ། །བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལྷའི་བུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་ཞི་བའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཡང་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[1]

དངོས་རྣམས་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ། །
དམ་པའི་དོན་དུ་རང་བཞིན་མེད། །
རང་བཞིན་མེད་ལ་འཁྲུལ་པ་གང་། །
དེ་ནི་ཡང་དག་ཀུན་རྫོབ་འདོད། །

ཅེས་གསུངས་སོ།།

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་ཀྱང་།[2] "རབ་འབྱོར་ཕྱིན་ཅི་ལོག་མ་གཏོགས་པར་བྱིས་པ་རྣམས་གང་ལ་གནས་ཏེ་ལས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ནི་སྐྲའི་རྩེ་མོའི་ཆ་ཤས་གཟུགས་པ་ཙམ་ཡང་མེད་དོ་"ཞེས་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བ་ཡང་

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༧༨ བ ༥

2 ལུང་ཁུངས་རྙེད་སོན་མ་ཐུབ།

བཀག་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་མ་བཀག་པའི་ཕྱིར་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ་ནི་ཡོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་ཉིད་ཀྱང་།

རང་བཞིན་མེད་ལ་འཁྲུལ་པ་གང་། །
དེ་ནི་ཡང་དག་ཀུན་རྫོབ་འདོད། །[1]

ཅེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་སྙམ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་དངོས་པོ་ཡོད་ན་དེའི་ཚེ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བ་ཡང་བཀག་པའི་བཀའ་ཐེ་ལྷུར་རྣར་འོང་བར་འགྱུར། གང་གི་ཚེ་མདོའི་དོན་དངོས་པོའི་བག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་མེད་ཀྱང་བྱིས་པ་རྣམས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་མི་བདེན་པ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གིས་(155a)ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པས་ལས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་རྣམ་པར་འཆད་པར་འགྱུར་བ་དེའི་ཚེ་དེ་རྣར་འོང་བར་འགྱུར་རོ། །འཕགས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལས།[2]

ཆོས་ཀུན་རྟག་ཏུ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་། །
རྒྱལ་བའི་སྲས་རྣམས་དངོས་པོ་རྣམ་པར་འཇིག །
སྲིད་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་སྟོང་། །
ཉི་ཚེའི་སྟོང་ཉིད་མུ་སྟེགས་ཅན་རྣམས་ཀྱི། །

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༧༨ བ ༦ རང་བཞིན་མེད་ལ་ནོར་བ་གང་།། དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་བདེན་པ་ཡིན།།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ད། ༣༧ བ ༧

ཞེས་ཚིགས་སུ་བཅད་དེ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཡང་ལེགས་པར་དྲངས་པར་འགྱུར་རོ། །

གང་ཡང་མདོ་གཞན་དག་ལས།།[1]

སྲིད་པ་གསུམ་ནི་བཏགས་པ་ཙམ། །

དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མེད། །

ངན་རྟོག་རྣམས་ནི་བཏགས་པ་ལ། །

དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རྟོག །

ཅེས་གསུངས་པ་དེ་ཡང་ལེགས་པར་དྲངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལ་སོགས་པ་ནི་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་རུང་བ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་ཕྱིད་ནི་ཁམས་གསུམ་པའི་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་དག་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་རྣམ་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད་དོ། །གང་དག་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཉེ་བར་འཛིན་པས་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་སྣང་བ་དེ་དག་ཇི་ལྟར་ཡང་དག་པའི་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་དག་ནི་ཕན་ཚུན་སྤྱངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པས་དེ་ཉིད་བདག་ཉིད་གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ནི་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གྲངས་ཅན་ལ་སོགས་པས་ཀུན་བརྟགས་པའི་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པའི་འགྱུར་བ་བདག་ལ་སྣང་དུ་ཅི་ཡོད་དེ། གང་གིས་

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༦༣ ན ༥ མདོའི་ནང་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། སྲིད་པ་གསུམ་ནི་བཏགས་ཙམ་སྟེ། །ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོ་མེད། །བཏགས་པ་དངོས་པོའི་ངོ་བོར་ནི། །རྟོག་གེ་པ་དག་རྟོག་པར་འགྱུར།།

ན་ཁྱེད་དེ་དག་ཀུང་ཁས་ལེན་པར་མི་བྱེད། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར།

གལ་ཏེ་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོད་ན། །

ཇི་ལྟ་བུར་ན་གཞན་དུ་འགྱུར། །[1]

ཞེས་བཤད་དོ། །

འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་།[2] "ལྷའི་བུ་ཇི་ལྟར་བདག་དོན་དམ་པར་བདག་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་ལྷའི་བུ་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱང་དོན་དམ་པར་ཉོན་མོངས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ལྷའི་བུ་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པར་བདག་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་པར་གྱུར་ན་ལྷའི་བུ་དེའི་ཕྱིར་ཉོན་མོངས་པ་ཡང་དོན་དམ་པར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་པ་འགྱུར་"ཞེས་གསུངས་སོ། །འདིས་ནི་འདི་སྐད་དུ་བདག་ལ་སོགས་པ་བརྟེན་པའི་རྣམ་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པར་ཞུགས་པའི་ཕྱིར་(155b)བདག་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བསྟན་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་ཕྱུགས་ཀྱིས་ཁམས་གསུམ་པའི་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་ཐམས་ཅད་བརྟེན་པའི་རྣམ་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པར་ཞུགས་པའི་ཕྱིར་རང་གི་རྣམ་པ་བཞིན་དུ་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པ་ཉིད་ཀྱིས་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཉིད་དོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་ནི་ཁྱད་པར་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ཉོན་མོངས་པ་ཡིན་པས་དེ་བརྟེན་པ་ཉིད་ཡིན་

1 སྡེ་བསྟན། རྒྱ་ཤེས། དབུ་མ། ཚ། ༨ ན ༥ གལ་ཏེ་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོད་ན། །གཞན་དུ་འགྱུར་བ་ཇི་ལྟར་རུང་།།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ཤོག ༣༥༥ བ ༧ སྡེ་དགེ་བཀའ་འགྱུར་དཀར་ཆག་ནང་མདོ་འདི་ལ་འཕགས་པ་ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་བདེན་པ་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཞེས་འཁོད་འདུག

ན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་བཟློན་པ་ཉིད་ཁོ་ནའོ་ཞེས་ཡོངས་སུ་བསྟན་པ་ཉིད་དོ།། གལ་ཏེ་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་འགའ་ཡང་མེད་ན། འོ་ན་དེའི་ཚེ།

ཕུང་པོ་ལ་ནི་བདག་མེད་དེ། །
བདག་ལའང་ཕུང་པོ་ཡོད་མ་ཡིན། །
དེ་དག་ཇི་ལྟར་བརྟགས་བཞིན་མིན། །
དེ་དག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མིན། །[1]

ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཇི་ལྟར་དྲང་སྙེ། འདི་ལས་ནི་དགག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། འདིས་ནི་ཁྲངས་སུ་མི་རུང་བ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་འདིར།

དེ་དག་ཇི་ལྟར་བརྟགས་བཞིན་མིན། །[2]

ཞེས་བྱ་བ་འདིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ཡོད་པ་ཉིད་བཀག་པའི་ཕྱིར་དང་།

དེ་དག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མིན།།[3]

ཞེས་བྱ་བས་འདི་དག་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་བཞིན་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱིས་བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་མེད་པ་ཉིད་ལ། ཕུང་པོ་རྣམས་ནི་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཡོད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསལ་བར་བསྟན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དེའི་ཚེ་གཅིག་ལ་མེད་པ་ཉིད་དུ་

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༡༧ ན ༨
2 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༡༧ ན ༨
3 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༡༧ ན ༨

གསུངས་ནས་ཡང་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་སྟོན་པ་ཇི་ལྟར་འབྲེལ་བ་ཉིད་དུ་འགྱུར། འཕགས་པ་ཚངས་པས་ཞུས་པ་ལས། ཕུང་པོ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ།

གང་གིས་ཕུང་པོ་མ་སྐྱེས་ཤིང་། །
འབྱུང་བ་མེད་པ་ཡོངས་ཤེས་དེ། །
འཇིག་རྟེན་ན་ཡང་སྤྱོད་འགྱུར་ལ། །
འཇིག་རྟེན་འདི་ལའང་མི་གནས་སོ། །[1]

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྲིན་ལས་ཀྱང་།[2] ཕུང་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་མེད་པ་ཉིད་ལ། ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་གསལ་རབ་ཁོ་ནར་(156a)བསྟན་ཏེ། "རིགས་ཀྱི་བུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་བཅུ་དང་ལྡན་པ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ནོ།། བཅུ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། གཟུགས་སུ་

---

1 སྡེ་དགེ། འཕགས་པ་ཚང་པ་ཁྱད་པར་སེམས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མདོ། མདོ་སྡེ། བ། ༣༧ ན ༣ མདོའི་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། མ་སྐྱེས་པ་དང་མ་བྱུང་བར། །གང་གི་ཕུང་པོ་ཀུན་ཤེས་པ། །དེ་དག་འཇིག་རྟེན་སྤྱོད་འགྱུར་ཡང་། །འཇིག་རྟེན་འདི་ལའང་མི་གནས་སོ།།

2 སྡེ་དགེ། མདོ་སྡེ། ཕ། ཤོག ༧༨ ན ༦ མདོའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། རིགས་ཀྱི་བུ ཆོས་བཅུ་དག་ལྡན་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཀུན་རྫོབ་ལ་མཁས་པ་རྣམས་ཡིན་ནོ། །བཅུ་གང་ཞེ་ན། གཟུགས་སུའང་འདོགས་ལ། དོན་དམ་པར་ན་གཟུགས་སུའང་མི་དམིགས་ཤིང་མངོན་པར་མི་ཆགས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པར་ཡང་འདོགས་ལ། དོན་དམ་པར་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་མི་དམིགས་ཤིང་མངོན་པར་མི་ཆགས་སོ།།

འདོགས་པར་ཡང་བྱེད་ལ། དོན་དམ་པར་གཟུགས་སུ་དམིགས་པར་ཡང་མི་བྱེད། མངོན་པར་ཞེན་པར་ཡང་མི་བྱེད་དེ། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་དེ་དང་འདྲའོ་"ཞེས་གང་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ།།

འཕགས་པ་རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ལས་ཀྱང་།[1] "ཉི་མས་བྱིན་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་ནམ་མཁའ་ལ་ནི་རི་མོ་བྱུང་བར་མ་གྱུར། འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། མ་བྱུང་མ་འགག་པ། འགྲོ་བ་དང་འོང་བ་མེད་པ། མ་སྐྱེས་པ། འཆི་འཕོ་མེད་པ། མངོན་པར་མ་གྲུབ་པ། བརྗོད་དུ་མེད་པ་ཡིན་པས་ཐ་སྙད་ཙམ་དང་། ཀུན་རྫོབ་ཙམ་དུ་ཟད་དོ། །ཉི་མས་བྱིན་དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་དུ་བྱུང་བར་མ་གྱུར། འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་བ་ནས་དེ་བཞིན་དུ་ཀུན་རྫོབ་ཙམ་དུ་ཟད་"ཅེས་བྱ་བའི་བར་དུ་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་དོན་དང་སྦྱར་བར་བྱའོ།།

འོ་ན་ནི་དོན་དམ་པ་སྟོང་པ་[2]ཉིད་ཆེན་པོ་ལས།[3] "ལས་ཀྱང་ཡོད། རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡང་ཡོད་དེ། བྱེད་པ་པོ་ནི་མི་དམིགས་སོ་"ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་དང་འགལ་བར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པར་ལས་ལ་སོགས་པ་ཡོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་བྱེད་པ་པོ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པས་བྱེད་པ་པོ་ནི་མི་དམིགས་སོ་ཞེས་བརྗོད་དུ་མི་རུང་ངོ་ཞེ་ན། འདིར་ཡང་སྔ་མ་བཞིན་དུ་འགལ་བ་མེད་དེ། འདི་ལྟར་

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཐ། ༣༧༨ བ ༥
2 འོ་ན་ནི་སྟོང་པ་ སྣ། པེ།
3 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཤ། མདོའི་ནང་ལུང་འདི་རྙེད་སོན་མ་ཐུབ།

ལས་དང་འབྲས་བུ་ནི་ཀུན་རྫོབ་པོ་ནར་ཡོད་པ་ཉིད་ལ། མུ་སྟེགས་ཅན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པའི་བྱེད་པ་པོ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་མེད་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་འགལ་བའི་གོ་སྐབས་སུ་ག་ལ་འགྱུར། འོ་ན་མདོ་གཞན་དག་ལས།[1]

ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར། །
དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཡོད་པ་ཉིད། །
གལ་ཏེ་ཇི་ལྟར་མཐོང་དེར་འགྱུར། །
ཐམས་ཅད་དེ་ཉིད་མཐོང་བར་འགྱུར། །
ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མེད་པའི་ཕྱིར། །
ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་དག་པ་མེད། །
དེ་དག་ཇི་ལྟར་མཐོང་བཞིན་ (156b) མིན། །
དེ་དག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མིན། །

ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཇི་ལྟར་དྲང་ཞེ་ན། འདི་ཡང་སྔར་བཤད་ཟིན་པར་ཟད་དེ། འདི་ལྟར་འདིར་ཡང་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་བཞིན་དོ་ནར་དོན་དམ་པར་ཡོད་པར་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་འདིས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ཉིད་དུ་གཞུང་བཙུགས་[2]པ་ཡིན་ནོ།།

ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མེད་པའི་ཕྱིར། །

---

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༡༧ ན ༨

2 གཙུགས། སྡེ།

ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ཀྱང་དངོས་པོ་རྣམས་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད་དེ།

དེ་དག་ཇི་ལྟར་མཐོང་བཞིན་མིན།།

ཞེས་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཐ་སྙད་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ཏེ། "ཇི་སྐད་དུ་རབ་འབྱོར་ཐོབ་པ་དང་། མངོན་པར་རྟོགས་པ་དང་། སྐྱེ་བ་དང་འགག་པ་དང་། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡིན་གྱི། དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།[1] འོ་ན་དེ་ཉིད་ལས།

དོན་ཡོད་མ་ཡིན་སེམས་ཉིད་དེ། |
ཕྱི་རོལ་དོན་མཐོང་ལོག་པ་ཡིན། |
རིགས་པས་རྣམ་པར་ལྟ་རྣམས་ཀྱི། |
གཟུང་དང་འཛིན་པ་འགག་པར་འགྱུར། |
ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར། |
ཕྱི་རོལ་དོན་ནི་ཡོད་མ་ཡིན། |
བག་ཆགས་ཀྱིས་ནི་བསྒྲིབས་པའི་སེམས། |
དོན་དུ་སྣང་བ་རབ་ཏུ་འབྱུང་། |[2]

ཞེས་གསུངས་པ་དང་།

1 ལང་གཤེགས། ལེའུ་བཅུ་པའི་ཚིགས་བཅད་༡༥༣ ནས་ ༡༥༥་བར།

2 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༦༥ ན

གཞན་ལས་ཀྱང་། "ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་དག ཁམས་གསུམ་པ་འདི་ནི་སེམས་ཙམ་མོ་"[1]ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཡང་ཇི་ལྟར་དྲང་། དེ་བཞིན་དུ་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་དང་། འཕགས་པ་སྡུག་པོ་བཀོད་པ་ལ་སོགས་པ་ལས། ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་གྱི་ལུས་ཉིད་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་སེམས་ཁོ་ན་དོན་དམ་པར་ཡོད་ཀྱི། གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྒྲུབས་པར་འགྱུར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་ཁྲུངས་སུ་མི་རུང་བ་ཉིད་དེ། ཇི་ལྟར་སེམས་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ཀྱང་མདོ་དེ་དང་དེ་ལས་རྣམ་པ་དུ་མར་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ཡང་ཅི་སྟེ་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་མི་(157a)བཟུང་། འོན་ཏེ་དོན་ཚད་མས་གནོད་པའི་ཕྱིར་དང་། མདོ་གཞན་དག་ལས་ཀྱང་བཀག་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པར་ཡོད་པར་རྣམ་པར་མི་གཞག་སྟེ། གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པ་ཙམ་ལ་གཞུག་པ་ལ་ལྡེམ་པོར་དགོངས་པས་གདུལ་བར་བྱ་བ་དེ་ལྟ་བུའི་བསམ་པ་ལ་[2]ལྟོས་ཏེ། དེ་བསྟན་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་བརྗོད་ན་གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ན་ནི་སེམས་ཀྱང་འོག་ནས་འབྱུང་བའི་ཚད་མས་གནོད་པའི་ཕྱིར་དང་། དེ་མདོ་གཞན་ལས་ཀྱང་། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པ་ཉིད་དུ་མ་འཛིན་པར་སེམས་ཙམ་པོ་ཉིད་དེ་ནི་རིམ་གྱིས་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་གྱི་རྒྱ་མཚོ་ལ་གཟུད་པའི་ཕྱིར་བསྟན་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ་སྙམ་དུ་ཟུངས་ཤིག[3] འདི་

1 འཕགས་པ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ལེའུ། སྡེ་བཀའ། ཕལ་ཆེན། ག ༡༧༨ བ ༩

2 བསམ་པ་ལས་ སྣ། པེ།

3 ཟུང་ཞིག སྣ། ཟུང་ཤིག སྡེ།

ལྟར་གང་ཞིག་ཅིག་ཅར་ཆོས་མ་ལུས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་མི་ནུས་པ་དེ་རེ་ཞིག་[1] སེམས་ཙམ་ལ་བརྟེན་ནས། རིམ་གྱིས་ཕྱིའི་དོན་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ལ་འཇུག་གོ །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར།

རིགས་པས་རྣམ་པར་ལྟ་རྣམས་ཀྱི། །

གཟུང་དང་འཛིན་པ་འགག་པར་འགྱུར། །[2]

ཞེས་གསུངས་སོ། །དེའི་འོག་ཏུ་རིམ་གྱིས་[3] སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་རྟོག་ན། དེ་ཡང་བདག་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁོང་དུ་ཆུད་ནས་ཟབ་མོའི་ཚུལ་ལ་འཇུག་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས།[4]

སེམས་ཙམ་ལ་ནི་བརྟེན་ནས་སུ། །

ཕྱི་རོལ་དོན་ལ་མི་རྟོག་གོ། །

དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དམིགས་ནས་ནི། །

སེམས་ཙམ་ལས་ཀྱང་བཟླ་བར་བྱ། །

སེམས་ཙམ་ལས་ནི་བཟླས་ནས་སུ། །

སྣང་བ་མེད་ལ་བཟླ་བར་བྱ། །

སྣང་མེད་གནས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ། །

1 རེ་ཞིག སྣ།

2 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༦༥ ན

3 རིམས་ཀྱིས་ སྣ། པེ།

4 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༡༦༨ བ ༥

དེས་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མཐོང་། །
འཇུག་པ་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་ནི། །
སྨོན་ལམ་དག་གིས་རྣམ་པར་སྦྱངས། །
ཡེ་ཤེས་དམ་པ་བདག་མེད་པ། །
སྣང་བ་མེད་ལ་མི་མཐོང་ངོ་། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །གཞན་དག་ན་རེ་སེམས་ཙམ་ནི་རང་གིས་རབ་ཏུ་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་གནས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། ཕྱིའི་དོན་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་མི་གནས་ཏེ། སེམས་ཀྱི་རྣམ་པ་ལས་མ་གཏོགས་པར་དེ་གྲུབ་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་རབ་ཏུ་བསྟན་པའི་ཆེད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དངོས་པོ་རྣམས་སེམས་ཙམ་ཉིད་དུ་བསྟན་གྱི། དེ་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། (157b)མདོ་གཞན་ལས་དེ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན་ལས།

སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ནམ་ཡང་ནི། །
གཏན་དུ་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་དང་། །
སེམས་མ་བརྟེན་ཤིང་ཆོས་མཁྱེན་པ། །
དམིགས་མི་མངའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །[1]

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ག ༣༠༠ བ ༣ མདོའི་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ལན་འགའ་ཡང་། །སེམས་དང་ཆོས་ཀུན་གཏན་མ་དམིགས། །ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀུན་མཁྱེན་པ། །མི་རྟེན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

ཅེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "འོད་སྲུངས་སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་བཙལ་ན་མི་དམིགས་སོ། །གང་མི་དམིགས་པ་དེ་ནི་ཉེ་བར་མི་དམིགས་སོ། །གང་ཉེ་བར་མི་དམིགས་པ་དེ་ནི་འདས་པ་ཡང་མ་ཡིན། མ་འོངས་པ་ཡང་མ་ཡིན། ད་ལྟར་བྱུང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །གང་འདས་པ་མ་[2]ཡིན། མ་འོངས་པ་མ་ཡིན། ད་ལྟར་བྱུང་བ་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་དུས་གསུམ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ནོ། །གང་དུས་གསུམ་ལས་འདས་པ་འདི་ནི་ཡོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་མེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །གང་ཡོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་མེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་མ་སྐྱེས་པའོ། །གང་མ་སྐྱེས་པ་དེ་ལ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་དོ། །གང་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་དེ་ལ་སྐྱེ་བ་མེད་དོ། །གང་ལ་སྐྱེ་བ་མེད་པ་དེ་ལ་འགག་པ་མེད་དོ། །གང་ལ་འགག་པ་མེད་པ་དེ་ལ་འབྲལ་བ་མེད་དོ། །གང་ལ་འབྲལ་བ་མེད་པ་དེ་ལ་འགྲོ་བ་ཡང་མེད། འོང་བ་ཡང་མེད། །འཆི་འཕོ་བ་ཡང་མེད། །སྐྱེ་བ་ཡང་མེད་དོ། །གང་ལ་འགྲོ་བ་ཡང་མེད། འོང་བ་ཡང་མེད། །འཆི་འཕོ་བ་ཡང་མེད་།། སྐྱེ་བ་ཡང་མེད་པ་དེ་ལ་འདུ་བྱེད་ཅི་ཡང་མེད་དོ། །གང་ལ་འདུ་བྱེད་ཅི་ཡང་མེད་པ་དེ་ནི་འདུས་མ་བྱས་སོ། །གང་འདུས་མ་བྱས་པ་དེ་ནི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རིགས་སོ་ ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། དེས་ན་ཡང་དེ་ཉིད་ལས།[3] "འོད་སྲུངས་རྟག་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མཐའ་གཅིག་གོ །འོད་སྲུངས་མི་རྟག་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མཐའ་གཉིས་པའོ། །འོད་སྲུངས་དེ་བཞིན་དུ་ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མཐའ་གཅིག་གོ །འོད་སྲུངས་མེད་ཅེས་བྱ་བ་

1 འོད་སྲུང་གིས་ཞུས་པའི་ལེའུ། སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཆ། ༡༣༩ བ ༦
2 འདས་པ་ཡང་ སྡེ།
3 འོད་སྲུང་གིས་ཞུས་པའི་ལེའུ། དཀོན་བརྩེགས། ཆ། ཤོག ༡༣༡ ན ༡

འདི་ནི་མཐའ་གཉིས་པའོ། །མཐའ་འདི་གཉིས་ཀྱི་དབུས་གང་ཡིན་པ་ནི་[1]བརྟག་ཏུ་མེད་པ། བསྟན་དུ་མེད་པ། ཐོགས་པ་མེད་པ། མི་གནས་པ། སྣང་བ་མེད་པ། རྣམ་པར་རིག་པ་མེད་པ་གནས་པ་མེད་པ་སྟེ་འདི་ནི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དབུ་མའི་ལམ་ལ་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ (158a)ཞེས་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དབུ་མར་གྱུར་པ། དངོས་པོར་ཡོད་པ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་གྱི། འོན་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་མཐའ་གཉིས་པོ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། ཆོས་མ་ལུས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་སྤྲོས་པ་མེད་པ་རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་དེ་ཡང་བདག་ཉིད་ཀྱིས་འདིའོ་དེའོ་ཞེས་བརྟག་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར། བརྟག་ཏུ་མེད་པའོ། །གཞན་དག་ལ་བསྟན་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་བསྟན་དུ་མེད་པའོ། །ནང་གི་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ངོ་བོར་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་མི་གནས་པའོ། །ཕྱིའི་ཁམས་དང་། སྐྱེ་མཆེད་ལྟར་སྣང་བར་མི་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་སྣང་བ་མེད་པའོ། །མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཁམས་ཀུན་རང་བཞིན་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་རིག་པ་མེད་པའོ། །འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་ཉོན་མོངས་པ་མཐའ་དག་གི་གནས་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གནས་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱའོ།།

གལ་ཏེ་དབུ་མ་ལ་སེམས་ཀྱི་རང་གི་ངོ་བོ་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ་དོན་དམ་པ་ཅི་ཡང་རུང་བ་ཞིག་ཡོད་པར་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་དེ་ཡོད་པས་རྟག་གོ་ཞེས་བྱ་བའམ། མི་རྟག་གོ་ཞེས་བྱ་བར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡང་ཇི་ལྟར་མཐར་འགྱུར་ཏེ། དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གྱི་རྗེས་སུ་སོང་ཞིང་ཚུལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཉིད་ནི་ལྷུང་བའི་

1 ཡིན་པ་དེ་ནི་ སྣ། པེ།

གནས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

རྟག་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་མ་གཏོགས་པ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་དངོས་པོའི་རྣམ་པ་གཞན་ནི་མི་སྲིད་དོ། །གལ་ཏེ་དབུ་མ་ལ་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་མེད་ན་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་འཛིན་པ་ཡང་མཐར་མི་འགྱུར་རོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་འཛིན་པ་ཡང་ཡོད་པར་འཛིན་པ་མེད་ན་མེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡུལ་མེད་པའི་འགག་པ་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་བས་ན་གདོན་མི་ཟ་བར་གང་ལ་མེད་པར་འཛིན་པ་ཡོད་པ་དེ་ལ་ཡོད་པར་འཛིན་པ་དེ་ཡང་ཡོད་པས་མཐའ་གཉི་གར་འགྱུར་རོ།།

གལ་ཏེ་དབུ་མ་ལ་དངོས་པོ་ཡོད་ན་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་ཡོད་པར་འཛིན་པ་གང་གིས་བཟློག་པར་འགྱུར། འཕགས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལས། དབུ་མར་ཡོད་པ་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོ་ལ་གནས་པ་དགག་པའི་ཕྱིར་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་(158b) དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་ཏེ།

ཡོད་ཅེས་མེད་ཅེས་གཉི་གའང་མཐའ། །
དག་དང་མ་དག་འདི་ཡང་མཐའ། །
དེ་ཕྱིར་མཐའ་གཉིས་རྣམ་སྤངས་ནས། །
མཁས་པ་དབུས་ལའང་གནས་མི་བྱེད། །[1]

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ད། ༣༧ ན ༡ ཡོད་དང་མེད་ཅེས་བྱ་བ་གཉི་ག་མཐའ། །གཙང་དང་མི་གཙང་འདི་ཡང་མཐའ་ཡིན་ཏེ། །དེ་ཕྱིར་གཉིས་ཀའི་མཐའ་ནི་རྣམ་སྤངས་ནས། །མཁས་པ་དབུས་ལའང་གནས་པར་ཡོང་མི་བྱེད།།

ཅེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། མདོའི་དོན་ནི་བརྟེན་པར་བྱ་བ་དབུ་མར་ཡོད་པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་འགའ་ཡང་མེད་ན་ནི།

མཁས་པ་དབུས་ལའང་གནས་མི་བྱེད། །

ཅེས་བྱ་བ་རྟུང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་ཞིག་ཡོད་ན་ནི་ཇི་ལྟར་ན་དེ་ལ་མཁས་པ་གནས་པར་བྱེད་པར་མི་འགྱུར། འཕགས་པ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ལེའུ་ལས་ཀྱང་།[1] "ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་དག་གཞན་ཡང་ཁམས་གསུམ་སེམས་ཙམ་དུ་འཇུག་སྟེ། དུས་གསུམ་ཡང་སེམས་དང་འདྲ་བར་རྟོགས་པར་བྱེད་ལ། སེམས་དེ་ཡང་མཐའ་དང་[2]དབུས་མེད་པ་ཉིད་དུ་འཇུག་གོ"ཞེས་གསུངས་ཏེ། མདོའི་དོན་ནི་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པའི་མཐའ་དང་། གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དབུས་དོན་དམ་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་སེམས་མཐའ་དང་དབུས་མེད་པ་ལ་འཇུག་པར་འགྱུར། རྟོགས་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ། །གཞན་དག་ན་རེ"ཀུན་རྫོབ་ཏུ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་འདྲ་བར་ཕྱིའི་དོན་ཡང་གནས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་འཕགས་པ་ས་བཅུ་པ་ལས།[3] ས་བརྒྱད་པ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སུ་གཏོགས་པའི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་གངས་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པར་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་འགལ་བར་འགྱུར་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ། "དེ་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཕྲ་མོ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་ལ། ཆེན་པོར་གྱུར་བ་དང་། ཚད་མེད་པ་དང་། རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་རྣམ་

---

1 སྡེ་བཀའ། ཕལ་ཆེན། ག ༡༧༨ བ ༨

2 མཐའ་དག སྡེ།

3 སྡེ་བཀའ། ཕལ་ཆེན། ཁ། ༣༨༣ བ ༨

པར་ཕྱེ་བ་ཚད་མེད་པ་ལ་མཁས་པར་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་གང་ན་སའི་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཇི་སྙེད་ཡོད་པ་[1]ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་ལ། དེ་བཞིན་དུ་ཆུའི་ཁམས་དང་། མེའི་ཁམས་དང་། རླུང་གི་ཁམས་ཀྱི་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ" ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་བཞིན་དུ་ཕྱིའི་དོན་ཡང་གྲགས་པའི་ཕྱིར་གྲགས་པས་གནོད་པ་ཡང་ཡིན་ཏེ། རིགས་པས་རྣམ་པར་དཔྱད་ན་ནི་གཉི་ག་ཡང་བཏག་པའི་ཁུར་མི་བཟོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོའི་གནས་མི་ཐོད་ལ། ཐ་སྙད་ཀྱི་བདེན་པར་ནི་དངོས་(159a)པོ་གཉི་ག་ཡང་གནག་རྫིའི་ཆུང་མ་ཡན་ཆད་ལ་གྲགས་པ་ཉིད་དོ།། སེམས་ཙམ་དུ་གསུངས་པའི་འབྲས་བུ་ནི་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པ་བྱེད་པ་པོ་དང་ཟ་བ་པོ་དགག་པ་ཡིན་ཏེ། ཐ་སྙད་དུ་ཡང་སེམས་ལས་མ་གཏོགས་[2]པའི་བྱེད་པ་པོ་ལ་སོགས་པ་གཞན་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །

ཡང་ན་སེམས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ལྟོས་ནས་སེམས་གཙོ་བོར་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་།

དོན་ཡོད་མ་ཡིན་སེམས་ཉིད་དེ།། །[3]

ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ།

བག་ཆགས་ཀྱིས་ནི་དཀྲུགས་པའི་སེམས། །

དོན་དུ་སྣང་བར་རབ་ཏུ་འབྱུང་། །[4]

---

1 ཇི་སྙེད་པ་ཡང་ སྣ། པེ།

2 སེམས་མ་གཏོགས་ སྣ། པེ།

3 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ ༡༦༥ ན

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་དེར་ཡང་རྣམ་པ་མེད་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་ཡང་ཡུལ་འཛིན་པར་མི་རུང་བས་དེའི་ཕྱིར་གདོན་མི་ཟ་བར་དེ་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླང་དགོས་སོ། །དེ་བས་ན་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པ་ལས་མ་གཏོགས་པ་དོན་གྱི་རྣམ་པ་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་དེ་བཀག་པས་སེམས་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ཀྱི། དེ་ལས་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་མེད་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། ཡང་ན་བདག་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པར་བསྟན་པ་བཞིན་དུ་དེ་ལྟ་བུས་འདུལ་བའི་སྐྱེ་བོ་ལ་ལྟོས་ནས་སྨན་པ་རྣམས་ནད་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གསོ་བར་བྱེད་པ་དང་འདྲ་བར་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་བཤད་པ་སྣ་ཚོགས་རབ་ཏུ་འཇུག་སྟེ། དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[1]

ནད་པ་དང་ནི་ནད་པ་ལ། །
སྨན་པས་ཛྲས་བྱིན་ཇི་ལྟ་བར། །
དེ་བཞིན་སངས་རྒྱས་སེམས་ཅན་ལ། །
སེམས་ཙམ་ཉིད་དུ་གསུངས་པ་ཡིན། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །གཞན་དག་ལ་སླུ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།[2] །དེ་ལྟ་བུས་འདུལ་བའི་སྐྱེ་བོ་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བ་ཐོབ་པར་བྱེད་པས་བཤད་པ་དོན་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཕ་རོལ་ལ་

---

4 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ ༡༦༥ ན

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ ༡༧༨ ན ༡ ཤློཀ ༣ ༔ ༡༣༡ ལུང་འདི་ཁུངས་ཀྱི་མདོའི་ནང་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། ཇི་ལྟར་ནད་པ་ནད་པ་ལ། །སྨན་པས་སྨན་རྣམས་གཏོང་བ་ལྟར། །སངས་རྒྱས་དེ་བཞིན་སེམས་ཅན་ལ། སེམས་ཙམ་དུ་ཡང་རབ་ཏུ་གསུངས།།

2 མ་ཡིན་ཏོ། པེ།

གཅིག་ཏུ་ཕན་པ་ཉིད་བདེན་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་བརྟེན་གསུངས་པ་ཡང་མི་མངའ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ།[1]

སླུ་དང་ལྡན་པ་བདེན་མ་ཡིན། །
དོན་གྱི་དགོངས་པ་མེད་པའང་མིན། །
གཞན་ལ་གཅིག་ཏུ་ཕན་པ་བདེན། །
ཕན་པ་མེད་ཕྱིར་ཅིག་ཤོས་མིན། །

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ་ཞེས་བརྗོད་དོ། །དེ་ལྟར་ན་ཀུན་(159b)རྫོབ་ཏུ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ཡང་ཡོད་དམ། སེམས་ཙམ་ཉིད་ཀྱང་བླ་སྟེ། ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་ཕྲ་རབ་ཀྱང་སྒྲུབ་པར་འགྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལྟ་བུའི་ཡིད་ཆེས་པའི་བཀའ་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་མེད་དོ། །འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྲིན་ལས།[2] "རིགས་ཀྱི་བུ་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པ་མེད་པར་གྱུར་ན་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ" ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནམ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གང་ལ་འདི་ཁོངས་སུ་འགྱུར་བའི་དོན་དམ་པ་སུ་ཞིག་སྟོང་བར་བྱེད། མདོའི་དོན་ནི་འདི་ལྟར་འདི་ནི་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོན་དམ་པའི་སྒྲར་དགོངས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་ཡེ་ཤེས་དམ་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་།

1 དབུ་མ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ། ༣ ཿ ༣༥ རིན་ཆེན་ཕྲེང་བའི་ནང་ལུང་འདིའི་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། སླུ་བ་མེད་ལྡན་བདེན་མིན་ཏེ། །སེམས་པས་བསྒྱུར་བ་དོན་དུ་མིན། །གཞན་ལ་གཅིག་ཏུ་ཕན་པས་བདེན། །མི་ཕན་ཕྱིར་ནི་ཅིག་ཤོས་བརྫུན།། ༣ ཿ ༣༥

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༩༩ ན ༦

བདག་ཉིད་རིགས་པ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་ཀྱིས་དམ་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ཡང་མེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཆོས་དང་གང་ཟག་དག་ཇི་ལྟར་ཕྱིས་པའི་སྐྱེ་བོ་ལ་གྲགས་པའི་བདག་ཉིད་དུ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་བཙལ་བ་མེད་པར་དང་པོ་ཉིད་ནས་དེ་ཁོ་ན་མཐོང་བར་འགྱུར་བས་དེ་ཁོ་ན་རྟོགས་པར་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱི་འབད་པ་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པར་གསལ་རབ་པ་ཉིད་པས་འདི་ནི་ཁུངས་སུ་མི་རུང་ངོ་།།

འོ་ན་ནི་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པ་ལས།[1] "འོད་སྲུངས་གང་ཟག་ཏུ་ལྟ་བ་རི་རབ་ཙམ་ནི་བླའི། མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་"ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་དང་ཇི་ལྟར་འགལ་བར་མི་འགྱུར་ཞེ་ན། འདི་དང་ཡང་མི་འགལ་བ་ཉིད་དེ། གང་ཞིག་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་ཡོད་པར་ཁས་བླངས་ན་ཡང་་[2]དེ་དག་མེད་པར་རྟོག་པར་བྱེད་ཅིང་འདི་ལྟར་གང་དག་གཞིག་པའི་ཕྱིར་སྟོང་པ་ཉིད་བསྟན་པའི་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡང་དག་པར་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་དུ་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་དེ། དེ་དག་སྔར་ཡོད་པར་ཡོངས་སུ་བརྟགས་ནས་ཕྱིས་མེད་པར་ཡོངས་སུ་འཛིན་ན་ཡོད་པ་དང་། མེད་པའི་མཐར་ལྷུང་བའི་ཕྱིར་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་དོན་མཐའ་གཉིས་[3]དང་བྲལ་བ་སྤྲོས་པ་མ་ལུས་པ་ཉེ་བར་ཞི་བ་ཁོང་དུ་མ་ཆུད་པས་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་ཞེས་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ལྟ

1 སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཀ། ༡༣༣ བ ༡

2 བླངས་ནས་ཡང་ སྣ། པེ།

3 དོན་གཉིས་ སྣ། པེ།

བ་དེ་བཀག་ (160a)པས་དོན་དམ་པ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་སྤྲོས་པའི་དྲ་བ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ་རྟོགས་པ་ཁོ་ན་ལ་སྦྱོར་བར་མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་[1]མདོ་གཞན་དག་ལས་ངེས་པར་མཛད་དེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[2] "ཇི་སྐད་དུ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འཇིག་རྟེན་འདི་ནི་གཉིས་ལ་གནས་པ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ཡོད་པ་ཉིད་ལ་གནས་པ་དང་། མེད་པ་ཉིད་ལ་གནས་པ་ཡོད་པ་དང་། མེད་པ་ལ་འདུན་པའི་ལྟ་བར་ལྟུང་བ་ནི་ངེས་པར་མི་འབྱུང་བ་ལ་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བློ་ཅན་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་ལ་ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ཡོད་པ་ཉིད་ལ་གནས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་ནི་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་མེད་པ་དག་ལས་སྐྱེའི།[3] ཡོད་པ་དག་ལས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཡོད་པ་སྐྱེའི་མེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་ཏེ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་སྐད་དུ་སྨྲ་བ་ན་དངོས་པོ་རྣམས་དང་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་རྣམས་དང་། འཇིག་རྟེན་ཡང་རྒྱུ་མེད་པའི་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་སྨྲ་བ་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་ལ་ཇི་ལྟར་མེད་པ་ཉིད་ལ་གནས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་ཁས་བླངས་ནས། ཡང་འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་མེད་པར་རྟོག་པར་བྱེད་དོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དངོས་པོ་རྣམས་དངོས་པོའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་དབེན་པའི་ཕྱིར་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་མི་ལེན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་། ཉན་ཐོས་དང་། རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་དག་ཁས་མི་ལེན་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ལས་བློ་

1 ཀྱི སྣ། པེ།
2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༡༣ བ ༧
3 སྐྱེའོ། སྡེ།

གྲོས་ཆེན་པོ་གང་ཞིག་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ་ཡིན། བློ་གྲོས་ཆེན་པོས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་གང་ཞིག་འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་ཁས་བླངས་ནས་ཁས་ལེན་པར་མི་བགྱི་བ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གང་ཁྱོད་ཀྱིས་དེ་ལྟར་ཞེས་པ་ནི་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ནི་འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་ཡོད་པ་དང་། མེད་པའི་བློ་ནས་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་མ་ཟད་ཀྱི། ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་། སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱང་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ''ཞེས་བྱ་བ་རྒྱས་པར་གསུངས་ནས། [1]''བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ངས་འདི་(160b)ལས་དགོངས་ཏེ་གང་ཟག་ཏུ་ལྟ་བ་རི་རབ་ཙམ་ནི་བླའི། ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་ནི་དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བཤད་དོ''ཞེས་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དངོས་པོར་སྨྲ་བ་རྣམས་ཁོ་ན་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ཀྱང་དེ་ཉིད་ལས།[2]

མ་བྱུང་བ་ལས་གང་འབྱུང་ཞིང་། །
བྱུང་ནས་ཀྱང་ནི་རྣམ་འཇིག་པ། །

---

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༡༤༣ ན ༧

2 ལང་གཤེགས། མདོ་སྡེ། ཙ། ༡༡༣ བ ཁུངས་ཀྱི་མདོའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། རྒྱན་གྱིས་ཡོད་དང་མེད་པ་ལས། །མ་བྱུང་བ་ལས་གང་སྐྱེ་ཞིང་། །བྱུང་ནས་འཇིག་པར་འགྱུར་ཞེས་པའམ། །ང་ཡི་བསྟན་ལ་དེ་མི་གནས། །གང་རྣམས་ཅུང་ཟད་མི་སྐྱེ་བ།། ཅུང་ཟད་འགོག་པར་མི་འགྱུར་ཏོ། །འཇིག་རྟེན་དབེན་པར་མཐོང་བས་ན། །ཡོད་དང་མེད་པར་དེ་མི་འཛིན།།

རྐྱེན་ལས་ཡོད་དང་མེད་དེ་དག །
ང་ཡི་བསྟན་ལ་མི་གནས་སོ། །
གང་ལ་ཅུང་ཟད་སྐྱེ་མེད་ཅིང་། །
འགག་པའང་ཅུང་ཟད་ཡོད་མིན་ལ། །
འགྲོ་བ་རྣམ་པར་དབེན་མཐོང་བ། །
དེ་ལ་ཡོད་དང་མེད་ཉིད་མེད། །

ཅེས་གསུངས་སོ། །གང་དག་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གཉིས་པའི་དོན་ཁོ་ན་གཞུང་འཇུག་པར་བྱེད་ཅིང་། མདོའི་དོན་ནི་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོས་དབེན་པས། འགྲོ་བ་རྣམ་པར་དབེན་མཐོང་བ། ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཉེ་བར་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་འགལ་བ་མེད་དོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་དག་གིས་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ཅི་ཡིན་པ་བརྗོད་དགོས་སོ། གལ་ཏེ་ཚད་མས་གནོད་ཀྱང་བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བདེན་པར་བཟུང་བ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ན་ནི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པ་ལ་བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲོ་བཏགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་འོག་ནས་འབྱུང་བའི་ཚད་མས་གནོད་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་ཅི་སྟེ་མི་བཟུང་། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཕྱིའི་དོན་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་ཀྱི། དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་བཤད། འོན་ཏེ་ཚད་མས་གནོད་པའི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་བཤད་པར་མི་བྱའོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་ཡང་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་བཤད་པར་མི་བྱ་སྟེ། དེ་ཡང་ཕྱིའི་དོན་བཞིན་དུ་ཚད་མས་གནོད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གལ་ཏེ་ཚད་མ་འགའ་ཞིག་གིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དངོས་པོ་ཡོད་པར་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པར་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྣམ་པ་གཉིས་པོ་ན་ཀུན་བརྟགས་པ་ཡིན་གྱི། གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་རྣམ་པར་བཤད་པ་བཟང་པོར་འགྱུར་བ་ཞིག་ན་དེ་ཡང་མ་གྲུབ་པོ་ཞེས་བསྟན་པར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་འགྲོ་བ་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཀུན་བརྟགས་པའི་(161a) ངོ་བོས་དབེན་པར་ནི་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་འདོད་པ་ཉིད་པས་འདི་ནི་གྱི་ནའོ། །འདིས་ནི་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས།[1] "བྱམས་པ་གཞན་གྱི་དབང་གི་མཚན་ཉིད་དང་། ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་མཚན་ཉིད་ལ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཉིད་དང་རྣམ་པར་བྱང་བ་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་དང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཏན་བྲལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་ལ་མི་དམིགས་ཏེ། འདི་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་མཐའ་དག་ཅེས་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཡང་བསལ་བ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལ་ཡང་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པར་གཞན་གྱི་དབང་གི་མཚན་ཉིད་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀུན་རྫོབ་པ་དག་ལ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དང་། འཁོར་བར་ཀུན་ཏུ་སྦྱོར་བར་བྱེད་པ་ཉིད་དང་། གཉེན་པོའི་གགས་བྱེད་པ་ཉིད་དང་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་བགེགས་[2]མི་བྱེད་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་དག་ལ་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །རྣལ་འབྱོར་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་ཉིད་དུ་ཡོངས་[3]སུ་གྲུབ་པས་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ ཤོག ༡༥ བ ༣

2 གགས་ སྡེ།

3 ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་ཡོངས་'' སྣ། པེ།

གྲུབ་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པ་རྣམ་པར་བྱང་བ་རྣམས་ལ་ཡང་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ངེས་པར་འཇོམས་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དང་། སྔ་དྲན་ལས་འདས་པ་ལ་[1]ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པར་དངོས་པོའི་ཆོས་ཉིད་དུ་སྒྲོ་བཏགས་[2]པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་དག་ལ་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ།། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བ་ལ་དོན་དམ་པར་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ལ་སོགས་པ་མི་སྲིད་པས་ངོ་བོ་འདི་གཉི་ག་ཡང་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཡིན་པས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་རྣམས་ལ་མི་སྲིད་པ་ཉིད་དོ། །ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་པར་རོ་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་དབྱེ་བ་མི་རིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་ཡང་དག་པར་ན་གཉི་ག་ཡང་སྟོང་པ་ཡིན་ལ། ཡང་དག་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ན་གཉི་ག་ཡང་གནས་པའི་ཕྱིར་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བའི་ཕྱོགས་མེད་པའི་ཉེས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཉིས་སྟོང་ལྔ་བརྒྱ་པ་ལས།[3] "ཇི་སྐད་དུ་རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ། གཟུགས་ནི་འདོད་(161b) ཆགས་ཀྱི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ལ། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ལ། འདོད་ཆགས་དང་

1 འདས་པ་ལས་ སྡེ།

2 སྒྲོ་བཏགས་ སྣ།

3 རབ་རྩལ་རྣམ་པར་གནོན་པའི་མདོ། སྡེ་དཀའ། ཤེར་ཕྱིན། ཀ ༩༠ ན ༥

བྲལ་བའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །གཟུགས་དང་། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱི་འདོད་ཆགས་མ་ཡིན་པའི་ཆོས་ཉིད་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་མ་ཡིན་པའི་ཆོས་ཉིད་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ནི་ཞེ་སྡང་གི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ལ། ཞེ་སྡང་མེད་པའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན། གཏི་མུག་གི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ལ། གཏི་མུག་མེད་པའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་གྱི་གཏི་མུག་མ་ཡིན་པའི་ཆོས་ཉིད་དང་། གཏི་མུག་དང་བྲལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་པའི་ཆོས་ཉིད་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ། །རབ་ཀྱི་རྩལ་གྱིས་རྣམ་པར་གནོན་པ་གཟུགས་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར་བ་མེད་དོ། །དེ་ཞིན་དུ་ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར་བ་མེད་དེ། གཟུགས་དང་། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་མ་ཡིན་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "འཇམ་དཔལ་མཉམ་པ་ཉིད་གང་གིས་དོན་དམ་པར་[2] རྣམ་པར་བྱང་བའི་བར་དུ་གང་དང་མཉམ་པ། དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དེ་དང་མཉམ་མམ། འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྨྲས་པ། ལྷའི་བུ་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༠༨ བ ༧

2 དམ་པ་ སྡེ།

ཞིན་ཏུ་འབྱུང་བ་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་དང་། དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཞིན་ཏུ་སྐྱེ་བ་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་དང།[1] དོན་དམ་པར་[2]ཆོས་ཐམས་ཅད་དངོས་པོ་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་མཉམ་པ་ཉིད་དོ"ཞེས་གསུངས་སོ།།

འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན་ལས་ཀྱང་།[3] "མདོར་ན་མི་དགེ་བ་ཡིད་(162a)ལ་བྱེད་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་རྒྱུ་ཡིན་ལ། དགེ་བ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཐམས་ཅད་ནི་རྣམ་པར་བྱང་བའི་རྒྱུ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་རྒྱུ་གང་ཡིན་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བའི་རྒྱུ་གང་ཡིན་པའི་ཆོས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་[4]སྟེ། སེམས་ཅན་མེད་པ། སྲོག་མེད་པ། གང་ཟག་མེད་པ། བདག་པོ་མེད་པ། སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་མཚན་ཉིད་མེད་པ་སྟེ། ནང་ཉེ་བར་ཞི་བ་ཡིན་ནོ། །གང་ནང་ཉེ་བར་ཞི་བ་དེ་ནི་རབ་ཏུ་ཞི་བ་ཡིན་ནོ།། གང་རབ་ཏུ་ཞི་བ་དེ་ནི་རང་བཞིན་ཡིན་ནོ། །གང་རང་བཞིན་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཉེ་བར་མི་དམིགས་སོ། །གང་མི་དམིགས་པ་དེ་ནི་གནས་མེད་དོ། །གང་གནས་མེད་པ་དེ་ནི་མཁའ་ཡིན་ནོ། །མཁའ་ནི་ནམ་མཁའོ།[5] །དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའ་དང་འདྲ་བར་རབ་ཏུ་ཤེས་ཤིང་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བར་ཡང་ཐ་སྙད་འདོགས་ལ། ནམ་མཁའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱང་མི་སྤོང་ངོ་། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འཇམ་དཔལ་གང་ལ་

1 མཉམ་པ་དང་། སྣ།
2 གང་གིས་རྣམ་པར་བྱང་ སྣ། དོན་དམ་དང་། པེ།
3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ག ༣༩༣ བ ༡
4 སྟོང་ས་ སྣ། པེ།
5 མཁའ་ནི་མཁའོ། སྣ། པེ།

སྐྱེ་བའམ་འགག་པར་འགྱུར་བའི་ཆོས་དེ་ནི་འགའ་ཡང་མེད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།། གལ་ཏེ་ཡང་དོན་དམ་པར་ཀུན་བརྟགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པའི་ཆོས་འགའ་ཞིག་ཡོད་པར་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་མདོ་དེ་ཉིད་ལས། "འཇམ་དཔལ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པ་སྟེ། མཚན་ཉིད་མེད་པ། གཉིས་སུ་བྱར་མེད་པ། མིང་མེད་པ། མཚན་མ་མེད་པ། སེམས་དང་། ཡིད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་བྲལ་བ། མ་སྐྱེས་པ། མ་འགགས་པ། རྒྱུ་མེད་པ། རབ་ཏུ་རྒྱུ་བ་མེད་པ། ཀུན་ཏུ་རྒྱུ་བ་མེད་པ། ཡི་གེ་མེད་པ། སྒྲ་སྐད་མེད་པའོ་"[1]ཞེས་གསུངས་པ་དང་། "ཡང་འཇམ་དཔལ་སྟོང་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་མངོན་པར་ཞེན་པའི་འཛིན་པ་མེད་པའི་ཚིག་བླ་དགས་ཡིན་གྱི། འཇམ་དཔལ་འདི་ལ་དོན་དམ་པ་གང་སྟོང་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོས་ནི་འགའ་ཡང་མི་དམིགས་སོ་"ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ན་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས།[2] "མངོན་པར་བརྗོད་པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཅན་མ་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་དེ་ཡང་གང་ཞེ་ན། འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་། འཕགས་པའི་གཟིགས་པར་[3]བརྗོད་དུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པ་གང་ཡིན་

---

1 འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ག ༣༨༨ ན ༨ མདོའི་ནང་ལུང་འདིའི་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། འཇམ་དཔལ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའོ། །ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འཇམ་དཔལ་བྱང་ཆུབ་དེ་ནི་དབྱེར་མེད་པའི་གཞི་ཡིན་ཏེ……

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༣ བ ༡

3 གཟིགས་པས་ སྣ། པེ།

པ་དེ། བརྗོད་དུ་མེད་པའི་ཆོས་ཉིད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་[1]རྒྱ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་འདུས་བྱས་ཞེས་བྱ་བ་དང་།[2] དེ་(162b)བཞིན་དུ་འདུས་མ་བྱས་ཞེས་བྱ་བར་མིང་དུ་བཏགས་སོ་"ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པར་བྱ་བ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡོད་པར་སྟོན་པར་བྱེད་པ་འདི་ཇི་ལྟར་གྲང་ཞེ་ན། འདི་དང་ཡང་མི་འགལ་བ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་འདིར་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཁོ་ན་དངོས་པོའི་སྒྲར་བརྗོད་པར་བཞེད་དེ། དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་རྣམས་ཀྱི་སྐྲག་པའི་གནས་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་དོན་དུ་དེ་ལྟར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་ཆོས་ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོའི་སྒྲ་གནས་པར་བརྗོད་པས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཁོ་ན་ལ་བྱའོ། །སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ནི་འདུལ་བྱའི་བསམ་པ་ལ་ལྟོས་ནས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་དེ་ཉིད་ཐབས་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་སྟོན་པར་མཛད་དེ། དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[3] "བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འོན་ཀྱང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང་། སྟོང་པ་ཉིད་དང་། ཡང་དག་པའི་མཐའ་དང་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ཡིན་པར་ཉེ་

---

1 དེ་ཁོ་ན་མངོན་པར་འཚང་རྒྱ་བའི་" པེ།

2 ཤེས་བྱ་བ་དང་ པེ།

3 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ཤོག ༨༦ ན ༤

བར་བསྟན་པ་མཛད་ནས་བྱིས་པ་རྣམས་བདག་མེད་པས་སྐྲག་པའི་གནས་རྣམ་པར་སྤང་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་སྣང་བ་མེད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ཡིན་པར་ཉེ་བར་བསྟན་པས་སྟོན་པར་མཛད་དོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དཔེར་ན་རྫ་མཁན་ནི་རྫུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་འཇིམ་པ་གཅིག་ལས། ལག་པ་དང་། དབྱིག་གུ་དང་། ཆུ་དང་། སྲད་པའི་རྩོལ་བ་སྦྱོར་བས་སྣོད་སྣ་ཚོགས་དག་བྱེད་དོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་དུ་[1]དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱང་རྫ་མཁན་བཞིན་དུ་ཆོས་བདག་མེད་པ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་ལོག་པ་དེ་ཉིད་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལ་མཁས་པའི་ཚུལ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཡི་གེ་དང་ཚིག་ཐ་དད་པས་སྙིང་པོར་ཉེ་བར་བསྟན་པའམ། བདག་མེད་པར་ཉེ་བར་བསྟན་པས་སྟོན་པར་མཛད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་འདི་ཡང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཡང་ཐ་སྙད་ཀྱི་(163a)དབང་གིས་འདུས་བྱས་མ་ལུས་པའི་ཆོས་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདུས་བྱས་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་ཐ་སྙད་གདགས་ལ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་བྱུང་ཡང་རུང་། མ་བྱུང་ཡང་རུང་། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་གནས་པའི་ཕྱིར་འདུས་མ་བྱས་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་སྟོན་ཏོ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་ངོ་བོ་ཐམས་ཅད་ལས་འདས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་གཉི་གའི་ངོ་བོ་ཡང་མ་ཡིནནོ། །གདོན་མི་ཟ་བར་དེ་ལྟ་བུ་ཡིན་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་སྟེ། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཁྱེད་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ཀྱིས་འདུས་མ་བྱས་དངོས་པོར་ཇི་ལྟར་འགྱུར། གང་གིས་ན་འདི་འདུས་མ་བྱས་ཞེས་ཀྱང་བྱ་སྟེ། ཁྱེད་ནི་འདུས་བྱས་ཁོ་ན་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

---

1 བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་གཤེགས་… སྣ། པ།

འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་འབྱུང་གནས་ལས་ཀྱང་།[1]

མི་གང་དེ་བཞིན་ཉིད་དག་འདུས་བྱས་དང་། །
གཉིས་པ་འདུས་མ་བྱས་དང་རྣམ་གཉིས་སུ། །
སྨྲ་བ་བདེ་བར་གཤེགས་པས་ཆོས་བཤད་པ། །
དེ་དག་རྟོགས་པར་བྱ་ཕྱིར་སློབ་པ་མིན། །

ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལྟ་སྟེ། འདུས་མ་བྱས་དང་འདུས་མ་བྱས་ཀྱི་དངོས་པོར་འཛིན་པ་འདི་ནི་མཐར་འཛིན་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དངོས་པོའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་བྱིས་པ་རྣམས་སྐྲག་པའི་གནས་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་ཆེད་ཁོ་ནར་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དངོས་པོར་ཡོད་དོ་ཞེས་གསུངས་ཀྱི། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡེ་ཤེས་འཇིག་རྟེན་ལས་ཤིན་ཏུ་འདས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཡུལ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། འགག་པ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་ཕྱོགས་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་མདོ་ལས་ཀྱང་།[2] "འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་གང་ཞེ་ན། ཉན་ཐོས་

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཛ། ༣༧ ན ༧ མདོའི་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། གང་དག་དེ་བཞིན་འདི་དག་འདུས་བྱས་ཏེ། །ཅིག་ཤོས་འདུས་མ་བྱས་ཞེས་རྣམ་གཉིས་སྨྲ། །དེ་དག་བདེ་གཤེགས་བསྟན་པའི་ཆོས་རྣམས་ལ། །ནན་རབ་བགྱིད་པ་སྤྲོ་བའི་མི་མ་ལགས།།

2 མདོ་ཁུངས་རྙེད་སོན་མ་བྱུང་།

དང་རང་སངས་རྒྱས་རང་དང་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་དུ་ལྟུང་བའི་བསམ་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་རྣམས་ཀྱང་ཡིན་ནོ། །འཇིག་རྟེན་ལས་ཤིན་ཏུ་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་གང་ཞེ་ན། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་སྣང་བ་མེད་པའི་ཆོས་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་བས། སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། འགག་པ་མེད་པར་གཟིགས་པའི་ཕྱིར་ཡོད་པ་དང། མེད་པའི་ཕྱོགས་དང་བྲལ་བ་ཡིན་(163b)ནོ་" ཞེས་གསུངས་སོ།།

ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱིས་ཀུན་དུ་བསྡུས་པའི་ཕུང་པོ་ཙམ་རང་དང་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པར་སྒོམ་པར་བྱེད་པ་རྣམས་གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པ་ཙམ་ལ་གཟུད་པའི་ཕྱིར་ཡེ་ཤེས་དེ་དངོས་པོའི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཐ་སྙད་འདོགས་ཀྱི། དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

གལ་ཏེ་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་གཅིག་ཏུ་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཡེ་ཤེས་དེ་ཡོད་པའི་ཕྱོགས་དང་བྲལ་བར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དེ་ལྟ་བས་ན་བྱིས་པ་རྣམས་སྐྲག་པའི་གནས་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་ཕྱིར། འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དངོས་པོར་ཡོད་དོ་ཞེས་བསྟན་གྱི། དོན་དམ་པའི་དངོས་པོའི་མཚན་ཉིད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱང་ཇི་ལྟར་ཡོད་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་འབྲེལ་བར་མི་འགྱུར། ཇི་ལྟར་བྱིས་པ་རྣམས་སྐྲག་པ་རྣམ་པར་སྤང་བའི་ཕྱིར་དེ་གསུངས་[1]ཀྱི། དོན་དམ་པའི་དངོས་པོ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མདོ་གཞན་དག་ལས་གདན་ལ་ཕབ་པ་

1 ཕྱིར་གསུངས་ཀྱི། སྣ། པེ།

ཉིད་དེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[1] "ཇི་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བས་ཞུས་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཅིའི་སླད་དུ་ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་བཟློག་ནས།[2] ཡང་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དངོས་པོར་བཤད་པས། འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་ལ་འགོད་པར་མཛད་ཅིང་། རྣམ་པར་དབེན་པའི་ཆོས་བསྟན་པ་ཡང་མེད་པར་མཛད་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ང་ནི་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་བསྟན་པས་རྣམ་པར་དབེན་པའི་ཆོས་བསྟན་པ་མེད་པར་ཡང་མི་བྱེད་ལ། ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་ལ་འགོད་པར་ཡང་མི་བྱེད་ཀྱི། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འོན་ཀྱང་ང་ནི་སེམས་ཅན་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ན་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་རྣམས་ཀྱི་སྐྲག་པའི་གནས་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་ཕྱིར་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ (164a)དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བའི་སྒོ་ནས་རྣམ་པར་དབེན་པའི་ཆོས་སྟོན་པར་མི་བྱེད་དོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ང་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཉེ་བར་སྟོན་པར་མི་བྱེད་ཀྱི། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འོན་ཀྱང་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྟོགས་ན་རྣམ་པར་དབེན་པའི་ཆོས་ལ་གནས་པར་འགྱུར་བ་"ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དངོས་པོའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་དུ་བསྟནཔ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཐབས་ཀྱིས་བསྟན་པ་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༣༡ ན ༡

2 ཀློག་ནས། ཡི།

ཁོ་ན་ཡིན་នོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཡང་དག་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་ངེས་པར་མ་ཟིན་པ་བརྟེན་པ་ལ། མདོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་རྣམས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ཡང་མི་སྨན་པར་སྒྲོགས་ཤིང་བདག་ཉིད་ཀྱང་འཕུང་ལ། གཞན་ཡང་ རླག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།།

འདི་ལྟར་མདོ་དེ་ཉིད་ལས། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་ལྟ་བུ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་རྣམས་བདག་ལ་སོགས་པ་འཛིན་པའི་ཕྱིར་མི་འགྲོལ་བ་ཁོ་ནར་གསུངས་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ།[1] "བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གཞན་ཡང་ཚད་མ་གསུམ་གྱི་ཡན་ལག་གིས་བརྟག་པར་གཟིགས་ནས།[2] འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་སོ་སོར་རང་གིས་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཉིས་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡོད་དོ་[3] ཞེས་བྱ་བ་རྣམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད་ཀྱི། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་རྣལ་འབྱོར་པ་སེམས་དང་ཡིད་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་གནས་གྱུར་པ་རང་གི་སེམས་སྣང་བ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤངས་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ས་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་སོ་སོ་རང་གིས་རྟོགས་པ་རྣམས་ནི་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པར་འདུ་ཤེས་མི་འཇུག་གོ །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གལ་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་དེ་ལྟ་བུའི་ཡུལ་ཅན་རྣམས་ལ་[4] དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པར་འཛིན་པ་འཇུག་པར་གྱུར་ན་ནི་དེ་ཉིད་དེ་དག་གི་བདག་ཏུ་འཛིན་པ་དང་།

---

1 ལང་གཤེགས། མདོ་སྡེ། ཙ། ༧༣ ན

2 གཟས་ནས་ པེ། སྡེ།

3 ངོ་བོ་ཉིད་ལ་ཡོད་དོ།། སྣ། ཉིད་དུ་ཡོད་དོ། པེ།

4 རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ལ་ སྡེ།

གསོ་བར་འཛིན་པ་དང་། སྐྱེ་བུར་འཛིན་པ་དང་། གང་ཟག་ཏུ་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ" ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་ཞིག་ཡོད་ན་དེས་ན་གནོད་མི་ཟ་བར་རྟག་པའམ། མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་གྲང་སྟེ། དངོས་པོ་ལ་ནི་རྣམ་པའི་ཁྱད་པར་གཞན་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་(164b)རོ། །དངོས་པོ་དེ་ལ་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པའི་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་སྒོ་ནས་འཇུག་པའི་ཤེས་རབ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྟོགས་པ་དང་མཐུན་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཁོ་ནར་འགྱུར་གྱི། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལས་འདི་སྐད་དུ" ཀཽ་ཤི་ཀ་འདི་ནི་རིགས་ཀྱི་བུ་དང་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་དེ་དག་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པ་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་ཉེ་བར་སྟོན་ཏོ། །དེ་ལ་འདི་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་ཡིན་ཏེ། གཟུགས་མི་རྟག་ཅེས་བྱ་བར་ཉེ་བར་སྟོན་ཏོ། །དེ་བཞིན་དུ་སྡུག་བསྔལ་བ་དང་། བདག་མེད་པ་དང་། མི་གཙང་བ་ཞེས་བྱ་བར་ཉེ་བ་སྟོན་ཏོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ཕུང་པོ་དང་། ཁམས་དང་། སྐྱེ་མཆེད་དང་། བསམ་གཏན་དང་། ཚད་མེད་པ་དང་། གཟུགས་མེད་པ་དང་། དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་དང་། ཡང་དག་པར་སྤོང་བ་དང་། རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་དང་། དབང་པོ་དང་། སྟོབས་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྟོབས་བཅུ་དང་། མི་འཇིགས་

པ་དང་། སོ་སོ་ཡང་དག་པར་རིག་པ་དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་མ་འདྲེས་པ་དང་། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་མི་རྟག་གོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། སྡུག་བསྔལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། བདག་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། མི་གཙང་བ་ཞེས་བྱ་བར་ཉེ་བར་སྟོན་པར་བྱེད་དོ། །འདི་སྐད་དུ་གང་དེ་ལྟར་སྤྱོད་པ་དེ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སྤྱོད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་ཉེ་བར་སྟོན་ཏེ། ཀཽ་ཤི་ཀ་འདི་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་གང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་མ་ཡིན་པ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། དེ་ནི་འདི་སྐད་དུ་ཉེ་བར་སྟོན་ཏེ། རིགས་ཀྱི་བུ་ཁྱོད་ཚུར་ཤོག །ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བསྒོམས་ལ་གཟུགས་མི་རྟག་གོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་དག་པར་རྗེས་སུ་མ་ལྟ་ཞིག རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་བར་དུ་སྡུག་བསྔལ་བ་དང་། བདག་མེད་པ་དང་། མི་གཙང་བ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་དག་པར་རྗེས་སུ་མ་ལྟ་(165a)ཞིག དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གཟུགས་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པའོ། །གཟུགས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པའོ། །གང་དངོས་པོ་མེད་པ་དེ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ནི་གཟུགས་རྟག་གོ་ཞེས་བྱ་བའམ། མི་རྟག་གོ་ཞེས་བྱ་བ་མི་དམིགས་ཏེ། དེ་ལ་གཟུགས་ཉིད་ཀྱང་མེད་ན་རྟག་པའམ། མི་རྟག་པར་ལྟ་ག་ལ་འགྱུར། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་བར་དུ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་སྟེ། དེ་སྐད་དུ་ཉེ་བར་སྟོན་པ་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་སྐད་དུ་ཉེ་བར་སྟོན་ཏེ་རིགས་ཀྱི་བུ་ཁྱོད་ཚུར་ཤོག །ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བསྒོམས་ལ་ཆོས་གང་ལས་ཀྱང་ཡང་དག་པར་འདའ་བར་མ་བྱེད་ལ། ཆོས་གང་ལའང་མ་གནས་ཤིག །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འདི་ལྟར་

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་ཆོས་གང་ལས་ཡང་དག་པར་འདའ་བར་བྱ་བའམ། ཆོས་གང་ལ་གནས་པར་བྱ་བའི་ཆོས་དེ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པའོ། །གང་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པ་དེ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པའོ།། གང་དངོས་པོ་མེད་པ་དེ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ནི་ཆོས་འགའ་ཡང་བླང་བར་བྱ་བའམ། དོར་བར་བྱ་བའམ། བསྐྱེད་པར་བྱ་བའམ། དགག་པར་བྱ་བ་མེད་དོ། །དེ་སྐད་དུ་སྟོན་པ་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པ་མ་ཡིན་ནོ་"[1] ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་ལྟ་བས་ན་དངོས་པོར་སྨྲ་བ་ཐམས་ཅད་ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་[2]ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་སྟོན་པའི་ཕྱིར ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་བཅོས་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཏུ་སྨྲ་བ་རྣམས་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་ཉིད་ཡིན་པས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཐད་པ་དང་བཅས་པ་ཡིན་པར་གསལ་རབ་ཁོ་ནར་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མདོ་དེ་དང་དེ་ལས་རྣམ་པ་དུ་མར་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གསལ་བར་མཛད་ཡོད་ཀྱི། ཧ་ཅང་ཚིག་མངས་སུ་དོགས་པས་མ་བརྗོད་དེ། ཕྱོགས་འགའ་ཞིག་བསྟན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་[3]ཡང་དག་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་ངེས་པར་མ་ཟིན་པ་རྣམས་ཀྱིས་ (165a)དོན་དམ་པའི་ལུགས་ལ་རྣམ་པར་སྤྱང་བས་རེ་ཞིག་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་

1 ཤེར་ཕྱིན། ཁུངས་མ་རྙེད།

2 ཁོ་ན་ཕྱིན་ཅི་ སྣ། པེ།

3 ཀྱིས་ སྣ། པེ།

པར་[1]ནུས་པ་ནི་མ་[2]ཡིན་ཏེ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་བསལ་བ་ཡིན་ནོ།།[3]

དེ་ལ་གལ་ཏེ་ཤེས་རབ་ཉམ་ཆུང་བའི་ཕྱིར་དེ་ལྟ་བུའི་ཆོས་ཉིད་ཟབ་མོ་ལ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མོས་པར་མི་ནུས་སུ་ཟིན་ཀྱང་། འོན་ཀྱང་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་རང་གི་བློ་གྲོས་ཉམ་ཆུང་བའི་ཉེས་པ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་སྤང་བར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ལ། བདག་ཉིད་ཕུང་བས་གཞན་དག་ཀྱང་དོན་ཆེན་པོ་ལས་ཉམས་པར་བྱས་ཏེ། བསླུག་པར་བྱ་བར་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་ན་ནི་རང་དང་གཞན་ལ་འཕྲུ་བ་བྱས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། དེ་ལྟ་བས་ན་བློ་གྲོས་དང་ལྡན་པ་དད་པ་ཅན་གྱིས་ཆོས་ཟབ་མོ་དག་སྤྱོང་བའི་ལྟ་བ་བོར་ཏེ། དེ་ལ་ཡང་བཙོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཚད་མར་བྱས་ཤིང་བདག་ཉིད་མི་ཤེས་པའི་ཉེས་པས་དེ་ཁོང་དུ་མི་ཆུད་པ་སྲིད་དོ་སྙམ་དུ་བསམ་ནས་མདོ་ཟབ་མོ་དག་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་དེ། མཉན་པ་དང་། གཟུང་བ་དང་། བསྒོམ་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་མངོན་པར་བརྩོན་པར་བྱའོ། །གཞན་དག་ཀྱང་ཡང་དག་པར་ལེན་དུ་གཞུག་གོ །བདག་ཉིད་དེ་ལ་མོས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྨོན་ལམ་གདབ་པར་ཡང་བྱའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པ་ལས།[4] "ཆོས་ཟབ་མོ་གང་དག་ལ་འདིའི་བློས་གཏིང་མི་དཔོགས་པ་དེ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཁོ་ན་ཚད་མར་བྱས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ནི་མཐའ་ཡས་ཏེ། མོས་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྒོ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་

1 སྒྲུབ་པར་ པེ།

2 ནུས་པ་མ་ཡིན་ སྣ། པེ།

3 གསལ་བ་ཡིན་ནོ།། སྣ། པེ།

4 རྗེད་སོན་མ་ཕྱུང་།

ཆོས་བསྟན་པ་ལ་འཇུག་པས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཁྱེན་གྱི། བདག་གིས་ནི་མི་ཤེས་སོ་སྙམ་ནས་སྤྱོད་པར་ནི་མི་བྱེད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་ལུང་གི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབས་པ་ཡིན་ནོ།།

(3)གང་ཡང་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ནི་གཉིས་སུ་སྣང་བའི་ཤེས་པ་ཁོ་ནས་བྱེད་ཀྱི། རང་རིག་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གཉིས་སུ་སྣང་བ་ཡང་བརྫུན་པའི་ཕྱིར་དེས་རྣམ་པར་གཞག་པའི་ངོ་བོ་ཡང་བརྫུན་པ་ཁོ་ནའོ་[1]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་[2]སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཉིད་ཤེས་པ་བརྫུན་པའི་ངོ་བོར་སྣང་བས་རྣམ་པར་གཞག་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་ན་ནི་དེ་ཇི་ལྟར་འདི་དག་དོན་དམ་པར་ཡོད་པར་འགྱུར། (166a)གཉིས་སུ་སྣང་བ་ཡང་བརྫུན་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་གང་དོན་དམ་པར་སྲིད་པར་འགྱུར་བ་གཞན་ཅི་ཞིག་ལུས། ཤེས་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བ་གཞན་ནི་ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་སྤྱོད་པ་མེད་དེ། ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་[3]ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནི་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་སྒོ་ནས་ངེས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་བུའི་རྟགས་ཉིད་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་རང་བཞིན་གྱི་རྟགས་ལས་བྱུང་བས་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ནི་མི་སྲིད་དེ། དེའི་རང་བཞིན་ཉིད་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འབྲས་བུའི་རྟགས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། གཉིས་སུ་མེད་པ་དང་འགའ་

1 ཁོ་ན་ སྡེ།

2 ཐམས་ཅད་ཀྱི་ སྣ། པེ།

3 མཐོང་བ་ཉིད་དུ་ སྣ། པེ།

ཡང་ལྡན་ཅིག་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཏེ། དེ་ནི་དབང་པོས་མི་སོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལས་མ་གཏོགས་པའི་འབྲས་བུ་གཞན་ཡོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཁྱེད་ཀྱི་ལྟར་ན་གཉིས་སུ་མེད་པ་དེ་ཁོ་ན་འབྲས་བུར་འགྱུར་བ་ཞིག་ན་དེ་ཉིད་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་སྐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ཡང་ཚད་མས་གྲུབ་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

གཉིས་སུ་སྣང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རི་བོང་གི་རྭ་དང་འདྲ་བའི་ཕྱིར་འབྲས་བུ་མ་ཡིན་ནོ།།

གང་གིས་ན་མངོན་སུམ་དང་མི་དམིགས་པ་སྒྲུབ་པ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་དོན་དམ་པར་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཤེས་པས་ཀྱང་འགའ་ཡང་འཛིན་པ་མེད་དོ། །མི་དམིགས་པ་ཡང་དགག་པ་སྒྲུབ་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡོད་པ་སྒྲུབ་པའི་སྐབས་མ་ཡིན་ནོ། །གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་དེ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་ནི་ཡོད་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་འགའ་ཞིག་གང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་འགལ་བ་དེ་ནི་དེའི་ངོ་བོས་དབེན་པ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་གྲང་བའི་ངོ་བོ་ལ་གནོད་པའི་དྲོ་བ་གྲང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དབེན་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ལ། རྟོགས་པའི་ངོ་བོའི་ཆོས་ཅན་ཡང་གཉིས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་གནོད་པ་ཡིན་པས་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་འགལ་བ་དམིགས་པ་ཡིན་ནོ། གཏན་ཚིགས་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སྤྱིར་དགའ་བ་དང་མི་དགའ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཆོས་ཅན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །རང་གི་ངོ་བོ་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། གཟུང་བའི་རྣམ་པ་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་བའི་སྒོ་ནས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་(166b)ཉིད་ཀྱིས་དེ་ལ་ལྟོས་ནས་རབ་ཏུ་བརྟགས་པའི་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐམས་ཅད་དངོས་པོ་མེད་པར་ཡང་ཐལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། བྱེད་པ་པོ་དང་ལས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ལ་ལྟོས་པ་ཙམ་ལས་

ཉེ་བར་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་བརྫུན་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ཀྱི། བདག་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་སྤྱིར་དོན་དམ་པར་གཉིས་ཀྱིས་དབེན་པ་ཙམ་ཞིག་སྒྲུབ་པར་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་དོན་དམ་པར་གཉིས་སུ་བརྫུན་པའི་ཕྱིར་དབེན་པར་འདོད་པ་ཉིད་དོ། །འོན་ཏེ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོའི་དོན་དམ་པའི་[1]སྒོ་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པར་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མེད་པ་ལ་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཡང་དག་པ་དང་བྲལ་བར་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

འོན་ཏེ་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོས་ཅན་ལ་གཉིས་དང་བྲལ་བ་ཉིད་དང་། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཉི་ག་ཡང་སྒྲུབ་པར་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དཔེ་ལ་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་མ་གྲུབ་པས་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་[2]ཉིད་ཡིན་ཏེ། ཕྱིའི་དོན་གྱི་ངོ་བོ་གྲང་བ་དང་། ཚ་བ་དག་ཡང་དག་པར་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་པ་གཅིག་པ་ཡང་ཤེས་པ་དང་སྣང་བའི་ངོ་བོ་དག་སྣང་བའི་ཕྱིར་མི་འགལ་བ་ཉིད་ཡོད་པས་དཔེ་བསྒྲུབ་པས་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱང་ཡིན་ནོ།། ཇི་སྟེ་ཤེས་པ་གཉིས་དང་བྲལ་བ་ཉིད་གྲུབ་ན་ཤུགས་ཀྱིས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་འགྲུབ་པར་འགྱུར་རོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། བློ་གྲོས་འདི་ནི་ངན་པ་ཡིན་ཏེ། འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལ་གང་ལ་གཉིས་དང་བྲལ་བ་དེ་ལ་གདོན་མི་ཟ་བར་ཡང་དག་པའི་[3]

---

1 ངོ་བོ་དོན་དམ་པར་ སྣ། པེ།

2 ལ་ངེས་པ་ སྡེ།

3 ཡང་དག་པ་པའི་ སྣ།

དངོས་པོ་ཡོད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་འབྲེལ་བ་འདི་ཅི་ཞིག་ཡོད་དེ། དེ་བཟློག་ན་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། དེ་ལྟ་བུའི་དཔེ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་། གཉིས་པོ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མ་ངེས་པར་འགྱུར་བའི་ཡང་ཕྱིར་རོ། །ཐུག་པ་མེད་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་གཉིས་ལ་གཉིས་པོ་གཞན་ཡོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གྲང་བ་ལ་སོགས་པའི་རེག་པས་དབེན་པའི་དྲོ་བ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་བཞིན་དུ་གཉིས་ཀྱི་ངོ་བོ་ལས་མ་གཏོགས་པ་གང་ལ་དེ་དང་བྲལ་བ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་(167a)བ་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་སྤྱིའི་ངོ་བོ་ཆོས་ཅན་གཞན་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གཉིས་པོའི་བདག་ཉིད་ཁོ་ན་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་གང་ཞིག་བདག་ཉིད་ཁོ་ན་རབ་ཏུ་གསལ་ཞིང་གསལ་བ་གཞན་ལ་མི་ལྟོས་པ་དེ་ནི་རྟོགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །ལུས་དང་། ས་དང་། རི་དང་། ཆུ་བོ་དང་། རྒྱ་མཚོ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཕྱི་རོལ་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མདུན་ན་སྣང་བའི་དོན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་བདག་ཉིད་ཁོ་ནས་གསལ་བའི་ཕྱིར་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་མི་འདའ་བར་འདུག་གོ།

དེ་ཡང་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་[1]རིགས་ཀྱི་ཁྱིམ་དུ་འདུག་པར་སྤྱོད་པ་ན་རང་གི་ལུས་དང་ཁྱད་པར་མེད་པར་སྤྱོད་པའི་མཛའ་མོ་ལྟ་བུར་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་། ཀུན་ཏུ་འཁྱུད་པ་ལྟར་སྤྱོད་པས་དམ་པ་མ་ཡིན་པའི་གཉིས་པོ་དང་ཐྲད་པས་སུན་ཕྱུང་བའི་བདག་ཉིད་འདི་ཡིད་བརྟན་དུ་ག་ལ་རུང་། དེའི་བདག་ཉིད་ལྟ་བུའི་གཉིས་ཀྱི་ངོ་བོའི་མཛའ་བོ་དང་བྲལ་ན་གང་གིས་ན་འདི་གཞན་དང་མི་ཐྲད་ཅིང་འབའ་ཞིག་ཆོས་

1 ཀྱི པ།

ཅན་དུ་འགྱུར་བའི་གནས་ནི་གང་དུ་ཡང་མི་འཐད་དོ། དེའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།།

མདོ་སྡེ་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཡང་དག་པར་ན་ཤེས་པ་གཉིས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མི་འདོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ཆ་ཤས་མེད་པ་ལ་དེ་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་ཡང་ཅི་ཞིག་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ། ཕྱིའི་དོན་ཀྱང་དེ་དང་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ།།

གལ་ཏེ་ཚད་མ་གཞན་གྱི་སྒོ་ནས་ཕྱིའི་དངོས་པོ་སེལ་བར་བརྗོད་ན་ནི་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་ཡང་དེ་ཅི་སྟེ་ཉེ་བར་མི་བརྗོད། གང་ཡང་བྱེད་པ་པོ་དང་ལས་ཀྱི་དངོས་པོ་ཁོ་ན་ལ་ལྟོས་པ་ལས་རབ་ཏུ་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་བརྫུན་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ཀྱི་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་དང་འགལ་བ་ཁོ་ནའོ།།

འདི་ལྟར་ཁྱེད་ནི་ཡང་དག་པར་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གཉིས་སུ་མེད་པའི་རྣམ་པ་ཁོ་ནར་འདོད་ལ། སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པ་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཕྱི་རོལ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་ཆད་པར་སྣང་བ་ཡང་གྲིས་པ་བྱེད་པ་པོ་དང་ལས་ཀྱི་ཐ་སྙད་བྱེ་བྲག་ཏུ་མི་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་རྟོགས་པའི་སྒྲོན་དང་བྲལ་བའི་སེམས་ལ་ཡང་གསལ་རབ་ཏུ་ཡང་དག་པར་མྱོང་ངོ་། །དེའི་(167b)སྣ་ཚོགས་ཀྱི་དངོས་པོ་ལྟོས་པ་ཙམ་ལས་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ཡིན་ན་ནི་བྱེ་བྲག་དེ་གྲིས་པ་ཡན་ཆད་ལ་གསལ་རབ་ཏུ་སྣང་བར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་ཁྱེད་རྣམ་པའི་ཚོགས་ཡུལ་དང་དུས་ཀྱི་གནས་སྐབས་ངེས་པས་ཐ་དད་པ་དེ་ལྟར་གསལ་རབ་ཏུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་དེ་ཡང་བརྫུན་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན་ནི

དེའི་ཚེ་ཐར་པ་འདོད་པ་ཁྱེད་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་གཉིས་ཀྱི་ངོ་བོས་དབེན་པ་མི་མངོན་པའི་བདག་ཉིད་ལ་ཡང་དབེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་ཆགས་པ་གཞན་ཅི་ཞིག་ཡོད་དེ། གླང་པོ་ལུས་ཆེན་པོ་སྐར་ཁུང་ཤིན་ཏུ་ཆུང་ངུའི་གསེབ་ནས་བྱུང་བའི་མཇུག་མ་[1]ཐོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དང་འདྲ་བར་མཁས་པ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་ཡུན་རིང་པོར་ཡ་མཚན་རྨད་དུ་འཛིན་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་རལ་གྲི་ཤིན་ཏུ་རྣོན་པོས་ཆགས་པ་དེ་ཆོད་ལ་འོར་ཅིག །ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་བདེན་པའི་ངོ་བོ་དེ་ལ་ནི་གང་གིས་ན་དེ་ལ་དེ་ལྟར་གསལ་རབ་ཏུ་སྣང་བར་འགྱུར་བ་བརྫུན་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པ་རྣམས་དེའི་བདག་ཉིད་དང་། དེ་ལས་བྱུང་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་འགའ་ཡང་མེད་དེ། བདེན་པ་དང་མི་བདེན་པ་ཕན་ཚུན་སྤྲངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་དག་ནི་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་འགལ་བའི་ཕྱིར་ལ། མི་བདེན་པ་ཡང་གང་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐྱེ་ན་ཡང་འདི་དག་དུས་གཅིག་ཏུ་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་སྣང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ནི་དུས་དང་ངོ་བོ་ཉིད་ཐ་དད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འབྲེལ་བ་མེད་པར་སྣང་བར་ངེས་པའང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་གདོན་མི་ཟ་བར་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་རང་གི་ངོ་བོའི་རྣམ་པ་མི་བདེན་པའི་བདག་ཉིད་རྣམས་སྣང་བར་ཁས་བླངས་བའི་ཕྱིར་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་[2]འབྲེལ་བར་ཁས་བླང་དགོས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་གཉི་གའང་བརྫུན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ནི་ཇི་ལྟར་བརྫུན་པའི་རྣམ་པ་

1 འཇུག་མ་ལ་ སྣ། པེ།

2 བདག་ཉིད་ཀྱིས་འབྲེལ་བར་ སྣ། པེ།

རྣམས་དང་ལྡན་ཅིག་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར། དེ་བས་ན་བདེན་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཞགས་པ་འདི་འོར་ཅིག །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཆོས་གང་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པ་དེ་ལ་ནི་བདེན་པ་ཡང་མེད་བརྫུན་པ་ཡང་མེད་ཅེས་(168a)གསུངས་སོ།།

(4)གང་ཡང་རིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་མངོན་སུམ་གྱིས་ནི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་དབེན་པ་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ཡང་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། ཅི་སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་[1]བདག་མེད་པར་རྟོགས་པར་མི་ནུས་པ་ཉིད་ཡིན་ནམ། འོན་ཏེ་ཁྱེད་ལྟ་བུའི་མི་ཤེས་པའི་རབ་རིབ་ཀྱི་ལིང་ཏོག་རབ་ཏུ་སྟུག་པོས་ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་ཉམས་པར་བྱས་པ་[2]རྣམས་ཀྱི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་ཡིན། དེ་ལ་རེ་ཞིག་ཕྱོགས་དང་པོ་ནི་ཚད་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མངོན་སུམ་རབ་ཏུ་མི་འཇུག་གོ་ཞེས་ངེས་པར་བྱ་བ་ལ་ཚད་མ་ཅི་ཡང་མེད་དོ།།

རང་གི་དམིགས་པ་ལོག་པ་ཙམ་ནི་འཁྲུལ་བའི་ཕྱིར་ཏེ། དམིགས་པའི་རིག་བྱར་གྱུར་པ་མི་དམིགས་པ་ཁོ་ན་དེ་མེད་པར་སྒྲུབ་[3]པར་བྱེད་པ་ཡིན་ན་གང་གི་ཕྱིར་བདག་གིས་མི་དམིགས་པས་དེ་དེ་ལ་མི་འཇུག་པར་རྟོགས་པར་གྱུར་པ་སྐྱེས་བུ་ཐམས་

1 དེ་ཐམས་ཅད་ སྣ།
2 ཉམས་པར་བྱམས་པར་བྱས་པ་ པེ།
3 བསྒྲུབ་ སྡེ།

ཅན་གྱི་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་ཡོད་པའི་སེམས་ཀྱི་འཇུག་པ་ནི་ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་བྲེད་ཀྱི་དམིགས་པའི་རིག་བྱ་མ་ཡིན་ནོ། །གཞན་གྱི་དམིགས་པ་ལོག་པ་ཡང་མ་ངེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པས་མངོན་སུམ་གྱིས་དེ་རྟོགས་པ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བརྗོད་པ་འདི་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

འོན་ཏེ་ཕྱོགས་གཉིས་པ་ལྟར་ན་དེའི་ཚེ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀུང་ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཟབ་མོ་དེ་ལྟ་བུ་མངོན་སུམ་དུ་མཐོང་བར་ནི་ཁས་མི་ལེན་ཏོ། །འོན་ཀྱང་གལ་ཏེ་བྲེད་ལྟ་བུ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དེ་ལྟ་བུ་རྟོགས་པ་མེད་དུ་ཆུག་ཀྱང་རྣལ་འབྱོར་པ་དམ་པ་བསྐལ་པ་མི་ཉུང་བར་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བསགས་པས་མཐའ་དག་འབྱོར་པར་བྱེད་པའི་ཐབས་ཐོབ་པ། ཡང་དག་པའི་དོན་བསྒོམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྣང་བས་སྒྲིབ་པའི་མུན་པ་མཐའ་དག་བསལ་[1]བ་རྣམས་ཀྱི་མངོན་སུམ་གྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པར་རྟོགས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་གོ་ཅི་སྟེ་མི་སྲིད་དེ། འདི་ལ་ཡང་རིགས་པ་ཕྱིས་བརྗོད་པར་བྱའོ།།

གང་ཡང་མངོན་སུམ་གྱི་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མ་(168b)གྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རབ་རིབ་ཅན་གྱི་མངོན་སུམ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་བརྟེན་པའི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་པའི་ཡུལ་ཅན་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བར་ཐལ་

---

1 བསྐྱལ་བ་ སྣ།

བར་འགྱུར་རོ། །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དངོས་པོའི་ཡུལ་ཅན་དུ་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་སྟེ། དེ་དག་གིས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་པ་[1]འགའ་ཡང་མ་གཟིགས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། འཕགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྡེ་སྣོད་ལས།[2] ཇི་སྐད་དུ། "དེས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ་དང་། འགག་པ་མེད་པ་དང་། རང་བཞིན་གྱིས་[3]ཉེ་བར་ཞི་བ་དང་། ཤིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་པ་དང་། མ་བྱུང་བ་དང་། ཀུན་དུ་མ་བྱུང་བ་དང་། ཤིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་ཡང་མཐོང་ལ། དེས་གང་གིས་མཐོང་བ་དེ་ཡང་མི་མཐོང་རྣམ་པར་མི་མཐོང་སྟེ། འདི་ནི་ཡང་དག་པའི་[4]མཐོང་བ་དང་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གྱི་མཐོང་བ་ཡིན་ནོ།།

ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་མཐོང་བ་གང་ཞེ་ན། གང་འདི་མཐོང་བ་མེད་པ་ཡིན་ནོ"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས་ཀྱང་།[5] "ཆོས་ཐམས་ཅད་མཐོང་བ་མེད་པ་ནི་མཐོང་བ་དམ་པ་ཡིན་ནོ"ཞེས་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་མངོན་སུམ་གྱི་ཡུལ་ནི་ཡང་དག་པ་པའི་དངོས་པོ་ཡིན་པར་གྲུབ་བོ།།

1 ཡང་དག་པ་འགའ་ སྣ།
2 དཀོན་བརྩེགས། ཁ། མ་རྙེད།
3 གྱི་ སྣ།
4 ཡང་དག་པ་ པེ།
5 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༨༤ བ ༦ མདོ་ལས་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་མཐོང་བ་ནི་ཡང་དག་པ་མཐོང་བའོ།།

གང་ཡང་དངོས་པོ་མེད་པ་ནི་ཇི་ལྟར་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་དངོས་པོ་མེད་པ་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུ་ནི་གང་ཡང་མངོན་སུམ་གྱི་ཤེས་པ་སྐྱེད་[1]པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་མི་ལེན་ཏོ། །འོན་ཀྱང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཆེན་པོ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྒྱིག་རྒྱུ་དང་སྒྲ་བརྙན་ལྟ་བུར་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་སྒོམ་པར་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་བསྒོམས་པའི་རབ་ཀྱི་མཐའ་ལས་བྱུང་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་མཐུ་ཕུལ་དུ་བྱུང་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་ལྡན་པས་རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་དག་ལ་གང་གིས་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་མངོན་སུམ་ཁོ་ནར་ཆོས་མ་ལུས་པ་བདག་མེད་པ་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་ཆོས་མ་ལུས་པ་(169a)བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་རབ་ཏུ་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ལྟ་བུ་ཉེ་བར་སྐྱེ་ཏེ། དེ་ཉིད་མཐོང་བ་མེད་ཅེས་བྱའི། མེད་པར་དགག་པའི་[2]ངོ་བོ་ནི་མ་ཡིན་នོ། །གང་ཡང་མངོན་སུམ་དེ་ཡང་གལ་ཏེ་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཡིན་ན་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པར་རོ་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱི་མངོན་སུམ་ཡང་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་མི་འཁྲུགས་པ་ཁོ་ནའོ།།

དབུ་མ་པ་རྣམས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཀྱང་།

---

1 བསྐྱེད་ སྣ།

2 དགག་བྱའི་ སྣ།

གང་གིས་ན་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་ཆད་པར་[1]འགྱུར་བ། ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དང་། སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་གཞན་གྱི་[2]ཤེས་པ་དང་། འཕགས་པའི་གང་ཟག་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པའི་རྒྱུ་མི་འདོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་གང་ལ་[3]དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་རྒྱུ་མེད་པ་དེ་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་མི་སྐྱེ་བ་ཉིད་དེ། དཔེར་ན་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ། །གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པར་[4]ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཀྱང་སྐྱེ་སྟེ་དཔེར་ན་སྒྱུ་མ་དང་གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ། །སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་འདི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཡིན་ཡང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། གྲགས་པ་དང་ཚད་མས་གནོད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་དང་འདྲ་བར་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཡིན་ཡང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ཚད་མས་གནོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་ཇི་ལྟར་གསང་སྔགས་དང་། སྨན་ལ་སོགས་པའི་དབང་གིས་གླང་པོ་ལ་སོགས་པ་སྒྱུ་མ་སྣ་ཚོགས་རབ་ཏུ་འབྱུང་བ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པའི་དབང་གིས་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་རབ་ཏུ་འབྱུང་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་རང་གི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་དབང་གིས་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྱུ་མ་ཡང་རབ་ཏུ་འབྱུང་བ་ཁོ་ན་སྟེ། རྐྱེན་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་དབང་གིས་སྒྱུ་མ་དེ་ཡང་སྣ་

1 ཐམས་ཅད་པར་འགྱུར་ སྣ། པེ།

2 གྱིས་ སྣ། པེ།

3 གང་ལས་ སྣ། པེ།

4 དོན་དམ་པ་ སྡེ།

ཚོགས་ཉིད་དུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "ཁ་ཅིག་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱིས་སྤྲུལ་པ། ཁ་ཅིག་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་སྤྲུལ་པ། ཁ་ཅིག་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་སྤྲུལ་པ། ཁ་ཅིག་ནི་ཉོན་(169b)མོངས་པས་སྤྲུལ་པ། ཁ་ཅིག་ནི་ལས་ཀྱིས་སྤྲུལ་པ་སྟེ། རབ་འབྱོར་རྣམ་གྲངས་འདིས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྤྲུལ་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །

སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་དག་ལས་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཁྱད་པར་ནི་འདི་ཡོད་དེ། དེ་དག་ནི་སྒྱུ་མའི་མཁན་པོ་བཞིན་དུ་སྒྱུ་མ་དེ་དག་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་དོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས་ཀྱང་།[2]

དཔེར་ན་སྒྱུ་མའི་མཁན་པོ་འགའ། །
སྤྲུལ་པ་ཐར་པར་བྱ་ཕྱིར་བརྩོན། །
གང་ཕྱིར་དུས་དེ་མངོན་ཤེས་པས།[3] །
འདི་ནི་སྤྲུལ་པ་[4]ཆགས་པ་མེད། །
རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་པ་རྣམས། །

---

1 ལུང་འདི་སྒོམ་རིམ་དང་པོའི་ནང་དྲངས་འདུག ཤོག ༡༥༣ ཕྱི་ཊ་པར་མ། ཐལ་ཆེན་ཁ་པའི་ཤོག་གྲངས་ ༣༧༥ བ ༦ ནང་འདི་དང་འདྲ་བ་ཞིག་འདུག་པ་ལས་ཇི་མ་ཇི་བཞིན་ནི་མི་སྣང་ངོ་།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༢༣ བ ༢

3 གང་ཕྱིར་འདིས་དེ་མངོན་ཤེས་པས། སྣ། པེ།

4 སྤྲུལ་ལ་ སྣ། པེ།

འགྲོ་བ་དེ་ལྟར་[1]སྡུ་ནས་ཤེས། །
སྲིད་གསུམ་སྒྱུལ་པ་ལྟར་ཤེས་ནས། །
འགྲོ་བའི་དོན་དུ་གོ་ཆ་གྱོན། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །བྱིས་པ་གང་དག་ལྟད་མོ་པའི་སྐྱེ་བོ་ལ་སོགས་པའི་སྒྱུ་མ་དེ་དག་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་བཞིན་བདེན་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དེ་དག་ནི། ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཕྱིར་བྱིས་པ་དག་ཅེས་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་ཅན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ་གནས་པའི་ཕྱིར་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཞིན་དུ་གཏན་མེད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་མངོན་སུམ་གྱིས་ཆོས་མ་ལུས་པ་བདག་མེད་པར་རྟོགས་པ་ཡོད་པ་ཉིད་པས་འགལ་བ་མེད་དོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཀྱང་། སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཐ་སྙད་ཀྱི་བློ་ཉིད་ནས་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ། འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་ལས།[2] "ཇི་སྐད་དུ་དོན་དམ་པར་ཤིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་པ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ལམ་སྒོམ་པར་བྱེད་དོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

གང་ཡང་དོན་གཞན་གྱིས་དབེན་པའི་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པ་འགའ་ཞིག་མངོན་སུམ་གྱིས་བཟུང་ནས་དེ་ལས་གཞན་པ་[3]སྟོང་པ་མངོན་སུམ་གྱིས་རྟོགས་པར་བྱ་བར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སླུས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཚུལ་འདི་ནི་གཅིག་གིས་

---

1 དེ་དག་ སྡེ།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༥༧ ན ༣ དེ་དོན་དམ་པར་ན་ཤིན་ཏུ་དངོས་པོ་མེད་ཀྱང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ན་སྒོམ་པའི་ཚུལ་གྱིས་ལམ་ཡང་སྒོམ་མོ།

3 གཞན་པས་ སྣ། པེ།

གཅིག་སྟོང་པ་ཉིད་ཡིན་གྱི། མཚན་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །མཚན་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་འདོད་དེ། དོན་དམ་པར་དེ་དག་གི་རང་དང་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པ་སྟོང་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་གཅིག་གིས་ (170a)གཅིག་སྟོང་པ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པ་མ་ཡིན་གྱི། འོན་ཀྱང་ཐ་སྙད་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་པར་རོ་གཅིག་པའི་ཕྱིར་ཐ་དད་པ་མེད་པ་མ་ཡིན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བྱིས་པ་རྣམས་ལ་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་བཞིན་དུ་ཕན་ཚུན་ཐ་དད་པར་སྣང་ངོ་། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ལ་གྲགས་པའི་ངོ་བོར་[1]དེ་དག་ལ་དོན་གཞན་གྱིས་དབེན་པའི་དངོས་པོ་འཛིན་པའི་བློ་ནས་གཅིག་གིས་གཅིག་སྟོང་པ་ཉིད་འདི་རྣམ་པར་གཞག་གི །དོན་དམ་པར་མ་ཡིན་ཏེ། ཡང་དག་པར་ན་རྨི་ལམ་དང་། སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་དངོས་པོ་རྣམས་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་ཕན་ཚུན་ཐ་དད་པ་མེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འདི་ནི་དོན་དམ་པ་ལ་བརྟེན་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་ཆད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྤང་བར་བྱ་བ་ཁོ་ནར་གསུངས་ཏེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[2] ཇི་སྐད་དུ་"བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གཅིག་གིས་གཅིག་སྟོང་པ་ཉིད་འདི་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་ཆད་ཡིན་པས་དེ་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་སྤང་བར་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་[3]གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་དག་གི་རང་

---

1 གྲགས་པའི་དེ་དག་ སྣ། གྲགས་པའི་ངོར་ པེ།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༡༥ ན ༥

3 སྟོང་པ་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་ སྣ། པེ།

དང་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པ་དམིགས་པའི་རིག་བྱར་གྱུར་པ་ལས་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་དོན་དམ་པའི་རྣམ་པར་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྣང་བ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སྐྱེ་བའི་སྒོ་ནས་རྟོགས་པར་རྣམ་པར་གཞག་གོ །དེའི་ཕྱིར་གཅིག་གིས་གཅིག་སྟོང་པ་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་ཚད་བྱེས་པའི་སྐྱེ་བོས་ཀུན་བརྟགས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་གླེངས་མོད་ཀྱི། དེ་ནི་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ།།

(5)གང་ཡང་དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་ཡང་དག་པར་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་ཀྱང་མཁས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་མགུ་བར་[1]བྱེད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་རིགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ་[2]ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལ་རིགས་པ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

འདི་ལྟར་མཁས་པ་རྣམས་ནི་མངོན་སུམ་ནི་རྟོག་པ་དང་བྲལ་ཞིང་མ་འཁྲུལ་པ་ཡིན་នོ་ཞེས་མངོན་སུམ་གྱི་མཚན་ཉིད་འཆད་དོ། །གོམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཀྱང་དོན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་ཡང་ཤེས་པ་གསལ་རབ་ཏུ་སྐྱེ་སྟེ།[3] དཔེར་ན་འདོད་པ་དང་། མྱ་ངན་དང་། སྐྲག་པ་དང་། སྐྱོ་བ་[4]ལ་སོགས་པས་ཉམས་པ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་གོམས་པ་ལན་(170b)མང་དུ་བྱས་པའི་སྒོ་ནས་བུད་མེད་ལ་སོགས་པར་གསལ་རབ་ཏུ་སྣང་བའི་ཤེས་པ་སྐྱེ་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་དེ་དག་གིས་དེ་དག་མདུན་ན་འདུག་པ་བཞིན་དུ་མཐོང་ནས་

1 མ་གྲུབ་པར་ སྡེ།

2 དེ་ལ་རིགས་པ་མེད་དོ་ སྣ། པེ།

3 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། མངོན་སུམ་ལེའུ། ཤློཀ། ༣༤༣ པ་དང་འདྲའོ།།

4 སྐྱོ སྣ། པེ།

མོད་ལ་ལུས་ལ་སོགས་པའི་གཡོ་བ་རྣམ་པ་དུ་མ་རྟོམ་པ་ལྟ་བུའོ།།

དེའི་ཕྱིར་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒོམ་པར་[1]བྱེད་པ་ཁ་ཅིག་ཀྱང་དེ་ལ་ཤེས་པ་གསལ་རབ་ཏུ་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བ་སྨྲིད་དོ། །གསལ་རབ་ཏུ་སྣང་བའི་ཤེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྟོག་པ་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ།[2] །མར་མེ་བཞིན་དུ་རྟོག་པའི་རླུང་གིས་དཀྲུགས་པའི་ལུས་ལ་རྣམ་པ་གསལ་རབ་པ་ཉིད་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

སྒྲོར་བ་དག་ནི་[3]ཁ་ཅིག་གིས་གང་དང་གང་རྟག་ཏུ་ཤིན་ཏུ་གུས་པར་བསྒོམ་པ་དེ་ནི་དེ་དག་ལས་བསྒོམས་པའི་འབྲས་བུ་རབ་ཀྱི་མཐའ་ལས་སྐྱེས་པའི་འབྲས་བུ་ཤེས་པ་གསལ་རབ་ཏུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར་ཏེ།[4] དཔེར་ན་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པས་ཉམས་པ་དག་གིས་བུད་མེད་ལ་སོགས་པ་བསྒོམ་པ་ལྟ་བུའོ། ཁ་ཅིག་གིས་ཀྱང་ཡུན་རིང་པོ་ནས་རྟག་ཏུ་གུས་པར་བྱས་ཏེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པར་བསྒོམས་པས་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཡིན་ནོ།།

དེ་ལ་ཡང་ཚད་མ་དང་ལྡན་པའི་དོན་གྱི་ཡུལ་ཅན་[5]གང་ཡིན་པ་དེ་མི་སླུ་བ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་དུ་བ་ལ་སོགས་པ་རྟགས་ངེས་པ་ལས་བྱུང་བ་མེ་ལ་སོགས་པའི་ཤེས་པ་ལྟ་བུའོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་བདག་མེད་པའི་ཤེས་པ་དེ་ཡང་ཚད་མ་དང་ལྡན་པའི་དོན་གྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་པས་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།།

---

1 བསྒོམས་པར་ སྣ། པེ།

2 ཁོ་ན་སྣེ། སྡེ།

3 སྒྲོར་བ་ནི་ཁ་ཅིག་ སྣ། པེ།

4 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། མངོན་སུམ་ལེའུ། ཚིག་བཅད། ༣༨༥ དང་འདྲའོ།།

5 དོན་ཡུལ་ཅན་ སྣ། པེ།

འདི་ཚད་མ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་ནི་འོག་ནས་བསྟན་པར་བྱའོ། །ཤེས་པ་གང་ཞིག་གང་ལ་གསལ་རབ་ཏུ་སྣང་ཞིང་མི་སླུ་བར་སྐྱེ་བ་དེ་ནི་དེ་ལ་མངོན་སུམ་གྱི་ཚད་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་ཐ་སྙད་དུ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ལ། མིག་ལ་སོགས་པ་མ་ཉམས་པའི་སྐྱེས་བུའི་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ། རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་[1]ཤེས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པའི་ཡུལ་ཅན་ཡང་གསལ་རབ་ཅིང་མི་སླུ་བ་ཡིན་པས་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་[2]ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པའི་ཤེས་པ་ནི་རིགས་པས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་ན་ཅི་སྟེ་མཁས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་མགུ་བར་བྱེད་པ་མ་ཡིན། གང་ཡང་གལ་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དེ་ཡང་མེད་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་(171a)སོགས་པ་དེ་སྣྲས་[3]པ་དེ་ལ་ཡང་གོང་དུ་ལན་བཏབ་ཟིན་པ་ཉིད་དེ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རི་བོང་གི་རྭ་དང་འདྲ་བར་ཤིན་ཏུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ནི་མི་འདོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་དོན་དམ་པར་མེད་པ་ཉིད་དོ། །དེས་ན་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་མ་བཀག་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ་ཁོ་བོ་ཅག་ཐ་སྙད་ཀྱང་ཁས་མི་ལེན་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བརྗོད་དོ་ཞེས་བཤད་པ་ལྟ་བུའོ།།

(6)གང་ཡང་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གཞི་ཆོས་ཅན་འགའ་ཡང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། དཔེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་ཐམས་ཅད་གཞི་དང་རང་གི་ངོ་བོ་མ་

---

1 ཀྱིས་ སྡེ།

2 ཀྱི་ སྣ། པེ།

3 སོགས་པ་སྣྲས་ སྣ། པེ།

གྲུབ་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་གལ་ཏེ་ཁོ་བོ་ཅག་གིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པ་ལ་ཁྱེད་ཐལ་བར་འགྱུར་བར་སྒྲུབ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འདི་ཐལ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་ཁོ་བོ་ཅག་གིས་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་སོ། །དེ་ལ་ཡང་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པར་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་དང་ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རྗེས་སུ་དཔག་པ་དང་། །རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་མི་འཇུག་གོ་ཞེས་ཐལ་བར་སྒྲུབ་ན་ནི་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདི་ཐལ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་རྗེས་སུ་དཔག་པ་དང་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་འདི་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་འཇུག་པ་མི་འདོད་ན་གང་གིས་ན་དེ་མེད་པར་ཐལ་བ་ཞེས་བྱ་སྟེ། ཐལ་བའི་མཚན་ཉིད་ནི་མི་འདོད་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

འདི་ལྟར་ཁོ་བོ་ཅག་ནི་ཁྱེད་ཀྱིས་སྨྲན་འདྲེན་པའི་བར་དུ་ཡང་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པ་ཁོ་ནར་ཁས་ལེན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་ཉེས་པའི་གོ་སྐབས་འགའ་ཡང་མི་སྐྱེད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སློབ་དཔོན་གྱི་ཞལ་སྔ་ནས།[1] "གལ་ཏེ་ཅུང་ཟད་ཅིག་དམིགས་ན་ནི་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པའི་དོན་གྱིས་འཇུག་པའམ། ལྡོག་པར་བྱ་ན་དེ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཁོ་

1 རྩོད་ཟློག་འགྲེལ་པ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༡༣༩ ན ༡ དེ་ལྟར་གྱུར་དང་། དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་གལ་ཏེ་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་ཚད་མ་གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག་གིས་དངོས་པོ་རྣམས་དམིགས་ནས་ཟློག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ན། ཚད་མ་དེ་དག་ཀྱང་མེད། དེ་དག་གིས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་བའི་དོན་ཡང་མེད་པས་ཞེས་ཀླན་ཀ་སྨྲ་བ་གང་ཡིན་པའི་ཀླན་ཀ་དེ་ང་ལ་མི་འབྱུང་ངོ་། རྩ་བ། གལ་ཏེ་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པའི། །དོན་གྱིས་འགའ་ཞིག་དམིགས་པ་ན། །བསྒྲུབ་པའམ་ཟློག་པར་བྱ་ན་མེད། །མེད་ཕྱིར་ང་ལ་ཀླན་ཀ་མེད།

བོ་ལ་ཀླན་ཀ་མེད་དོ་''ཞེས་གསུངས་སོ། །འོན་ཏེ་གང་ཞིག་དོན་དམ་པར་མེད་པ་དེ་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་ཐལ་བར་སྒྲུབ་ན་ནི་འདིར་ཡང་ཁྱབ་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཐལ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ཐ་སྙད་ནི་གང་གིས་ན་འདི་བདག་ཉིད་ལོག་ན་ཐ་སྙད་ཀྱང་ལོག་པར་འགྱུར་བ་དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཁྱབ་པ་ནི་མེད་དོ། །འོན་ཀྱང་འདི་ནི་དེ་ལས་བཟློག་པ་ཁོ་ནས་ཁྱབ་སྟེ། ཐ་སྙད་ནི་དོན་དམ་པར་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དག་ནི་དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་ཡང་ཐ་སྙད་སྣ་ཚོགས་འཇུག་པ་ཡང་སྣང་[1]སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཐ་སྙད་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྤྲུལ་པ་དང་། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དང་འདྲ་བས་འགལ་བ་མེད་དོ། །དེ་སྐད་དུ།[2]

སྤྲུལ་པ་ཡི་[3]ནི་སྤྲུལ་པ་དང་། །
སྒྱུ་མའི་སྐྱེས་བུས་སྒྱུ་མ་སྤྲུལ། །
དགག་པར་བྱེད་པ་ཅི་འདྲ་བར། །
དགག་པ་དེ་ཡང་ཅི་འདྲར་འགྱུར། །

ཞེས་བཤད་དོ། །འོན་ཏེ་ཐམས་ཅད་དུ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པ་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོར་གྱུར་པ་ཁོ་ནས་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་འདོགས་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པས་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་

---

1 འཇུག་པ་སྣང་ སྣ། པེ།

2 རྩོད་ཟློག སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༣༧ བ ༥ སྤྲུལ་པ་ཡིས་ནི་སྤྲུལ་པ་དང་།།
སྒྱུ་མ་ཡི་ནི་སྐྱེ་བུ་ཡིས། །སྒྱུ་མ་ཕྱུང་ལ་འགོག་བྱེད་ལྟར། །འགོག་པ་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་འགྱུར།།

3 ཡིས་ སྣ།

སྣང་གདགས་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་ཉེས་པ་བརྗོད་ན་ནི། འདི་ཡང་ཉེས་པ་མེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། རྩོད་པ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པ་པའི་ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པས་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་སོགས་པར་ཐ་སྙད་གདགས་པ་ནི་གང་དུ་ཡང་མ་གྲུབ་བོ།། འོན་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་ན་ཇི་ལྟར་གྲགས་པའི་ཆོས་ཅན་ཁོ་ན་ལ་གནས་སྟེ། རབ་ཏུ་སྒྲུབ་རྣམས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གཏན་ལ་དབབ་པའི་ཕྱིར་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་འཇུག་པར་བྱེད་དེ། འདི་སྐད་དུ།།[1]

ཆོས་དང་ཆོས་ཅན་རྣམ་གཞག་དང་། །
ཐ་དད་ཐ་དད་མིན་ཅི་འདྲ། །
དེ་ཉིད་དོན་བརྟགས་མ་ཡིན་གྱི། །
འཇིག་རྟེན་ན་ནི་ཇི་ལྟར་གྲགས། །
དེ་ལ་དེ་བཞིན་བརྟེན་ནས་ནི། །
བསྒྲུབ་བྱ་སྒྲུབ་བྱེད་རབ་གནས་པ།[2] །
དམ་པའི་དོན་ལ་འཇུག་བྱའི་ཕྱིར། །
མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སྒྲུབ་པ་དང་།[3] །
བསྒྲུབ་བྱ་ཡང་དག་གནས་པ་བརྟགས། །

ཞེས་[4]བཤད་དོ། །ཡང་།

1 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། སྡེ་བསྡུས། ཚད་མ། ཅེ། ༩༨ ན ༧

2 སྒྲུབ་དང་བསྒྲུབ་པ་རབ་གནས་པར།། སྣ། པེ།

3 མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བརྟགས་པ་ཡང་། །དམ་པའི་དོན་ལ་འཇུག་ཕྱིར་རོ།། སྣ། པེ།

དཔག་བྱ་དཔག་པའི་འབྲས་གནས་པ། །
ཡོད་པ་མིན་ཡང་གཟུང་བ་དང་། །
འཛིན་པ་རིག་པ་ཇི་ལྟ་བུར། །
རྗེས་སུ་སྣང་བཞིན་རབ་བཤད་དོ། །
དེ་ལྟ་མིན་ན་སྣ་ཚོགས་ཀྱི། །
ངོ་བོ་སྣང་བའི་དངོས་གཅིག་ལ། །
རྣམ་པ་ཇི་ལྟར་བདེན་འགྱུར་ཏེ། །
གཅིག་པ་ཉིད་དེ་ཉམས་པར་འགྱུར། །[1]

ཞེས་བཤད་དོ། །ཡང་འདི་ནི་ཐ་སྙད་ལས་བྱུང་བའི་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཀྱང་བཤད་དོ། །ཚད་(172a)མའི་མཚན་ཉིད་འདི་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཆེད་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཐམས་ཅད་དོན་མེད་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་མ་བསླབས་པ་གནག་རྫིའི་རྒྱུད་མ་ལ་སོགས་པ་ཡན་ཆད་ལྟུང་མེད་པར་ཡང་དུ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་མཐོང་བའི་སྒོ་ནས་མེ་ལ་སོགས་པ་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་ཁོ་ནའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་

4 ཞེས་བྱ་བ་བཤད་ སྣ། པེ།

1 སྡེ་བསྟན། ཚད་མ། ཅེ། ༡༧༩ ན ༧ ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། ལེའུ་ ༣ ཤློག ༣༥༧ དང་ ༣༥༨ གཟུང་དང་འཛིན་པ་རིགས་པ་དག །མེད་ཀྱང་ཇི་ལྟར་སྣང་འདི་ལ། །དཔག་པར་བྱ་དང་དཔོག་པ་དང་། །འབྲས་བུ་གནས་པར་བྱས་པ་ཡིན། །དེ་ལྟ་མིན་ན་དངོས་གཅིག་ལ། །སྣ་ཚོགས་རྣམ་པ་སྣང་བ་ཡིས། །ངོ་བོ་ཇི་ལྟར་ལྡན་པ་ཡིན། །གཅིག་པ་ཉིད་དེ་ཉམས་པར་འགྱུར།།

འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཏེ། དེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ཐ་སྙད་ཀྱི་བློ་ནས་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་བྱེད་པས་ཉེས་པ་མེད་པ་ཉིད་དོ།།

གཞན་ཡང་ཐ་སྙད་ཀྱི་བློ་ནས་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་སོགས་པ་འཇུག་པ་ལ་ཡང་གང་ལ་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པ་དངོས་པོའི་ཆོས་ཡོད་པའི་ངོ་བོ་སྒྲུབ་པར་འདོད་པ་དེ་ལ་ནི་གདོན་མི་ཟ་བར་ཐ་སྙད་ཀྱི་བློ་ནས་དངོས་པོར་གྱུར་པའི་ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པ་དགོས་ཏེ། དེ་ལ་དེ་ལྟ་བུའི་གཞི་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབའ་ཞིག་གནས་པར་གྲུབ་པ་ནི་མེད་དོ། །དེ་ཉིད་ལ་དེ་ལྟ་བུའི་གཞི་མེད་ན་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་བཀག་པའི་ཕྱིར་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཉེས་པ་རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཡང་ཆོས་ཅན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་གྱུར་བ་ཁོ་ན་ལོག་ན་གདོན་མི་ཟ་བར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་རང་མེད་ན་མི་འབྱུང་བ་བཀག་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་མ་གྲུབ་ན་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་གྱི། རང་དགར་ཉེ་བར་བརྟགས་པའི་ཆོས་ཅན་འགའ་ཞིག་ལོག་ཀྱང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བཀག་པ་འགའ་ཡང་མེད་པ་དེ་ལ་ནི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་བརྗོད་པ་མི་རིགས་ཏེ། དེ་ལ་འདོད་པའི་དོན་འགྲུབ་པ་ལ་གགས་བྱེད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གང་ལ་དངོས་པོའི་ཆོས་ཡོད་པའི་ངོ་བོར་སྒྲུབ་པར་མི་འདོད་ཀྱི་འོན་ཀྱང་སྒྲོ་བཏགས་པའི་ཆོས་རྣམ་པར་བཅད་པ་སྒྲུབ་པ་ཙམ་ཞིག་བརྗོད་པར་འདོད་པ་དེ་ལ་ནི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་བརྗོད་པ་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་དངོས་པོར་གྱུར་པའི་ཆོས་ཅན་མི་དགོས་ཏེ། དེ་ནི་དེའི་ཆོས་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་ལ་ལྟོས་ནས་ཀྱང་དེའི་ཆོས་ཅན་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་མ་གྲུབ་

ཏུ་ཟིན་ཀྱང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་མེད་ན་དེ་མི་[1]འབྱུང་བའི་གཏན་ཚིགས་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་གྲུབ་(172b)པ་ལ་གགས་བྱེད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཤོལ་བའི་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་འགྲུབ་པ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པ་དོན་དུ་གཉེར་བའི་ཕྱིར་ཤོལ་བ་ནི་ཆོས་ཅན་འགྲུབ་པའམ། མ་གྲུབ་པ་ཚོལ་བར་བྱེད་ཀྱི། ཆགས་པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། གང་ལ་ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པ་གླེངས་ཀྱང་ཤོལ་བའི་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་ལ་གནོད་པ་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པ་དེ་ལ་ནི་[2]དེ་གླེངས་པས་ཅི་ཞིག་བྱ་སྟེ། གླེང་བ་པོ་ཉེས་པ་མ་ཡིན་པ་བརྗོད་པའི་ཉིད་ཀྱིས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་ཉེས་པའི་རྟུལ་གྱིས་གང་བའི་ནང་དུ་རྒྱུག་པ་འབབ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དེ། ཅིག་ཤོས་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཆོས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་ཆོས་ཅན་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཕྱོགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྐབས་སུ་རིགས་པ་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་རང་གི་ཆོས་ཞེས་ཁྱད་པར་བརྗོད་དོ།།

འདི་ལྟར་གང་ཞིག་རང་གི་འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་ཅིག་ཅར་མངོན་པར་འགྲུབ་[3] པར་མི་བྱེད་པ་དེ་ནི་མཐུ་ཐོགས་པ་མེད་པ་དང་། རྟག་པ་དང་གཅིག་པུའི་ངོ་བོ་ཉིད་དམ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ། །ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་པ་ཕ་རོལ་པོ་མངོན་པར་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱང་སྨྲ་ལ་སོགས་པའི་འབྲས་བུ་ཅིག་ཅར་དུ་འགྲུབ་པར་མི་བྱེད་པས་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་མི་དམིགས་པར་བཤད་པ་ལ། ཁ་ཅིག་ན་རེ་གཏན་ཚིགས་འདི་ནི་འགལ་བ་ཡང་ཡིན་ཏེ། འདི་ཇི་ལྟར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་

1 མེད་ན་མི་འབྱུང་ སྣ། པེ།
2 ཡིན་པའི་དེ་ལ་ སྣེ།
3 ཅིག་ཅར་འགྲུབ་ སྣ། པེ།

པར་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཅན་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོར་[1] གྱུར་པ་མེད་པ་ཡང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པས་གཏན་ཚིགས་འདི་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཡང་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ། །དེ་ལ་ཡང་འདིར་[2]ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཅན་དངོས་པོར་གྱུར་པ་བསལ་དུ་ཟིན་ཀྱང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་རྣམ་པར་བཅད་པ་ཙམ་དུ་འདོད་པ་ལ་ནི་གནོད་པ་ཅི་ཡང་མེད་ལ། གཏན་ཚིགས་རྣམ་པར་བཅད་པ་ཙམ་གྱི་ངོ་བོ་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། ཆོས་ཅན་དངོས་པོར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་ཡང་དེ་གཉིས་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ལོག་པར་རྟོག་པ་བསལ་བའི་ཕྱིར་རང་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་ཆོས་ཅན་ཁོ་ན་ལ་གནོད་པ་བྱུས་ན་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་བཀག་པ་ཡིན་གྱི། ཆོས་གཞན་དང་ལྡན་པའི་ཆོས་ཅན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྟོན་པར་མཛད་པ་ན་བདག་ཉིད་འདོད་པ་དང་།[3] མངོན་སུམ་དང་། རྗེས་སུ་དཔག་པ་དང་། ཡིད་ཆེས་པ་དང་། གྲགས་པས་མ་བསལ་[4]བ་རང་གི་(173a)ངོ་བོ་ཁོ་ན་བསྟན་པར་བྱ་བ་ནི་རང་གི་ཆོས་ཅན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདིར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་སྐབས་སུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་རང་གི་ཆོས་ཅན་སློས་པ་མཛད་དོ་ཞེས་འགྲེལ་བ་མཛད་པས་བཤད་དོ།[5]

---

1 རང་བཞིན་གྱི་ངོ་བོར་ སྡེ།

2 འདིར་ཁ་ཅིག སྣ།

3 འདིར་དཔེ་གཞན་ལས། དེར་བདག་ཉིད་འདོད་ལ་མངོན་སུམ་དང་། །རྗེས་དཔག་ལུང་དང་གྲགས་པ་ཡིས། །རང་ཆོས་ཅན་ལ་མ་བསལ་མ། །མ་བསལ་ཆོས་ཅན་བདག་ཉིད་ཀྱི། །རང་གི་ངོ་བོ་བསྟན་པ་ཉིད་དང་། །ཅེས་སོར་འཇུག་པས་ལེར་པར་བརྟག་རིགས་སོ།། སྣ། པེ།

4 བསྐལ། སྡེ།

5 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། སྡེ་བསྟན། ཚད་མ། ཅེ། ༡༢༢ བ ༤ ལེའུ་ ༢ ཤློཀ་ ༡༣༦

གྲོལ་བ་ཀུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱིས། །
བསྒྲུབ་བྱར་འདོད་པའི་ཆོས་གང་ཡིན། །
ཆོས་དེ་ལྡན་ལ་གནོད་ཡིན་གྱི། །
ཆོས་གཞན་གྱི་ནི་ཆོས་ཅན་མིན། །
གཞན་དུ་ཆོས་ཅན་གཞན་ལ་ནི། །
གནོད་ཀྱང་འདི་ལ་ཅི་ཞིག་བཀག །

ཅེས་རྒྱས་པར་བཤད་ནས། ལོག་པར་རྟོག་པ་བསལ་བའི་ཡུལ་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་སྨྲས་པ།།

ཅིག་ཅར་སྣ་སོགས་རྒྱུ་མིན་ཕྱིར། །
སྔོན་མེད་ངོ་བོ་དཔེར་གཞན་གྱི། །
བསྐྱེད་བྱ་མིན་ལྟར་མཁའ་སོགས་མིན། །[1]

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བཤད་ལ། སུན་འབྱིན་པར་བྱེད་པས། སྨྲས་པ།

མཁའ་སོགས་ཆོས་ཅན་དངོས་མེད་ཀྱི། །
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་དེ་དང་འདྲ[2] །

---

1 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། སྡེ་བསྡུས། ཚད་མ། ཅེ། ༡༨༨ བ ༧ ལེའུ་ ༨ ཤོག་ ༡༨༠ དཔེར་ན་མཁའ་སོགས་གཞན་དག་གིས། །སྔོན་མེད་རང་བཞིན་སྐྱེ་མེད་མིན། །ཅིག་ཅར་སྣ་སོགས་རྒྱུ་མིན་ཕྱིར།།

2 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། སྡེ་བསྡུས། ཚད་མ། ཅེ། ༡༨༥ ན ༡ ལེའུ་ ༨ ཤོག་ ༡༨༣ དེ་བཞིན་མཁའ་སོགས་ཆོས་ཅན་གྱི། །ངོ་བོ་དང་དངོས་ཅེས་བརྗོད་བཞིན། །དེ་ལྟར་འདོད་པའི་བསྒྲུབ་བྱ་བ། །གནོད་པ་འགག་ཡང་མེད་པ་ཉིད།།

ཞེས་སྨྲས་པ་ནི།

འདོད་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ། །
གནོད་པ་ཅི་ཡང་མེད་པ་ཉིད། །
དེ་བཞིན་མཁའ་སོགས་ཆོས་ཅན་གྱི། །
དངོས་པོའི་ངོ་བོའང་མེད་པར་འགྱུར། །
གཉི་གའང་བསྒྲུབ་བྱ་ཉིད་ཡིན་ན། །
ཆོས་ཅན་ལ་ནི་གནོད་པ་གང་། །
བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཆོས་འགོག་པ། །
དེས་ནི་དེ་ལ་གནོད་ཅེས་བརྗོད། །[1]

ཅེས་གང་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། །གདོན་མི་ཟ་བར་འདི་ལྟར་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཇི་ལྟར་མཁས་པ་རྣམས་རིམ་དང་ཅིག་ཅར་ལ་སོགས་པས་ཁྱབ་པའི་དོན་བྱེད་པའི་ནུས་པ་དང་བྲལ་བ་ལ་སོགས་པས་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་འགོག་པར་བྱེད། དངོས་པོ་ཡོད་པ་ལ་ནི་ཇི་ལྟར་ཡང་དེ་ཡང་དག་པར་དགག་པར་བྱ་མི་ནུས་སོ། །མེད་པ་ལ་ཡང་གལ་ཏེ་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཉེས་པས་འདི་བྱ་བ་མ་ཡིན་ན། འོ་ན་ཇི་ལྟར་ཡང་གང་ཡང་དགག་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་རྣམས་ཀྱིས།

དེ་ནི་གཅིག་ནའང་ཡུལ་མིན་ལ། །

1 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། སྡེ་བསྡུར། ཚད་མ། ཅེ། ༡༤༥ ན ༡ ལེའུ་ ༤ ཤློ་ཀ་ ༡༤༢ – ༡༤༣

ཕྲ་རབ་རྡུལ་དུ་དུ་མའང་མིན། །
སྐད་ཅིག་མ་ཡིན་ཡོད་མ་ཡིན། །
དེ་ནི་རིམ་དང་རིམ་མིན་[1]འགལ། །[2]

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་འགོག་པར་བྱེད། རྫས་དང་། ཡོན་ཏན་དང་། ལས་དང་། སྤྱི་ལ་སོགས་པ་མུ་སྟེགས་ཅན་དང་ནས་པས་ཀུན་བརྟགས་པ་རྣམས་དགག་པ་བྱེད་པར་འདོད་ན་ཡང་ཇི་ལྟར་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་འཇུག་(173b)པར་མི་འགྱུར། འོན་ཏེ་གལ་ཏེ་ཐལ་བར་བསྒྲུབ་པ་པོ་ནས་འདི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་[3]མི་འཇུག་གོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་ཐལ་བར་སྒྲུབ་པ་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་ལས་ཇི་ལྟར་འདི་དག་གཅིག་ཏུ་མེད་པའི་ཐ་སྙད་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ནི་ཚད་མ་ལ་རག་ལས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

ཇི་སྟེ་ཐལ་བར་སྒྲུབ་པ་ཡང་ཚད་མ་པོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་ཇི་སྟེ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར། རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་ནི་རིགས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་འོངས་པའི་ཉེས་པ་ལ་སོགས་པ་རང་དགས་[4]པོ་ན་ལ་སྒྲུབ་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ལ་སོགས་པ་དགག་པ་སྒྲུབ་པར་

1 རིམ་ནི་… སྣ།

2 ཉི་ཤུ་པ། སྡེ་བསྟན། སེམས་ཙམ། ཤི ༢ བ ༣ དེ་ནི་གཅིག་ནའང་ཡུལ་མིན་ལ།། ཕྲ་རབ་རྡུལ་དུའང་དུ་མ་མིན། །དེ་དག་འདུས་པའང་མ་ཡིན་ཏེ། །འདི་ལྟར་རྡུལ་ཕྲན་མི་འགྲུབ་ཕྱིར།།

3 བྱེད་པའི་མི་འཇུག སྡེ།

4 འགའ་ སྣ།

འདོད་པ་ལ་བློའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཅན་དངོས་པོར་གྱུར་པ་ཡོད་པ་ཉིད་དེ། དེ་ཁོ་ན་ལ་ཕྱི་རོལ་དང་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པར་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་དགག་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ལ་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་མི་འཇུག་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན། གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ན་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་གྱིས་དབེན་པ་ཉིད་དང་། རིམ་དང་རིམ་མ་ཡིན་པས་ཁྱབ་པའི་དོན་བྱེད་པའི་ནུས་པས་སྟོང་པ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་དགག་པའི་གཏན་ཚིགས་རྣམས། གལ་ཏེ་ཆོས་ཅན་དེ་ལ་དེའི་ཆོས་ཉིད་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་དེའི་བློ་ནས་དེ་ལ་མངོན་པར་འདོད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཆོས་འགྲུབ་པར་འགྱུར།

ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་མ་ཡིན་ཡང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་མེད་ན་མི་འབྱུང་བ་ཙམ་[1]ཁོ་ནའི་གཏན་ཚིགས་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡང་དག་པར་འགྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་ནི་མིག་གི་ཡུལ་ཉིད་ཀྱང་སྒྲ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོས་ཅན་ལ་མི་རྟག་པ་ཉིད་ཇི་སྐད་སྒྲུབ་པར་མི་འགྱུར། ཇི་སྐད་དེ་དག་དེ་ལ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཕྱི་རོལ་དང་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་བློ་ཉིད་ནུས་པ་དང་། གཅིག་དང་དུ་མ་ལ་སོགས་པ་དངོས་པོ་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་ཆོས་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་དག་ནི་དེའི་ཆོས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཆོས་གཞན་ཡང་གཞན་ལ་སྒྲུབ་པ་མ་ཡིན་ལ། ནུས་པ་ལ་སོགས་པས་སྟོང་པའི་དངོས་པོ་ཡང་མི་འགྲུབ་བོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དེ་ལས་ཕྱིར་རོལ་དང་། གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་ན་(174a)ནི་

1 ཙམ་ཁོ་ན་ཡིན་ཡང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་མེད་ན་མི་འབྱུང་བ་ཙམ་ སྣ། པེ།

གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་དེ་ཡང་དེའི་སོ་ན་འདུག་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། རང་གི་ཕྱོགས་ཉམས་པར་ཐལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །བློ་ལ་ཕྱི་རོལ་དང་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པས་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་དགག་པ་བསྒྲུབས་སུ་ཟིན་ཀྱང་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པ་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་རང་གི་ངོ་བོ་[1] དགག་པ་ནི་མི་འགྲུབ་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེའི་རྣམ་པ་ནི་གཞན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་མ་གྲུབ་ན་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པའི་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཡུལ་ཅན་མེད་པའི་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར་ཏེ། ཆོས་གཞན་ཡང་དག་པར་གྲུབ་ན་གཞན་དག་ལ་གཞན་དུ་ཐ་སྙད་འཇུག་པར་རིགས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

མི་ཤེས་པ་ཁ་ཅིག་གིས་སོ་སོར་བརྟགས་པས་འགོག་པ་ལ་སོགས་པ་འདུས་མ་བྱས་གསུམ་པོ་གང་གི་ཡང་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་མ་གྱུར་པ་གང་དག་ཡང་དག་པར་དངོས་པོར་ཀུན་བརྟགས་པ་དེ་དག་དགག་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་ཡང་ཇི་ལྟར་བློ་ཆོས་ཅན་དུ་འགྱུར་ཏེ། ཕ་རོལ་པོ་དག་དེ་ལ་དེས་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་དགག་པ་ནི་ནམ་ཡང་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་བ་ཉིད་དོ།།

ཇི་སྟེ་ཐོག་མ་མེད་པའི་རང་གི་ས་བོན་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པས་ཡོངས་སུ་བསྒྲུབས་པ། བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱི་རོལ་དང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་བློ་ལ་ཡོད་པ་ཉིད་ཆོས་ཅན་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ལ་བརྟེན་ནས་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་འགོག་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ནི་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཀྱང་རྣམ་པར་འཁྲུལ་པའི་དབང་གིས་ཕྱི་རོལ་ལྟ་བུ་དང་། གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་དང་།

1 སོགས་པའི་ངོ་བོ་ སྣ། པེ།

ཐ་མི་དད་པ་ལྟ་བུ་དང་། ཤུས་པས་སྟོང་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་མཐའ་དག་དང་ལྡན་པ་ལྟ་བུར་རྟོག་གོ །དེ་ལ་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དགག་པ་སྒྲུབ་པ་ལ་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་དགག་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་དག་གཞི་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱང་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་དེ་ཉིད་བྱེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱི་རོལ་དང་། གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བཟུང་བ་རློམ་བ་དང་ཕྱིར་རློམ་བ་དག་ཀྱང་རབ་རིབ་ཅན་གྱིས་ཟླ་བ་གཉིས་སུ་མཐོང་བ་བཞིན་དུ་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པར་སེམས་པ་ཁོ་ནས་ཐ་སྙད་འདོགས་པའི་ཕྱིར་རོ།།(174b)

དེ་ནི་བློས་ཀུན་བརྟགས་པ་ཡིན་ཡང་དེའི་རྣམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་བློ་ཞེས་ཉེ་བར་འདོགས་ཏེ། འདི་དངོས་སུ་ནི་བློའི་ངོ་བོ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དེ་དང་མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་ཀྱང་བློ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་ཕྱི་རོལ་དང་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དགག་པ་ཚད་མས་སྒྲུབ་པར་བྱེད་ཀྱི། དེ་ཉིད་དགག་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་སྦྱོར་བ་མ་ཡིན་ནོ།།

གང་ལ་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཆོས་ཅན་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་དངོས་པོར་གྲུར་བ་ཡོད་པ་དེ་ལ་ཡང་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པ་ལ་བློ་ལ་ཡོད་པའི་ཆོས་ཅན་ཕྱི་རོལ་གྱི་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་དང་། ཐ་མི་དད་པ་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་ཀུན་དུ་བརྟེན་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ། ཕྱི་རོལ་གྱི་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་དང་། དུས་དང་གནས་སྐབས་ཐ་དད་པར་ངེས་པ་དག་ནི་རློམ་བ་དང་། ཕྱིར་རློམ་བའི་བློ་ལ་རང་གི་ངོ་བོར་མངོན་སུམ་དུ་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལ་ཆ་ཤས་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་

ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་རྣམས་མི་སྲིད་པའི་ཡང་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་བ་དང་། རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་འདི་ཐམས་ཅད་ནི་བློ་ལ་ཡོད་པའི་ཆོས་ཅན་ཁོ་ན་ལ་བརྟེན་ནས་འཇུག་པ་ཉིད་དེ། རྣམ་པ་གཞན་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན། གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ཡིན་ན། འོ་ན་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཀྱང་ཀུན་བརྟགས་པའི་ཆོས་ཅན་ལ་བརྟེན་ནས་དགག་པ་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ལ་ཡང་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་མི་འཇུག་ན་ཅི་སྟེ་ནན་གྱིས་ཁོ་བོ་ཅག་ལ་ཀླན་ཀ་ཚོལ་བར་བྱེད།

ཇི་ལྟར་ཁྱེད་དོན་དམ་པ་ལ་འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་དགག་པར་ཀུན་བརྟགས་པའི་ཆོས་ཅན་ཁོ་ན་ལ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པའི་སེམས་པ་རྒྱས་པར་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་གཟུགས་དང་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་གྲགས་པ་དག་ལ། ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྒྲོ་བཏགས་པ་དགག་པར་བྱེས་པ་རྣམས་ལ་དེ་དག་སྒྱུ་མ་དང་། སྨིག་རྒྱུ་དང་། རྨི་ལམ་དང་། གཟུགས་བརྙན་དང་མཚུངས་པ་ཉིད་དུ་སྟོན་པར་བྱེད་དོ།།

དེ་ལ་ཇི་ལྟར་བརྟགས་པའི་ཆོས་ཅན་ལ་དངོས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྒྲོ་བཏགས་པ་ལ་སོགས་པ་བཀག་ཏུ་ཟིན་ཀྱང་རྟོལ་བ་དང་ཕྱིར་(175a)རྟོལ་བ་དག་ལ་སྣང་བའི་ཕྱིར་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་མི་འཇུག་པ་དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཡང་གནག་རྫིའི་ཚུན་ཆད་ཀྱི་སྐྱེ་བོ་ལ་སྣང་བའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར། སྣང་བ་ནི་གང་གིས་ན་དེ་ལོག་ན་[1]ལྡོག་པར་འགྱུར་བ་བདེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་

1 དེ་ལོག་པར་འགྱུར་བ་ན་ སྣ།

ཀྱིས་ཁྱབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། བརྟེན་པ་ཡང་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་འབའ་ཞིག་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

ཇི་ལྟར་ཀུན་བརྟགས་པའི་ཆོས་ཅན་དེ་ལ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡང་དག་པར་འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ནུས་པ་དང་འབྲེལ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཉེ་བར་འགོད་པ་དེས་ཁྱབ་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་ལ་དེ་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་[1]བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཁོ་བོ་ཅག་ཡང་དག་པ་ཉིད་དུ་ཀུན་བརྟགས་པའི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་དེ་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པ་ལ་ནུས་པ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་པ་ཡང་ཅི་སྟེ་སྒྲུབ་པར་མི་བྱེད། གཞན་ཡང་རྟོག་པ་[2]དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་[3]ཁས་ལེན་པ་ནི་དཔྱད་པའི་འོག་ཏུ་ཡིན་ལ།[4] དེའི་[5]བདག་ཉིད་གཏན་ལ་ཕབ་ན་རིགས་པ་ཡིན་ནོ། །དཔྱོད་པའི་དུས་ན་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་གཏན་ལ་མ་ཕབ་པའི་ཕྱིར་དང་། དཔྱོད་པ་ཡང་དེ་གཏན་ལ་དབབ་པའི་དོན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཚད་མས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གཏན་ལ་འབེབས་པའི་དུས་ན་སུ་ཡང་གྲུབ་པའི་མཐའ་ཁས་ལེན་པ་མེད་པས་དེའི་ཚེ་གང་ལ་གཞི་མ་གྲུབ་པའི་སྐྱོ་ནས་ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པས་རྒོལ་བར་བྱེད་དེ། འོན་ཏེ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་འདི་རྒོལ་བ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་སྔར་ཚད་མས་གཏན་ལ་ཕབ་ནས་གཞན་དག་ལ་དེ་བསྒྲུབ་པར་འདོད་པས་ཞུགས་པ་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་དེ་གྲུབ་པའི་མཐའ་ཁས་ལེན་པའི་སྐྱོ་ན་གནས་

---

1 སྒྲུབ་པར་ སྣ།

2 རྟོགས་པ་ པེ།

3 ཀྱི་ པེ།

4 ཡིན་ཏེ། སྣ། པེ།

5 དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་ སྣ། པེ།

པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བདག་ཉིད་རྟོགས་པར་བྱེད་པའི་དུས་ན་གྲུབ་པའི་མཐའ་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

སྔར་གྲུབ་པའི་མཐའ་མཁས་བླངས་པའི་རྒོལ་བ་བདག་ཉིད་ཚད་མ་གང་ཁོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་གྱུར་པ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་ལ་རྟོགས་པར་བྱེད་ན་ཇི་ལྟར་གྲུབ་པའི་མཐའ་ཁས་བླངས་པ་ཞེས་བྱ། འདི་བདག་ཉིད་སྔར་ཚད་མས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གཏན་ལ་ཕབ་ན་གཞན་དག་ལ་གྲུབ་པའི་མཐའ་ཁོ་ནས་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་ཡང་མ་གྲུབ་ལ། གཞན་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་ཡང་དེའི་ཚིག་ཙམ་གྱིས་ཚད་མ་མེད་པའི་(175b)དོན་ཡིད་ཆེས་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་བདག་ཉིད་གཏན་ལ་འབེབས་པའི་དུས་བཞིན་དུ་གཞན་ལ་སྟོན་པའི་དུས་ན་ཡང་འདྲ་བའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་དུ་ཚད་མ་ཁོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གཏན་ལ་ཕབ་ན་སུ་ཡང་གྲུབ་པའི་མཐའ་ཁས་ལེན་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་དེའི་སྒོ་ནས་ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་པར་བྱེད། ཚད་མ་ཡང་དག་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་རྒོལ་བའི་མངོན་པར་འདོད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་གྲུབ་ཀྱང་། གྲུབ་པའི་མཐའ་ཁས་བླངས་པས་དེ་ལ་དེ་གནོད་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་ཟེར་བ་འདི་ལ་གཞན་རིགས་པ་ཅི་ཞིག་ཡོད། དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསམ་པ་ལ་ནི་གྲུབ་པའི་མཐའ་ལས་ཡང་དག་པར་གྲགས་པའི་ཆོས་ཅན་ལ་སུ་ཡང་རྟེན་པར་མི་བྱེད་དེ། དེ་ལྟ་བུའི་ཆོས་ཅན་ནི་རྒོལ་བ་དང་། ཕྱིར་རྒོལ་བ་དག་ལ་གང་དུ་ཡང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།

འདི་ལྟར་སངས་རྒྱས་པ་ལ་སོགས་པ་སྒྲ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཅན་འབྱུང་བ་ལས་གྱུར་པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟ་བུར་མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་ལྟ་བུར་བྱེ་བྲག་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་གིས་དེ་ནམ་མཁའི་ཡོན་ཏན་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ཉེ་བར་བརྟགས་

པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཆོས་ཅན་དེ་ལྟ་བུ་མ་གྲུབ་ན་སུ་ཡང་གང་དུ་ཡང་སྒྲུབ་པ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་ཆོས་ཅན་དེ་ལྟ་བུ་གྲུབ་ན་ནི་དེའི་ཆོས་ཀྱང་གཉི་ག་ལ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་རྩོད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་འདོད་པ་ཐམས་ཅད་ནི་གཞུང་ལུགས་ཀྱིས་བསྒྲུབས་པའི་ཆོས་ཅན་གྱི་བྱེ་བྲག་སྤྲངས་ཏེ། གནག་ཛི་ཡན་ཆད་ལ་གྲགས་པ་འདི་ཉིད་ལ་བརྟེན་ནས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པའི་སེམས་པ་རྒྱས་པར་བྱེད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་གྲུབ་པའི་མཐའ་ལ་བརྟེན་ནས་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པས་གླེང་བ་ནི་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ། །གང་ལ་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་ལ་འདི་གླེང་བ་རིགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི། ཁོ་བོ་ཅག་ལ་ནི་[1] གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(7)གང་ཡང་འོན་ཏེ་ཕ་རོལ་པོས་ཁས་བླངས་པའི་གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པས་རང་གི་ཕྱོགས་གྲུབ་པར་བྱེད་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་སུན་འབྱིན་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའོ། །འདི་ལྟར་ཁོ་བོ་ཅག་ནི་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་གཉི་ག་ལ་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པའི་གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པ་(176a)ཁོ་ནས་འདི་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་དེ། དེ་བཞིན་དུ་འོག་ནས་བསྟན་པར་བྱའོ།།

(8)གང་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་དབེན་པ་དང་། རྟགས་གང་དང་ཡང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་གང་དུ་ཡང་འབྲེལ་བར་མ་གྲུབ་སྟེ། དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཆོས་ཅན་ཉིད་ཀྱང་གྲུབ་ལ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཆོས་དང་རྟགས་ཀྱང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་འབྲེལ་ནས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་

1 ཁོ་བོ་ཅག་ལ་གཟུགས་ སྣ། པེ།

པའི་དངོས་པོ་འཇུག་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་རྟོད་པ་[1]མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཀྱང་སྤྱིར་ཆོས་ཅན་འགའ་ཞིག་ལ་དེ་གྲུབ་ལ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཆོས་གཞན་ལ་ཟེ་ཚོམ་ཟ་ན་དེ་མེད་ན་མི་འབྱུང་བའི་རྟགས་བསྟན་པས་ཆོས་ཅན་ལ་སྤྱིར་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཆོས་རབ་ཏུ་གྲུབ་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིགས་པ་ཡིན་ནོ།།

དེ་བཞིན་དུ་འདིར་ཡང་སྒྱུ་མ་དང༌། སྨིག་རྒྱུ་དང༌། རྨི་ལམ་དང༌། དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་ལ་སོགས་པའི་སྤྱིར་ཆོས་ཅན་འགའ་ཞིག་ལ་དེ་གྲུབ་པས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པས་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ལ་ཁྱབ་པར་[2]བྱེད་པ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ཁོ་བོ་ཅག་གཞན་དུ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་རྟོད་པའི་གཞིར་འགྱུར་[3]བ་དག་ལ་དེས་ཁྱབ་པའི་ཆོས་ཉེ་བར་བསྟན་པས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པས་ཉེས་པ་མེད་པ་ཉིད་དོ།།

(9-10)གང་ཡང་རེ་ཞིག་འབྲས་བུ་དང་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་དག་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་གཉིས་ནི་དངོས་པོ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་གཉིས་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དུ་ནི་གང་དུ་ཡང་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པའོ།།

འོན་ཏེ་འདི་དག་སྒྲུབ་པའི་ངོ་བོར་ཞུགས་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་རྫོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡང་གང་གི་ཚེ་སྦྱོར་བ་དགོད་པའི་བྱེ་བྲག་འགས་སྒྲུབ

---

1 བརྗོད་པ་ སྣ།

2 ཁྱད་པར་ པེ།

3 གྱུར་ པེ།

པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཚེ་དེ་གཉིས་ཅི་སྟེ་མི་སྲིད། རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཁོ་ན་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པར་སྦྱོར་བ་དགོད་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་རྣམ་པ་མང་པོར་སྨོས་སོ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མདོར་ན།

ཕྱོགས་ཆོས་དེ་ཆས་ཁྱབ་པ་ནི།།

གཏན་ཚིགས་····· །[1] །

ཞེས་[2]སྦྱོར་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་བཤད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་འདིར་ཡང་སྦྱོར་བ་དགོད་པའི་བྱེ་བྲག་(176b)གི་སྒོ་ནས་རང་བཞིན་ལ་སོགས་པའི་གཏན་ཚིགས་ཅི་རིགས་པ་ཡིན་པས་འགལ་བ་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། དེ་བཞིན་དུ་འོག་ནས་བསྟན་པར་བྱའོ།།

དེ་ལ་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། རང་བཞིན་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་དག་ལ་ཐ་སྙད་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པ་འདི་གཉི་ག་ཡང་ཡོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་ཇི་ལྟར་གཅིག་ཏུ་དེ་གཉིས་མི་སྲིད་པ་ཡིན། ཡང་དག་པའི་རང་བཞིན་དང་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་ཁོ་ནར་འགྱུར་དགོས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་ནི་རྒྱུ་ཅི་ཡང་མེད་དེ། འདི་ལྟར་གཟུགས་བརྙན་ཞེས་བྱ་བའི་འབྲས་བུ་བརྟེན་པ་ཡང་རང་གི་རྒྱུ་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་བ་ལ་གཏན་ཚིགས་སུ་དམིགས་པ་ཁོ་ནའོ། །མེ་ལོང་ལ་སོགས་པའི་ངོས་སུ་གཟུགས་བརྙན་ཞེས་བྱ་བ་གཟུགས་གཞན་ཉིད་གཅིག་འབྱུང་ངོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐོགས་པ་དང་བཅས་པ་རྣམས་ཡུལ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཟུགས་དེ་ཉིད་དེ་ལྟར་དམིགས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་མི་རུང་སྟེ།

1 ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ། སྡེ་བསྟན། ཚད་མ། ཅེ། ༩༨ ན ༣ ལེའུ་ ༣ ཤློག་ ༡

2 ཞེས་ པ།

དེ་ཉི་དེ་ལྷ་བུའི་ཡུལ་དང་དབྱིབས་ལ་སོགས་པ་དང་འབྲེལ་བའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རོ།།

འདི་ལྟར་གཟུགས་བརྙན་རྣམས་ནི་མེ་ལོང་ལ་སོགས་པའི་རྟེན་ལ་ཡོད་པའི་ཡུལ་དང་དབྱིབས་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གི་རྗེས་སུ་བྱེད་པར་དམིགས་ན་གཟུགས་དག་ནི་དེ་ལྟར་གནས་པའི་ངོ་བོར་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །གཞན་གྱི་རྣམ་པ་ནི་གཞན་འཛིན་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད་གཟུགས་བརྙན་གྱི་རྣམ་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་དེ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་དངོས་པོར་ཡོད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཤེས་པ་ནི་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པ་ལུས་ཅན་གྱི་བྱེ་བྲག་ཏུ་མ་གྱུར་པ་ཆ་ཤས་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡུལ་ན་མི་གནས་ཤིང་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བའོ་ཞེས་བཛོད་ལ། གཟུགས་བརྙན་ནི་དེ་དང་མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་ངོ་བོར་སྣང་བའི་ཕྱིར་དེ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་བདེན་པར་ལྟ་ག་ལ་འགྱུར།། ཇི་ལྟར་ཁྱེད་ཀྱི་སུམ་ཅུ་པ་ལ་སོགས་པ་ལས།[1] གང་ཟག་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་གང་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པ་དེ་ནི་བརྗུན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དཔེར་ན་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ།།

བདག་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་(177a)ཡིན་ནོ་ཞེས་སྦྱོར་བ་དགོད་པའི་སྒོ་ནས་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་སྨོས་པ་དེ་བཞིན་དུ་གཞན་ཡང་གཞན་དག་གིས་བརྟགས་པའི་ཆོས་མི་དམིགས་སོ་ཞེས་ཅི་སྟེ་བརྗོད་པར་མི་བྱ། ཇི་ལྟར་སློབ་

1 སུམ་ཅུ་པ་ལས། སྡེ་བསྟན། སེམས་ཙམ། ཤི ༡ ནས ༣ སུམ་ཅུ་པའི་བཤད་པ། སྡེ་བསྟན། སེམས་ཙམ། ཤི། ༡༧༡ ནས ༡༦༥ བར།

དཔོན་དག་གིས་བརྗོད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་མི་དམིགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཅི་སྟེ་མི་བརྗོད་དེ། དེ་བཞིན་དུ་འོག་ནས་བསྟན་པར་བྱའོ། །གང་ཡང་རང་བཞིན་མི་དམིགས་པ་མི་སྲིད་དོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ལ་གོང་དུ་ལན་བཏབ་པ་ཉིད་དེ། ཚུལ་འདི་ནི་གཅིག་གིས་གཅིག་སྟོང་པ་ཉིད་ཡིན་ན་འདི་ཡང་བསྒྲུབ་པར་མི་འདོད་དོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན་མཚན་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།།

(11-12)གང་ཡང་འགལ་བ་དམིགས་པ་ལ་སོགས་པ་མི་སྲིད་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དོ། །འདི་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་དབེན་པ་དང་འགའ་ཡང་ལྡན་ཅིག་འགལ་བ་ལ་སོགས་པར་མ་གྲུབ་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་སྒྱུ་མ་དང་ནམ་མཁའི་པདྨོ་ལ་སོགས་པ་དག་ལ་སྒྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དང་ལྡན་ཅིག་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ནའོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཁྱེད་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པའི་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དེའི་ཕྱིར་སྤྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཙམ་གྱིས་ཐ་སྙད་དུ་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པར་གྲུབ་ན་ཕྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་དོན་དམ་པར་བསམ་པར་འགལ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཉེ་བར་བསྟན་པས་ཡང་དག་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་འདི་ལ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད། དེ་དང་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དངོས་པོ་གསལ་བའི་ངོ་བོ་དག་ནི་གང་དུ་ཡང་ཡང་དག་པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་གནས་ན་ནི་འདི་དག་གི་དེ་དང་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་རབ་ཏུ་མི་འགྲུབ་བོ།།

དེའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དང་ལྷན་ཅིག་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པར་གྲུབ་ན་དེ་དང་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བརྗོད་པར་མི་བྱའོ། །འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐ་སྙད་ཁོ་ནར་གྲུབ་པ་ཡིན་གྱི། ཡང་དག་པར་ནི་མ་ཡིན་(177b)ནོ། །འདི་ལྟར་སྐྱེ་བོ་དག་མར་མེ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ་བརྟན་པ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ན་བརྟན་པའི་རྣམ་པས་དབེན་པ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་གཅོད་[1]པར་བྱེད་དེ། དེ་རྣམ་པར་མ་བཅད་ན་དེ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ལ་གང་ཞིག་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་གང་རྣམ་པར་གཅད་པ་མེད་ན་མེད་པ་དེ་དག་ནི་དེ་ལ་ཕན་ཚུན་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་འགལ་བར་རྣམ་པར་གཞག་གོ །ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དང་། རིམ་དང་རིམ་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པ་འགལ་བ་དག་ལ་ཡང་ཚུལ་དེ་བཞིན་དུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །གྲང་བའི་རེག་པ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་ཡིན་པ་ལས་མེ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་ཉེ་བ་ན་ཡང་མེད་པར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་དེ་གཉིས་ནི་ལྷན་ཅིག་མི་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་འགལ་བར་རྣམ་པར་གཞག་གོ།

འགལ་བ་དེ་ཁོ་ན་རབ་ཏུ་གྲུབ་ཀྱང་མར་མེ་ལ་སོགས་པ་གཅིག་ཏུ་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་དེ། སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བརྟེན་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་ནི་དོན་དམ་པ་ལ་འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་དུ་མར་མེ་ལ་སོགས་པ་དག་ལ་ཡང་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པ་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་འགལ་བ་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་གཞག་གོ །མར་མེ་ལ་

---

1 ཡོངས་སུ་གཅོག སྣེ།

སོགས་པ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་གྱི་ངོ་བོ་འམ་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཡང་དག་པར་ནི་མ་གྲུབ་སྟེ། གཉི་གའི་ངོ་བོ་ཡང་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་བསལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གིས་ན་འདི་དག་ཡང་དག་པ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་ལྡན་ཅིག་འགལ་བ་མངོན་སུམ་དུ་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཕ་རོལ་མ་ཡིན་པ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་མཐོང་བའི་ལམ་དུ་མི་འཇུག་གོ །ལྡན་ཅིག་མི་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་འགལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་རྣམས་ནི་བདག་ཉིད་ཁོ་ནས་འཇིག་གིས་གཞན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འཇིག་པ་དོན་གཞན་ཞིག་བྱེད་ན་ནི་འཇིག་པའི་རྒྱུ་རྣམས་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་མ་ཡིན་ན་ཡང་དེའི་འཇིག་པའི་རྒྱུ་རྣམས་ཀྱིས་མི་བྱེད་དེ། དེ་ནི་དངོས་པོའི་རྒྱུ་ཁོ་ན་ལས་བྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

འོན་ཏེ་འཇིག་པ་ནི་དངོས་(178a)པོར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་བརྟགས་པ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེའི་ཚེ་འདི་ཤིན་ཏུ་ཡང་འཇིག་པའི་རྒྱུ་རྣམས་ཀྱིས་མི་བྱེད་དེ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པའི་མེ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་ཡང་དག་པར་ན་འགལ་བ་ཡིན་པར་འགྱུར། འོན་ཀྱང་མེ་འདི་ནི་གྲང་བ་ལ་སོགས་པ་གོང་ནས་གོང་དུ་ནུས་པ་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་སྐད་ཅིག་མ་[1]རབ་དང་མཚོག་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ལ་མེ་ལ་སོགས་པ་འགལ་བ་ཞེས་ཐ་སྙད་འདོགས་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སློབ་དཔོན་དག་གིས་འགལ་བའི་ཚུལ་ཞེས་བཤད་ཀྱིས་འགལ་བ་ཉིད་ཅེས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་

1 མཚན་ཉིད་རབ་དང་ སྣ།

འགལ་བ་འདི་ཡང་ཐ་སྙད་པའི་དངོས་པོ་ཁོ་ན་ལ་བརྟེན་ནས་བརྗོད་ཀྱི། ཡང་དག་པ་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། མེ་དང་གྲང་བ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་གྱི་[1]ངོ་བོ་ཡང་དག་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ལ། ཤེས་པའི་རྣམ་པའི་ངོ་བོ་ཡང་བརྟགས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་པ་གཅིག་ལ་གྲང་བ་དང་ཚ་བར་སྣང་བ་དག་སྲིད་པའི་ཕྱིར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགལ་ཏེ་དེ་གཉིས་ནི་ཅིག་ཅར་སོ་སོར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་རིགས་མཐུན་པ་དུ་མ་ནི་ཅིག་ཅར་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་གྲང་བ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་བརྫུན་པ་ཁོ་ན་དག་ཅིག་སྣང་བས་དེའི་ཕྱིར་འདི་དག་ལ་ཡང་དག་པར་ན་འགལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དོ།།

(13-19)ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ཡང་ཤིང་དང་ཤིང་ཤ་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་ཐ་སྙད་པ་ཁོ་ན་ལ་བརྟེན་ནས་ཀུན་བརྟགས་པའི་སྤྱི་དང་ཁྱད་པར་གྱི་དངོས་པོ་རྣམ་པར་གཞག་པས་རྣམ་པར་འཇོག་པ་ཡིན་ཏེ། དངོས་སུ་ནི་གང་ཁྱབ་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་བ་ཤིང་ཉིད་ལ་སོགས་པ་སྤྱི་དང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ།།

ཁྱད་པར་གདའ་བ་ལ་སོགས་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་གྱི་ངོ་བོ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། ཤེས་པའི་རྣམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་པར་ཡང་མ་གྲུབ་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་མཁས་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་བཏང་སྙོམས་སུ་གཞག་པ་རྣམས་ཀྱིས་གླང་པོ་ཆེའི་ལྟ་སྟངས་ལྟ་བུར་བྱས་ཏེ། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ན་སེང་ལྡེང་ལ་སོགས་པའི་(178b)ཁྱད་པར་བརྫུན་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ལྟ་བུའི་ཤིང་ལ་སོགས་

---

1 ཕྱི་རོལ་གྱི་ངོ་བོ་ སྣ།

པའི་དངོས་པོའི་བརྫུན་པ་ཁོ་ན་ལ་ཀུན་ཏུ་བརྟེན་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཆེད་དུ་དོན་དམ་པ་ལ་འཇུག་པ་དང་མཐུན་པའི་ཕྱིར་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་། ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཉིད་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཉིད་ས་བོན་དང་མྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ན་ལ་བརྟེན་ནས་ཐ་སྙད་འདོགས་པར་བྱེད་ཀྱི། ཡང་དག་པ་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ས་བོན་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པ་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ན་དེ་ལྟ་བུ་བརྫུན་པ་ཡང་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

སད་པ་ན་ཡང་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུར་གྱུར་བ་བདེན་པར་གྱུར་བ་མ་ཡིན་པ་ཡང་དམིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པས་དངོས་པོ་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཁྱབ་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་བས་དེ་དག་དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ནི་མི་འགྲུབ་སྟེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཡོད་པ་ལས་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་ངེས་པར་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་དངོས་པོ་དག་ལ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་ཡང་དག་པར་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པ་འདི་ལོག་ན་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་དེ་དག་གི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པར་ཀུན་བརྟགས་པ་ལྡོག་པར་འགྱུར་བ་ཉིད་དོ། །དེ་བས་ན་འགལ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་[1]འདི་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་འཇུག་པར་ནུས་པའི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དང་། མུ་སྟེགས་ཅན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པའི་ཚད་མ་ལ་སོགས་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རྗེས་སུ་མི་མཐུན་པ་ཉིད་དུ་

---

1 གཞག་པའི་ སྡེ།

བརྗོད་པའི་ཕྱིར་དེ་སྤྲང་ས་ནས་ཡང་དག་པའི་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་མཛད་དོ།།

འདི་ལྟར་སྔ་སྟེགས་ཅན་ཁ་ཅིག་ནི་རིལ་གྱིས་བདག་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བརྟེན་པ་བསྒྲུབ་པར་འདོད་ཅིང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་ཉིད་དང་། ལས་དང་འབྲས་བུར་འབྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་པ[1] རྣམ་པར་གཞག་པ་སེལ་བར་འདོད་པས་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཁོ་ན་བྱེད་དེ། (179a)དེའི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཀག་ནས་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་འཇུག་པ་དང་མཐུན་པ། ལས་དང་འབྲས་བུར་འབྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་གནས་པའི་རྒྱུ་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པའི་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་ཡོངས་སུ་དག་པ་ཉིད་མཛད་དོ།།

དེ་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གནང་བ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་ཁོ་བོ་ཅག་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་དག་ཅིང་དོན་དམ་པའི་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་ཁས་ལེན་པ་ཉིད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་འགལ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་ཁས་བླངས་པ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཁས་བླངས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མ་ངེས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། དེ་ཁས་བླངས་སུ་ཟིན་ཀྱང་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཡང་དག་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།

(20)འདིས་ནི་གལ་ཏེ་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་འབྲེལ་བ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མངོན་སུམ་ཚད་མར་ཁས་ལེན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོར་གྲུབ་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་

1 ལས་དང་འབྲས་བུར་འབྲེལ་བ་རྣམ་པར་བཞག་པ་ སྣ།

མངོན་སུམ་གྱི་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་ནི་རྟོག་པ་དང་བྲལ་ཞིང་མ་ནོར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། མ་ནོར་བའི་ཤེས་པས་གཏན་ལ་ཕབ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་[1]དག་ཀྱང་ཇི་ལྟར་རྗེས་སུ་དཔག་པས་བསལ་[2]བར་བྱ་ནུས། དེ་སེལ་ན་ནི་མངོན་སུམ་ལ་གནོད་པ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་གནོད་ན་ནི་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ཡང་ལེ་པར་མི་གནས་པར་འགྱུར་རོ།། རྗེས་སུ་དཔག་པས་མངོན་སུམ་དེ་ཉིད་ལས་འབྲེལ་བ་ཐོབ་ནས་ཡང་དེ་ཉིད་ལ་གནོད་པ་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལས་རིགས་པ་གཞན་ཅི་ཞིག་ཡོད་པར་འགྱུར། འོན་ཏེ་མངོན་སུམ་དུ་གྲུབ་པའི་དོན་ལ་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གནོད་པར་མི་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཐོབ་པར་བྱ་བ་ཐོབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དངོས་པོར་སྨྲ་བ་རྣམས་ལེགས་པར་གནས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བསལ་བ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་མངོན་སུམ་ནི་སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་དང་ཕལ་པ་དག་གིའོ།།

དེ་ལ་ཕལ་པ་དག་གི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པ་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་མ་ནོར་བ་ཞེས་མི་བྱའོ། །དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ན་ཐམས་ཅད་རྣལ་འབྱོར་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་གྱི་ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །རྣལ་(179b)འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ་ལས་ཕལ་བའི་མངོན་སུམ་བྱེ་བྲག་ཡོད་པར་ཡང་མི་འགྱུར་བས་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཇི་ལྟར་གྲགས་པའི་དོན་ལ་མི་སླུ་བ་ཙམ་ལས་དེ་མ་འཁྲུལ་བ་ཞེས་བྱ་བར་ཟད་དོ། །ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་

---

1 ངོ་བོ་དག་ཀྱང་ སྣ། པེ།

2 བསྐྱལ་ སྣ། པེ།

གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པ་ཙམ་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པར་ཞུགས་པའི་ཕྱིར་དེ་ལ་མི་སློབ་པ་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་སུམ་གྱི་ཚད་མ་ཡིན་གྱི། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཁོ་ནའི་མངོན་སུམ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དངོས་སུ་དེ་མི་སློབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་མ་ནོར་བ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཉིད་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་མི་སློབ་པས་དངོས་སུ་མ་ནོར་བ་ཡིན་ཏེ། དེས་ན་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་མཚན་ཉིད་མེད་པར་རབ་ཏུ་མཁྱེན་ཏོ། །རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་དུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་གིས་མཚན་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་[1]"ཇི་སྐད་དུ་མངོན་སུམ་གྱི་མཚན་ཉིད་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མཚན་ཉིད་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བར་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་སོ"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

དེ་ལ་མངོན་སུམ་གྱི་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི་དོན་ཐ་སྙད་པ་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་བརྫུན་པར་སྣང་བ་ལ་ཡང་བྱིས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དངོས་སུ་དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ལ་སོགས་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གནོད་པར་བྱེད་ཀྱི། མཐོང་བ་ལ་སོགས་པའི་དོན་ཐ་སྙད་ལ་ཡང་གནོད་པར་བྱེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་གང་ལ་མ་འཁྲུལ་པ་དེ་ནི་མངོན་སུམ་ཡིན་པས་དེ་ལ་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གནོད་པ་མེད་

1 མ་རྙེད།

དོ། །བདེན་པའི་ངོ་བོ་ལ་སོགས་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་གང་ལ་གནོད་པ་དེ་ནི་དེ་ལ་མ་འཁྲུལ་པ་མ་ཡིན་པས་མངོན་སུམ་ལ་སྐྱུར་བ་འདེབས་པར་ཐལ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །

རྗེས་སུ་(180a)དཔག་པས་ཚུ་རོལ་མཐོང་བའི་མངོན་སུམ་ལས་འབྲེལ་བ་ཐོབ་ཀྱང་དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཐོབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ནར་ཡིན་ཏེ། ཕ་རོལ་མ་ཡིན་པ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱིས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་པ་མངོན་སུམ་དུ་སོ་སོར་མི་སྨྲོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀུན་རྫོབ་པ་ལ་ཡང་གནོད་པ་ནི་མི་བྱེད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་ལ་བདེན་པའི་རྣམ་པ་ཉིད་དུ་སྒྲོ་བཏགས་པ་སེལ་བའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོར་སྨྲ་བ་དོན་མེད་པ་ལ་དོན་དུ་གྱུར་པར་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་རྣམས་ཇི་ལྟར་ལེགས་པར་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བར་འགྱུར། རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་གལ་ཏེ་རྗེས་སུ་དཔག་པས་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་མངོན་སུམ་ཁོ་ན་ལས་འབྲེལ་བ་ཐོབ་ནས་གནས་ཐོབ་པ་དང་ཤིང་གཉིས་དྲུད་པ་ལས་མེ་བྱུང་བ་བཞིན་དུ་མངོན་སུམ་དེ་ཉིད་ལ་ཡང་དག་པར་གནོད་པ་བྱེད་པར་གྱུར་ན་གནོད་པ་བྱེད་དུ་ཟད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ལ་ནི་དེ་ཙམ་གྱིས་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་འདོད་པར་བསྒྲུབ་པ་མེད་དོ། །འདི་ལྟར་འགྲོ་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མེའི་བུད་ཤིང་ཉིད་དུ་གྱུར་ལ། དེ་བརྟུན་པའི་བུད་ཤིང་འདི་ཐམས་ཅད་བསྲེགས་ཏེ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་མེ་རབ་ཏུ་ཞི་བས་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་མཆོག་རྟོག་པ་ཉེ་བར་ཞི་བའི་མཚན་ཉིད་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་ནི་འདོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་སྐད་དུ།

འགྲོ་བའི་ཆོས་ཀུན་རྣམ་ཤེས་ཀྱི། །

མེ་ཡི་བུད་ཤིང་ཡིན་པར་འདོད། །
དེ་དག་ཇི་བཞིན་རྣམ་འབྱེད་པའི། །
མེ་ཡིས་བསྲེགས་ནས་ཉེར་ཞིར་འགྱུར། །[1]

ཞེས་བཤད་པ་ལྟ་བུའོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སྐྱེས་ན་ཇེས་སུ་དཔག་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལྡོག་པར་འགྱུར་ཅིང་རྟེན་མེད་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་མི་འདོད་པར་འགྱུར་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པ་ལས། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག[2]པ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་ཉིད་ཡིན་ཡང་འབྲས་བུ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་འབྲས་བུ་ཆེ་བ་ཉིད་དུ་ཤིང་གཉིས་དྲུད་པ་ལས་བྱུང་བའི་མེའི་དཔེས་རབ་ཏུ་སྟོན་པར་མཛད་དོ།།

(21)གཞན་ཡང་གང་འདི་སྐད་དུ། གལ་ཏེ་(180b)ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་གྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་ཡོད་པའི་ཆོས་ཤིག་སྟོན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་བཟློག་པར་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིག་འགལ་བ་ཡིན་ནོ། །

(22)འོན་ཏེ་མེད་པའི་ཆོས་ཤིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་མེད་པ་དང་དངོས་པོ་མེད་པར་ཕན་ཚུན་འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་ན་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན།

(23)འོན་ཏེ་གཉི་གའི་ཆོས་ཤིག་ཡིན་ན་ནི་དེ་ཡང་མ་ངེས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར།

---

1 དབུ་མ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ། སྡེ་བསྟན། སྤྲིང་ཡིག གེ ༡༡༠ བ ༣ རིན་ཕྲེང་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། རྣམ་ཤེས་མེ་ཡི་བུད་ཤིང་ནི། །འགྲོ་ཆོས་འདི་ཀུན་ཡིན་པར་འདོད།། དེ་དག་ཇི་བཞིན་རབ་འབྱེད་པའི། །འོད་དང་ལྡན་པས་བསྲེགས་ནས་ནི།།

2 རྟོགས་ པ།

གཏན་ཚིགས་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བརྒལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འདི་ལྟར་འདི་ནི་རིགས་པ་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཡོད་པ་དང་། མེད་པ་དང་། གཉི་གའི་ཆོས་རྣམས་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་བསྒྲུབ་པ་ལ་གཏན་ཚིག་ཉིད་དུ་མི་སྲིད་དོ་ཞེས་བརྗོད་པ་ཡིན་གྱི། སྤྱིའི་ཆོས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་ན་ནི་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པ་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་མེད་པར་སྒྲུབ་པ་ལ་ཡང་སྐྱོན་ཀ་འདི་ཐམས་ཅད་ཅི་སྟེ་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར།

དེ་ལ་ཇི་ལྟར་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་ལ་དངོས་པོ་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་ཆོས་ནུས་པ་ལ་སོགས་པ་བཀག་པས་དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་སྒྲོ་བཏགས་པ་འགོག་པར་བྱེད་པ་ལ་ཡང་མེད་པའི་ཆོས་འབྲེལ་བ་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་བཀག་པས་དངོས་པོའི་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་དགག་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ལ་ཡང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་དག་ཅིའི་ཕྱིར་འབྲེལ་བ་མེད། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ནི་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡང་དགག་པར་བྱ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོད་པ་ལ་ནི་དེར་བྱ་བར་མི་ནུས་པ་ཁོ་ནའོ། །མེད་པ་ལ་ཡང་གལ་ཏེ་འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་འདི་མི་ནུས་ན་འདི་གང་ལ་ནུས་པར་འགྱུར། དངོས་པོ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་གང་ཡང་དག་པ་པའི་འབྲེལ་བར་འགྱུར་བ་ནི་འགའ་ཡང་མེད་དེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་བཀག་པས་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་ལྡོག་པ་ཙམ་སྟོན་པར་བྱེད་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ། །ཇི་ལྟར་དངོས་པོ་ཡོད་པ་ལ་ཡང་ཆོས་དང་། ཆོས་ཅན་གྱི་དངོས་པོ་འདི་ཐམས་ཅད་ཀུན་བརྟགས་པ་ཁོ་ནར་རྣམ་པར་འཇོག་པ་དེ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་ཡང་ཅི་སྟེ་རྣམ་པར་མི་བཞག (181a)

གཞན་ཡང་གང་དག་ལ་ནམ་ཡང་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་དོན་དམ་པ་པ་འགའ་ཡང་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་ལ། དེ་མ་གྲུབ་ན་ནི་དེ་བཞིན་དུ་གྱུར་པའི་དངོས་པོའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་མེད་པ་ཡང་མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་དག་ལ་ཡང་དག་པར་ན་ཆོས་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དང་གཉི་གའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་གཏན་ཚིགས་འགའ་ཡང་གང་དུ་ཡང་[1]མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་དེ་དག་ལ་དེས་བརྐྱལ་ཞིང་བརྟག་པའི་རིགས་ཏེ།[2] དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུར་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དང་གཉི་གའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་དག་ནི་ཡོད་པ་དང་དགག་པ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་རང་དང་མཐུན་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་གྲགས་པ་རྐོལ་བ་དང་ཕྱིར་རྐོལ་བ་དག་ལ་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པ་དེ་མེད་ན་མི་འབྱུང་བ་ཁོ་ན་སྨོས་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལ་ཆོས་དང་། ཆོས་ཅན་དང་འགལ་བ་དང་། ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དང་། རང་བཞིན་དང་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་བཞིན་རྣམ་པར་གཞག་པ་[3]ཐམས་ཅད་མི་འགལ་བ་ཉིད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ལྟ་བ་འདི་ལ་ཁ་ཅིག་ཆོས་དང་ཆོས་ཅན་འགལ་བ་ལ་སོགས་པས་ཕྱིར་རྐོལ་བར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་དག་གི་ཐ་སྙད་དང་། དོན་དམ་པའི་ཚུལ་མ་རིག་པའི་ཕྱིར་བཟླ་བར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བར་གཟུང་བར་བྱའོ།།

---

1 འགའ་ཡང་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་ སྣ། པེ།

2 བརྟགས་པའི་མཚུངས་པར་རིགས་ཏེ། སྣ། པེ།

3 རྣམ་པར་བལྟ་བ་ སྣ། པེ།

(24)གང་ཡང་དེ་ནི་ཚིག་ཙམ་གྱིས་འགྲུབ་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་པ་དེ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་སྨྲུན་འབྱིན་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་ཚིག་ཙམ་གྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ལ།

(25)ཐལ་བར་སྒྲུབ་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། ཡང་དག་པའི་ཚད་མ་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲུབ་བོ། །འདི་ལྟར་དངོས་པོ་རྣམས་ལ་དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་ཡོད་པར་གྱུར་ན་རྣམ་པ་གཉིས་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། ཐམས་ཅད་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་རག་ལས་ཏེ། སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་མདོ་སྡེ་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པ་པ་རྣམས་འདོད་པ་ལྟ་བུ་ཞིག་གམ། རང་བཞིན་གྱིས་ (181b)ཡང་དག་པར་གྲུབ་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བརྟེན་པའི་ཁོངས་སུ་གཏོགས་པ་ཞིག་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་མུ་སྟེགས་ཅན་ལ་སོགས་པ་དག་གིས་བདག་ལ་སོགས་པ་ཀུན་བརྟགས་པ་ལྟ་བུ་ཞིག་ཡིན་གྲང་། རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་དག་ནི་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཕུང་པོ་གསུམ་པ་ནི་མེད་དོ། །ངོ་བོ་ཉིད་འདིར་རྣམ་པ་གཉི་ག་ཡང་དོན་དམ་པ་པར་མི་རུང་སྟེ། དེ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། གནོད་པར་བྱེད་པ་ཡང་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་མངོན་སུམ་མམ། རྗེས་སུ་དཔག་པ་ཞིག་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་གྲང་ན། དེ་ལ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་པོ་ནི་གཉི་གས་ཀྱང་ཡང་དག་པར་འགྲུབ་པ་མེད་དོ། །འདི་ལྟར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་གྲུབ་ན། དེ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་ཞིག་ན། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་དེ་ཡང་རེ་ཞིག་མངོན་སུམ་གྱི་སྒོ་ནས་ནི་དོན་དམ་པར་མི་གྲུབ་བོ། །དེ་ནི་དབང་པོ་ལས་བྱུང་བའི་མངོན་སུམ་མམ། རང་རིག་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་འགྲུབ་གྲང་། ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་

རྣམས་རྣལ་འབྱོར་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་ཐ་སྙད་མི་འདོགས་པའི་ཕྱིར་དང་། ཡིད་ཀྱི་མངོན་སུམ་གང་ལ་ཡང་མ་གྲགས་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་གིས་ནི་དེ་འགྲུབ་པར་ནི་མི་བསམ་མོ།།

དེ་ལ་རེ་ཞིག་དབང་པོའི་མངོན་སུམ་གྱིས་ནི་དེ་མི་འགྲུབ་སྟེ། དེ་དོན་གཞན་ཡུལ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་ལ། དོན་གཞན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུར་གྱུར་བ་ཡང་དོན་དམ་པར་ཤེས་པས་འཛིན་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་གང་གིས་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རང་གི་ངོ་བོ་བཞིན་དུ་གཞན་ཡང་ཤེས་པར་འགྱུར་བ་གཞན་གྱི་ངོ་བོ་ནི་གཞན་མ་ཡིན་ལ། གཞན་དང་གཞན་མ་ཡིན་པ་དག་ནི་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་རྣམ་པར་སྐྱེས་པ་ཙམ་གྱིས་རྣམ་པར་ཤེས་པས་གཞན་རིག་གོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་རིགས་པར་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་ལྟ་ན་ནི་བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་གང་ཅུང་ཟད་རྣམ་པ་གཞན་གྱི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་འབྱུང་བ་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཕན་ཚུན་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ། །དེའི་རྣམ་པ་ཅན་གང་ཡིན་པ་ནི་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཁྱད་པར་བརྗོད་ཀྱང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་ནི་གང་གིས་ན་འདྲ་བ་(182a)ཅན་གྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཁོ་ནས་གཞན་རིག་པར་འགྱུར་གྱི། བུམ་པ་ལ་སོགས་པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་འགྱུར་བའི་ཁྱད་པར་ནི་འགའ་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་དེ་དག་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ཡང་རང་གི་ངོ་བོར་གནས་པའི་ཕྱིར་གཞན་ལ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པར་འདྲ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཁྱད་པར་མེད་ན་དོན་བྱེད་པ་དོན་དུ་གཉེར་བ་རྣམས་ཀྱིས་དངོས་པོ་རྣམས་རང་དགའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པའི་ཁྱད་པར་ཙམ་གྱིས་རྣམ་པར་སྤྲར་ཀྱང་སོ་སོར་ངེས་པའི་དོན་བྱེད་པའི་རང་བཞིན་རྣམས་ནི་གང་དུ་ཡང་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་པར་མི་ནུས་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་

ཕྱིར་རོ།།

སློས་གར་མཁན་དང་། སླ་བ་དང་། གླུད་ལ་ལྟ་བ་ལྟ་བུ་མང་པོ་རྣམས་གཅིག་ལ་ལྟ་བ་དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དག་ལ་ཡང་ཕན་ཚུན་འདྲ་བ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་དང་། ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་ཀུང་ཕན་ཚུན་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ན་ཞེས་ཁྱད་པར་གཞན་བརྗོད་ཀྱང་དོན་གཞན་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་གཏད་པར་ཡང་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱད་པར་འདོད་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་བར་བརྟགས་པ་ཡིན་པས་ཁྱད་པར་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཞན་ཡང་གཞན་དུ་གྱུར་པ་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་གྲུབ་ན་ནི་ཤེས་པའི་ཁྱད་པར་དེ་དང་འདྲ་བ་དང་། དེ་ལས་བྱུང་བའི་མཚན་ཉིད་འགྲུབ་པར་གྱུར་པ་ཞིག་ན། གང་གི་ཚེ་ཤེས་པས་གཞན་ཇི་ལྟར་འཛིན་ཞེས་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ་[1]བྱེད་པ་ན་དོན་གཞན་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ན་དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་ན་མ་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ལ་ཁྱད་པར་གྱིས་[2]གྲུབ་པའི་ལམ་གྱི་ཁྱད་པར་དག་སྒྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ་ཞེས་བཤད་པ་ལྟ་བུའོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པའི་སྐད་ཅིག་མཚུངས་པ་དེ་མ་ཐག་པའི་རྐྱེན་དོན་མཐུན་པའི་སྟོབས་ལས་བྱུང་བ་ལས་སྐྱེ་བ་ཕྱི་མ་ཕྱི་མ་རྣམས་ཀྱང་ཤེས་པའི་སྐད་ཅིག་སྔ་མ་སྔ་མ་ལ་ལྟོས་ནས་དེ་ལས་བྱུང་བ་དང་འདྲ་བར་སྲིད་པའི་ཕྱིར་སྔ་མ་རྣམས་[3]ཤེས་པ་ཕྱི་མའི་གཟུང་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་བཟློག་དཀའ་བ་ཉིད་དོ།།

གཞན་ཡང་རེ་ཞིག་གང་དག་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ཡན་ལག་ཅན་ལ་སོགས་པའི་

1 དཔྱོད་པ་ པེ།

2 ཁྱད་པར་ཡིན་ཏེ་ཇི་སྐད་དུ་ སྣ། པེ།

3 སྔ་མ་རྣམས་ཤེས་པ་ཕྱི་མ་སྔ་མ་རྣམས་ཤེས་པ་ སྣ། པེ།

དངོས་པོ་མངོན་སུམ་དུ་འདོད་པ་དེ་དག་གི་ལྟ་བ་ལ་ཡང་དེ་ཅི་ལྟར་རང་གི་གྲུབ་པའི་མཐའ་ལས་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་དེ་བཞིན་དུ་མངོན་(182b)སུམ་དུ་སྣང་བ་སྐྱོང་བ་མེད་དེ། ནམ་ཡང་ཡན་ལག་ཅན་དུ་རྟོགས་པ་དེའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་མངོན་སུམ་དུ་སྐྱོང་བ་ནི་མེད་ཀྱི། རྟག་ཏུ་ལག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡན་ལག་གི་ཚོགས་དུ་མའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་སོ་སོར་སྐྱོང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ལ་སོགས་པ་ཡན་ལག་ཅན་ལ་ཡོད་པའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་ཉམས་སུ་སྐྱོང་བ་ཡང་མེད་དེ། རྟེན་མངོན་སུམ་ཉིད་མ་ཡིན་ན་དེ་ལ་ཡོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལ་སོགས་པ་འབའ་ཞིག་མི་འཛིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འཆི་ལྟས་དང་། མིག་སྔོན་དང་། མིག་སེར་དང་། རབ་རིབ་ལ་སོགས་པས་མིག་ཉམས་པ་རྣམས་དང་། ཡུལ་རིང་བ་དང་ཉེ་བ་ལ་སོགས་པ་ན་གནས་པ་རྣམས་དངོས་པོ་གཅིག་ལ་ཡང་རྣམ་པ་ཕན་ཚུན་མི་མཐུན་པ་དུ་མ་ཅན་གྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་སེམས་དག་ལ་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡན་ལག་ཅན་ལ་སོགས་པར་གཏོགས་པའི་འདྲ་བ་ཡོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཐ་དད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་དེ་སྙེད་ཀྱི་འདིའི་ངོ་བོ་ཉིད་དམ།[1] ཡོན་ཏན་ལ་སོགས་པ་སྐྱེས་པ་ནི་མེད་དོ། །ཡོན་ཏན་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་འགལ་བ་དང་ལྡན་པ་ཡང་གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་སྣ་ཚོགས་ཀྱང་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་ལོ།།

གགས་བྱེད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཡོན་ཏན་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་མཐའ་དག་ཀྱང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །མི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དག་ན་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའི་དོན་གཞན་དེ་ལྟ་བུ་མེད་ཀྱང་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་

1 དེའི་ཆེ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་ སྣ། པེ།

པར་སྣང་བའི་ཤེས་པ་དེ་ལྟ་བུ་སོ་སོར་མྱོང་བས་འགྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཡང་རྣམ་པའི་དབང་གིས་དོན་གཞན་འཛིན་པར་རྣམ་པར་གཞག་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གང་དག་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་དོན་རྡུལ་ཕྲ་རབ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་སྨྲ་བ་དེ་ལ་ཡང་ཉེས་པ་མཚུངས་པ་ཉིད་དེ། དངོས་པོ་ཕྲ་མོ་ཡན་ལག་མེད་པ་རྣམ་པ་དུ་མ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་སོ་སོར་མི་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དང་། ཚོགས་པ་གཅིག་པ་རྣམས་ཡུལ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་པའི་ཕྱིར་དང་། རྟག་ཏུ་མི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་རགས་པར་སྣང་བའི་ཤེས་པ་སོ་སོར་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དང་། འདུས་པ་ཅན་དག་ལས་འདུས་པ་དོན་གཞན་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། འདུས་པ་རྣམ་པར་རྟོག་པས་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ཡང་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། (183a)

རགས་པར་འགྲུབ་པ་དངོས་པོ་དུ་མ་འདབ་ཆགས་སུ་གནས་པ་འཛིན་པས་ཉེ་བར་བསྐྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཤེས་པ་ཡང་འགྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཚད་མ་མ་ཡིན་པར་ཐལ་ཏེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་རགས་པར་འགྲུབ་པ་འདི་ཡིད་ཁོ་ནས་ཀུན་བརྟགས་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འདི་གསལ་བར་མི་སྣང་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཡུལ་ནི་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་མི་གསལ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་དབང་པོའི་ཤེས་པའི་ཁོངས་སུ་གཏོགས་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྡུལ་ཕྲ་རབ་རྣམས་རྟག་ཏུ་མི་འཛིན་པ་ཁོ་ནར་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་དེའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མི་སྐྱེ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།།

རགས་པར་འགྲུབ་པ་དེ་འཛིན་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ཉིད་དུ་ཡང་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དང་པོ་ཁོ་ནར་རགས་པར་འགྲུབ་པ་སྐྱེ་བར་ཁས་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཚད་མ་

གཞན་གྱི་སྒོ་ནས་རྟུལ་ཕྲ་རབ་དག་གྲུབ་ན་རགས་པར་འབྲུལ་པ་དེ་འཛིན་པས་བྱས་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་ཞིག་ན། དེ་མ་གྲུབ་ན་རགས་པར་འབྲུལ་པ་འདི་དེ་འཛིན་པར་བྱས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་ལྟ་ག་ལ་འགྱུར། རྣི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ན་རྟུལ་ཕྲ་རབ་འཛིན་པ་མེད་ཀྱང་རགས་པར་འབྲུལ་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་འདི་དེ་འཛིན་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །སྤྱི་ངམ་དག་ན་དངོས་པོ་ཆུང་དུ་ཡང་ཐག་རིང་པོ་ནས་ཆེན་པོ་ཉིད་དང་ལྡན་པར་སྣང་བ་དང་། ཐག་རིང་བ་དང་ཉེ་བའི་བྱེ་བྲག་གིས་གསལ་བ་དང་མི་གསལ་བར་སྣང་བའི་བྱེ་བྲག་ཏུ་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། དངོས་པོ་དེ་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་རྣམ་པ་རྣམས་ཡང་དག་པ་ཉིད་དུ་འདོད་ན་དེའི་ཚེ་རི་མོ་བརྐྱང་[1]པ་ལ་སོགས་པ་དག་ལ་ཤེས་པའི་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་བཞིན་དུ་ཐ་དད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །གང་གིས་ན་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཉིད་གཞུང་གཟུགས་པའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་དུ་མ་སྐྱེ་བར་རྟོགས་[2]པ་ལེགས་པར་འགྱུར་བ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡུལ་ལ་བཀྲམ་པ་ལྟ་བུར་འདུག་པར་ཡོངས་སུ་འཛིན་པར་སྐྱེ་བ་ཡང་མེད་དེ། ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ལ་ཡུལ་ན་གནས་པ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་དང་། ཡུལ་ན་མི་གནས་པ་རྣམས་ཀྱང་བྱང་དང་། ཤར་ལ་སོགས་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཏུ་(183b)སྐྱེ་བར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ།། །ཤེས་པ་དེ་ལྟར་མི་སྐྱེ་ན་ཡང་ཡུལ་ལ་བཀྲམ་པ་ལྟ་བུར་སྣང་བ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་པ་གཅིག་དང་ངོ་བོ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་བཞིན་དུ་རྣམ་པ་རྣམས་ངོ་

---

1 རྐྱང་པ་ པེ།

2 རྟོག་ པེ།

བོ་ཉིད་གཅིག་པར་ཐལ་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། །ཐ་དད་པ་ཡིན་ན་ནི་དེ་དག་ཀྱང་དོན་བཞིན་དུ་ཤེས་པས་འཛིན་པར་མི་འཐད་དེ། དོན་གཞན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་འཛིན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་གཞན་དང་གཞན་དུ་རྟོག་ན་ཡང་རྣམ་པ་རྣམས་ཐུག་པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ།། རྣམ་པ་གཞན་དང་གཞན་སྣོང་བ་ཡང་ནམ་ཡང་མེད་དོ། །འོན་ཏེ་དེ་དག་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་དུ་བསམ་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། འོ་ན་དེའི་ཚེ་དེའི་དབང་གིས་དོན་གཞན་རྣམ་པར་གཞག་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཟུང་བའི་རྣམ་པ་ཡང་བརྟགས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ།།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་ཤེས་པའི་འདུ་བ་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དོན་བཞིན་དུ་ཤེས་པ་ཡང་ལྡན་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་གཞན་གྱི་སེམས་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱང་འདོད་ཆགས་དང་བཅས་པ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། གཞན་གྱི་སེམས་འདོད་ཆགས་དང་བཅས་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་འཛིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཕྱོགས་གཅིག་གིས་འདུ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ལ་ཆ་ཤས་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །ལྡོག་པའི་ཐ་དད་པར་ཉེ་བར་བརྟགས་པས་བྱས་པའི་ཕྱོགས་གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཐམས་ཅད་ལ་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པའི་འདུ་བ་[1] སྲིད་པའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐམས་ཅད་རིག་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་ལ་འདུ་བ་ཡང་བརྟགས་པར་འགྱུར་གྱི་དོན་དམ་པ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་འདུ་བའི་སྒོ་ནས་ཤེས་པ་ངོ་བོ་གཞན་འཛིན་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ་དེ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

1 འདུ་བ་ཡོད་དུ་ཟིན་ཀྱང་འོན་ཀྱང་དོན་གཞན་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡུལ་
ནི་རྒྱུ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཤེས་པ་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དུས་དེའི་ཚེ་ན་མི་ཉེ་བའི་ཕྱིར་རོ།། སྣ།

འདྲ་བ་ཡོད་དུ་ཟིན་ཀྱང་འོན་ཀྱང་དོན་གཞན་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡུལ་ནི་རྒྱུ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཤེས་པ་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དུས་དེའི་ཚེ་ན་མི་ཉེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཉེ་བ་ཡིན་ན་ཡང་དེ་མི་འཛིན་པ་ཉིད་དེ། ཤེས་པ་བདག་ཉིད་ལ་ཡོད་པའི་འདྲ་བ་ཁོ་ན་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དང་། གཉིས་པ་དོན་ལ་ཡོད་པའི་རྣམ་པ་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །སྣང་ན་ཡང་དེ་ལ་ཡང་བཀལ་ཞིང་བཏགས་པ་མཚུངས་(184a)པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་དེའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་གང་ཡིན་པ་འདི་ཉིད་འདི་འཛིན་པ་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་བཏགས་[1]པའི་སྒྲོ་ནས་ཡིན་དུ་ཟད་དེ། འདི་ཙམ་གྱིས་དངོས་པོ་དེ་ལྟ་བུའི་ངོ་བོར་འགྱུར་བ་ནི་མེད་དེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །བྲམ་ཟེའི་ཁྱེའུ་ལ་མེ་ཞེས་ཉེ་བར་བཏགས་ཀྱང་སྲེག་པ་དང་འཚེད་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་རྣམ་པར་སྦྱོར་བ་ནི་མེད་དོ། །རྣམ་པའི་དབང་གིས་དོན་གཞན་རྣམ་པར་འཛོག་ན་ཡང་དེ་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་གྱི། མངོན་སུམ་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གང་གིས་ན་དེ་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་དོན་གཞན་ཉེ་བས་རྣམ་པ་ལ་ཁྱབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། མི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དག་ན་དོན་གཞན་མེད་ཀྱང་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་གཞན་ནི་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་ཏུ་འགྱུར་པའི་ཕྱིར་དེ་ཤེས་པ་དེའི་རྣམ་པ་ཅན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་བ་ཉིད་དོ། །རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པ་གཏོད་པར་འབྲས་བུ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་མིག་ལ་སོགས་པས་འབྲེལ་བའི་ཕྱིར་དང་། སྒྲ་ལ་སོགས་པ་ཤེས་པའི་མཇུག་ཐོགས་སུ་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་

1 བཏགས་ པ།

སོགས་པ་ཡང་སྒྲ་ལ་སོགས་པར་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་རེ་ཞིག་སྣང་བ་དང་ལྡན་པའི་ཤེས་པས་དོན་གཞན་འཛིན་པར་རིགས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །སྣང་བ་མེད་པས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་དེའི་ཚེ་ཉེ་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཤེས་པས་གཞན་འཛིན་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་རྟོག་ན། དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་དོན་ཉེ་བ་མ་ལུས་པའི་ཡུལ་ཅན་དུ་འགྱུར་ཏེ། ཐམས་ཅད་ལ་དེ་ཡོད་པར་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །རྣ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ཅན་དུ་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཚེ་ཉེ་བར་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ནི་སྔོན་པོ་ཤེས་པའོ། །སེར་པོ་ཤེས་པའོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་རྒྱུ་ཁྱད་པར་འགའ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཁས་ལེན་ན་ནི་དེ་ཉིད་འདྲ་བ་ལས་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་ནོ།། (184b)

རྟོག་[1]པའི་ངོ་བོ་ཙམ་དུ་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་ལ་ནི་འདྲ་བ་མ་གཏོགས་པར་བྱེ་བྲག་ཏུ་འབྱེད་པ་གཞན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་ཡང་ཉེས་པ་བཤད་ཟིན་ཏོ། །འོ་ན་དེ་ཡང་ཉེ་བ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་ཤེས་པས་དོན་གཞན་སྤྱོད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་གྱི། འོ་ན་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན།[2] དེ་ལས་བྱུང་བའི་སྒོ་ནས་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཤེས་པའི་དུས་ན་དེའི་ཡུལ་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། མེད་པ་ཡང་འཛིན་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་དང་། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་དུས་མཉམ་པར་

---

1 རྟོགས་པ་ པ།

2 འོ་ན་ཅི་ཤེས་ཞེ་ན་ པ།

མི་རུང་བའི་ཕྱིར་དང་། སྔ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

མིག་གི་དབང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དེའི་རྒྱུ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་འཛིན་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཡུལ་དང་དུས་མཉམ་པ་ཚོགས་པ་གཅིག་ལ་རག་ལས་པ་ཁོ་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པས་འཛིན་གྱི། གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་རྟོག་ན་ཡང་མིག་ལ་སོགས་པ་ཡང་འཛིན་པར་ཐལ་བ་ཡང་བཟློག་དཀའ་བ་ཉིད་དོ། །གལ་ཏེ་དབང་པོ་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་མི་འཛིན་ཏོ་ཞེ་ན། དེ་ཉིད་ཡུལ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་ཏེ། ཡུལ་གྱི་མཚན་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཟུང་བ་ཉིད་ཀྱང་ཡུལ་གྱི་ངོ་བོ་ལས་གཞན་མ་ཡིན་ཏེ། དེས་ན་གང་གི་ཕྱིར་ཡུལ་མ་ཡིན་པ་དེའི་ཕྱིར་ཡུལ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་ཤེས་པ་རྣམ་པ་མེད་པས་ཀྱང་དོན་གཞན་འཛིན་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།། གཞན་གྱི་རྣམ་པ་ཅན་གྱིས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པར་གཞག་པ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་ལྟ་ན་ནི་རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་ཀྱང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ། །དོན་གཞན་སློག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་གཞན་ཉིད་ཀྱང་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །གང་གིས་ན་དོན་གཞན་འཛིན་པར་འགྱུར་བ་རྣམ་པ་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུར་གྱུར་པ་དོན་གཞན་འགའ་ཡང་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པས་དོན་དམ་པར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་མངོན་སུམ་དུ་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་នོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་ན།

དེས་དབེན་དེ་ཡི་རྣམ་པ་ཅན། །
མངོན་སུམ་རྣམ་པ་གཉིས་ཀྱིས་ནི། །

རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་ངེས། །[1]

ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ། བློ་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་དང་། ཅིག་ཤོས་ཀྱི་དོན་གཞན་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རྒྱུ་དང་འབྲས་(185a)བུའི་དངོས་པོ་ངེས་པར་བྱ་བའི་ཚད་མ་མེད་དུ་ཟིན་ཀྱང་། འོན་ཀྱང་ཤེས་པ་གཉིས་མེད་པར་སྨྲ་བ་ལ་ཙུང་ཟད་ཀྱང་གནོད་པ་མེད་དེ། རིགས་པ་སྨྲ་བ་དེའི་ལྟར་ན་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་གྱི་ལུས་གཙོ་བོ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ལ་[2]དོན་གཞན་མངོན་སུམ་དུ་རིག་པ་མ་ཡིན་དུ་ཆུག་ཀྱང་། ཤེས་པ་ཉིད་[3] རང་རིག་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུར་གྱུར་པ་གྲུབ་པ་ཡིན་པས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ནི་མངོན་སུམ་དུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་དེ་ཡང་རུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་མ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་དང་། ཇི་ལྟར་མྱོང་བའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་ཁྱེད་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་མ་གྱུར་པ་དངོས་པོར་ཡོད་པར་འདོད་ན་དེ་ནི་དེ་ལྟ་བུར་མྱོང་བ་མེད་དེ། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པའི་ཤེས་པ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །ཞེས་པ་དེ་ནི་ཇི་ལྟར་མྱོང་བ་དེ་ལྟར་གནས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ལ་གཉིས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ནི་

1 མ་རྟེད།

2 དེས་ན་ སྣ། པེ།

3 ཤེས་པ་གཉིས་ སྡེ།

འབྲུལ་པས་དེ་ལྟ་བུ་ཤེས་སོ་ཞེ་ན། འབྲུལ་པ་འདི་གང་ཡིན། གལ་ཏེ་ཤེས་པ་དེ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི། འོ་ན་དེ་མངོན་སུམ་མ་ཡིན་ཏེ། མངོན་སུམ་གྱི་མཚན་ཉིད་ནི་མ་འབྲུལ་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ལ། དེ་རྟག་ཏུ་བདག་ཉིད་ལ་བདག་ཉིད་ཁོ་ནས་འབྲུལ་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གཉིས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་ཡང་དེའི་བདག་ཉིད་སྣང་བའི་ཕྱིར་གཉིས་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཉམས་པར་ཐལ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། གཉིས་དང་གཉིས་མ་ཡིན་པ་དག་ནི་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིརརོ། །འབྲུལ་པ་དོན་གཞན་ཡིན་ཡང་དེ་དང་རང་རིག་པའི་མཐར་ཐུག་པ་ཉིད་ཡིན་པས་དེས་གཉིས་མེད་པ་དེ་ལྟར་ཤེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།[1] །གལ་ཏེ་མངོན་སུམ་ནི་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་ཙམ་ཞིག་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། འོ་ན་ནི་མངོན་སུམ་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་མ་ཡིན་ཏེ། རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །

གཞན་ཡང་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རང་གིས་གསལ་བའི་བདག་ཉིད་ལ་བྱ་བ[2]ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་དག་ཀྱང་རང་གིས་གསལ་བའི་ཕྱིར་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེ་དག་(185b)ཀྱང་བརྫུན་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེ་དང་འདྲ་བར་དེ་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པ་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་བརྫུན་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་ན་ཇི་ལྟར་མངོན་སུམ་གྱི་ཚད་མས་ཡང་དག་པར་འགྲུབ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོར་འགྱུར།

ཁྱད་པར་རྣམས་བརྫུན་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་སྤྱི་ཡང་དངོས་པོར་ཡོད་པ་མི་སྲིད་པ་ཉིད་དེ། སྤྱི་ནི་ཁྱད་པར་དག་ཁོ་ན་ལ་གཞན་རྣམ་པར་བཅད་ནས་

1 རང་རིག་པའི་མཐར་ཐུག་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། སྣ པེ།
2 བྱའི་ སྣ། བྱའོ། པེ།

ཐ་སྙད་འདོགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་ན་ཤེས་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་མི་མྱོང་བའི་ཕྱིར་འདིས་[1]རང་རིག་པའི་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་མི་རིགས་སོ། །ཤེས་པ་རང་རིག་པའི་མངོན་སུམ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་འོན་ཀྱང་དེ་ལས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ནི་མི་འགྲུབ་སྟེ། རང་གི་བདག་ཉིད་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུར་གྱུར་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཉིས་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ལྟོས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་གཉི་གའི་ངོ་བོ་བརྟགས་ན་ཡང་། ལྟོས་པ་དོན་གཞན་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་རང་རིག་པའི་མངོན་སུམ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ།། དེ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དེ་ལ་ལྟོས་ནས་རྣམ་པར་གཞག་པ་གཉི་གའི་ངོ་བོ་ཡང་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་རིག་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཤེས་པ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་ངོ་བོ་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་དག་ཀྱང་དུས་ཐ་དད་པའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་གཅིག་ལ་སྣང་བ་མེད་དོ། །བདག་ཉིད་ཁོ་ནར་ཡོངས་སུ་གཏོགས་པའི་ཕྱིར་འདི་དག་ཕན་ཚུན་རང་གི་ངོ་བོ་མྱོང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ན་ཤེས་པ་གང་ཞིག་ལ་དེ་གཉིས་མངོན་སུམ་དུ་མྱོང་བ་ཉིད་དུ་འགྱུར། དེ་གཉིས་ཤེས་པ་གཅིག་ལ་མི་མྱོང་ན་ནི་གང་གིས་ཀྱང་འབྲེལ་བ་གཟུང་བར་མི་ནུས་སོ། །ཤེས་པ་གཅིག་ལ་སྣང་བ་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་འདི་ནི་རྒྱུའོ། །འདི་ནི་འབྲས་བུའོ་ཞེས་མངོན་སུམ་དུ་དེ་གཉིས་དེ་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་གཟུང་བར་ནི་མི་ནུས་ཏེ། དེ་ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཀུན་ཏུ་འབྲེལ་པ་མ་བཟུང་བར་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་གཟུང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།།

དོན་དམ་པར་དེའི་རྗེས་ལ་ཐོབ་པ་གཏན་ལ་འབེབས་པའི་ཤེས་པས་ཀྱང་དེ་གཉིས་རྟུང་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེས་དེ་དག་ཉམས་སུ་མ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

---

1 འདི་ པ།

གཞན་གྱིས་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་གཞན་གྱིས་གཏན་ལ་འབེབས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུད་གཅིག་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གཅིག་གིས་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་བརྟགས་པ་ཡང་ (186a)རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུད་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་བརྟགས་པ་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུད་ཅན་ཐ་དད་པ་རྣམས་ཀྱང་ཕན་ཚུན་མྱོང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཏན་ལ་འབེབས་པའི་ཤེས་པའི་དུས་ན་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་འདས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་རིག་པའི་མངོན་སུམ་གྱི་སྒོ་ནས་ཀྱང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ཡང་དག་པ་པ་མི་འགྲུབ་བོ། །ཇི་སྟེ་གལ་ཏེ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་མངོན་སུམ་དུ་ཉམས་སུ་མ་མྱོང་ན་ཇི་ལྟར་དེ་ལ་བླུན་[1]པའི་ངོ་བོ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་སྙམ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དག་ན་དོན་ཉམས་སུ་མ་མྱོང་ཡང་དྲན་པ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་དང་།[2] དེ་ཡང་རང་གི་ངོ་བོར་མཐར་ཐུག་པས་དོན་དམ་པར་གཞན་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་མི་འགྲུབ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ་སྔར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་རེ་ཞིག་མངོན་སུམ་གྱི་སྒོ་ནས་ནི་དེ་འགྲུབ་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

རྗེས་སུ་དཔག་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཚུལ་གྱིས་མངོན་སུམ་དུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཆོས་ཅན་འགའ་ཡང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་གང་ལ་དེའི་དངོས་པོ་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པར་བྱ། གཏན་ཚིགས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རང་གི་ངོ་བོ་དང་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །དཔེའི་ཆོས་ཅན་ཡང་མ་གྲུབ་སྟེ། ཐམས་ཅད་དུ་བཏགས་ཞིང་བརྟག་པ་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

---

1 དྲན་པའི་ པ།

2 ཕྱིར་ལ། པ།

གཞན་ཡང་རེ་ཞིག་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་ཀྱིས་ནི་དེའི་དངོས་པོ་བསྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ལ་གཅིག་བརྟེན་པའི་ཉེས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་གྲུབ་ན་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་སུ་འགྱུར་ལ། འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་ཡང་དག་པར་གྲུབ་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་གྲུབ་པས་གཅིག་ལ་གཅིག་བརྟེན་པ་ཉིད་དུ་གསལ་རབ་པ་ཉིད་དོ། །རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཀྱང་ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་གང་དུ་འཇུག་པར་འགྱུར། ཆོས་ཅན་གྲུབ་ཏུ་ཆུག་ན་ཡང་[1]རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་དོན་དམ་པ་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་གང་དུ་ཡང་གཏན་ཚིགས་ལ་ཁྱབ་པ་ནི་མ་གྲུབ་སྟེ། ཐམས་ཅད་དུ་བཀལ་ཞིང་བརྟག་པ་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གཞན་ཡང་ཁྱེད་ཀྱིས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ཉིད་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་[2]ཕྱིར་འདི་ལྟ་སྟེ་དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཡིན་ན་དེ་ཡང་འཁྲུལ་པ་ཡིན་ཏེ། དེའི་རྒྱུ་དང་དུས་མཉམ་པ་ཟ་ཡོད་པ་འགྲོ་བ་མ་(186b)ལུས་པ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཉིད་ཡིན་ཡང་དེའི་རྒྱུ་ཅན་ཉིད་དུ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་ཡང་རྒྱུན་ཁོ་ན་ལ་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་དང་ལྡོག་པ་དག་གིས་དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པའི་གཏན་ཚིགས་ཉིད་དུ་བརྗོད་ཀྱི། སྐད་ཅིག་མ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་འདིར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དོན་དམ་པ་པ་གྲུབ་པའི་སྐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་མ་གཏོགས་པར་དོན་དམ་པ་པའི་རྒྱུན་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།

1 བཙུག་ན་ཡང་ སྡེ།

2 འགྲུབ་པར་བྱ་བ་ སྣ། པེ།

འབྲས་བུའི་སྐད་ཅིག་མ་གང་ཞིག་རྒྱུའི་སྐད་ཅིག་མ་གང་ཞིག་ཡོད་ན་ཡོད་པར་རྟོག་པ་དེ་ནི་དེ་དང་དུས་མཉམ་པ་ན་ཡོད་པའི་ཐམས་ཅད་དུ་གཏོགས་པའི་སྐད་ཅིག་མ་མ་ལུས་པ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་ལྟར་དེ་རང་གི་རྒྱུའི་སྐད་ཅིག་མ་ཡོད་ན་མཐོང་ལ། དེ་མེད་ན་མ་མཐོང་བ་དེ་བཞིན་དུ་དེའི་རྒྱུའི་སྐད་ཅིག་མ་དང་དུས་མཉམ་པ་ན་[1]ཡོད་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཏོགས་པའི་སྐད་གཅིག་མ་མ་ལུས་པ་ཡོད་ན་ཡང་མཐོང་ལ། དེ་མེད་པར་ཡང་མ་མཐོང་བས་དེ་དེའི་རྒྱུ་ཅན་ཉིད་དུ་ཡང་ཅི་སྟེ་མི་འགྱུར། གཞན་ཡང་དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་འདིར་[2]དེ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲས་ནི་ཆོས་ཅན་གཞན་རྒྱུར་གྱུར་པ་ལ་སྨྲེགས་ན་དེ་ཡང་རེ་ཞིག་དོན་དམ་པར་མངོན་སུམ་དུ་མ་གྲུབ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ་སྔར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ།།

རྗེས་སུ་དཔག་པས་ཀྱང་ཆོས་ཅན་ཡོད་པར་གྲུབ་པ་མི་སྲིད་དེ། ཡོད་པར་སྒྲུབ་པ་ལ་གཏན་ཚིགས་ཐམས་ཅད་ཉེས་པ་གསུམ་ལས་མི་འདའ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་ན་རེ་ཞིག་ཡོད་པའི་ཆོས་ནི་གཏན་ཚིགས་སུ་མི་སྲིད་དོ། །མེད་པའི་ཆོས་ཀྱང་འགལ་བའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གཉི་གའི་ཆོས་མི་འགྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ། མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཞིག་གིས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་རྣམ་པ་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་མ་གྲུབ་ན་ཅིག་ཤོས་ཀྱི་དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་གྲུབ་སྟེ། དེ་ནི་དེ་ལ་ལྟོས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འབྲས་བུའི་སྒྲུབ་པ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ནར་མི་སྲིད་པ་ཡིན་ནོ། །དེས་ན་འདིར་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ནི་རྒྱུ་

1 ནི་ སྣ། པེ།

2 ཡོད་པའི་ཕྱིར་དེ་ཞེས···· སྣ། པེ།

དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་མི་འགྲུབ་བོ།།

མི་དམིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཐམས་ཅད་ནི་དགག་པ་སྒྲུབ་པ་པོ་ན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་སྒྲུབ་པ་ནི་(187a)མངོན་སུམ་དུ་མི་དམིགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བཤད་པ་དེ་ལ་ཡང་མི་དམིགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ནི་དེ་ལས་གཞན་པ་དམིགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་མངོན་སུམ་པོ་ན་ཡིན་པར་དགོས་ཀྱི། རྗེས་སུ་དཔག་པ་ནི་མ་ཡིན་នོ། །དེ་ཡང་ཇི་ལྟར་ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་དེ་ལྟར་སྔར་བཤད་ཟིན་པ་པ་ཉིད་དོ།།

གཞན་ཡང་དམིགས་པའི་རིག་བྱར་གྱུར་པ་མི་དམིགས་པ་གང་ཞིག་གང་ཡོད་ན་ཡང་དག་པར་དམིགས་པ་དེ་ནི་དེའི་འབྲས་བུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་རྗེས་སུ་འགྲོ་བའི་སྒོ་ནས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་འགྲུབ་པར་བརྗོད་པ་དེ་ལ་ཡང་དོན་དམ་པར་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་པོ་ན་ཡིན་ཏེ། ཅི་དེ་ལ་ན་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཞིག་ཡིན་ནམ། འོན་ཏེ་མི་སྣང་བ་ཤ་ཟ་ལ་སོགས་པ་ཉེ་བས་སམ། འོན་ཏེ་ཡུལ་ཐག་རིང་པོ་ན་གནས་པའི་དངོས་པོ་གཞན་ཞིག་ཉེ་བའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཞེས་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཡིན་ནོ། །དམིགས་པའི་རིག་བྱར་གྱུར་པ་མི་དམིགས་པའི་སྒོ་ནས་ནི་དེ་ཡུལ་གཞན་ནས་འོང་བ་དང་སྦ་ནས་ཡོད་པ་ཉིད་འགོག་པར་འགྱུར་གྱི། གཞན་གྱི་[1]འབྲས་བུ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཉིད་ནི་འདོད་རྒྱལ་བར་ཡང་འགྱུར་ཏེ། ཟླ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་ཐག་རིང་པོ་ན་གནས་པ་ཡང་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུའི་དངོས་པོར་ཁས་མི་ལེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གང་ཡང་དེའི་རྒྱུ་གཞན་དག་ནུས་པ་ཡིན་པ་ལས་

1 གྱིས་ སྣ། པེ།

གང་ཞིག་མེད་ན་གང་མེད་པ་དེ་ནི་དེའི་འབྲས་བུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ལྡོག་པའི་སྒོ་ནས་དེ་འགྲུབ་པར་བཤད་པ་དེ་ལ་ཡང་དོན་དམ་པར་ན་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ལས་མི་ལྡོག་པ་ཉིད་དེ་གཞན་ཤ་ཟ་ལ་སོགས་པའམ། ཡུལ་ཐག་རིང་པོ་ན་གནས་པ་འགའ་ཞིག་མེད་ན་ཡང་དེ་མེད་པར་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་མེད་ན་མེད་པ་འདོད་རྒྱལ་བ་ཉིད་དུ་ཡང་སྲིད་པའི་ཕྱིར་ཏེ། མ་ཆུང་མར་ལེན་པའི་ལུགས་ཅན་གྱི་ཡུལ་ནས་སྐྱེ་བའི་འབྲུག་གོ། མ་ཆུང་མར་ལེན་པ་མེད་ན་མེད་པ་བཞིན་ནོ། །འོན་ཏེ་ཡང་གཞན་དག་དེའི་རྒྱུར་ནུས་པ་ཡིན་པ་ལས་ཞེས་ཁྱད་པར་དུ་བྱས་པའི་ཕྱིར་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བར་མི་འགྱུར་རོ་སྙམ་ན། གཞན་དག་དེའི་རྒྱུ་ཉིད་དུ་ནུས་པའི་ཁྱད་པར་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དེ་ཉིད་[1]བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་སྐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཡིན་ན་དེ་ཉིད་ངེས་པར་བྱ་བའི་(187b) ཕྱིར་དེའི་རྒྱུ་དག་ནུས་པ་ཡིན་པ་ལས་ཤེས་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པའི་ཁྱད་པར་སློས་པ་མཁས་པ་རྣམས་ཇི་ལྟར་ངེས་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལ་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་དང་ལྡོག་པའི་སྒོ་མ་གཏོགས་པ་གཞན་དུ་གང་གིས་ན་དེའི་ཁྱད་པར་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་དེའི་རྒྱུའི་དངོས་པོར་ངེས་པ་ནི་མེད་དེ། དེ་ལ་ཡང་ཐུག་པ་མེད་པའི་ཉེས་པ་[2]ཡིན་ནོ། །དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་ཀྱང་ལྷན་ཅིག་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ངོ་བོ་ཉིད་ཐ་དད་པ་བཞིན་དུ་དེ་གཞན་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་དོགས་པ་གང་གིས་བཟློག་པར་འགྱུར། མ་མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་ནི་དེ་མེད་པར་ངེས་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།།

---

1 དེ་ཉིད་བསྒྲུབ···· སྣ།

2 ཉེས་པ་དེ་བཞིན་དུ་ སྣ། པེ།

ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་རྣམས་ལ་ནི་གང་གིས་ན་གཞན་ལས་དེ་མི་འབྱུང་བ་ངེས་པར་ཡང་འགྱུར་བ་མ་ལུས་པ་གསལ་བར་མཐོང་བ་ནི་མེད་དོ། །གལ་ཏེ་གཞན་ལས་ཀྱང་དེ་འབྱུང་ན་ནི་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ལ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་། མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པ་ལྷན་ཅིག་བྱེད་པ་དག་ལས་ཀྱང་མི་སྐྱེ་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ལ་ཡང་ཁྱད་པར་ཐ་དད་པ་དག་གོ་ན་ལ་ལྷན་ཅིག་བྱེད་པའི་རྐྱེན་རྣམས་ཉེ་བར་སྦྱོར་གྱི། འབྲས་བུ་གོ་ན་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱད་པར་རྣམས་དོན་དམ་པར་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་ཆ་ཤས་ཀྱིས་ཀྱང་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་ནོ་སྙམ་ན་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ལ་ཆ་ཤས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གལ་ཏེ་ཁྱད་པར་རྣམས་ནི་ལྡོག་པའི་བྱེ་བྲག་ཏུ་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་དུ་བསམ་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། འོ་ན་ནི་དེ་དག་ཁྱད་པར་རྣམས་ལ་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འགའ་ཡང་བརྟགས་པ་དག་གིས་རྒྱུ་ཉིད་དུ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཚོགས་པ་གོ་ནས་སྐྱེད་པ་དང་། ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་གྱི། སོ་སོ་རེ་རེ་ནས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཚོགས་པ་ཅན་ལུས་མ་གཏོགས་པར་ཚོགས་པ་མ་གྲུབ་པས་ཚོགས་པ་རྣམས་རེ་རེ་ཞིང་རྒྱུར་ཁས་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་དམ་པར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཚད་མ་ཉུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཀུན་རྫོབ་པ་གོ་ན་ཡིན་པ་ལ་སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་རྗེས་སུ་འགྲོ་(188a)བ་དང་ལྡོག་པའི་སྒོ་ནས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཇི་ལྟར་གྲགས་པ་བཞིན་དུ་གྲུབ་པ་ཉེ་བར་བརྗོད་ཀྱི། དོན་དམ་པར་ནི་མ་

ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་གཟུང་བར་བྱའོ།།

དེ་ལྟར་ན་རེ་ཞིག་མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོན་དམ་པ་པ་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ། སྔ་ལ་སོགས་པ་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པ་ནི་ཚད་མ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ལ། ཚད་མ་མ་ཡིན་པ་ནི་ཚད་མ་འདི་གཉིས་པོ་ཁོ་ནའི་ནང་དུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྟག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པར་འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཚད་མ་ཡང་མེད་དེ། འདི་ལྟར་དེ་ཡང་མངོན་སུམ་གྱི་སྒོ་ནས་ནི་མི་འགྲུབ་སྟེ། དེ་ཡང་སྔ་མ་བཞིན་དུ་ཤེས་པ་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ལ་སོགས་པས་འཛིན་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ།། བདག་ལ་སོགས་པ་རྟག་པའི་དངོས་པོ་ནི་གང་དུ་ཡང་ཇི་ལྟར་རང་གི་གྲུབ་པའི་མཐའ་ལས་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་བཞིན་མངོན་སུམ་གྱི་སེམས་ལ་སྣང་བར་མངོན་པ་མེད་དོ།། དེ་མངོན་སུམ་གྱི་སེམས་ཀྱི་ཡུལ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེ་ཡོད་པ་ཙམ་གྱིས་ཡོད་པ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོད་པར་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། གཞན་དག་གིས་ཁྱད་པར་དུ་བྱར་མེད་པ་ནི་དེ་ལས་ལྡོག་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་དང་། རྒྱུ་མ་ཡིན་པ་ཡང་ཡུལ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པས་ཡུལ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་[1]བརྟགས་ན་ཡང་དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ནར་རྟག་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། དེས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་རྗེས་སུ་འབྲངས་ན་དེ་ཡང་རྗེས་སུ་འབྲང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དེས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་

1 ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྟགས་ པེ།

ཉིད་རྗེས་སུ་འབྲང་བར་མི་རུང་སྟེ། དེས་རྣམ་པར་ཞེས་པར་བྱ་བ་ཉིད་ནི་དེ་ལ་ལྟོས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་ནི་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་མི་འགྲུབ་སྟེ། དེ་དང་རྟགས་འགའ་ཡང་ལྷན་ཅིག་འབྲེལ་བར་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་ནི་མི་སྲིད་དེ། །དེ་ལས་རིམ་དང་ཅིག་ཅར་དག་གིས་འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །མངོན་སུམ་མ་ཡིན་པའི་དོན་དང་ནི་འགའ་ཡང་ལྷན་ཅིག་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་གཟུང་[1]བར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ནི་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་དང་ལྡོག་པས་ཡང་དག་(188b)པར་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ན། བདག་ལ་སོགས་པ་ནི་གང་དུ་ཡང་འབྲས་བུ་བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་རྗེས་སུ་འགྲོ་བར་མ་གྲུབ་སྟེ། དེ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་ཡིན་ཡང་། རེས་འགའ་བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ།། ལྡོག་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་རྟག་པ་ཉིད་ཀྱིས་ལྡོག་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཀྱང་དེ་ཡོད་པ་བསྒྲུབ་པ་མི་སྲིད་དེ། གཞི་ཆོས་ཅན་འགའ་ཡང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། ཡོད་པ་དེ་བསྒྲུབ་པ་ལ་གཏན་ཚིགས་ཐམས་ཅད་སྔ་མ་བཞིན་དུ་ཉེས་པ་གསུམ་ལས་མི་འདའ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཆོས་ཅན་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་གྲགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་དོན་དམ་པར་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་དག་ནི་རེས་འགའ་བ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཀྱང་རྟག་པ་ཉིད་དང་། དེ་ལ་ལྟོས་པ་ཉིད་དུ་འཐད་པར་དཀའ་བའི་ཕྱིར་རོ། །མི་དམིགས་པས་ཀྱང་དེ་ཡོད་པར་གྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དགག་པ་གྲུབ་པར་ནུས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དགག་པ་སྒྲུབ་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

---

1 བཟུང་ པ།

གཞན་ཡང་རེ་ཞིག་རང་བཞིན་མི་དམིགས་པ་ནི་མི་སྲིད་དེ། དེ་ནི་མེད་པའི་ཐ་སྙད་སྒྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །དབང་པོས་མི་སོད་པའི་དོན་དང་འགའ་ཡང་ལྡན་ཅིག་འགལ་བ་དང་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དང་། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོའང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་འགལ་བ་དམིགས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་མི་སྲིད་དོ། །ཚད་མ་གཉིས་ལས་མ་གཏོགས་པ་ཚད་མ་གཞན་ཡང་མེད་དོ་ཞེས། གཞན་དུ་གཏན་ལ་ཕབ་པ་ཡིན་ནོ།། དེ་ལྟ་བས་ན་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་བརྟག་པ་ལ་ཡང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་པས་དེའི་ཕྱིར་རྟག་པ་དང་ལྡན་པས་དེ་ལ་ཡང་དོན་དམ་པ་པའི་ཡོད་པར་ཐ་སྙད་མི་བྱའོ། །སྒྲོར་བ་དག་ནི་གང་ཞིག་གང་དོན་དམ་པར་གང་ཡོད་པར་གྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་པ་དེ་ནི་རྟག་པ་དང་ལྡན་པས་ཡང་དག་པར་དེ་བཞིན་དུ་གཟུང་བར་མི་བྱ་སྟེ། དཔེར་ན་སྤོ་བསང་ས་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པ་ཉིད་དུ་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་དག་ལྟ་བུའོ།།

དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་པ་ཇི་སྐད་བཤད་པ་གཉི་ག་ཡང་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་ཡང་ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་པས་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་མི་དམིགས་པ་ཡོད་པའི་ཐ་སྙད་འགོག་པའི་འབྲས་བུ་ཅན་(189a)ཡིན་ཏེ། རྟག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡོད་པའི་ཐ་སྙད་ནི་ཚད་མས་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱས་པར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་ཟིན་ཏོ།།

ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་མི་འཐད་པ་དང་། རྟག་པ་དང་མི་ལྡན་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་དང་བཟློག་ན་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཡོད་པས་དེའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ལ། མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཉིད་ལ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་

འགལ་བ་[1]ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །ཇི་སྐད་གལ་ཏེ་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་ཐ་སྙད་ལ་ཚད་མས་ཁྱབ་བོ་ཞེས་བྱ་བར་ཁས་ལེན་པར་གྱུར་ན་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་གྲུབ་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་། ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ནི་གང་དུ་ཡང་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་ངེས་པ་མེད་པར་ལྡོག་པ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་འགྲུབ་པར་མི་སྲིད་དོ།།

ལྡོག་པ་ངེས་པ་ཡང་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་ངེས་པ་མེད་པར་མི་སྲིད་དེ། གང་ཞིག་གང་ཡོད་ན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཇི་ལྟར་དེ་ལོག་པ་ན་ལྡོག་པར་གྱུར་ཏེ། འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་གདོན་མི་ཟ་བར་ཚད་མས་ཁྱབ་པའི་རྗེས་སུ་འགྲོ་བར་འདོད་པ་དང་དངོས་པོ་ཡོད་པའི་ཐ་སྙད་ཁས་བླང་བར་བྱའོ། །དེ་ཁས་བླངས་ན་ནི་འགའ་ཞིག་ཏུ་གང་ལ་འདི་ཡོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཡོད་པའི་ཐ་སྙད་ཚད་མ་ཡོད་པའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་ཅན་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་དེ་ཉིད་ཁོ་བོ་ཅག་གི་དངོས་པོ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཡོད་པའི་ཐ་སྙད་ཚད་མས་ཁྱབ་ཏུ་ཟིན་ཀྱང་ཚད་མ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་ནི་འདི་ངེས་པར་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོར་ཡོད་པའི་ཡུལ་ཅན་དུ་མི་འགྲུབ་སྟེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཉེ་བ་ནི་ཁྱབ་པར་བྱ་བའི་ཁྱད་པར་ངེས་པར་གཏན་ལ་འབེབས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་གཞན་ལ་ཡང་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཤིང་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཤིམ་ཤ་པ་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་རྣམས་ངེས་པར་རྟོགས་པར་[2]འགྱུར་རོ། །འདི་ནི་མི་མཐུན་པ་ཉིད་[3]མ་ཡིན་ནམ། འདི་ལྟར་ཤིང་ཉིད་ནི་ཁྱད་པར་མ་

---

1 ཡོད་པའི་འགལ་བ་ སྡེ།

2 རྟོགས་པར་ སྣ།

3 མཐུན་པ་ཉིད་སོགས་ སྣ།

ལུས་པའི་ཐུན་མོང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་བ་ལ་[1]སོགས་པའི་ཁྱད་པར་ངེས་པར་གཏན་ལ་འབེབས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ལ། ཚད་མ་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་འདས་ནས་གཞན་གང་ལ་ཡང་མི་སྲིད་དོ།།

དེ་ལྟ་ན་ནི་དེ་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་ཡང་འཇུག་(189b)པའི་ཕྱིར་ཚད་མ་ཉིད་ཉམས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཚད་མ་ཐམས་ཅད་ནི་དངོས་པོས་མངོན་པར་ཁྱབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། དེས་ཁྱབ་པའི་ཚད་མའི་སྟོབས་ཀྱིས་བྱུང་བའི་ཐ་སྙད་འཇུག་ན་ཡང་ཚད་མས་རྟོགས་པའི་དངོས་པོ་ཁོ་ན་ལ་འཇུག་པས་དེའི་ཕྱིར་འདི་ཤིང་ཉིད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཐུན་མོང་ཉིད་དུ་[2]ལྟ་ག་ལ་ཡིན་ཞེ་ན། དེ་ནི་མི་རུང་སྟེ། །ཚད་མ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དོན་གྱི་ཡུལ་ཅན་ཡང་ཡོད་དོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་[3]གལ་ཏེ་ཚད་མ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་ཡུལ་ཅན་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ན་ནི་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བར་འདོད་པ་རྣམས་འཕགས་པའི་ལམ་བསྒོམ་པ་སྒྲིམ་པ་དོན་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །བླུ་བ་པོ་རྣམས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་རྨོངས་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པ་རྟོགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཡིད་གཉིས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་ཡང་དོན་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་འབྲས་བུ་ནི་རྣམ་པར་རྨོངས་པ་ཟློག་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ལ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་བྱ་བ་ལ་ཡང་ཐམས་ཅད

1 ཛ་པ་ལ་ སྣ། པེ།

2 ཉིད་ལྟ་ག་ལ་ པེ།

3 མ་ཡིན་ཏེ་ པེ།

ཀྱིས་རྣམ་པར་སྔོངས་པའི་གོ་སྐབས་ཐག་བསྒྲིངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

མཚན་ཉིད་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེའི་མཚན་ཉིད་ཕན་ཚུན་འགལ་བར་བྱེད་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ལ། གྲུབ་པའི་མཐའ་ཐ་དད་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་གཅིག་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཐ་སྙད་པའི་ཚད་མ་[1]དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་ཡུལ་ཅན་མ་ཡིན་པ་ཡང་ཐ་སྙད་ཀྱི་ཚད་མ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་ཚད་མ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོས་ཁྱབ་པ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་ཡུལ་ཅན་ཉིད་མ་ཡིན་ཡང་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཇི་ལྟར་འདོད་པའི་དོན་ཡང་དག་པར་འཐོབ་པ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་ཐ་སྙད་པའི་མཚན་མ་རྣམ་པར་གཞག་གོ །དེའི་ཡུལ་ལ་ནི་[2]དོན་དམ་པ་པ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་ཀྱང་བཀོད་པ་མེད་དོ། །འོན་ཀྱང་ལུས་ཅན་རྣམས་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྟོགས་པས་འཁོར་བའི་བཙོན་ར་ནས་ཐར་བར་འགྱུར་པ་དེ་ཉིད་དེ་དག་གིས་མ་རིག་པའི་ཡུལ་ལས་བཟློག་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པའོ་(190a)ཞེས་བྱ་བར་རྣམ་པར་གཞག་གོ །སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་བྱེད་པ་སྒྲུབ་པར་རུང་བའི་དོན་ཐོབ་པ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་ནི་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཚད་མ་ནི་མི་སླུ་བའི་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་ཚད་མའི་མཚན་ཉིད་དུ་ཐུན་མོང་བ་ཡིན་ནོ། །དེས་ནི་ཡོད་པའི་ཐ་སྙད་ལ་ཁྱབ་ཀྱང་དེ་ངེས་པར་ཡང་དག་པ་པའི་དོན་གྱི་ཡུལ་ཅན་ཉིད་དུ

1 དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་དམ་པ་ སྣ། པེ།

2 ཡུལ་ནི་ སྣ། པེ།

རབ་ཏུ་མི་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་དེ་ལ་ཡང་དག་པ་པའི་དངོས་པོ་ཡང་དག་པར་འགྱུར།[1] འདི་ལ་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་མེད་པའི་ཐ་སྙད་སྒྲུབ་པ་འདི་ཡང་ཡོད་པ་ཉིད་དོ།།

(26-29) འདི་ལྟར་གང་དག་དོན་དམ་པར་རང་དང་། གཞན་དང་། གཉི་ག་ལས་སྐྱེ་བ་དང་། རྒྱུ་མེད་པ་ལས་སྐྱེ་བ་དང་བྲལ་བ་དེ་དག་ནི་ཡང་དག་པར་ན་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་ནམ་མཁའི་པདྨ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ། རང་དང་གཞན་གྱིས་ཡང་དག་པར་ཡོད་པར་སྨྲས་པའི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དེ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །གཏན་ཚིགས་འདི་ནི་མ་གྲུབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་གྲངས་ཅན་ལ་སོགས་པ་གང་དག་རྒྱུ་ཉིད་འབྲས་བུའི་བདག་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གནས་སོ་ཞེས་ཟེར། །འདི་ལྟར་དངོས་པོས་བདག་ཉིད་སྐྱེད་ན་གྲུབ་པའམ། མ་གྲུབ་པ་ཞིག་སྐྱེད་པར་འགྱུར་གྲང་ན། དེ་ལ་རེ་ཞིག་མ་གྲུབ་པ་ནི་མི་སྐྱེད་དེ། དེ་ནི་དེའི་ཚེ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཅི་ཞིག་གང་གི་སྐྱེད་པ་པོར་འགྱུར། མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་བདག་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཡོངས་སུ་མ་གྲུབ་པ་ནི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་སྐྱེད་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གྲུབ་པ་ཡང་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བྱེ་བྲག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱང་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་མི་ཞིག་གང་གིས་བསྐྱེད་པར་འགྱུར། གང་ཞིག་གྲུབ་ན་གང་མ་གྲུབ་པ་དེ་ནི་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཕན་གདགས་པར་བྱ་བ་དང་། ཕན་འདོགས་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དག་ཡིན་ན་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་བརྗོད་པར་བྱེད་ཅིང་། དངོས་པོ་རྣམས་རང་ཁོ་ན་ལས་སྐྱེ་བར་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་དེ་དག

1 མི་འགྱུབ་ སྣ། པ།

ནི་ཐང་ཅིག་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དངོས་པོ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་དང་། སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོར་རིགས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ (190b)དེ་གྲུབ་ན་ཕན་གདགས་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཞྭ་རབ་ཀྱང་ཙུང་ཟད་མེད་པའི་ཕྱིར་འདི་ཇི་ལྟར་ན་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་དུ་འགྱུར། འོན་ཏེ་དེ་ཁྱད་པར་དུ་བྱར་མེད་པ་ཡིན་ཡང་བསྐྱེད་པར་[1]བྱ་བ་ཉིད་རྒྱུ་མེད་པ་ཅན་ཁོ་ནར་ཉེ་བར་རྟོག་པར་བྱེད་པ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཤེས་པ་ཡོད་པ་ལ་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་ཀུན་ཏུ་མ་བརྟགས། ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དུ་ནང་གི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་སོགས་པ་དག་ལ་ཡང་དེར་རྟོག་པར་མ་བྱེད་ཅིག དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནང་གི་སྐྱེ་མཆེད་ནི་རང་ལས་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡོད་པའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་ཡོད་པ་[2]བཞིན་ནོ་ཞེས་ཐལ་བར་བསྒྲུབ་པ་འདི་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་འདིར་ཐལ་བའི་དོན་མི་ཤེས་པ་ཁ་ཅིག་འདི་ལ་དཔེ་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་དང་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཉིད་རྗོད་པར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་དག་གིས་ཡོངས་སུ་མ་ཤེས་པའི་ཉེས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་གཞན་དག་ལ་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པར་འདོད་པས་ཕ་རོལ་ལ་གྲུབ་པ་ཤེས་པ་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་རྗེས་སུ་ཟློས་པ་ཡིན་གྱི། བདག་ཉིད་ལ་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པའི་དངོས་པོ་ལ་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མི་འདོད་པར་ཐལ་བར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་នོ།།

ཤེས་པ་ཡོད་པ་ཡང་གཞན་དག་ལ་ཡང་དག་པར་མ་གྲུབ་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དཔེ་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ལ། གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ།

1 སྐྱེད་པར་ པེ།
2 ཡོད་པ་ཉིད་ སྣ། པེ།

རང་གི་རྒྱུད་ཀྱིས་རྟག་པ་དང་། གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ངོ་བོ་བསྒྲུབ་པ་ལ། དེ་ལྟ་བུའི་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནི་གཞན་དག་ཕན་ཚུན་མ་འབྲེལ་བ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པ་ནི་བསྣད་པ་ཙམ་ཞིག་བརྗོད་པར་འདོད་པར་ཟད་ཀྱི། རང་གི་རྒྱུད་ཀྱིས་དངོས་པོའི་ཆོས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་ན་དེ་ལ་འགལ་བ་ཉིད་བརྗོད་པར་རིགས་ཏེ། དེ་ལ་ནི་[1]གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་དག་རབ་ཏུ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དེ་བརྗོད་པ་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་ཡོངས་སུ་གྲུབ་ཀྱང་ཕན་པ་ཉིད་འགའ་ཞིག་ཁས་ལེན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་དང་ཕན་པ་ཐ་དད་པ་དེ་[2] རང་ལས་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཕན་པ་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཁོ་ན་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྟེ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་ན་ནི་ཕན་པ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་དེ་ཇི་ལྟར་གྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ལ་ཡང་རྒྱུ་མངོན་པར་བརྗོད་(191a)དགོས་སོ།།

གཞན་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཤིང་དང་ལྗོན་པ་བཞིན་དུ་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ངོ་བོར་བརྗོད་པ་[3]ནི་འཇིག་རྟེན་ན་དེ་ལྟར་མ་གྲགས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་གདོན་མི་ཟ་བར་འདི་འཇུག་པའི་རྒྱུ་མཚན་ཐ་དད་པའི་རྒྱུ་ཅུང་ཟད་ཅིག་ཉེ་བར་བསྟན་དགོས་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན་དེ་ཉེ་བར་བསྟན་པར་ཡང་མི་ནུས་སོ། །འོན་ཏེ་མངོན་པར་གསལ་བའི་གནས་སྐབས་དང་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བའི་གནས་སྐབས་རྒྱུའི་འོག་ཏུ་འབྱུང་བ་འབྲས་བུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨོན་ཏེ། འདི་ལྟར་དེས་ན་དེ་རྣམ་

1 དེ་ལ་ཡང་ནི་ སྣ། པེ།
2 ཕན་པ་དེ་ པེ།
3 བརྗོད་པར་ པེ།

པར་གཞག་པ་ཐ་དད་པའི་རྒྱུ་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་མངོན་པར་གསལ་བ་དང་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བ་སྣང་བ་དེ་དག་གཅིག་ཏུ་དེ་དང་ཐ་དད་པ་ཉིད་གཅིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་གཞན་ཁོ་ན་ལས་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་ཐ་དད་ད་མ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་འཆོལ་བའི་ཉེས་པ་དེའི་སོ་ན་འདུག་པ་ཉིད་དོ།།

གཅིག་ལ་ཅིག་ཅར་གསལ་བ་དང་མི་གསལ་བ་ལ་སོགས་པ་འགལ་བའི་ཆོས་དང་ལྡན་པར་ཡང་ཇི་ལྟར་རུང་བར་འགྱུར། དེ་བས་དང་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱོགས་ཀྱང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་དག་ནི་ཅིག་ཤོས་དགག་པ། གཞན་སྒྲུབ་པ་མེད་ན་མེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གཉི་ག་མ་ཡིན་པའི་ཕྱོགས་སུ་རྟོག་པ་ཡང་རིགས་པ་དང་ལྡན་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་དེའི་རྒྱུར་མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་པོ་སྔོན་གྱི་ངོ་བོ་མ་བོར་བ་ཁོ་ནར་དེའི་འོག་ཏུ་མངོན་པར་གསལ་བ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་སུ་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་[1]གནས་སྐབས་འཆོལ་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་གཅིག་ལ་ལྟོས་ནས་བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་སྣང་བ་དང་མི་སྣང་བར་ཡང་འགྱུར་ལ། གན་པོ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་ན་ཡང་བྱིས་པ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་གསལ་རབ་ཏུ་དམིགས་པར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་འོས་པའི་ཕྱོགས་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཆ་ཤས་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྔོན་གྱི་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཞིག་ན་རྗེས་སུ་འགྲོ་

1 ན་ནི་དངོས་པོ་གཞན་ཁོ་ན་ལས་ སྣ།

བའི་རང་གི་ངོ་བོ་འགའ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། ཕྱིས་མངོན་པར་གསལ་བའི་གནས་སྐབས་སུ་ཡང་(191b)ཇི་ལྟར་གཞན་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་བདག་ལས་སྐྱེ་བ་མ་ཡིན་པར་གྱུར་ཅིང་མངོན་པར་གསལ་བ་དང་འགྱུར་བ་ཡང་འགའ་ཡང་མེད་དོ།།

གཞན་ཡང་གསལ་བ་ཡང་མི་སྣང་བ་གཞན་དུ་གྱུར་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་མངོན་པར་གསལ་བ་དང་། ཡོངས་སུ་འགྱུར་བ་འདི་གཉི་ག་ཡང་གཞན་དུ་གྱུར་པས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བ་ལས་ཀུན་བརྟགས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་རུང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་དངོས་པོའི་དེ་ཉིད་ཡོངས་སུ་གཏོད་པ་ན་གཞན་ཉིད་རྣམ་པར་བཅད་ནས་ཡོངས་སུ་གཏོད་ལ། གཞན་ཉིད་ཀྱང་དེ་ཉིད་རྣམ་པར་བཅད་ནས་ཡོངས་སུ་གཏོད་དེ། དེ་ལས་བཟློག་པ་རྣམ་པར་མ་བཅད་ན་དེ་ཡོངས་སུ་གཏོད་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ལ་གང་ཞིག་ཡོངས་སུ་གཏོད་པ་གང་རྣམ་པར་བཅད་པ་མེད་ན། མེད་པ་དེ་དག་ནི་དེ་ལ་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །གང་དག་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་ཆོས་ཅན་གཅིག་ལ་ལྡན་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དཔེར་ན་སེམས་ལ་ལུས་ཅན་དང་ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པའི་བྱེ་བྲག་ལྔ་བུའོ།[1] །དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་ཀྱང་དེ་དང་འདྲ་བས་དེའི་ཕྱིར་འདི་གཉིས་གཅིག་ལ་ལྡན་པར་ལྟ་ག་ལ་འགྱུར། ཆོས་འགལ་བ་དང་ལྡན་པ་ཡང་གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཐམས་ཅད་ཇི་ལྟར་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་གཅིག་ཅར་དུ་བཅིངས་པ་དང་། ཐར་པ་དང་། འཆི་འཕོ་བ་དང་། སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པར་འགྱུར་རོ།། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གཅིག་ཅེས་མིང་དུ་འདོགས་པ་ཙམ་ཁོ་ན་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །འདི་ལ་

1 བྲེ་བྲག་དག སྣ། པ།

ནི་བརྩད་པ་མེད་དོ། དེ་ལྟ་བས་ན་དངོས་པོའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་གང་སྔོན་གྱི་གནས་སྐབས་དང་མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པར་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པ་དེ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མཚན་ཉིད་གཞན་ཡིན་ན་[1]གཞན་གང་ཡིན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་དེའི་ཡིན། གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་འདིའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཕྱིས་དམིགས་པ་དེ་སྔོན་ཡང་ཡང་དག་པར་ཡོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་འདི་ཇི་སྟེ་དམིགས་པར་མི་འགྱུར། འོན་ཏེ་འདི་མི་སྣང་བའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྔོན་མི་དམིགས་སོ་ཞེ་ན་ནི། དེའི་རྒྱུའི་དངོས་པོ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ནར་མི་དམིགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡང་ཡིན་ལ།[2] དམིགས་པར་འདོད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་འདི་ཡང་སྔོན་བཞིན་དུ་ཕྱིས་ཀྱང་མི་དམིགས་པར་འགྱུར་རོ། (192a)།ཇི་སྟེ་བསྒྲིབས་པའི་ཕྱིར་མི་དམིགས་སོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་ཕྱིས་ཀྱང་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པ་དེའི་སོ་ན་འདུག་པའི་ཕྱིར་རྟག་ཏུ་མི་དམིགས་པར་ཐལ་བ་ཉིད་དོ། །འོ་མ་ལ་སོགས་པ་ཆ་ཤས་རྣམ་པ་བརྒྱར་གཞིགས་ཀྱང་ཞོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པ་དེ་དམིགས་པའི་རིག་བྱར་གྱུར་བ་དེ་དམིགས་པའི་གགས་བྱེད་པར་གྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ།།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་རང་བཞིན་གྱིས་བརྟན་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་ཡིན་ན་ནི་དེ་ཇི་ལྟར་གཞན་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར། འོན་ཏེ་མི་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འཇིག་པའི་ངང་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདི་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་མེད་པར་རྣམ་པར་འཇིག་པར་འགྱུར་གྱི། ཡང་གཞན་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

---

1 གཞན་ཡིན་གཞན་··· སྡེ།

2 ཡང་མ་ཡིན་ལ་ སྣ། པེ།

དེ་ལྟ་བས་ན་མངོན་པར་གསལ་བ་དང་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བ་དག་རྟུང་བ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེའི་སྒོ་ནས་རང་ལས་སྐྱེ་བར་ཀུན་བརྟགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །རང་ལས་སྐྱེ་བ་གློ་བུར་བ་ཉིད་གཅིག་ཡིན་ན་ཡང་དངོས་པོ་རྣམས་ཡུལ་དང་དུས་ལ་སོགས་པ་ངེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་རྒྱུ་ཅི་ཞིག་ཡོད་དེ། དངོས་པོ་ཡང་དག་པར་ལྟོས་པ་མེད་པ་ལ་ནི་དེ་ལྟ་བུའི་ངེས་པ་སྲིད་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཇི་སྟེ་གཞན་ལ་ལྟོས་ན་ནི་ཕ་རོལ་ལས་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ཏེ། ཕན་པ་མེད་པ་ལ་ལྟོས་པ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་དེ་ཡང་འོག་ནས་དགག་པར་བྱའོ། །ལྟོས་པར་བྱ་བ་ཡང་རྟག་ཏུ་ཉེ་བའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་སྐྱེ་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་རེ་ཞིག་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་རང་ལས་སྐྱེ་བ་མི་སྲིད་དོ།།

གཞན་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་དེ་ལས་དངོས་པོ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ན་རྟག་པའམ་མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ཞིག་ལས་འགྱུར་གྲང་ན། རེ་ཞིག་རྟག་པ་ལས་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་[1]རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་རིམ་དང་རིམ་མ་ཡིན་པ་དག་གིས་དོན་བྱེད་པར་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུ་ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པར་ཡོད་པ་ཡང་འབྲས་བུ་རེས་འགའ་མི་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་ལ། འབྲས་བུ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་ཡང་རེས་འགའ་མི་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་ན་གང་གི་ཕྱིར་རིམ་གྱིས་དེའི་དོན་བྱ་བ་བྱེད་པར་འགྱུར་ཏེ། གཞན་དག་གིས་ཁྱད་པར་དུ་བྱར་མེད་པ་ནི་དེ་ལ་(192b)ལྟོས་པར་[2]མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ལྷན་ཅིག་བྱེད་པའི་རྒྱུ་དང་འབྲེལ་བའི་རང་བཞིན་རྗེས་སུ་འབྲང་ན་ནི་དེ་དང་འདྲ་བ་ལྷན་ཅིག་བྱེད་

1 ཡང་དེ་རིགས་ སྣ།
2 བལྟོས་ པ།

པ་རྣམས་ཀྱང་རྟག་ཏུ་རྗེས་སུ་འབྲང་བར་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །ཇི་སྟེ་རྗེས་སུ་མི་འབྲང་ན་ནི་དེའི་རྟག་པ་ཉིད་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ཡང་ལྷན་ཅིག་བྱེད་པའི་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །རྒྱུ་རྟག་པ་ལ་རག་ལས་ཏེ་སྐྱེ་བའི་འབྲས་བུ་ཡང་རྐྱེན་གཞན་ལ་ལྟོས་པ[1]་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །མེད་བཞིན་དུ་ཡང་དེ་དང་འབྲེལ་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ་འཐོབ་པའི་ཕྱིར་བློས་ཀུན་བཏགས་པའི་ལྟོས་པར་རྣམ་པར་འཇོག་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་མངོན་པར་འགྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་རྒྱུ་ནུས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ལ་དེས་ཕན་འདོགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ལྟོས་པར་བྱའི། གཞན་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

དེའི་ཕྱིར་རྟག་པར་འདོད་པའི་དངོས་པོ་རྟག་ཏུ་ཕན་འདོགས་པ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར[2] མཐུ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཉིད་བོར་ཏེ། དེ་ལས་གཞན་པ་ལ་ཅི་སྟེ་ལྟོས། འབྲས་བུ་ལྷན་ཅིག་བྱེད་པའི་རྐྱེན་རྣམས་ལ་ལྟོས་སུ་ཆུག་ན་ཡང་། འོན་ཀྱང་དེའི་རྒྱུ་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་མཐུ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཡིན་ན་གོ་ཇི་སྟེ་བཏང་སྙོམས་སུ་འདུག་སྟེ་གང་གིས་ན་དེ་སྐྱེ་བར་མི་འདོད་བཞིན་དུ་ཡང་ནན་གྱིས་དྲངས་ཏེ་སྐྱེ་བར་མི་བྱེད། དེ་ལྟ་ན་དེས་བདག་ཉིད་ཀྱི་མཐུ་ཉེ་བར་བསྟན་པར་འགྱུར་གྱི། གཞན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རིམ་ཅན་མ་ཡིན་པ་ལས་དངོས་པོ་རིམ་གྱིས་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་འབྲས་བུ་རྒྱུའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་གཉིས་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་གདོན་མི་ཟ་བར་དེ་གཉིས་རྣམ་པ་འགའ་ཞིག་ཐ་དད་པར་འགྱུར་དགོས་སོ།།

---

1 གཞན་ལས་ལྟོས་ སྡེ།

2 ཉིད་ཉེ་བར་'' སྡེ།

དེས་ན་རྒྱུ་རིམ་ཅན་མ་ཡིན་པ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་རིམ་དང་ལྡན་པ་མི་འགལ་བ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འབྲས་བུ་རྒྱུའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྗེས་སུ་བྱེད་པར་ནི་མི་སྣང་ངོ༎ །འོན་ཀྱང་རེ་ཞིག་གདོན་མི་ཟ་བར་འབྲས་བུ་རྒྱུ་ལ་ཡོད་པའི་རྗེས་སུ་འགྲོབ་དང་། ལྡོག་པའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པར་ནི་འགྱུར་དགོས་ཏེ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོའི་རྒྱུ་ནི་འདི་ཙམ་དུ་ཟད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་[1] དངོས་པོ་རྟག་པ་ལ་ཡོད་པའི་ལྡོག་ (193a)པའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་ནི་མེད་དེ། རྟག་པ་ལ་ལྡོག་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ནི་མི་རྟག་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་གྱི། རྟག་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ༎

རྗེས་སུ་འགྲོ་བའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་མ་ཚང་བ་མེད་པར་ཉེ་ཡང་རེས་འགའ་འབྲས་བུ་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཞིག་གང་ལ་ཡོད་པའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་འགྲོ་བ་དང་[2] ལྡོག་པ་དག་གིས་རྗེས་སུ་མི་བྱེད་པ་དེ་ནི་དེའི་འབྲས་བུར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ༎

འབྲས་བུ་ཡོད་པ་ནི་ལྟོས་པར་རིགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གྲུབ་ཟིན་པས་ཐམས་ཅད་ལ་རེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་[3] རེ་ཞིག་རྟག་པ་ལ་རིམ་གྱིས་དོན་བྱེད་པའི་མཐུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཅིག་ཅར་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་དོན་བྱེད་པའི་རང་བཞིན་དེ་ལྟ་བུ་ཞིག་ཡང་རྗེས་སུ་འབྲངས་ན་འབྲས་བུའི་

1 གང་ཡང་ སྣ། པེ།
2 རྗེས་སུ་བྱེད་པ་དང་ སྣ། པེ།
3 དེ་ལྟར་རེ་… སྣ། པེ།

སྐྱེད་པ་དང་འབྲལ་བར་[1]མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྟེ་མི་འབྲལ་ན་[2]ནི་དེའི་རྟག་པ་ཉིད་ཉམས་པ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་ཡང་འདིའི་ནུས་པའི་རང་བཞིན་དུས་ཕྱིས་ཀྱང་རྗེས་སུ་འབྲང་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་རེ་ཞིག་དེས་འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་སྔར་བསྐྱེད་ཟིན་[3]པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡང་བསྐྱེད་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་ནི་སྐྱེས་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གཞན་དེ་དང་འདྲ་བ་གང་ཡིན་དེ་ཅི་སྟེ་མི་བསྐྱེད་ཅེས་བརྒལ་ཞིང་བརྟག་པར་འོས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་དེས་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ནུས་པ་ཡིན་ན་ནི་སྔར་བསྐྱེད་ཟིན་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེས་སྔར་བསྐྱེད་ཟིན་པའི་འབྲས་བུ་མི་སྐྱེད་དུ་ཆུག་ཀྱང་། འོན་ཀྱང་འདིའི་སྐྱེད་པར་ནུས་པའི་རང་བཞིན་རྗེས་སུ་འབྲང་བ་ནི་རྣམ་པར་ཉམས་པར་འགྱུར་ཏེ། གང་ཞིག་གང་གི་ཚེ་གང་སྐྱེད་པར་མི་བྱེད་པ་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་མཐུ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བརྗོད་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ནི་སྔར་ཡང་དུས་ཕྱིས་བཞིན་དུ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པའི་གནས་སྐབས་དང་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། འདིས་དུས་ཕྱིས་ཀྱང་སྔོན་བཞིན་དུ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་ཡང་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཆོས་འགལ་བ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་འདིའི་གཅིག་པ་ཉིད་རྣམ་པར་ཉམས་ (193b) པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དེ་ཅིག་ཅར་དོན་བྱེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།།

རིམ་དང་ཅིག་ཅར་དག་ལས་མ་གཏོགས་པ་གང་གིས་ན་དོན་བྱ་བ་བྱེད་པར་

1 འབྲང་ སྣ།
2 མི་འབྲལ་ན་ སྡེ།
3 སྐྱེད་ཟིན་ པ།

འགྱུར་བའི་རྣམ་པ་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ནི་ཕན་ཚུན་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་རྣམ་པར་བཅད་པ་མེད་ན་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་དག་གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག་དགག་པ་གཞན་སྒྲུབ་པ་[1]མེད་ན་མེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་ལྟར་ན་རེ་ཞིག་གཞན་རྟག་པ་ལས་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

མི་རྟག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་མི་རྟག་པ་ནི་དངོས་པོ་སྐད་ཅིག་མར་གནས་པའི་ཆོས་ཅན་ཁོ་ན་ཡིན་པར་རིགས་ཏེ། བསྐལ་པར་གནས་པ་ནི་ཁྱད་པར་མེད་པས་སྔོན་བཞིན་དུ་ཕྱིས་ཀྱང་འཇིག་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་ན་འདས་པ་ལས་འགྱུར་ཏེ། དཔེར་ན་བྱེ་བྲག་ཏུ་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྨིན་པའི་རྒྱུ་འདས་པ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་བརྗོད་པའམ། མ་འོངས་པ་ལས་ཏེ་དཔེར་ན། དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་[2]མ་འོངས་པའི་སྐྱེ་བ་ཡང་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ལྟ་བུའམ། ད་ལྟར་གྱི་བྱེད་པ་ལས་ཀྱང་[3]ཡིན་གྲང་ན། དེ་ལ་རེ་ཞིག་འདས་པ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་[4]ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདས་པ་ནི་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལས་སྐྱེ་བར་ཁས་ལེན་ན་ནི་འདི་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཡང་འགྱུར་རོ།།

འདི་ལྟར་འདས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཅི་ལ་བྱ། གང་རང་གི་ངོ་བོ་ལས་ཉམས་པ་ཡིན་གྲང་། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ད་ལྟ་བཞིན་དུ་མ་ཉམས་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འདས་པར་འགྱུར། ཉམས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རང་གི་ངོ་བོ་ཡོད་པ་མ་

1 སྒྲུབ་པ་དེ་ སྣ། བསྒྲུབས་ པེ།
2 དེ་དག་ཉིད་ཀྱང་ སྣ། པེ།
3 ལས་ཡིན་ སྣ། པེ།
4 ཤེས་བྱ་བ་ སྣ། པེ།

ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་སྐྱེད་པར་འགྱུར་ཏེ། དོན་བྱེད་པ་ནི་རང་གི་ངོ་བོ་ལ་རག་ལས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཞིག་ཉིད་ཀྱིས་དེ་འདས་པ་ཞེས་བྱའི། རང་གི་ངོ་བོ་ཉམས་པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟ་ན་ནི་ཡང་བྱེད་པ་ཞིག་པ་དེ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ཏེ། འབྲས་བུ་ཉེ་བར་སྐྱེད་ན་[1]ཇི་ལྟར་བྱེད་པ་ཞིག་པར་འགྱུར། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་གཅིག་ལ་བྱེད་པ་དང་། བྱེད་པ་མ་ཡིན་པའི་བྱ་བ་དག་ཀྱང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐ་དད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་(194a)བའི་ཕྱིར་དང་ཆ་ཤས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

བྱེད་པ་ནི་འཕེན་པ་ཙམ་དུ་འགྱུར་གྱི། རབ་ཏུ་འཇུག་པ་མ་ཡིན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་འཕེན་པའི་དུས་ཉིད་དུ་དེ་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་ཡང་འགྱུར་རོ།། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སྔོན་བཞིན་དུ་ཕྱིས་ཀྱང་དེར་མི་འགྱུར་རོ།།

གཞན་ཡང་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་གལ་ཏེ་ནུས་པའི་ངོ་བོའམ། བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཞིག་ཡིན་[2]པར་འགྱུར་གྲང་ན། ངོ་བོ་དེ་དག་གཉི་ག་ཡང་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་ལས་དོན་གཞན་ཐ་དད་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ཇི་ལྟར་ཞིག་ཅེས་བརྗོད་པར་བྱ། གལ་ཏེ་རང་གི་ངོ་བོ་ཉམས་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རྟག་ཏུ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་སླུ་བ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །དོན་གཞན་དེ་ཞིག་ཀྱང་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་རྣམ་པར་མ་གཡོས་པ་ཞིག་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། ལྷ་སྦྱིན་ཤི་ཡང་མཆོད་སྦྱིན་རང་གི་ངོ་བོ་ལས་མ་ཉམས་པའི་ངོ་བོ་ཡང་ཤི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

---

1 སྐྱེད་པ་ སྣ། སྐྱེད་པར་ པ།

2 ངོ་བོ་ཡིན་ པ།

འོན་ཏེ་བྱེད་པ་གཞན་ཞིག་པའི་ཕྱིར་དེ་ཞིག་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན།[1] དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐུག་པ་མེད་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་བྱེད་པ་ལ་བྱེད་པ་གཞན་ཡོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་ཡང་བརྒལ་ཞིང་བརྟག་པ་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་གང་ཡང་འཇིག་པར་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །བྱེད་པ་དོན་གཞན་ཉིད་ཡིན་ན་ཡང་དངོས་པོ་རྒྱུ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། བྱེད་པ་ཁོ་ན་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོའི་མཚན་ཉིད་ནི་དོན་བྱེད་ནུས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །བྱེད་པ་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་གཉི་གའི་ངོ་བོ་དེ་ཡང་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་སྐྱེད་པ་ན་གང་གི་བྱེད་པ་རང་གི་ངོ་བོར་གྱུར་པ་ཁོ་ནས་སྐྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་སྐྱེད་པར་འགྱུར་བ་ཉིད་པས་དོན་གཞན་དུ་རྟོགས་པས་ཅི་ཞིག་བྱ། དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་[2]ཡང་བྱེད་པ་གཞན་དུ་རྟོག་ན་ཐུག་པ་མེད་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་གང་ཡང་རྒྱུ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དངོས་པོ་ཕན་པ་[3]མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་འདིའི་བྱེད་པ་འདི་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་འབྲེལ་བ་ཡང་མི་འགྲུབ་སྟེ། འབྲེལ་བ་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་ཕན་འདོགས་པ་ཁོ་ནས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །

འོན་ཏེ་དེ་ལ་དངོས་(194b)པོ་ཕན་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་བྱེད་པའི་བདག་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་དབང་གིས་བྱེད་པ་ལ་ཕན་འདོགས་ན་དེའི་ཚེ་

1 འོན་ཏེ་བྱེད་གང་མ་ཞིག་པའི་ཕྱིར་དེ་ཞིག་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། སྡེ།
2 དེ་ལ་ཡང་ སྣ། པེ།
3 ཕན་པར་ སྣ། པེ།

འབྲས་བུ་ལ་ཡང་ཅི་སྟེ་དེ་བཞིན་དུ་ཕན་འདོགས་པར་མི་འགྱུར།[1] གང་གིས་ན་བྱེད་པ་[2] དོན་གཞན་དུ་ཉེ་བར་རྟོག་པར་བྱེད།[3] བྱེད་པ་པོ་[4]དངོས་པོ་ཡོད་པ་ཙམ་ལ་རག་ལས་པ་ཡིན་ན་ནི་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རྟག་ཏུ་ཉེ་བ་ཡིན་ཏེ། འཇིག་པ་ཡང་འགྱུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འདི་དང་ཡང་ལྡན་ཅིག་འབྲེལ་བར་མ་གྲུབ་བོ། །དེའི་ཕྱིར་བྱེད་པ་རྣམས་ཁོ་ན་ཕན་ཚུན་སྤྲོར་བའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་ནི་གྱི་ནར་འདུག་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །སྐད་ཅིག་མ་རྣམས་ནི་སྐྱེས་མ་ཐག་ཏུ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་བྱེད་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །སྐད་ཅིག་མ་མ་ཡིན་པ་རྣམས་ཀྱང་ནམ་མཁའ་བཞིན་དུ་རྟག་ཏུ་གནས་པའི་[5]ངོ་བོར་གཅིག་པའི་ཕྱིར་བྱ་བ་དང་ལྡན་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་པས་གང་ལ་ཡང་བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་མེད་དོ།། དེ་ལྟ་བས་ན་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་ནུས་པ་དང་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲར་བརྗོད་ཀྱི། དོན་གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

བྱེད་པ་དངོས་པོ་ལས་ཐ་མི་དད་པ་གཉི་གའི་ངོ་བོ་དེ་ཞིག་སྟེ། རང་གི་ངོ་བོ་ཉམས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ན་དངོས་པོ་ཡང་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རང་གི་ངོ་བོ་ཉམས་པ་ཡིན་པས་ཇི་ལྟར་འདས་པ་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་འགྱུར། དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་བཞིན་དུ་བྱེད་པ་ཡང་མི་འཇིག་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་བྱེད་པ་

1 འདོགས་པར་མི་བྱེད་ སྣ། པེ།
2 བྱེད་པ་དོན་··· སྣ། པེ།
3 གང་གིས ནས་ རྟོག་པར་བྱེད། བར་ཆད། པེ།
4 བྱེད་པ་དངོས་པོ་ སྣ། པེ།
5 བཞིན་དུ་གནས་····· སྣ། པེ།

ཞིག་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྟེ་ཡང་བྱེད་པ་དེ་ཉིད་གཞན་[1]དག་ཉིད་དུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་དུ་རྟོག་པར་བྱེད་ན།[2] དེའི་ཚེ་བཏགས་པར་[3]ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་དེའི་དབང་གིས་དུས་གསུམ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡང་དག་པར་[4]མི་འགྱུར་རོ། །དངོས་པོར་ཡོད་པ་ནི་རྣམ་པ་གང་གིས་ཀྱང་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་འཐད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་འདས་པ་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་མ་ཡིན་ནོ།།

མ་འོངས་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་འདས་པ་བཞིན་དུ་མེད་པའི་(195a)ཕྱིར་ཏེ་འདི་ལྟར་བདག་ཉིད་དུ་མ་རེད་པའི་ཕྱིར་མ་འོངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ན་དེ་ལྟ་བུ་ནམ་མཁའི་པདྨ་དང་འདྲ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལས་ནི་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་བྱེད་པ་མ་ཐོབ་པ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་མ་འོངས་པ་ཞེས་བྱ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་ཤིན་ཏུ་ཡང་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་མི་རིགས་པ་ཉིད་དེ། བྱེད་པ་མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རྟག་ཏུ་ཡོད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་གོ་ཇི་སྟེ་འགའ་ཞིག་གིས་རེས་འགའ་བྱེད་པ་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་འཐོབ་པའི་རྒྱུ་རྣམས་མ་ཚང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བྱེད་པ་དངོས་པོ་ལས་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དོན་གཞན་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་བྱེད་པ་བཞིན་དུ་རང་གི་ངོ་བོ་ཡང་

---

1 དེ་ཉིད་དང་གཞན་ པེ།

2 བྱེད་དེ་ སྣེ།

3 བཏགས་པའི་ཡོད་… སྣར། པེ།

4 ཡང་དག་པ་པར་ པེ།

མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་མ་འོངས་པ་ཉིད་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ལ། དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་བཞིན་དུ་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་བྱེད་པ་ཡང་རྟག་ཏུ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རྟག་ཏུ་མ་ཐོབ་པ་ཉིད་དུ་ཡང་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་མ་འོངས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་ལས་[1]འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

ད་ལྟར་གྱི་ལས་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་དེ་ལས་འབྲས་བུ་ཡང་དག་པར་སྐྱེ་ན་དུས་མཉམ་པའམ། དུས་ཐ་དད་པ་ཞིག་ཏུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་གྲང་ན། རེ་ཞིག་དུས་མཉམ་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་སྔོན་རོལ་ན་རྒྱུ་ཡང་རི་བོང་གི་རྭ་བཞིན་དུ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནུས་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཚེ་རྒྱུ་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོར་རེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནུས་པ་ཡིན་པ་དེའི་ཚེ་ནི་འབྲས་བུ་ཡང་དེ་དང་དུས་མཉམ་པར་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་དེ་ལ་དེ་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུར་ཐ་སྙད་གདགས་པ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་འབྲས་བུར་མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་ཉིད་རྒྱུ་མ་ཡིན་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་འཆོལ་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ།།

དུས་ཐ་དད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་[2]འབྲས་བུ་སྔོན་གྱི་དུས་ན་ཡོད་པ་ཡིན་ན་དེ་ལྟ་ན་ནི་མ་འོངས་པ་ཁོ་ན་ལས་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པར་སྔར་བསྟན་[3]ཟིན་ཏོ། །འོན་ཏེ་སྐད་ཅིག་མ་གཞན་གྱིས་ཆོད་

1 དེ་ལ་ སྣ། པེ།

2 འདི་ལྟར་འབྲས་བུ་ སྣ། པེ།

3 བཤད་ སྣ། པེ།

པའི་འོག་ཏུ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་འདས་པ་པོ་(195b)ན་ལས་འགྱུར་ཏེ། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲར་བཤད་ཟིན་ཏོ། །ཇི་སྟེ་མ་ཆོད་པ་ཡིན་ན་ནི་དེ་གཉིས་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་ཆོད་པའི་ཕྱིར་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་འབྲས་བུ་མ་ཆོད་པར་སྐྱེ་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་འབྲས་བུ་ཡོད་པར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ལ། དེའི་ཚེ་ཡང་[1]སྐད་ཅིག་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྒྱུ་མི་གནས་པ་ཡིན་ནོ། །འདིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འདི་ཡོད་ན་འདི་འབྱུང་ཞེས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་སྟོན་པར་མཛད་པས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གསུམ་བོར་ནས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཞི་པ་ཞལ་གྱིས་བཞེས་སོ། །འདི་ལྟར་ཡང་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ནི་འབྲས་བུ་རྒྱུའི་སྔོན་རོལ་ན་ཡོད་པར་འགྱུར་བའམ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་ལྷན་ཅིག་ཡོད་པའམ། སྐད་ཅིག་མ་གཞན་གྱིས་ཆོད་པའམ། མ་ཆོད་པར་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་བཞི་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་སྔོན་གྱི་དུས་ན་ཡོད་པ་ནི་རྒྱུ་ཡོད་ན་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དང་པོ་ཉིད་ནས་གྲུབ་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དུས་མཉམ་དུ་སྐྱེས་པ་ཡང་རྒྱུ་ཡོད་ན་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་ཡོད་པའི་ཕྱིར་ཏེ། འདི་ལྟར་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་ནི་འབྲས་བུ་མེད་པའི་དུས་ན་རྒྱུ་ཡང་མེད་ལ། རྒྱུ་ཡོད་ན་འབྲས་བུ་ཡང་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། །སྐད་ཅིག་མ་གསུམ་པ་ལ་སོགས་པ་ན་ཡོད་པ་ཡང་རྒྱུ་ཡོད་ན་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ཁོ་ན་ལ་[2]རྒྱུ་ཞིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ཡོད་པའི་འབྲས་བུ་ཁོ་ན་རྒྱུ

1 དེའི་ཚེ་སྐད་··· སྣ། པེ།
2 ཁོ་ན་རྒྱུ་ སྡེ།

ཡོད་ན་འབྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་སྐད་ཅིག་མ་དང་པོ་ལ་ཡོད་པའི་རྒྱུ་ནི་དེའི་གནས་སྐབས་ན་ཡོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། དེ་དང་མ་ཆོད་པ་ཉིད་དུ་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་འབྲས་བུ་ཡོད་པར་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ལ་འདི་ཡོད་ན་འདི་འབྱུང་ཞེས་བྱའོ། །འབྲས་བུའི་དུས་ན་རྒྱུ་ཡོད་པར་ཐལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་ཀྱིས་དེའི་ཚེ་དེ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

རྒྱུ་ཞིག་པ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་ཡང་ཐལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་དང་པོའི་གནས་སྐབས་ན་རྒྱུ་མ་ཞིག་པའི་ཕྱིར་ལ། དེ་ཉིད་ལས་མ་ཆོད་པར་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སྐད་ཅིག་མ་གསུམ་པ་ལ་འབྲས་བུར་འགྱུར་རོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་(196a)ལྟར་གལ་ཏེ་བར་ན་དུས་གཞན་ཕྲ་རབ་ཀྱང་མེད་པའི་ཕྱིར་རྒྱུ་ཡོད་པ་དང་འབྲས་བུ་དུས་གཞན་གྱིས་མ་ཆོད་པ་ཉིད་དུ་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་བདག་ཉིད་མི་ཚུགས་ལ།[1] ཅི་དུས་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རམ། འོན་ཏེ་མ་ཡིན་ཞེས་དཔྱོད་ཅིག །དངོས་པོ་ཆ་ཤས་མེད་པ་དུས་གཞན་གྱིས་མ་ཆོད་པ་གཉིས་ལ་ནི་དུས་གཅིག་པ་མ་གཏོགས་པར་རྣམ་པ་གཞན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་གཉིས་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་ཆོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བར་དུ་འབྱུང་བའི་[2] དུས་གཞན་མེད་ན་གདོན་མི་ཟ་བ་སྐད་ཅིག་མ་སྔ་མ་དང་ཕྱི་མ་དག་རེག་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་སྐད་ཅིག་མ་ཐམས་ཅད་སྐད་ཅིག་མ་གཅིག་ཁོ་ནའི་ནང་དུ་འདུས་པས་རྡུལ་ཕྲ་རབ་རྣམས་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྦྱོར་ན་གོང་བུ་རྡུལ་ཕྲན་ཙམ་ཉིད་

---

1 མིག་བཙུམས་ལ་ སྣ། པེ།

2 བར་དུ་འབྱུང་བ་མེད་ན་ སྣ།

དུ་[1] ཐལ་བ་དང་འདྲ་བར་བསྐལ་པ་ཡང་སྐད་ཅིག་མ་ཙམ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་ཁ་ཅིག་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་རིམ་པར་སྣང་བ་ནི་ཚད་མས་གནོད་པའི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ནར་འདོད་པ་ལྟར་དུས་ཀྱི་རིམ་པ་ཡང་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དག་ན་བསྐལ་པ་ལ་སོགས་པར་སྣང་བ་བཞིན་དུ་དེ་དག་འདྲ་བར་འགྱུར་རོ། །སྔོར་བ་ནི་གང་དག་དུས་གཞན་གྱི་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་མ་ཚོད་པ་དེ་དག་ལ་སྔོན་གྱི་དུས་ཉིད་དང་ཕྱི་མའི་དུས་ཉིད་མེད་དེ། དཔེར་ན་ན་གཡས་པ་དང་གཡོན་པ་དག་ལྟ་བུའོ། །རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ཀྱང་དུས་གཞན་གྱིས་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་ཚོད་པ་རང་བཞིན་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཡིན་ནོ།།

འོན་ཏེ་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་མ་ཚོད་པ་ཡིན་གྱིས་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་རྟོག་ན། དེའི་ཚེ་སྐད་ཅིག་མ་ཆ་ཤས་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། དེས་ན་དུས་ཀྱི་མཐའི་མཚན་ཉིད་སྐད་ཅིག་མ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ།།

འོན་ཏེ་ཡང་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་དུས་ན་རྒྱུ་མེད་པའི་ཕྱིར་མེད་པ་དང་ལྷན་ཅིག་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་དམ་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་མ་ཚོད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་བསམ་པ་མི་འཇུག་པ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཚེ་བར་ན་[2] དུས་གཞན་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རྒྱུ་མེད་པ་དེ་ཉིད་[3] རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

གལ་ཏེ་ཡང་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་དུས་ན་རྒྱུ་མེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འབྲས་བུ་རྒྱུ་མེད་པ་

1 ཕྲན་རྣམ་ཉིད་དུ་… སྣ།
2 དེའི་ཚེ་དུས་… སྣ།
3 མེད་པ་ཉིད་… སྣ། པེ།

ཅན་ཁོ་ནར་(196b)འགྱུར་རོ། །རྒྱུ་ཞིག་པ་ལས་འབྲས་བུ་འདོད་པར་འགྱུར་གྱི། ད་ལྟར་གྱི་ལས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། མེད་ན་ད་ལྟར་ཉིད་དུ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་དང་། ད་ལྟར་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་མེད་པར་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཡོད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན་ཡང་ཇི་སྲེ་མ་ཚོད་པ་ལ་སོགས་པའི་བསམ་པ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར། ཇི་སྟེ་ཡང་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བའི་དུས་ན་རྒྱུ་ཡོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། འབྲས་བུ་ཡོད་པའི་དུས་ན་ནི་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་མ་ཚོད་པ་ལ་སོགས་པའི་བསམ་པ་མི་བྱེད་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། སྐྱེ་བ་ནི་ཡོད་པ་ལས་དོན་གཞན་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་ཁྱེད་ནི་རྒྱུ་དང་བར་མེད་པ་ཁོ་ནར་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་སྐྱེ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བརྗོད་དོ།།

བར་མེད་པར་ཡོད་དོ་ཞེས་སྨྲ་བ་དག་གིས་ཀྱང་མ་ཚོད་པ་ཙམ་ཟད་ཅིག་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་བར་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲའི་དོན་ཅི་ཞིག་ཡིན་པར་འགྱུར། བར་མེད་པ་དང་མ་ཚོད་པ་དང་རེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་དོན་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ཁས་བླངས་ན་ཤུགས་ཀྱིས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་དུས་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་ཏེ། ཡོད་པ་དུས་གཞན་གྱིས་མ་ཚོད་པ་གཉིས་ལ་གནས་སྐབས་གཞན་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

གཞན་ཡང་རྒྱུ་ཞིག་པ་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་ཐལ་ན་ནི་མི་རུང་བས་ཁྱེད་ཀྱིས་དེ་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ། ད་ལྟར་གྱི་རྒྱུ་ལས་མ་ཚོད་པར་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ནི་ཅི་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་ཚོད་དམ། འོན་ཏེ་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་ཞེས་བྱ་བའི་[1] བསམ་པ་འདི་འཇུག་པ་ཉིད་དེ། དེ་ལ་རྣམ་པ་གཞན་མི་སྲིད་པའི་

1 ཤེས་བྱ་བའི་ སྣ། པེ།

ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རྒྱུ་ནི་འབྲས་བུའི་སྐད་ཅིག་མ་དང་མ་ཚོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་ཀྱང་མ་ཡིན། བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲ་བས་ཅི་ཞིག་སྨྲས་པར་འགྱུར་ཞེ་ན། མ་ཚོད་པ་ཞེས་ཡིན་ལ། མ་ཚོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་འགྱུར་ཏེ། ཤིན་ཏུ་རིགས་པར་སྨྲས་པ་འདི་ལྟ་བུ་གཞན་སུ་ཞིག་སྨྲ་བའོ།།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་འབྲས་བུ་ཡོད་པའི་དུས་ན་རྒྱུ་མེད་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྒྱུ་མ་ཞིག་པ་ཁོ་ན་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་ངོ་ཞེས་བརྗོད་པར་མི་བྱ་སྟེ། དེའི་ཚེ་རྒྱུ་མ་ཞིག་པ་འགའ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཚེ་རྒྱུ་མ་ཞིག་པ་དེའི་ཚེ་འབྲས་བུ་མེད་ (197a) པའི་ཕྱིར་དེ་ཇི་ལྟར་མ་ཞིག་པ་ལས་འབྱུང་བར་འགྱུར།

གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་ཇི་ལྟར་དངོས་པོ་རང་ཞིག་ནས་མེད་པ་ལྟན་ཅིག་མ་ཚོད་པ་ཡིན་ཡང་དུས་གཅིག་པ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དང་། ཇི་ལྟར་གྲིབ་མ་དང་། ཉི་མ་དག་དང་འབབ་ཆུའི་རྒྱུན་དག་ལ་ཆུའི་རྒྱུན་སྔ་ཕྱི་དག་མེད་པ་ཡིན་ཡང་[1]ཡུལ་གཅིག་པ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་འདིར་ཡང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ཡང་དག་པར་མེད་པ་ཡིན་ཡང་དུས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་[2]དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལ་ཡང་བརྒལ་ཞིང་བརྟག་པ་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

འདི་ལྟར་དེ་ལ་ཡང་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་དག་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་མ་ཚོད་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཆ་ཤས་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །གལ་ཏེ་བདག་

---

1 ཆུའི་རྒྱུན་སྔ་ཕྱི་དག་པར་མེད་པ་ཡང་ སྣ། པེ།

2 སེམས་པ་ སྣ། པེ།

ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དུས་གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་གྲིབ་མ་དང་། ཉི་མ་དང་། ཆུའི་རྒྱུན་དག་ཀྱང་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་ཚོད་པ་ཡིན་ན་ནི་ཡུལ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །ཕྱོགས་གཅིག་གིས་མ་ཚོད་ན་ནི་ཆ་ཤས་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །ཁོ་བོ་ཅག་ལ་ནི་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་འདི་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མ་གྲུབ་སྟེ། དེ་ནི་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་སྨྲོས་པའི་དྲྭ་བ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ལ་མ་ཚོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པར་འགྱུར་བ་དངོས་པོ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་འགའ་ཡང་མེད་དོ། །འོན་ཀྱང་དུས་ཕྱི་མར་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་དགག་པ་ཙམ་ལ་གདགས་པ་དེ་ལྟར་བྱས་ཏེ། དེ་ཡང་བར་མེད་པར་ཅི་ཡང་མི་འབྱུང་སྟེ། མེད་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ།།

དགག་པ་ཙམ་ནི་ཅི་ཡང་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་དང་ལྷན་ཅིག་དོན་དམ་པ་པའི་མ་ཚོད་པ་ལ་སོགས་པའི་བསམ་པ་མི་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ནི་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་མ་ཚོད་པ་ལ་སོགས་པའི་བསམ་པ་འཇུག་པ་ཉིད་དོ། །འཕགས་པ་སྐྱ་ལྦུ་ལྟུང་བའི་མདོ་ལས།[1] བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་སྣང་མདའི་མཐོན་དམན་གྱི་དཔེས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་མ་ཚོད་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་པ་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཆད་པར་ལྟ་བ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཚ། ༡༡༨ བ ༡ སྐྲིད་མ་དཔེ་ཤོག་གྲངས་ ༦ ཨཙྪུར་དཔེ་མཛོད་ཁང་། མད་ནུས་ ༡༩༥༠ སྔོན་འགག་པའི་ས་བོན་ལས་མྱུ་གུ་སྐྱེ་བ་མ་ཡིན། མ་འགགས་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་གྱི། ས་བོན་ཡང་དགགས་ལ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་སྣང་མདའི་ཐོན་དམན་བཞིན་དུ་མྱུ་གུ་སྐྱེ་བ་དེའི་ཕྱིར་ཆད་པར་མ་ཡིན་ནོ།།

ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་ལྟའི། དོན་དམ་པ་ནི་མ་(197b)ཡིན་ཏེ། དོན་དམ་པར་སྣང་མདའ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་སྣང་མདའ་ཡན་ལག་ཅན་གྱི་ངོ་བོ་ཞིག་དཔེ་ཉིད་དུ་སྟོན་ན་ནི་དེ་མ་གྲུབ་སྟེ། གཅིག་ལ་ཅིག་ཅར་མཐོན་དམན་ལ་སོགས་པ་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་[1]བྱ་བ་གཉིས་དང་ལྡན་པར་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། དེ་ནི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་བསགས་པའི་བདག་ཉིད་དུ་ཡང་མ་གྲུབ་སྟེ། རྡུལ་རྣམས་ཆ་ཤས་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་བསགས་པ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཆ་ཤས་དང་བཅས་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་སྣང་མདའ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྣང་བའི་ངོ་བོ་ཞིག་སྟེན་ནི་ན་དེ་ཡང་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་བརྫུན་པ་ཉིད་ཡིན་པས་ཇི་ལྟར་དངོས་པོ་ཡོད་པར་འགྱུར། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྟེང་དང་འོག་ཏུ་འགྲོ་བ་མེད་དོ། །འདིས་ནི་སྤྲིན་མ་དང་། ཉི་མ་དང་། ཆུ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ལན་བཏབ་པ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པའི་མདོ་ལས།[2] རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་བཀག་པའི་ཕྱིར་སྣང་མདའ་ལ་སོགས་པའི་དཔེ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ན་ལ་རྟོགས་པར་བྱའོ།།

གང་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འདི་ཡོད་ན་འདི་འབྱུང་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གསུམ་བོར་ཏེ། རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཞི་པ་ཁོ་ན་ཞལ་གྱིས་བཞེས་སོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། ཅི་འདི་ཡོད་ན་འདི་འབྱུང་ཞེས་བྱ་བའི་བཀའ་འདི་ཁོ་ནས་ཕྱོགས་གསུམ་བསལ་བ་དང་། ཕྱོགས་བཞི་པ་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་བསྟན་

1 འགལ་བ་གཉིས་ སྣ།
2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ།



ཏམ། འོན་ཏེ་རིགས་པས་ཡིན། གལ་ཏེ་བཀས་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གྲིབ་མ་དང་། སྨྱུ་གུ་དག་དང་། མར་མེ་དང་། འོད་དུས་མཉམ་པ་ཡོད་པ་དག་ཀྱང་། མར་མེ་ལ་སོགས་པ་འདི་ཡོད་ན། འོད་ལ་སོགས་པ་འདི་འབྱུང་ངོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་སྙད་འདི་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་སྒྲ་འདིས་ནི་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་རྒྱུ་ཡོད་པ་ལ་རག་ལས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཙམ་ཞིག་བསྟན་པ་ཡིན་གྱི། འབྲས་བུ་ཡོད་པའི་དུས་ན་རྒྱུ་མེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་རྣམས་ཚད་མ་གཞན་གྱིས་དོན་དམ་པར་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་དུ་གྲུབ་ན་ཡོངས་སུ་རྟོགས་པ་དེ་ལྟ་བུ་དེར་འགྱུར་གྱི། བཀས་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། འཇིག་རྟེན་གྱི་(198a)གྲགས་པས་ནི་[1]མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ན་གྲིབ་མ་དང་སྨྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་དུས་མཉམ་པ་ན་ཡོད་པ་རྣམས་ཀྱང་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོར་[2] ཤེས་པ་ཉིད་དོ།།

འོན་ཏེ་རིགས་པས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་ཡིན་ན། འོ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཉེ་བར་དགོད་པར་མི་བྱ་སྟེ། དེ་ནི་དོན་འདི་ལ་ཁུངས་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། རིགས་པ་ཁོ་ན་ཞིག་བརྗོད་པར་བྱ་དགོས་པར་འགྱུར་ན་དེ་ཡང་བརྗོད་པར་མི་ནུས་ཏེ། འདི་ལྟར་ཇི་ལྟར་རིགས་པས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གསུམ་མི་སྲིད་པ་དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཞི་པ་ཡང་དོན་དམ་པར་མི་སྲིད་དོ་ཞེས་དེ་ནི་རྒྱས་པར་བསྟན་ཟིན་ཏོ།།

གང་དག་གྲགས་པ་ལས་འདས་ཏེ། བདག་ལ་སོགས་པའི་རྫས་རྟག་པ་དང་། རང་དབང་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ཅན་དུ་རྟོག་པར་བྱེད་ཅིང་། ལས་དང་འབྲས་བུ་

---

1 གྲགས་པས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། སྣ། པེ།

2 འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ སྣ།

འབྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཡང་རྣམ་པར་སེལ་བར་བྱེད་པ་དེ་དག་གི་ལྟ་བ་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྐྱེན་ཉིད་འདི་པ་ཙམ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་[1] བཞིན་དུ་གནས་པ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ན་ལ་བརྟེན་ནས་འདི་ཡོད་ན་འདི་འབྱུང་ངོ་ཞེས་གསུངས་ཀྱི། བཀའ་འདི་ལས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གསུམ་བསལ་བ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཞི་པ་ལ་བརྟེན་པར་རྟོག་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་དོན་དམ་པར་གཞན་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་[2] མ་ཡིན་ནོ།།

དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་འདི་ཐམས་ཅད་ནི་སྒྱུ་མ་འབྱུང་བ་བཞིན་དུ་མ་བརྟགས་ན་དགའ་[3] བ་སྟེ་བརྫུན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། དེ་སྐད་དུ།[4]

མ་ཞིག་པ་ལས་འབྲས་འབྱུང་དུ། །
དེ་ཚེ་འབྲས་འབྱུང་རྩི་ཡང་མེད། །
འོན་ཏེ་ཞིག་ལས་འབྲས་འབྱུང་ན། །

1 སྣ་བ་ལ་སོགས་པ······ སྡེ།
2 རིག་པ་ སྣ།
3 དཀའ་བ་ སྡེ།
4 སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསྟོད་པ་ལས་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། རེ་ཞིག་ཞིག་པའི་རྒྱུ་ལས་ཀྱང་། །འབྲས་བུ་རྫུ་བ་མི་རིགས་པ། །མ་ཞིག་ལས་མིན་རྨི་ལས་དང་། །འདྲ་བའི་སྐྱེ་བ་ཁྱོད་ཀྱི་བཞེད། །ཞིག་དང་མ་ཞིག་པ་དག་གིས། རྒྱུ་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་དག །སྒྱུ་མ་འབྱུང་བ་བཞིན་དུ་འབྱུང་། །ཀུན་ཀྱང་དེ་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །ཞེས་པ་ལྟར་གོང་གི་ཚིགས་བཅད་དང་པོ་དེ་ཕྱོགས་འདྲ་བ་ཙམ་ལས་ཐམས་ཅད་མ་ཚུངས་ཀྱང་། ཚིགས་བཅད་ཕྱི་མ་དེ་བསྒྱུར་ཚུང་ཟད་མི་མཐུན་པ་ཙམ་ལས་དོན་ཀུན་ནས་མཚུངས་པས་བསྒྱུར་མི་འདྲ་བར་སྣང་ངོ་། སྡེ་བསྟན། རྒྱུད། ཀ ༤༩ ན

དེ་ཚེ་འབྲས་བུ་གང་ལས་འབྱུང་། །
ས་བོན་འགགས་དང་མ་འགགས་ལས། །
འབྲས་བུ་འབྱུང་བར་མི་སྲིད་དོ། །
སྐྱེ་བ་སྒྱུ་མ་སྐྱེ་བ་བཞིན། །
འདི་དག་ཐམས་ཅད་དེ་ཡིས་བརྗོད། །

དེའི་ཕྱིར་སློབ་དཔོན་ཁ་ཅིག་གིས་དོན་དམ་པར་ནང་གི་སྐྱེ་མཆེད་རྐྱེན་གཞན་དག་ལས་མི་སྐྱེ་སྟེ། གཞན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བཤད་པ་གང་ཡིན་པའི་གཏན་ཚིགས་དེ་ཡང་ལྡོག་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཉིད་མ་ཡིན་ཏེ། མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་ཡོད་པ་ནི་མི་རྟག་པ་ཉིད་སྒྲུབ་པ་(198b)དང་འདྲའོ། །ཀླུན་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པར་སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་གཞན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་པས་དེ་ལ་ནི་འདི་མ་ངེས་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་གྱི། སྐྱེ་བ་དགག་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱའི། མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཡོད་པ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། ཐ་སྙད་དུ་ནི་གཞན་ཉིད་ཙམ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པའི་[1] དངོས་པོར་གྱུར་པས་ཐ་སྙད་གདགས་པར་ནི་གང་དུ་ཡང་མ་གྲུབ་བོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་ཁ་ཅིག་འདི་ལ་མ་ངེས་པ་དང་། མ་གྲུབ་པ་ཉིད་[2]ཀྱི་རྗོད་པར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།།

---

1 ཡང་དག་པ་པའི་ སྣ། པེ།

2 མ་གྲུབ་པ་བརྗོད་པར་བྱེད་པ་ སྣ། པེ།

མུ་སྟེགས་ཅན་རྣམས་[1]གཞན་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྒྱུ་ནི་དངོས་སུ་གཞན་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་དེ་ལྟ་བུ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་བརྗོད་པ་དེ་དག་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས།[2]

དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི། །

རྐྱེན་ལ་སོགས་པ་ཡོད་མ་ཡིན། །

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སུན་དབྱུང་བར་བཤད་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་གཞུང་ལུགས་ཀྱིས་གཞན་ཉིད་མ་གྲུབ་པས་གཞན་ལས་མི་སྐྱེའོ་ཞེས་བསྟན་པར་འགྱུར་རོ། །གང་དག་གཞན་ལ་སོགས་པའི་སྒྲ་བརྟགས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི་དོན་ཅན་ཡང་བརྒྱུད་པས་དངོས་པོ་མཐར་ཐུག་པ་ཁོ་ན་རྗོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ཀྱང་དངོས་པོའི་རང་བཞིན་དུ་རྐྱེན་ལ་ཡོད་ན་སྐྱེ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དགོངས་ནས་སུན་དབྱུང་[3]བ་ཡིན་ཏེ། ཇི་ལྟར་རྐྱེན་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡོད་ན་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་རང་བཞིན་སྐྱེ་བ་མེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་རྒྱས་པར་བསྟན་མ་ཐག་པ་ཡིན་ནོ། །

དེའི་ཕྱིར་གང་གི་ཚེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་གཞན་ལས་སྐྱེ་བ་མི་འཐད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པ་དེའི་ཚེ་རྐྱེན་ལ་སོགས་པ་ཡང་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་པས་ཡང་དག་པར་ན་གང་ལ་སྒྲ་འདི་མཐར་ཐུག་པར་འགྱུར་བ་གཞན་དུ་གྱུར་པའི་དངོས་པོ་ཅི་ཡང་མེད་དོ། དེའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་དེ་ལྟ་བུའི་ཐ་སྙད་མ་གྲུབ་[4]ཏུ་ཟིན་

1 མུ་སྟེགས་ཅན་གཞན་རྣམས་གཞན་ལ་སོགས་པ་ སྣ། པེ།

2 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༡ ན ༣

3 སུན་ཕྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། སྣ།

4 གྲུབ་ཏུ་ སྣ།

ཀྱང་། འོན་ཀྱང་དངོས་པོ་ལ་ནི་གནོད་པ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེའི་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ།།

(30)གྲངས་ཅན་གཙོ་བོ་དབང་ཕྱུག་དང་བཅས་པར་སྨྲ་བ་གང་དག་དངོས་པོ་རྣམས་གཙོ་བོ་དབང་ཕྱུག་དང་བཅས་པ་ལས་སྐྱེ་བར་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ན་རང་དང་གཞན་ལས་དེ་ཉེ་བར་[1](199a)བརྗོད་པ་དེ་དག་གི་ཕྱོགས་ནི་སོ་སོར་བཤད་པའི་ཉེས་པས་སུན་ཕྱུང་བའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །གཞན་གང་དག་རེས་འགའ་རང་འགའི་དབང་གིས་གཉི་གས་སྐྱེ་བར་བརྗོད་པར་འགྱུར་བ་དེ་དག་ཀྱང་ཉེས་པ་གཉི་ག་ལས་[2]སུན་ཕྱུང་བའི་ཕྱིར་བསལ་བ་[3]ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ཁ་ཅིག་ན་རེ་གཉི་གའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ་ཚད་མ་དང་འགལ་བ་ནི་སུས་ཀྱང་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཁས་མ་བླངས་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་ཁྱོད་ནི་དེ་ལས་སྐྱེ་བ་སུན་འབྱིན་པར་སེམས་པ་དེ་ཁོ་ནས་བདག་ཉིད་སྨོངས་ཏེ། ཚིགས་སུ་བྱུར་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེས་རང་དང་གཞུང་ལུགས་ཡོངས་སུ་མ་ཤེས་པ་དང་། སྨྲའི་དོན་མ་རིག་པ་ཉིད་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་ཚིག་དེ་ནི་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཁྱད་དུ་གསད་པར་བྱ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །གཞན་དག་ནི་ཚེར་མ་ལ་སོགས་པ་རྣོ་བ་ལ་སོགས་པའི་དཔེས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་རྒྱུ་མེད་པ་ཁོ་ནར་སྐྱེ་བར་ཉེ་བར་བརྗོད་དེ། དེ་ལ་དེ་དག་གི་དངོས་པོ་རྣམས་རྒྱུ་མེད་པར་སྐྱེ་བ་དོན་དམ་པ་པར་བསྒྲུབས་[4]པར་བྱ་བ་ལ་དཔེ་མ་གྲུབ་སྟེ། དོན་དམ་པ་པར་

1 གཞན་ལས་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ སྣ།
2 གཉིས་གས་ སྣ།
3 བསྒུལ་བ་ སྡེ།
4 བསྒྲུབ་ སྣ། པེ།

ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཀུན་རྫོབ་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་ཡང་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་ཆེར་མ་ལ་སོགས་པ་རང་གི་ས་བོན་ལ་སོགས་པ་ལས་འབྱུང་བར་མངོན་སུམ་འདིས་རྣམ་པར་ངེས་ལ། དེ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་དག་གི་རྣོ་བ་སོགས་པ་ཡང་ངེས་པས་གང་ཡང་རྒྱུ་མེད་པར་སྐྱེ་བ་མེད་དོ། །འདི་ལྟར་དངོས་པོ་འདི་ཐམས་ཅད་ལ་ལར་རེས་འགའ་འབྱུང་བས་ལྟོས[1]པ་དང་བཅས་པར་ཡོངས་སུ་ངེས་པ་ཉིད་དེ། ལྟོས[1]པ་མེད་པ་རྣམས་ནི་རྟག་ཏུ་ཁྱད་པར་མེད་པས་རེས་འགའ་བ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་དག་གི་ལྟོས[2]པར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་རྒྱུ་ཡིན་ཏེ། ཕན་པ་མེད་པ་ལ་ལྟོས་པར་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་ཕན་པ་ཉིད་དུ་གྲགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་དེ་དག་གི[3]རྒྱུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་གྲུབ་བོ། །རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་ཆེར་མ་ལ་སོགས་པ་དག་ལ་རྣོ་བ་ལ་སོགས་པ་ངེས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །ས་བོན་དང་མྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཡང་འཇིག་(199b)རྟེན་མངོན་སུམ་ཁོ་ནར་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དམ་བཅས་པ་ལ་མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པ་ཡང་ཡིན་ལ། གཞན་དག་ལ་གཏན་ཚིགས་ལས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་ངེས་པར་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་རང་གི་ཚིག་དང་འགལ་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གཏན་ཚིགས་སྦྱོར་བ་དོན་མེད་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །དམ་བཅས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་འདོད་པའི་དོན་འགྲུབ་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་

1 བལྟོས་ པེ།

2 བལྟོས་ པེ།

3 དེ་དག་རྒྱུ་ཡིན་ནོ། སྣ། པེ།

ཅན་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རྒྱུ་མེད་པར་སྨྲ་བ་འདི་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པས་གནོད་པའི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཐག་བསྲིངས་ཏེ་སྤང་བར་བྱ་བ་ཉིད་དོ།།[1]

གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་གནས་པ་མ་བརྟགས་ན་དགའ་བ་ཇི་ལྟར་གྲགས་པ་མ་བཀག་པའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་མེད་པར་སྨྲ་བ་ལ་ནི་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པའི་གནོད་པ་མེད་དོ། །ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་ནི་སྤྲར་བསལ་བ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟར་ན་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ལ། འགལ་བ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་མ་སྐྱེས་པ་ནི་རང་བཞིན་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་མེད་པས་སྐྱེ་བས་དེ་དག་ལ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར་དེ་ཡང་དག་པར་ལྡོག་ན་དེ་ཡང་ལྡོག་པར་འགྱུར་བས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །སྐྱེ་བ་འཇུག་པ་ནི་གཅིག་ཏུ་དེ་ལ་ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ན་བུ་ལ་སོགས་པ་མི་བདེན་པ་ཡང་སྐྱེ་བར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་ཉིད་དེ་ལྟ་བུར་སྣང་ངོ་ཞེས་བྱ་བར་རིགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་ཡང་དག་པར་ན་དེའི་རྣམ་པ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ་[2]ཞེས་སྤྲར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །གཞན་ནི་གཞན་གྱི་ངོ་བོར་སྣང་བར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་དག་ནི་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ།།

སྐྱེ་བ་ངེས་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ལ་ཁྱབ་ཀྱང་སྐྱེ་བ་ལ་ངེས་པར་ངོ་བོ་ཉིད་

---

1 སྤྲང་པ་ཉིད་དོ། སྣ།

2 མི་སྲིད་དོ་ཞེས་··· སྣ། པེ།

དང་བཅས་པ་ཡང་དག་པར་ནི་མི་འགྲུབ་སྟེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཉེ་ན་གནོད་མི་ཟ་བར་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བ་ཉིད་དུ་ངེས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེ་ནི་ཐུན་མོང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་དག་པར་ན་གང་ལ་ཡང་སྐྱེ་བ་[1]འཇུག་(200a)པ་མེད་དོ་ཞེས་ཀྱང་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་ཟིན་ཏོ།།

གང་དག་ཡང་དངོས་པོ་རྣམས་ནི་རྐྱེན་དག་ལས་མི་སྐྱེའི། འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། དེ་དག་གིས་གསལ་བར་བྱེད་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དེ། དེའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་པ་དེ་ཡང་སྔར་བསལ་བ་སྤྱིར་བསལ་[2]བའི་ཕྱིར་སྤངས་པ་ཉིད་དོ། །གལ་ཏེ་རྐྱེན་དག་ལས་དངོས་པོ་གསལ་བར་འགྱུར་ན་རང་གི་མཚན་ཉིད་རྒྱས་པའི་ངོ་བོའམ། དེའི་སྒྲིབ་པ་ཡང་དག་པར་ཟད་པའི་བདག་ཉིད་དམ། དབང་པོ་ལེགས་པར་བྱེད་པའམ། ཡུལ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བའི་མཚན་ཉིད་གཅིག་ཏུ་འགྱུར་གྲང་ཞེས་རྣམ་པར་བརྟགས་ཏེ། དེ་ལ་རེ་ཞིག་ཕྱོགས་དང་པོ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། རྟག་པ་ཉིད་ཉམས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།།

གལ་ཏེ་རང་གི་ངོ་བོ་མ་རྒྱས་པ་ནི་རང་གི་དང་གིས་འཛིན་ལ་གསལ་བར་བྱེད་པའི་རྐྱེན་ལས་སོ། །ངོ་བོ་ཉིད་རྒྱས་པ་[3]གཞན་ཞིག་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ན་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་རང་གི་མཚན་ཉིད་རྒྱས་པར་འགྱུར་རོ།། [4]དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ཏེ། རང་གི་ངོ་བོ་སྔ་མ་མ་འགགས་ན་གཅིག་ལ་རྒྱས་པ་དང་མ་རྒྱས་པ་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་རང་བཞིན་གཉིས་

1 ཡང་དག་པ་སྐྱེ་བ་འཇུག་··· སྣ། པེ།

2 བསྒྲུལ་ སྡེ།

3 ངོ་བོ་རྒྱས་པ་ པེ།

4 དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ཏེ། ནས་ ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་རོ། བར་པེ་ཅིང་དཔར་མའི་ནང་ཆད།

འཆོལ་བར་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་རོ། །རང་གི་ངོ་བོ་སྟོན་མེད་པ་ཞིག་མི་སྐྱེ་ན་ཡང་གསལ་བར་བྱེད་པའི་རྐྱེན་དོན་མེད་པར་འགྱུར་ལ། དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་ཡང་སྣང་རུས་པར་བསལ་བའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །སྒྲིབ་པ་ཡང་དག་པར་ཟད་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། མེད་པའི་ངོ་བོ་དེ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་གང་གིས་ཀྱང་བྱེད་པར་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ལ་ཡང་བྱ་བ་སྣང་བསལ་བའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཞིག་བྱེད་པ་ཡིན་ན་ནི་རྐྱེན་རྣམས་ཇི་ལྟར་དངོས་པོའི་གསལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ན་དོན་གཞན་དུ་མ་གྱུར་པ་ནི་བྱེད་པར་མི་སྲིད་པ་ཉིད་དེ། དེ་ནི་སྔོན་ཉིད་ནས་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོ་རྟག་པ་ལ་ནི། རང་བཞིན་གྱི་ཁྱད་པར་འགའ་ཞིག་མ་བཞིག་པའམ། མ་བསྐྱེད་པར་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པ་ནམ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡུལ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བའི་བགེགས་བྱེད་[1]པ་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པར་རིགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་རང་གི་ཡུལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེད་ (200b)པར་ནུས་པའམ། དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་ཤེས་པ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་ལ་གང་གིས་ཀྱང་བགེགས་[2]བྱེད་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་འདི་མི་ནུས་པའམ་དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་མ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་རྒྱུ་མ་ཚང་བའི་ཕྱིར་ཡུལ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་འདི་ཡུལ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བའི་བགེགས་

---

1 གགས་ སྡེ། པེ།

2 གགས་ སྡེ། པེ།

བྱེད་[1]པ་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པར་[2]རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

སྒྲིབ་པ་ཡང་དག་པར་ཟད་པ་བཞིན་དུ་སྐྱེ་བ་ལ་བགེགས་[3]བྱེད་པ་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཡང་བྱེད་པར་མི་རིགས་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རམ། དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གསལ་བར་བྱེད་པའི་རྐྱེན་དག་ནི་[4]དེ་ལ་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པ་ཟློག་ཏུ་ཟིན་ཀྱང་། ཡུལ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །ཇི་སྟེ་ནུས་པར་ཁས་ལེན་ན་ནི། དེའི་ཚེ་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པ་ཡོད་ཀྱང་དེ་ལ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྟག་ཏུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བས་[5]གསལ་བར་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱི་བྱེད་པ་དོན་མེད་པ་ཡིན་ནོ།། དེ་ལྟ་བས་ན་རྟག་པ་རྣམས་ལ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་འགའ་ཡང་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་གྱི། མི་རྟག་པ་རྣམས་ནི་རྒྱུའི་ཁྱད་པར་ལ་ནི་རེས་འགའ་ཞིག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་བསྐྱེད་པར་མི་ནུས་པའི་སྐད་ཅིག་མ་གཞན་སྐྱེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲིབ་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དབང་པོ་ལེགས་པར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། ལེགས་པར་བྱེད་པ་དེའི་རང་གི་ངོ་བོར་གྱུར་པ་ཞིག་བྱེད་ན་ནི་མི་རྟག་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། ལེགས་པར་བྱེད་པ་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཞིག་བྱེད་ན་ནི་ལེགས་པར་སྔ་མ་བཞིན་ནོ། །

1 གགས་ སྡེ། པེ།

2 སྒྲིབ་པར་རིགས་པ་… སྣ།

3 ཤེས་པ་སྐྱེ་བ་ལ་བགེགས་བྱེད་… སྣ། པེ།

4 རྐྱེན་དག་གི་ སྣ། པེ།

5 འགྱུར་བར་ སྣ།

བྱེད་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ནི་ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །དངོས་པོ་གང་ལ་གང་གིས་ཀྱང་ཅུང་ཟད་ཀྱང་བྱེད་པར་མི་སྲིད་ཅེས[1]སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དབང་པོ་ལེགས་པར་ཡིན་དུ་ཆུག་ཀྱང་གལ་ཏེ་གསལ་བར་བྱ་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས། དབང་པོ་དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་བསྐྱེད་པར་མི་ནུས་པའམ། དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་ཞིག (201a)མ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་པ་ཉིད་པས་ལེགས་པར་བྱེད་པ་དོན་མེད་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་ནུས་པའམ་དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་ཞིག་ཡིན་ན་ནི[2]དེའི་ཚེ་དབང་པོ་ལེགས་པར་བྱེད་པའི་སྔོན་རོལ་དུ་ཡང་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བར་ཐལ་བས་དེ་ལེགས་པར་བྱེད་པ་དོན་མེད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཡུལ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་གསལ་བར་བྱ་བའི་དངོས་པོ་དེ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མི་ནུས་པའམ། དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་མ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་བསྐྱེད་ཀྱང་། དེ་ནི་དེའི་ཡུལ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་ནུས་པའམ་དེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེའི་རང་གི་ངོ་བོ་བཞིན་དུ་དེ་ཡོད་པ་ཙམ་གྱིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རྟག་ཏུ་ཉེ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་གསལ་བར་བྱེད་པ་རྣམས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་នོ།།

---

1 ཅེས་ཀྱང་སྔར་ སྣ། པེ།

2 རང་བཞིན་ཡིན་ན་ནི་ པེ།

གཞན་ཡང་ཁྱེད་ཀྱི་ལུགས་ཀྱིས་དངོས་པོའི་རིགས་ཐམས་ཅད་རྟག་ཏུ་གནས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པས་གསལ་བ་དང་། གསལ་བར་བྱེད་པ་དང་། གསལ་བར་བྱ་བ་ཡང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་གནས་པའི་ཕྱིར་གསལ་བ་ལ་སོགས་པར་རྣམ་པར་གཞག་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གསལ་བར་བྱེད་པ་རྣམས་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་གསལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐལ་བ་ཡང་བཟློག་དཀའ་སྟེ། རྟག་ཏུ་རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པ་ཉེ་བའི་[1]ཕྱིར་རོ།།

གཞན་ཡང་གསལ་བ་ནི་དངོས་པོ་རྟག་པ་ཁོ་ན་ལ་ཀུན་བརྟགས་པ་ཡིན་ན་རྟག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་ནུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྟོང་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོར་མི་འཐད་པ་ཉིད་པས་དེས་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ལྟ་ག་ལ་ཡིན། འདི་ལྟར་གང་ཞིག་ནུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྟོང་པ་དེ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བུ་སྟེ། དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་རྟག་པར་འདོད་པ་མཐའ་དག་ཀྱང་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ཡང་རིམ་དང་ཅིག་ཅར་དག་གིས་དོན་བྱེད་པར་འགལ་བའི་ཕྱིར་ནུས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་རིགས་མཐུན་པ་ལ་སྲིད་ (201b)པས་ཀྱིས་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་མ་ངེས་པ་གཏན་ཚིགས་འདི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ལ། འགལ་བ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་ནུས་པ་མ་ལུས་པ་དང་བྲལ་བ་འདི་ཁོ་ན་དངོས་པོ་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ལ། དེ་ནི་འདུས་མ་བྱས་ལ་ཡང་ཡོད་པའི་ཕྱིར་འདི་ཊི་ལྟར་དངོས་པོ་ཉིད་ཡིན། དེས་ན་གང་དག་སོ་སོར་བརྟགས་པས་འགོག་པ་ལ་སོགས་པ་ནུས་པ་

---

1 མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། སྣ། པེ།

ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྟོང་པ་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་ལ་ཡང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་རྟོག་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་གི་རྟོག་པ་དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། དེ་ལ་དེའི་རྒྱུ་འགའ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

འདི་ལྟར་ཇི་སྐྱེ་སོ་སོར་བརྟགས་པས་འགོག་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་འགའ་ཞིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཡུལ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གདོན་མི་ཟ་བར་དེ་དེའི་རྒྱུའི་དངོས་པོར་ཁས་བླང་བར་བྱ་དགོས་ཏེ།[1] རྒྱུ་མ་ཡིན་པ་ནི་ཡུལ་ཉིད་དུ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ།། རྒྱུའི་ཁྱད་པར་ཁོ་ན་རང་གི་རྣམ་པར་གཏོད་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་ཕན་འདོགས་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་ན་ཡུལ་ཡིན་នོ་ཞེས་འཛེར་ཏེ། དེ་ལྟ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་རྟག་པ་ཉིད་ཉམས་པར་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་རིམ་དང་ཅིག་ཤོས་དག་གིས་དོན་བྱེད་པར་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་དེ་ཕན་པ་མེད་བཞིན་དུ་ཡང་དེའི་ཤེས་པས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡུལ་ཉིད་དུ་རྟོག་པར་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེའི་ཤེས་པས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་རྗེས་སུ་འབྲང་ན་དེའི་ཤེས་པ་ཡང་དེ་འདྲ་བ་[2]ཉིད་དུ་རྗེས་སུ་འབྲང་བའི་ཕྱིར་རྟག་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྐྲེ་མི་འབྲང་ན་ནི་དེའི་རྟག་པ་ཉིད་ཉམས་པ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་ཡང་དེ་ནི་ཐ་ན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཐུགས་ཀྱང་རུང་། །འགའི་ཡུལ་གྱི་དངོས་པོར་ཡང་ཉེ་བར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་རྟོག་པར་བྱེད་ན་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་དངོས་པོ་ཡོད་པར་ཐ་སྙད་འདོགས་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེར་ཐ་སྙད་གདགས་པའི་རྒྱུ་དེ་ཤེས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གིས་ན་དེ་ལས་རྣམ་

1 ཁས་བླང་དགོས་ཏེ། སྣ། པེ།

2 དེ་དང་འདྲ་བ་ སྣ། པེ།

པར་དབྱེ་བར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་ངོ་བོ་ལས་ཀྱང་དེ་ཁྱད་པར་དུ་བརྗོད་དགོས་ཏེ། དངོས་པོ་མེད་པ་ལས་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་མ་ཕྱེ་བའི་[1]ངོ་བོ་ཉིད་ནི་དངོས་པོ་(202a)ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་བདག་ཉིད་ཀྱི་རང་གི་ངོ་བོ་འཛིན་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཡོད་དོ་ཞེས་བརྗོད་པར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་ཡང་ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་འཛིན་པ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་ཡང་དངོས་པོ་[2]དངོས་པོ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་ན་ནི་བརྩད་པ་མེད་དོ། །འོན་ཀྱང་མོ་གཤམ་གྱི་བུ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡང་རྒྱུ་མེད་པར་[3]ཅི་སྟེ་མི་བརྗོད་ཅེས་ནི་སྨྲོའོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལྟ་སྟེ་འདུས་མ་བྱས་ཡོད་པ་ཉིད་དུ་སྨྲ་བ་འདི་ནི་བཟང་པོ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[4] "བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ་ནམ་མཁའ་དང་འགོག་པ་དང་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་མ་བྱས་པའི་དངོས་པོར་སྒྲོ་འདོགས་པ་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་སྒྲོ་འདོགས་པའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་གཞན་དག་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པར་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་གང་ཟག་ལ་སོགས་པས་བསྒྲུབ་པ་གཉི་ག་ཡང་མ་ངེས་པ་

---

1 རྣམ་པར་ཕྱེ་བའི་ སྣ། པེ།

2 དངོས་པོ་ཞེས་མིང་ སྣ། པེ།

3 རྒྱུ་མེད་པ་དེ་ སྣ། པེ།

4 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ཤོག ༨༣ བ ༣ བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་མེད་པའི་དངོས་པོར་སྒྲོ་འདོགས་པ་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། ནམ་མཁའ་དང་། འགོག་པ་དང་། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་མ་བྱས་པའི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་འདོགས་པའོ།

ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་ཡོད་པ་ལ་ཇི་ལྟར་ཡང་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། འདི་ལྟར་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་དག་ནི་ཅིག་སྒྲུབ་པ་དང་། དགག་པ་དང་། གཞན་དགག་པ་དང་། སྒྲུབ་པ་མེད་ན་མེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཅིག་དགག་པ་ཡང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་དངོས་པོ་གཞན་སྒྲུབ་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་ན་དངོས་པོ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་[1]རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རང་དང་གཞན་གྱིས་སྨྲས་པའི་དངོས་པོའི་བྱེ་བྲག་མ་ལུས་པ་དག་གཞོམ་པའི་ཕྱིར་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱིས། རྡོ་རྗེའི་གཟེགས་མ་ཐོགས་པ་མེད་པ་བཞི་པོ་འདི་དག་རབ་ཏུ་གསུངས་པའི་ཕྱིར་ལམ་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འགལ་བར་མི་བྱ་བ་ཉིད་དེ།[2]

རང་ལས་མ་ཡིན་གཞན་ལས་མིན། །
གཉིས་ལས་མ་ཡིན་རྒྱུ་མེད་མིན། །
དངོས་པོ་གང་དག་གང་ན་ཡང་། །
སྐྱེས་པ་ནམ་ཡང་ཡོད་མ་ཡིན། །

ཞེས་བཤད་པ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ལྟར་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་ན་བདག་མེད་པར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་(202b)ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་

---

1 མ་ཡིན་པར་འགྱུར་" སྣ།

2 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༡ ན ༡

རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས། དངོས་པོ་རྣམས་ལ་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པར་འཛིན་པ་བཀག་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་བཞིན་དུ་ཁུངས་ཀྱི་མདོ་རྣམས་ཀུང་སྤར་བསྟན་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཞན་ཡང་"གལ་ཏེ་གཟུགས་རྟག་གོ་ཞེས་བྱ་བར་བརྗོད་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་མི་སྤྱོད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གཟུགས་དེ་ཉིད་ཀུང་དེ་ལྟར་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ན་རྟག་པར་འགྱུར་བ་ལྟ་ཅི་ཞིག་སྨོས་ཀུང་ཅི་དགོས་"ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉིད་ཀྱི་མཐར་ཐུག་པའི་བར་དུ་སྦྱར་བར་བྱའོ།།

དེ་ལྟ་བས་ན་འདིར་གང་[1]གཞན་ལས་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་ལ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ན། གང་གིས་ན་དེ་ལས་ཀུང་འབྲས་བུ་སྐྱེ་བ་འགོག་པར་བྱེད། འདི་ལ་ནི་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཡང་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ཀུང་ལན་བཏབ་པ་ཡིན་ནོ།།

གང་ཡང་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་སྐྱེ་བར་དགག་པར་བྱ་བ་ལ། ཁྱེད་ལ་གཉི་ག་ལ་གྲུབ་པའི་གཏན་ཚིགས་དང་དཔེ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཡོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཅི་ཞེས་བྱ། ཆ་ཤས་མེད་པ་ལ་ཆ་ཤས་ཀྱིས་འགྲུབ་པ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་གང་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ཞིག་[2]ཡིན་གྲང་ན། ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གཞན་དག་གིས་སྟོན་མེད་པའི་ཁྱད་པར་བྱར་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གང་ཞིག་གཞན་དག་གིས་སྟོན་མེད་པའི་ཁྱད་པར་བྱར་མེད་པ་དེ་ནི་ནམ་ཡང་གང་གིས་ཀུང་མི་སྐྱེད་དེ། དཔེར་ན་ནམ་མཁའི་

1 འདིར་ཡང་ སྣ། པེ།
2 མཚན་ཉིད་ཅིག་ཡིན་··· སྣ། པེ།

པད་མ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ། །ཡོད་པར་མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་གཏན་ཚིགས་ལ་སོགས་པ་མི་སྲིད་པ་ཡིན་ནོ། །

རྣམ་པར་གཅད་པ་ཙམ་ཞིག་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། གཏན་ཚིགས་སུ་ཡང་དེ་ལྟ་བུ་སྟོན་པའི་ཕྱིར་ལ། དེ་དག་ཀུང་ཆོས་ཅན་དངོས་པོར་མ་གྱུར་པ་ལ་ཡང་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་གཞི་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ནི་སྔར་བསྟན་ཟིན་པ་ཁོ་ནའོ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པའི་ཆོས་དག་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཉིད་ཀུང་མ་ཡིན་ནོ། །ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཁྱད་པར་(203a)དུ་བྱར་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་ལ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ལོག་ན་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་མི་སྲིད་པས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཀུང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་གང་ཞིག་གཞན་དག་གིས་ཁྱད་པར་དུ་བྱེད་པ་དེ་ནི་རང་བཞིན་ཡིན་ལ།[1] གཞན་གང་ཡིན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་དེའི་ཡིན། སྔོན་གནས་པའི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྒྱུ་ཉེ་བའི་སྔོན་རོལ་ནས་གནས་པའི་ཕྱིར་དེ་ཇི་ལྟར་རྒྱུ་དག་ལས་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟ་བས་ན་མ་ངེས་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །

ཇི་སྟེ་གལ་ཏེ་ཁྱད་པར་དུ་བྱར་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་ལ་ཁྱབ་ན་འོ་ན་ནི་མེད་པ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཡིན་དུ་ཟད་དེ། དེ་ཡང་དག་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་རང་བཞིན་གྱིས་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་ཡིན་ན་དེ་ཇི་ལྟར་དུས་ཕྱིས་ཀུང་ཡོད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དག་ནི་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཞིག་གང་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་དེ་ཇི་ལྟར་

1 ཡིན་པས་ སྣ།

ཆོས་དེ་དང་ལྡན་པའི་ཆོས་ཅན་དང་ཉེ་བར་ལྡན་པར་འགྱུར་ཏེ། དཔེར་ན་ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པའི་ཆོས་སུ་གཏོགས་པ་ནམ་མཁའ་ལ་ལུས་ཅན་ཉིད་ལྟ་བུའོ། །སྐྱེ་བ་ཞེས་ཡང་དག་པར་བསྒྲགས་པ་ཡོད་པའི་ངོ་བོ་ཡང་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པས་དེ་ཇི་ལྟར་དོན་དམ་པར་མེད་པ་དང་ཉེ་བར་ལྡན་པར་འགྱུར།

གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་གང་ཞིག་སྐྱེ་བའི་བྱ་བ་དང་ལྡན་པས་སྐྱེ་བར་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ། །འོན་ཀྱང་དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པའི་རྒྱུ་འགའ་ཞིག་གི་འདུག་ཐོགས་སུ་འབྱུང་བར་ཡང་དག་པར་སྣང་བ་གང་ཡིན་པ་འདི་སྔོན་བྱུང་བར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་པས་དེའི་རྒྱུས་འདི་མེད་པ་སྐྱེའོ་ཞེས་འཇིག་རྟེན་ན་སྐྱེ་བའི་ཁྱད་པར་དང་ལྡན་པ་ལྟ་བུར་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་། མངོན་པར་བརྗོད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཐ་སྙད་འདི་རབ་ཏུ་འཇུག་གོ །ཐ་སྙད་ཀྱི་ཟུར་ཙམ་གྱིས་དངོས་པོ་ལ་གནོད་པ་ཅི་ཡང་མེད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་གང་ཞིག་ཡོད་པ་དང་ལྡན་པར་བརྗོད་པའི་ཆོས་གཞན་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཡོད་པར་མི་འདོད་དོ། །གལ་ཏེ་ཡོད་པར་འགྱུར་[1]ན་ནི་དེའི་ཚེ་མེད་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་བ་གང་ཞིག་ཕྱིས་འབྱུང་བའི་རང་བཞིན་དེ་ནི་གཞན་ཁོ་ན་ཡིན་ན་གཞན་གང་(203b)ཡིན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་དེའི་ཡིན། དེ་ལྟ་བས་ན་མེད་པ་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་དངོས་པོ་རྣམས་མ་བྱུང་བ་ལས་བྱུང་བ་ཙམ་[2]ཁོ་ན་ཞིག་སྒྲུབ་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདིར་ནི་དངོས་པོའི་རང་བཞིན་དཔྱད་པའི་སྐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཏེ། བྱེད་པ་དགག་

1 མི་འགྱུར་… སྣ།
2 མ་བྱུང་བ་ལས་མ་བྱུང་བ་ སྣ། པེ།

པ་ཙམ་བརྗོད་པར་འདོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ལ་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་འདི་རྒྱུ་ཉེ་བའི་སྔོན་རོལ་དུ་བྱུང་བར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་ན་དེའི་ཚེ་དེའི་རང་བཞིན་གང་ཞིག་ཡིན་པར་བརྗོད་པར་བྱ། ཇི་སྟེ་དེའི་ཚེ་དེ་འགའ་ཡང་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་གང་གི་ཚེ་རང་བཞིན་དུ་མངོན་པར་བརྗོད་པར་བྱའོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ནི་རུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་འགའ་ཡང་མེད་ན་དེའི་ཚེ་དེའི་རང་བཞིན་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསལ་རབ་ཏུ་བརྗོད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་འདི་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཞེས་བྱ་བས་ཅི་ཞིག་སྨྲས་པར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་སྔོན་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་དགག་པ་འདི་ནི་དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་གང་ཕྱིས་འབྱུང་བ་དེ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་སྔོན་མེད་པའི་ངོ་བོ་འདིའི་རང་བཞིན་མ་གཏོགས་པར་ཇི་ལྟར་ཉེ་བར་བརྟགས། འདི་སྔོན་བྱུང་བར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་མེད་པ་སྒྲུབ་པའི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྒྱུ་རྐྱེན་བརྟན་པ་འདི་ཡང་ཇི་ལྟར་ཡང་དག་པར་བརྗོད་དོ། །དེ་ལྟར་ན་མ་བྱུང་བ་ལ་འབྱུང་བར་སྒྲུབ་པ་ཡང་མེད་པ་ཡོད་པ་དང་ལྡན་པ་ཁོ་ནར་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ། [1]གཞན་མ་ཡིན་གྱི། གཞན་མ་བྱུང་བ་ལས་བྱུང་ངོ་ཞེས་བརྗོད་ན་འབྲེལ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་རྣམས་སྔོན་མེད་པ་ལ་ཕྱིས་ཡོད་པར་བརྗོད་པ་དག་གི་དེ་དང་འགལ་བའི་ཆོས་ཡང་དག་པ་པ་དང་ལྡན་པར་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ།།

འགལ་བའི་ཆོས་དང་ལྡན་པའི་རང་བཞིན་ཡང་ཡང་དག་པར་འཐད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་གཅིག་ལ་རིམ་གྱིས་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་མི་འགལ་བ་ཁོ་ནའོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་

1 གཞན་མེད་ན། གཞན་མ་བྱུང་བ་ལས་བྱུང་བའི་ཕྱིར་ཡོད་པ་དང་ཉེ་བ་མ་ཡིན་ནོ།། སྣ། པེ།

རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དུས་མཉམ་པ་ལ་ཡང་དེ་མི་འགལ་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་འདི་དག་དུས་མཉམ་པར་འགལ་བ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རིམ་གྱིས་ཀྱང་ཅིའི་ཕྱིར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

ཆོས་ཅན་ཐ་དད་པ་ལ་ནི་མཚན་ཉིད་འགལ་བ་དག་མི་འགལ་བ་ཉིད་ཀྱིས། ཆོས་ཅན་(204a)གཅིག་ལ་ནི་རིམ་གྱིས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཅིག་ཅར་[1]ཆོས་འགལ་བ་དུ་མ་དང་ལྡན་ན་གཅིག་པ་ཉིད་ཉམས་པར་ཐལ་བར་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ་རིམ་གྱིས་ཀྱང་དེ་དང་ལྡན་ན་དེ་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་ཉིད་དོ། །ད་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གཞན་དག་གིས་གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་རིམ་གྱིས་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པར་འགྱུར་བའི་ཚོགས་ཀྱི་ངོ་བོར་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བའམ། མངོན་པར་གསལ་བར་ཉེ་བར་བརྟག་པ་ལ་ཡང་གསལ་བ་དང་མི་གསལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཆོས་འགལ་བ་དང་ལྡན་པར་ཇི་སྐད་བརྗོད།

དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་རིམ་གྱིས་དངོས་པོ་ཉེ་བར་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ལ་ཡང་ནུས་པ་དང་མི་ནུས་པ་ལ་སོགས་པ་འགལ་བར་བརྗོད་པར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར། གང་དག་གིས་རི་དང་ལུས་དང་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་བརྟན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཀུན་བརྟགས་ནས་འདི་དག་གི་གནས་སྐབས་ཐ་དད་པའི་སྒོ་ནས་གྲང་བ་དང་དྲོ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་རིམ་གྱིས་འབྱུང་བ་རྣམ་པར་འཇོག་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ལ་ཡང་འདི་དག་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པར་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་གྲང་བ་དང་དྲོ་བ་ལ་སོགས་པ་རིམ་གྱིས་འབྱུང་བའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱང་འགལ་བར་རྗོད་པར་བྱེད། གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་དངོས་པོ་རྣམས་མ་བྱུང་བ་ལས་འབྱུང་བ་དང་། བྱུང་ནས་ཀྱང་མེད་པར་སྣང་བ་ཉིད་དེ། དེའི་

1 འདི་ལྟར་ཇི་ལྟར་ཅིག་ཅར་ སྣ། པེ།

ཕྱིར་གཅིག་ལ་རིམ་གྱིས་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དག་མི་འགལ་བ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་གཞག་གོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཟངས་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡང་སྲ་བ་དང་། སྙི་བ་དང་། གྲང་བ་དང་། དྲོ་བ་ལ་སོགས་པ་རིམ་གྱིས་སྣང་བའི་ཕྱིར་དེ་ལ་ཡང་དེ་མི་འགལ་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེའི་སྒོ་ནས་འདི་དག་བརྟན་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་འཐད་པར་མི་འགྱུར་རོ།།

གཞན་ཡང་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་ལྟ་བ་དེ་ལྟ་བུ་ནི་སྤོང་བར་མི་བྱེད་དེ། སྒྱུ་མ་དང་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བརྟེན་པ་ཡང་མ་བྱུང་བ་ལས་འབྱུང་བ་དང་། བྱུང་ནས་ཀྱང་མེད་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཀྱང་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ལ་ནི་རིམ་གྱིས་ཀྱང་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་འགལ་བ་ཉིད་དོ། །དེ་སྐད་དུ།[1]

གལ་ཏེ་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོད་ན། །
དེ་ནི་མེད་པ་ཉིད་མི་འགྱུར། །
རང་བཞིན་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་ནི། །
ནམ་(204b)ཡང་འཐད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །

ཞེས་བཤད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཙུག་ལག་གི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ།

གང་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་ཡོད་མིན་པ།།
དངོས་པོ་མེད་དེ་ཇི་ལྟར་གཞན་རྐྱེན་ཅན།།
ངོ་བོ་ཉིད་མེད་གཞན་གྱིས་ཅི་ཞིག་སྐྱེད།།

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྡུས། དབུ་མ། ཙ། ༩ ན ༡ རབ་བྱེད། ༡༥ ༔ ༨

གཏན་ཚིགས་དེ་ནི་བདེ་བར་གཤེགས་པས་བསྟན།།[1]

ཅེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་། འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་སྔར་ཡོད་པར་ཁས་བླངས་ཏེ། ཡང་མེད་པར་ཁས་ལེན་པ་རྣམ་པར་འཇིག་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། གལ་ཏེ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཡང་དག་པ་པ་ཉིད་དུ་གྱུར་ན་དེའི་ཚེ་དེར་སྨྲ་བ་རྣམས་ཡང་དག་པའི་ལམ་གྱི་རྗེས་སུ་སོང་བའི་ཕྱིར་ལྟ་བ་དེ་ཐར་པའི་ལམ་དང་མཐུན་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་གྱི་མི་མཐུན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་ཇི་ལྟར་འགལ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ།

རྒྱུ་འབྲས་ལྟ་བ་ངན་པ་ཡིས། །
སྣ་ཚོགས་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྒྲོངས། །
དེ་ཕྱིར་ཡོད་མེད་ཕྱོགས་སྨྲས་སོ། །
དེ་དག་ལ་ནི་ཐར་པ་མེད། །[2]

ཅེས་གང་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། ཡང་དེ་ཉིད་ལས།[3]

མ་བྱུང་བ་ལས་གང་བྱུང་ཞིང་། །
བྱུང་ནས་ཀྱང་ནི་རྣམ་འཇིག་པ། །
རྐྱེན་ལས་ཡོད་དང་མེད་པ་ཡང་། །

---

1 ཁུངས་མ་རྙེད།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༣༨ ན ༧

3 ལང་གཤེགས། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༡༣ བ ལེའུ། ༡༠ ༔ ༡༨༠

ང་ཡི་བསྟན་ལ་དེ་མི་གནས། |

ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་ལ་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་གྱི་ནུས་པ་ངེས་པའི་སྒོ་ནས་ཀྱང་ཡང་དག་པར་ན་མེད་པ་སྐྱེ་བར་ངེས་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། རང་བཞིན་ནི་གཞན་དུ་བྱ་བར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པས་ནི་རང་བཞིན་འགལ་བ་ཉིད་དུ་བྱ་བར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་བྱེད་ན་ནི་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཡང་སྐྱེ་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་མཁས་པ་རྣམས་བརྗོད་དེ། དེའི་ཕྱིར་རྒྱུའི་ནུས་པ་ངེས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ངེས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་នོ། །གལ་ཏེ་འདི་དག་མེད་པ་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་པ་ལ་ཡང་ཇི་ལྟར་འགལ་བར་མི་འགྱུར་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་ཁོ་ན་ལ་འགལ་བ་རྣམ་པར་འཇོག་པའི་ཕྱིར་བརྟུན་པ་ལ་དེ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་རིགས་པ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་དེ་དོན་དམ་པ་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་གྱི། ཀུན་རྫོབ་པ་ནི་(205a)མ་ཡིན་ནོ།།

གཞན་ཡང་ཁོ་བོ་ཅག་གི་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་པ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་གནས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཁོ་ན་ལ་སྒྲོ་བཏགས་པའི་རྣམ་པར་འགོག་པས་འགལ་བ་བརྗོད་པའི་སྒོ་ནས་བརྟུན་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབས་ཀྱི། གཞན་ལ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་རྒྱས་པར་འོག་ནས་བསྟན་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དངོས་པོ་རྣམས་ཡོད་པ་ཡང་ཡང་དག་པ་པའི་སྐྱེ་བར་མི་འཐད་ལ། མེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་གྱི། འདི་དག་གི་སྐྱེ་བ་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་བརྟུན་པ་ཁོ་ན་རབ་ཏུ་སྟོན་པར་ཟད་དེ། དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་ཁོ་ནར་རྣམ་པར་གནས་སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བློ་གྲོས་

ཆེན་པོ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་མ་སྐྱེས་པའོ་ཞེས་རྣམ་པ་དུ་མར་ཡོད་པ་དང་། མེད་པ་སྐྱེ་བ་བཀག་པས་མ་སྐྱེས་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་སོ།།

གང་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་ལས་དགོངས་ཏེ། ཡོད་པ་དང་མེད་པ་སྐྱེ་བ་འགལ་བར་རྣམ་པར་གཞག་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། གལ་ཏེ་དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པ་ལ་ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་སྐྱེསལརཡའལཡ་་སོ་ཞེས་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པར་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འདི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་རང་བཞིན་འདི་ནི་ཡང་དག་པར་སྐྱེས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པའི་ངོ་བོར་མི་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་དེའི་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ནོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ན་གོ་ཇི་ལྟར་ཀུན་བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ཡང་སྐྱེ་བར་འགལ་བ་དེ་བཞིན་དུ་དོན་དམ་པ་པའི་བདག་ཉིད་དུ་སྐྱེ་བ་དེ་ལ་ཡང་འདི་ཅི་སྟེ་འགལ་བར་མི་འགྱུར། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་སྐྱེ་བ་ལ་ཡང་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་རྣམ་པ་མ་གཏོགས་པར་རྣམ་པ་གཞན་གྱི་སྒོ་ནས་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་འདི་ནི་གྱི་ནའོ།།

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདི་ནི་གང་ཞིག་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དེ་ནི་དོན་དམ་པར་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་པ་ལྟ་བུའོ། །གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་(205b)ཡིན་ཏེ། བཟློག་ན་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་ཏེ། སྐྱེ་བ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་རང་བཞིན་བྱས་པ་ཅན་དུ་འགྱུར་གྱི། ཡང་དག་པ་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། མ་བྱས་པ་ནི་གཞན་ལ་

སྤྲོས་པར་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བྱས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རང་བཞིན་ནི་མི་འགྱུར་བ་ཉིད་ཀྱིས་སུས་ཀྱང་གཞན་དུ་བྱར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་མ་བྱུང་བ་ལས་བྱུང་བ་དང་། བྱུང་ནས་ཀྱང་མེད་པ་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་འབྲེལ་བ་མེད་དོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་པ་ཡིན་នོ། །དེ་བས་ན་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར།[1]

རང་བཞིན་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་དག་ལས། །
འབྱུང་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། །
རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལས་བྱུང་ན་ནི། །
རང་བཞིན་བྱས་པ་ཅན་དུ་འགྱུར། །
རང་བཞིན་དག་ནི་ཇི་ལྟ་བུར། །
བྱས་པ་ཅན་ཞེས་བྱ་བར་འགྱུར། །
རང་བཞིན་བྱས་པ་མ་ཡིན་པ། །
ཕ་རོལ་ལ་ཡང་ལྟོས་པ་མེད། །

ཅེས་བཤད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། མདོ་ལས། དངོས་པོ་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པའི་ངོ་བོར་ཉེ་བར་རྟོག་པའི་ཕྱིར་མཐའ་གཉིས་སུ་ལྟ་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་བར་བསྟན་ཏེ། དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེའི་ང་རོའི་མདོ་ལས།[2] ཇི་སྐད་དུ། "བཅོམ་ལྡན་འདས་འདི་གཉིས་ནི་

---

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༨ བ ༩

2 སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཀ། ༣༧༣ ན ༦ བཅོམ་ལྡན་འདས། འདི་གཉིས་ནི་མཐར་བལྟ་བ་ཞེས་བགྱི་སྟེ། གཉིས་གང་ཞེ་ན། ཆད་པར་ལྟ་བ་དང་། རྟག་པར་བལྟ་བ་ལགས་སོ། །ཞེས་སོགས་གསུངས་སོ།།

མཐའ་གཉིས་སུ་ལྟ་བ་ཞེས་བགྱི་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ཆད་པར་ལྟ་བ་དང་། རྟག་པར་ལྟ་བའོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་གལ་ཏེ་འདུས་བྱས་ཐམས་ཅད་མི་རྟག་གོ་ཞེས་བགྱི་བར་ལྟ་ན་དེ་ནི་འདིའི་ཆད་པར་ལྟ་བར་འགྱུར། དེ་ནི་འདིའི་ཡང་དག་པ་མ་ལགས་པའི་ལྟ་བར་འགྱུར་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་རྟག་གོ་ཞེས་བགྱི་བར་ལྟ་ན་དེ་ནི་འདིའི་རྟག་པར་ལྟ་བར་འགྱུར། དེ་ནི་འདིའི་ཡང་དག་པ་མ་ལགས་པའི་ལྟ་བར་འགྱུར་ལགས་སོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་།[1]

དངོས་པོ་ཡོད་པར་ཁས་ལེན་པ། |
རྟག་པ་དང་ནི་ཆད་པ་ཡི། |
ལྟ་བར་རབ་ཏུ་ཐལ་འགྱུར་ཏེ། |
རང་བཞིན་རྟག་པའམ་མི་རྟག་འགྱུར། |

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བཤད་དོ།།

དེའི་ཕྱིར་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་སྲིད་པས་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། གང་ཞིག་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཁོ་ན་ལ་སྲིད་པ་དེ་ནི་འགལ་བར་འགྱུར་(206a)གྱི། མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་སྲིད་པ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་དངོས་པོར་འཐད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་ཤེས་པ་དང་། ཤེས་བྱ་དང་། མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །ཤེས་པ་དང་ཤེས་བྱ་དག་ལས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་མ་སྐྱེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པར་མ་མཐོང་དུ་ཟིན་ཀྱང་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༡༣ བ ༦ རབ་བྱེད། ༣༡ : ༡༨

བར་འབྱུང་བ་ནི་ཡང་དག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་དེའི་སྒོ་ནས་འདི་འགལ་བ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པར་མི་ནུས་ཏེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་འཇུག་པ་ནི་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

གང་ཡང་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བརྟེན་པ་ལ་ནི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཉིད[1]མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་དཔེ་སྒྲུབ་པ་མ་ཚང་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་བསམས་ཏེ། སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་མ་སྐྱེས་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད་ན་ནི་དེ་ནི་འདོད་པ་ཉིད་དེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་དོན་དམ་པ་པའི་སྐྱེ་བ་ལས་བསམས་ཏེ། གཏན་ཚིགས་སུ་སྨྲོན་པ་ནི་མ་ཡིན་གྱི། འོན་ཀྱང་གཉི་ག་ལ་གྲུབ་པ་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་ཁོ་ན་ལས་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་གྲུབ་པའི་མཐའ་ལ་བརྟེན་ནས་གཏན་ཚིགས་དང་ཆོས་ཅན་ལ་སོགས་པ་སྨྲོན་པར་བྱེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །འོན་ཏེ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་མ་སྐྱེས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན་དེ་སྐད་དུ་སྨྲ་བ་དེ་ནི་འཇིག་རྟེན་ཁོ་ན་ཟློག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པས་ཁོ་བོ་ཅག་ནི་འདི་བཟློག་པར་འབད་པ་མེད་དོ། །ཡིད་རྣལ་དུ་གནས་པ་སུ་ཞིག་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུ་གསང་སྔགས་དང་སྨན་ལ་སོགས་པ་མཐོང་བཞིན་དུ་ཡང་སྐྱེ་བ་མ་མཐོང་ངོ་ཞེས་སྨྲས་ཏེ། འདི་ནི་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱི་བཞད་གད་ཁོ་ནར་འགྱུར་བས་དེའི་ཕྱིར་ཁྱད་དུ་གསད་པ་ནི་འོས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་།[2]

རྐྱེན་ལས་སྐྱེས་པ་གང་ཡིན་དེ་མ་སྐྱེས། །

---

1 འབྱུང་བ་མ་གྲུབ་… སྣ། པེ།

2 ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་མ་དྲོས་པས་ཞུས་པའི་མདོ། མདོ་སྡེ། ཕ། ༢༣༠ བ ༣

དེ་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་སྐྱེ་བའང་མེད། །

རྐྱེན་ལ་རག་ལས་གང་དེ་སྟོང་པར་བཤད། །

གང་ཞིག་སྟོང་ཉིད་ཤེས་དེ་བག་ཡོད་ཡིན། །

(206b)ཞེས་གསུངས་སོ། །འཕགས་པ་བློ་གྲོས་རྒྱ་མཚོས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་།[1]

གང་དག་རྟེན་ནས་བྱུང་དེ་དག །

ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཅི་ཡང་མེད། །

གང་དག་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ། །

དེ་དག་གང་དུའང་འབྱུང་བ་མེད། །

ཅེས་གསུངས་སོ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་།[2]

གང་ཞིག་རྟེན་ནས་བྱུང་བ་དེར། །

དེ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཞི། །

དེ་ལྟ་བས་ན་བསྐྱེད་བྱ་དང་། །

སྐྱེ་བ་ཉིད་ཀྱང་ཞི་བ་ཡིན། །

ཞེས་བཤད་དོ། ཡང་།

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཕ། ༢༥༨ མདོའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་གང་བྱུང་བ། །དེ་དག་གང་ལའང་རང་བཞིན་མེད། །གང་དག་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ། །དེ་དག་གང་དུའང་འབྱུང་བ་མེད།།

2 ཅུ་ཕེས། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཚ། ༤༥༤ སྡེ་བསྟན་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། རྟེན་ཅིང་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ། །དེ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཞི། །དེ་ཕྱིར་སྐྱེ་བཞིན་ཉིད་དང་ནི། །སྐྱེ་བ་ཡང་ནི་ཞི་བ་ཉིད།།

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་ཏེ་འབྱུང་བ་གང་།།
དེ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་བཤད། །
དེ་ནི་རྒྱུར་བྱས་གདགས་པ་སྟེ། །
དེ་ཉིད་དབུ་མའི་ལམ་ཡིན་ནོ། །[1]

ཞེས་བཤད་དོ།།

(31)གང་ཡང་གལ་ཏེ་ཞིག་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དོན་དམ་པ་པའི་སྐྱེ་བ་ལ་གནོད་པར་འགྱུར་ན་[2]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་གནོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཅི་ཞེས་བྱ། གལ་ཏེ་བརྟུན་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་ཁོ་བོ་ཅག་འདོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདི་ཀུན་རྫོབ་པ་ཞེས་བྱའི།[3] རིགས་པས་གྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དོན་དམ་པ་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་གྱི། ཀུན་རྫོབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་གནོད་པ་གྲུབ་པ་ནི་སེལ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་ཚད་མས་གནོད་པ་བརྟུན་པའི་ངོ་བོ་ཡང་འཇིག་རྟེན་ན་མ་གྲུབ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེས་ན་[4]རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཁྲུལ་པ་དངོས་པོར་ཡོད་པ་ཁོ་ན་དེ་ལྟར་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་འཇིག་རྟེན་ན་གྲུབ་སོ་ཞེས་

---

1 རྩ་ཤེས། སྡེ་བསྐན། དབུ་མ། ཙ། ༡༥ ན ༦ སྡེ་བསྐན་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་གང་། །དེ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་བཤད། །དེ་ནི་བརྟེན་ནས་གདགས་པ་སྟེ། །དེ་ཉིད་དབུ་མའི་ལམ་ཡིན་ནོ།།

2 སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་འགྱུར་ན་ སྣ། པེ།

3 ཞེས་བྱ། སྣ། པེ།

4 དེ་ནི་ སྣ། པེ།

བརྗོད་པར་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ལ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་འགལ་བར་[1] ཤེས་པ་ལ་སྔོ་མ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་དེ་ལྟ་བུ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་ལ། འཇིག་རྟེན་ན་ཡང་དེ་དག་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མ་གྲགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྔོ་མ་ལ་སོགས་པ་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཆུག་ན་ཡང་། འོན་ཀྱང་ཤེས་པ་ཉིད་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པར་དེ་ལྟར་བརྟེན་པའི་རྣམ་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་དེ་དང་འདྲ་བར་དེ་ཡང་བརྟེན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་བདེན་པ་དང་མི་བདེན་པའི་ངོ་བོ་དང་འབྲེལ་བ་དག་ཅི་ཞིག་ཡོད། དེའི་ཕྱིར་འདི་ལ་འཁྲུལ་པ་མེད་དོ། །ཇི་སྐེ་གནོད་པ་འགལ་བ་ཡིན་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་དེ་ལ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་འགལ་བ་མེད་ན་ནི་དེ་ཇི་ལྟར་ཚད་མས་བྱ་བར་ནུས། འོན་ཏེ་རང་(207a)གི་འགལ་བ་ཉིད་ཡོད་པ་ཡིན་ལ། གལ་ཏེ་དེ་ཡང་ཚད་མས་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། སྒྲུབ་པ་ལ་རག་ལས་ཏེ། ཅི་ཞིག་མི་འདོད་པར་འགྱུར། གལ་ཏེ་འགལ་བ་རྣམས་སྣང་བ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། འདི་ནི་ལན་བཏབ་ཟིན་ཏོ།།

གཞན་ཡང་ཤེས་བྱ་ནང་གི་ཡིན་པར་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱི་ལྟར་ན་ཤེས་པ་གཉིས་མེད་པ་ལ་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་པ་རྒྱ་མཚོ་དང་། རི་དང་། ས་དང་ཆུ་བོ་ལ་སོགས་པ་དེའི་ཆ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྗོད་ན་ཇི་ལྟར་གཅིག་ལ་འགལ་བ་དག་སྣང་[2]བ་རྗེས་སུ་བྱེད་པར་འགྱུར། གང་དག་ཤེས་བྱ་ནང་གི་ཡིན་པར་སྨྲ་བ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་གདོན་མི་ཟ་བར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཁྲུལ་པར་ཙུང་ཟད་ཅིག་ཀྱང་ཁས་བླང་དགོས་སོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་

1 འགལ་བས་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་སྔོ་མ་ སྣ།
2 གཅིག་ལ་རི་འགལ་བ་དག་སྣང་···· སྣ། པེ།

ན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ལ་ཕྱིར་ཀློག་བ་རྣམས་དང་རྟོད་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་འཆི་ལྟས་དང་། མིག་སྔོན་དང་། མིག་སེར་ལ་སོགས་པས་མིག་ཉམས་པ་རྣམས་ལ་ལུས་ལ་སོགས་པ་[1]འགལ་བ་གཉིས་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་ཇི་ལྟར་སྣང་བར་འགྱུར་ཏེ། ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་བདེན་པའི་ངོ་བོ་ལ་ནི་གང་གིས་ན་འདི་དག་དེ་ལ་སྣང་བར་འགྱུར་པ་རྣམ་པ་བརྫུན་པ་དེ་དག་འབྲེལ་བ་ཅི་ཡང་མེད་དེ། བདེན་པ་དང་མི་བདེན་པ་དག་འགལ་བའི་ཕྱིར་ལ། འགལ་བ་ཡང་ཁྱེད་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ཀྱིས་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་མཐོང་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་པས་ཐར་པར་འདོད་པ་རྣམས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒོམ་པར་འབད་པ་དོན་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ།།

གལ་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་འཁྲུལ་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་སུ་སྣང་བ་ལ་འགལ་བ་ཉིད་དུ་སྣང་མོད་ཀྱི། འགལ་བར་རྣམ་པར་མི་གཞག་སྟེ། དེའི་ཡུལ་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཞུགས་པའི་རྗེས་སུ་དཔག་པས་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་པ་ཁོ་ན་ལ་འགལ་བ་བརྗོད་པར་བྱེད་ཀྱི། བརྫུན་པར་འདོད་པ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་རྗེས་སུ་དཔག་པ་དེ་དངོས་པོའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཞུགས་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །དེས་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཁྲུལ་པ་དང་ལྡན་པའི་རྣམ་པ་བརྫུན་པ་རྣམས་ཀྱང་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་ལ་སོགས་པ་འགལ་བ་བརྗོད་པར་ཡང་མི་བྱེད་དོ་སྙམ་དུ་སེམས་ (207b)ན། གལ་ཏེ་དེ་ལྟར་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་ཀུན་རྫོབ་པ་ལ་ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་འགལ་བ་བརྗོད་པར་བྱེད་དེ། བརྫུན་པ་དེ་ལ་

1 སོགས་པའི་ངོ་བོར་ སྣ། པེ།

ཡང་དངོས་པོའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཞུགས་པའི་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་ཡུལ་ཉིད་མི་སྲིད་པས་འདི་ལ་ཡང་འགལ་བ་རྗོད་པར་མ་བྱེད་ཅིག།

དེ་བརྗོད་ན་ཡང་གདོན་མི་ཟ་བར་ཁོ་བོ་ཅག་གི་འདོད་པ་ཁོ་ན་གྲུབ་ཀྱི། ཁྱེད་ཀྱི་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་དེ་ལ་འགལ་བར་བརྗོད་པ་ཁྱེད་ཀྱིས་དེ་བརྟན་པ་ཉིད་ཁོ་ནར་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་གྱི། སྣང་བ་སེལ་བ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། བརྟན་པ་ཡང་གྲགས་པ་དང་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བརྟན་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་ན་ཡང་ཁོ་བོ་ཅག་གི་ཕྱོགས་ཁོ་ནར་གཞུང་བཙུགས་པར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་རྒྱུ་དང་། འབྲས་བུ་རྣམས་ཡུལ་དང་། དུས་དང་། རྒྱུ་དང་། རྐྱེན་གྱི་ཁྱད་པར་ལ་ལྟོས་པ་ཉིད་ཡིན་ཡང་ཚད་མས་གནོད་པར་བརྟན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་པ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་འཇོག་ལ། དེ་ལ་ཁྱེད་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་འགལ་བ་བརྗོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་དག་དངོས་པོར་འཛིན་པ་ཟློག་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཅི་ཞིག་མི་འདོད་པར་བྱས་ཏེ། འོན་ཀྱང་ཉེས་པ་མ་ཡིན་པ་བརྗོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཁྱེད་ཁོ་ན་ལ་གནོད་པར་འགྱུར་རོ། ཁོ་བོ་ཅག་ནི་འདི་ལ་ཚད་མ་འཇུག་པར་མི་བྱེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་འདི་ཇི་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་པ་ཉིད་བསྒྲུབ་པར་འགྱུར།

འདི་ལྟར་ཁོ་བོ་ཅག་ནི་གང་དག་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་དངོས་པ་ཇི་ལྟར་གྲགས་པ་ཁོ་ན་ལ་ཡང་དག་པར་ཁས་བླངས་པ་དེ་དག་གི་ལོག་པར་སྒྲོ་འདོགས་པ་རྣམ་པར་བཟློག་པའི་ཕྱིར་འདི་ཁོ་ན་ལ་ཚད་མས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་ཀྱི། གཞན་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ནི་ཚད་མ་སྒྲུབ་ཀྱང་མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པ་མི་འཇུག་སྟེ། ཚད་མས་དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་གནས་པ་སྒྲུབ་པ་ཁོ་ནར་བྱེད་ཀྱི། གྲགས་པ་སེལ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དེ་ཚད་མ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དོན་

དམ་པ་པར་བརྟགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ཚད་མས་གནོད་ལ། དེ་ནི་མངོན་སུམ་དུ་གྲུབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ན།[1] དེ་ཇི་ལྟར་དེ་ལ་གནོད་ན་མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པ་ཡིན། མངོན་སུམ་གྱི་མཚན་ཉིད་ནི་མ་ནོར་བ་ཡིན་ན་མ་ནོར་བ་ནི་ཚད་མས་གནོད་པའི་ཡུལ་དུ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་དམ་བཅས་པ་འདི་ལ་(208a)མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པ་ཡང་མེད་དོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་གསལ་བར་སྣང་ཡང་མངོན་སུམ་དུ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་མངོན་སུམ་དང་འགལ་བས་དེ་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་སྒོ་ནས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲུབ་པར་མི་བྱ་བར་འགྱུར་རོ།།

རབ་རིབ་ཅན་ལ་སོགས་པ་ལ་སྐྲ་དང་། ཤ་སྦྲང་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་སྣང་བ་ཡང་མངོན་སུམ་དང་འགལ་བའི་ཕྱིར་བརྫུན་པ་ཉིད་དུ་སུས་ཀྱང་ཁས་མི་བླང་བར་བྱ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རང་དང་འཚམ་པའི་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་བརྒྱུད་དེ་འོངས་པའི་སྐྱེ་བ་འདི་ཐམས་ཅད་ནི་ཡུལ་དང་དུས་དང་རྒྱུའི་ཁྱད་པར་ལ་ལྟོས་པ་ཡིན་ཡང་སྒྱུ་མ་[2]འབྱུང་བ་བཞིན་དུ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ནར་རྣམ་པར་གཞག་གོ།

གང་ཞིག་ཇི་ལྟར་གྲགས་པ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་ནི་གལ་ཏེ་དུས་མཉམ་པའམ། དུས་ཐ་དད་པ་རྣམ་པར་འཇོག་ཀྱང་འོན་ཀྱང་འགལ་བ་མེད་དེ། དེ་ལ་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་མ་[3]ཡིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་འཇུག་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ།

---

1 མ་ཡིན་ཏེ། སྣ།

2 སྒྱུ་མི་ སྣ། པེ།

3 སྐད་ཅིག་མ་མ་ཡིན་པ་ སྣ། པེ།

བརྗོད་པ་ལ་འགལ་བ་མི་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲུ་མ་དང་སྨི་ལམ་ལྟ་བུའི་ཆོས་རྣམས་ལ་ཡང་དག་པར་ན་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་དང་། སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་མི་རུང་བའི་[1]ཕྱིར་ཏེ། དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས།[2] "གལ་ཏེ་གཟུགས་རྟག་ཅེས་བྱ་བའམ། མི་རྟག་ཅེས་བྱ་བར་སྤྱོད་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་མི་སྤྱོད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གཟུགས་དེ་ཉིད་དེ་ལྟར་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ན་དེ་རྟག་པའམ། མི་རྟག་པར་ལྟ་ག་ལ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་"ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་བར་དུ་རྒྱས་པར་སྦྱོར། །གང་ཡང་གཞན་འགའ་ལས་འདུ་བྱེད་རྣམས་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་དུ་གསུངས་པ་དེ་ནི་བག་མེད་པ་དག་འདུ་བྱེད་དག་ལས་ཡང་དག་པར་ཡིད་འབྱུང་[3]བར་བྱས་ནས་རིམ་གྱིས་བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་གཟུད་པའི་ཆེད་ཡིན་ཏེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར།

དེ་ལྟར་ཅུང་ཟད་སྐྱེ་བ་མེད། །
འདི་ལ་ཅུང་ཟད་འགག་པའང་མེད། །
སྐྱེ་བ་དང་ནི་འཇིག་པའི་ལམ། །
དགོས་པའི་དོན་དུ་ཉེ་བར་སྟོན། །
སྐྱེ་བ་ཤེས་པས་འཇིག་པ་ཤེས། །
འཇིག་པ་ཤེས་པས་མི་རྟག་ཤེས། །

1 མི་རུང་བའི་ཡང་ སྣ། པེ།
2 མ་རྙེད།
3 ཡིན་འགྱུར་ སྣེ།

མི་རྟག་ཉིད་ལ་འཇུག་ཤེས་པས། །
དམ་པའི་ཆོས་ལ་(208b)འཇུག་པ་ཡིན། །[1]

ཞེས་བཤད་དོ།།

འོན་ཏེ་འདི་སྙམ་དུ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་སྨྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་ལ་ས་བོན་ལ་སོགས་པའི་ནུས་པ་ཁས་བླངས་ན་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་ས་བོན་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་དེ་ནི་གདོན་མི་ཟ་བར་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་པར་ཉེ་བར་བརྗོད་[2]དགོས་སོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་དང་ལུང་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་སྤྱང་[3]བར་འགྱུར།

ཁོ་བོ་ཅག་ནི་ནུས་པ་མ་ལུས་པ་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ལ་དངོས་པོ་ཞེས་བརྗོད་དོ། །གལ་ཏེ་ཁྱེད་དེ་ལ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་པར་བྱེད་ན་ནི་འགའ་མགུར་འདོགས་ལ་རག་སྟེ། དངོས་པོ་རྣམས་ནི་ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་པའི་སྒྲ་དག་ཏུ་བརྗོད་ཀྱང་དོན་བྱེད་ནུས་པ་ཐ་དད་པ་ཉིད་དུ་འབྲང་བ་ནི་མེད་དོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ན་གླང་པོ་དང་། རྟ་དང་། མེ་དང་། ས་དང་། ཁྱུ་མཆོག་ལ་སོགས་པ་དོན་བྱ་བ་སྣ་ཚོགས་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་སྣང་བ་བརྫུན་

1 རིགས་པ་དྲུག་ཅུ་པ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༢༡ ན ༥
2 རྗོད་ སྣ། པེ།
3 སྤྱངས་ སྣ། པེ།

པའི་དངོས་པོ་གང་དག་ལུས་ཕན་ཚུན་ཐ་དད་པའི་རྗེས་སུ་སོང་ཞིང་ཡུལ་དང་དུས་ཀྱི་གནས་སྐབས་ཐ་དད་པ་ལྟ་བུར་ཡང་དག་པར་མངོན་པ་དེ་དག་ཀྱང་ཅི་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་པའི་ལུས་ཤིག་ཡིན་ནམ། འོན་ཏེ་མ་ཡིན། དེ་ལ་གལ་ཏེ་རྣམ་པར་ལོག་པའི་ལུས་ཤིག་ཡིན་ན་ནི་འོ་ན་ནི་དེ་དག་ཀྱང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ།།

འོན་ཏེ་རྣམ་པར་མ་ལོག་པའི་ལུས་ཤིག་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཁྱེད་ཀྱི་གྲགས་པ་དང་འགལ་བ་ཇི་ལྟར་སྤོང་བར་འགྱུར། ཇི་སྐྱེ་འདི་སྐད་དུ་དེ་དག་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་གནས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་དག་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་དངོས་པོར་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བརྗོད་ན་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་དེ་དག་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཅི་སྟེ་ལུས་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གི་རྗེས་སུ་སོང་བ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ཤིན་ཏུ་འགལ་བའི་རང་གི་ངོ་བོར་སྣང་བར་འགྱུར། གཞན་ནི་གཞན་གྱི་ངོ་བོར་སྣང་(209a)བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་དག་ནི་[1]འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བཤད་ཟིན་ཏོ།། འདི་ལྟར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ནི་ཤེལ་དག་པ་ལྟ་བུ་ཆ་ཤས་མེད་པ་ཡུལ་ན་མི་གནས་པོ་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་སྣ་ཚོགས་སུ་སྣང་བར་མ་གྱུར་པ་ཡིན་པར་འདོད་ན་སྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ན་ནི་རྟ་དང་གླང་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་དག་དེའི་ངོ་བོར་ཡང་དག་པར་མ་བྱུང་སྟེ། དེ་དང་འགལ་བའི་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དེ་ལྟར་སྣང་བ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ།།

1 གཞི་ཉིད་ནི་ སྣ། པེ།

དེའི་ཕྱིར་ཁོ་བོ་ཅག་ནི་གང་དག་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་འདས་ཏེ་ལོག་པའི་རྣམ་པར་སྣང་བ་བརྫུན་པ་ཉིད་ཀྱིས་འཇིག་རྟེན་པར་འདོད་ཅིང་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་བརྗོད་པར་དེ་དག་ཁོ་ན་དངོས་པོའི་མཚན་ཉིད་དུ་འབྲེལ་པའི་ཡུལ་ཉིད་དུ་རྗོད་པར་བྱེད་ཀྱི། ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཡང་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་བདག་ཉིད་དུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་བདེན་པའི་ངོ་བོར་མ་གྲུབ་བོ། །ཇི་སྐྱེ་འདི་སྐད་དུ་དངོས་པོ་དག་ཏུ་གྲགས་པ་དེ་དག་ཀྱང་ཚད་མས་ཇི་ལྟ་བ་དེ་བཞིན་དུ་གསལ་བའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་དངོས་པོའི་ངོ་བོར་རྣམ་པར་མི་གཞག་སྟེ། དཔེར་ན་གཡོར་མོའི་མི་ལ་མི་ཉིད་ལྟ་བུའོ། །དེས་ན་ཡང་དག་པ་པོའི་དངོས་པོའི་ལུས་སུ་མ་གྱུར་པ་བརྫུན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡང་དག་པར་ན་ཉེས་པར་བརྗོད་པ་མ་ལུས་པ་དང་བྲལ་བ་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལོག་པ་དང་མ་ལོག་པ་ལ་སོགས་པའི་བསམ་པ་མི་འཇུག་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བརྗོད་ན་གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་ན་ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཇི་སྐད་དུ་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཚད་མས་བརྫུན་པར་ཡང་དག་པར་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་དེ་ལྟ་བུའི་བསམ་པ་མ་བྱེད་ཅིག །སྒྲུ་མ་དང་། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་ཚད་མས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་གསལ་རབ་ཏུ་གསལ་བ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་ཡང་དོན་དམ་པར་བརྗོད་དོ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་པར་བྱེད་ན་ནི་དགའ་མགུར་ཐོགས་ལ་དགའ་སྟོན་ཡང་བྱེད་ལ་རག་གོ། འོན་ཀྱང་མིང་དུ་འདོགས་པར་བྱེད་པ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་ནི་དངོས་པོ་རྣམས་ངོ་བོ་གཞན་དུ་ཉེ་བར་ལེན་པ་མེད་པས་ན་ཡང་འོར་ཅིག་ཅེས་སླས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་མཚུངས་སོ།།

སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་ནི་གང་དག་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་གྱིས་[1]རྒྱ་མཚོ་ཤིན་ཏུ་

1 ཚུལ་གྱི་ སྣ།

ཟབ་མོ་ལ་འཇུག་པར་མི་(209b)ནུས་པ་དེ་དག་ལ་རྟག་པ་དང་ཆད་པ་ལ་སོགས་པར་ལྟ་བ་དམ་པ་མ་ཡིན་པའི་དྲི་མ་བཀྲུ་བའི་ཕྱིར་བྱིས་པའི་སྐྱེ་བོ་གཟུད་པའི་དོན་དུ་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་དང་མཐུན་པ་ཇི་ལྟར་གྲུབ་པ་དོན་བྱ་བ་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་འདིར་དོན་དམ་པར་ཡོད་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་བཤད་ཀྱི། གཅིག་ཏུ་ངེས་པའི་དོན་དམ་པ་ཡང་དག་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་རྟོགས་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ནི་དོན་དམ་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་སྔར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ།།

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རྣམ་གྲོལ་ལས། ཇི་ལྟ་བ་དེ་ལྟ་ཡིན་དུ་ཟད་དོ་ཞེས་བཤད་དོ།། འཕགས་པ་དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེའི་ང་རོའི་མདོ་ལས།[1] "གང་མི་རྟག་པ་དེ་ནི་བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་ནོ། །གང་བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་ཅན་དེ་ནི་མི་བདེན་པའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། [2]ལུང་ལས་ཀྱང་"དགེ་སློང་དག་འདི་ཙམ་ཞིག་ནི་བདེན་པ་ཡིན་ཏེ། དགེ་སློང་དག་འདི་ལྟ་སྟེ། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་སླུ་བའི་ཆོས་མེད་པའོ། །དགེ་སློང་དག་འདུ་བྱེད་ཐམས་ཅད་ནི་བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་སོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།།

ཇི་སྟེ་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་ཀྱང་ཡུལ་དང་དུས་ལ་སོགས་པ་ངེས་པར་སྣང་ན་ནི། དེའི་ཚེ་འོ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཇི་ལྟར་སྣང་བར་མ་འགྱུར་ཞེ་ན། དེའི་ཕྱིར་འདིའི་ལན་ནི་ཁྱེད་ཀྱིས་ཀྱང་བརྗོད་དགོས་ཏེ། རབ་རིབ་ཅན་ལ་སོགས་པ་ལ་སྐྲ་ལ་སོགས་པ་བརྫུན་པ་སྣང་བ་དང་མཚུངས་པ་ལ་

---

1 སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཆ། ༣༧༣ བ ༥ བཅོམ་ལྡན་འདས། གང་བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་ཅན་དེ་ནི་མི་བདེན་པ་དང་། མི་རྟག་པ་ལགས་ཏེ། སྐྱབས་མ་ལགས་སོ།།

2 མ་རྙེད།

ཅི་སྟེ་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་བརྟེན་པ་ཁོ་ན་སྣང་གི་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ནི་མ་ཡིན། འོན་ཏེ་རབ་རིབ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་རྣམས་ཀྱི་ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པའི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་སོ་སོར་ངེས་པར་བརྗོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་མེད་པ་ཡིན་ན་[1]ཡང་ཇི་ལྟར་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་རྣམས་ཀྱི་ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པར་འགྱུར་ཞེས་བརྗོད་པར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་བརྗོད་ན་ནི་དེ་བཞིན་དུ་གཞན་ལ་ཡང་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་གྱི་ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པ་ལས་ཇི་སྟེ་དེ་ལྟར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ལས་ངེས་པར་མི་འདོད། འདི་ཙམ་གྱིས་ནི་[2]དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། རབ་རིབ་ཅན་དག་གིས་མཐོང་བའི་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སྔར་བཤད་ཟིན་ཏོ། །དེ་(210a)ལྟ་མ་ཡིན་ན་རབ་རིབ་ཅན་གྱིས་[3]དམིགས་པའི་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་བརྟེན་པ་ལ་ཡང་ཇི་ལྟར་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་རྣམས་ཀྱི་ནུས་པ་སོ་སོར་ངེས་པར་འགྱུར། རབ་རིབ་ཅན་གྱིས་[4]སྒྲ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་བདེན་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བཤད་པ་ཉིད་དོ།།

གཞན་ཡང་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་བདེན་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཡིན་ན་ནི་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དེ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར་བདེན་པ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་ནུས་པར་འགྱུར་བ་ཞིག་ན། དེ་ཉིད་མ་གྲུབ་སྟེ་ཇི་ལྟར་སྔར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །སྒྲ་ལ་སོགས་པ་ནི་བརྟེན་པ་ཉིད་དུ་འཇིག་རྟེན་པ་དང་ཚད་མས་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ནའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་ཡང་སྒྲ་ལ་སོགས་

---

1 དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་ཡང་ཇི་ལྟར་ སྣ། པེ།

2 གྱིས་འདི་དངོས་ སྣ། པེ།

3 གྱི་ སྣ། པེ།

4 གྱི་ སྣ། པེ།

པ་བརྗོད་པའི་ངོ་བོ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་ཇི་ལྟར་སྐྲ་ལ་སོགས་པ་དེའི་ངོ་བོར་བདེན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར།

གང་དག་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་ན་དེ་བཞིན་དུ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །གང་དག་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་པ་དེ་དག་ལ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་སྐྱེ་བ་མེད་དེ་དཔེར་ན་རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་དག་གི་ཡང་སྒྲུ་མ་ལ་སོགས་པས་མ་ངེས་པ་ཡང་ཡིན་ལ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལས་བཟློག་ན་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་ཉེ་བར་མ་བསྟན་[1]པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལས་ལྡོག་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། །དཔེ་ཙམ་གྱིས་ནི་འདོད་པའི་དོན་འགྲུབ་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གཞལ་བྱ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་གཉི་གའི་ཕྱོགས་ལ་ཁྱབ་པ་ཉིད་ཀྱང་སྲིད་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པར་མེད་པ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་རབ་ཏུ་འཇིག་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་སུ་ཡང་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་མི་འགྱུར་རོ།།

ཐལ་བར་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ཡང་ཁྱབ་པ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །རི་བོང་གི་རྭ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་སྐྱེ་བར་མི་སྣང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་ལྟ་བུའི་ལས་ལ་སོགས་པའི་ཚོགས་པ་མེད་པ་ཡིན་གྱི། དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་བས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། གང་གིས་ན་ངེས་པ་མེད་པར་འགྱུར་བ་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཡང་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ཚོགས་པ་ལ་མི་ལྟོས་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་པར་བྱེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །རྒྱུ་དང་རྐྱེན་(210b)ལ་རག་ལས་པ་ཙམ་གྱི་སྒོ་ནས་དངོས་

---

1 ཉེ་བར་བསྟན་··· སྣ། པེ།

པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བརྫུན་པ་ཡང་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ཚོགས་པ་ཡོད་པ་དང་། མེད་པ་ལས་འཇུག་པ་དང་། ལྡོག་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །མཐོང་བ་ཙམ་གྱི་བློ་ནས་ནི་དངོས་པོ་དེ་བཞིན་དུ་འགྱུར་བ་ཡང་མེད་དོ་ཞེས་བསྟན་ཟིན་ཏོ།། མཁས་པ་རྣམས་ཀྱི་སུ་བཞི་པའི་སྐྱེ་བ་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོ་རྣམས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་སྐྱེ་བ་མེད་པར་བསྒྲུབས་པས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གསལ་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་ཀྱང་ཁ་ཅིག་ཚད་མའི་ལམ་མ་རྟོགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་དུ་སུན་འབྱིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་གསལ་བར་འདོད་ན་རེ་ཞིག་ཚད་མའི་དེ་ཁོ་ན་ཉེ་བར་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། གང་དག་དོན་དམ་པར་མུ་བཞི་པའི་སྐྱེ་བ་དང་བྲལ་བ་དེ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ་དཔེར་ན་ནམ་མཁའི་པདྨ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ།།

(32)རྩོད་པའི་གཞིར་གྱུར་པའི་[1]དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡང་དག་པར་ན་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་ཡང་ཁ་ཅིག་ན་རེ་གཅིག་ལས་གཅིག་མི་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བར་ཇི་ལྟར་རྟོགས། ཚད་མ་ལོག་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལྡོག[2]པ་མེད་དེ། དེ་ནི་དེའི་རྒྱུ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། དེའི་བདག་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་སུ་ཡང་ཁས་མི་ལེན་པའི་ཕྱིར་དེ་དགག[3]པར་མཛད་དོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁ་ཅིག་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་གཅིག་ཁོ་ན་ལས་འགྲོ་བ་སྐྱེ་བར་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་ཟེར་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་གཅིག་ལས་གཅིག་ཁོ་ན་སྐྱེ་ན

1 འགྱུར་པའི་ པེ།
2 ངོ་བོ་ལྡོག་ སྣ། པེ།
3 དེ་དག་དགག་ པེ།

རྟག་པའི་ངོ་བོ་ལས་སམ། མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ལས་སྐྱེ་བས་འགྱུར་གྲང་ན། རེ་ཞིག་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ལས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དེ་མི་སྐྱེད་པའི་གནས་སྐབས་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་སྔོན་དང་ཕྱི་མའི་དུས་བཞིན་དུ་བར་དུ་ཡང་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་སྐྱེད་ན་ནི་དེ་བཞིན་དུ་སྔོན་དང་ཕྱི་མའི་དུས་སུ་ཡང་སྐྱེད་པར་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་[1]རང་བཞིན་རྗེས་སུ་འབྲང་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྗེས་སུ་མི་འབྲང་ན་ནི་དེའི་རྟག་པ་ཉིད་ཉམས་པ་ཡིན་པས་རིམ་དང་ཅིག་ཤོས་དག་གིས་འདིའི་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་རྒྱས་པར་བསལ་བ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་རེ་ཞིག་རྟག་པ་ལས་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །མི་རྟག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལས་ཀྱང་(211a)སྔར་དུས་མཉམ་པ་དང་། ཅིག་ཤོས་དག་ཏུ་སྐྱེ་བ་སྤྱིར་བསལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་དག་ལས་མ་གཏོགས་པ་གང་ལས་དེ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བ་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

གཞན་དག་གིས་འགྲོ་བའི་རྒྱུ་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཅིག་ཁོ་ནར་ཁས་བླངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལས་ཀྱང་དེ་དག་གིས་ངོ་བོ་གཅིག་ལས་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་[2]སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འགྲོ་བ་ངོ་བོ་དུ་མ་[3]དེའི་འབྲས་བུ་ཉིད་དུ་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་གཅིག་ལས་གཅིག་ཁོ་ན་སྐྱེ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་སྐབས་སུ་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་འཁྲུལ་པའི་ཡུལ་ཉིད་དུ་སྟོན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་འདས་སྐབས་ཀྱི་དོན་མངོན་པར་མི་ཤེས་པ་ཁོ་ན་སྒྲོགས་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་ནི་རྒྱུའི་

1 སྐྱེ་བ་ཡང་བྱེད་པའི་ སྣ།
2 གཅིག་པ་ན་སྐྱེ་···· སྣ།
3 འགྲོ་བ་དུ་མ་ སྣ། པེ།

དངོས་པོར་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་གཞན་དག་གིས་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྟགས་པའི་ཕྱིར་ལ། རྟག་པ་ཡང་ནུས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཉིད་དུ་སྔར་བསྒྲུབས་ཟིན་ཏོ།།

འོན་ཏེ་ཡང་གཞན་དག་གིས་དེ་མི་རྟག་པ་ཁོ་ནར་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་དེ་ལས་ཇི་ལྟར་རྣམ་པ་ཐ་དད་པའི་རྒྱུད་ལ་ཡོད་པའི་འབྲས་བུ་འགའ་ཞིག་ཙུང་ཟད་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ན་དེའི་ཚེ་དེའི་རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་གཞན་གྱི་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ཁོ་ན་ལ་ཡང་དག་པར་ཆད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་ན་རྟག་ཏུ་དེའི་རིགས་མི་མཐུན་པའི་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་བསྐྱེད་པའི་དུས་ན་སྐད་ཅིག་མ་སྔ་མ་སྔ་མ་ཐམས་ཅད་[1]རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་ཕྱི་མ་ལ་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དབང་ཕྱུག་ཅེས་བྱ་བ་མི་རྟག་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་[2]ཡང་འགྲོ་བའི་རྒྱུར་ཉེ་བར་རྟོག་པར་འགྱུར་བ་དེ་གང་ཞིག་ཡིན་པར་འགྱུར། ཇི་སྟེ་ཡང་དེ་ནི་སྐད་ཅིག་མ་དང་པོའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྐད་ཅིག་མ་གཅིག་གི་རང་གི་ངོ་བོ་ཁོ་ནར་ཉེ་བར་བརྗོད་ན་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་མེད་པ་དེ་སྐྱེ་བར་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་དེ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ནར་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དེ་རྒྱུར་འགྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་ནི་སྨོན་ནམ། ཕྱིས་ཀྱང་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ། །ཡོད་ན་ནི་(211b)དེའི་སྐད་ཅིག་མ་གཅིག་ཙམ་གྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །འདིའི་ཐོག

1 སྔ་མ་ཐམས་ཅད་····· སྣ། པེ།

2 མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་··· སྣ། པེ།

མ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་ སྟོར་བསལ་ཟིན་ཏོ།།

 འོན་ཏེ་དེའི་རྒྱུ་གཞན་ཁོ་ན་ཞིག་ཉེ་བར་རྟོག་ན་དེའི་ཚེ་དེ་ཉིད་དེས་བསྐྱེད་པར་བྱ་བའི་འབྲས་བུ་[1]ཡང་ཡིན་པར་ཅི་སྟེ་མི་བརྟག །དེ་མེད་ན་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རམ། ཅི་ནས་གང་གི་ཕྱིར་འདི་རྟོག་པར་བྱེད། འོན་ཏེ་ཡང་འདི་ནི་རྒྱུད་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་ཡོད་པའི་རྒྱུ་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་རྒྱུད་དེ་ཞུགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི། གཞན་གང་ཡང་རྒྱུད་གཞན་ལ་ཡོད་པའི་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཉེ་བར་རྟོག་པར་བྱེད་ན་དེ་ལ་ཡང་ཡང་དག་པར་ན་དུས་མ་མཉམ་པ་དང་།[2] ཅིག་ཤོས་དག་ཏུ་དེ་ལས་རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་ཡང་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྟོར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་འོག་ནས་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་དེ་ལས་འབྲས་བུ་དུ་མ་སྐྱེ་བ་ཡང་རྟོགས་པར་བྱའོ། །མིག་ལ་སོགས་པ་གཞན་དག་ཀྱང་གལ་ཏེ་འབྲས་བུ་གཅིག་སྐྱེད་པར་ངེས་པར་ཁས་ལེན་ནོ། །དེའི་ཚེ་ལོང་བ་དང་། འོན་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོར་ཐལ་བར་བཟློག་དཀའ་སྟེ། འདི་ལྟར་གང་གི་ཚེ་མིག་ལ་སོགས་པའི་དབང་པོས་རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉེ་བར་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་གཞན་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་ཐམས་ཅད་ལོང་བ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྟེ་ཡང་ཚོགས་པ་ཁོ་ན་འབྲས་བུ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེད་[3]པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་

1 འབྲས་བུའི་ཡང་… སྣ། པེ།
2 དུས་མཉམ་པ་དང་ སྣ། པེ།
3 འབྲས་བུ་རྣམས་སྐྱེད་… སྣ། པེ།

གཅིག་ལས་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་མི་སྐྱེ་སྟེ།[1] མིག་དང་། རྣ་བ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དག་ལས་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བ་ཡང་མཐོང་ངོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་ནི་རྒྱུ་[2]ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ།། འདི་ལྟར་བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་སྣམ་བུ་ལ་སོགས་པ་ལས་རང་བཞིན་ཐ་དད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྒྱུའི་ཐ་དད་པས་བྱས་པ་ཡིན་གྱི། རང་བཞིན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ།[3] དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དངོས་པོ་རྣམས་རྒྱུ་མེད་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་གལ་ཏེ་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཡོད་ཀྱང་འབྲས་བུ་ཐ་དད་པར་མི་འགྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འབྲུལ་བའི་(212a)ཕྱིར་འབྲས་བུ་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པས་བྱས་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ། །ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་དག་ལས་གཞན་པའི་དངོས་པོ་འགའ་ཡང་[4] མེད་པའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །འདི་ལྟར་ཚོགས་པ་རྣམས་ནི་ཚོགས་པ་ཅན་དག་ལས་གཞན་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་དག་ཚོགས་པ་ལས་ལོགས་ཤིག་ཏུ་བྱ་བར་མི་ནུས་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་རང་བཞིན་ཕན་ཚུན་ཐ་དད་ཅིང་རེ་རེས་སྐྱེད་པར་ནུས་པ་དེ་དག་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་ན་ཅི་སྟེ་ཐ་མི་དད་པ་ཁོ་ན་འབྱུང་བར་འགྱུར། གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་ལ་ནུས་ཀྱི་དུ་མ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟར་ན་ནི་སྐད་ཅིག་མ་རིགས་མཐུན་པའི་ཉེ་བར་མཚམས་སྦྱོར་[5]བའི་ཕྱིར་

1 དེའི་ཕྱིར་གཅིག་ལས་གཅིག་ཁོ་ན་མི་སྐྱེ་སྟེ། སྣ། པེ།
2 རྒྱུའི་ སྣ། པེ།
3 རང་ཉིད་ཀྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། སྣ། པེ།
4 དངོས་པོ་ཡང་ སྣ། པེ།
5 མི་སྦྱོར་ སྣ།

སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པ་ལ་མིག་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུད་རྣམ་པར་ཆད་པར་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་དག་སྐད་ཅིག་མ་རིགས་མཐུན་པའི་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་ལ་ཡང་ནུས་པ་ཡོད་དོ་ཞེ་ན། [1]གལ་ཏེ་དོན་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཕྱིར་དེའི་ཚེ་ནུས་པ་ཁོ་ན་རྒྱུར་འགྱུར་གྱི་དངོས་པོ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འབྲེལ་བ་ཡང་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་དག་ནུས་པ་ལ་ཕན་པ་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་ཕན་པ་བྱེད་ན་ནི་ནུས་པ་ཐ་དད་པ་གཞན་དང་གཞན་ལ་ལྟོས་ན་ཐུག་པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་དེ་དག་རང་གི་ངོ་བོར་གྱུར་པ་ཁོ་ནས་ནུས་པ་ལ་ཕན་པ་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་འབྲས་བུ་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་ཇི་སྐད་མི་བྱེད། དེ་ལྟ་བས་ན་ནུས་པ་ནི་དངོས་པོའི་[2]ངོ་བོ་ཉིད་ལས་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་དག་ནུས་པ་གང་ཁོ་ནས་རིགས་མཐུན་པའི་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་སྐྱེད་པ་དེ་ཁོ་ནས་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཐུན་མོང་བ་ཡང་སྐྱེད་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འབྲས་བུ་འདི་དག་ཐ་དད་པར་འགྱུར། འོན་ཏེ་འབྲས་བུ་གཅིག་ནི་ཚོགས་པ་ལ་རག་ལས་པ་ཡིན་ལ། གཞན་ནི་རེ་རེ་ལ་རག་ལས་པ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་ཐ་དད་པར་འགྱུར་བ་ཁོ་ནའོ་སྙམ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། ཚོགས་པ་ཅན་རྣམས་རེ་རེ་ཞིང་རྒྱུར་གྱུར་པའི་ཕྱིར་ཚོགས་པ་ལ་རག་ལས་པ་ཡང་རེ་རེ་ལ་རག་ལས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་རྒྱུ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པས་འབྲས་བུ་རིགས་(212b)མཐུན་པ་དང་མི་མཐུན་པ་ཐ་དད་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །གང་དག་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐལ་

---

1 སྣ། པེ། ནང་འདིའི་སྐབས་སུ་གཞུང་ལྷག་པོ་འདུག་པ་འདི་ནི་སྡེ་དགེའི་ནང་གཤམ་དུ་ཤོག་ནང་གསལ་བས། མ་དཔེ་སྡེ་དགེ་ལྟར་སོར་བཞག་བྱས།

2 དེ་ལྟ་བས་ན་དངོས་པོའི་ པེ།

བའི་དོན་གང་ཡིན། གལ་ཏེ་དུམ་བུར་སྐྱེད་པར་བྱེད་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ལ་ཆ་ཤས་མེད་པའི་ཕྱིར་ཆ་ཤས་སུ་སྐྱེ་བར་མི་འདོད་པ་ཉིད་པས་ཇི་ལྟར་ཐལ་བ་ཡིན་ཏེ། དེའི་མཚན་ཉིད་ནི་མི་འདོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་ཁྱད་པར་དུ་བྱེད་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་འདི་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་མ་གྲུབ་སྟེ། རྒྱུ་དག་གིས་འབྲས་བུའི་དངོས་པོ་རིགས་མི་མཐུན་པ་དུ་མ་ལས་ལོག་པ་དང་ལྡན་པ་སྐྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ལ་ཆ་ཤས་སུ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་[1]དུ་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་ཐལ་བར་བརྗོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། འོན་ཀྱང་ཁྱེད་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཕན་ཚུན་ལྡོག་པས་བྱས་པའི་ཁྱད་པར་དུ་འདོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྒྱུ་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་བྱས་ལ། གལ་ཏེ་འདིར་རྒྱུ་སྣ་ཚོགས་པར་ཁས་བླངས་ཏེ་འབྲས་བུ་སྣ་ཚོགས་མ་ཡིན་པར་ཁས་ལེན་པར་བྱེད་ན་དེའི་ཚེ་འཁྲུལ་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཐ་དད་པ་རྒྱུའི་སྣ་ཚོགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་བྱས་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་ཐལ་བ་བརྗོད་དོ། །གང་ཡང་དེ་དག་གི་དངོས་པོ་རིགས་མི་མཐུན་པ་དུ་མ་ལས་ལྡོག་པར་བྱེད་པའི་མཚན་ཉིད་འབྲས་བུའི་ཁྱད་པར་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་དེ་དག་བདག་ཉིད་ཁྱད་པར་དུ་གྱུར་པ་གང་ཁོ་ནས་འབྲས་བུ་ཁྱད་པར་ཅན་ཉེ་བར་སྐྱེད་པ་ན་དེ་ནི་རིགས་མི་མཐུན་པ་དག་ལས་ལྡོག་པར་བྱེད་པ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་ཡང་ཉེ་བར་བསྐྱེད་ནས་ལྡོག་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་ན་དེའི་ཚེ་དེས་བསྐྱེད་པར་བྱ་བའི་འབྲས་བུ་རིགས་མཐུན་པ་དང་མི་མཐུན་པ་དག་ཕན་ཚུན་ལྡོག་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་ཏེ། ལྡོག་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་ཐ་དད་པ་མེད་

1 དེ་ཉིད་ པ།

པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་རྒྱུ་དེ་དག་སོ་སོ་རང་ཉིད་ལྡོག་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རིགས་མཐུན་པའི་འབྲས་བུ་ལ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་དེ་དང་འདྲ་བར་ཐུན་མོང་གི་འབྲས་བུ་ལ་ཡང་དེ་དག་ཅི་སྟེ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་ཡང་ཐམས་ཅད་རེ་རེ་ཞིང་རྒྱུར་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཅིག་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་ལས་ལྡོག་པ་གཞན་དག་ནི་གཅིག་སྐྱེད་(213a)པར་བྱེད་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་ནི་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་རང་བཞིན་ལས་ལྡོག་པའི་ཕྱིར་དོན་གཞན་བཞིན་ནོ། །གཞན་ཉིད་ནི་དེ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྟེ་ཡང་དེ་དག་ཕན་ཚུན་ལྡོག་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་དག་ལ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ལས་ལྡོག་པ་ནི་མེད་དོ། །གཞན་ལ་དེ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་མེད་དོ་ཞེས་ནི་མི་སྨྲའི། འོན་ཀྱང་གཅིག་གིས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་གཞན་གྱི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲའོ།།

[1]གཞན་ཡང་རང་གི་ངོ་བོ་ཁོ་ནས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་གྱི། གཞན་གྱི་ངོ་བོས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་དག་བདག་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཐ་དད་པ་ཡང་ཡིན་ལ་རང་གི་ངོ་བོས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད། ངོ་བོ་ཅིག་མེད་པ་ནི་དེའི་ངོ་བོར་མི་འགྱུར་གྱི། དེ་མི་བྱ་བ་ནི་མ་ཡིན་ན། དེ་ཁོ་ནས་འབྲས་བུ་འདི་བྱ་དགོས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་རིགས་པ་ཅི་ཡོད་སྙམ་དུ་སེམས་ན། ལན་འདི་ནི་གྲངས་ཅན་ཁོ་ན་ལ་བརྗོད་ན་མཛེས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་དག་ནི་འགྲོ་བ་

1 གཞན་ཡང་ ཞེས་པ་ནས་ འདི་ལྟར་མིག་ལ་སོགས་པ་ ཞེས་པའི་བར་པེ་ཅིང་པར་མ་ནང་མེད། འདི་ནི་གོང་དུ་པེ་ཅིང་ནས་བཀོད་པའི་མཆན་བུ་དེ་ཉིད་རང་ཡིན་པས་དཔར་མ་འདི་དག་ཏུ་མཆན་པ་འདི་གོང་འོག་འཁྲུགས་པར་མངོན་ཞིང་། འདིར་སྡེ་དགེ་གཞིར་བཞག་པས་དེ་མུར་བཞག་གོ

ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ཉེ་བར་བརྟེན་དོ། །དེའི་ཕྱིར་དེར་འཛིན་པ་རྣམ་པར་བཟློག་པའི་ཆེད་དུ་སློབ་དཔོན་གྱི་དངོས་པོ་རྣམས་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཐ་དད་པར་སྟོན་པར་མཛད་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་བརྟེན་པ་ཡིན་གྱི། འདི་གང་དག་ཡང་དག་པར་ན་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དོན་གཅིག་པ་ཡང་མ་ཡིན། དོན་ཐ་དད་པ་ཡང་མ་ཡིན་པར་འདོད་པ་དེ་དག་གི་ཕྱིར་བཤད་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་གི་ལྟར་ན་སྒྱུ་མ་དང་མཚུངས་པས་ཡང་དག་པར་ན་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་དུ་ཡང་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་རྣམས་ལ་ཡང་དག་པའི་ངོ་བོ་གཉིས་ཏེ་གཅིག་ནི་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ལ་ཅིག་ཤོས་ནི་རང་གི་ངོ་བོའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པར་གྱུར་ན་དེའི་ཚེ་འདི་གཞན་རང་གི་ངོ་བོ་ལས་ལོག་ཀྱང་[1]སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ལས་ལོག་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ལན་འདི་མཛེས་པར་འགྱུར་བ་ཞིག་ན།[2] གང་གི་ཚེ་ཐམས་ཅད་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ཡིན་པ་དེའི་ཚེ་ཕན་ཚུན་ལོག་ན་དེ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་ལོག་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་གཅིག་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པར་འགྱུར།[3] འོན་ཏེ་དེ་དག་གི་(213b)རང་བཞིན་འདི་འདྲ་སྟེ། ཐ་དད་ཀྱང་གང་གཅིག་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །རང་བཞིན་ལ་ནི་བརྒལ་ཞིང་བརྟག་པར་འོས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། ཀྭང་པ་བརྐྱང་སྟེ་འདུག་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དཔྱོད་པ་ལ་རྒྱབ་ཀྱིས་ཕྱོགས་པའི་བློ་ཅན་ཐ་སྙད་ཙམ་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བ་

---

1 སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་མཚན་ཉིད་ ནས་ ངོ་བོ་ལས་ལོག་ཀྱང་ བར་ཆད། སྣ།
2 འགྱུར་ཞིང་ སྣ།
3 སྐྱེད་པར་བྱེད་པར་འགྱུར། སྣ།

རྣམས་དགའ་མགུར་འདུག་ལ་རག་སྟེ། གང་དག་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དཔྱོད་པ་ལ་ཞུགས་པའི་བློ་གྲོས་ཅན་དེ་དག་ནི་དེ་ལྟར་འདུག་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་ཡང་གཅིག་ཡིན་ཡང་རང་བཞིན་གྱི་ཁྱད་པར་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་འགྲོ་བ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རྒྱུར་རིམ་དང་ཅིག་ཅར་དུ་མི་འགལ་བ་ཁོ་ན་སྟེ། དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་ལྟ་བུར་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །རང་བཞིན་ལ་ནི་བརྒལ་ཞིང་བརྟག་པར་འོས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དེར་སྨྲ་བ་རྣམས་དེ་སྐད་དུ་སྨྲ་བ་ལ་ལན་ཅི་ཞིག་བརྗོད་པར་བྱ། གང་ཡང་དེ་ཁོ་ནས་འབྲས་བུ་དེ་བྱ་དགོས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་རིགས་པ་ཅི་ཡོད་ཅེས་ཟེར་བ་དེ་ལ་ཡང་ཇི་ལྟར་མེ་ལ་རག་ལས་ཏེ་སྐྱེ་བའི་དུ་བ་བརྒྱ་བྱིན་གྱི་སྤྱི་བོ་ལས་ཀྱང་འབྱུང་ན་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་རིགས་པ་བརྗོད་པ་དེ་བཞིན་དུ་འདིར་ཡང་དེ་ཉིད་ཅི་སྟེ་ཉེ་བར་མི་བརྗོད་དེ། ཐ་སྙད་[1]ཀྱང་ཚོགས་པ་གཅིག་གི་ཁོངས་སུ་གཏོགས་པ་ནི་འབྲས་བུ་གཅིག་སྐྱེད་པར་བྱེད་པར་མི་འགལ། ཚོགས་པ་གཞན་དུ་གཏོགས་པ་རྣམས་ནི་འགལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་དང་ཁྱད་པར་ཅི་ཡང་མེད་དོ། །འདི་ལ་ཡང་འདི་སྐད་དུ་མེ་ལ་སོགས་པ་དེ་ཁོ་ནས་འབྲས་བུ་དེ་བྱ་དགོས་ཀྱི། བརྒྱ་བྱིན་གྱི་སྤྱི་བོ་ལ་སོགས་པ་གཞན་དག་གིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་རིགས་པ་ཅི་ཡོད།[2] ཚོགས་པ་ཐ་དད་པ་ཡང་ཡིན་ལ་རང་གི་ངོ་བོས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་འགལ་བ་ཅི་ཡོད་ཅེས་བརྗོད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་ཇི་ལྟར་ཚོགས་པ་གཅིག་ལ་རག་ལས་ཏེ་སྐྱེ་བའི་འབྲས་བུ་ཚོགས་པ་གཞན་ལས་ཀྱང་སྐྱེ་བ་ཡིན་ན་དེས་བསྐྱེད་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་དུ་

1 དེ་ཐ་སྙད་ སྣ།

2 ཅི་ཡོད་དེ་ སྣ།

མ་ངེས་པའི་ཕྱིར་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཚོགས་པ་གཅིག་ལ་ཡང་[1]དེ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུ་གཅིག་ལ་རག་ལས་ཏེ། སྐྱེ་བ་ཡང་དེ་དང་མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་རྒྱུ་གཞན་ལས་སྐྱེ་བ་ཡིན་ན་ཅི་སྟེ་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་མི་བརྗོད་དེ། འོན་ཏེ་ཡང་རྒྱུ་རྣམས་བདག་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཉེ་བར་སྦྱོར་བས་བྱས་པའི་རང་(214a)བཞིན་གྱི་ཁྱད་པར་མ་འཚོལ་བའི་ཕྱིར་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་འགལ་བ་ཉིད་དེ།[2] འདི་ལྟར་མིག་ལ་སོགས་པ་རང་བཞིན་ཐ་དད་པ་དག་ལས་འབྲས་བུ་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བ་ན་དངོས་སུ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་ཡང་རྟོགས་པའི་བདག་ཉིད་དང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་སོ་སོར་ངེས་པ་དང་། དེའི་རྣམ་པར་གྱུར་བར་སྐྱེ་སྟེ། དེ་ཡང་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་དང་ལྡོག་པ་དག་གིས་མཚུངས་པ་དེ་མ་ཐག་པའི་རྐྱེན་ལས་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འགྱུར་གྱི། མིག་ལ་སོགས་པ་དག་ལས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ངེས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཡུལ་ལས་ནི་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དོ། །དབང་པོ་ལས་ནི་ཡུལ་འཛིན་པ་སོ་སོར་ངེས་པའོ། །དེ་ལྟར་ན་དབང་པོ་དང་ཡུལ་དག་ལས་ནི་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་ལ་དབང་པོ་དང་མཚུངས་པ་དེ་མ་ཐག་པའི་རྐྱེན་དག་ལས་ཀྱང་ཡུལ་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་ཡུལ་དང་མཚུངས་པ་དེ་མ་ཐག་པའི་རྐྱེན་དག་ལས་ཀྱང་ཡུལ་འཛིན་པ་སོ་སོར་ངེས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་རྣམ་པར་གཞག་པ་ངེས་པ་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་ཁོ་ན་སྟེ། རྒྱུ་ཐ་དད་པ་དག་ལས་ཁྱད་པར་ཐ་དད་པ་དག་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་བྱིས་པའི་སྐྱེ་བོ་ཐམས་

---

1 ཚོགས་པ་གཞན་ལ་ཡང་ སྣ།

2 བྱེད་པར་འགྱུར་བ་ཉིད་དེ་ སྣ།

ཅན་གཟུད་པའི་ཕྱིར་བརྗོད་ན་ནི་རིགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །འོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན། འདི་ལྟར་ཁྱད་པར་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་གལ་ཏེ་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའམ། ལྡོག་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཞིག་ཡིན་པར་འགྱུར་གྲང་།[1] གལ་ཏེ་ཕྱོགས་དང་པོ་ལྟར་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དམིགས་པའི་བདག་ཉིད་ལ་སོགས་པ་དག་ལས་ངོ་བོ་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར་དེ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ནར་དུ་མ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་ཡིན་ལ། དམིགས་པའི་བདག་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད་བཞིན་དུ་གཅིག་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་བཟློག་པར་[2]མི་འགྱུར་རོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་གཞན་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དུ་གཟུགས་ལས་མི་སྐྱེ་བ་ཉིད་དུ་ཡང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ།། དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་ལས་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡང་གཟུགས་ལས་སྐྱེ་བར་སྨྲས་པར་འགྱུར་རོ། དེའི་ཕྱིར་གཅིག་ལ་དུས་གཅིག་ཏུ་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་སྐྱེ་བ་དང་མི་སྐྱེ་བ་དག་ཇི་ལྟར་མི་འགལ། ཇི་སྟེ་ཉེས་པ་འདིར་གྱུར་ན་མི་རུང་ཞེས་ཁྱད་པར་འདི་དག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་ (214b)དོན་ཐ་དད་པར་གྱུར་པ་ཡིན་པ་ཁོ་ནར་རྟོག་ན་དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། གཞན་ཁོ་ན་ལ་མིག་ལ་སོགས་པ་ཉེ་བར་སྦྱོར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རྟག་ཏུ་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པར་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །ཇི་སྟེ་བརྟགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་[3]ཕྱོགས་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་དག་ཁོ་ན་ལ་མིག་ལ་སོགས་པ་ཉེ་བར་སྦྱོར་བའི་ཕྱིར་རོ། །བརྟགས་པའི་

1 གྱུར་གྲང སྣ། པེ།
2 བཟློགས་པར་ སྣ། པེ།
3 བརྟགས་པའི་ཕྱོགས་ སྣ། པེ།

བདག་ཉིད་དག་ལ་ཡང་འགའ་ཡང་ཉེ་བར་སྦྱོར་བ་མེད་པས་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་དམ་པར་དུ་མ་ལས་འབྲས་བུ་གཅིག་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གཅིག་ལས་དུ་མ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འདིར་ཡང་སྔ་མ་བཞིན་དུ་རྒྱུའི་ཐ་དད་པ་ཐ་དད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་མ་ཡིན་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་མིག་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་གང་ཁོ་ནས་རིགས་མཐུན་པའི་སྐད་ཅིག་མ་སྐྱེད་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉེ་བར་སྐྱེ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་རྒྱུ་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་ཡང་འབྲས་བུ་ཐ་དད་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འབྲས་བུའི་ཐ་དད་པ་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་དག་རྒྱུ་མེད་པར་མི་འགྱུར། དེ་ལ་ནི་གང་གིས་ན་འབྲས་བུ་གཞན་སྐྱེད་པར་འགྱུར་བ་བདག་ཉིད་ཀྱི་[1]ཁྱད་པར་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་ཆ་ཤས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེའི་ཕྱིར་རྒྱུས་རང་གི་ངོ་བོ་འཕོས་ནས་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་མི་སྐྱེ་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་རྒྱུའི་བདག་ཉིད་དེ་ལ་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་དེས་བྱས་པའི་འབྲས་བུ་ལ་ཁྱད་པར་མེད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །གཅིག་ལས་དུ་མ་སྐྱེ་བ་དང་། དུ་མ་ལས་གཅིག་སྐྱེ་ཞེས་བྱ་བ་མཐོང་བ་མ་ཡིན་ནམ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ཇི་ལྟར་སྤང་བར་ནུས་ཤེ་ན། འདི་ནི་རུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁོ་བོ་ཅག་ཀྱང་འདི་མ་མཐོང་ངོ་ཞེས་ནི་མི་སྨྲ་བོ། །མཐོང་བ་ཙམ་ནི་ཚད་མ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་བརྫུན་པ་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ།། འོན་ཀྱང་གང་དག་ཇི་ལྟར་མཐོང་བ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་པ་དེ་དག་གི་ལོག་པར་སྒྲོ་འདོགས་པ་བསལ་བའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པས་འགལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དོ། །གཞན་ཡང་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་

1 ཀྱིས་ སྣ།

གང་དུ་མ་ལས་སྐྱེ་བ་མཐོང་བར་འགྱུར་བ་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ནི་གཅིག་ཏུ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་དེ། (215a)འདི་ནི་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཉིད་དུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཡང་གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཐམས་ཅད་རྫས་གཅིག་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །གཅིག་མ་གྲུབ་པ་དེ་བསགས་[1]པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དུ་མ་གྲུབ་[2]པ་ཁོ་ན་གཅིག་དང་དུ་མ་དོན་དམ་པའི་དངོས་པོ་སྐྱེ་བ་གང་དུ་མཐོང་བར་འགྱུར། དུ་མ་ལས་དུ་མ་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་གཞན་ཡང་ཡོད་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཇི་སྐད་འབྲས་བུ་རེ་རེ་ལ་རྒྱུ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱེད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དུ་མ་ལས་གཅིག་སྐྱེ་བའི་ཕྱོགས་ཉིད་[3]དུ་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལ་ཡང་ཉེས་པ་བསྙད་ཟིན་ཏོ། །འོན་ཏེ་འབྲས་བུ་གཅིག་ཁོ་ན་ལ་རེ་རེས་ཉེ་བར་སྦྱོར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གཅིག་ལས་གཅིག་སྐྱེ་བའི་ཕྱོགས་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལ་ཡང་སུན་དབྱུང་བ་བསྙད་ཟིན་ཏོ། །དེ་བས་ན་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་མ་ཡིན་ནོ། །མཐའ་བཞི་ལས་མ་[4]གཏོགས་པ་གང་ལས་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱོགས་གཞན་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །རྟག་པའི་དངོས་པོ་ཡང་ཐམས་ཅད་སྤྱར་བསལ་ཟིན་པས་དེ་བས་ན་མ་ངེས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་འགལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་ངོ་བོར་གནས་པ་ལ་ཐ་སྙད་དུ་གཅིག་ལས་དུ་མ་སྐྱེ་བ་དང་དུ་མ་ལས་གཅིག་སྐྱེ་བར་ཇི་ལྟར་གྲགས་པ་བཞིན་མཐོང་བའི་ཕྱིར་དང་། མིག་ལ་སོགས་པ་ཡང་

1 བརྩགས་ སྡེ།

2 དུ་མ་ཡང་མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ སྣ། པེ།

3 ཕྱོགས་སྐྱིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། སྣ།

4 བཞི་ལ་མ་··· སྣ།

རྫེས་སུ་འགྲོ་བ་དང་ལྡོག་པའི་སྒོ་ནས་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བའི་བྱེ་བྲག[1]རྟོགས་ནས་བྱིས་པའི་སྐྱེ་བོ་གཟུད་པའི་ཕྱིར་འབྲས་བུའི་གཏན་ཚིགས་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཚེ་རྒྱུ་ཐ་དད་ན་ཐ་དད་པར་འགྱུར་བར་སྨྲས་ཀྱི། དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་པར་རིག་པར་བྱ་སྟེ། དོན་དམ་པར་དེ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་སྔར་དཔྱད་པ་བཞིན་ནོ།།

དེ་བས་ན་གང་ཇི་སྐད་དུ།[2] གང་དག་རྒྱུ་གཅིག་ལས་འབྲས་བུ་དུ་མ་སྐྱེ་བར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལན་ཀྱང་སོ་སོར་བཏབ་ཟིན་ཏོ།།

(33)གང་དག་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བའི་གཏན་ཚིགས་འདི་ནི་མ་ངེས་པ་ལ་སོགས་པར་སྨྲ་བ་དེ་དག་གི་ལན་ཀྱང་སྔར་སྨྲས་ཟིན་ཏོ།།

(34)གང་ཡང་སྨྲ་བ་ཇི་སྟེ་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་མ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་མི་འགྱུར་(215b)ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལན་ཀྱང་སྔར་སྨྲས་ཟིན་ཏོ། །གང་ཡང་སྨྲ་བ་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལན་ཀྱང་སྔོན་གྱི་སློབ་དཔོན་གྱིས་བླན་ཟིན་ཏོ། །འོན་ཀྱང་ཁ་ཅིག་འདི་ལ་ཞེ་སྡང་བའི་ཕྱིར་བརྩུན་པ་ཉིད་དུ་སྐྱེ་ན་བརྗོད་པ་དེ་ལོག་པར་རྟོགས་པ་ཡིན་པར་བརྗོད་པར་བྱའོ།།

(35) དེ་ལ་འདིར་[3]ཐལ་བར་སྒྲུབ་ན་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ།

1 སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་ སྣ། པེ།

2 དེ་བས་ན་ཇི་སྐད་དུ་ པེ།

འདི་ལྟར་ཇི་སྐེ་ཕ་རོལ་པོ་དག་གིས་དངོས་པོ་རྣམས་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བར་ཁས་མ་བླངས་སུ་ཟིན་ཀྱང་། འོན་ཀྱང་དེས་ཁྱབ་པའི་ཆོས་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ཤུགས་ཀྱིས་ནི་དེ་ཡང་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་རེ་ཞིག་གང་གིས་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་རྟག་[1]པ་དང་གཅིག་པུའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཀུན་བརྟགས་པ་དེ་དག་གིས་ནི་དེ་དག་འབྲས་བུ་རིམ་གྱིས་འབྱུང་བ་ལ་ཉེ་བར་སྦྱོར་བ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་སུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ཤུགས་ཀྱིས་ན་གཅིག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་ཡང་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དེ། ངོ་བོ་གཅིག་ལ་སྐྱེད་པར་བྱེད་[2]པའི་གནས་སྐབས་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དུས་ཐམ་བཞིན་དུ་དུས་ཕྱིས་ཀྱང་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཏེ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་སྔོན་གྱི་གནས་སྐབས་དང་མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གཅིག་པ་ཉིད་ཉམས་པ་ཡིན་ནོ། །འདི་ནི་ཡང་དག་པར་ན་དུ་མ་ཉིད་དུ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ན་དུས་མཉམ་པ་དང་ཅིག་ཤོས་དག་ཏུ་རང་དང་གཞན་གྱི་རྒྱུད་ཀྱི་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་མེད་པར་སྟར་བསྒྲུབས་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་དག་གིས་ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་པ་འདུས་མ་བྱས་གསུམ་པོ་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པ་དང་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་སྦྱོར་བ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་དེ་དག་ཤེས་པ་རིམ་གྱིས་འབྱུང་བའི་ཤེས་བྱའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ཤུགས་ཀྱིས་ན་ངོ་བོ་གཅིག་པ་དང་བྲལ་བ་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དེ། དེ་དག་ཤེས་པ་རེ་རེ་ཞིང་ནི་དེའི་ཤེས་པས་ཤེས་པར་

3 དེ་ལ་འདི་ སྣ། པེ།

1 བརྟག་པ་ སྣ།

2 སྐྱེད་པར་མི་བྱེད་ སྣ། པེ།

བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཟ་དད་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །མི་འགྱུར་ན་ནི་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་སྔོན་བཞིན་དུ་ཕྱིས་ཀྱང་དེའི་ཤེས་པས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་དོ།། དེའི་ཕྱིར་འདི་དག་གཅིག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ།(216a) །ཞེས་སྨྲར་བསྒྲུབས་ཟིན་པ་ཉིད་དོ།།

ཁ་ཅིག་གིས་དུས་དང་སྐྱེས་བུ་དང་གཙོ་བོ་དང་ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་འགྲོ་བ་སྣ་ཚོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པའི་རྒྱུ་རྟག་པ་དང་ངོ་བོ་གཅིག་པར་ཀུན་བརྟགས་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་དེ་དག་གིས་རིམ་མམ། ཅིག་ཅར་དངོས་པོའི་ཚོགས་བདེན་པ་[1] དང་བརྫུན་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉེ་བར་འཛིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་སུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་[2] ཤུགས་ཀྱིས་ན་གཅིག་པ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དེ། ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པ་དག་ནི་དེ་ལྟར་འགྲོ་བ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉེ་བར་འཛིན་པ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་དང་ལྡན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་དག་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་མ་གྲུབ་ན་དུ་མ་ཉིད་དུ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་ནི་དེ་བསགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་དག་གིས་གང་ཟག་ཅེས་བྱ་བའི་དངོས་པོ་རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་དག་ཏུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་ཀུན་བརྟགས་པར་གྱུར་བ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་། འདི་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བ་ཉིད་དུ་དངོས་སུ་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དེ། གཅིག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་ལྡན་པ་ཡང་། རྟག་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ལ། ངོ་བོ་ཉིད་གཞན་དང་གཞན་དུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ཡང་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་

---

1 བདེན་པ་བ་ པ།

2 བུའི་ཕྱིར་ སྣ། པ།

རིགས་པ་དང་ལྡན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །མི་རྟག་པའི་ངོ་བོ་ལུས་དང་ས་དང་རི་ལ་སོགས་པ་བདག་ཉིད་སོ་སོར་ཡན་ལག་ཅན་གྱི་རྫས་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་ཀུན་བརྟགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡན་ལག་གི་རྫས་སུ་ཡུལ་[1]ཐ་དད་པ་དུ་མ་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་སུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར། གཅིག་པ་ཉིད་དང་བྲལ་བར་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་ཡན་ལག་རེ་རེ་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་ཐ་དད་པ་མེད་ན་ནི་དེ་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་ཡང་འཐད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཆ་ཤས་མེད་པ་ལ་བསྒྲིབས་པ་དང་མ་བསྒྲིབས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་འགལ་བ་དང་ལྡན་པར་ཡང་འཐད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གང་དག་གི་ལུས་ལ་སོགས་པ་རྡུལ་ཕྲན་[2]བསགས་པ་ཙམ་ཡིན་[3]པའི་ཕྱིར་རྡུལ་ཕྲ་རབ་རྣམས་སོ་སོ་རེ་རེ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་ཀུན་ཏུ་བརྟགས་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་སྒྲིབ་པ་དང་བསགས་[4]པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་སུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ཤུགས་ཀྱིས་ན་གཅིག་པ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱང་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། ཆ་ཤས་མེད་པའི་ངོ་བོ་རྣམས་ལ་གང་(216b)གིས་ན་སྒྲིབ་པ་ལ་སོགས་པ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར་བ་ཕྱོགས་གཅིག་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ལ་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་སྒྲིབ་པ་མེད་པ་རྣམས་དང་བསགས་[5]པ་མེད་པ་རྣམས་ལ། ཡུལ་རྒྱས་པར་ཁྱབས་པར་གནས་པར་ཡང་མི་རུང་ངོ་། །ཡན་ལག་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པར་རིགས་པ་དང་ལྡན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ནི་ཡན་ལག་འདུས་པ་ཙམ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྡུལ་ཕྲ་རབ་

---

1 རྫས་ཡུལ་ པེ།

2 རྡུལ་ཕྲ་རབ་ . སྣ། པེ།

3 བསགས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ པེ།

4 བརྩགས་ སྡེ།

5 བརྩགས་ སྡེ།

དང་ཡན་ལག་ཅན་གྱི་རྫས་འདི་གཉི་ག་ཡང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་རུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་གཅིག་འདུས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གཅིག་པ་ཉིད་མ་གྲུབ་ན། དེ་ཡང་དེ་ལ་[1] ལྟོས་ཏེ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་པས་མི་འགྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་རྫས་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་དང་བྲལ་བར་གྲུབ་ན་དེ་ལ་བརྟེན་ནས་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ཡོན་ཏན་དང་། ལས་དང་། སྤྱི་དང་། ཁྱད་པར་དང་། འདུ་བ་རྣམས་རབ་ཏུ་མི་འགྲུབ་པ་ཉིད་དེ། དེ་དག་ནི་དེའི་གཞན་གྱི་དབང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་རེ་ཞིག་ཤུགས་ཀྱིས་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་ཁོ་ནར་ཁས་བླངས་སོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །ཤེས་པ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པར་ཉེ་བར་བརྟགས་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་ཡུལ་ངོ་བོར་སྣ་ཚོགས་འཛིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་སུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་ཤུགས་ཀྱིས་ན་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པ་དང་བྲལ་བ་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འདི་ལྟར་ཤེས་པ་ནི་གདོན་མི་ཟ་བར་རྣམ་པ་དང་བཅས་པར་ཁས་བླངས་དགོས་སོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཡུལ་གྱི་རྣམ་པས་མ་བསྒྱུར་བའི་ལུས་འདི་ཡུལ་འཛིན་པར་རྣམ་པར་གཞག་པར་མི་འཐད་པ་ཉིད་དོ། །རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་ན་ནི་འདི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པ་དང་བྲལ་བ་བསལ་ཁོ་ནར་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དེ། ཤེས་པའི་ངོ་བོ་སྣ་ཚོགས་པ་[2]ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྣ་ཚོགས་དང་གཅིག་པ་ཉིད་དག་ཀྱང་འགལ་བའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་དངོས་པོ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་དུ་ཁས་བླངས་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལྔའི་ཚོགས་དག་ནི་རང་གི་སྤྱི་པ་རྣམས་བསགས་པ་ལ་དམིགས་པ་ཁོ་ནར་འདོད་དོ།།

---

1 དེ་ལས་ སྣ།

2 སྣ་ཚོགས་ཡིན་ སྣ། པེ།

རྣམ་པར་ཤེས་པ་དྲུག་པ་ཡང་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་ལ་དམིགས་ལ། རི་མོ་བརྐྱང་[1]པ་ལ་སོགས་པ་ལ་ལྟ་བ་ན། རྣམ་པར་ཤེས་པ་[2](217a)རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཅན་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཅན་དུ་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ནའོ། །དེ་ལ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཉིད་གཞུང་གཟུགས་[3]པའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་དུ་མ་སྐྱེ་བར་རྟོག་པ་ཡང་ལེགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ནི་ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་བཀྲམ་པ་ལྟར་གནས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་མི་གནས་ན་ཡང་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཉིད་འཐད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཡོན་ཏན་དང་ལས་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་རྫས་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཤེས་པས་ཅིག་ཅར་འཛིན་པར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་གཞན་དག་གིས་ཀྱང་ཤེས་པ་ཡུལ་སྣ་ཚོགས་ཅན་དུ་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དོ། །གང་དག་རྫས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནོར་བུ་གཟི་ལྟ་བུར་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་དེའི་ཡུལ་ཅན་གྱི་སེམས་ཀྱི་ཡུལ་ཉིད་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་དུ་མར་འདོད་པ་ཁོ་ནའོ།།

གང་དག་ཡུལ་འབྱུང་བ་བཞི་གནས་པའི་བདག་ཉིད་ཁོ་ན་ཡིན་པར་ཉེ་བར་རྟོག་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་ཤེས་པ་དངོས་པོ་དུ་མའི་ཡུལ་ཅན་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པ་ཉིད་དོ། གང་དག་གི་ཡུལ་སྙིང་སྟོབས་དང་། རྡུལ་དང་། མུན་པའི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་ཁས་བླངས་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་ཤེས་པའི་ཡུལ་ཉིད་དངོས་པོ་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཡིན་པར་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ན་སྟེ། ཡུལ་ཉིད་དངོས་པོ་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་དུ་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

---

1 རྐྱང་ སྣ། པེ།

2 ཤེས་པ་རྣམ་... སྣ། པེ།

3 གཟུངས་ སྣེ།

གང་དག་ཡོད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ཅན་ནི་དམིགས་པ་མེད་པ་ཁོ་ནར་སྨྲ་བ་དེ་དག་གི་ལུགས་ཀྱིས་ཀྱང་མིང་གི་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་གཅིག་པ་དེ་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། ཡི་གེའི་ངོ་བོ་དུ་མར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །མི་ལམ་ལ་སོགས་པའི་ཤེས་པ་ཡང་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་ཉིད་དུ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནའོ། །འགྲོ་བ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་གྱི་[1]ངོ་བོར་སྨྲ་བ་གང་དག་གིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ཕྱི་རོལ་ཡང་དག་པའི་ཡུལ་ཅན་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རང་རིག་པའི་ཕྱིར་མཐར་ཐུག་པའི་དེ་ཁོ་ནར་[2]ཁས་བླངས་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་རྣམ་པར་འཁྲུལ་བའི་བག་ཆགས་ཡོངས་སུ་སྨིན་པའི་དབང་གིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་(217b)གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ལོག་པ་[3]སྣ་ཚོགས་སུ་སྣང་བར་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ངོ་བོ་གཅིག་པ་མ་ཡིན་པར་ཁས་བླངས་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ལྟ་བ་གང་ལ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པར་མ་གྲུབ་བོ། །དེ་མ་གྲུབ་ན་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་མ་གྲུབ་བོ་ཞེས་སྦྱར་བཤད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རང་གི་རྒྱུད་ཀྱིས་བསྒྲུབ་པ་ལ་ཡང་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཚུལ་གྱིས་རྒོལ་བ་དང་ཕྱིར་རྒོལ་བ་གཉིས་ག་ལ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བ་ཙམ་དུ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྣམ་པར་བཅད་པ་ཙམ་ཞིག་ཡིན་[4]པ་ལ་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་དང་

1 གྱིས་ སྡེ།

2 མཐར་ཐུག་པ་ཁོ་ནར་… སྣ། པེ།

3 སོགས་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་… སྣ། པེ།

4 ཙམ་ཡིན་པ་ལ་ སྣ། པེ།

རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་ཆོས་ཅན་དངོས་པོར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་པ་རིགས་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་སྔར་
བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེས་ན་རང་དང་གཞན་གྱི་གཞུང་ལུགས་ལ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་
བར་བཏགས་པའི་ཆོས་ཅན་ལ་ཡང་བསྒྲུབ་པའི་ཆོས་རྣམ་པར་བཅད་པ་ཙམ་གྱིས་ཇི་
སྐད་བཤད་པ་གཉི་ག་ལ་གྲུབ་པ་ཉིད་དོ། །གང་ཡང་གཏན་ཚིགས་འདི་ཇི་ལྟར་གྲུབ།
གལ་ཏེ་མི་དམིགས་པའི་སྒོ་ནས་ཡིན་ན་ནི་དེ་ཡང་མི་དམིགས་པ་གཞན་ལས་གྲུབ་ན་
ཐུག་པ་མེད་པར་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ། །མངོན་སུམ་གྱི་སྒོ་ནས་དམིགས་པ་མེད་པ་གྲུབ་པ་
ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དེའི་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་བསལ་བ་[1]
ཉིད་དེ། ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཚུལ་གྱིས་གཏན་ཚིགས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་
ལྟར་རེ་ཞིག་བདག་ལ་སོགས་པ་དབང་པོས་མི་སོད་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་དེས་
ཁྱབ་པ་འབྲས་བུ་རིམ་ཅན་ལ་སྦྱོར་བ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་
གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱང་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་པ་ཁོ་ནའོ། །ཇི་སྟེ་ཆོས་ཅན་ཉིད་
དེ་ཉིད་མ་གྲུབ་ན། གང་ལ་དེ་དང་བྲལ་བ་འདི་སྒྲུབ་སྙམ་དུ་སེམས་ན་དེ་ནི་རིགས་པ་མ་
ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་དེ་ལྟ་བུའི་དགག་པ་ལ་ཐམས་ཅད་དུ་ཆོས་ཅན་བཏགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་
པའི་ཕྱིར་ཏེ། དེ་ཁོ་ནའི་ཆོས་མི་དམིགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེ་ལྟ་མ་
ཡིན་ན་ཁྱེད་ལ་ཡང་དེ་དགག་པ་དེ་ལ་གཏན་ཚིགས་དོན་བྱེད་པའི་ནུས་པ་དང་བྲལ་བའི་
མཚན་ཉིད་ཇི་ལྟར་གྲུབ་ཅེས་བྱ་བའི་ཀླན་ཀར་ཇི་སྟེ་མི་འགྱུར། ཕ་རོལ་པོ་དག་(218a)
གིས་ཀུན་བཏགས་པའི་ཆོས་ཅན་དེ་ལ་འབྲས་བུ་རིམ་ཅན་དེ་ལྟ་བུ་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ནའི་
ཕྱིར་དེ་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་ཆོས་གྲུབ་པ་དེའི་ལུགས་ལ་བརྟེན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་ཆོས་ཅན་

1 བསལ་ སྡེ།

དེ་ཀུན་བརྟགས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཚུལ་གྱིས་ནི། ཆོས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ངེས་པར་བཟུང་བ་མེད་པར་ཐལ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ནི་[1] བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཚད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བས་སྒྲུབ་པ་ལ་ཁྱབ་པ་ཡང་གྲུབ་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་སྔར་བཤད་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཆོས་ཅན་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ལྐོག་ཏུ་མ་གྱུར་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀྱང་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པ་དང་བྲལ་བ་མངོན་སུམ་ཁོ་ནར་གྱུར་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་དག་རྟག་ཏུ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་སུ་སྣང་བ་ཉིད་ཀྱིས་བྱེ་བྲག་མེད་པར་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པར་སོ་སོར་མྱོང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་དང་བྲལ་བ་གྲུབ་ན་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མ་དང་བྲལ་[2]བ་ཡང་མངོན་སུམ་ཁོ་ནར་གྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ། དུ་མ་ཉིད་ནི་གཅིག་ཚོགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པའི་ཚད་མ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ།།

འོན་ཏེ་ཡང་དོན་དམ་པར་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡང་མེད་ལ། ཅུང་ཟད་ཀྱང་མྱོང་བ་ཡང་མེད་དེ། དཔེར་ན་རི་བོང་གི་རྭ་ལྟ་བུའོ། མངོན་སུམ་ཡང་དེ་དང་འདྲའོ་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ཡང་འདི་ལྟར་འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འདི་མ་ངེས་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་པས་སྔར་ལན་བཏབ་ཟིན་པ་ཁོ་ནའོ། །ཇི་སྐྱེ་སྒྲོ་བཏགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་འགྱུར་གྱི། ཡང་དག་པར་ན་དེ་མེད་པར་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། སྨིག་རྒྱུ་ལ་ཆུར་ཤེས་པ་ལྟ་བུའོ། །མངོན་སུམ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྒྲོ་བཏགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་ཇི་ལྟར་ངེས་གཅིག་དང་དུ

1 དེ་ནི་ སྣ། པེ།

2 དུ་མ་བྲལ་ སྣ། པེ།

མས་དབེན་པ་ཉིད་རྟོགས་པར་འགྱུར་སྙམ་དུ་སེམས་ན། དེ་ནི་འདིར་སློབ་མ་མཁན་གྱི་མངོན་སུམ་དང་། རྗེས་སུ་དཔག་པའི་ཤེས་པས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་སློབ་མ་མཁན་གྱི་ཤེས་པ་གླང་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་ཅན་ཡང་ཡང་དག་པར་ན་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་དོ། །དེར་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་པས་ཡང་དག་པར་ན་དེས་དབེན་པ་ཉིད་རྟོགས་པ་ངེས་པར་(218b)སྐྱེ་བའི་རྒྱུ་ཉིད་ཀྱིས་དེའི་ཡུལ་ཅན་དུ་རྣམ་པར་གཞག་གོ །དེ་དང་འདྲ་བར་རྟག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱི་མངོན་སུམ་འཁྲུལ་པའི་རྒྱུ་མཚན་ཡང་དག་པར་བསམ་པ་[1]སྒྲོ་བཏགས་པའི་རྣམ་པ་ཅན་གཞན་ཡང་སྐྱེ་བ་ན་ཡང་དག་པར་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་པར་ངེས་པའི་རྒྱུ་ཉིད་ཀྱིས་དེས་དབེན་[2]པའི་ཡུལ་ཅན་དུ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཉིད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་ཤེས་པ་དངོས་པོའི་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་ཅན་ཡང་དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེའི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་නོ། །དེའི་ཕྱིར་ཚད་མ་ཡིན་པས་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།། གང་ཡང་དེ་ནི་དེའི་ཡུལ་ཅན་མ་[3]ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། དངོས་པོ་རྣམས་ཏྲའི་དྲ་ལྟ་བུར་ཁས་བླངས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། སློབ་མ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལྟ་བུར་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ཀྱང་སློབ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་མངོན་སུམ་ཁོ་ནའོ། །གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བར་

1 བསྐལ་བ་ སྡེ།
2 དབོན་ སྣ།
3 ཡུལ་མ་ཡིན་ སྣ། པེ།

གཟུང་མོད་ཀྱི། སྐྱེ་བོ་དམ་པ་མ་ཡིན་པའི་བསྟན་བཅོས་མཉན་པ་ལ་སོགས་པ་འབྲུལ་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱི་སྒྲོ་འདོགས་པ་ཉེ་བར་སྐྲེད་[1]པ་ཁ་ཅིག་གིས་གཏན་ལ་མི་ཕེབས་ཀྱི། གཞན་དག་གིས་ནི་གཏན་ལ་ཕེབས་ན་ཇི་ལྟར་མི་དམིགས་པའི་སྒྲོ་ནས་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བ་ཡང་དག་པར་གྲུབ།[2] རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་སྔ་ཚོགས་ཀྱི་རྣམ་པ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཐམས་ཅད་དུ་གཅིག་པ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་གྲུབ་ན་དུ་མ་ཉིད་དང་བྲལ་བ་ཡང་གྲུབ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དེའི་ཚོགས་འདི་[3]བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཅིག་དང་དུ་མ་ཉིད་དག་གིས་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་སྟེ། དེ་དག་ནི་ཕན་ཚུན་སྤྲངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་སྐྱེ་བོ་ཐ་སྙད་དུ་བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཆད་པ་དང་འབྲེལ་བ་ཟླ་མེད་པར་གྱུར་པ། གཅིག་ཏུ་ཐ་སྙད་གདགས་སུ་རུང་བ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ན་དེ་ལས་བཟློག་པ་ཟླ་དང་བཅས་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་རྣམ་པར་བཅད་ནས་ཡོངས་སུ་གཅོད་ལ། དེ་བཞིན་དུ་ཛས་ཀྱི་རིགས་དུ་མའི་ཚོགས་དངོས་པོ་དུ་མར་ཐ་སྙད་གདགས་སུ་རུང་བ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་ན་ཡང་དེ་ལས་བཟློག་པ་ཟླ་མེད་པའི་རྣམ་པར་[4]བཅད་ནས་(219a)ཡོངས་སུ་གཅོད་དོ། །གང་ཞིག་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་གང་རྣམ་པར་བཅད་པ་མེད་ན་མེད་པ་དེ་གཉིས་ནི་ཕན་ཚུན་སྤྲངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །གང་དག་ཕན་ཚུན་སྤྲངས་ཏེ་གནས་པའི་

---

1 བསྐྱེད་ སྣ། པེ།

2 མ་གྲུབ་ སྣ། པེ།

3 ཚོགས་པའི་ སྣ། པེ།

4 ཟླ་མེད་པའི་རྣམ་པ··· སྣ།

མཚན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་[1]ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དག་ཡིན་ནོ།། གང་དག་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་ཕུང་པོ་གཞན་སེལ་བར་བྱེད་པ་དག་[2]ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་ལུས་ཅན་དང་ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་དག་ལྟ་བུའོ། །གཅིག་པ་ཉིད་དང་དུ་མ་དག་ཉིད་[3]ཀྱང་དེ་དང་འདྲ་ལ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ལོག་པས་ཀྱང་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་ལྡོག་པར་ངེས་པས། དེའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལས་ལྡོག་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། ཕུང་པོ་གཞན་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་གང་ལ་ལ་དག་ན་རེ་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་རང་ལ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཅན་གང་ཁོ་ན་ལ་ཁྱབ་པར་བྱ་བའི་[4]དངོས་པོ་གྲུབ་པ་དེ་ཁོ་ན་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ལོག་པས་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་ལ་ལྡོག་པར་[5]མ་གྲུབ་བོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ་ལན་བཏབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།།

འདི་ལྟར་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་དང་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཕྱིར་གཞག་གོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཉེ་ན་གདོན་མི་ཟ་བར་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་བྱེ་བྲག་རྟོགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དེ་ཡང་སྔར་བསྟན་པ་ཉིད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ནས་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་དག་

---

1 དེ་དག་ནི་ཐམས་ཅད་… སྣ།

2 གཞན་སེལ་བ་དག་… སྣ། པེ།

3 དུ་མ་ཉིད་དག་ སྣ།

4 ཁོ་ན་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དང་ཁྱབ་པར་བྱ་བའི་ སྣ། པེ།

5 ལྡོག་པ་ པེ།

གིས་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཙམ་ལ་ཁྱབ་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་དེ་ལས་དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ངེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་ཅན་ཀུན་རྫོབ་པ་ཡང་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། ཁྱད་པར་དུ་ན་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དང་ཁྱབ་པར་བྱ་བའི་དངོས་པོ་འགྲུབ་པ་ནི་ཐ་སྙད་པའི་ཆོས་ཅན་ལ་བརྟེན་པ་ཡིན་ལ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ལྡོག་པ་ནི་དོན་དམ་པ་ལ་བརྟེན་པར་རྟོད་པའི་གཞིར་གྱུར་པའི་ཆོས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྒྲིར་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་འདི་གཉིས་ཆོས་ཅན་གཅིག་ལ་བརྟེན་པ་ཉིད་ལྟ་ག་ལ་ཡིན། ཆོས་ཅན་གཅིག་ལ་བརྟེན་པ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཆུག་ན་ཡང་། འོན་ཀྱང་ལྟོས་པས་ཐ་དད་པའི་ཕྱིར་ཉེས་པ་མེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འདི་ལྟར་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དང་(219b)ཁྱབ་པར་བྱ་བའི་དངོས་པོ་གྲུབ་པ་ནི་ཐ་སྙད་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པ་ཡིན་ལ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ལྡོག་པ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པ་ཉིད་ཡིན་[1]པས་འགལ་རེ་སྐན།

(36-37)གང་ཡང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པ་དག་ཅི་མེད་པར་དགག་པའི་ངོ་བོ་ཞིག་ཡིན་ནམ། འོན་ཏེ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཡིན། ཕྱོགས་དང་པོ་ལྟར་ཡིན་ན་ནི་དེ་གཉིས་གོ་བར་བྱ་བ་དང་གོ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་འཐད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ངོ་བོ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། འཐད་པ་[2]མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཅུང་ཟད་གོ་བར་ཡང་[3]མི་བྱེད་ལ། གོ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། དཔེར་ན་རྟའི་རྭ་ལྟ་བུའོ། །ཇི་སྐད་བཤད་པའི་

1 བསྟན་པ་ཡིན་པས་ སྣ། པེ།
2 ཐ་དད་པ་ སྣ། པེ།
3 གོ་བར་གང་ སྣ། པེ།

བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པ་དག་ཀུང་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ།།

(38-39)གང་དག་ཕན་ཚུན་འབྲེལ་བ་མེད་པ་དེ་དག་ཀུང་གོ་བར་བྱ་བ་དང་གོ་བར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་རི་གངས་ཅན་དང་འབིགས་བྱེད་དག་ལྟ་བུའོ།། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དག་[1]ཀུང་ཕན་ཚུན་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ནོ།།

(40)གང་དང་གང་ཞིག་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ངོ་བོ་དག་ལ་ཡང་གོ་བར་བྱ་བ་དང་གོ་བར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་མེད་དེ། དཔེར་ན་ཤིང་དང་ལྗོན་པ་དག་ལྟ་བུའོ།། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དག་ཀུང་ཐ་དད་པ་མེད་པ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱོགས་ཡིན་ན་ནི། དེའི་ཚེ་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་དོན་བྱེད་པར་རུང་བར་ཁས་བླངས་པར་འགྱུར་བས་མི་འདོད་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པར་རྟོག་པ་འདི་ནི་གཞན་གྱིས་ཀུན་བརྟགས་པ་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་དགག་པ་ལ་ཡང་ཐམས་ཅད་དུ་མཚུངས་པ་ཉིད་དོ། །འདི་ལྟར་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་དེ་ནི་གནོན་མི་ཟ་བར་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་ཆོས་བཀག་པ་ཁོ་ནས་དགག་པར་བྱ་དགོས་ཏེ། ཤིན་ཏུ་ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པ་དེ་མངོན་སུམ་དུ་དགག་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཀླན་ཀ་ཐམས་ཅད་དེར་ཡང་ཅི་སྟེ་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར། གང་ཡང་།[2]

དེ་ནི་གཅིག་ན་ཡུལ་མིན་ལ། །

1 དེ་དག་ སྣ། པེ།
2 ཉི་ཤུ་པ། སེམས་ཙམ། ཤི ༣ བ ༣

ཐ་དད་རྡུལ་དུ་དུ་མཐའ་མིན། །

ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ།[1]

དངོས་རྣམས་གང་དུ་རྣམ་དཔྱད་ན། །

དེ་ཡི་ངོ་བོར་ (220a)ཡང་དག་མེད། །[2]

གང་གི་ཕྱིར་ན་དེ་དག་ལ། །

གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་མེད། །

ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ཕྱིའི་དོན་ལ་སོགས་པ་ཀུན་བརྟགས་པ་འགོག་པ་དེ་ལ་ཡང་ཀླན་ཀ་འདི་ཅི་སྟེ་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར། གལ་ཏེ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལ་གོ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་མེད་ན་དེའི་ཚེ་རྟའི་རྭ་གོ་བར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱང་ཅི་སྟེ་ཉེ་བར་དགོད། ཁྱོད་ཀྱི་ཉེ་བར་བརྗོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཙུང་ཟད་ཀྱང་གོ་བར་མི་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བ་དེ་ཉིད་ལ་ཡང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དགག་པའི་ངོ་བོ་དག་ཇི་ལྟར་གོ་བར་བྱ་བ་དང་། གོ་བར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ཡིན། དེ་ལྟ་བས་ན་སྦྱོར་བ་འདི[3]མཚོན་ཆའི་ཐབས་བསླབ་པ་ཉེས་པར་བྱེད་པ་བཞིན་དུ་རང་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པ་ཉེ་བར་བཀོད་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་པས་སྦྱོར་བ་ལ་ཏེ་པོར་མཁས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་རྟག་ཏུ་

---

1 དབུ་མ་རྒྱན། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། ༥༥ ན ༨ བསྟན་འགྱུར་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། དངོས་པོ་གང་གང་རྣམ་དཔྱད་པ། །དེ་དང་དེ་ལ་གཅིག་ཉིད་མེད། །གང་ལ་གཅིག་ཉིས་ཡོད་མིན་པ། །དེ་ལ་དུ་མ་ཉིད་ཀྱང་མེད།།

2 མེད་ལ་ པེ།

3 འདི་ནི་ སྣ། པེ།

གཏན་ལ་འབེབས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རྟགས་དངོས་པོར་གྱུར་པ་ཁོ་ན་གོ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་ནི་སུ་ཡང་མི་འདོད་དེ། གདོན་མི་ཟ་བར་གང་ཡང་རུང་བ་ལ་རྟགས་གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག[1]གོ་བར་བྱེད་པར་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རྟགས་ངེས་པ་ཁོ་ན་མངོན་སུམ་དུ་གོ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་རྣམ་པ་ལ་ངེས་པ་སྐྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། རྟགས་ནི་ཉེ་བར་འདོགས་པའི་སྒོ་ཁོ་ནས་གོ་བར་བྱེད་པར་གཞག་གོ་ཞེས་བྱ་བར་རིག་སྟེ། དེས་ན་རྟགས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་[2]ཡིན་ཡང་དེའི་རྣམ་པར་ངེས་པ་ནི་འདོད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་རྣམ་པ་གཏན་ལ་འབེབས་པ་སྐྱེ་བའི་རྒྱུ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གོ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བཏགས་པས་ཉེས་པ་མེད་དོ། །ཐམས་ཅད་དུ་རྟགས་དངོས་པོར་གྱུར་བ་ཁོ་ན་དགོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་པ་དགག་པ་ལ་རྟགས་ཉིད་བཏགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲར་བསྟན་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ཡང་གལ་ཏེ་འབྲེལ་བ་དངོས་པོར་གྱུར་བ་ཞིག་གཏན་ཚིགས་ཉིད་དུ་བརྗོད་པར་འདོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་ལ་ཡང་ལ་ལར་དེ་ལྟ་བུའི་འབྲེལ་བ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་ནི་གཞན་དག་གིས་གཉིས་ལ་བརྟེན་པ་ཉིད་དང་། ངོ་བོ་ཉིད་(220b)ཕན་ཚུན་འབྱུར་བའི་རྒྱུ་ཅན་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བཏགས་པའི་ཕྱིར་ལ། གྲུབ་ཟིན་པ་གཉིས་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ཕན་ཚུན་འབྱུར་བར་འཐད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ།། འབྱུར་ན་ནི་གཉི་ག་གཅིག་པུ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། དེ་ནི་འགལ་ལོ། །གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ན

1 བཞིན་ སྡེ།
2 ངོ་བོ་མེད་པ··· སྣ། པེ།

ནི་འདི་གཉིས་ལ་བརྟེན་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་འབྲེལ་[1]བ་ཅན་དག་ལས་དོན་གཞན་ཡིན་ན་ནི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འབྲེལ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན། དོན་གཞན་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་འབྲེལ་བ་ཅན་ཙམ་དུ་ཟད་པའི་ཕྱིར་འབྲེལ་བ་བརྟགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་འགྱུར་གྱི་དངོས་པོ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འབྲེལ་བ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་མཚན་ཉིད་དུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བརྟགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ཅིག་ཅར་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །མི་ཉེ་བ་དག་ལ་ནི་འབྲེལ་བ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གཞན་ཡང་གང་[2]གི་ཚེ་འབྲས་བུ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པ་དེའི་ཚེ་དེ་ལྟོས་པ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་ལ་རག་མ་ལས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་གང་དང་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་དོ། །དེ་ཡོངས་སུ་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ཡང་རང་གི་རྒྱུ་དང་འབྲེལ་བ་ཅན་ཡིན་པའི་དུས་ན་[3]མི་ཉེ་བའི་ཕྱིར་དེ་དང་འབྲེལ་བ་མེད་དོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རྟོག་པ་ཁོ་ནས་དངོས་པོ་རྣམས་སྦྱོར་བར་བྱེད་དེ།

རང་གི་རྒྱུ་ལས་གྲུབ་པའི་ཕྱིར། །
འབྲས་བུ་གར་ལས་མེད་ན་ཡང་། །
གྲུབ་པ་གཞན་རག་མ་ལས་པའང་། །
འབྲས་བུ་རང་གི་རྒྱུ་དག་ལས། །
རྟོག་[4]པ་ཡིས་ནི་འབྲེལ་པར་བྱེད། །

1 དེ་འབྲེལ་བ་ སྣ། པེ།
2 གཞན་གང་གི་ སྣ། པེ།
3 འབྲེལ་མའི་དུས་ན་ སྣ། པེ།
4 རྟོགས་ སྣ། པེ།

འབྲས་མིན་ཇི་ལྟར་ཡང་ཅི་ཞིག །[1]

ཅེས་ཀྱང་བཤད་དོ། །དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་[2]བ་ཡང་ཡང་དག་པ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་གཉིས་ལ་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་ལ། དེའི་བདག་ཉིད་ཡིན་ན་ཡང་གཉིས་ཉིད་མི་རུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གཉིས་ཉིད་མེད་ན་ཡང་འབྲེལ་བ་ཅན་དག་མེད་པའི་ཕྱིར་གང་ཞིག་གང་དང་འབྲེལ་བ་ཡིན། དེ་ལྟ་བས་ན་འབྲེལ་བ་ཐམས་ཅད་རྟོག་པས་[3]བཀོད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་འཇུག་ན་ཡང་ཉམས་པ་མེད་པ་ཉིད་པས་གཏན་ཚིགས་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་དོ། །གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ན་ནི་ཇི་ལྟར་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཞེས་གཏན་ཚིགས་གཞན་སྨོས་པར་བྱེད། ཐ་དད་པ་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་(221a)ཁོ་ན་བསྟན་པ་གྱུར་ཏོ། །གལ་ཏེ་དངོས་པོ་ཁོ་ན་ལ་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་ཡིན་གྱི་གཞན་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་བདག་ཉིད་ནི་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་རྣམ་གྲངས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ལ། དེ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་དག་ཀྱང་བདག་མེད་པ་ཉིད་དུ་མཚུངས་པས་འགལ་བ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་བརྗོད་པར་མི་བྱ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བའི་གཏན་ཚིགས་འདི་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་བརྗོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་མ་ངེས་པ་ཡིན་ཏེ། བྱས་པ་དང་མི་རྟག་པ་ལྟ་བུ་དོན་དམ་པར་ཐ་དད་པ་མེད་པ་ཡིན་ཡང་གོ་བར་བྱ་བ་དང་གོ་བར་བྱེད་

1 མ་རྙེད།

2 དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་ སྣ། པེ།

3 རྟོགས་པས་ སྡེ།

པའི་དངོས་པོ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ།།

འོན་ཏེ་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་འདི་ལ་ཐ་དད་པ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན་ནི་དེ་མ་གྲུབ་སྟེ། ལྡོག་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་ཉེ་བར་བརྟགས་པའི་ཐ་དད་པ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།། འདི་ལྟར་སྒྲ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་ཅན་བྱས་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལོག་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པ་ན། རྟག་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལོག་པར་ངེས་པར་འགྱུར་བས་ཡང་དག་པར་ཐ་དད་པ་མེད་ཀྱང་ལྡོག་པའི་བྱེ་བྲག་ལ་ལྟོས་ནས་བྱས་པ་ཉིད་དང་། མི་རྟག་པ་ཉིད་དག་ཐ་དད་པར་རྣམ་པར་གཞག་པར་ཉེ་བར་བརྟགས་ཏེ་གོ་བར་བྱ་བ་དང་། གོ་བར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་རྣམ་པར་གཞག་གོ །དེ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་རྣམས་ཡང་དག་པར་ན་གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་ལས་ལྡོག་པ་ན་དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་ཀྱང་ལྡོག་པར་ངེས་པས་དེའི་ཕྱིར་ལྡོག་པའི་བྱེ་བྲག་ལ་ལྟོས་པས་བྱས་པའི་ཐ་དད་པ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་གོ་བར་བྱ་བ་དང་། གོ་བར་བྱེད་པའི་དངོས་པོར་འགྱུར་རོ། །ཡང་ཇི་ལྟར་དངོས་པོ་རྟག་པ་དོན་བྱེད་པའི་ནུས་པ་ལས་ལོག་པ་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་ལོག་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་ལྟར་གཞན་ལ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བས་འགལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དོ།།

(41)གང་ཡང་གལ་ཏེ་འདི་གཉིས་ཀྱིས་ཐ་དད་པ་[1]ལྡོག་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་བྱས་པ་ཞིག་ཡིན་ན་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། སློན་པོ་དང་སེར་པོའི་བདག་ཉིད་ལྟ་བུའོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་དེ། བྱས་པ་དང་མི་རྟག་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པས་མ་ངེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །བྱས་པ་ཉིད་དང་མི་རྟག་པ་ཉིད་དག་(221b)གིས་ཐ་དད་པ་

1 ཐ་དད་པའི་ སྣ། པེ།

ལྡོག་པས་བྱས་ཞེས་ཏེ། འདི་ཙམ་གྱིས་དེ་གཉིས་དངོས་པོར་ནི་མི་འགྱུར་རོ། །ཇི་ལྟར་རྟག་པའི་དངོས་པོ་དག་ལ་[1]དོན་བྱེད་པའི་ནུས་པ་དང་བྲལ་བ་དང་། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལྡོག་པས་བྱས་པའི་བྱེ་བྲག་ཡོད་ཀྱང་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་བ་ལྟར་གཞན་ལ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བས་འདི་ནི་གྱི་ནའོ། །གང་ཡང་སྔོན་པོ་དང་སེར་པོའི་བདག་ཉིད་དག་ལྟ་བུའོ་ཞེས་དཔེ་དེ་ཉིད་དུ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་དོན་དམ་པ་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །གང་ཡང་མ་ཡིན་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཉེས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། མ་ཡིན་པའི་ཚུལ་དུ་བརྗོད་ཅེས་ཏེ། འདི་ཙམ་གྱིས་ནི་འགའ་ཡང་གང་དུ་ཡང་དོན་དམ་པ་པའི་[2]དངོས་པོ་ཉིད་དུ་མ་གྲུབ་སྟེ། ནམ་མཁའ་ལ་སོགས་པ་བརྟགས་པ་ལུས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཚིག་ཏུ་བརྗོད་ཀྱང་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ།།[3] དེ་ལ་བློ་ལ་ཡོད་པའི་ཆོས་ཅན་སྔར་བཤད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མ་ཡིན་པའི་ཚུལ་གྱིས་དེ་སྐད་དུ་བརྗོད་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་འདི་ཡང་དག་པ་པའི་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་དང་ལྡན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་ཡོད་པར་སྨྲ་བ་རྣམས་ལ་ཡང་གང་གིས་ན་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་དངོས་པོ་ཡང་དག་པ་དེ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ། དེ་ནི་རྟོག་པའི་ཡུལ་ཡང་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། གཅིག་དང་དུ་མ་དག་གིས་ཀྱང་རང་བཞིན་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པར་སྔར་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་སྒྲུ་མ་

1 དགག་པ་ལ་ སྣ།
2 འགའ་ཡང་དོན་དམ་པ་ པེ།
3 དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། སྣ། པེ།

ལ་སོགས་པ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་ཡང་དངོས་པོ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་ན་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་གནོད་པ་མེད་དེ། ཁྱད་ཉིད་ལ་[1]ཁས་བླངས་པའི་ཕྱོགས་ཉམས་པའི་སྒོ་ནས་གནོད་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དེ། དེའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ།། འགལ་བ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པ་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཟུགས་བརྙན་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་ནི་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དོན་དམ་པ་པར་རུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་ཡང་དག་པར་ན་ཤེས་པ་དང་ཤེས་བྱའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་དག་པར་མ་གྲུབ་བོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ།།

(42)འདི་ལྟར་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་(222a)ཀྱི་གཏན་ཚིགས་བདག་མེད་པར་བསྒྲུབས་[2]པ་ལྟར་ཆོས་ཅན་དངོས་པོ་མེད་པ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བས་ཆོས་ཅན་ལས་བཟློག་པ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གཅིག་ཏུ་ཚད་མས་མངོན་པར་མི་ཤེས་པ་ཉིད་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དེ། གལ་ཏེ་ཆོས་ཅན་དངོས་པོའི་ངོ་བོར་བསྒྲུབ་པར་འདོད་པར་འགྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་དེ་ལས་ལྡོག་པ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འགལ་བར་ཡང་འགྱུར་བ་ཞིག་ན། གང་གི་ཚེ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ལ་སྒྲུབ་[3]པར་བྱེད་པ་དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་རྒོལ་བའི་འདོད་པ་གྲུབ་ཀྱང་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཉིད་དུ་འགྱུར། རང་བཞིན་མེད་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཆོས་ཅན་ཉིད་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། རྗེས་སུ

---

1 གཉིས་ལ་ སྡེ།

2 བསྒྲུབ་ སྣ། པེ།

3 པ་ལ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་··· སྣ། པེ།

མཐུན་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་སྒྲུབ་པས་ཇི་སྐད་བཤད་པ་ལ་ཆོས་ཅན་དངོས་པོར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནར་འདོད་པའི་ཕྱིར་འདི་ལྟར་གཏན་ཚིགས་དེ་ལས་བཟློག་པ་བསྒྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་དེ་ལས་བཟློག[1]པ་སྒྲུབ་པར་འགྱུར་རོ། །འདིའི་ཇི་ལྟར་གཏན་ཚིགས་འདི་བདག་མེད་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ལྟར་ཆོས་ཅན་དངོས་པོ་མེད་པ་ཡང་དེ་དང་འདྲའོ་ཞེས་བརྗོད་པ་འདི་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། བདག་མེད་པ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་བདག་ལ་ནི་གང་གིས་ནི་ཆོས་གཉིས་གྲུབ་པར་བརྗོད་པས་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཉིད་དུ་བརྗོད་པར་འགྱུར་བ་ལྡོག་པས་ཀྱང་ཕན་ཚུན་ཐ་དད་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་གཉིས་ནི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་བདག་མེད་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་མེད་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་སྨྲས་པར་འགྱུར་ཏེ། མངོན་པར་བརྗོད་པ་ལ་མཁས་པ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་སུ་ཞིག་ལ་ཡོད་པར་འགྱུར། དེ་ལྟ་བས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །གཏན་ཚིགས་འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་ཏེ།

དཔེར་ན་མེ་ལོང་ངོས་ལ་ནི། །
གཅིག་དང་གཞན་ཉིད་སྤངས་པའི་གཟུགས། །
སྣང་ཡང་དེ་ན་ཡོད་མིན་ལྟར། །
དངོས་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་བཞིན། །[2]

1 སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་བཟློག··· སྣ། པེ།
2 ལང་གཤེགས། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༣༩ བ ༡ ཤོག ༡༠ ༔ ༢༠༩

ཞེས་བཤད་པ་གང་ཡིན་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་གཏན་ཚིགས་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ལན་བཏབ་(222b) པ་ཡིན་ནོ།།

(43-44)གང་ཡང་གལ་ཏེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ཆོས་གཞན་བཞིན་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ན་དེའི་ཚེ་དེ་ཡང་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ལས་གཞན་པའི་ཆོས་བཞིན་དུ་སྤོང་བར་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་བྱེད་ན་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་མེད། རྣལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་ཡང་མེད། དེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པའང་མེད། སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཡང་མེད། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱང་མེད་དེ། །དེའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཐམས་ཅད་ཞིག་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་ཐལ་བ་འདི་དེ་ལས་བདེན་པར་མངོན་པར་ཞེན་པ་སྤོང་བའི་སྒོ་ནས་སྤོང་བ་[1] ཡིན་པར་བརྗོད་པ་ཡིན་ན་ནི་དགའ་དགུར་བརྗོད་ལ་རག་གོ །དེ་ལྟར་འདོད་པའི་ཕྱིར་ཐལ་བ་ནི་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། དེའི་མཚན་ཉིད་ནི་མི་འདོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། འོན་ཏེ་ཐལ་བ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོངས་སུ་འདོར་བ་ཡིན་པར་བརྗོད་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གཏན་ཚིགས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། །བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལས་བཟློག་པ་གནོད་པ་ཅན་གྱི་ཚད་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བརྟེན་ཞེས་ཏེ་དེ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་སྤང་བར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བ་[2] འདི་ལ་རྒྱུ་ཅི་ཡང་མེད་དེ། སྒྱུ་མ་བརྟེན་པ་ཉིད་ཡིན་ཡང་དགོས་པའི་དབང་གིས་

1 དེ་སྤོང་བར་བྱེད་པ་ སྣ། པེ།

2 ཞེས་པ་ སྣ། པེ།

སྒྱུ་མ་མཁན་རྣམས་བཞིན་དུ་བརྟེན་པའི་ཕྱིར་རོ། །བརྫུན་པ་གང་དག་ནམ་ཡང་རང་དང་གཞན་གྱི་དོན་དུ་ཉེ་བར་སྤྱོར་བར་མི་འགྱུར་བ་དེ་དག་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོངས་སུ་དོར་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྤང་བར་བརྗོད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་རིགས་ཀྱི། གང་དག་མངོན་སུམ་མམ། བརྒྱུད་པས་རང་དང་གཞན་ལ་དགོས་པའི་ཡོན་ཏན་ཅན་དེ་དག་སྙིང་བརྩེ་བ་ཆེན་པོ་ཅན་གཞན་ལ་ཕན་པ་བསྐྱེད་པའི་ཐབས་ཐོབ་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་པར་འགྱུར། དེ་ལྟ་བས་ན་ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་གཟུགས་ཀྱི་སྐུ་སྤྲུལ་པ་ལ་སོགས་པ་གང་ཅུང་ཟད་གཞན་ལ་དགོས་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་དེ་ཐམས་ཅད་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་སྤངས་པའི་སྒོ་ནས་སྤངས་ཀྱང་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་བར་མི་ལྡོག་པ་ཉིད་དོ། དེ་དག་གིས་སྒྱུ་མ་མཁན་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་བརྫུན་པ་ཉིད་དུ་ཐུགས་སུ་ཆུད་ཀྱང་། གཞན་ལ་ཕན་(223a)པའི་ཐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་འདོར་རོ། །འདི་དག་ལ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལ་ཆགས་པ་ཡང་མེད་དེ། ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས།[1]

དཔེར་ན་སྒྱུ་མའི་མཁན་པོ་འགའ། །
སྒྱུ་མ་ཐར་པར་བྱ་ཕྱིར་བརྩོན། །
གང་ཕྱིར་དཔེ་འདི་སྔོན་ཤེས་པས། །

1 སྡེ་དགེ། མདོ་སྡེ། ཤ ༥༣ བ ༥ མདོའི་ནང་ལུང་འདིའི་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། དཔེར་ན་སྒྱུ་མའི་མཁན་པོ་ཞིག །སྤྲུལ་པ་ཐར་པར་བྱ་ཕྱིར་བརྩོན། །དེས་ནི་སྔ་ནས་དེ་ཤེས་པས། །སྤྲུལ་པ་དེ་ལ་ཆགས་པ་མེད། །སྲིད་གསུམ་སྤྲུལ་པ་འདྲ་བར་ནི། །རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་པས་ཤེས། །འགྲོ་བའི་ཆེད་དུ་གོ་བགོས་ཏེ། །འགྲོ་བ་དེ་ལྟར་སྔ་ནས་ཤེས།།

སྒྱུ་མ་ལ་ནི་འདི་མི་ཆགས། །
དེ་བཞིན་སྲིད་གསུམ་སྒྱུ་མ་ལྟར། །
རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་པས་མཁྱེན། །
འགྲོ་བའི་དོན་དུ་གོ་བགོས་ཏེ། །
འགྲོ་བ་སྔ་ནས་མཁྱེན་པ་ཡིན། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །དངོས་པོ་ཉིད་ཁོ་ན་བླང་བའི་རྒྱུ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད་ཡོངས་སུ་དོར་བའི་རྒྱུ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཉན་ཐོས་དངོས་པོའི་འདུ་ཤེས་ཅན་རྣམས་ཀྱང་བདེན་པ་དང་པོ་གཉིས་ནི་རྣམ་པར་སྤོང་ལ། བདེན་པ་གསུམ་པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་ཀྱང་ལེན་ཏོ། རྣལ་འབྱོར་པ་ཐུགས་རྗེས་ནོན་པའི་ཡིད་ཀྱིས་གཞན་གྱི་དོན་གྱི་[1]ཆེད་དུ་གླང་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པ་བརྫུན་པ་སྤྲུལ་པ་ཡང་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་བསྒྲུབ་བོ།། དེ་ལ་སྙིང་བརྩེ་བ་ཆེན་པོས་[2]གཞན་གྱི་དབང་གིས་གཞན་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བ་མ་ལུས་པའི་ཐབས་བྱས་པ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྣང་བ་ཕུལ་དུ་ཕྱིན་པས་ཀུན་ཏུ་རྨོངས་པའི་མུན་པ་མ་ལུས་པར་བསལ་བ། གཞན་ལ་ཕན་པར་བཞེད་པའི་བློ་གྲོས་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་མ་ལུས་པར་སྤྱངས་ཀྱང་[3]སྔོན་གྱི་སྨོན་ལམ་གྱི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་དང་། ལས་དང་། ཉོན་མོངས་པ་དང་། ནམ་མཁའི་མཐར་ཐུག་པ་ཇི་ཙམ་པར་གནས་པར་འདོད་པ་ཁོ་ནའོ། །འདི་ལྟར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན

1 དོན་མི་ སྡེ།

2 ཆེན་པོའི་ སྣ། པེ།

3 སྤྱར་སྤྱངས་ཀྱང་ སྣ།

ཡིན་ཡང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་རང་གི་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ཚོགས་པའི་གཞན་གྱི་དབང་ཁོ་ན་ལས་འབྱུང་ངོ། །རྒྱུ་དང་ལྡན་པ་ཞེས་དེ་[1]དག་དངོས་པོ་ཡོད་པར་འགྱུར་བ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་འཁྲུལ་པའི་ཕྱིར་རོ། །བརྫུན་པ་ཡང་གང་ཞིག་ལ་རང་དང་འཚམ་པའི་རྒྱུ་རྒྱུད་པ་མེད་པ་དེ་ནི་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་འབྱུང་བ་མེད་དོ་ཞེས་སྟོན་པར་བཤད་ཟིན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་རང་གི་རྒྱུ་ཚོགས་པའི་གཞན་གྱི་དབང་གིས་འབྱུང་བ་དེ་བཞིན་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལ་སོགས་པའི་སྒྱུ་མ་མ་བརྟགས་ན་དགའ་བ་དག་(223b)ཀྱང་འབྱུང་བ་ཁོ་ནའོ། །དེ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་སོགས་པའི་སྒྱུ་མའི་རྒྱུ་ནི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཇི་ལྟ་བའི་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱིས་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་རྒྱུ་ནི་མདོར་ན་ཐུགས་བརྩེ་བ་དང་། ཤེས་རབ་དག་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་ཐུགས་བརྩེ་བས་ནི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་དེ་གཅིག་པུ་[2]ཞི་བར་ཐུགས་སུ་ཆུད་ཀྱང་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་མངོན་སུམ་དུ་མི་མཛད་དོ། །ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་མ་ལུས་པའི་རྒྱུ་ཀུན་ཏུ་སྨོངས་པའི་གོ་སྐབས་ཐག་བསྲིངས་པའི་ཕྱིར་འཁོར་བར་གཏོགས་པའི་ཉེས་པའི་དྲི་མས་མ་སྦགས་པའི་སྦློ་ནས་འཁོར་བར་མི་ལྷུང་བས་འདི་དག་གཉི་ག་[3]ལ་མི་གནས་པར་གྲུབ་པ་ཁོ་ནའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཟུང་དུ་འབྲེལ་བར་རྒྱུ་བ་ནི་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་

1 ཞེས་ཏེ་དེ་¨ སྣ། པེ།
2 གཅིག་པ་ སྡེ།
3 འདི་གཉི་ག་ སྣ། པེ།

ལས་འདས་པའི་རྒྱུ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ལམ་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་དང་བྲལ་བ་རྣམས་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་སར་ལྷུང་བའི་ཕྱིར་རོ། ཇི་སྐད་དུ་"ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ལམ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་མཚན་མ་མེད་པ་ཡོད་དེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དང་བྲལ་བ་ཐབས་ལ་མཁས་པས་ཡོངས་སུ་མ་ཟིན་པ་དེ་དག་ནི་ཡང་དག་པའི་མཐའ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ན་ཉན་ཐོས་སམ། རང་སངས་རྒྱས་སུ་འགྱུར་རོ་"[1]ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །སྣང་བ་དང་བཅས་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་སོགས་པས་ནི་འཇིག་རྟེན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་གཟིགས་ཏེ། དེ་ཡང་འདི་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་མཐུ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོའི་རིགས་ཇི་ལྟར་སྣང་བ་མ་ལུས་པ་ལག་མཐིལ་དུ་སྐྱུ་རུ་རའི་འབྲུ་བཞག་པ་བཞིན་དུ་དོན་དམ་པ་དང་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའི་རྣམ་པར་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མངོན་སུམ་ཁོ་ནར་ཐུགས་སུ་ཆུད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་སུ་རྣམ་པར་གཞག་གོ །རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་[2]འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་དམ་པ་སྤྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། ཆོས་མ་ལུས་པ་སྣང་བ་མེད་པ། ཡང་དག་པའི་དོན་བསྒོམ་པ་རབ་ཀྱི་མཐའ་ལས་སྐྱེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེས་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཐུགས་སུ་ཆུད་པར་འགྱུར་བར་སྤྲུལ་པ་བཞིན་དུ་ཐ་(224a)སྙད་དུ་ཐམས་ཅད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོའི་རིགས་ཇི་ལྟར་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་གཞག་པ་[3]

---

1 མ་རྟེད།

2 རྣམས་ཀྱི སྣ། པེ།

3 རྣམ་པར་ཤེས་པ་བཞག་པ སྣ།

ཞིག་པ་མེད་དེ་དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལས།[1] "བཅོམ་ལྡན་འདས་གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་ལགས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དང་སྒྱུ་མ་ཡང་ཁྱད་པར་ཅི་མཆིས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། ཁྱད་པར་ཅི་ཡང་མེད་དེ། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཕྱིན་ལས་མཛད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་སྒྱུ་མ་ཡང་བྱེད་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ཀྱང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བྱེད་དོ། སྒྱུ་མ་ལ་ནི་འབྱུང་བའམ། ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་འགའ་ཡང་མེད་དོ། །དེ་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་མོས་པར་བྱས་ཏེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སྤྱོད་པར་བྱའོ"ཞེས་བཤད་དོ།།

(45)གང་ཡང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡུལ་དང་དུས་དང་གནས་སྐབས་ཐ་དད་པའི་བློ་ནས་མངོན་སུམ་དུ་བསལ་རབ་ཏུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པར་ངེས་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་རེ་ཞིག་དང་པོར་དམ་བཅས་པ་ལ་མངོན་སུམ་གྱི་གནོད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་[2]པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡུལ་དང་དུས་ལ་སོགས་པ་ཐ་དད་པའི་བློ་ནས་སྣང་བ་ཙམ་ཁོ་ནས་ནི་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་ན་ཡང་དེ་ལྟར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོ་རྣམས་ནི་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་སྒྲུབ་པར་འདོད་ལ། དོན་དམ་པ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་མངོན་སུམ་དུ་མ་གྲུབ་པོ་ཞེས་ཕྱིར་བསྟན་ཟིན་ཏོ།།

---

1 མ་ཏེད།

2 སྨྲས་ སྨྲ།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་ནོར་བའི་མངོན་སུམ་ལ་སྣང་བའི་ཕྱིར་ཞེས་ཏེ།[1] མངོན་སུམ་གྱིས་གནོད་པར་འདོད་ན་ནི་དེ་གནོད་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། འདི་རབ་རིབ་ཅན་ལ་སོགས་པའི་མངོན་སུམ་གྱིས་མིག་ལམ་དུ་[2]གནས་པས་དམིགས་པ་ཟླ་བ་གཉིས་ལ་སོགས་པ་ལ་གནོད་པར་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འོན་ཏེ་མ་འཁྲུལ་པའི་མངོན་སུམ་ལ་སྣང་བའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བར་འདོད་ན་དེ་ནི་མ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཚུ་རོལ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱི་མངོན་སུམ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལས་འཁྲུལ་པ་མེད་དོ་ཞེས་སྨྲར་བསྟན་ཟིན་ཏོ།། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་།[3]

མིག་དང་རྣ་བ་སྣ་ཡང་ (224b)ཚད་མ་མིན། །
ལྕེ་དང་ལུས་དང་སེམས་ཀྱང་ཚད་མ་མིན། །
གལ་ཏེ་དབང་པོ་འདི་དག་ཚད་ཡིན་ན། །
འཕགས་པའི་ལམ་གྱིས་སུ་ལ་ཅི་ཞིག་བྱ། །
འདི་ལྟར་དབང་པོ་འདི་དག་ཚད་མིན་ཏེ། །
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་བེམས་པོ་ལུང་མ་བསྟན། །
དེ་ཕྱིར་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ལམ་འདོད་གང་།།
དེས་ནི་འཕགས་པའི་ལམ་གྱིས་བྱ་བ་བྱེས། །

ཞེས་བཤད་དོ། །དེ་ལྟ་བས་ན། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མངོན་སུམ་ཉིད་འབའ་ཞིག་དོན་

1 སྣང་བའི་ཞེས་ཏེ་ སྣ། པེ།
2 མིག་རྣལ་དུ་… སྣ། པེ།
3 ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ། སྡེ་དཀའ་ མདོ་སྡེ། ད། ༣༦ བ ༥

དམ་པ་ལ་མ་འབྲེལ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་དག་གིས་ནི་ཡང་དག་པའི་དངོས་པོ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་དམིགས་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ"རབ་འབྱོར་འདི་ལྟར་སྐྱེས་བུ་སྐྱོངས་པ་ལོང་བ་མིག་མེད་པ་དེ་དག་ནི། གཟུགས་དང་། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནས། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བར་གང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྤྱན་ལྟས་མ་དམིགས་པ་དེ་ལ་ཡོད་པར་འདོད་དོ"[1]ཞེས་བྱ་བ་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །གང་ཡང་དམ་བཅས་པ་ལ་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གནོད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལས་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་ནི་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་གྲུབ་སྟེ། ཚད་མས་གནོད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྤྱར་བསྟན་ཟིན་ཏོ།།

(46)འཇིག་རྟེན་ན་དུ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ལས། མེ་ལ་སོགས་པར་ངེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་པ་པའི་ཡུལ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། རྨི་ལམ་ན་ཡང་ངེས་པ་དེ་ལྟ་བུ་སྲིད་པའི་[2]ཕྱིར་ཏེ། ཡང་དག་པ་པའི་མེ་དང་དུ་བ་ལ་སོགས་པ་སྔར་བཀག་པས་གང་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། དངོས་པོ་ཀུན་རྫོབ་པ་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་པ་ཡང་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རེས་འགའ་བ་ཉིད་མི་འགལ་[3]བ་ཁོ་ན་སྟེ། གང་དག་དངོས་པོ་རྣམས་རྒྱུ་མེད་པ་ཁོ་ནར་སྐྱེ་བར་ཁས་ལེན་པ་དེ་དག་ལ་རེས་འགའ་བ་ཉིད་འགལ་གྱི། སྐྱེ་བ་རྒྱུ་དང་བཅས་པར་སྨྲ་བ་རྣམས་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

1 མ་ཧྲེད།

2 རྨི་ལམ་ན་ཡང་དེ་སྲིད་པའི་·· སྣ། པེ།

3 རེ་འགའ་བ་འགལ་བ་ སྣ། པེ།

དོན་དམ་པར་ནི་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རེས་འགའ་བ་ཉིད་མ་གྲུབ་པ་ཁོ་ནའོ།།

(47-51)གང་ཡང་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་གྲོང་ཁྱེར་གང་དག་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་མི་འགལ་བ་ཁོ་ན་སྟེ། ཐ་སྙད་དུ་ཐམས་ཅད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོ་རྣམས་རྫུས་སྤྲུལ་གྱི་སྒྱུ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་གཏན་མེད་པའི་ངོ་བོར་དམ་བཅའ་བ་ནི་(225a)མ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། སྒྱུ་མ་དང་རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལྟ་བུ་སྟེ། དེ་བཞིན་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་།[1] "བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའོ་ཞེས་དམ་བཅའ་བར་མི་བྱའོ། འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྣང་བ་དང་མི་སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་དང་རྨི་ལམ་ལྟ་བུར་བསྟན་པར་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ལ་མདོའི་དོན་ནི་འདི་སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་ནི་ཐ་སྙད་དུའོ། །མི་སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་ནི་དོན་དམ་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བར་མངོན་ནོ། །དེ་ཡང་།

ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ནི་ཐམས་ཅད་ཡོད། །
དམ་པའི་དོན་དུ་ཡོད་མ་ཡིན། །
ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ། །
དམ་པའི་དོན་དུ་ཉེ་བར་བསྟན། །[2]

ཅེས་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐ་སྙད་ལ་བརྟེན་ཏེ་བཤད་པས་འགལ་བ་མེད་དོ། །དེ་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལས་ཀྱང་།[3] ཡང་

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༣༥༣ ན ༥
2 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ ༡༦༣ བ ༣ ལེའུ། ༡༠ ༔ ༡༣༠

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་བརྟགས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱའི། དོན་དམ་པར་ནི་གང་བྱང་ཆུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྤྱོད་པར་འགྱུར་བ་གཟུགས་སམ། ཚོར་བའམ། འདུ་ཤེས་སམ། འདུ་བྱེད་དམ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ལ། དེ་བཞིན་དུ་ཁམས་བཅོ་བརྒྱད་དང་། རིག་པ་དྲུག་དང་། ཚོར་བ་དྲུག་དང་། ཁམས་དྲུག་དང་། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཡན་ལག་བཅུ་གཉིས་དང་། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དང་། སྟོང་པ་ཉིད་དང་། དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་རྣམས་དང་། ཡང་དག་པར་སྤོང་བ་རྣམས་དང་།[1] རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་རྣམས་དང་། དབང་པོ་རྣམས་དང་། སྟོབས་རྣམས་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་རྣམས་དང་། འཕགས་པའི་ལམ་ཡན་ལག་བརྒྱད་པ་དང་། བདེན་པ་རྣམས་དང་། བསམ་གཏན་རྣམས་དང་། ཚད་མེད་པ་རྣམས་དང་། གཟུགས་མེད་པ་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་རྣམས་དང་། མཐར་གྱིས་གནས་པའི་སྙོམས་པར་འཇུག་པ་རྣམས་དང་། མངོན་པར་ཤེས་པ་རྣམས་དང་། ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་། གཟུངས་ཀྱི་སྒོ་རྣམས་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྟོབས་རྣམས་དང་། སོ་སོ་ཡང་(225b)དག་པར་རིག་པ་རྣམས་དང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་མ་འདྲེས་པ་རྣམས་དང་། འབྲས་བུ་བཞི་དང་། ལམ་གྱི་རྣམ་པ་ཤེས་པ་ཉིད་དང་། བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱང་མེད་དེ། ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཐ་སྙད་ལ་བརྟེན་ནས་བརྟགས་

3 མ་རྟེད།

1 མཐོང་བ་རྣམས་དང་། སྣ།

ཀྱི། དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། "།གང་གཟུགས་ནས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བར་གང་ཡིན་པའི་ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ཡང་མ་ཡིན། བྲལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། གཟུགས་མེད་པ། བསྟན་དུ་མེད་པ། ཐོགས་པ་མེད་པ། མཚན་ཉིད་མེད་པ་སྟེ། དེ་དག་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་གཟུད་པའི་དོན་དུ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཐ་སྙད་དུ་བརྗོད་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ཀྱི། དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །ཡང་"འཇིག་རྟེན་གྱི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཐོབ་པ་དང་། མངོན་པར་རྟོགས་པ་དང་འགྲོ་བ་ལྔའི་བྱེ་བྲག་ཀྱང་སྟོན་གྱི་དོན་དམ་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དོན་དམ་པར་ནི་ལས་ཀྱང་མེད། ལས་ཀྱི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡང་མེད་དོ། །ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཡང་མེད་། རྣམ་པར་བྱང་བ་ཡང་མེད། སྐྱེ་བ་ཡང་མེད། འགག་པ་ཡང་མེད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས། དོན་དམ་པར་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་ལ་སོགས་པ་འདི་ཐམས་ཅད་བཀག་པའི་ཕྱིར་ལ། ཐ་སྙད་དུ་ནི་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པས་དེ་བཞིན་དུ་མ་བཀག་པའ་ཕྱིར་ཁས་བླངས་པ་ལ་གནོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་གཞན་དུ་ཇི་ལྟར་མི་ལམ་ན་སྤྲུལ་མཐོང་ནས་བརྒྱལ་བ་དང་། དེ་དང་བྲལ་བཞིན་དུ་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་དག་བརྗོད་པ་ཁོ་ནར་བརྗོད་དོ།།

(52)བདེན་པ་བཞི་ལ་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་ཉེས་པ་ཡང་མེད་དེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལས་གཞན་དུ་རྣམ་པར་བཤད་པའི་ཕྱིར་ཏེ། འཕགས་པ་ཚངས་པས་ཞུས་པ་ལས།[1] ཇི་སྐད་དུ་"སྡུག་བསྔལ་བ་དང་། ཀུན་འབྱུང་བ་དང་།[2]

1 ཚངས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་གྱིས་ཞུས་པའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། བ། ༣༨ བ ༣

འགོག་པ་དང་། ལམ་ནི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཚངས་པ་འོན་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་སྐྱེ་བ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་འཕར་པ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་པ་ཡིན་ནོ།། ཀུན་འབྱུང་ཀུན་ཏུ་འབྱུང་བ་མེད་པ་[1]གང་ཡིན་པ་(226a)འདི་ནི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་པ་ཡིན་ནོ། །ཤིན་ཏུ་འགགས་པ་དག་ལ་སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་འགགས་པ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་[2]འདི་ནི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་པ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་གཉིས་སུ་མེད་པར་མཉམ་ཞིང་ལམ་བསྒོམས་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་བདེན་པ་ཡིན་ནོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པར་སྡུག་བསྔལ་ལ་སོགས་པའི་བདེན་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་གྱི། ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་འཁོར་བ་ལས་[3]ཡིད་འབྱུང་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཙམ་ལ་གཟུད་པའི་ཕྱིར་ལ། དེ་མི་རྟག་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་བསྟན་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ཀྱི། བདག་མེད་པ་གཉི་ག་བསྟན་པའི་དབང་དུ་མཛད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ།།

(53)གང་ཡང་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་དང་། སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་གནག་རྫིའི་ཚུང་མ་ཡན་ཆད་ཀྱི་སྐྱེ་བོ་ལ་གྲགས་པས་དེའི་ཕྱིར་གྲགས་པས་གནོད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་སྐྱེ་བོ་ཕལ་པ་ལ་མ་གྲགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་གྲགས་ན་ནི་དེ་དག་སྐྱེ་བོ་ཕལ་

---

2 སྡུག་བསྔལ་ཀུན་འབྱུང་བ་དང་། སྣ། པེ།

1 ཀུན་འབྱུང་བ་ཀུན་ནས་མེད་པ་ སྣ། པེ།

2 སྐྱེ་བ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་'''' སྣ། པེ།

3 འཁོར་བ་ལ་ སྣ། པེ།

པ་ཉིད་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །མི་ལམ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་བརྫུན་པའི་ངོ་བོ་ཡང་གྲུབ་པར་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གྲུབ་པ་ནི་མངོན་སུམ་དང་རྗེས་སུ་དཔག་པ་དག་ལས་ཚད་མ་གཞན་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཁོངས་སུ་འདུས་ན་ནི་དེ་དང་འགལ་བ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པས་དེས་གནོད་པ་ཡང་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་ཡིན་ནོ།།

(54)གང་ཡང་གཞན་དག་ངེས་པ་སྐྱེད་པར་འདོད་ནས་གཏན་ཚིགས་སྦྱོར་བར་འདོད་པས་[1]དེ་ལས་ངེས་པ་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པའི་ཕྱིར་རང་གི་ཚིག་དང་འགལ་བ་ཡང་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་མི་འགལ་བ་ཉིད་དེ། ངེས་པ་བསྐྱེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་སྦྱོར་བ་ཡང་དེ་ལས་ངེས་པ་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བར་ཁས་བླངས་པར་ནི་མི་འགྱུར་རོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། སྐྱེས་པ་ཙམ་ཡིན་གྱི། སྐྱེ་བའི་ཁྱད་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། འདིར་ནི་དོན་དམ་པའི་སྐྱེ་བ་བཀག་པས་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒྲུབ་པར་འདོད་ཀྱི། སྐྱེ་བ་ཙམ་བཀག་པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་ལས་ངེས་པ་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་ཀྱང་གཟུགས་ལས་གཟུགས་བརྙན་བཞིན་དུ་ཀུན་རྫོབ་པའི་སྐྱེ་བ་མི་འགལ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་དམ་བཅས་ (226b)པ་རང་གི་ཚིག་དང་འགལ་བ་མ་ཡིན་ནོ།།

(55)གང་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས། མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྡན་པས་སྔོན་པོ་ཤེས་ཀྱི། སྔོན་པོའོ་སྙམ་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསུངས་པ་པ་གང་ཡིན་པ་དེར་ཡང་དབང་པོའི་ཡུལ་ཐ་སྙད་པ་ལས་དགོངས་ནས་[2]འདི་གསུངས་ཏེ། གཞན་ལས།

---

1 སྦྱོར་འདོད་པས་ པ།

2 དགོངས་པས་ སྣ། པ།

མིག་དང་རྣ་བ་སྣ་ཡང་ཚད་མ་མིན།།

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་དབང་པོ་དྲུག་ཚད་མ་ཡིན་པར་བཀག་པའི་ཕྱིར་ཏེ། སྤྱིར་བསྟན་ཟིན་ནོ།།

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཀྱང་། གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་བཀག་པའི་ཕྱིར་རོ། །འཇིག་རྟེན་གྱི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཐམས་ཅད་བསྟན་ཏོ་ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་དགོངས་པ་རབ་ཏུ་བསྟན་པའི་ཡང་ཕྱིར་རོ། །དམིགས་པ་ཅན་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡོངས་སུ་དག་པ་དེ་ཞེས་ཀྱང་གསུངས་ལ། དམིགས་པ་དང་མི་དམིགས་པ་དག་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་བླང་བར་བྱ་བ་དང་། དོར་[1]བར་བྱ་བ་ཡང་ཉེ་བར་བསྟན་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལས་[2]ཇི་སྐད་དུ། "བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ཙམ་གྱི་ན་དམིགས་པ་ལགས། ཇི་ཙམ་གྱིས་ན་མི་དམིགས་པ་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། ཇི་ཙམ་དུ་གཉིས་ཡིན་པ་དེ་ཙམ་དུ་དམིཊ་པ་ཡིན་ནོ། །གཉིས་མེད་པ་ནི་མི་དམིགས་པ་ཡིན་ནོ། །གསོལ་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ཙམ་གྱིས་ན་གཉིས་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། རབ་འབྱོར་ཇི་ཙམ་དུ་མིག་དང་གཟུགས་དང་། ཇི་ཙམ་དུ་རྣ་བ་དང་སྒྲ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་སངས་རྒྱས་[3]ཀྱི་བར་ཇི་ཙམ་དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དང་། སངས་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་གཉིས་ཡིན་ནོ"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

---

1 དོན་ པེ།

2 མ་རྟེད།

3 ནས་རྒྱས་ཀྱི་ སྣ། པེ།

ཡང་"གཉིས་སུ་འདུ་ཤེས་པ་ལ་ནི་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་བཟོད་པ་ཡང་མེད་ན་"ཞེས་གསུངས་སོ། འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས་ཀྱང་·[1]"ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་དམིགས་པ་མེད་པ་སྟེ། དེ་ལ་ནི་ལྟ་བ་མི་འབྱུང་ངོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།། དེ་ལྟ་བས་ན་ཐ་སྙད་པའི་མིག་ལ་སོགས་པ་ལས་དགོངས་ཏེ། བདག་ཉིད་·[2]ལྟ་བ་པོ་ནས་ཞེས་པ་པོའི་བར་ཡིན་ནོ་ཞེས་གྲགས་པ་ལ་སོགས་པར་ལྟ་བ་·[3]དགག་པའི་ཕྱིར་གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པ་ཙམ་ལ་གཟུད་པའི་དགོངས་པས་མིག་ལ་སོགས་པ་བསྟན་ཏོ། །གང་གིས་ན་འདི་དག་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་མི་སྣང་བར་འགྱུར་བ་ནམ་མཁའི་ཨུཏྤལ་ལ་ཡོད་པའི་སྔོན་པོ་ལ་(227a)སོགས་པ་བཞིན་དུ་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་སྣང་བ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཡང་གཏན་མེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

(56)གང་ཡང་"གང་ཅུང་ཟད་ཀུན་འབྱུང་བའི་ཆོས་ཅན་དེ་ཐམས་ཅད་ནི་འགོག་པའི་ཆོས་ཅན་ནོ་"[4]ཞེས་བྱ་བའི་རྗེས་སུ་དཔག་པ་འདིས་དངོས་པོ་རྣམས་ཡང་དག་པར་ནི་སྐད་ཅིག་མར་གནས་པའི་·[5]ཆོས་ཅན་དུ་གྲུབ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ཉེ་བར་སྟོན་ཏོ།།[6] ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པའི་ཆོས་ཅན་ཉིད་རྟོགས་པའི་སྒོ་ནས་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༥༧ བ ༧

2 བདག་ནི་ སྣ། པེ།

3 ལྟ་བར་ སྣ། པེ།

4 གསེར་མདོག་སྔོན་གྱི་སྒྲོར་བ་ཞེས་བྱ་བའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཨ། ༥༣ ན ཡེ་ཤེས་རྒྱས་པའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཀ ༣༦༠ བ

5 ཡང་དག་པར་གནས་པའི་··· སྣ། པེ།

6 ཞེས་བྱ་བར་སྟོན་ཏོ། སྣ། པེ།

བདག་མེད་པ་ལ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པ་ལ་གཞུག་པའི་དགོངས་པས་གསུངས་ཀྱི། དེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཟབ་མོའི་གཏམ་ལ་བརྟེན་ནས་གསུངས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་དག་ལ་འདུ་བྱེད་རྣམས་ཡང་དག་པར་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པའི་ངོ་བོར་ཡང་དག་པར་རྗེས་སུ་ལྟ་བ་དང་ཉེ་བར་སྟོན་པ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར་ཉེ་བར་བཅོས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསུངས་ལ། འདུས་བྱས་དང་འདུས་མ་བྱས་ལ་སོགས་པའི་མཐའ་གཉིས་དང་བྲལ་བ་ནི་དེ་དག་གི་བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་ལམ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཉེ་བར་བསྟན་ཏོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས་ནི་སྐྲག་པའི་གནས་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་ཕྱིར་ཐ་སྙད་ཀྱི་དབང་གིས་སྐྱེ་བ་འགག་པའི་ཆོས་རྣམས་བཤད་དོ་ཞེས་གསུངས་སོ།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་།[1]

སྐྱེ་བ་དང་ནི་འཇིག་པའི་ལམ། །
དགོས་པའི་དོན་དུ་ཉེ་བར་བསྟན། །

ཞེས་བཤད་དོ། །འདི་ནི་སྔར་བསྟན་ཟིན་པ་ཉིད་དོ། །ཡང་།

ཇི་ལྟར་སྒྱུ་མ་སྨི་ལམ་བཞིན། །
དྲི་ཟའི་གྲོང་འཁྱེར་ཇི་ལྟ་བར། །
དེ་བཞིན་སྐྱེ་དང་དེ་བཞིན་གནས། །

1 རིགས་པ་དྲུག་ཅུ་པ། སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཙ། ༢༡ ན ༥

དེ་བཞིན་དུ་ནི་འཇིག་པར་བཤད། །[1]

ཅེས་བཤད་དོ། །འཕགས་པ་ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་རྒྱ་མཚོས་ཞུས་པ་ལས་ཀྱང་།[2]

སྟོན་ཀྱི་མཐའ་སྟོང་ཕྱི་མའི་མཐའ་ཡང་སྟོང་། །

སྐྱེ་དང་གནས་དང་འཇིག་པའི་དངོས་པོར་སྟོང་། །

འདི་ནི་དངོས་པོ་ཡོད་མིན་མེད་པའང་མིན། །

ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །འདུ་བྱེད་རྣམས་ཀྱི་སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ལས་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་ནོ། ཞེས་བསྟན་ཏེ། འཕགས་པ་ལག་བཟངས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ལས།[3] ཇི་སྐད་དུ། "དེ་འདས་པ་དང་། མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་བྱུང་བ་དུས་གསུམ་ཡང་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ། དེ་ལ་འདུ་(227b)བྱེད་འདས་པ་གང་དག་འགགས་པ་འདི་ནི་འདས་པའི་དུས་ཞེས་བྱའོ། །མ་འོངས་པ་གང་དག་མ་བྱུང་བ་དེ་ནི་མ་འོངས་པའི་དུས་ཞེས་བྱའོ།[4] །ད་ལྟར་གྱི་གང་དག་སོ་སོར་བྱུང་བ་[5]འདི་ནི་ད་ལྟར་གྱི་དུས་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལ་ད་ལྟར་བྱུང་བའི་ཕུང་པོ་དང་། ཁམས་དང་། སྐྱེ་མཆེད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མི་གནས་ཤིང་གནས་པ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འཇིག་རྟེན་ནི་སྐད་ཅིག་ལས་

---

1 སྡེ་བསྟན། ཚ་ཤེས། དབུ་མ། ཙ། ༥ བ ༧

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཕ། ༡༩༣ ན ༣

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། དཀོན་རྩེགས། ཙ། ༡༧༥ བ ༧

4 འདུ་ཤེས་སོ། སྣ།

5 བྱུང་བ་མེད་པ་ སྣ། པེ།

ཕན་ཆད་[1]དུ་མི་གནས་སོ། །སྐད་ཅིག་མ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྐྱེ་བའི་[2]དུས་ཀྱང་གཞན། གནས་པའི་དུས་ཀྱང་གཞན། འགག་པའི་དུས་ཀྱང་གཞན་ཏེ། སྐད་ཅིག་མ་དེ་ནི་མི་གནས་ཤིང་གནས་པ་མེད་དོ་"ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །འདིས་ནི་སྐད་ཅིག་མ་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་ཉེ་བར་བསྟན་ཏེ། ཐོག་མ་དང་། བར་དང་། ཐ་མ་ཐ་དད་པའི་བདག་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རོ། །སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་འདི་དག་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་ཁོ་ནར་བཤད་དེ།

ཇི་ལྟར་སྐད་ཅིག་མཐའ་ཡོད་ལྟར། །
ཐོག་མ་དབུས་ཀྱང་བརྟག་པར་གྱིས། །
སྐད་ཅིག་གསུམ་གྱིས་བདག་ཉིད་ཕྱིར། །
འཇིག་རྟེན་སྐད་ཅིག་ལ་མི་གནས། །[3]

ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།།

(57)གང་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས།

དུ་བ་ལས་ནི་མེར་ཤེས་ཏེ། །[4]

---

1 ཕན་ཚུན་ སྡེ།

2 སྐྱེ་བར་ པེ།

3 དབུ་མ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ། སྡེ་བསྟན། སྤྲིང་ཡིག གེ ༡༠༨ ན ༡ རིན་ཕྲེང་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་གསལ། ཇི་ལྟར་སྐད་ཅིག་མཐའ་ཡོད་པ། །དེ་བཞིན་ཐོག་མ་དབུས་བརྟག་གོ། དེ་ལྟར་སྐད་ཅིག་གསུམ་བདག་ཕྱིར། །འཇིག་རྟེན་སྐད་ཅིག་གནས་པ་མིན།།

4 ཆོས་བཅུ་པའི་མདོ། དཀོན་བརྩེགས། ཁ ༡༧༡ ན དུ་བ་ལས་ནི་མེར་ཤེས་ཤིང་།། ཆུ་སྐྱར་ལས་ནི་ཆུར་ཤེས་ལྟར། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བློ་ལྡན་ནི། །རིགས་ནི་མཚན་མ་དག་ལས་ཤེས།།

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་མདོ་གཞན་ལས། མེ་དང་དུ་བ་ལ་སོགས་འབྱུང་བ་ལ་སོགས་པ་ཚོགས་པ་ཡང་དག་པ་པ་སྤྱིར་བཀག་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པ་པའི་དོན་གྱི་དབང་དུ་མཛད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྟར་བསྟན་པ་ཉིད་དེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཇི་སྐད་དུ།[1]

གང་ཕྱིར་འདུས་ལས་མ་གཏོགས་པའི།།
དངོས་པོ་བློ་ཡིས་མི་ཟིན་པ། །
དེ་ཡི་ཕྱིར་ན་མ་སྐྱེས་ཤིང་། །
ངོ་བོ་མེད་པར་ང་སྨྲའོ། །
དངོས་པོ་གཅིག་དང་གཞན་ཉིད་དུ། །
ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར། །
འདུས་ལས་གཞན་མིན་མ་ཡིན་ཏེ། །
གཞན་ཡང་གནས་པ་ཡོད་མ་ཡིན། །

ཞེས་བཤད་པ་ལྟ་བུའོ། །འཕགས་པ་སྤྱུག་པོ་བཀོད་པ་ལས་ཀྱང་།[2]

ཕུང་པོ་མེད་ཅིང་ཁམས་[3]ཀྱང་མེད། །

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༡༣༥ བ ༣ མདོའི་ནང་བསྒྱུར་འདི་ལྟར་གསལ། འདུས་པ་དག་ནི་མ་གཏོགས་པར། །བློ་ཡིས་དངོས་པོ་མི་རིག་གོ། དེ་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་སྟོང་པ་སྟེ། །རང་བཞིན་མེད་པ་ངས་བཤད་དོ།།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཚ། ༨༧ བ ༡ ཕུང་པོ་རྣམས་མེད་ཁམས་ཡོད་མིན། །ཐམས་ཅད་ཆོས་ལ་མཚན་ཉིད་མེད། །རྟུལ་ཕྲན་རྣམ་པར་གཞིགས་པ་དང་། །དེ་དག་དེ་ལྟར་མི་གནས་སོ།།

ཆོས་ཀུན་མཚན་ཉིད་མེད་པ་སྟེ། །
ཐ་རབ་རྡུལ་དུ་རྣམ་གཞིགས་ན། །
དེ་དག་དེ་བཞིན་གནས་པ་མེད། །
ས་དང་རྒྱ་ལ་སོགས་པའི་དངོས། །
རྟོགས་པ་[1]ཅན་གྱི་སྐྱེ་བོས་བརྟགས། །

ཞེས་གསུངས་སོ།། ཡང་།

ཐ་རབ་རྡུལ་དུ་རྣམ་ཕྱེ་ན། །
དངོས་པོ་ཐ་རབ་ཀྱང་མི་གནས། །

ཞེས་(228a)གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ས་ལ་སོགས་པ་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར། དེ་འདུས་པའི་ངོ་བོ་མེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་མེ་དང་དུ་བ་ལ་སོགས་པ་བརྟགས་པ་ཅན་དང་། བརྟགས་པའི་ངོ་བོར་བསྟན་པ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི། ཡང་དག་པ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

(58)ཆོས་མངོན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས། རྒྱུའི་རྐྱེན་ལ་སོགས་པ་བཤད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀུན་རྫོབ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི། ཡང་དག་པ་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དོན་དམ་པར་འགའ་ཡང་སྐྱེ་བ་མེད་ན་དེ་དག་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་མི་འཐད་པ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་སྟོར་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་གང་དག་ཡིན་[2]པ་དེ་དག་ཀྱང་ཐ་སྙད་

3 བདག་ཀྱང་ སྣ།
1 རྟོག་པ་ པེ།
2 གང་ཡིན་པ་ སྣ། པེ།

ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲར་བཤད་ཟིན་པ་[1]ཉིད་དོ།།

(59-60)འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ལས་ཀྱང་།[2] "བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཐ་སྙད་དུ་བསྟན་པ་རྣམ་པ་བཅུར་[3]རྟོགས་པར་བྱ་སྟེ། རྣམ་པ་བཅུ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། ཕུང་པོ་བསྟན་པ་དང་། ཁམས་བསྟན་པ་དང་། སྐྱེ་མཆེད་བསྟན་པ་དང་། སེམས་ཅན་བསྟན་པ་དང་། ལས་བསྟན་པ་དང་། སྐྱེ་བ་བསྟན་པ་དང་། རྒ་བ་བསྟན་པ་དང་། འཆི་བ་བསྟན་པ་དང་། ཞི་བ་ཉིད་མཚམས་སྦྱོར་བ་བསྟན་པ་དང་། དེ་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་བསྟན་པ་ཐ་སྙད་དུ་བསྟན་པའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །རང་དང་གཞན་གྱི་གཞུང་ལུགས་ལ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དུ་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དོན་དམ་པར་ན་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་པས་དེའི་ཕྱིར་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ།།

(61)གང་ཡང་དེའི་ཚེ་དངོས་པོ་ཁས་བླངས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་སྔར་ལན་བཏབ་ཟིན་པ་ཉིད་དོ།།

(62-64)གང་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་བ་འདི་ནི་ཅི་ཡིན་གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད་མེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་ནི་རི་བོང་གི་རྭ་བཞིན་དུ་ཐམས་

1 བཤད་པ་ཉིད་ སྣ། པེ།

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༢༢ ན ༦

3 བསྟན་པ་བཅུར་ སྣ།

ཅན་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། དངོས་པོ་ཡང་དག་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་དག་ལ་ཡང་དེ་ལས་བཟློག་པའི་རྣམ་པར་སྒྲོ་འདོགས་པར་འཁྲུལ་བའི་བློ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཅེས་བྱ་སྟེ། (228b)འདི་འམ་འདིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀུན་ཏུ་བསྒྲིབ་པ་ལྟ་བུར་བྱེད་འགེགས་པ་ལྟ་བུར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་མདོ་ལས་ཀྱང་།[1]

དངོས་རྣམས་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ། །

དམ་པའི་དོན་དུ་རང་བཞིན་མེད། །

རང་བཞིན་མེད་ལ་འཁྲུལ་པ་གང་། །

དེ་ནི་ཡང་དག་ཀུན་རྫོབ་འདོད། །

ཅེས་གསུངས་སོ། །དེ་ལས་བྱུང་བའི་ཕྱིར་དེས་ཇི་བར་བསྟན་པའི་དངོས་པོ་བརྫུན་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ཀུན་རྫོབ་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱའོ།[2] །དེ་ཡང་ཐོག་མ་མེད་པའི་འཁྲུལ་པའི་བག་ཆགས་ཡོངས་སུ་སྨིན་པའི་དབང་གིས་བྱུང་ལ། དེས་ཀྱང་སྲོག་ཆགས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པར་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་[3]ལྟ་བུར་ཉེ་བར་སྟོན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་བསམ་པའི་དབང་གིས་དངོས་པོ་བརྫུན་པའི་ངོ་བོ་ཐམས་ཅད་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱའོ། །འདི་དག་ཡང་དག་པར་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་ལྟར་སྣང་བ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །རི་བོང་གི་རྭ་བཞིན་དུ

---

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ ༡༧༨ བ ༥ ཕེན། ༡༠ ༔ ༨༣༩

2 དངོས་པོ་ཡང་དག་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཅེས་པ་ནས་ཀུན་རྫོབ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་པའི་བར་གྱི་གཞུང་གིས་རང་རྒྱུད་པའི་དགག་བྱ་ངོས་འཛིན་གསལ་ཤོས་བསྟན་པ་རྗེ་རིན་པོ་ཆེས་དབུ་མ་དགོངས་པ་རབ་གསལ་ནང་གསུངས། དབུ་མ་དགོངས་པ་རབ་གསལ། ལྷ་ཙ་པར་མ། ཤོག ༡༣༠

3 དངོས་པོའི་བདག་ཉིད་" སྣ། པེ།

གཏན་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། མ་བརྟགས་ན་དགའ་བའི་རྣམ་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཀུན་རྫོབ་པ་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། ཕྱིན་ཅི་ལོག་པའི་རྣམ་པར་ཉེ་བར་འཛིན་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་དང་ནི་གཞན་ཉིད་དག་ནི་ཕན་ཚུན་སྤྲངས་ཏེ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་དེ་ཉིད་གཞན་ཉིད་དུ་འགྱུར་བར་འགལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་གཏན་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་གཉི་གའི་ངོ་བོ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ནོ། །དེས་ན་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་གཉི་གའི་ངོ་བོ་ལ་བརྟེན་པའི་ཀླན་ཀ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་གནས་པ་མེད་པ་[1] ཉིད་དེ། དངོས་པོ་ཁོ་ན་གཅིག་བསྒྲུབ་པ་དང་། དགག་པ་ཅིག་ཤོས་དགག་པ་དང་། བསྒྲུབ་པ་མེད་ན་མེད་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གཉི་ག་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་འགལ་གྱི། དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་ཀྱང་མ་གྲུབ་པས་གཉི་ག་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོར་རྣམ་པར་གཞག་པའི་ཕྱིར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་གཉི་ག་མ་ཡིན་པའི་ཕྱོགས་ལ་འགལ་བ་མེད་དོ། །ཕྱོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་ནུས་པ་དང་མི་ནུས་པ་ལ་སོགས་པ་འགལ་བ་ཡང་མི་སྲིད་པ་ཉིད་དེ། མི་ནུས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་ནས་རྣམ་པར་བཞག་ལ། ནུས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་ནས་རྣམ་པར་(229a)གཞག་གོ།

སྒྱུ་མའི་སྐྱེས་བུ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་

---

1 གནས་མེད་པ་ སྣ། པེ།

འཁྲུལ་པའམ། མ་འཁྲུལ་པའི་[1]རྣམ་པར་གཞག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་
བདེན་པ་གཉིས་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ། འདི་ལྟར་སྒྱུ་མའི་སྐྱེས་བུ་ལ་
སོགས་པ་ལ་འཁྲུལ་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྡན་པའི་མི་དག་གིས་གཞག་པའི་ངོ་བོ་
ཇི་ལྟ་བ་དེ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་བརྟན་པའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ཤེས་པས་སྒྲོ་
བཏགས་པའི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའོ་ཞེས་ཐ་སྙད་གདགས་ལ།
སྒྱུ་མའི་སྐྱེས་བུ་ལ་སོགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མ་འཁྲུལ་པ་ཅན་དག་གིས་
གཞག་པའི་ངོ་བོ་ཇི་ལྟ་བ་དེ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པའི་ཚད་མ་
ཡོངས་སུ་གཏན་ལ་ཕབ་པའི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ཡིན་ནོ།།
དེའི་ཕྱིར་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པའི་ཐ་སྙད་བཞིན་དུ་ལྟོས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་བདེན་པ་གཉིས་
ལ་བརྟེན་པའི་ཐ་སྙད་འདི་ཐམས་ཅད་མི་འགལ་ལོ། །གདོན་མི་ཟ་བར་དེ་ལྟར་ཁོང་དུ་
ཆུད་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་རབ་རིབ་ཅན་ལ་སོགས་པས་དམིགས་པའི་སྐྲ་ལ་སོགས་
པ་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པར་སྣང་བ་རྣམས་ཀྱི་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་པ་ལ་ཡང་ཀླན་ཀ་འདི་
ཐམས་ཅད་ཅི་སྟེ་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། འདི་ལྟར་གལ་ཏེ་སྐྲ་ལ་སོགས་པ་འདི་དག་
དོན་དམ་པར་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ན་དེ་ཇི་ལྟར་ཡོད་པ་ལྟ་བུར་སྣང་ཞིང་། ཇི་ལྟར་ཡུལ་
དང་། དུས་དང་། གནས་སྐབས་སོ་སོར་ངེས་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པར་འབྱུང་བ་ལྟ་བུར་
ཤེས་པར་འགྱུར། གཅིག་ལ་ནི་སྐྱེ་བ་དང་མི་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་དང་། ཡོད་པ་དང་མེད་
པ་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཇི་ལྟར་སྐྲ་ལ་སོགས་པ་དང་། གཉིས་
ལ་འཁྲུལ་པ་དང་མ་འཁྲུལ་པའི་ཤེས་པར་རྣམ་པར་གཞག་པའི་ངོ་བོ་ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་

---

1 མ་འཁྲུལ་པས་ སྡེ། པེ།

དམ་པའི་བདེན་པ་གཉིས་ལ་བརྟེན་ནས་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་བདེན་ཞིང་དོན་དམ་པ་པར་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་ལ་ལྟོས་པའི་བྱེ་བྲག་ཅན་མི་འགལ་བ་ལྟར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དེ་དང་འདྲ་བས་འདི་ནི་ཀླན་ཀར་མི་རུང་ངོ་།།

གང་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་སྐྱེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་དོན་ནི་འདི་ཡིན་པར་བརྗོད་པར་འདོད་དེ། གང་གི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་འཁྲུལ་པའི་ངོ་བོ་ཇི་སྐད་བཤད་(229b)པས་དངོས་པོ་རྣམས་ཡང་དག་པར་སྐྱེ་བ་མེད་ཀྱང་། སྐྱེ་བ་ལྟ་བུར་ཉེ་བར་སྟོན་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་བསམ་པའི་དབང་གིས་དངོས་པོ་རྣམས་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་སྐྱེའོ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས།[1]

དངོས་རྣམས་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ།།

ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་ཡང་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་དོན་ནི་འདི་ཡིན་པར་འདོད་དེ། ཡང་དག་པའི་ཐོས་པ་དང་། བསམས་[2]པ་དང་། བསྒོམས་[3]པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། འདིའི་དོན་དམ་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །མངོན་སུམ་དང་བརྒྱུད་པས་བྱུས་པའི་ཁྱད་པར་ནི་ཡོད་དེ། དེ་དག་གི་དབང་གིས་དངོས་པོ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་མ་སྐྱེས་པ་ཁོ་ནར་ཤེས་སོ། །དེས་ན་འདི་སྐད་དུ་དོན་དམ་པར་སྐྱེ་བ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འདི་དག་ཡང་དག་པར་ཤེས་པས་སྐྱེ་བར་མ་གྲུབ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༡༧༨ བ ༥
2 བསམ་ པེ།
3 བསྒོམ་ པེ།

ནོ་ཞེས་བཤད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་གཉི་གར་ཡང་བརྗོད་པ་མ་འབྲེལ་བ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཀྱང་མདོའི་ཚིག་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་མ་སྐྱེས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཇི་ལྟར་གྱུང་། ཁྱེད་ཀྱིས་བདེན་པ་གཉིས་ལ་བརྟེན་པའི་ཐ་སྙད་ཇི་ལྟར་འགྱུར་ཏེ། གལ་ཏེ་ཚིག་གི་དོན་ངེས་པར་ལེགས་པར་[1]མ་ཟིན་པར་གཞན་དག་སུན་འབྱིན་པ་བརྟན་ཉིད་ཉེ་བར་བརྗོད་པར་བྱེད་ན་ནི་མངོན་པར་བརྗོད་པར་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཉིད་དུ་གསལ་རབ་ཏུ་མངོན་ནོ།།

གང་ཡང་གལ་ཏེ་མ་བརྟགས་པ་རྟོགས་པ་[2]མེད་པ་ཙམ་ཡིན་ན་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་པ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་བསམ་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པས་ངེས་པར་སེམས་པ་ལ་ཞུགས་པ་ཚད་མ་ཡང་དག་པའི་སྟོབས་ལས་བྱུང་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་བསྒོམས་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡང་བརྟགས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མངོན་སུམ་དུ་མཐུན་པར་དཔྱོད་པའི་ཕྱིར་དང་། དེའི་རྒྱུ་མཐུན་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་རྒྱལ་གྱིས་ཕྱོགས་པ་བརྟན་པའི་རྣམ་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པའི་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་ལས་བཟློག་པའི་ཕྱིར་མ་བརྟགས་པ་ཞེས་བྱའོ། །རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ལ། རྟོག་པ་མེད་པ་ཙམ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་དེ་[3]རབ་ཏུ་གྲགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་བརྟན་ (230a)པའི་ངོ་བོ་ཐམས་ཅད་ནི་ཀུན་རྫོབ་པ་ཞེས་བྱའོ། །དེས་ན་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་

1 ལེགས་པར་ངེས་པར་མ་ཟིན་པ་ སྣ། པེ།
2 རྟོག་པ་མེད་ སྣ།
3 དེས་ སྣ། པེ།

པའི་ངོ་བོ་ཡིན་ཡང་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཞིང་རྗེས་སུ་དཔག་པས་གྲུབ་པའི་དོན་སྟོང་བ་ཡང་མ་ཡིན། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁས་ལེན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། འདིར་མེད་པར་དགག་པར་བརྗོད་པར་འདོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་སྨྲན་འབྱིན་པ་འདི་ནི་བྱིས་པའི་སྐྱེ་བོ་ཀུན་ཏུ་རྨོངས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཚིག་ཙམ་ཉེ་བར་བཀོད་པ་སྨྲ་བ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་པས་དེ་ནི་མཁས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་ཚིམ་པར་བྱེད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(65)གང་ཡང་འོན་ཏེ་ཀུན་རྫོབ་འཇིག་རྟེན་གྱི་གྲགས་པ་ཡིན་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་ཉེས་པ་མེད་དེ། འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ལ་གྲགས་པའི་དོན་ཐམས་ཅད་ཀུན་རྫོབ་ཉིད་དུ་འདོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཡང་དོན་ཐམས་ཅད་དབང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། ཁ་ཅིག་གིས་འགའ་ཞིག་ན་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ།། དེའི་ཕྱིར་ལས་དང་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་སོ་སོར་ངེས་པ་ཤིན་ཏུ་ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པ་ནི་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཁོ་ནས་ཡིན་ལ་གཞན་ནི་ཤེས་པ་ཐལ་བས་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་ཁ་ཅིག་གིས་གྲགས་པ་ལས་འདས་ཏེ། དངོས་པོ་རྣམས་བརྟག་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལོག་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་ཅེས་བྱ་སྟེ། དེ་ནི་གྲགས་པར་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་རབ་ཏུ་བརྟགས་པ། དཔེར་ན།

འདིར་ནི་[1] བདག་གམ་སེམས་ཅན་མེད། །

1 འདི་ན་ པེ།

ཆོས་འདི་རྒྱུ་དང་བཅས་པ་ཡིན། །[1]

ཞེས་བྱ་བ་ལྟ་བུ་དེ་ནི་ཡང་དག་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་ཅེས་བྱའོ། །དེས་ན་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་གཅིག་ལ་བསྟན་བཅོས་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་ངོ་བོ་དུ་མར་སྒྲོ་བཏགས་ཀྱང་དངོས་པོ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ཕན་ཚུན་འགལ་བར་མི་འགྱུར་རོ།།

(66)གང་ཡང་འོན་ཏེ་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དོན་སྒྱུ་མའི་དོན་ཡིན་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་མི་བདེན་པའི་དོན་ནི་སྒྱུ་མའི་དོན་ཉིད་དུ་འདོད་པའི་ཕྱིར་ཉེས་པ་མེད་དེ་གཏན་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེས་ན་འདི་ལ་སྔར་བཤད་པའི་ཉེས་པ་ཡང་མེད་ལ། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བ་ལ་སྐྱུར་བ་འདེབས་པའི་ཉེས་པ་ཡང་མེད་དེ། དེ་ནི་(230b)སྔར་བསལ་[2]ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ། སྒྱུ་མའི་དོན་འཁྲུལ་བའི་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་ཡང་ཤེས་པ་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཐལ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་བརྫུན་པའི་རྣམ་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་ལ། བདེན་པ་དང་བརྫུན་པ་དག་ཀྱང་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་བརྫུན་པའི་ངོ་བོ་ཡང་བདེན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་པའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་འཁྲུལ་པ་ཉིད་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་ལ། སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་ཏེ། གཅིག་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འགལ་བའི་[3]ཕྱིར་རོ། །མི་བདེན་པའི་ངོ་བོ་ཡང་བརྫུན་པའི་ཕྱིར་འཁྲུལ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ཤེས་པ་བདེན་པ་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་གཉིས་ནི་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཕན་ཚུན་ཐ་དད་པ་མེད་[4]པའི་ཕྱིར་དང་། གཅིག

1 མཛོད་རང་འགྲེལ། གནས་དགུ་པ། ཤོག ༧༠༠ ལྷ་ཆ་དགེ་ལྡན་སྤྱི་ལས་དཔར་མ། ༡༩༩༧

2 བསྐལ། སྡེ།

3 མ་འགལ་ སྣ། པེ།

4 ཐ་དད་པའི་ སྣ། པེ།

ལ་ཆ་ཤས་དང་ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་དངོས་པོ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཤེས་པ་ཡང་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འདི་ཤེས་བྱ་ནང་གི་ཡིན་པའི་ལུགས་ལས་ཁྱད་པར་ཆེའོ།།

(67)གང་ཡང་ཇི་སྐྱེ་ཀུན་རྫོབ་སྒྲ་ཙམ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་[1]ཕྱོགས་སྔ་མ་རང་གི་ལུགས་ཀྱི་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། བདེ་བར་གཤེགས་པ་ནི་གང་གི་ལུགས་ཀྱང་འགྲོ་བ་སྒྲ་ཙམ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བ་མེད་དེ། མདོ་ལས།[2]

འདི་དག་ཐམས་ཅད་མིང་ཙམ་སྟེ། །
འདུ་ཤེས་ཙམ་ལ་རབ་ཏུ་གནས། །
རྗོད་པར་བྱེད་ལ་མ་གཏོགས་པར། །
བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡོད་མ་ཡིན། །

ཞེས་གསུངས་པ་དེ་ལ་ཡང་གང་དག་རྗོད་པ་ཡང་དངོས་པོར་གྱུར་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡང་དེ་ལས་གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཉེ་བར་རྟོག་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་གི་ལུགས་དགག་པའི་ཕྱིར་རྗོད་པ་དང་བརྗོད་པར་བྱ་བ་དག་རྟོག་པ་ལ་གནས་པ་ཉིད་ཁོ་ན་ཉེ་བར་བསྟན་ཏེ། འདུ་ཤེས་ཙམ་ལ་གནས་པའོ་ཞེས་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། །འདུ་ཤེས་ནི་འདིར་རྟོགས་པའི་[3]བདག་ཉིད་ཡིན་པར་བཤད་དོ། །དེ་ལ་སྣང་[4]བའི་མིང་ནི་རྗོད་པར་བྱེད་པ་

1 སྨྲས་པ་ཡང་ སྡེ།

2 སྡེ་བཀའ། ལང་གཤེགས། མདོ་སྡེ། ཅ། ༣༧༠ བ ༥ མདོའི་ནང་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། མདོ་དང་མདོ་ལས་རྣམ་རྟོག་བཤད། །ནམ་ཡང་མིང་ལས་འདའ་མི་འགྱུར།། བརྗོད་པ་དག་ནི་མ་གཏོགས་པར། །བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཅི་ཡང་མེད།།

3 རྟོག་པའི་ སྣ། པེ།

ཉིད་ཡིན་ལ། དོན་ནི་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར།

རྗོད་པར་བྱེད་པ་མ་གཏོགས་པར། །

བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡོད་མ་ཡིན། །[1]

ཞེས་གསུངས་སོ། །རྟོག་པ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་ལ་སྣང་བའི་རྗོད་པ་པོ་ན་མིང་གི་སྒྲར་དགོངས་ཀྱི། རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་གྲགས་པའི་སྒྲ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཙམ་ཉིད་དུ་ཟད་ན་ནི་ཐམས་ཅད་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་སྣ་ཚོགས་སུ་(231a)སྣང་བར་ཡང་མི་འགྱུར་ལ། ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །མདོ་ལས་ཀྱང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་བསྟན་པས་ཤུགས་ཀྱིས་ན་ཤེས་པ་དང་། ཤེས་བྱ་དང་། རྗོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་པོ་ནར་གསུངས་ཀྱི། སྒྲ་ཙམ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་ལས་[2]ཇི་སྐད་དུ། "ལྷའི་བུ་གཞན་ཡང་དོན་དམ་པར་ན་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་ཏེ། ཁྱད་པར་མེད་པ། མ་སྐྱེས་པ། མ་འགགས་པ། བརྗོད་པར་བྱ་བ་དང་། རྗོད་པ་དང་། ཤེས་བྱ་དང་། ཤེས་པ་དང་བྲལ་བའོ"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་སྟེ། འདི་ལས་ནི་ཤུགས་ཀྱིས་ན་ཤེས་པ་དང་། ཤེས་བྱ་དང་། རྗོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་པོ་ནའོ་ཞེས་ཉེ་བར་བསྟན་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལས་བཟློག་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་

4 གཞང་ སྤྱི།

1 སྡེ་བཀའ། ལང་གཤེགས། མདོ་སྡེ། ཅ། ༣༧༠ བ ༥

2 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༨༧ ན ༨

རོ། དེ་དག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་།[1] འདི་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཐ་སྙད་ཤེས་པ་དང་། ཤེས་བྱའི་བདག་ཉིད་དང་། ཡི་གེ་དང་སྒྲར་བསྟན་པ་བརྗོད་པའི་བདག་ཉིད་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པར་བྱའི། རྗོད་པ་དང་། བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཙམ་ཁོ་ན་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གང་ལ་སེམས་ཀྱི་རྒྱུ་བ་ཡང་མེད་དོ་ཞེས་དོན་དམ་པ་ཀུན་རྫོབ་ལས་བཟློག་པའི་ཡུལ་དུ་བསྟན་པ་ཇི་ལྟར་འཐད་པར་འགྱུར། དེ་ལ་གལ་དེ་དོན་དམ་པར་བསྟན་པར་བྱ་བའི་དོན་དངོས་པོར་གྱུར་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ལེགས་པར་བཤད་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཀླན་ཀ་ཚོལ་ན་དེའི་ཚེ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་དུ་རོ་གཅིག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་ནི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་འགའ་ཡང་མེད་དོ། །དེས་ན་ལེགས་པར་བཤད་པ་དང་། ལེགས་པར་བཤད་པ་མ་ཡིན་པ་དག་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོར་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མེད་ཀྱང་ཉེས་པ་མེད་དོ། །འོན་ཏེ་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་མེད་དོ་ཞེས་རྒོལ་ན་ནི་དེ་མ་གྲུབ་སྟེ། འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བཀའ་[2]མངོན་སུམ་དང་བརྒྱུད་པས་དོན་དམ་པ་རྗོད་པར་བྱེད་པ་དང་། ལུས་ཅན་རྣམས་ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་གང་(231b)ཡིན་པ་དེ་ནི་ལེགས་པར་བཤད་པ་ཡིན་ལ། བཟློག་པ་ནི་ལེགས་པར་བཤད་པ་མ་ཡིན་པས་དེ་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གྲུབ་པ་ཉིད་དོ། །ཁྱེད་ཀྱི་ལྟར་ན་ཡང་མིང་ནི་ཀུན་

---

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༡༣༣ བ ༣ མདོའི་ནང་འདིའི་སྐབས་ཀྱི་བསྒྱུར་དང་ཅུང་ཟད་མི་འདྲ་བ་སྣང་ཡང་དོན་འདི་ཉིད་དུ་གནས་སོ།།

2 པའང་ སྣ།

བཏགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་[1]ཉེ་བར་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་ལེགས་པར་བཤད་པ་དང་། ཅིག་ཤོས་དག་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཇི་ལྟར་གཞག་སྟེ། དེ་ལ་ཁྱེད་ཀྱི་ལན་གང་ཡིན་པ་ཁོ་བོ་ཅག་གི་ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཡིན་པས་འདི་ནི་གྱི་ནའོ།།

(68)གང་ཡང་ཇི་སྐྱེ་སྒྲའི་དོན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་[2]རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་སྒྲའི་དོན་ཁོ་ན་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་སྒྲའི་དོན་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་ཏེ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཀུན་བཏགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར། ཇི་ལྟར་སྒྱུ་མའི་མི་མང་པོ་དག་ལ་མི་མི་ཞེས་བྱ་བའི་[3]སྒྲའི་དོན་སྤྱིའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ངོ་བོ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་དེ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་དག་ལ་ཡང་ཅི་སྐྱེ་རྣམ་པར་མི་གཞག ཁྱད་པར་དངོས་པོར་གྱུར་པ་ཁོ་ན་ལ་སྒྲའི་དོན་སྤྱིའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ངོ་བོར་འགྱུར་དགོས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་རྒྱུ་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དེ། སྔོན་མེད་པ་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་དངོས་པོར་མ་གྱུར་པ་ལ་ཡང་མེད་པ་ཞེས་སྦྱོར་ཐ་སྙད་འདོགས་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་གང་དག་སོ་སོར་རང་གིས་[4]རིག་པར་བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ཁོངས་སུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། །ཇི་སྐད་དུ་སྔར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །དངོས་པོ་ཁོ་ན་བསྟན་དུ་མེད་པའི་ངོ་བོར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་

1 ཀུན་བཏགས་པ་ཉིད་དུ་" སྣ། པེ།
2 སོགས་པ་དེ་ཡང་ སྣ། པེ།
3 མི་མི་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་སྤྱིའི་ པེ།
4 རང་གི་" སྣ། པེ།

ལ་རིགས་པ་ཅི་ཡང་མེད་དེ། སྒྲ་ཤད་དང་ཟླ་བ་གཉིས་པ་ལ་སོགས་[1]པ་བརྫུན་པ་ཡང་བརྗོད་དུ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །མདོ་ལས་ཀྱང་བརྗོད་པ་དང་། བརྗོད་པར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པར་བཤད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་མདོའི་ཁུངས་མདོ་ཉིད་ཀྱང་སྔར་བཤད་ཟིན་ཏོ། །གང་ཡང་དོན་དམ་པ་ལ་ཡང་ཐལ་བ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་དེ་ལྟར་འདོད་པའི་ཕྱིར་ཐལ་བ་ཉིད་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་མཚན་ཉིད་ནི་མི་འདོད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་དམ་པར་སྒྲོ་བཏགས་པའི་ངོ་བོ་བརྗོད་པ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ནི་སྤྲོས་པ་ཐམས་(232a)ཅད་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་མདོ་ལས་ཀྱང་།[2] "འཇམ་དཔལ། དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་གང་ཡིན། འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྨྲས་པ། ལྷའི་བུ་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པར་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་ངོ་བོར་གྱུར་ན།[3] དེ་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གྲངས་སུ་མི་འགྲོའོ། །ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །ལྷའི་བུ་གཞན་ཡང་དོན་དམ་པར་ན་[4]དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་ཐད་སྙད་ཐམས་ཅད་ལས་འདས་པའོ་"ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །དེ་དག་ལ་དངོས་པོའི་བག་ཆགས་ཀྱང་སྔར་བཀག་པས་དེའི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་ཁོ་ནའི་ཁོངས་སུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་གཞན་དུ་ཁ་བསྐང་མི་དགོས་སོ། །གལ་ཏེ་ཚད་མས་དངོས་པོ་མེད་པར་[5]བསྒྲུབས་པ་སྒྲུ་མ་ལ་

---

1 གཉིས་ལ་སོགས་ པེ།

2 བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༨༧ ན ༣

3 འགྱུར་ན། སྣ། པེ།

4 དོན་དམ་པར་དོན་... སྣ། དོན་དམ་པའི་ པེ།

5 ཚད་མས་ངོ་བོ་མེད་པར་ སྣ། པེ།

སོགས་པ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་ཡང་རང་(258b)དགས་དོན་དམ་པར་ཡོད་དོ་ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་པར་བྱེད་ན་ནི་དགའ་མགུར་ཐོགས་ལ་དགའ་སྟོན་ཡང་བྱེད་ལ་རག་གོ །རང་དགའི་འདོད་པ་ཙམ་གྱི་རྗེས་སུ་བྱེད་པས་གཞག་པ་ཙམ་གྱི་སློ་ནས་ནི་དངོས་པོ་རྣམས་དེ་ལྟ་བུར་འགྱུར་བར་འབྲང་བ་མེད་དོ། །ཧ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཉིད་དང་། རང་གིས་རིག་པར་བྱ་བ་ཉིད་ནི་དངོས་པོ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སྒྱུ་མ་དང་སྨྲ་ཤད་ལ་སོགས་པས་འཁྲུལ་པའི་ཡང་ཕྱིར་ལ། གང་དུ་ཡང་འབྲེལ་བ་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་མི་འབྱུང་བ་ལ་དངོས་པོ་ཉིད་མ་མཐོང་ངོ་ཞེ་ན། མ་མཐོང་དུ་ཟིན་ཀྱང་། གཞན་ལ་དེར་འགྱུར་དགོས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་འབྲེལ་བ་ཅི་ཡང་མེད་དེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཤིང་ཉིད་ཡོད་པས་ཤིང་ཤ་པ་གདོན་མི་ཟ་བར་ཡོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་བདེན་པ་[1]ལ་སོགས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་མ་གྲུབ་པས་བཙོད་པ་མེད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

(69)གང་ཡང་ཇི་སྐད་སྨྲད་ཅིག་ལས་ཕན་ཆད་དུ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲ་བ་དེ་ཡང་མི་འདོད་པར་འགྱུར་བ་མ་[2]ཡིན་ཏེ། རང་བཞིན་ནི་གཞན་དུ་འགྱུར་བར་མི་འཐད་པའི་ཕྱིར་དང་། དངོས་པོ་རྣམས་ཡང་དག་པ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་གནས་པ་དང་མི་གནས་པ་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་མི་འཐད་དོ་ཞེས་སྔར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་གཡོ་བ་ཉིད་དངོས་པོ་རྣམས་རང་བཞིན་གྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཡོངས་སུ་སྟོན་པར་བྱེད་པས་དེ་དག་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རྫོད་པར་བྱེད་དོ། (232b) །ཀུན་རྫོབ་གཡོ་བའི་

1 བདེ་བ་ལ་ སྣ། པེ།
2 འགྱུར་བས་ སྣེ།

དོན་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་མི་འདོད་པར་བསྒྲུབ་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་གཡོ་བའི་བདག་ཉིད་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལ་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་རང་བཞིན་གྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྟོང་པ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་བྱུང་བ་དང་མ་བྱུང་བ་དག་ཏུ་ཡང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་གནས་པའི་ཕྱིར་རྟག་པ་ཡིན་པས་གྲུབ་པ་ཉིད་སྒྲུབ་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ།།

(70)གང་ཡང་ཇི་སྐད་མི་བདེན་པའི་དོན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་བདེན་པའི་སྒྲའི་དོན་མངོན་པར་མི་ཤེས་པ་ཁོ་ནས་གླེངས་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་འཕྲུལ་[1] པའི་བློ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཕྱར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེ་ནི་བརྫུན་པའི་རྣམ་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་མི་བདེན་པ་ཞེས་བྱའོ། དེ་ཡང་ཡང་དག་པར་བདེན་པ་མ་ཡིན་ཡང་བདེན་པའི་ངོ་བོ་ལྟ་བུར་གྲགས་པས་དེའི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་བསམ་པའི་དབང་གིས་དེ་ལ་བདེན་པའོ། །ཞེས་མིང་དུ་འདོགས་པ་མཛད་དོ། །གང་གི་ཚེ་ཤེས་པ་དང་ཤེས་བྱ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀུན་རྫོབ་པོ་ཞེས་བརྗོད་པ་དེའི་ཚེ་ཡང་འཇིག་རྟེན་ལ་གྲགས་པའི་ངོར་བདེན་པ་ཞེས་བྱའི། ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོར་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་ལྟོས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་སྒྲ་ཙམ་བཀོད་པའི་ཕྱིར་བདེན་པ་དང་བདེན་པ་མ་ཡིན་པ་དག་ཕན་ཚུན་འགལ་བ་ཉིད་ཡིན་ནོ།།

ཀུན་རྫོབ་ནི་ལོག་པའི་རྣམ་པར་སྣང་བའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཁས་ལེན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཉིད་ནི་གཞན་དུ་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་ཕྱར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །དེས་རྣམ་པར་གཞག་པ་འགྲོ་བ་བརྫུན་པ་ཡང་དེ་དག་གི་བསམ་པའི་དབང་གིས་བདེན་པ་ཞེས་བྱ་

1 འཕྲུལ་ སྣ། པེ།

སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཀུན་རྫོབ་གདོན་མི་ཟ་བར་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཁས་བླང་བར་བྱ་དགོས་སོ་ཞེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་པས་དམ་བཅས་པ་པོར་མ་ཡིན་ནོ།།

(71)གང་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཚད་མའམ། ཚད་མ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་གྲང་། གལ་ཏེ་འདི་ཚད་མ་ཡིན་ན་ནི་ཇི་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་ཡིན། འོན་ཏེ་ཚད་མ་མ་ཡིན་ན་ནི་ཇི་ལྟར་འདི་ལས་བདག་མེད་པ་འགྲུབ་ཅེས་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཇི་ལྟར་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་ཤེས་པ་སྤྱིའི་རྣམ་པ་བརྟན་པ་ཉེ་བར་འཛིན་པར་ཞུགས་པས་ཀུན་རྫོབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ཡང་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་བྱེད་པ་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་[1]ཚད་མར་འདོད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཀུན་རྫོབ་(233a)འགའ་ཡང་རང་གི་ངོ་བོས་བརྟན་པ་ཡིན་ཡང་ཚུལ་བཞིན་དུ་ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུ་བརྒྱུད་པ་ལས་འོངས་པའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་པ་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དོན་ལ་མི་སླུ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ཚད་མ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལས་བཟློག་པ་ནི་ཚད་མ་མ་ཡིན་ནོ། །ཚད་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་འདི་ཐམས་ཅད་ནི་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྒོ་ཁོ་ན་ནས་ཡིན་នོ་ཞེས་སྔར་བསྒྲུབས་པས་དེའི་ཕྱིར་འདི་ནི་ཀྱི་ནའོ།།

(72)གང་ཡང་གདོན་མི་ཟ་བར་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ས་བོན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་དོན་དམ་པར་ཡོད་པར་ཁས་བླངས་དགོས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གལ་ཏེ་འདིའི་རྒྱུ་ཙམ་ཞིག་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཡིན་ཏེ། འདིའི་རྒྱུ་རང་དང་[2]མཐུན་པ་ཀུན་རྫོབ་པ་ཐོག་མ་མེད་པ་འདོད་

---

1 ཐོབ་པ་ཉིད་ཀྱིས་ པ།

2 རྒྱུ་དང་མཐུན་··· སྣ། པ།

པ་ཉིད་པས་འདི་རྒྱུ་མེད་པ་ཉིད་དུ་དམ་བཅའ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཏེ་འདིའི་ས་བོན་དོན་དམ་པ་ཞིག་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གང་དུ་ཡང་དེ་དང་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་མ་གྲུབ་པས་མ་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། ཞིང་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ལེན་པའི་རྒྱུ་སྔ་མ་སྔ་མ་དང་མཐུན་པ་མ་བརྟགས་ན་དགའ་བ་ཁོ་ན་ལས་འབྱུང་བར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་གཏན་ཚིགས་འགལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། གནོད་སྦྱིན་དང་མཐུན་པ་ཁོ་ནའི་གཏོར་མ་ཡིན་པས་ཀུན་རྫོབ་ཐམས་ཅད་ནི་དངོས་པོ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ནར་བསྒྲུབས་ཟིན་ཏོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་འདི་ཇི་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་འགྱུར། འདི་དངོས་པོ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་ས་བོན་ཡང་རང་དང་མཐུན་པ་དང་དངོས་པོར་གྱུར་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ནར་རིགས་ཀྱི། དངོས་པོ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནི་དེ་དང་འགལ་བའི་ཕྱིར་དང་། མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། ཚད་མས་གནོད་པའི་ཕྱིར་འདི་ནི་གྱི་ནའོ།།

(73)གང་ཡང་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁས་ལེན་ན་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་གང་གིས་ན་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་དོན་དམ་པ་པ་ཁས་ལེན་ན་བདེན་པ་གཉིས་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་ནི་གང་དུ་ཡང་མ་གྲུབ་སྟེ། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་དོན་དམ་པ་པ་ནི་མེད་ཀྱང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་མ་བརྟགས་ན་གྲུབ་པ་དག་ལ་ཇི་ཙམ་དུ་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ཞེས་བྱ་བར་རྣམ་པར་བཞག་ལ། སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དག་(233b)པའི་ཚད་མས་ཀུན་ཏུ་གཏན་ལ་ཕབ་ཅིང་སྒྲོ་མ་བཏགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ཞེས་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་དོན་དམ་པར་མེད་ཀྱང་བདེན་པ་གཉིས་རྣམ་པར་གཞག་པར་འགྱུར་བ་ཉིད་པས་འདི་ནི་གྱི་ནའོ།།

(74)གང་ཡང་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པ་གྱི་ན་ཞིག་ཡིན་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཆོས་དང་གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་རིགས་པ་དང་ལྡན་པས་དམ་པ་ཡིན་ཞིང་དོན་ཀྱང་དེ་ཡིན་ཏེ། [1]དོན་དུ་གཉེར་བ་རྣམས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་སྤང་བར་བྱ་བའི་ཆེད་དུ་དོན་དུ་གཉེར་བར་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། ཡེ་ཤེས་དམ་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའི་དོན་ཏེ་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པ་ཞེས་བྱའོ། །འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་དེའི་ཡུལ་ཅན་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཚིག་གི་དོན་གཞན་དུ་སྦྱོར་བའི་སྒོ་ནས་དེར་ཐ་སྙད་གདགས་སོ།། ཐོས་པ་དང་། བསམས་པ་དང་། བསྒོམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་དེའི་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་གདགས་པས་དེ་སྐད་དུ་བརྗོད་དོ། །དེ་ལ་གང་གི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པ་བསྒོམ་པར་བྱེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་མ་ལུས་པར་སྤོང་ཞིང་གོང་ནས་གོང་དུ་ཤེས་རབ་ལ་སོགས་པ་ཡོན་ཏན་གྱི་ཁྱད་པར་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་དེའི་ཕྱིར་དོན་ཆེན་པོ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པས་དམ་པའི་སྒྲར་བརྗོད་པར་བྱ་བར་འོས་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཡང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་དམ་པ་རྟོག་པའི་དྲ་བ་མ་ལུས་པ་དང་བྲལ་བ། ཆོས་ཐམས་ཅད་སྣང་བ་མེད་པས་མི་དམིགས་པར་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པར་འགྱུར་གྱི། དམིགས་པར་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ།[2] "ལྷའི་བུ་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་ཇི་ཙམ་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་ཡུལ་ལས་ཀྱང་འདས་པ་ཡིན་ནོ" ཞེས་

---

1 སྒྲིབ་པ་སྤོང་བ་དོན་དུ་''' སྣ། པེ།

2 བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༩༧ ན ༥

གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །འདིས་ནི་ཡུལ་གྱི་དངོས་པོ་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དེ་དམིགས་པས་མཐོང་བ་འགོག་པ་བྱེད་དོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་བཤད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡོན་ཏན་ཐུན་སུམ་ཚོགས་པ་མ་ལུས་པའི་གཞི་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་དམ་པ་ནི་དོན་ཆེན་པོ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་གྱི་ན་མ་ཡིན་ནོ།།

གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་དོན་(234a)དམ་པ་གྱི་ན་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་དོན་དམ་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཡང་དག་པ་པ་ཅི་ཡང་མི་སྲིད་པས་དེར་ཡང་ཀླན་ཀ་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཇི་སྐད་བརྗོད་པར་མི་འགྱུར། དེའི་ཕྱིར་དེ་ལ་ཕྲིད་ཀྱི་ལན་གང་ཡིན་པ་དེ་ཁོ་བོ་ཅག་གི་ཡང་ཡིན་པས་མཚུངས་པ་ཉིད་དོ།། གང་ཡང་དངོས་པོ་རྣམས་དོན་དམ་པར་མེད་དོ་ཞེས་བརྗོད་པ་དེར་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པ་ཁོ་ནའི་དབང་དུ་མཛད་ནས། དེ་ལས་དགོངས་ཏེ་མེད་དོ་ཞེས་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་དོན་དམ་པ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་དཔྱད་ན་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ།

(75)ཡང་གལ་ཏེ་ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་པ་དག་གཅིག་པར་འདོད་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་བཤད་པའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱིས་དོན་གྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པ་དང་། འདུས་བྱས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཀུན་རྫོབ་དང་ལྡན་ཅིག་ཅིག་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཞིང་ཐ་དད་པར་ཡང་མི་འདོད་དེ། འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས།[1] ཇི་སྐད་དུ། "གལ་ཏེ་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༧ ན ༧

འདུ་བྱེད་དག་ལས་གཞན་མ་ཡིན་པར་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཚེ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་བདེན་པར་མཐོང་བར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའམ། སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཞིང་ཇི་ལྟར་འདུས་བྱས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་དེ་བཞིན་དུ་དོན་དམ་པ་ཡང་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་འགྱུར་ལ། ཇི་ལྟར་དོན་དམ་པར་འདུ་བྱེད་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱད་པར་མེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་འདུ་བྱེད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཁྱད་པར་མེད་པར་འགྱུར་བ་ཞིག་ན། འདུ་བྱེད་ཐམས་ཅད་ནི་མཚན་ཉིད་ཐ་དད་པའི་ཕྱིར་ཁྱད་པར་མེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།། རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་དོན་ཇི་ལྟར་ཐོབ་པ་ལ་སོགས་པའི་འོག་ཏུ་དོན་དམ་པ་ཚོལ་བ་ཡང་རུང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་ནི་འདུ་བྱེད་དག་ལས་གཞན་མ་ཡིན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །གཞན་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་བདེན་པ་མཐོང་བ་རྣམས་ཀྱི་འདུ་བྱེད་ཀྱི་མཚན་མ་ཟིལ་གྱིས་མི་ནོན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་པ་འདུ་བྱེད་ཀྱི་མཚན་མ་ཟིལ་གྱིས་མ་ནོན་པས་མཚན་མའི་འཆིང་བ་ལས་མ་གྲོལ་བར་ཡང་འགྱུར་ལ། མཚན་མའི་འཆིང་བ་ལས་(234b)མ་གྲོལ་བས་གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཆིང་བ་ལས་ཀྱང་མ་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལས་མ་གྲོལ་བ་ནི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཐོབ་པ་དང་། བདེ་བ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་འདུ་བྱེད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དག་ལས་གཞན་ཡིན་ན་དེའི་ཚེ་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་འདུ་བྱེད་དག་གི་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་ལ། དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་འདུ་བྱེད་དག་བདག་མེད་པ་ཙམ་དང་། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཙམ་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་ལ། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བའི་མཚན་ཉིད་དུས་

གཅིག་ཏུ་མཚན་ཉིད་སོ་སོར་གྲུབ་པར་ཡང་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་ནི་དུང་ལ་སོ་པའི་དཀར་པོ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་དེ་ཉིད་དང་། གཞན་ཉིད་དག་ཏུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

དངོས་པོ་ཁོ་ན་ལ་དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྲིད་པའི་དོན་དམ་པ་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་དང་། གཞན་ཉིད་དག་ཏུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དངོས་པོ་ཡོད་ན་དེ་ཉིད་དང་གཞན་ཉིད་དུ་རྟོགས་པ་སྲིད་པར་འགྱུར་གྱི། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་དག་ལ་དེ་མི་སྲིད་པ་ཉིད་པས་འགལ་བ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་དང་ལྡན་ཅིག་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པའི་རྣམ་པར་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་འདོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས།[1] ཇི་སྐད་དུ། "བཅོམ་ལྡན་འདས་ཅི་ལགས། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱང་གཞན་ལགས། དོན་དམ་པ་ཡང་གཞན་ལགས་སམ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། རབ་འབྱོར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱང་གཞན་ལ། དོན་དམ་པ་ཡང་གཞན་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་དོན་དམ་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་ནོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པ་ནི་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་དང་ཁྱད་པར་མེད་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་ཡིན་ལ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པ་དང་མཐུན་པའི་ཕྱིར་དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་ཡིན་པས་ལྟོས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་གཅིག་ལ་གཉིས་ཀའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མི་འགལ་ལོ།།

1 སྡེ་བཀའ། མ་རྙེད་དོ།

(76)གང་ཡང་ཁྱོད་ཀྱི་ལྟར་ན་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡང་(235a)རྟུང་བར་དཀའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ལྟ་བ་འདི་ཁོ་ན་ལ་ཡང་ཚོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་རིག་པའི་ཕྱིར་རོ།། འདི་ལྟར་ཡང་དག་པའི་ལྟ་བས་ཀུན་ནས་བསླང་[1]བའི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་རྒྱུ་ཡོངས་སུ་དག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཕྱིར་འབྲས་བུ་ཁྱད་པར་ཅན་དང་འདོད་པ་མངོན་པར་གྲུབ་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་ཅིང་། ཕྱིན་ཅི་ལོག་གིས་ཀུན་ནས་བསླང་བ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ལོག་པའི་ལྟ་བས་ཀུན་ནས་བསླང་[2]བའི་ཚུལ་འཁྲིམས་ཀྱི་ཡན་ལག་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །དོན་དམ་པར་ནི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་པོ་འགའ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་དེར་དམིགས་པ་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཁོ་ན་ཡིན་ཏེ། སྨིག་རྒྱུ་ལ་ཆུར་དམིགས་པ་བཞིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དེས་ཀུན་ནས་བསླང་བའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་རྩོམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་བདག་དང་བདག་གིར་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གིས་ཀུན་ནས་བསླང་བའི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་མ་དག་པ་ཀུན་ནས་བསླང་བའི་ཕྱིར་ཤིན་ཏུ་སྟོབས་ཆུང་བ་ཡིན་ནོ། །སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་དམིགས་པའི་རིག་བྱར་གྱུར་པ་མི་དམིགས་པ་ནི་ཡང་དག་པའི་དོན་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྨིག་རྒྱུ་ལ་ཆུར་མི་དམིགས་པ་བཞིན་དུ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དེས་ཀུན་ནས་བསླང་བའི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་འབྲས་བུ་ཆེན་པོར་འགྱུར་ཏེ། རྒྱུ་རྒྱུས་པས་ཀུནནས་བསླང་བའི་ཕྱིར་ས་བོན་གྲུང་པོས་མངོན་པར་བསྒྲུབས་པའི་མྱུ་གུ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མི་དམིགས་པ་ལ་ཡང་དག་པར་བརྟེན་པའི་སྦྱིན་པ་

---

1 བསླངས་ སྣ། པེ།

2 ལྟ་བས་བསླངས་ སྣ།

ལ་སོགས་པ་ནི་ཡང་དག་པའི་ལྟ་བས་ཀུན་ནས་བསླང་བའི་ཕྱིར་མཁས་པ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་དང་བ་བསྐྱེད་པར་འགྱུར་གྱི། གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གང་གིས་ན་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་མི་འཇུག་པའི་ཕྱིར་བསོད་ནམས་མེད་པར་འགྱུར་བ་སྦྱིན་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གཅིག་ཏུ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཐམས་ཅད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དུས་ཐམས་ཅད་དུ་མི་དམིགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་གནས་སྐབས་མ་ཡིན་པ་ན་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་དེ་དག་དམིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཚེ་ན་ནི་མོས་པ་ལས་བྱུང་བའི་མི་དམིགས་པར་རྣམ་པར་གཞག་སྟེ། དེ་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས། "ཇི་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐབས་མཁས་པས་སྦྱིན་པ་གཏོང་ཞིང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་(235b)ཕྱིན་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། རབ་འབྱོར་འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་སྦྱིན་པ་གཏོང་ཞིང་སྦྱིན་པ་ཡོངས་སུ་གཏོང་བ་ན་སྦྱིན་པ་ལ་སྒྱུ་མའི་བློ་ཁོ་ན་ཉེ་བར་གནས་པར་འགྱུར་རོ་"[1]ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔར་གྱུར་པས་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པར་མོས་པའི་བློ་ནས་དོན་དུ་གཉེར་བ་རྣམས་ལ། སྲས་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བཏང་བས་མི་འགལ་བ་ཉིད་དོ། །མཉམ་པར་གཞག་པའི་གནས་སྐབས་ན་ནི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཤིན་ཏུ་མི་དམིགས་པ་ཁོ་ནའོ། །དེའི་ཚེ་ན་ནི་དེ་དག་འཇུག་པ་ལ་མི་བརྟེན་ཏེ། ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དུས་ན་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བཏང་སྙོམས་སུ་བྱས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཀྱང་སྦྱོར་བ་དང་མཇུག་གི་གནས་སྐབས་ན་ནི་དེ་དག་འཇུག་སྟེ།

1 མ་རྙེད་དོ།།

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "དགེ་སློང་དག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེས་སྦྱིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་དམིགས་པར་མི་བྱ་ལ། སྦྱིན་པ་མི་སྦྱིན་པར་ཡང་མི་བྱའོ་"ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས། སྟོང་པ་ཉིད་ལ་མོས་པ་མི་དམིགས་པ་ལ་བརྟེན་པའི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་འབྲས་བུ་ཆེ་བ་ཉིད་དང་། ཡོངས་སུ་དག་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་"རབ་འབྱོར་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ནམ་མཁའ་ཚད་གཟུང་བར་སླའམ། རབ་འབྱོར་གྱིས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ། །རབ་འབྱོར་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གང་ཞིག་མི་དམིགས་པར་སྦྱིན་པ་བྱིན་པ་དེའི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་གཟུང་བར་སླ་བ་མ་ཡིན་ནོ་"ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུ་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།[2] སྦྱིན་པའི་སྒྲ་ནི་འདིར་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་ཅར་ཡིན་པར་བཞེད་དེ། སྦྱིན་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་ཅེས་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་འབྱུང་གནས་ལས་ཀྱང་།[3] "བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བློ་གྲོས་རབ་ཏུ་ཞི་བ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཆེད་དུ་སྤྱོད་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་སྟེ། སྦྱིན་པ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །ལེན་པ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །ཡོན་གནས་ཀྱང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། བསྔོ་བ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །གང་

1 མ་རྟེད།

2 རྡོ་རྗེ་གཅོད་པ། སྡེ་བཀའ། ཤེར་ཕྱིན། ཀ ༡༣༣ ན ༣

3 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༣༨༨ བ ༨

(236a)སྒོ་བར་བྱེད་པ་དེ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། གང་དུ་སྒོ་བར་བྱེད་པ་དེ་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྦྱིན་པ་ནི་སྦྱིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་ལེན་པ་དང་། ཡོན་གནས་དང་། སྦྱིན་པའི་འབྲས་བུ་དང་། ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པ་ལ་ཡང་སྦྱར་བར་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་ན་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་དེ་ནི་བསམ་པ་ཚད་མེད་པའི་སྒོ་ནས་སྦྱིན་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡོངས་སུ་དག་པར་འགྱུར་ཏེ། སྦྱིན་པ་དེ་ནི་སྦྱིན་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མིང་ཡང་འཐོབ་ལ། རྫབ་རྫུབ་མ་ཡིན་པར་ཡང་འགྱུར་རོ་" ཞེས་བྱ་བ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་མི་དམིགས་པ་ལ་ཡང་དག་པར་བརྟེན་པའི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་འབྲས་བུ་ཆེ་བའི་ཕྱིར་དང་། ཡོངས་སུ་དག་པའི་ཕྱིར་འབྲས་བུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ལག་མཐིལ་ན་ཡོད་པ་དང་འདྲ་བས་དེའི་ཕྱིར་དམིགས་པ་ཅན་གྱི་[1]གོ་སྐབས་ཐག་བསྲིངས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།།

(77)གང་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལ་དོན་གང་ཡིན་པར་འདོད། གལ་ཏེ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་རྣམ་པར་བཞག་ན་ཡང་འགལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་གཞན་ལ་ལྟོས་ནས་ཡོད་པ་དང་སྔ་ན་མེད་པ་ཡང་མི་འཐད་དེ། ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དག་ནི་གཅིག་ལ་རིམ་གྱིས་ཀྱང་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ།།

1 དམིགས་པ་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ པ།

དེའི་ཕྱིར་དངོས་པོའི་འདི་དག་ནི་ཡང་དག་པར་ན་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་གཞན་ལ་རག་ལས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །ངོ་བོ་ཉིད་ནི་བྱས་པ་ཉིད་དུ་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲར་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །འདི་དག་ཡང་དག་པར་ན་གཞན་ལས་ཀྱང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ཡང་སྨྲར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་ཟིན་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ཡིན། ཐ་སྙད་དུ་ནི་འདི་དག་གཞན་ལ་ལྟོས་པའི་བདག་ཉིད་དུ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རྟག་ཏུ་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པར་ཐལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་དངོས་པོ་རྣམས་རང་བཞིན་གྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བཅས་པ་ཡིན་ན་རང་གི་(236b)བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཡང་མེད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་གནས་པ་མི་འཐད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ།། དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཡང་དག་པར་ཡོད་པ་གཅིག་ལ་ནི་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དང་། གནས་པ་དང་། མི་གནས་པ་ལ་སོགས་པ་ཕན་ཚུན་འགལ་བའི་ཆོས་དང་ལྡན་པར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེས་ན་འདི་དག་རང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། རང་གི་ངོ་བོ་ལ་མི་གནས་པའི་ཕྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གསལ་རབ་ཏུ་མངོན་པས་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ག་ལ་ཡིན། ཀུན་བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡིན་ན་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲར་བསྒྲུབས་ཟིན་ཏེ། ཚད་མས་གནོད་པ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་[1]པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་ཡང་ཡང་དག་པར་ན་ཚད་མས་གནོད་པ་ཉིད་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཀུན་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་རིགས་ཀྱི། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་ཡེ་ཤེས་དམ་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་

1 ངོ་བོ་ཉིད་ པ།

དངོས་པོའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཡང་དག་པ་པ་ཡང་ཡོད་[1]པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྨྲ་རིགས་པ་དང་ལུང་དག་གིས་བསྟན་ཟིན་ཏོ། །ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡང་དངོས་པོའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཡང་དག་པ་པ་ལ་བརྟེན་པར་གང་དུ་ཡང་ཡང་དག་པར་མ་གྲུབ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་ཐ་སྙད་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པར་རྣམ་པར་གཞག་ཅེས་བཤད་ཟིན་ཏོ།།

(78)གང་ཡང་གལ་ཏེ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དང་པོ་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨྲས་པ་དེ་ལ་ཡང་གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་གཟོད་མ་ནས་སོ་སོར་ཞི་བའི་ཕྱིར་མ་སྐྱེས་པ་ཉིད་དུ་འདོད་ཀྱི། འཁོར་བ་ཐོག་མ་མེད་པ་ཉིད་ཙམ་གྱི་ཕྱིར་ཡང་མ་ཡིན་ལ། སྔོན་འགགས་པ་ཡང་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །སྔོན་མེད་པའི་ཆོས་མི་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བྱིས་པའི་སྐྱེ་བོའི་སྐྲག་པ་ཡོངས་སུ་སྤང་བའི་ཕྱིར་རྣམ་པ་འདི་དག་གིས་ཀྱང་དངོས་པོ་རྣམས་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་སོགས་པར་བསྟན་པ་ཡིན་དུ་ཆུག་ཀྱང་། འདི་དག་ཁོ་ནས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ངེས་པར་བཟུང་སྟེ། རང་དང་གཞན་ལ་སོགས་པ་ལས་སྐྱེ་བ་མེད་པར་ཡང་སྨྲར་བསྟན་ཟིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

ཀུན་བརྟགས་པའི་བདག་ཉིད་(237a)དང་། བདག་ཉིད་མི་སྐྱེ་བ་ཡིན་ན་ཡང་གྲུབ་པ་བསྒྲུབ་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ད་གཟོད་བསྟན་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཐ་སྙད་པའི་སྐྱེ་བ་ཁས་བླངས་པས་[2]རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་

1 ཡང་དག་དག་པ་ཡོད་" པ།
2 བླངས་པ་ སྣ། པ།

ཕྱིར། སྐྱེ་བ་མེད་པར་ཁས་ལེན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། ཡང་དག་པ་པ་ཡང་མ་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་རོ་གཅིག་པའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པ་ཁོ་ནར་ཁྱད་པར་སྐྱེ་བ་མེད་པར་ཁས་བླངས་ཀྱང་། གྲུབ་པ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ།། འཇིག་རྟེན་ན་གྲགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་བསམས་ནས་ཁྱད་པར་སྐྱེ་བ་མེད་པར་རྗོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་པས་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་འགལ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་རྣམས་བྱ་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྐྱེ་བ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་དང་། དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པས་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་མེད་པར་ཁས་བླངས་ཀྱང་དེ་ཙམ་ཁོ་ནས་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་སྔར་བཤད་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་པས། དེའི་ཕྱིར་མི་འདོད་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ། །གང་ཡང་མདོ་སྡེ་མང་པོ་དང་འགལ་བ་གཞན་ཡང་སྔང་ངོ་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལན་བཏབ་[1]ཟིན་ཏོ།།

[2]གང་ཡང་ཐེག་པ་གསུམ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར། སྒྲུབ་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་དཔགས་པའི་དད་པའི་བྱེ་བྲག་ལས་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བསྟན་པ་དེ་ཡང་ཐེག་པ་གསུམ་བསྒྲུབ་པར་នུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པའི་བྱེ་བྲག་དཔག་ཏུ་མེད་པར་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདིས་ནི་གང་གིས་ན་ཐེག་པ་གསུམ་ཁོ་ན་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་རིགས་དཔག་ཏུ་ཡོད་པ་གསུམ་ཞིག་ངེས་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལས་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་དཔག་ཏུ་མེད་པར་ཤེས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །མདོ་ལས་ཀྱང་། དེ་སྐད་དུ

1 ལན་སྟར་ སྣ། པེ།
2 ས་ཐར་ཐུག་ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་བཞེད་པ་འགོག་པའི་གཞུང་འདི་ནས་ཚུགས།

འབྱུང་བས་དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པའི་བྱེ་བྲག་དཔག་ཏུ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ནི་གང་གིས་ན་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཇི་སྙེད་པ་དེ་སྙེད་ཀྱི་ཐེག་པ་ཡང་ཤེས་པར་འགྱུར་བ་སྟོན་པ་དང་ལྡན་པ་དང་དད་པའི་བྱེ་བྲག་ངེས་པར་ཡང་མི་སྣང་སྟེ། མ་ངེས་པར་སྒྲུབ་པའི་[1]ཕྱིར་རོ།།

འདི་ལྟར་རེས་འགའ་གང་དག་གཞན་ལ་ཕན་པའི་བསམ་པ་གཅིག་པུ་ལ་ཞུགས་པར་སྣང་བ་དེ་དག་ཉིད་ཡང་མི་དགེ་བའི་གྲོགས་པོ་དང་ཕྲད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒོ་ནས་རྒྱུ་མེད་པ་ཁོ་ནར་གཞན་སྡུག་(237b)བསྔལ་བར་མངོན་པར་དགའ་བར་ཀུན་ཏུ་སྣང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་གང་དག་རྒྱུ་མེད་པ་ཁོ་ནར་གཞན་སྡུག་བསྔལ་བར་མངོན་པར་དགའ་བར་ཀུན་ཏུ་དམིགས་པ་དེ་དག་ཀྱང་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང་ཕྲད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒོ་ནས་ཡང་གཞན་ལ་ཕན་པའི་བསམ་པ་གཅིག་པུ་ལ་བཞུགས་པར་ཡང་སྣང་བ་ཉིད་དོ། །གང་དག་རང་ལ་ཕན་པ་དང་། བདེ་བ་ཅུང་ཟད་ཙམ་ལ་ཡིད་ཆགས་ཤིང་གཞན་ལ་འཁྲུ་བར་ཀུན་ཏུ་དམིགས་པ་དེ་དག་ཀྱང་། གཞན་ལ་འཁྲུ་བར་འདོད་པ་ལོག་པར་ཡང་དམིགས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་གང་དག་རང་ལ་ཕན་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་སྒྲུབ་པ་ལྷུར་ལེན་ཅིང་། གཞན་ལ་གནོད་པར་དགའ་བར་སྣང་བ་དེ་དག་ཀྱང་། གཞན་ལ་ཕན་པ་གཅིག་པུ་ལ་ཞུགས་པར་ཡང་སྣང་ངོ། གང་དག་འཁོར་བའི་བདེ་བ་ཙམ་འདོད་ཅིང་། བསོད་ནམས་དག་བྱེད་པར་མཐོང་བ་དེ་དག་ཀྱང་། སྲིད་པའི་བདེ་བ་འདོད་པ་ལས་རྣམ་པར་ལོག་ཅིང་ཡང་དེ་དག་བྱེད་པར་ཡང་སྣང་ངོ་། །དེ་ལྟ་བས་ན་སྒྲུབ་པ་མ་ངེས་པར་སྣང་བ་ལས་དད་པ་མ་ངེས་པར་ཇི་སྙེད་དཔག་ལ། དེར་ཇི་སྙེད་སུ་

1 སྣང་བའི་ སྣ།

དཔག་པ་ལས་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཀུང་མ་ངེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཤེས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་མ་ངེས་པའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་འདི་ལས་ཐེག་པ་གསུམ་ངེས་པར་འགྱུབ། སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་སྣ་ཚོགས་པར་བསྟན་པས་ཀུང་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ངེས་པ་ཤེས་པར་ནི་མི་འགྱུར་རོ། །མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རིགས་ལྔ་འབྱུང་བ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀུང་གཅིག་ངེས་པ་ལས་དགོངས་ཏེ་གསུངས་ཀྱི། གཏན་དུ་བའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། མདོ་དེ་ཉིད་ལས་ཀུང་དེ་བཞིན་དུ་རིགས་གཏན་དུ་བ་མ་ཡིན་པར་བསྟན་ཏེ། "བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདོད་པ་ཅན་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཐམས་ཅད་སྤངས་པ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་བརྒྱ་ལ་རེས་འགའ་ཞིག་ན་ཡང་དགེ་བའི་རྩ་བ་རྣམས་སློང་བར་བྱེད་དེ། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་མ་བཏང་ངོ་"[1] ཞེས་གང་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ།། དེའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་གཞན་དག་ཀུང་བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སྨོན་པ་ལ་སོགས་པར་འགྱུར་བ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ།།

གང་ཡང་འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཐེག་པ་གསུམ་ (238a)བསྟན་པ་དེ་ཡང་ཁུངས་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སྣ་ཚོགས་དག་ཏུ་ཐེག་པ་སྣ་ཚོགས་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་བསྟན་པ་ལ་འཇུག་གི །ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་སྒོ་ཁོ་ན་ནས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་སྟོང་པོས་བརྒྱན་པ་ལས་ཀུང་།[2] "འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དཔལ་རྣམ་པར་

---

1 ལང་གཤེགས། སྡེ་དགའ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༨༡ ན ༦

2 སྡེ་དགའ། ཕལ་ཆེན།

སྣང་བྱེད་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་ཏུ་ཡེ་ཤེས་རིན་པོ་ཆེའི་འོད་ཟེར་དཔལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཏོག་གི་རྒྱལ་པོས་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་མ་ཐག་ཏུ་སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ས་ལ་བཀོད་དོ། །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བཀོད་དོ། སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་དབང་པོ་ཡོངས་སུ་དག་པར་རབ་ཏུ་བསྒོམ་པས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བཀོད་དོ། །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་སྦྱོབས་པས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བཀོད་དོ། །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་རྫུ་འཕྲུལ་ཐམས་ཅད་དུ་སོང་ཞིང་ཐེག་པའི་ཚུལ་ཐ་དད་པས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བཀོད་དོ། །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་སྦྱོར་བ་དང་སྤྱོད་པ་ཚད་མེད་པ་དག་ལ་ཡང་དག་པར་གཞོལ་བས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བཀོད་དོ། །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་འཇུག་པས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བཀོད་དོ། །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་དམིགས་པའི་ཡུལ་ཡོངས་སུ་དག་པ་སྙིང་པོའི་ཚུལ་གྱིས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བཀོད་དོ། །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སར་སེམས་བསྐྱེད་དུ་བཅུག་གོ །སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མེད་པ་དག་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ལམ་ལ་བཀོད་དོ་"ཞེས་བྱ་བ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་བྱིས་པ་རྣམས་གཟུད་པའི་ཕྱིར་ཐེག་པའི་བྱེ་བྲག་རྣམ་པར་གཞག་པར་བསྟན་གྱི། ངེས་པའི་དོན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བཤད་དེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་(238b)གཤེགས་པ་ལས་ཇི་སྐད་དུ།།[1]

1 སྡེ་དགེ། མདོ་སྡེ། ཅ། ༡༧༥ བ ༥

ལྷ་ཡི་ཐེག་དང་ཚངས་པའི་ཐེག །
དེ་བཞིན་དུ་ནི་ཉན་ཐོས་དང་། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་དང་རང་རྒྱལ་གྱི། །
ཐེག་པ་འདི་དག་ངས་བཤད་དེ། །
ཇི་སྲིད་སེམས་ནི་འབྱུང་བའི་བར། །
ཐེག་པ་རྣམས་ལ་ཐུག་པ་མེད། །
སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ན། །
ཐེག་པ་མེད་ཅིང་འགྲོ་བ་མེད། །
ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་ང་སྨྲ་ཏེ། །
ཐེག་པ་རྣམ་གཞག་ཡོད་མ་ཡིན། །
ཁྲིས་པ་རྣམས་ནི་ཡོངས་དྲང་ཕྱིར། །
ཐེག་པ་ཐ་དད་ངས་བཤད་དོ། །

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེའི་ཕྱིར་འཕགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་པདྨ་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པ་ལས། ཐེག་པ་གཅིག་ཏུ་བསྟན་པ་དྲང་བའི་དོན་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་སྐད་དུ་དེ་ལ་"ཤཱ་རིའི་བུ། གཞན་ཡང་གང་གི་ཚེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་སྙིགས་མ་ལྔའི་དུས་སེམས་ཅན་རྣམས་དྲི་མ་མང་ཞིང་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཆུང་བར་གྱུར་པ་ན། འབྱུང་བ་དེའི་ཚེ་ཐབས་མཁས་པས་ཐེག་པ་གཅིག་པོ་དེ་ཉིད་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་བསྟན་པས་སྟོན་ཏེ་"[1] ཞེས་གསུངས་སོ། །ཡང་"ཤཱ་རིའི་བུ་ང་ལ་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཇ། ༡༡༣ མདོའི་ནང་ལུང་འདྲེན་འདིའི་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྣེ།

དད་པར་གྱིས་ཤིག ང་ལ་ཡིད་ཆེས་པས་གྱིས་ཤིག ངེས་པར་ཟུང་ཤིག ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་ནི་བརྫུན་གསུངས་པ་མི་མངའོ། ཤཱ་རིའི་བུ་ཐེག་པ་ནི་འདི་གཅིག་པོ་ནར་ཟད་དེ། འདི་ལྟ་སྟེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པའོ་"[1] ཞེས་གསུངས་སོ། །ཡང་།[2]

མི་མཁས་གང་དག་དམན་ལ་མངོན་དགའ་ཞིང་། །
སངས་རྒྱས་བྱེ་བ་མང་ལ་སྤྱོད་མ་སྤྱོད། །
འཁོར་བ་ལ་ཆགས་ཤིན་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་བ། །
དེ་དག་རྣམས་ལ་མྱ་ངན་འདས་པ་བསྟན། །
སངས་རྒྱས་ཡེ་ཤེས་རབ་ཏུ་རྟོགས་བྱའི་ཕྱིར། །
ཐབས་ནི་རང་བྱུང་གིས་ནི་མཛད་འགྱུར་གྱི། །
དེ་དག་རྣམས་ལ་ཁྱེད་ཅག་སངས་རྒྱས་སུ། །
འགྱུར་རོ་ཞེས་ནི་ནམ་ཡང་མི་གསུང་ངོ་། །
ཅི་ཕྱིར་ཞེ་ན་སྐྱོབ་པ་དུས་ལ་གཟིགས། །

འོན་ཀྱང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ། ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་བསྐལ་པའི་སྙིགས་མ་ལས་བྱུང་ངམ། སེམས་ཅན་གྱི་སྙིགས་མའམ། ཉོན་མོངས་པའི་སྙིགས་མའམ། ལྟ་བའི་སྙིགས་མའམ། ཚེའི་སྙིགས་མ་ལས་བྱུང་ན། ཤཱ་རིའི་བུ་འདི་ལྟ་བུར་བསྐལ་པ་དང་འཁྲུལ་པའི་སྙིགས་མ་དང་དྲི་མ་མང་པོ་དང་བཀྲམ་པའི་སེམས་ཅན་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཆུང་བ་དེའི་ཚེ། ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐབས་མཁས་པས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ་གཅིག་པོ་དེ་ལས་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་བཤད་དེ་བསྟན་ཏོ།།

1 དམ་ཆོས་པད་དཀར། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཇ། ༡༩ བ ༡

2 དམ་ཆོས་པད་དཀར། སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཇ། ༡༡༩ བ ༧

དལ་བ་གཟིགས་ནས་དེ་ཡི་འོག་ཏུ་གསུངས། |
དལ་བ་དེ་ནི་དེ་ལྟར་ཇི་ཞིག་ལྟར། |
ཐོབ་པས་དེ་ཕྱིར་ཡང་དག་ངེས་འདིར་བཤད། |
སངས་རྒྱས་ཡེ་ཤེས་རབ་ཏུ་རྟོགས་བྱའི་ཕྱིར། |
འཇིག་རྟེན་དུ་ནི་མགོན་པོ་གཅིག་པུ་འབྱུང་། |
ཐེག་པ་གཅིག་སྟེ་ཐེག་པ་གཉིས་པ་མེད། |
སངས་རྒྱས་ཐེག་པ་དམན་པས་ཁྲིད་མི་མཛད། |
གང་ལ་སངས་རྒྱས་རང་འབྱུང་བདག་ཉིད་གང་། |
རབ་ཏུ་གནས་ཤིང་རྟོག་ལམ་གང་ཅི་འདྲ། |
སྟོབས་དང་བསམ་གཏན་རྣམ་པར་ཐར་དང་དབང་། |
དེ་ཉིད་ལ་ནི་(239b)སེམས་ཅན་རྣམས་འགོད་དོ། |
རྡུལ་བྲལ་བྱང་ཆུབ་ཁྱད་པར་ཅན་རིག་ནས། |
གལ་ཏེ་ང་ཡིས་ཐེག་པ་དམན་པ་ལ། |
སེམས་ཅན་འགའ་ཞིག་བཀོད་པར་འགྱུར་ན་ཡང་། |
ང་ལ་སེར་སྣའི་ཉེས་འགྱུར་ལེགས་མ་ཡིན། |
ཐེག་པ་གཅིག་སྟེ་གཉིས་པ་ཡོད་མ་ཡིན། |
གསུམ་པའང་ནམ་ཡང་ཡོད་མིན་འཇིག་རྟེན་ན། |
སྐྱེས་བུ་མཆོག་རྣམས་ཐབས་ཀྱི་ཐེག་པ་གང་། |
སྣ་ཚོགས་ཉེ་བར་སྟོན་པར་མཛད་མ་གཏོགས། |

ཞེས་བཤད་དོ། །

དེ་ལ་ཐྲིས་པའི་སྐྱེ་བོ་ཁྲིམ་ཀུན་ཏུ་འབར་བ་ན་གནས་པ་གདོན་པའི་ཐབས་སུ་གཞན་པའི་ཁྱད་པར་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་དཔེ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་འདྲེན་པའི་སྐྱེ་བོ་རིན་པོ་ཆེའི་གླིང་ན་གནས་པ་ལྡོག་པར་བྱ་བའི་ཐབས་གཞན་འཇྲོག་དགོན་པའི་དབུས་སུ་གྲོང་ཁྱེར་སྤྲུལ་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པའི་དཔེས་ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ་ཐབས་ཀྱི་བསྟན་པ་ཉིད་དུ་སྟོན་པར་མཛད་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དྲང་བའི་དོན་དུ་གསུངས་ཏེ། འཕགས་པ་བདེན་པ་པོའི་ལེའུ་ལས་ཀྱང་།[1] "འཇམ་དཔལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་ཐེག་པ་གཅིག་གིས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་ཐེག་པའི་སྙིང་པོ་དང་ལྡན་པར་འགྱུར། ང་ལ་ནི་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ་རྣམ་པར་འཇོག་པ་མེད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནི་འདུ་ཤེས་ཐ་དད་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འཇམ་དཔལ་གལ་ཏེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཁ་ཅིག་ལ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྟོན་པར་འགྱུར་ལ། ཁ་ཅིག་ལ་ནི་རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ། ཁ་ཅིག་ལ་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ་སྟོན་པར་འགྱུར་ན། དེ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཐུགས་ཡོངས་སུ་མ་དག་པར་ཡང་འགྱུར་ཞིང་། མཛོན་པར་ཞེན་པའི་ཉེས་པར་ཡང་འགྱུར། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉེ་ཚེ་བར་ཡང་འགྱུར་ལ། འདུ་ཤེས་ཐ་དད་པར་འགྱུར། ཆོས་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་དཔེ་མཁྱུད་བྱས་པར་ཡང་འགྱུར། འཇམ་དཔལ་གཞན་ཡང་ང་ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཆོས་གང་དང་གང་སྟོན་པ་དེ་དག་ཐམས་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། པ། ༨༤ བ ༡ མདོ་འདི་ལ་འཕགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི་ཐབས་ཀྱི་ཡུལ་ལ་རྣམ་པར་འཕྲུལ་བ་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཞེས་འཕོད་འདུག དེབ་ཨང་ ༡༤༦

ཅན་བྱང་ཆུབ་ལ་གཞོལ་བ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་འབབ་པ་དང་། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་འདྲེན་པར་བྱེད་པ། ཕྱོགས་གཅིག་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། དེ་ལྟ་བས་ན་ང་ལ་ཐེག་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་མེད་དོ། །འཇམ་དཔལ་ཐེག་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པས་ས་རྣམ་པར་གཞག་པར་མཛད་པ་ཡིན། འདི་ནི་གང་ཟག་རྣམ་པར་གཞག་པར་མཛད་པ་ཡིན། ཚོགས་ཆུང་ངུ་དང་། ཚོགས་ཚད་མེད་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཡིན་གྱི། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ལ་ནི་ཐ་དད་པ་མེད་དོ། །འདི་ནི་འཇུག་པའི་སྒོ་བསྟན་པ་ཡིན་ཏེ། འཇུག་པ་བསྟན་པ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཡིན་གྱི། དོན་དམ་པ་ནི་མ་ཡིན་པས་ཐེག་པ་ནི་གཅིག་ཏུ་ཟད་དེ། གཉིས་པ་ནི་མེད་དོ་ཞེས་གསུངས་སོ།།

འཕགས་པ་དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེའི་ང་རོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།[1] "ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ཐེག་པ་གསུམ་པོ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐབས་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་གཅིག་རྟོགས་པས་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ༣༧༠ ན ༣ མདོའི་ནང་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཞེས་བགྱི་བ་འདི་ནི། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐབས་ལགས་སོ། །དེ་ཅིའི་སླད་དུ་ཞེ་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ནི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་བརྙེས་པས་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པ་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟ་བ་དག་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་ཐེག་པ་གཉིས་པོ་ཐབས་ཀྱིས་སྐྲུབ་པས་བསྒྲུབས་པ་དེ་དག་ཀྱང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་བདག་ཉིད་ཀྱི་སླད་དུ་ལགས་སོ།། བཅོམ་ལྡན་འདས། ཐེག་པ་འདི་གཉིས་ཀྱི་མིང་ནི་མ་མཆིས་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཡང་དག་པར་ན་འདི་ལ་ཐེག་པ་གཅིག་པོ་ནི་ཐེག་པ་ཡང་དག་པ་ལགས་ཏེ། ཐེག་པ་གསུམ་ཡང་དག་པར་འདུའོ།།

དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གཅིག་བསྟན་པ་དགོངས་པ་ཅན་ཉིད་ཡིན་པར་ནི་བར་རྫོད་པར་བྱེད་པས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་ཐེག་པ་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་སྨྲས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་པདྨ་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པ་ལས་འབྱུང་བ་དང་། གཅིག་ཁོ་ནར་མི་མཐུན་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བར་ངེས་པར་གཟུང་ངོ། དེ་ལྟ་བུ་ལ་དགོངས་ཏེ། བསྟན་པ་ནི་མ་ཡིན་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་། འཕགས་པ་ཆོས་བཅུ་པ་ལ་སོགས་པ་ལས། ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ་ཐབས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་འབའ་ཞིག་ཡིན་པར་བསྟན་[1]པའི་ཕྱིར་གདུལ་བྱའི་སྐྱེ་བོ་ལ་ཐེག་པ་གཅིག་བསྟན་པ་དགོངས་པ་བསྟན་ཏོ་ཞེས་གསུངས་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དོ། །ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ་འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་ཐབས་ཡིན་གྱི། བདེནཔ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པ་ནི་གདུལ་བྱ་རྣམས་ནི་དེ་ལ་ཞུགས་པར་མི་ནུས་སོ། མདོ་སྡེའི་རྒྱན་ལས་ཀྱང་།[2] འདི་དང་མཐུན་པར་ཐེག་པ་གཅིག་བསྟན་པ་དགོངས་པ་ཅན་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བསྟན་ཏོ།།

གང་ཡང་ཉན་ཐོས་རྣམས་བག་ལ་ཉལ་ཆད་ན་སྐྱེ་བ་ཡང་གཏན་དུ་ཡང་དག་པར་ཆད་པས་འདི་དག་སྐྱེ་བ་དུ་མ་བརྒྱུད་པས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་སངས་རྒྱས་ཉིད་དུ་ལྟ་ག་ལ་འགྱུར་ཞེས་སྨྲས་པ་དེ་དང་དེ་དག་གི་སྐྱེ་བ་གཏན་དུ་(240a)ཡང་དག་པར་ཆད་

1 བསྟན་ སྣ། པེ།

2 སྡེ་བསྟན། སེམས་ཙམ། ཕི། ཁ་ཅིག་དག་ནི་དྲངས་ཕྱིར་དང་། །གཞན་དག་ཡང་དག་གཟུང་བའི་ཕྱིར། །རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ནི། །མ་ངེས་རྣམས་ལ་ཐེག་གཅིག་བཤད།། ༡༥ ན ༧

པར་མ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འཕགས་པ་དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེའི་ང་རོའི་མདོ་ལས།[1] "ཇི་སྐད་དུ། དགྲ་བཅོམ་པ་ལ་ཡང་འཇིགས་པ་མཆིས་ཏེ། དེས་སྐྲག་པའི་དགྲ་བཅོམ་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀུང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཁོ་ན་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ལྷ་ལགས་པས་ཉན་ཐོས་དགྲ་བཅོམ་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀུང་སྐྱེ་བའི་ལྷག་མ་དང་བཅས་པའི་ཆོས་ཅན་ལགས་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་གི་སྐྱེ་བ་ཟད་པ་མ་ལགས་ཏེ། སྐྱེ་བ་མཆིས་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་ནི་ལྷག་མ་དང་བཅས་པ་ལགས་ཀྱི། སྐྱེ་བ་བས་ནི་མ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་གི་ལས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་མ་ལགས་ཏེ། དེ་དག་ལ་ནི་གྱི་བ་མང་དུ་མཆིས་སོ།། དེ་དག་ལ་ནི་གང་དག་མ་སྤངས་ན་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་དབྱིངས་ལས་ཐག་རིང་དུ་གྱུར་པ་སྤང་བར་བགྱི་བའི་ཆོས་ཀུང་མང་དུ་མཆིས་སོ"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

གང་ཡང་དེ་དག་གི་སྐྱེ་བ་ཟད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཟད་པ་དང་། མི་སྐྱེ་བ་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་དེ་ཡང་མདོ་དེ་ཉིད་ལས་དྲང་བའི་དོན་ཡིན་པར་བཤད་དེ།[2] ཇི་སྐད་དུ་"བཅོམ་ལྡན་འདས་དགྲ་བཅོམ་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པ་མཐར་ཐུག་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་། དབུགས་འབྱིན་པའི་རྗེས་སུ་དྲན་པ་བཞི་པོ་གང་དག་ལགས་པ་དེ་དག་ནི་དགོངས་པ་ཅན་ཏེ། ཐེག་པ་དང་བཅས་པ་དྲང་བའི་དོན་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་ལུང་བསྟན་པར་བགྱི་བ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ཅིའི་

1 སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཆ། ༣༨༨ ན ༡

2 དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེ་ང་རོའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཆ། ༣༨༨ བ ༥

ཕྱིར་ཞེ་ན། འཆི་འཕོ་བ་ནི་འདི་གཉིས་ལགས་ཏེ། རྣམ་པར་ཆད་པའི་འཆི་འཕོ་བ་དང་། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བའི་འཆི་འཕོ་བའོ། །དེ་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམ་པར་ཆད་པའི་འཆི་འཕོ་བ་ནི་སེམས་ཅན་ཉིད་མཚམས་སྦྱོར་བ་དང་བཅས་པ་རྣམས་ཀྱི་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དགྲ་བཅོམ་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དབང་ཐོབ་པ། ཡིད་ཀྱི་ལུས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་འཆི་འཕོ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྙིང་པོ་ལ་ཐུག་གི་བར་དུ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་འཆི་འཕོ་བ་ནི་འདི་གཉིས་ལས་རྣམ་པར་ཆད་པའི་འཆི་འཕོ་བའི་དབང་དུ་བགྱིས་ཏེ། དགྲ་(240b)བཅོམ་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དག་གི་སྐྱེ་བ་ཟད་དོ་སྙམ་པའི་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་ལགས་སོ་"ཞེས་བྱ་བ་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།། དེ་ཉིད་ལས་[1]འདི་དག་ལ་མ་རིག་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་སའི་རྐྱེན་ཅན་ཟག་པ་མེད་པ་ལས་ཀྱི་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བའི་སྐྱེ་བ་ཡོད་དོ་ཞེས་འབྱུང་སྟེ།[2] བཅོམ་ལྡན་འདས་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་ཉེ་བར་ལེན་པའི་རྐྱེན་ཅན་ཟག་པ་དང་བཅས་པའི་ལས་ཀྱི་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བའི་སྲིད་པ་གསུམ་འབྱུང་བ་དེ་བཞིན་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དགྲ་བཅོམ་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་ལུས་མ་རིག་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་སའི་རྐྱེན་ཅན་ཟག་པ་མེད་པའི་ལས་ཀྱི་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བ་སྐུ་གསུམ་འབྱུང་ངོ་ཞེས་རྒྱས་པར་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ།།

འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་། དེ་དག་ཁམས་གསུམ་ལས་

---

1 གཉིས་ལས་ སྐྱེ།

2 དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེ་ང་རོའི་མདོ། སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཀ། ༣༦༥ བ ༧

འདས་པ་ཡིན་ཡང་ཟག་པ་མེད་པའི་ཁམས་ལ་རྣམ་པར་གནས་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་ཡང་སྐྱེ་བ་ལ་དབང་ཐོབ་པའི་སྒོ་ནས་ཚོགས་གཉིས་ཡོངས་སུ་བཀང་སྟེ། སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། "བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གང་གི་ཚེ་དེ་དག་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པ་རྟོགས་ནས་ཉེས་པའི་བག་ཆགས་ཐམས་ཅད་སྤངས་པར་འགྱུར་པ་དེའི་ཚེ་བག་ཆགས་ཀྱི་ཉེས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་མྱོས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཟག་པ་མེད་པའི་དབྱིངས་ནས་སད་དོ།། ཡང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དབྱིངས་སུ་གཏོགས་པའི་ཚོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱས་ཏེ། ཆོས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ།།

དཔེར་ན་ཤིང་ནི་རྒྱ་མཚོ་རུ། །
དབའ་རླབས་ཀྱིས་ནི་རབ་གཡེངས་པ། །
དེ་བཞིན་ཉན་ཐོས་སྨྱོངས་པ་ཡང་། །
མཚན་ཉིད་ཀྱིས་ནི་རབ་ཏུ་གཡེངས། །
དེ་དག་ཉོན་མོངས་བག་ཆགས་འབྲེལ། །
ཀུན་ནས་ལྡང་དང་ལྡན་མ་ཡིན། །
ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ལུས་ཐོབ་ནས། །
ཟག་པ་མེད་པའི་ཁམས་ལ་གནས། །
དེ་ལ་མཐར་ཐུག་ཡོད་མིན་ཞིང་། །
ཕྱིར་ལྡོག་པ་ཡང་ཡོད་མ་ཡིན། །
ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་མྱོས་པས་མྱོས། །

བསྐལ་པའི་བར་དུ་མི་སད་དོ། །
དཔེར་ན་སྐྱེས་བུ་སྨོས་པ་ནི། །
སྨོས་འགྱུར་མེད་ན་སངས་པ་ལྟར། །
དེ་བཞིན་དེ་དག་ང་ཡི་སྐུ། །
སངས་རྒྱས་ཆོས་ཞེས་བྱ་བ་འཐོབ། །[1]

ཅེས་གང་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལ་ཤིང་དང་(241a)རྒྱ་མཚོའི་དཔེས་ནི་འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོར་མི་བྱེད་བར་བསྟན་ཏོ། །དེ་དབའ་རླབས་ཀྱི་དཔེས་ནི་ཆོས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དབང་གིས་གཅིག་ཏུ་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་ཏོ། ཉོན་མོངས་བག་ཆགས་འབྲེལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་མ་རིག་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་སའི་འཆིང་བ་ལས་ནི་མ་གྲོལ་གྱི། ཉོན་མོངས་པ་ཀུན་ནས་ལྡང་བ་ཙམ་ལས་གྲོལ་ལོ་ཞེས་བསྟན་ཏོ།།

དེ་ལ་མཐར་ཐུག་ཡོད་མིན་ཞིང་།།

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་ཞུགས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ལ། འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོར་འབྲུམས་པ་ཡང་མ་ཡིན་གྱི། ཟག་པ་མེད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་ཟག་པ་མེད་པའི་དབྱིངས་ལ་བསྐལ་པའི་བར་དུ་ཡང་གནས་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་དེ། དེ་ལས་ལངས་ནས་ནི་ཚོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱས་ནས་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བར་ལེགས་པར་རབ་ཏུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ།།

གང་ཡང་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པ་ལས། སྤྲུལ་པའི་

1 སྡེ་དཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༡༡༨ བ ༧

ཉན་ཐོས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས་ཉན་ཐོས་ལུང་བསྟན་པར་མཛད་དོ་ཞེས་གསུངས་པ་དེ་ཡང་སེམས་ཅན་དམན་པ་ལ་མོས་པ་སྐྲག་པ་སྤང་བའི་ཕྱིར་དང་། ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ་ཐབས་ཉིད་བསྟན་པའི་ཆེད་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གོང་དུ་བཤད་པ་ཐམས་ཅད་དང་འགལ་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་འཁོར་ལོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།[1] "འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཆོས་བསྟན་པ་ནི་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་འཁོར་ལོར་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཉམ་མོ།། དེ་ལ་མི་མཛེད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཀྱི་སེམས་ཅན་དེ་དག་ནི་དམན་པ་ལ་མོས་པ་སྙིགས་མ་ལྔའི་དུས་ན་བྱུང་བ་སྟེ། ཐེག་པ་གཅིག་བསྟན་པ་ལ་མི་འཇུག་མི་མོས་པས། སེམས་ཅན་དེ་དག་རིགས་པ་འདིས་སངས་རྒྱས་ཉིད་ལ་གཏད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།།

གལ་ཏེ་དགྲ་བཅོམ་པ་རྣམས་ཟག་པ་ཟད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་མེད་པའི་ཕྱིར། སྐྱེ་བ་དུ་མ་བརྒྱུད་པས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་སངས་རྒྱས་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་ན། དེའི་ཚེ་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བར་འགྱུར་བའི་དགྲ་བཅོམ་པ་ལ་ཡང་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་མེད་པའི་ཕྱིར། (241b)དེར་མི་འགྱུར་རོ། །འོན་ཏེ་སྨོན་ལམ་གྱི་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ། ༣༥༣ ན ༥ མདོའི་ནང་ལུང་འདིའི་འགྱུར་འདི་ལྟར་བྱུང་སྟེ། སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་བསྟན་པ་ནི་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོས་འཐུན་ནོ། །གསོལ་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ཐེག་པ་གསུམ་ལ་བརྟེན་ནས་ཏེ་ཆོས་སྟོན། བཀའ་སྩལ་བ། རིགས་ཀྱི་བུ་སེམས་ཅན་དེ་དག་ནི་དམན་པ་ལ་མོས་པ་དག་སྟེ། དེ་དག་ཐེག་པ་གཅིག་ལ་མི་འཇུག་པས་ན་ཐབས་མཁས་པས། དེ་དག་དེ་ལྟར་ཉེ་བར་ཁྲིད་དོ། །རིགས་ཀྱི་བུ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱི་ཐབས་མཁས་པ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པའོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ནི་སྙིགས་མ་ལྔའི་དུས་ན་བྱུང་སྟེ། དེ་དག་ནི་ཐེག་པ་གཅིག་ལ་མ་མོས་པ་དག་གོ།

སྟོབས་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་ཉིད་མཚམས་སྦྱོར་བར་འདོད་ན་ནི་གཞན་དག་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་ཅིའི་ཕྱིར་མི་འདོད། དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "གཞན་ཡང་དེ་དག་གལ་ཏེ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པ་ལྟར་ན་རྗེས་སུ་ཡི་རང་གི ང་ནི་དེ་དག་གི་དགེ་བའི་རྩ་བའི་བར་ཆད་མི་བྱེད་དེ། ཆོས་ཁྱད་པར་ཅན་དག་པས་ཆོས་ཁྱད་པར་ཅན་ལྷག་པར་དམིགས་པར་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། "།དེ་ལ་གལ་ཏེ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྣོད་མ་ཡིན་པར་གྱུར་ན། དེའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་ང་ནི་དེ་དག་གི་དགེ་བའི་རྩ་བའི་བར་ཆད་མི་བྱེད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །གཏན་མི་སྲིད་པ་ལ་ནི་བར་ཆད་མི་སྲིད་དོ། །གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ངེས་པ་ལས་དགོངས་ནས་དགྲ་བཅོམ་པ་ཞི་བའི་འགྲོད་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ཀྱི། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ངེས་པའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་པདྨ་དཀར་པོ་ལས་ཀྱང་།[2] "དགེ་སློང་ངམ་དགེ་སློང་མ་གང་ལ་ལ་ཞིག་དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་དུ་ཁས་འཆེ་ཞིང་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སྨོན་ལམ་[3]ཡོངས་སུ་མི་འཛིན་པར་བདག་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ་ལ་རེ་བ་མེད་དོ་ཞེས་སྨྲ་ཞིང་། བདག་གི་ལུས་ཀྱི་མྱ་ངན་ལས་འདས་

---

1 མ་རྙེད།

2 མདོ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཇ། ༡༩ ན ༥

3 ཁུངས་ཀྱི་མདོ་ཉིད་ལས་འདི་ལྟར་གསལ་ཏེ། མི་འཛིན་ཏེ། ང་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པ་བཅད་པའོ། །ལུས་འདི་ཐམས་ཅད་མྱ་ངན་ལས་འདས་སོ་ཞེས་ཟེར་བ་ནི། ཤཱ་རིའི་བུ། རིག་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་དུ་ཤེས་པར་བྱ།

པའི་མཐའ་ནི་འདི་ཙམ་དུ་ཟད་དོ་ཞེས་སྨྲ་ན། ཤཱ་རིའི་བུ་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་ཡིན་པར་ཤེས་པར་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་ཡང་དགྲ་བཅོམ་པ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་ཟད་པའི་ཕྱིར་ཉིད་མཚམས་སྦྱོར་བ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་མེད་དེ། དེ་ཁོ་ནར་ཟད་དོ། །ཉན་ཐོས་བདེན་པ་མཐོང་བ་གང་ཡིན་པ་དང་། ཕྱིར་མི་འོང་བ་འདོད་པའི་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རིགས་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་གཉིས་ཁོ་ན་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ལུང་བསྟན་ཏེ། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་ཡོངས་སུ་སྒྱུར་བའི་སྐྱེ་བ་དང་ཡང་དེ་གཉིས་ཁོ་ན་དང་ལྡན་ནོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ཡང་འཕགས་པ་དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེའི་ང་རོའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དང་། འཕགས་པ་ཆོས་བཅུ་པ་(242a)ལ་སོགས་པའི་མདོ་ལས་འབྱུང་བ་དང་འགལ་བ་སྟེ། དེ་དག་ལས་ནི་དགྲ་བཅོམ་པ་ཁོ་ན་ཉིད་མཚམས་སྦྱོར་བར་ནི་བར་བསྟན་གྱི། ཕྱིར་མི་འོང་བ་དག་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་འཕགས་པ་དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེའི་ང་རོའི་མདོ་ནི་སྔར་བཤད་ཟིན་ཏོ།།

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "དེས་དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་ཐོབ་ནས་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དོན་དུ་གཉེར་ན་སྐྱེ་བ་མ་མཆིས་པར་ཇི་ལྟར་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ནི་མཁྱེན་བཞིན་དུ་འདི་སྐྱེ་བར་ལུང་བསྟན་[2]ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། བྱམས་པ་ང་ནི་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པའི་དབང་དུ་སོང་བའི་སྐྱེ་བ་འདོགས་པར་མི་མཛད་ཀྱི། འོན་

1 མ་རྙེད།

2 ལུང་མ་བསྟན་ པ།

ཀྱང་འདིའི་སྐྱེ་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་བསྒྲོ་བ་ཡིན་པར་འདོགས་པར་མཛད་དོ་"ཞེས་གསུངས་སོ། །

འཕགས་པ་ཆོས་བཅུ་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉན་ཐོས་ཟག་པ་མ་མཆིས་པ། སྲིད་པར་ཀུན་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡང་དག་པར་ཆད་པ་རྣམས་རིགས་མཆིས་སུ་ལགས་ཀྱང་། ཇི་ལྟར་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱ་བར་འགྱུར་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། རིགས་ཀྱི་བུ་དེའི་ཕྱིར་དཔེ་ཉོན་ཅིག རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་རིགས་སྤྱི་བོ་ནས་དབང་བསྐུར་བའི་བུ་ཞིག་བཟའི་གནས་ཐམས་ཅད་སློབ་པར་འགྱུར་ལ། དེ་ཡང་དབང་པོ་རྟུལ་ལ་དབང་པོ་རྣོ་བ་མ་ཡིན་པས་ཕྱིས་བསླབ་པར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྔར་སློབ། སྔར་བསླབ་པར་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཕྱིས་སློབ་པར་འགྱུར་ན་རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། འོན་ཀྱང་གཞི་དེས་དེ་རྒྱལ་པོའི་བུ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་བརྗོད་དམ། གསོལ་བ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ལྟ་མ་ལགས་སོ། །བདེ་བར་གཤེགས་པ་དེ་ལྟ་མ་ལགས་ཏེ། རྒྱལ་པོའི་བུ་ཞེས་བརྗོད་པར་བགྱི་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དབང་པོ་རྟུལ་པོ་རིགས་དང་ལྡན་པ་སྔར་བསྒོམ་པའི་ལམ་གྱིས་ཉོན་མོངས་པ་ཟད་པར་བྱེད་ཅིང་། ཕྱིས་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་ (242b) འཚང་རྒྱ་"ཞེས་བྱ་བ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །གང་ཡང་།

འགྲོ་བ་འདི་ཀུན་སངས་རྒྱས་འགྱུར་བ་སྟེ། །

1 སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཁ། ༡༦༨ བ ༡

ཞེས་བྱ་བ་འདིའི་དོན་ནི་སྙི་བོ་ཉེ་བ་ལ་ལྟོས་ཏེ་དགོངས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་རྣམ་པར་འཆད་པ་བྱེད་པ་དེ་ཡང་རང་དགའ་ཙམ་གྱིས་ཉེ་བར་བཏགས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རིགས་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དེ། འགྲོ་བ་མ་ལུས་པ་རྟུང་བ་ཉིད་དུ་གཟིགས་ནས་དེ་སྐད་དུ་གསུང་བར་འགྱུར་ན་ཡང་དེའི་ཚེ་འགལ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད་དེ། དེ་སྐད་དུ་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྲིན་ལ་སོགས་པ་ལས།[1] བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་བརྗོད་པ་ཐོས་པ་ཙམ་གྱིས་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་ས་བོན་བསྐྲུན་པའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཁྱད་པར་མེད་པར་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པ་ཉིད་དུ་ལུང་བསྟན་གྱི། སྙི་བོ་ཉེ་བ་ལ་ལྟོས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་གང་གིས་བརྗོད་པ་ཐོས་པ་དང་། ཉན་པ་དང་། ཉན་པར་འགྱུར་བ་དེ་དག་ལ་ཡང་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་ས་བོན་ཡོད་པ་ཉིད་དེ། ཁྱིད་ཀྱང་དྲི་མ་རྣམས་ནི་གློ་བུར་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སེམས་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བར་འདོད་དེ། དེའི་ཕྱིར་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པ་དེར་རྟུང་བ་ཉིད་པས་དེ་ལས་དགོངས་ཏེ་དེ་སྐད་དུ་བཤད་པར་རིགས་པ་ཉིད་དེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ཅན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ཀྱང་། ཐམས་ཅད་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་རྟུང་བ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྒྲ་ནི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་མཚན་ཉིད་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བ་ཡིན་པར་བརྗོད་པར་བཞེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་བསྟན་པས་ནི་ཐམས་ཅད་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ།།

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཕ།

གཞན་ཡང་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་འགྲོ་བའི་ལམ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་ལ་བྱ་སྟེ། འདི་ནས་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤེས་པ་ཁོ་ནས་ཐར་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར་གྱི། གཞན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་នོ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དེ་ཡང་གཅིག་ཁོ་ནར་ཟད་དེ། ཐུག་པ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།། ལྟ་བ་ཐ་དད་ཀུན་དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་མའི་བདག (243a)ཉིད་དུ་འབྲང་བ་ནི་མེད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་པའི་ཡུལ་ཅན་གྱི་ཡེ་ཤེས་ཀུང་ངོ་བོ་གཅིག་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡང་དག་པར་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པའི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཀུན་ཏུ་སྨོངས་པའི་གཉེན་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཉི་ཚེ་བའི་ཤེས་པ་དག་གིས་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཁ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་ན་ནི་ཐམས་ཅད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཆོས་དང་གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་སུམ་པའི་ཡེ་ཤེས་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་ཡང་དག་པའི་ལམ་ཡིན་གྱི། གཞན་ནི་མ་ཡིན་པ་དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ནི་གཅིག་ཁོ་ནར་ཟད་དོ།། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ལམ་གཞན་གྱིས་ཐར་པ་མེད་ཅེས་བསྟན་ཏེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།[1] "ཇི་སྐད་དུ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གཞན་དག་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་ལ་རག་ལས་པར་མཐོང་ནས་མྱ་ངན་ལས་འདའ་སྙམ་དུ་བློ་འབྱུང་སྟེ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པ་མཐོང་བ་མེད་པས་ཐར་པ་ནི་མེད་དོ། །བློ་གྲོས་

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཙ། ༤༠ ན ༦

ཆེན་པོ་འདི་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རིགས་ཅན་གྱི་ངེས་པ་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་པ་ལ་ངེས་པ་འབྱུང་བའི་བློ་ཡིན་ཏེ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལ་ལྟ་བ་ངན་པ་བཟློག་པའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།།

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་ཀྱང་།[1] "རབ་འབྱོར་གཉིས་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་ནོ། །གཉིས་སུ་མེད་པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཡིན་ནོ། །གསོལ་བ་བཅོམ་ལྡན་འདས་གཉིས་ཞེས་བགྱི་བ་གང་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་བ། རབ་འབྱོར་གཟུགས་སུ་འདུ་ཤེས་པ་ནི་གཉིས་ཡིན་ནོ། དེ་བཞིན་དུ་ཕུང་པོ་དང་། ཁམས་དང་། རིག་པ་དང་། ཚོར་བ་དང་། ཁམས་དྲུག་དང་། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དང་། བསམ་གཏན་དང་། གཟུགས་མེད་པ་དང་། སྡུག་བསྔལ་བ་དང་། བདག་མེད་པ་དང་། བདེ་བ་དང་། སེམས་ཅན་ལ་སོགས་པར་འདུ་ཤེས་ (243b)པ་ནི་" ཞེས་རྒྱས་པར་བསྟན་ནས། "ཇི་ཙམ་དུ་འདུ་ཤེས་པ་དེ་ཙམ་དུ་གཉིས་ཡིན་ནོ། །ཇི་ཙམ་དུ་གཉིས་ཡིན་པ་དེ་ཙམ་དུ་དངོས་པོ་ཡིན་ནོ། །ཇི་ཙམ་དུ་དངོས་པོ་ཡིན་པ་དེ་ཙམ་དུ་འཁོར་བ་ཡིན་ནོ། །ཇི་ཙམ་དུ་འཁོར་བ་ཡིན་པ་དེ་ཙམ་དུ་སེམས་ཅན་རྣམས་ཡོངས་སུ་མ་འགྲོལ་ལོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རྣམས་གྲངས་འདིས་འདི་ལྟར་གཉིས་སུ་འདུ་ཤེས་པ་ལ་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་བཟོད་པ་ཡང་མེད་པར་རིག་པར་བྱའོ་"ཞེས་གསུངས་སོ།།

འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་ལ་འཇུག་པ་ལས་ཀྱང་། ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྩ་བ་ནི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྒོམ་པ་ཁོ་ནས་ཉོན་མོངས་པ་སྤོང་གི་ལམ་གཞན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་

1 མ་རྟེད།

བསྟན་ཏེ། "འཇམ་དཔལ་ཇི་ལྟར་ན་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་འདུལ་བར་འགྱུར། ཇི་ལྟར་ན་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པར་འགྱུར། འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྨྲས་པ། དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་ཤིང་མ་བྱུང་བའི་དངོས་པོ་དག་ལ། ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་སྟེ། ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་དེ་ལས་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པ་འབྱུང་ངོ་། །ཀུན་ཏུ་རྟོག་པ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པ་དེ་ལས་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་འབྱུང་ངོ་། །ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དེ་ལས་བདག་ཏུ་སྒྲོ་འདོགས་པ་འབྱུང་ངོ་། །བདག་ཏུ་སྒྲོ་འདོགས་པ་དེ་ལས་ལྟ་བ་ཀུན་ནས་དཀྲིས་པ་འབྱུང་ངོ། །ལྟ་བ་ཀུན་ནས་དཀྲིས་པ་དེ་ལས་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་འབྱུང་ངོ། །ལྷའི་བུ་གང་གིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ཤིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་པ་དང་། མ་བྱུང་བར་རབ་ཏུ་ཤེས་པ་མེད་པའི་ཚུལ་གྱིས་རབ་ཏུ་ཤེས་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པར་ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གང་ཞིག་དོན་དམ་པར་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་དེ་ནི་ཀུན་ཏུ་མི་རྟོག་རྣམ་པར་མི་རྟོག་གོ །གང་མི་རྟོག་ཀུན་ཏུ་མི་རྟོག་པ་དེ་ནི་ཚུལ་བཞིན་དུ་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ། །གང་ཚུལ་བཞིན་དུ་ཞུགས་པ་དེ་ནི་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་སྒྲོ་འདོགས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །གང་དོན་དམ་པར་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་སྒྲོ་འདོགས་པར་མི་འགྱུར་བ་དེ་ལ་ལྟ་བ་ཀུན་ནས་ལྡང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། དོན་དམ་པར་མྱ་(244a) ངན་ལས་འདས་པར་ལྟ་བ་ཀུན་ནས་ལྡང་བའི་བར་དུ་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །སྐྱེ་བ་མེད་པ་ལ་གནས་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་མཐོང་བ་མེད་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཤིན་ཏུ་མཐོང་བར་བལྟ་སྟེ། འདི་ནི་ཉོན་མོངས་པ་འདུལ་བ་ཞེས་བྱའོ། །ལྷའི་བུ་གང་གི་ཚེ་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་སྣང་བ་མེད་པའི་ཤེས་རབ་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་དོན་དམ་པར་ཤིན་ཏུ་སྟོང་པ་དང་།

ཤིན་ཏུ་མཚན་མ་མེད་པ་དང་། དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་ཤིང་མ་བྱུང་བར་རབ་ཏུ་ཤེས་པ་མེད་པའི་ཚུལ་གྱིས་རབ་ཏུ་ཤེས་པ་དེའི་ཚེ་ལྷའི་བུ་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་རབ་ཏུ་ཤེས་པ་མེད་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ལྷའི་བུ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་གང་སྦྲུལ་གྱི་རིགས་འདོན་པ་དེས་ནི་དུག་ཞི་བར་བྱེད་དོ། །ལྷའི་བུ་གང་ཞིག་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱི་རིགས་རབ་ཏུ་ཤེས་པ་དེ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཤིན་ཏུ་མི་དམིགས་པའི་ཚུལ་གྱིས་རབ་ཏུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། །ལྷའི་བུ་སྨྲས་པ། འཇམ་དཔལ་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱི་རིགས་གང་ཡིན། འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྨྲས་པ། ལྷའི་བུ་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་ཤིང་མ་བྱུང་བའི་དངོས་པོ་དག་ལ་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱི་རིགས་ཡིན་ནོ་"[1] ཞེས་གང་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ལྟ་བས་ན་གང་ངེས་པར་ལེགས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་ནི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་སྒོམ་པ་འདི་ཁོ་ནར་ཟད་པས་དེའི་ཕྱིར་དེ་དོན་དུ་གཉེར་བ་བདག་ལེགས་སུ་དགའ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ལམ་ངན་པ་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐག་བསྲིངས་ཏེ་སྤངས་ནས་དེ་ཉིད་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་རིགས་པ་དང་། ལུང་གི་སྒྲོན་མའི་ཚོགས་ཀྱིས་གསལ་རབ་ཏུ་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་དང་། སྐྱེ་བོ་མཁས་པའི་འདྲེན་པ་[2] མ་ལུས་པས་བརྗོད་[3] ཅིང་རྗེས་སུ་བགྲོད་པའི་ཕྱིར་གུས་པར་རྟག་ཏུ་བསྟེན་པར་བྱའོ།།

དེ་བས་ན་ཐེག་པ་གཅིག་པ་ཉིད་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་

---

1 སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ། ༣༥༣ བ ༧

2 འགྲོ་བ་ སྡེ།

3 བགོད་ སྣ། བགྲོད་ པེ།

ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།། །།

བསྟན་བཅོས་དབུ་མ་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་སློབ་དཔོན་ཀ་མ་ལ་ཤཱི་ལས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

མཁན་པོ་ཤྲཱི་ལེནྡྲ་བོདྷི་དང་ལོ་ཙཱ་བ་དཔལ་བརྩེགས་ཀྱིས་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པ།།

སརྦ་མངྒ་ལམ།

परिशिष्ट



मध्यमकालोक में उद्धृत आगमों की सूची

दशभूमकसूत्रम्

धर्मसंगीतिसूत्रम्

प्रज्ञापारमितासूत्रम्

पितापुत्रसमागमसूत्रम्

रत्नमेघसूत्रम्

लङ्कावतारसूत्रम्

सत्यद्वयनिर्देशसूत्रम्

सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रम्

सन्धिनिर्मोचनसूत्रम्

समाधिराजसूत्रम्

सर्वबुद्धविषयावतारज्ञानालोकालङ्कारसूत्रम्

सार्धद्विसाहस्त्रिकाप्रज्ञापारमितासूत्रम्

सागरनागराजपरिपृच्छासूत्रम्

सागरमतिनिर्देशसूत्रम्

सूत्रे

अभिधर्मकोशम्

तत्त्वसंग्रहः

प्रमाणवार्तिकम्

मध्यमकालङ्कारः

मूलमाध्यमिककारिका

युक्तिषष्टिका

रत्नावली

लोकातीतस्तवः

विग्रहव्यावर्तिनी

विंशिका

विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः

•

भूमिका के सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

आगम

ग्रन्थ-नाम	तोहोकु सं०
आर्य-अक्षयमतिनिर्देशनाम-महायानसूत्र	१७५
आर्यगयाशीर्षनाम महायानसूत्र	१०९
आर्यदशधर्मकनाम-महायानसूत्र	५३
आर्यदशभूमकसूत्र (अवतंसक)	४४
आर्यधर्मसंगीतिनाम-महायानसूत्र	२३८
आर्यलङ्कावतारनाम-महायानसूत्र	१०७
आर्यविमलकीर्तिनिर्देश-नाम-महायानसूत्र	१७६
आर्यश्रीमालादेवी सिंहनादनाम-महायानसूत्र	९२
आर्यसर्वबुद्ध-विषयावतारज्ञानालोक-अलंकार-नाम-महायानसूत्र	१००
आर्यसमाधिराजनाम-महायानसूत्र	१२७
(आर्यसर्वधर्मस्वभावसमता-विपञ्चितसमाधिराजनाम-महायानसूत्र)	
बहुधातुकसूत्र	२९७
सद्धर्मपुण्डरीकनाम-महायानसूत्र	११३

शास्त्र

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	तोहोकु सं०
अभिधर्मकोषकारिका	वसुबन्धु	४०८९
चित्तगुह्यप्रदीपनाम	कमलशील	२३२३
त्रिंशिका-कारिका	वसुबन्धु	४०५५
बोधिसत्त्वचर्यावतार	शान्तिदेव	३८७१
मध्यमकावतारनाम	चन्द्रकीर्ति	३८६१
मध्यमकालोक-नाम	कमलशील	३८८७
महामुद्रा-तत्त्वानाक्षरोपदेश	"	२३२५

भावनाक्रम	कमलशील	३९१५-३९१७
लोकातीतस्तव	नागार्जुन	११२०
सत्यद्वयविभंगकारिका	ज्ञानगर्भ	३८८१

भोटदेशीय आचार्यों के ग्रन्थों की सूची

ग्रन्थ	ग्रन्थकार
रग्युद-स्दे-स्प्यी-र्नम	खेडुब-जे
ग्चोद-युल-ञोन-मोङस्-शी़-ब्येद-द्कह्-गतेर-ब्ल-म-र्ग्युद-पहि-र्नम-थर-ब्यीन-र्ल्बस्-ग्तेर-म्छो	रोङ-फु-ङग-द्वङ-ब्स्तन-ह्जिन-नोर-बु
ल्चङ-स्क्य-ग्रुब-म्थह	ल्चङ-स्क्य-ङग-द्वङ-म्छोग-ल्दन
शाक्य-र्ग्यल-म्छ़न-द्पल-ब्ज़ङ-पोहि-र्नम-थर-ङो-म्छ़र-दद-पही-रोल-म्छो	शाक्य-म्छोग-ल्दन
थुप-प-द्गोङस-ग्सल	स-स्क्य-पण्डित
द्रङ-ङेस-लेगस-ब्शद-स्ञीङ-पो	आचार्य चोङ्खापा
ग्नस-लुगस-म्ज़ोद	क्लोङ-छेन-र्ब-ह्व्यमस्-प
ग्नस-लुगस-म्ज़ोद-रङ-ह्ग्रेल	क्लोङ-छेन-रब-ह्व्यमस्-प
द्वु-म-र्ग्यन-ज़िन-ब्रिस	आचार्य चोङ्खापा
द्वु-म-स्नङ-वही-ब्र्जेद-थो	ब्स्तनदर-ङगस-रम-प

द्वु-म-द्गोडस-प-रब-ग्सल	आचार्य चोड्खापा
शेस-ब्य-कुन-ख्यब-म्ज़ोद	कोङ-स्प्रुल-योन-तन-र्ग्य-म्छ़ो
ब्सम-ग्तन-द्मिगस-स्ग्रोन	ग्नुबस-छेन-सङ्स-र्ग्यस-येशेस
ब्कह-थङ-स्दे-ल्ङ	--
क्लोङ-छेन-छोस-ह्ब्युङ	क्लोङ-छेन-र्ब-ह्ब्यमस-प
र्ग्य-नग-ह्वशङ-ब्युङ-छुल-ग्रुब-म्थहि-फ्योगस-स्ङ-ब्चस-स्-बोन-च्म-स्मोस-प-यिद-क्यी-द्रि-म-दग-ब्येद-द्हगे-ब्ही-छु-र्ग्युन	क-थोग-छ़े-वङ-नोर-बु
स्ब-ब्श़ेद	स्ब-ग्सल-स्नङ
छोस-ह्ब्युङ-ब्स्तन-पही-पद्म-र्ग्यस-पही-ञिन-ब्येद	कुन-म्ख्येन-पद्म-द्कर-पो
छोस-ह्ब्युङ-मे-तोग-स्ञीङ-पो-स्ब्रङ-र्चीही-ब्चुद	ञङ-रल-पा-ञि-म-होद-ज़ेर
तुन-ह्वङ-यिग-र्ञीङ	--
स्तग-लुङ्-छोस-ह्ब्युङ	स्तग-लुङ-ङग-द्वङ-र्नम-र्ग्यल
ब्स्तन-र्चिस-कुन-ब्तुस	छ़े-तेन-ज़बस-द्रुङ
देब-थेर्-ञोन-पो	ह्गोस-लोचावा-ग्श़ोन-नु-द्पल

पद्म-ब्कह्-थङ	
फ-दम-प दङ म-चिक-लब्-स्ग्रोन ग्यी-र्नम-थर	छोस्-क्यी-सेङ्-गे-गङ-ब
बु-स्तोन छोस-ब्युङ	बु-स्तोन रिन-छेन-ग्रुब
सुम-प-छोस-ब्युङ	सुम-प-ये-शेस-द्पल-ह्ब्योर

•

आचार्य कमलशील के रचनाओं की सूचि
སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་བསྟན་བཅོས་རྣམས་ཀྱི་མཚན་གཞུང་།

७.	**सर्वधर्मास्वभावसिद्धि**	Toh. 3889
༧	ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པར་གྲུབ་པ།	ས། ༢༧༣ -༢༩༡
८.	**बोधिचित्तभावना**	Toh. 3913
༨	བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྒོམ་པ།	ཀི། ༡༦ -༡༩
९.	**भावनाक्रम (प्रथम)**	Toh. 3915
༩	བསྒོམ་རིམ་དང་པོ།	ཀི ༢༢ -༤༡
१०.	**भावनाक्रम (द्वि तीय)**	Toh. 3916
༡༠	བསྒོམ་རིམ་བར་པ།	ཀི ༤༢ -༥༥
११.	**भावनाक्रम (तृतीय)**	Toh. 3917
༡༡	བསྒོམ་རིམ་ཐ་མ།	ཀི། ༥༥ -༦༨
१२.	**भावनायोगावतार**	Toh. 3918
༡༢	རྣལ་འབྱོར་བསྒོམ་ལ་འཇུག་པ།	ཀི། ༦༨ -༧༠

མདོ་འགྲེལ། सूत्र-टीका

१३	**आर्याविकल्पप्रवेशधारणी टीका**	Toh. 4000
༡༣	འཕགས་པ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འཇུག་པའི་	
	གཟུངས་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ།	ཇི། ༡༢༣-༡༤༥
१४.	**आर्यशालिस्तम्बकटीका**	Toh. 4001
༡༤	འཕགས་པ་སཱ་ལུ་ལྗང་པའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ།	ཇི། ༡༤༥-༡༦༣

སྤྲིང་ཡིག लेख

१५.	**ब्राह्मणीदक्षिणाम्बयै दुःखविशेषनिर्देशनाम**	Toh. 4193
༡༥	བྲཱ་ཧྨ་ཎ་མོ་ཚངས་དབྱངས་ལ་སྡུག་བསྔལ་བརྒྱད་ཀྱི་	

	བྱེ་བྲག་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བ།	དེ་། ༡༣༣-༡༣༤
१६.	श्रद्धोत्पादप्रदीप	Toh. 4195
༡༦	དད་སྐྱེས་སྒྲོན་མེ།	དེ་། ༡༣༩-༡༥༣

ཚད་མ། न्याय

१७.	न्यायबिन्दुपूर्वपक्षसंक्षिप्त	Toh. 4232
༡༧	རིགས་པའི་ཐིགས་པའི་ཕྱོགས་སྔ་མ་མདོར་བསྡུས་པ།	ཞེ།༩༢-༩༩
१९.	तत्त्वसंग्रहपञ्जिका	Toh. 4267
༡༨	ཚད་མའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་པའི་དཀའ་འགྲེལ།	ཟེ། ༡༣༣-༣༦༣
		འེ། ༡-༣༣༡

སྣ་ཚོགས། विविध

१९.	प्रणिधानद्वयविधा	Toh. 4393
༡༩	སྨོན་ལམ་སུ་གཉིས་མ།	ཉོ། ༣༢༥

དབུ་མ་སྣང་བའི་ནང་ཁུངས་སུ་དྲངས་པའི་བཀའ་དང་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་མཚན་དང་ཤོག་གྲངས།

དཀོན་མཆོག་སྤྲིན།

དཀོན་མཆོག་འབྱུང་གནས།

དཀོན་མཆོག་བརྩེགས།

ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་རྒྱ་མཚོས་ཞུས་པ།
གང་དག་རྐྱེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་། ༢༠༩
སྔོན་གྱི་མཐའ་སྟོང་ཕྱི་མའི་མཐའ་ཡང་སྟོང་།། ༨༤༢

ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་མ་དྲོས་པས་ཞུས་པའི་མདོ།
གང་ཞིག་རྐྱེན་ལས་སྐྱེས་པ་དེ་མ་སྐྱེས། ༢༠༩
རྐྱེན་ལས་སྐྱེས་པ་གང་ཡིན་དེ་མ་སྐྱེས།། ༢༧༦

དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ།
གལ་ཏེ་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཉིད་འདུ་བྱེད་དག་ལས་གཞན་མ་ཡིན་པར་གྱུར་བ་ནི་དེའི་
ཚེ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་བདེན་པར་མཐོང་བར་འགྱུར་ཏེ···· ༨༥༨
བརྟགས་པ་གཞན་གྱི་དབང་གི་མཚན་ཉིད་དང་། ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་མཚན་ཉིད་ལ་ཀུན་
ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཉིད་དང···· ༡༩༤ ༢༨༧
དེ་ལྟ་བས་ན་ངས་མཚན་ཉིད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ལས་དགོངས་ནས་ ༡༧༩
དོན་དམ་ཡང་དག་འཕགས། གཞན་ཡང་ངས་དོན་དམ་པ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཆོས་བདག་
མེད་པས་རབ་ཏུ་ཕྱེ་བ་ལས་ཀྱང་དགོངས་ཏེ····༢༡༣
དེ་ནི་དོན་དམ་པ་ཡང་ཡིན་ལ། ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པས་ ༢༡༣
གང་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་མེད་པ་དེ་ནི་མ་སྐྱེས་པའོ། །གང་མ་སྐྱེས་པ་དེ་ནི་ ༢༡༡
དཔེར་ན་སྒྱུ་མ་བྱས་པ་ལྟར་དེ་བཞིན་དུ་སྐྱེ་བ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ ༢༡༡
མངོན་པར་བརྗོད་པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཅན་མ་ཡིན་ནོ།། ༢༤༢

ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ།

མི་སྐྱེ་བ་ནི་མི་བདེན་ཏེ···· ༢༠༨

རིགས་ཀྱི་བུ། འཇིག་རྟེན་གནས་པ་འདི་ནི་སྐྱེ་བ་དང་འགག་པ་ལ་ ༢༢༢

ཆོས་ཐམས་ཅད་མཐོང་བ་མེད་པ་ནི་མཐོང་བ་དམ་པ་ཡིན་ནོ། ༢༥༧

དཔེར་ན་སྒྱུ་མའི་མཁན་པོ་འགའ།། ༢༥༨ ༨༣༥

ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་དམིགས་པ་མེད་པ་སྟེ། དེ་ལ་ནི་ལྟ་བ་མི་འབྱུང་ངོ་། ༨༤༠

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་ ༨༤༦

རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་པ་རྣམས།། ༢༥༨ ༨༣༥

ཆོས་བཅུ་པའི་མདོ། དཀོན་བརྩེགས།

ངུ་བ་ལས་ནི་མེར་ཤེས་ཏེ།། ༧༥༥ ༨༤༣

གང་ཅུང་ཟད་སྐྱེ་བའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ནི···· ༧༥༥

བཅོམ་ལྡན་འདས། ཉན་ཐོས་ཟག་པ་མ་མཆིས་པ་སྲིད་པར་ཀུན་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡང་དག་
པར་ཆད་པ་རྣམས་རིགས་མཆིས་སུ་ལགས་ཀྱང་···· ༤༠༠

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ལེའུ། ཕལ་ཆེན།

ཀྱེ་རྒྱལ་བའི་སྲས་དག ཁམས་གསུམ་པོ་འདི་ནི་སེམས་ཙམ་མོ། ༢༣༨ ༢༨༠

ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོའི་མདོ།

འདི་ན་སྤྱོད་མིན་སེམས་ཅན་འགའ་ཡང་མེད།། ༢༠༠

ཆོས་ཀུན་རྟག་ཏུ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་།། ༢༢༦

ཡོད་ཅེས་མེད་ཅེས་གཉིས་གའང་མཐའ།། ༢༣༩
མིག་དང་རྣ་བ་སྣ་ཡང་ཚད་མ་མིན།། ༡༡༢
འདི་ལྟར་དབང་པོ་འདི་དག་ཚད་ཡིན་ན། ༡༡༢

སྡུག་པོ་བཀོད་པའི་མདོ།
ཕུང་པོ་མེད་ཅིང་ཁམས་ཀྱང་མེད།། ༡༤༡
ཕྲ་རབ་རྡུལ་དུ་རྣམ་ཕྱེ་ན།། ༡༤༤

སྟོང་པ་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོ།
ལས་ཀྱང་ཡོད། རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡང་ཡོད་དེ། ༧༩༢

ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་རབ་ཏུ་སྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།
རིགས་ཀྱི་བུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ལ་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པར་ ༧༦༩ ༢༢༣

དམ་པའི་ཆོས་པད་མ་དཀར་པོ།
ཤཱ་རིའི་བུ། ང་ལ་དད་པར་གྱིས་ཤིག ང་ལ་ཡིད་ཆེས་པར་གྱིས་ཤིག ༡༦༥
ཤཱ་རིའི་བུ། གཞན་ཡང་གང་གི་ཚེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་
རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་སྙིགས་མ་ལྔའི་" ༡༦༥
མི་མཁས་གང་དག་དམན་མ་མཐོང་དགའ་ཞིང་། ༡༦༦
སངས་རྒྱས་ཡེ་ཤེས་རབ་ཏུ་རྟོགས་བྱའི་ཕྱིར།། ༡༦༦
ཅི་ཕྱིར་ཞེ་ན་སྐྱེས་པ་དུས་ལ་གཟིགས།། ༡༦༦

གང་ལ་སངས་རྒྱས་རང་འབྱུང་བདག་ཉིད་གང་། ༥༨༨
རྡུལ་བྲལ་བྱང་ཆུབ་ཁྱད་པར་ཅན་རིག་ནས།། ༥༨༨
ཐེག་པ་གཅིག་ཏེ་གཉིས་པ་ཡོད་མ་ཡིན།། ༥༨༨
དགེ་སློང་ངམ་དགེ་སློང་མ་གང་ལ་ལ་ཞིག་དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་དུ་ཁས་མཆེ་ཞིང་··· ༥༩༨

བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པའི་མདོ།

ལྷའི་བུ་དོན་ནི་དོན་དམ་པར་མི་སྐྱེ་བ་ཡིན་ནོ།། ༢༠༥
ལྷའི་བུ། འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་ཁམས་སའི་སྣོད་ཀྱི་ནང་གི་ནམ་མཁའ་གང་··· ༢༠༥
ལྷའི་བུ། ཇི་ལྟར་བདག་དོན་དམ་པར་བདག་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ། ༢༢༨
འཇམ་དཔལ་མཉམ་པ་ཉིད་གང་གིས་དོན་དམ་པར་རྣམ་པར་བྱང་བའི་ ༢༤༠
ལྷའི་བུ། གཞན་ཡང་དོན་དམ་པར་ན་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་ལས་
ཡང་དག་པར་འདས་ཏེ། ༥༦༤
འཇམ་དཔལ། དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་གང་ཡིན། འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྨྲས་པ···· ༥༦༨
ལྷའི་བུ། དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་ཇི་ཙམ་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ ༥༧༢
ཇི་སྐད་དུ། དོན་དམ་པར་ཤིན་ཏུ་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་པ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ལས་ ༢༧༤
འཇམ་དཔལ། ཇི་ལྟར་ན་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་འདུལ་བར་འགྱུར། ཇི་ལྟར་ན་ཉོན་
མོངས་པ་རྣམས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པར་འགྱུར། ༤༠༥

བདེན་པ་པོའི་ལེའུ།

འཇམ་དཔལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་ཐེག་པ་གཅིག་གིས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་

ཐེག་པའི་སྙིང་པོ་དང་ལྡན་པར་འགྱུར། ༤༢༠

དོན་དམ་པ་སྟོང་པ་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོ།

ལས་ཀྱང་ཡོད་རྣམ་པར་སྨིན་པ་ཡང་ཡོད་དེ། བྱེད་པ་པོ་ནི་མི་དམིགས་སོ།། ༢༣༡

རྡོ་རྗེ་གཅོད་པ།

རབ་འབྱོར་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ནམ་མཁའ་ཚད་གཟུང་བར་སླའམ། ༤༥༢

སྡོང་པོས་བརྒྱན་པའི་མདོ།

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དཔལ་རྣམ་པར་སྣང་བྱེད་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་ ༤༨༧

དཔལ་འཕྲེང་སེང་གེ་ང་རོའི་མདོ།

གང་མི་རྟག་པ་དེ་ནི་བརྫུན་པ་སླུ་བའི་ཆོས་ཅན་ཡིན་ནོ། ༣༢༥

བཅོམ་ལྡན་འདས་འདི་གཉིས་ནི་མཐའ་གཉིས་སུ་ལྟ་བ་ཞེས་བགྱི་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ༣༨༤

བཅོམ་ལྡན་འདས་དགྲ་བཅོམ་པ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ ༤༢༣

ཇི་སྐད་དུ། དགྲ་བཅོམ་པ་ལ་ཡང་འཇིག་པ་མཆིས་ཏེ། ༤༢༣

ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང···· ༤༢༡

བཅོམ་ལྡན་འདས་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་ཉེ་བར་ལེན་པའི་རྐྱེན་ཅན་ ༤༢༤

ཕྱིར་མི་ལྡོག་པ་འཁོར་ལོའི་མདོ།

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་སངས་རྒྱས··· ༤༩༥

བློ་གྲོས་རྒྱ་མཚོས་བསྟན་པའི་མདོ།

གང་དག་རྟེན་ནས་བྱུང་དེ་དག། ༣༨༥

བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པའི་མདོ།

གསུམ་པོ་འདི་དག་ནི་ངེས་པར་འབྱིན་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་ཡིན་ཏེ···༡༩༥

ངེས་པའི་དོན་གྱི་མདོ་སྡེ་ནི་གང་། དྲང་བའི་དོན་གྱི་མདོ་སྡེ་ནི་གང་··· ༢༠༥

འདི་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཐ་སྙད་ཤེས་པ་དང་། ༤༦༦

ཚངས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་སེམས་ཀྱིས་ཞུས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མདོ།

གང་གིས་ཕུང་པོ་མ་སྐྱེས་ཤིང་།། ༢༣༠

སྡུག་བསྔལ་བ་དང་། ཀུན་འབྱུང་བ་དང་། འགོག་པ་དང་··· ༤༤༦

ཡབ་སྲས་མཇལ་བའི་མདོ།

ཇི་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ལ་མ་རིག་པ་ནི་མ་རིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་མ་མཆིས་སོ། དེ་ཙིའི་སླད་དུ་ཞེ་ན···· ༢༡༠

དོན་ཡོད་མ་ཡིན་སེམས་ཉིད་དེ།། ༡༩༣
བརྟགས་པའི་དངོས་པོ་མེད་པ་སྟེ།། ༡༩༡
ཇི་ལྟར་བྲིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར།། ༡༩༣
ཕུང་པོ་ལ་ནི་བདག་མེད་དེ།། ༡༩༡
བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ནི།། ༡༩༡
སྲིད་པ་གསུམ་ནི་བརྟགས་པ་ཙམ།། ༢༢༥
རང་བཞིན་མེད་པ་འབྲུལ་བ་གང་།། ༢༢༦
དངོས་རྣམས་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ།། ༢༢༧
ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ནི་ཐམས་ཅད་ཡོད།། ༢༢༨
ངོ་བོ་ཉིད་མེད་རྣམ་རིག་མེད།། ༢༢༥
བློ་ཡིས་རྣམ་པར་གཞིགས་ན་ནི།། ༢༢༡
ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བརྟགས་པ་ཡི།། ༢༢༠
བརྟགས་པའི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད།། ༢༡༩
མེད་པ་ཡོད་པའི་ཟླས་དྲངས་ཏེ།། ༢༡༦
དེ་དག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་མིན།། ༢༢༩
ཕུང་པོ་ལ་ནི་བདག་མེད་དེ།། ༢༢༩
དེ་དག་ཇི་ལྟར་བརྟགས་བཞིན་མིན།། ༢༢༩
ཇི་ལྟར་བྲིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར།། ༢༢༢
ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མེད་པའི་ཕྱིར།། ༡༩༢ ༢༢༢

དོན་ཡོད་མ་ཡིན་སེམས་ཉིད་དེ།། ༢༢༢

ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བརྟགས་ལྟར།། ༡༩༢ ༢༢༢

རིགས་པས་རྣམ་པར་ལྟ་རྣམས་ཀྱིས།། ༢༢༤

སེམས་ཙམ་ལས་ནི་བཟླས་ནས་སུ།། ༢༢༤

འཇུག་པ་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་ནི།། ༢༢༦

བག་ཆགས་ཀྱིས་ནི་དཀྲུགས་པའི་སེམས།། ༢༥༡

ནད་པ་དང་ནི་ནད་པ་ལ།། ༢༥༢

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ། འཇིག་རྟེན་འདི་ནི་གཉིས་ལ་གནས་པ་སྟེ། ༢༥༤

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ། ངས་འདི་ལས་དགོངས་ཏེ་གང་ཟག་ཏུ་ལྟ་བ་རི་རབ་ཙམ་ ༢༥༦

མ་བྱུང་བ་ལས་གང་འབྱུང་ཞིང་།། ༢༥༦

གང་ལ་ཅུང་ཟད་སྐྱེ་མེད་ཅིང་།། ༢༥༦

སེམས་ཙམ་ལ་ནི་བརྟེན་ནས་སུ།། ༢༢༤

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ། འོན་ཀྱང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་
པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་དང…… ༢༤༢

བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བས་ ༢༤༧

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ། གཞན་ཡང་ཚད་མ་གསུམ་གྱི་ཡན་ལག་གིས་བཀྲལ་བར་ ༢༤༨

དཔེར་ན་མེ་ལོང་ངོས་ལ་ནི།། ༥༢༤

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའོ་ཞེས་དམ་
བཅའ་བར་མི་བྱའོ།། ༥༥༥

ཀུན་རྫོབ་ཏུ་ནི་ཐམས་ཅད་ཡོད།། ༡༡༡

གང་ཕྱིར་འདུས་ལས་མ་གཏོགས་པའི།། ༡༤༡

དངོས་པོ་གཅིག་དང་གཞན་ཉིད་དུ།། ༡༤༡

དངོས་རྣམས་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་ཏུ།། ༡༤༧ ༡༦༠

འདི་དག་ཐམས་ཅད་མིང་ཙམ་སྟེ།། ༡༦༡

རྗོད་པར་བྱེད་པ་མ་གཏོགས་པར།། ༡༦༤

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ། གཅིག་གིས་གཅིག་སྟོང་པ་ཉིད་འདི་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་ཆད་ཡིན་པས་དེ་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་སྤང་བར་བྱའོ།། ༢༧༦

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། ནམ་མཁའ་དང་འགོག་པ་དང་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་མ་བྱས་པའི་དངོས་པོར་སྒྲོ་འདོགས་པ་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་སྒྲོ་འདོགས་པའོ།། ༣༧༣

རྒྱུ་འབྲས་ལྟ་བ་ངན་པ་ཡིན།། ༣༨༩

མ་བྱུང་བ་ལས་གང་བྱུང་ཞིང་།། ༣༨༩

ལག་བཟང་གི་ཞུས་པའི་མདོ།

དེ་འདས་དང་། མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་བྱུང་བ་དུས་གསུམ་ཡང་ ༡༤༢

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་མདོ།

གཞན་ཡང་དེ་དག་གལ་ཏེ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་ ༡༥༨

དེས་དགྲ་བཅོམ་པ་ཉིད་ཐོབ་ནས་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དོན་དུ་གཉེར་ན་སྐྱེ་བ་མ་མཆིས་པར་ཇི་ལྟར་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་ལགས། ༡༥༥

རབ་འབྱོར། གཉིས་ནི་དངོས་པོ་ཡིན་ནོ། །གཉིས་སུ་མེད་པ··· ༤༠༣

རབ་འབྱོར་ཕྱིན་ཅི་ལོག་མ་གཏོག་པར་བྱིས་པ་རྣམས་གང་ལ་གནས་ཏེ་ལས་མངོན་

པར་འདུ་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ནི་སྐྲའི་རྩེ་མོའི་ཆ་ཤས···· ༢༢༤

ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤ་རི་དྭ་ཏིའི་བུ། དེ་ལྟར་ན་གཟུགས་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པའོ།། ༢༢༢

སྦྱོར་བ་ལས་བྱུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ༢༧༨

ངས་གང་འབྱོར་བ་ལས་བྱུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་དགོངས་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་མེད་པ་

ཉིད་དུ་བསྟན་པ··· ༢༧༨

ཀཽ་ཤི་ཀ། འདི་ནི་རིགས་ཀྱི་བུ་དང་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་དེ་དག་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་

ཉེ་བར་སྟོན་པ་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟར···· ༢༤༩

ཁ་ཅིག་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱིས་སྤྲུལ་པ། ཁ་ཅིག་ནི···· ༢༦༨

ནྲ་རིའི་བུ། གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ལམ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་མཚན་

མ་མེད་པ་ཉིད་དེ··· ༨༨༠

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ ༨༦༥

བཅོམ་ལྡན་འདས་གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྤྲུལ་པ་ལྟ་བུ་ལགས་ན་ ༨༨༡

ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་བརྟགས་པ་ལ་བརྟེན་

ནས་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར···· ༨༨༤

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ཙམ་གྱི་ནི་དམིགས་པ་ལགས། ཇི་ཙམ་གྱིས···· ༨༨༩

ཇི་སྙད་དུ་མངོན་སུམ་གྱི་མཚན་ཉིད་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི··· ༣༠༦

གལ་ཏེ་གཟུགས་རྟག་ཅེས་བྱ་བའམ་མི་རྟག་ཅེས་བྱ་བར་སྤྱོད་ན་ ༣༩༣

ས་བཅུ་པའི་མདོ།

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན།

གསེར་མདོག་སྟོན་གྱི་སྦྱོར་བ་ཞེས་བྱ་བའི་མདོ།།

ལུང་མཚན་མ་རྟེན་པ་ཁག

བསྟན་བཅོས།

ཆོས་མངོན་པ་མཛོད།

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསྟོད་པ།

དབུ་མ་རྒྱན།

དབུ་མ་རིན་ཆེན་འཕྲེང་བ།

ཚད་མ་རྣམ་འགྲེལ།

རིགས་པ་དྲུག་ཅུ་པ།

ཉི་ཤུ་པ།

རྩོད་ཟློག

རྩོད་ཟློག་འགྲེལ་པ།

གླེང་བརྗོད་ཀྱི་ཁུངས་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁག་གི་མཚན་གཞུང་།

བཀའ་འགྱུར།

ཁམས་མང་པོའི་མདོ།

སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཤ

Toh: 297

འཕགས་པ་ག་ཡཱ་མགོའི་རི་ཞེས་བྱ་བའི་མདོ།

སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ།

Toh: 109

འཕགས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ།

སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ད།

Toh: 127

འཕགས་པ་དམ་པའི་ཆོས་པད་མ་དཀར་པོ།

སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཇ།

Toh: 113

འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མདོ།

སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ།

Toh: 176

འཕགས་པ་ཆོས་བཅུ་པའི་མདོ།
སྡེ་བཀའ། དཀོན་བརྩེགས། ཁ
Toh: 253
འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྡུད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།
སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཞ།
Toh: 238
འཕགས་པ་དཔལ་ཕྲེང་སེང་གེ་ང་རོའི་མདོ།
སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཆ།
Toh: 92
འཕགས་པ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།
སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། མ།
Toh: 175
འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།
སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ཅ།
Toh: 107
འཕགས་པ་ས་བཅུ་པའི་མདོ།
སྡེ་བཀའ། ཕལ་ཆེན། ཁ
Toh: 44
འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡེ་ཤེས་སྣང་བའི་རྒྱན།
སྡེ་བཀའ། མདོ་སྡེ། ག།
Toh: 100

བསྟན་འགྱུར།

བསྒོམ་རིམ། ཐོག་མ་བར་གསུམ།

ཀམལཤཱིལ།

སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ཀི Toh: 3915, 3916, 3917

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་ཡི་གེ་མེད་པའི་མན་ངག

སྡེ་བསྟན། རྒྱུད། ཞི། Toh: 2325

བདེན་གཉིས་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ།

སློབ་དཔོན་ཡེ་ཤེས་སྙིང་པོ།

སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། Toh: 3881

ཆོས་མངོན་པ་མཛོད།

སློབ་དཔོན་དབྱིག་གཉེན།

མངོན་པ། ཀུ Toh: 4089

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསྟོད་པ།

སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ།

སྡེ་བསྟན། སྣ་ཚོགས། ཇོ། Toh: 1120

དབུ་མ་འཇུག་པ།

སློབ་དཔོན་ཟླ་བ་གྲགས་པ།

སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། འ། Toh: 3861

དབུ་མ་སྣང་བ།

ཀཱམལཤཱིལ།

སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། ས། Toh: 3887

བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ།

སློབ་དཔོན་ཞི་བ་ལྷ།

སྡེ་བསྟན། དབུ་མ། Toh: 3871

ལ་དྭགས་ནང་པའི་མཐོ་སློབ་ཁང་།

སློབ་དཔོན་རྣམ་ཤངྐར་ཏྲིཔུཥྚི་ཡིས་ཕབ་བསྒྱུར་དང་ཞུ་དག་མཛད་པ། ༡༩༨༦

སུམ་ཅུ་པའི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ།

སློབ་དཔོན་དབྱིག་གཉེན།

སྡེ་བསྟན། སེམས་ཙམ། ཤི Toh: 4055

གསང་བ་ཐུགས་ཀྱི་སྒྲོན་མ།

སྡེ་བསྟན། རྒྱུད། ཞི། Toh: 2323

བོད་ཀྱི་མཁས་པ་ཁག་གིས་མཛད་པའི་ནང་རིག་པའི་གཞུང་ཚན་ཁག

རྒྱུད་སྡེ་སྤྱི་རྣམ།

མཁས་གྲུབ་དགེ་ལེགས་དཔལ་བཟང་།

གསུང་འབུམ། ཐོད། ཉ། དིལླི།

གཙོད་ཡུལ་ཧོན་མོངས་ཞི་བྱེད་ཀྱི་བཀའ་གཏེར་བླ་མ་རྒྱུད་པའི་རྣམ་ཐར་བྱིན་རླབས་

གཏེར་མཚོ།

རོང་ཕུ་ངག་དབང་བསྟན་འཛིན་ནོར་བུ།

སྣང་ཏོག ༡༩༧༢

ལྷུང་སྐྱུ་གྲུབ་མཐའ།

ལྷུང་སྐྱུ་ངག་དབང་མཆོག་ལྡན།

ཀྲུང་གོ་བོད་ཀྱི་ཤེས་རིག་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༨༩

རྗེ་བཙུན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བཤེས་གཉེན་ཤཱཀྱ་རྒྱལ་མཚན་དཔལ་བཟང་པོའི་ཞལ་

སྔ་ནས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཐར་པ་ངོ་མཚར་དད་པའི་རོལ་མཚོ།

ཤཱཀྱ་མཆོག་ལྡན།

གསུང་འབུམ། པོད། མ

ཀུན་བཟང་སྟོབས་རྒྱས་ནས་དཔར་དུ་བསྒྲུབ། ཐིམ་ཕུ། འབྲུག ༡༩༧༤

ཐུབ་པ་དགོངས་གསལ།

ས་སྐྱ་པཎྜི་ཏ་ཀུན་དགའ་རྒྱལ་མཚན།

རྡ་ས་ཤེས་རིག་པར་ཁང་།

དྭང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ།

རྗེ་ཙོང་ཁ་པ།

ལྷ་ཆ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་།

གནས་ལུགས་མཛོད།

ཀློང་ཆེན་རབ་འབྱམས་པ།

ཤེས་རབ་རྒྱ་མཚོ་དང་མཁྱེན་བརྩེ་ཟླ་གྲུབ་ནས་དཔར་དུ་བསྒྲུན།

སྒང་ཏོག ༡༩༨༣

གནས་ལུགས་མཛོད་རང་འགྲེལ།

ཀློང་ཆེན་རབ་འབྱམས་པ།

ཀློང་ཆེན་མཛོད་བདུན། པོད། ཅ།

སྒང་ཏོག ༡༩༨༣

དབུ་མ་རྒྱན་གྱི་ཟིན་བྲིས།

རྗེ་ཙོང་ཁ་པ།

རྗེའི་གསུང་འབུམ། པོད། བ།

ལྷ་ཆ་དགེ་ལྡན་སྤྱི་ལས་དཔར་མ།

དབུ་མ་སྣང་བའི་བརྗེད་བྱོ།

བསྟན་དར་ལྷགས་རམ་པ།

ཡོཀཤཙཉྫ། དིལླི།

དབུ་མ་དགོངས་པ་རབ་གསལ།

རྗེ་ཙོང་ཁ་པ།

ལྷ་ཆ་དགེ་ལྡན་དགེ་སློབ་སྤྱི་ལས་ཁང་། ༡༩༨༥

ཤེས་བྱ་ཀུན་ཁྱབ་མཛོད།
ཀོང་སྤྲུལ་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ།

བསམ་གཏན་དམིགས་སྒྲོན།
གནུབས་ཆེན་སངས་རྒྱས་ཡེ་ཤེས།
གླེ། ལ་དྭགས། ༡༩༧༨

རྒྱལ་རབས་དང་ཆོས་འབྱུང་།

བཀའ་ཐང་སྡེ་ལྔ།
སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་།

ཀློང་ཆེན་ཆོས་འབྱུང་།
ཀློང་ཆེན་རབ་འབྱམས་པ།
བོད་ལྗོངས་བོད་ཡིག་དཔེ་སྙིང་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༩༡

རྒྱ་ནག་ཧྭ་ཤང་གི་བྱུང་ཚུལ་གྲུབ་མཐའི་ཕྱོགས་སྡུ་བཅས་ས་བོན་ཙམ་སྨོས་པ་ཡིད་ཀྱི་དྲི་
མ་དག་བྱེད་དགེ་བའི་ཆུ་རྒྱུན།
ཀ་ཐོག་པ་ཚེ་དབང་ནོར་བུ།
ཕྲ་གཟུགས་པར་མ། Lmpj-012-844 ལྷ་ཙ་ཞི་འཚོ་དཔེ་མཛོད་ཁང་།

རྒྱལ་རབས་སྦ་བཞེད།
སྦ་གསལ་སྣང་།

མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༨༠

ཆོས་འབྱུང་བསྟན་པའི་པད་མ་རྒྱས་པའི་ཉིན་བྱེད།

ཀུན་མཁྱེན་པད་མ་དཀར་པོ། གསུང་འབུམ། ཁ

བོད་ལྗོངས་བོད་ཡིག་དཔེ་རྙིང་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༩༢

ཆོས་འབྱུང་མེ་ཏོག་སྙིང་པོ་སྦྲང་རྩིའི་བཅུད།

ཉང་རལ་པ་ཉི་མ་འོད་ཟེར།

བོད་ལྗོངས་མི་དམངས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༨༨

ཏུན་ཧྭང་ཡིག་རྙིང་།

པེལླིཡོཏ་ཕྱོགས་བསྡུས།

ཕྲ་གཟུགས་པར་མ།

ལྷ་ཙ་ཞི་འཚོ་དཔེ་མཛོད་ཁང་།

སྟག་ལུང་ཆོས་འབྱུང་།

སྟག་ལུང་ངག་དབང་རྣམ་རྒྱལ།

བོད་ལྗོངས་བོད་ཡིག་དཔེ་རྙིང་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༩༢

བསྟན་རྩིས་ཀུན་བཏུས།

ཚེ་ཏན་ཞབས་དྲུང་།

དེབ་ཐེར་སྔོན་པོ།

འགོས་ལོ་ཙྪ་བ་གཞོན་ནུ་དཔལ།

སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༨༥

པད་མ་བཀའ་ཐང་།

སི་ཁྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༩༣

ཕ་དམ་པ་དང་མ་ཅིག་ལབ་སྒྲོན་གྱི་རྣམ་ཐར།

ཆོས་ཀྱི་སེངྒེ་དང་གང་པ།

མཚོ་སྔོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྲུན་ཁང་། ༡༩༩༢

བུ་སྟོན་ཆོས་འབྱུང་།

བུ་སྟོན་རིན་ཆེན་གྲུབ།

བློ་གླིང་དཔེ་མཛོད་ཁང་། ༡༩༩༡

སུམ་པ་ཆོས་འབྱུང་།

སུམ་པ་མཁན་པོ་ཡེ་ཤེས་དཔལ་འབྱོར།

སྙིན་ཕྱོགས་བསྡུས།

ཕྲ་གཟུགས་པར་མ།

ལྷ་ཙ་ཞི་མཚོ་དཔེ་མཛོད་ཁང་།

Stien Collection, Microfiech
Shantarakshita Library, CIHTS, Sarnath, Varanasi

History of Zen Buddhism
Henrich Dumoulin

